दास्तान ईमान फ़रोशों की

5

अलतमश

दास्तान ईमान फ़रोशों की

पांचवा हिस्सा

सलाहुद्दीन अय्यूबी के दौर की
हक़ीक़ी कहानियाँ औरतों और मर्दों
की मारका आराइयाँ

लेखक

अलतमश

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

आ़लमे इस्लाम के नौजवानों के नाम

- सॉँप और सलीबी लड़की
- सुन्नत, सारा और सलीब
- चले क़ाफ़ले हिजाज़ के
- दूसरा दुरवेश
- न मैं तुम्हारी, न मिस्र तुम्हारा
- अय्यूबी ने क़सम खाई
- फ़सले सलीबी जिसने काटी थी
- अय्यूबी मस्जिदे अक़्सा की दहलीज़ पर
- आँसू जो मस्जिदे अक़्सा में गिरे
- फिर शमा बुझ गयी

तआरुफ़

"दास्तान ईमान फ़रोशों की" का पाँचवा हिस्सा पेश किया जाता है।

आप इस हकीकत से बेख़बर नहीं होंगे कि हमारी उभरती हुई नस्ल का किरदार मजरूह हो चुका है। इस कौमी अल्मिया के अस्बाब से भी आप वाक़िफ़ होंगे। अगर नहीं तो हम बताते हैं। एक सबब तो यह है कि बच्चों को अपने आबाव अजदाद की रिवायात से बेख़बर रखा जा रह है। उन्हें मालूम नहीं कि उनकी तारीख़ शुजाअत के कारनामों से भरपूर है। उनकी निसाबी किताबो में भी उन रिवायात का ज़िक्र नहीं मिलता।

दूसरा सबब यह है कि हमारे बच्चे और नौजवान ऐसी कहानियों के आदी हो गये हैं जिन में तफ़रीही और लज़ीज़ मवाद ज़्यादा होता है और जिनमें सन्सनी, सस्पेंस, हंगामा आराई और जिन्सयात होती है और जो जज़्बात में हलचल बपा कर देती है। यह दर असल इन्सानी फ़ितरत का मुतालिबा है जिसे पूरा करना ज़रूरी है लेकिन बड़ी एहतियात की ज़रूरत है।

हमारे दुश्मन ने जो यहूदी भी हैं और दूसरे भी, इन्सान की उस फ़ितरी ज़रूरत को इस्लाम दुश्मन मक़ासिद और मुसलमान दुश्मन अग़राज़ की तकमील के लिए इस्तेमाल किया है। यह जो फ़हश, उरियाँ, मारधाड़ और जराईम से भरपूर कहानियाँ, रिसाले और फ़िल्में मक़बूल हुई हैं, उनका ख़ालिक़ हमारा दुश्मन है और उन्हें हमारे कौम में फ़ैलाने का काम दुश्मन ही कर रहा है। यह ज़हरीला अदब हमारे यहाँ इस हद तक मक़बूल हो गया है कि ग़ैर इस्लामी नज़रियात की हामिल कहानियां भी मुसलमानों ने दिल व जान से क़ुबूल कर ली हैं। दुनिया के ज़र परस्त नाशिरों, रिसालों के मालिकों और कलमकारों ने देखा कि इन कहानियों से तो दौलत कमाई जा सकती है, चुनांचे उन्होंने भी कौमी सूद व ज़्यां को नज़र अन्दाज़ करके फ़ुहाशी को ज़रिआ बना लिया है।

इसमें किसी शक व शूबहा की गुंजाइश नहीं रही कि इसाई और यहूदी ने और हमारे मुफ़ाद परस्त नाशिरों ने हमारी नस्ल की किरदार कुशी के लिए उन अख़्लाकसोज़ कहानियों को ज़रिया बना रखा है।

हम ने अपनी उभरती हुई नस्ल के इन्फ़िरादी और कौमी किरदार के तहफ़्फ़ुज़ और नशुअ नुमा के लिए "हिकायत" में सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के दौर की सच्ची कहानियों का सिलसिला शुरू कर दिया था। इस सिलसिले में हम चार हिस्से किताबी सूरत में पेश कर चुके हैं। पाँचवा हिस्सा पेश ख़िदमत है। इन कहानियों में आप को वह तमाम लवाज़मात मिलेंगे जो आप के और आपके बच्चों के फ़ितरी मुतालिबात की तस्कीन करेंगे। इनमें सन्सनी भी है सस्पेंस भी और यह कहानियां आप को कदम कदम पर चौंकायेंगी मगर इनकी बुनियादी

ख़ुबी यह है कि यह उस क़ौमी जज़्बे और ईमान को ज़िन्दा व बेदार करेंगी जिसे हमारा दुश्मन फ़ुहश और अख़्लाक़ सोज़ कहानियों के ज़रिए कमज़ोर बल्कि मुर्दा करने की कोशिश कर रहा है।

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने एक जंग मैदान में लड़ी जिसे सलीबी जंगों का सिलसिला कहा जाता है। दूसरी जंग ज़मीन दोज़ मुहाज़ पर लड़नी पड़ी। यह जासूसी और कमाण्डो फ़ोर्स की जंग थी। यह मुख़्तलिफ़ औक़ात की तफ़सील और ड्रामाई वारदातें हैं, जिन में आप को सुल्तान अय्यूबी के और सलीबियों के जासूसों, सुराग़रसानों तख़रीबकारों, गोरेलों और कमाण्डो असकरियों के सन्सनी खेज़, वलवला अंगेज़ और चौंका देने वाले तसादुम, ज़मीन दोज़ तआक़ुब और फ़रार मिलेंगे।

सलीबियों ने मुसलमानों के हां तख़रीबकारी, जासूसी और किरदार कुशी के लिए ग़ैर मामूली तौर पर हसीन और चालाक लड़कियां इस्तेमाल की थीं, इसलिए यह औरत और ईमान की मार्का आराईयां बन गयीं।

अगर आप सच्चे दिल से फ़ुहश और मुख़रिब अख़लाक़ कहानियों से अपने बच्चों को महफ़ूज़ करना चाहते हैं तो उन्हें "दास्तान ईमान फ़रोशों की" के सिलसिले की कहानियां पढ़ने को दें।

साँप और सलीबी लड़की

ख़ादिमा ने रज़ीअ ख़ातुन को महल की अन्दरूनी दुनिया के इसरार बता कर उसके पांव तले से ज़मीन निकाल दी। वह उन ख़्वाबों से बेदार हो गयी जो देखकर उसने वालिये हलब अज़ाउद्दीन के साथ शादी कर ली थी। रज़ीअ खातुन अजीम औरत थी। इस्लाम की तारीख साज़ मुजाहिदा थी। अपने मरहूम ख़ाविन्द नुरूद्दीन ज़ंगी और पासबाने इस्लाम सलाहुद्दीन अय्यूबी की तरह रज़ीअ खातुन भी जैसे सलीबियों के खिलाफ़ लड़ने और सल्तनते इस्लामिया के इत्तेहाद और वुसअत के लिए पैदा हुई थी। अगर ख़ादिमा ने उसे जो राज़ बताया वह हक़ीक़त था तो इस अज़ीम मुजाहिदा की कमन्द टूट चुकी थी और उसकी तलवार कुन्द करके उसे क़ैदी बना लिया गया था। उसकी नौजवान बेटी शम्सुन निसा इसी महल में थी जिसके साथ अभी उसकी मुलाकात नहीं हुई थी।

यहाँ हम आपको याद दिला दें कि शम्सुन निसा की उम्र अपने बाप नुरूद्दीन ज़ंगी की वफात के वक़्त आठ नौ साल थी। उसका बड़ा (वाहिद भाई) अल्मलकुस्सालेह ग्यारह साल का था जिसे ज़ंगी की वफ़ात के बाद मुफ़ाद परस्त उमरा और फ़ौज के हुकाम ने सुल्तान बना दिया था। उसे वह कठपुतली बनाना चाहते थे। सुल्तान अय्यूबी इस तबाह कुन सूरते हाल पर काबू पाने के लिए दमिश्क आया। यह एक किस्म की फ़ौजकशी थी। ज़ंगी की बेवा रज़ीअ खातुन की कोशिशों से दमिश्क पर सुल्तान अय्यूबी का कब्ज़ा हो गया। अल्मलकुस्सालेह अपनी फौज की बहुत सी नफ़री के साथ भाग कर हलब चला गया। अपनी बहन शम्सुन निसा को भी साथ ले गया। उनकी माँ दमिश्क में रहीं और सलीबियों के खिलाफ़ ज़िहाद में मसरूफ। शम्सुन निसा पन्द्रह सोहल वर्ष की हुई तो उसका भाई बीमार होकर नज़अ के आलम को जा पहुंचा। उसने माँ से मुलाकात की ख़्वाहिश ज़ाहिर की। शम्सुन निसा दमिश्क अपनी माँ के पास गयी और कहा कि उसका इकलौता भाई उसे मिलना चाहता है। रज़ीअ ख़ातुन ने साफ़ इन्कार कर दिया और कहा कि उसके लिए वह उसी रोज़ मर गया था जिस रोज़ वह सुल्तान बना और उसने सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ़ तलवार उठाई थी। शम्सुन निसा वापस चली गयी– उसका भाई अल्मलकुस्सालेह मर चुका था।

अब शम्सुन निसा की माँ रज़ीअ ख़ातुन इस महल में जहाँ उसका बेटा मरा था अपने बेटे के जानशीन अज़ाउद्दीन की बीवी बन कर आई। उसे अपनी बेटी जो इसी महल में ही हो सकती थी, मिलने न आई। रज़ीअ खातुन ने ख़ादिमा से पूछा कि उसकी बेटी कहाँ है और क्या वह उसे मिल सकती है?"

"वह यहीं है।" ख़ादिमा ने जवाब दिया–"यह आप अपने आका से पूछ लें कि आप शम्सुन

निसा से मिल सकती हैं या नहीं। अगर इस पर भी पाबन्दी हुई तो मैं चोरी छिपे मुलाक़ात कराउंगी।"

"तुमने अपने गिरोह के जिस कमानदार का ज़िक्र किया है उसके साथ मेरी मुलाक़ात हो सकती है?" रज़ीअ ख़ातुन ने पूछा।

"कुछ दिन गुज़र जाने दें।" ख़ादिमा ने जवाब दिया—"यह पता चल जाए कि आप पर क्या—क्या पाबन्दी आयद होती है। आने वाले हालात के मुताबिक़ हर एक मुश्किल का हल निकल आयेगा। आप की शादी अचानक हुई, और इतनी जल्दी हुई कि हम सबको बाद में ख़बर हुई वरना आप को पहले ही ख़बरदार कर दिया जाता कि शादी की इस पेशकश को क़ुबूल न करें।"

"और मैं यह किस तरह यक़ीन कर लूं कि तुम मेरी हमदर्द हो और मेरे ही खिलाफ़ जासूसी नहीं कर रही?" रज़ीअ ख़ातुन ने पूछा।

ख़ादिमा के होंठों पर मुस्कुराहट आ गयी। रज़ीअ ख़ातुन को गहरी नज़िरहें से देखते हुए बोली— "अगर मैं कोई अमीर कबीर औरत होती, किसी महल की शहज़ादी होती, किसी शहज़ादे की बीवी होती और मेरी हैसियत आप जितनी होती तो आप मुझसे ऐसा सवाल कभी न पूछतीं। आप हर झूठ को सच मान कर धोखे के शिकार हो जातीं, मेरी हैसियत ऐसी है कि मेरा सच भी झूठ लगता है। क्या आप को अभी तजुर्बा नहीं हुआ कि सदाक़त और जज़्बा सिर्फ़ ग़रीबों के दिलों में रह गया है? आप को आने वाले हालात बताएंगे कि आप को किस पर एतबार करना चाहिए। एक ग़रीब ख़ादिमा या हलब के बादशाह पर जो आप का खाविन्द है। आप मुझ पर एतबार करने का ख़तरा मोल ले लें, और दुआ करें अल्लाह आप की और हमारी मदद करे।"

ख़ादिमा कमरे से निकल गयी। रज़ीअ ख़ातुन उलझे—उलझे ख़यालों में भटकती रह गयी। वह कमरा जिसकी सजावट और जिसका सामान शाहाना था उसे जहन्नम की तरह नज़र आने लगा।

❖

दो तीन रोज़ रज़ीअ खातुन को अज़ाउद्दीन नज़र न आया। उसे कमरे में खाना वग़ैरह पहुंचाया जाता रहा। ख़ादिमाएं उसकी हाज़िरी में खड़ी रहीं। उसके आराम और दिगर ज़रूरियात का ख़्याल इस तरह रखा जाता जैसे वह कोई मलिका हो मगर यह शहंशाही उसे ज़ेहनी अज़ीयत दे रही थी। वह एक सुल्तान की बेवा थी। उसकी जिन्दगी में अभी उसने अपने आप को कभी मलिका या शहज़ादी नहीं समझा था। उसकी सिर्फ़ यह ख़्वाहिश थी कि मर्दों के दोश बदोश मैदाने जंग में जाए, सेहराओं में लड़े और उसे शहीदों में से उठाया जाए।

एक रोज़ अज़ाउद्दीन उस कमरे में आ गया और मस्रूफ़ियत की बिना पर इतने दिन न आ सकने की मआज़रत की। "मैंने आपकी ग़ैरहाज़िरी की शिकायत तो नहीं की।" रज़ीअ ख़ातुन ने कहा— "मै दुल्हन बन के नहीं आई। मेरे दिल में ऐसी भी कोई ख़्वाहिश नही कि आप हर वक़्त मेरे साथ रहें या हर रात मेरे साथ गुज़ारें। मेरी आधी से ज़्यादा अज़दवाजी जिन्दगी

तन्हाई में गुजरी है। नुरूद्दीन ज़ंगी मरहूम मुहाज़ पर रहते थे और मैं उनकी नहीं लाश के इन्तज़ार में रहती थी। मुहाज़ पर न हों तो सल्तनत के कामों और फौज की तरबियत में मस्रूफ रहते थे, लेकिन वहाँ मैं भी मस्रूफ रहती थी। सल्तनत के बाज़ कामों की निगरानी और शहीदों के घरों की देख भाल मेरे सुपुर्द थी। मैं जवान लड़कियों को ज़ख्मियों की मरहम पट्टी, तेग़ज़नी, तीर अन्दाज़ी और घोड़सवारी की तरबियत देती थी। वहाँ मैं एक कमरे में कैद नहीं थी जिस तरह यहाँ बन्द कर दी गयी हूँ। यह कैद मुझे पसन्द नहीं।"

"मैं यह नहीं कहता कि नुरूद्दीन ज़ंगी मरहूम ने सल्तनत के कई काम अपने बीवी के सुपुर्द करके अच्छा नहीं किया था।" अज़ाउद्दीन ने कहा– "लेकिन मैं किसी से यह नहीं कहलवाना चाहता कि हलब की किस्मत बनाने और बिगाड़ने में एक औरत का हाथ है। तुम मेरी बीवी हो। मैं तुम पर कोई ऐसा बोझ नहीं डालना चाहता जिसका तअल्लुक अज़्दवाजी ज़िन्दगी से नहीं।"

चूंकि रज़ीअ ख़ातुन को अज़ाउद्दीन की नीयत का पता ख़ादिमा से चल चुका था इसलिए उसने अपने इस दूसरे ख़ाविन्द की ऐसी बातों से अपने आप को इस ख़ुद फरेबी मे मुब्तिला न किया कि वह प्यार का इज़हार कर रहा है। वह एक ही बार, आज ही, उसकी नीयत को बेनकाब करने का इरादा किये हुए थी। वह कम उम्र लड़की नहीं पुख़्ताकार औरत थी।

"मगर जिस तरह मुझे इस कमरे में कैद कर दिया गया है यह मुझे पसन्द नहीं।" रज़ीअ खातुन ने कहा–"मैं आपके हरम की कोई ज़रख़रीद लड़की नहीं।"

"रज़ीअ ख़ातुन!" अज़ाउद्दीन ने टहलते हुए कहा–"तुम्हें वह अज़्दवाजी ज़िन्दगी ज़ेहन से उतारनी होगी जो तुमने ज़ंगी मरहूम के साथ गुज़ारी है। उन्होंने तुम्हे जो आज़ादी दे रखी थी, वह मुझे पसन्द नहीं और यह किसी भी खाविन्द को पसन्द नहीं आ सकती.....क्या तुम बाहर घूमना फिरना चाहती हो? चार घोड़ों की बघी मौजूद है। जब चाहो बाहर जा सकती हो।"

"जिसे महल के अन्दर घूमने फिरने की इजाज़त नहीं उसे बाहर जाने की इजाज़त कैसे मिल सकती है?"

रज़ीअ खातुन ने पूछा– "क्या वाकई आपने हुक्म दिया है कि मैं महल के अन्दर कहीं नहीं जा सकती।"

"मैंने यह हुक्म तुम्हारी सलामती के लिए दिया है।" अज़ाउद्दीन ने जवाब दिया– "तुम जानती हो कि हलब और दमिश्क में कैसी ख़ूंरेज़ ख़ानाजंगी हुई थी। सुल्तान अय्यूबी ने तुम्हारे बेटे को शिकस्त देकर उसे इताअत मुआहिदा करने पर मजबूर कर दिया था मगर यहाँ के लोगों के दिलों से वह दुश्मनी निकली नहीं। महल के अन्दर ऐसे अफ़राद मौजूद हैं जो तुम्हें और सुल्तान अय्यूबी को अपना दुश्मन समझते हैं। सुल्तान अय्यूबी की फौज के हाथों उनके घर तबाह हुए और उनके जवान बेटे मारे गये हैं। वह जानते हैं कि तुम सुल्तान अय्यूबी की हामी हो और दमिश्क पर तुमने कब्ज़ा कराया था। इनमें से कोई भी तुम्हें कत्ल या अग्वा कर सकता है।"

"वह आपको भी क़त्ल कर सकते हैं क्योंकि आप सलाहुद्दीन अय्यूबी के दोस्त और इत्तेहादी हैं।" रज़ीअ खातुन ने कहा– "तो क्या हमारा यह फ र्ज नहीं कि इस किस्म के अफ राद को जो इत्तेहादे इस्लामी के खिलाफ हैं पकड़ा जाए? क्या आप के पास ऐसे जासूस और मुख़्बिर नहीं हैं जो तख़रीबी अनासिर का सुराग़ लगा कर उन्हें पकड़वा सकें?"

"मैं तमाम इन्तज़मात कर रहा हूँ।" अज़ाउद्दीन ने ऐसे लहजे में कहा जो उखड़ा–उखड़ा था जैसे उसके पास कोई माकूल जवाब नहीं था– "मैं तुम्हारी जान ख़तरे में नहीं डालना चाहता।"

"क्या यह ख़तरा महल के सिर्फ़ अन्दर है?" रज़ीअ खातुन ने पूछा– "आपने मुझे चार घोड़ों की बघी पर जहाँ मैं चाहू बाहर घूमने फिरने की इजाज़त दे दी है। क्या बाहर मुझे कोई क़त्ल या अग़्वा नहीं कर सकेगा?" अज़ाउद्दीन कुछ जवाब देने ही लगा था। रज़ीअ खातुन ने उसे बोलने न दिया और कहा– "मैंने आप के साथ शादी सिर्फ़ इसलिए की है कि नुरूद्दीन ज़ंगी मरहूम अपना जो मक़सद अधूरा छोड़कर फौत हो गये हैं, वह आप, सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी और मैं मिल कर पूरा करेंगे। इसके लिए ज़रूरी है कि अगर अभी तक आप के ज़ेरे साया ऐसे अनासिर परवरिश पा रहे हैं जो एक और खानाजंगी के लिए ज़मीन हमवार कर रहे हैं तो उनका ख़ातिमा किया जाए और कौम में इत्तेहाद पैदा करके सलीबियो को इस सरज़मीन से बेदख़ल किया जाए।"

क्या तुम्हें शक है कि मैं सुल्तान अय्यूबी का इत्तेहादी नहीं?"

"क्या आप मुझे यक़ीन दिला सकते हैं कि इस महल पर सलीबियों के वह असरात जो मेरे बेटे ने पैदा किये थे ख़त्म हो गये हैं?" रज़ीअ खातुन ने पूछा– "क्या आप के तमाम उमरा और सालार बग़दाद की ख़िलाफ़त के वफ़ादार हैं?"

"तुम यहाँ सफ़ीर बन के आई हो या मेरी बीवी?" अज़ाउद्दीन ने क़दरे तंज़िया कहा।

"मैं जो इरादे लेके आई हूँ वह बता चुकी हूं।" रज़ीअ खातुन ने कहा– "मैं अपने बतन से आप के बच्चे पैदा करने और सिर्फ़ आपकी बीवी बनके इस कमरे में बन्द रहने के लिए नहीं आई। मैं महल में घूम फ़िर कर यह मालूम करना चाहती हूँ कि हलब सलीब के साये से महफ़ूज़ है। अगर नहीं तो इस अज़ीम शहर को महफ़ूज़ करना है। मैं अपने इस इरादे से बाज़ नही आ सकूंगी।"

"मैं तुम्हें एक बार फ़िर कहता हूँ कि मेरे किसी काम में दख़ल न देना।" अज़ाउद्दीन ने कहा– "तुम मेरी बीवी हो और यही तुम्हारी हैसियत रहेगी। अगर तुम आज़ाद होने की कोशिश करोगी तो मैंने तुम्हें बघी पर बाहर जाने की जो इजाज़त दी है, वह रोक लूंगा।"

"अगर मैं यह शर्त कुबूल न करूं तो?"

"तो इस कमरे में क़ैद रहोगी।" अज़ाउद्दीन ने जवबा दिया– "तुम मुझसे तलाक नहीं ले सकती और मैं तुम्हें तलाक नहीं दूंगा।" अज़ाउद्दीन बाहर निकल गया।

❖

"आप ने ग़लती की है।" ख़ादिमा ने रज़ीअ खातुन से कहा। ख़ादिमा पिछले दरवाज़े के

साथ कान लगाए अज़ाउद्दीन और रज़ीअ खातुन की बातें सुन रही थी। अज़ाउद्दीन बाहर निकल गया तो ख़ादिमा पिछले दरवाज़े से अन्दर गयी। उसने कहा– "अगर आप ज़िद करेंगी तो यह शख़्स आप को फिलवाक़ेअ ऐसी क़ैद में डाल देगा जो होगी आज़ादी मगर क़ैद से बदतर होगी। अब आप ने आक़ा की नीयत जान ली है। अब उनके साथ इस सिलसिले मे कोई बात न करें। उनके सामने ख़ुश रहें। बज़ाहिर बेहिस हो जाएं। आप जो इरादे ले कर आई है वह हम पूरे करेंगे। मुझे यह सुन कर ख़ुशी हुई है कि आक़ा ने बघी पर बाहर जाने की इजाज़त दे दी है। हम आपको अपने कमानदार से मिलवायेंगे और अगर इस्हाक तुर्क आ गया तो उसकी भी मुलाकात आप से करायेंगे।"

"दरवाज़ा आहिस्त से खुला। दोनों ने देखा। रज़ीअ खातुन की बेटी शम्सुन निसा थी। वह दरवाज़े में रुकी। उसके होंठों पर मुस्कुराहट आई मगर आँखों से आँसू बह निकले। मुस्कुराहट आँसूओं में बह गयी। माँ ने आगे बढ़कर बेटी को गले से लगा लिया और दोनों की हिचकियां सुनाई देने लगीं। ख़ादिमा बाहर निकल गयी। कुछ देर बाद दोनों अल्सालेह को याद करके रोती रहीं।

"तुम इतने दिन कहाँ रही?" रज़ीअ खातुन ने पूछा।

"चचा (अज़ाउद्दीन) ने आप से मिलने से मना कर दिया था।"

"वजह पूछी थी उनसे?"

"उन्होंने गोल गोल और मुहमल सी वजह बताई थी।" शम्सुन निसा ने जवाब दिया– "अभी–अभी उन्होंने कहा है अपनी माँ के पास जाती रहा करो। उन्होनें यह भी कहा है मैं बहुत मसरूफ़ हूँ तुम माँ अपनी के साथ ज़्यादा वक़्त गुज़ारा करो।"

उन्होंने यह नहीं कहा कि अपनी माँ पर नज़र रखा करो और मुझे बताया करो कि उसके पास कौन आता है और क्या बातें होती हैं?"

"हां।" शम्सुन निसा ने मासूमियत से जवाब दिया–"उन्होंने कुछ ऐसी ही बातें की तो थी जो मैं समझ नहीं सकी। मैंने कह दिया था कि बताया करुंगी। उन्होंने यह भी कहा था कि तुम्हारी माँ ज़िद्दी, वहमी और झगड़ालू मालूम होती है, उसे यह बताया करो कि मैं बहुत मसरूफ और परेशान रहता हूँ।"

"सुनो बेटी!" रज़ीअ खातुन ने कहा– "अब यह मासूमियत और भोलेपन तर्क कर दो। तुम जवान हो गयी हो। मैं यह नहीं कहूंगी कि अब तुम्हारी शादी हो जानी चाहिए। मुजाहिदों के बेटियों के हाथों पर लहू की मेंहदी लगा करती है। ज़िन्दा क़ौमों की बेटियों की डोली कम ही उठा करती है। उनकी लाशें मैदाने जंग से उठाई जाती है। तुम्हारी बदनसीबी यह है कि तुम अपने भाई और उसके मुशीरों के साये में पल कर जवान हुई हो। यह सब ग़द्दार हैं। तुम्हारा भाई ग़द्दार था। तुमने अपने भाई की फ़ौज के अपने बाप की फ़ौज और सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ़ लड़ते देखा है। तुम्हारा भाई, जिसे मैं अपना बेटा कहने से शर्मिन्दगी महसूस करती हूँ सलीबियों का दोस्त था। उन सलीबियों का दोस्त जो तुम्हारे मज़हब के दुश्मन है। तुम्हारा बाप सारी उम्र उनके खिलाफ़ लड़ता रहा है।"

"भाई अल्सालेह तो कहा करता था कि सलीबी अच्छे लोग हैं।" शम्सुन निसा ने कहा– "वह सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ़ बातें किया करता था।"

माँ ने शम्सुन निसा को बताय कि सलीबियों के अज़ाइम क्या हैं और उनकी दोस्ती में भी दुश्मनी होती है। रज़ीअ खातुन बोलती जा रही थी और शम्सुन निसा की आँखे खुलती जा रही थीं। माँ का एक़–एक लफ़्ज़ बेटी के दिल में उतरता जा रहा था। उसमे ममता का सेहर भी शामिल था जिस से बेटी मस्हूर होती जा रही थी।

"मुसलमान का कोई दोस्त नहीं।" रज़ीअ खातुन ने कहा–"दुनिया की हर वह कौम जो रसूल सल्ल0 का कलमा नहीं पढ़ती मुसलमानो की दुश्मन है और उनकी दुश्मनी से ज़्यादा खतरनाक सूरत उनकी दोस्ती है। सलीबियों ने हलब मुसिल और हरान के उमरा से दोस्ती करके हमारी कौम को दो धड़ों में काट दिया है। तुम्हारा भाई उनके हाथों खेलता रहा। खुदा और उसके रसूल सल्ल0 का हुक्म यह है कि उम्मत का धड़ों मे तक़सीम होना गुनाह है क्योंकि यह तक़सीम धड़ों को आपस में लड़ाती है। कुर्आन का हुक्म बिल्कुल वाजेह है कि कुफ्फार के मुकाबले में सीसा पिलाई हुई दिवार बने रहो। मगर कुफ़्फ़ार ने अय्याशी का सामान मुहैया करके इसदिवार में शगाफ़ डाल दिए थे। शैतान की बातों में जादू का असर होता है, औरत, शराब, ज़र व जवाहरात और बादशाही के ख्वाब इन्सान को गहरी नींद सुलाए रखते हैं। शैतान का यह काम सलीबियों ने किया है।"

"मैंने यह सब अपनी आँखों से इस महल में देखा है।" शम्सुन निसा ने कहा–"मैं उस वक़्त छोटी थी, कुछ समझ नहीं सकी। मुझे जब भाई अल्सालेह ने सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास एजाज़ का किला माँगने के लिए भेजा था तो मैं हंसती खेलती यहाँ के सालारों के साथ सुल्तान के पास गयी थी। मुझे किसी ने नहीं बताया था कि यह सब क्या हो रहा है। मुझे यह मालूम नहीं था कि यह ख़ानाजंगी थी जो सलीबियों की कारस्तानी थी। मुझे कुछ भी मालूम नहीं था माँ! मुझे बताओ, मुझे बताओ।"

"हाँ बेटी!....गौर से सुनो।" रज़ीअ खातुन की आँखों में आँसू आ गये– "इस महल में अभी तक शैतान की हुक्मरानी है। अज़ाउद्दीन ने मेरे साथ शादी करके मुझे अपनी बीवी नही अपना कैदी बनाया है।"मैं ने यह सिर्फ़ इसलिए कुबूल की थी कि ख़ानाजंगी के इमकानकात को खत्म करके कौम में इत्तेहाद पैदा हो और सलीबियों के खिलाफ़ मुहाज़आराई की जा सके मगर मैंने ज़िन्दगी में पहली बार धोखा खाया है और यह कोई मामूली सा धोखा नहीं। मैं इसी सूरते हाल में अपने अज़्म की तकमील करूंगी। इसके लिए मुझे तुम्हारा साथ और तआवुन की ज़रूरत होगी।"

"मुझे बताएं।" शम्सुन निसा ने कहा– "आप पहली बार धोखे में आई हैं और मैं पहली बार असल सूरते हाल से आगाह हुई हूँ। यह बतावें कि मुझे क्या करना है।"

"जासूसी।" रज़ीअ खातुन ने कहा और उसे तफ़सील से हिदायत देने लगी।

शम्सुन निसा जब इस कमरे से निकली तो उसकी ज़ात और उसके ख़्यालात में इन्कलाब आ चुका था। वह उस कमरे में दाख़िल हुई थी तो बेपरवा और खिलंडरी सी लड़की थी। जब

कमरे से निकली तो अल्लाह की राह में कुर्बान होने वाली मुजाहिदा थी।

❖

आप को किसने बताया है कि मेरी माँ झगड़ालू है और वहमी है?" शम्सुन निसा ने अज़ाउद्दीन से कहा– "आप जानते हैं कि उनकी ज़िन्दगी कैसी गुज़री है। वह आप को भी मेरे बाप नुरुद्दीन ज़ंगी मरहूम जैसा नामवर जंगजू और मुजाहिद बनाना चाहती हैं।"

"वह मेरे कामों में दख़ल देना चाहती है।" अज़ाउद्दीन ने कहा– "उसे यह वहम है कि मैं सलीबियों का दोस्त हूँ।"

"मैं ने उन्हें रोक दिया है।" शम्सुन निसा ने कहा– "और उनका यह वहम भी दूर कर दिया है कि आप सलीबियों के दोस्त हैं। उन्हें ग़लत न समझें। उन पर ग़ैर ज़रूरी पाबन्दियां आयद न करें।"

"मैंने कोई पाबन्दी आयद न की।" अज़ाउद्दीन ने कहा–"बघी हर वक़्त मौजूद है। अपनी माँ को जब चाहो सैर कराने ले जाया करो।"

उनके दर्मियान इसी मौज़ूअ पर बातें होती रहीं। अज़ाउद्दीन ने शम्सुन निसा की बातों को सच मान लिया। यह बातें अज़ाउद्दीन के दफ़्तर में हो रही थीं। शम्सुन निसा वहाँ से निकली तो बाहर आमिर बिन उस्मान खड़ा था। उसकी उम्र अभी तीस वर्ष नहीं हुई थी। वजीह और बड़ा ही पुरकशिश जवान था। तीर अन्दाज़ी और तेग़ज़नी में उसका मुकाबला कोई कम ही कर सकता था। दिमाग़ का भी तेज़ था। वह अल्मलमुस्सालेह के ख़ुसूसी मुहाफ़िज़ दस्ते का कमानदार था। उसी उम्र में उसे जिस्मानी और ज़ेहनी चुस्ती की बदौलत इतना बड़ा और इतनी नाज़ुक ज़िम्मेदारी दे दी गयी थी। उसकी रिहाईश महल के अन्दर ही थी। थोड़े ही अर्से से वह शम्सुन निसा में दिलचस्पी लेने लगा था। शम्सुन निसा को पहले ही वह अच्छा लगता था। इस लड़की में खिलंडरापन ज़्यादा था। उसे बाप की अज़मत और अज़्म से किसी ने भी अगाह नहीं किया था। उसे महल में बेज़रर फ़र्द समझा जाता था। उसका भाई मर गया था तो अजाउद्दीन ने भी उसे भोली भाली लड़की समझ कर आज़ादी दिए रखी। इसीलिए वह आमिर बिन उस्मान से मिलती मिलाती रही।

अब वह जवान हो गयी थी। उम्र सोलह साल थी। उस दौर में लड़कियाँ क़द काठ के लिहाज से उम्र से ज़्यादा जवान लगतीं और बाज उसी उम्र में एक दो बच्चों की मायें बन जाया करती थीं। आमिर बिन उस्मान में उसकी दिलचस्पी थी उसका रंग बदल चुका था। कभी वह उसे झिड़क कर भाग जाया करती थी मगर अब उसे देखकर शर्मा जाती और उसे चोरी छिपे मिला करती थी। यह पाक मोहब्बत थी जिसकी शिद्दत ने उन्हें रूह की गहराईयों तक एक दूसरे का गरविदा बना रखा था। उन्होंने शादी के अहद व पैमान कर रखे थे। मुश्किल यह थी कि आमिर बिन उस्मान शम्सुन निसा के खानदान का अदना मुलाज़िम था। वह उस लड़की के रिश्ते की तवक्को रख नहीं सकता था। फिर भी उसने घर वालों का तय किया हुआ रिश्ता कुबूल करने से इन्कार कर दिया था।

शम्सुन निसा अज़ाउद्दीन के दफ़्तर से निकली तो आमिर बाहर खड़ा था। शम्सुन

निसा उसे देखकर मुस्कराई और इशारा करके चली गयी। आमिर उसके इशारों को अच्छी तरह समझता था। उसने सर हिलाया जिसका मतलब यह था कि ज़रूर आऊँगा।

❖

जगह पौधों और दरख़्तों से ढकी छुपी थी। ऊपर रात की तारीकी ने पर्दा डाल रखा था। आमिर बिन उस्मान और शम्सुन निसा महल की रौनक और हमाहमी से बेनयाज उस जगह बैठे हुए थे। उनके पुर शबाब जज़्बात पर वालिहाना मोहब्बत का नशा तारी था।

"मैं आज अपनी माँ से मिली हूँ।" शम्सुन निसा ने बताया– "और अब उन्हीं के साथ रहा करूंगी।"

"तुम्हारी माँ भी शाही ख़ानदान की ख़ातून हैं।" आमिर ने कहा– "वह तुम्हें किसी शहज़ादे के साथ ही बियाहना पसन्द करेंगी।"

"नहीं।" शम्सुन निसा ने कहा– "वह शाही खानदान की ज़रूर हैं लेकिन उस ख़ेमें मे रहना पसन्द करती हैं जो मुहाज़ के बिल्कुल करीब हो। वह मुझे भी सिपाही बनाना चाहती हैं।"

"क्या यह उम्मीद रखी जा सकती है कि तुम उनसे मेरे मुतअल्लि्क बात करो और वह मान जाएं?" आमिर ने पूछा।

"अगर मैंने उनकी उम्मीद पूरा कर दी जो उन्होंने मेरे साथ वाबस्ता कर दी हैं तो उनसे अपनी ख़्वाहिश मनवा सकती हूँ।" शम्सुन निसा ने जवाब दिया– "तुम्हें भी उनकी उम्मीद पूरी करनी होगी।"

"उन्होंने मेरा नाम लिया था?"

"नहीं शम्सुन निसा ने जवाब दिया– "उन्होंने मुझे अपना मकसद बताया है जिसकी तकमील के लिए उन्हें मेरे तआवुन की ज़रूरत है और मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत है। इससे पहले कि मैं तुम्हें यह मकसद और अपने फ़राईज़ बताउं मैं तुमसे हलफ़ लेना चाहती हूँ कि तुम मदद करो या न करो, इस मकसद को और मेरे सरगर्मियों को राज़ में रखोगे।"

"और अगर मैं हलफ न दूं तो?" आमिर ने हंसते हुए उसे अपने साथ लगा लिया।

शम्सुन निसा परे हट गयी। आमिर पर पेचीदगी तारी हो गयी। शम्सुन निसा ने कहा– "मैंने पहले भी वादा किया है और आज जैसी कसम कहोगे खाकर अपना वादा दुहराऊंगी कि मेरी शादी होगी तो तुम्हारे साथ होगी लेकिन इससे पहले हमें वह काम करना होगा जो माँ ने मुझे बताया है।"

आमिर बिन उस्मान को हैरत इस पर हुई कि उसने शम्सुन निसा को ऐसी संजीदगी में कभी नहीं देखा था। वह चौंका और बोला– "क्या तुम्हारे दिल में मेरी इतनी सी मोहब्बत रह गयी है कि तुम मुझसे हलफ़ लेना ज़रूरी समझती हो?"

"काम कुछ ऐसा ही है कि हलफ़ ज़रूरी है।" शम्सुन निसा ने जवाब दिया– "मैं तो अपनी माँ का हुक्म मानते हुए जान भी दे दूंगी। तुम शायद साथ न दे सको।"

"मैं तुम्हारी मोहब्बत की ख़ातिर जान दे दूंगा।"

"नहीं।" शम्सुन निसा ने कहा– "मोहब्बत की खातिर नहीं, इस्लाम की अज़मत की खातिर। इस इस्लाम की खातिर नहीं जो इस महल के अन्दर हम देख रहे हैं। मैं उस इस्लाम की बात कर रही हूँ जिसकी खातिर मेरे मोहतरम वालिद ने कुफ़्फ़ार से लड़ते उम्र गुज़ारी है और जिस की ख़ातिर सलाहुद्दीन अय्यूबी लड़ रहा है।"

"मैं कुर्आन के नाम पर हलफ़ देता हूँ कि मुझे जो फर्ज़ सौंपा जाएगा जान की बाज़ी लगाकर पूरा करूंगा।" आमिर बिन उस्मान ने शम्सुन निसा का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा– "अगर मैंने इस हलफ़ की खिलाफ़ वरज़ी की तो मुझे जान से मार दिया ज़ाए और मेरी लाश कुत्तों और गीदड़ों के आगे फेंक दिया जाए......अब बताओ मुझे क्या करना है?"

"जासूसी।" शम्सुन निसा ने कहा– "सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी मिस्र में है। वह इस खुशफ़हमी में मुब्तला हैं कि उन्होंने मेरे भाई अल्मलकुस्सालेह के साथ जो दोस्ती और आइंदा जंग न करने का मुआहिदा किया था वह उसकी वफ़ात के बाद भी कायम है, मगर तुम ज़्यादा अच्छी तरह जानते हो कि मुआहिदे के बावजूद हलब की इमारत सलीबियों के असरात से पाक नहीं रही। अज़ाउद्दीन को सलाहुद्दीन अय्यूबी अपना दोस्त समझता है लेकिन मेरी माँ किसी और ख़तरे का इज़हार कर रही है।"

"आका और तुम्हारी वालिदा की शादी के बाद कोई ख़तरा नहीं रहना चाहिए।" आमिर ने कहा।

"असल खतरा शादी से ही शुरू हुआ है।" शम्सुन निसा ने कहा– "यह शादी दरअसल कैद है जिसमें मेरी माँ को डाल दिया गया है। अज़ाउद्दीन ने यह शादी इस मकसद के लिए की है कि दमिश्क वालों को कोई सही राह दिखाने वाला न रहे...हमें इस महल के ढके छुपे भेद मालूम करके काहिरा तक पहुंचाने हैं। यह भी मालूम करना है कि सलीबियों की नीयत और इरादे क्या हैं। क्या वह एक बार फिर हमारी अफवाज को खानाजंगी में मरवाना चाहते हैं या वह कोई और जंगी इकदाम करेंगे। तुम ऐसी जगह पर हो जहाँ तुम्हें बहुत कुछ नज़र आ सकता है। तुम अज़ाउद्दीन के ख़ुसूसी मुहाफ़िज़ दस्ते के कमानदार हो।"

"मैं तुम्हारी बात समझ गया हूं।" आमिर बिन उस्मान ने कहा– "तुमने ठीक कहा है कि मैं ऐसी जगह पर हूँ जहाँ मुझे बहुत कुछ नज़र आता है। शम्सी! मैं जो कुछ देखता रहा हूं और जो देख रहा हूं उस पर कभी ग़ौर नहीं किया था। मैं मर्द मुजाहिद से मुलाज़िम बन गया था। जब सिपाही मुजाहिद से मुलाज़िम बन जाता है तो यही कुछ होता है जो उसके महल में होता रहा है। सिपाही को अपनी मुलाज़िमत से गर्ज़ होती है। वह दूश्मन का ख़ून बहाने की बजाए ख़ुशामदी बन जाता है ताकि ऊपर वाले उसपर ख़ुश रहें। इनाम व इकराम मिलता रहे और तरक्की मिले। ख़ून और खुशामद में इतना ही फ़र्क है जितना फ़तह और शिकस्त में मुझे कभी किसी ने नहीं बताया कि सिपाही का फ़र्ज़ सिर्फ़ बाहर के हम्ले को रोकना नहीं बल्कि अन्दर के ख़तरो के खिलाफ़ लड़ना भी है। सिपाही का फ़र्ज़ यह भी है कि अगर मुल्क और कौम को अपने ही हुक्मरान की तरफ़ से ख़तरा हो तो उसका सीना तीरों से छलनी करके उसे किले से बाहर फेंक दे.....तुम ने मुझे फ़र्ज़ याद दिला दिया है। मुझे यह बताओ कि किसी

को कत्ल करना है या सिर्फ़ अन्दर का राज़ ही मालूम करने हैं।"

"दोनों काम करने हैं!" शम्सुन निसा ने जवाब दिया– "राज़ मालूम करने के लिए किसी ग़द्दार को कत्ल करना पड़े तो गुरीज़ न किया जाए।"

"सुनो शम्सी!" आमिर बिन उस्मान ने कहा–"अब मैं मुलाज़िम की हैसियत से नहीं मुजाहिद की हैसियत से बात करूंगा। राज़ की बात यह है कि हलब के हाकिमों और बाज़ सालारों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। अगर अज़ाउद्दीन मुख़्लिस भी हो, सच्चे दिल से सुल्तान अय्यूबी का दोस्त हो फिर भी वह हलब की फौज को मिस्र की फौज का इत्तेहादी नही बना सकेगा। उसके हाकिमो, मुशीरों और वज़ीरों के ईमान को सलीबियों ने खरीद रखा है.. ..उन्होंने तुम्हारे भाई की वफ़ात के फौरन बाद अज़ाउद्दीन को इस तरह परेशान करना शुरू कर दिया है कि किसी न किसी मद में ख़र्च करने के लिए उससे रक़म माँगते रहते हैं। सरकारी ख़ज़ाना तेज़ी से खाली हो रहा है। रक़म और सोना खुर्द बुर्द हो रहा हैं। मेरा ख़्याल है कि यह एक साज़िश है जिसका मक़सद यह है कि ख़ज़ाना खाली करके अज़ाउद्दीन को मजबूर कर दिया जाए कि वह सलीबियों से इमदाद लेने पर मजबूर हो जाए। उससे अपने हाकिम वग़ैरह जितनी रक़म माँगते हैं वह दे देता है।

"इसका मतलब यह हुआ कि अज़ाउद्दीन कमज़ोर हुक्मरान है।" शम्सुन निसा ने कहा।

"उसकी की कमज़ोरी यह है कि वह हुक्मरानी की गद्दी को छोड़ना नहीं चाहता है।" आमिर बिन उस्मान ने जवाब दिया– "मैंने उसकी जो बातें सुनी हैं उनसे मालूम होता है कि वह हुक्मरानी क़ायम रखने के लिए सलीबियों के साथ साज़ बाज़ कर लेगा....मैं अब उसकी और उसके मुशीरों की बातें ग़ौर से सुना करूँगा और तुम्हें बताता रहूँगा।"

"यह भी ज़ेहन में रखना कि यहाँ सलीबियों के जासूस मौजूद हैं और सरगर्म हैं।" शम्सुन निसा ने कहा–"और यहाँ हमारे जासूस भी काम कर रहे हैं। किसी रोज़ उनसे तुम्हारी मुलाक़ात कराऊंगी। शम्सुन निसा ने मुस्कुरा कर पूछा– "तुम्हारी सूडानी परी किस हाल में है? अब भी मिलती है?"

"मिलती है।" आमिर बिन उस्मान ने जवाब दिया–"घिसटटी है। परसो मिली तो रो भी पड़ी थी। कहती है, एक बार मेरे कमरे में आ जाओ। शम्सी! मैं इस लड़की से डरता हूँ। तुम जानती हो कि उसके हुस्न में जादू है। उसके तिलिस्म में आया हुआ इन्सान निकल नहीं सकता। मैं उससे इसलिए नहीं डरता हूँ कि वह बहुत हसीन है, मुझ पर मरती है और मैं उसके जाल में फंस जाऊंगा। डर यह है कि वह वालिये हलब अज़ाउद्दीन के हरम का हीरा है। उसका नाम अनूशी है लेकिन महल के अन्दरूनी हलकों के अफ़राद उसे सूडानी परी कहते हैं। अगर अज़ाउद्दीन या उसके किसी अमीर वज़ीर को पता चल गया कि यह लड़की मुझे चाहती है तो लड़की से कोई बाज़ पुर्स नहीं होगी। सज़ा मुझे मिलेगी। मुझे तहख़ाने में बांध कर ऐसी अज़ीयतें दी जाएंगी कि तुम सुनो तो मर जाओ। यह भी डर है कि मैंने उसे मायूस रखा तो वह मुझ पर दस्त दराज़ी या बदतमीज़ी का इल्ज़ाम आयद करके मुझे कैद में डलवा देगी।"

"उसे अभी यह तो मालूम नहीं हुआ कि तुम मुझे चाहते हो और हमारी मुलाकातें होती हैं?" शम्सुन निसा ने पूछा।

"जिस रोज़ उसे पता चल गया वह हम दोनों की जिन्दगी का आख़िरी दिन होगा।" आमिर बिन उस्मान ने कहा– "तुम्हे शायद बख़्श दिया जाए मुझे कोई नहीं बख़्शेगा।"

अनोशी दरअसल सलीबियों का भेजा हुआ तोहफ़ा था। हलब में यह लड़की आई तो अल्मलकुस्सालेह बीमार पड़ गया और मर गया। अज़ाउद्दीन ने आकर हलब की हुकूमत संभाली तो अनोशी उसकी ख़िदमत में पेश की गई। इसके साथ अज़ाउद्दीन ने रज़ीअ ख़ातुन के साथ शादी कर ली। यह उस दौर के हुक्मरानों का दस्तूर था कि बीवियां अलग रखते थे और हरम में बग़ैर शादी के लड़कियाँ अलग रखते थे सलीबियों और यहूदियों ने मुसलमान उमरा वुज़िरह की इस तबाहकुन आदत को और ज़्यादा पुख़्ता करने के लिए उन्हें अपनी लड़कियों तोहफ़े के तौर पर पेश करनी शुरू कर दी थीं। फिर इन लड़कियों में उन्होंने जासूस के फ़न की तरबियतयाफ्ता लड़कियां भेजने का सिलसिला शुरू किया। उन्हें रक़ाबत और फितना फ़साद पैदा करने की भी तरबियत दी गयी थी।

अनोशी ऐसी ही तरबियतयाफ़्ता लड़की थी। वह अज़ाउद्दीन के महल की ज़याफ़त में शराब पिलाती थी, पीती भी थी। उसने हलब के दो ऐसे हाकिमों को अपने हुस्न और फ़रेब के जाल में फांस लिया था जो हलब की क़िस्मत बना भी सकते बिगाड़ भी सकते थे। वह अज़ाउद्दीन के तो एअसाब पर ग़ालिब आ गयी थी। वह सरापा बदी थी और मुजस्सम दावते गुनाह। आमिर बिन उस्मान अज़ाउद्दीन के क़रीब रहता था क्योंकि वह ख़ुसूसी मुहाफ़िज़ दस्ते का कमानदार था। उसने अज़ाउद्दीन की हिफ़ाज़त के लिए मुहाफ़िज़ दस्ते के अलावा दरपरदा इन्तज़मात भी कर रखे थे। उसकी नज़रें उक़ाब की तरह तेज़ और दूर बीन थीं..... अनोशी ने उसे देखा तो यह ख़ुबरू जवान उसे बहुत अच्छा लगा। उसने आमिर पर डोरे डालने शुरू कर दिए लेकिन आमिर उसके हाथ न आया। आमिर को मालूम था कि हरम के इस हीरे के साथ सिर्फ़ बात करते भी पकड़ा गया तो अन्जाम हौलनाक होगा। अनोशी दूसरे तीसरे रोज़ आमिर बिन उस्मान से मिलती और वालिहाना मोहब्बत का इज़हार करती थी। आमिर उसे टाल दिया करता था।

"मैं इस महल का मुलाज़िम हूँ।" आमिर ने एक रोज़ उसे कहा था– "अगर तुम्हारे दिल में मेरी सच्ची मोहब्बत है तो मुझ पर रहम करो और मुझसे दूर रहो।"

"तुम्हारी तरफ़ कोई आँख उठाकर भी नहीं देख सकता।" अनोशी ने उसे कहा– "एक बार मेरे कमरे में आ जाओ।"

उसी दौरान आमिर और शम्सुन निसा की चोरी छुपे मुलाक़ाते होती रही थी।

❖

क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद जो उस दौर का ऐनी शाहिद है, अपनी याद दाश्तों में लिखता है......"अज़ाउद्दीन ने महसूस कर लिया था कि वह मुसिल और शाम की इमारतों को अपने मातेहत मुत्तहिद नहीं रख सकेगा। वह सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी से बहुत डरता था।

उसके मातहत जो अमीर और वज़ीर थे वह अज़ाउद्दीन से इतनी ज़्यादा रकमों का मुतालबा करने लगे जो वह नहीं दे सकता था क्योंकि ख़ज़ाने में इतनी सकत नहीं थी और वसाइल भी महदूद थे।"

अपनी याददाश्तों में आगे चल कर काज़ी बहाउद्दीन शद्दाद ने लिखा है कि अज़ाउद्दीन सुल्तान अय्यूबी के खिलाफ़ आमने सामने की जंग लड़ने से गुरीज़ करता था। उसने अपने एक बड़े ही काबिल और दिलेर सालार मुज़फ़रूद्दीन से मश्वरा किया जो सात तहों में छुपा हुआ एक राज़ था। मुसिल का वालिये अज़ाउद्दीन का भाई इमादुद्दीन था जो खुल्लम खुल्ला सुल्तान अय्यूबी के खिलाफ़ था। हलब और मुसिल में यह इन्कलाब आया कि अज़ाउद्दीन ने मुसिल की हुक्मरानी संभाल ली और इमादुद्दीन हलब आकर वालिये हलब बन गया। इमारतों या सल्तनतों का यह तबादला दोनों के बाशिन्दों के लिए एक मुअम्मा था।

मुतअद मोअर्रिख़ीन ने इस तबादले पर इज़हारे ख़्याल किया है। हर एक ने मुख़्तलिफ़ राय दी है। उस वक़्त के वकाअ निगारों की तहरीरों से कुछ भेद बेनकाब होते हैं। अज़ाउद्दीन जब मुसिल के किले में आया तो रज़ीअ ख़ातुन और उसकी बेटी शम्सुन निसा उसके साथ थीं। उसका ज़ाती मुहाफ़िज़ दस्ता भी साथ था जिसका कमानदार आमिर बिन उस्मान था। यह बहुत ही बड़ा काफ़िला था। कई ऊंटों पर पाल्कियां थीं जिनके पर्दे गिरे हुए थे। रज़ीअ खातुन और शम्सुन निसा का ऊंट सबसे आगे था। रज़ीअ ख़ातुन की ख़ादिमा भी साथ थी। रात के रास्ते में एक जगह कयाम भी करना था।

अज़ाउद्दीन को मुसिल पहुंचने की जल्दी थी इसलिए उसने काफ़िले का सरबराह मुकर्रर किया और खुद कयाम के बग़ैर अपने चन्द एक मुहाफ़िज़ों और दो तीन मुशीरों के साथ सफ़र जारी रखा। आमिर बिन उस्मान को काफ़िले के साथ रहने दिया गया। सूरज गुरूब होते ही ख़ेमे निस्फ़ कर दिये गये। रज़ीअ खातुन का ख़ेमा उन ख़ेमों से बहुत दूर नस्फ़ किया गया जिनमें रात को हरम की लड़कियों को रहना था। अज़ाउद्दीन ने ख़ास तौर पर हुक्म दिया था कि रज़ीअ ख़ातुन और शम्सुन निसा को हरम के ख़ेमो से दूर रखा जाए। क़याम की जगह सब्ज़ चट्टाने थी। चट्टानों पर भी सब्ज़ा था। हरी भरी झाड़ियों की बुहतात थी।

रात को आमिर बिन उस्मान मशालों की रौशनी में हिफ़ाज़ती इन्तज़ामात देखता फ़िर रहा था। उन दिनों वहाँ कोई ख़तरा नहीं था। कहीं भी लड़ाई नहीं हो रही थी। सुल्तान अय्यूबी मिस्र में था और सलीबी कहीं दूर बैठे सुल्तान अय्यूबी की अगली चाल के इन्तज़ार में तैय्यारियाँ कर रहे थे। फ़िर भी आमिर का यह फ़र्ज़ था कि ख़ेमागाह और जानवरों के इर्द गिर्द गश्त का इन्तज़ाम करता। वह हरम के ख़ेमों से ज़िरह दूर घूम कर गुज़र रहा था। उस वक़्त वह अकेला था। ख़ेमो से कुछ दूर गया तो उसे अपने सामने एक साया खड़ा नज़र आया। उसने करीब जाकर घोड़ा रोक लिया।

"मैंने तुम्हें अंधेरे में इतनी दूर से पहचान लिया है, तुम करीब आकर भी मुझे नहीं पहचानते।"

यह अनोशी की आवाज़ थी। आमिर बिन उस्मान ने आवाज़ पहचान कर कहा– "मुझे

अभी बहुत काम करना है। इतनी वसीअ ख़ेमागाह और इतने सारे जानवरों की हिफ़ाज़त का इन्तज़ाम मेरे ज़िम्मे है। मुझे मत रोको।"

अनोशी उसके घोड़े के आगे आकर लगाम पकड़ कर बोली– "घोड़े से उतर आओ आमिर! जिन का तुम्हें डर था वह मुसिल चले गये हैं। उतर आओ।"

आमिर घोड़े से उतरा। अनोशी ने उसे बाज़ू से पकड़ा और ज़िरह परे चट्टान की ओट में बिठा लिया। आमिर ने सधाए हुए जानवरों की तरह कोई मज़ाहमत न की।

"आमिर!" अनोशी ने जज़्बाती से लहजे में कहा– "तुम मुझे बदकार और शैतान लड़की समझ कर मुझ से भागते फिर रहे हो। मुझे मालूम है कि तुम मेरी असलियत से अच्छी तरह वाक़िफ़ हो। तुम अपने आपको ज़ाहिद और पारसा समझते हो और तुम्हें जवानी और इतने दिलकश जिस्म पर नाज़ है। तुमने अभी इस हक़ीक़त पर ग़ौर नहीं किया कि किसी भी रोज़ तुम्हारा जिस्म ख़ून में डूबी हुई लाश बन जाएगा। यह जंग वह जदल का दौर है। एक वह हैं जो मैदाने जंग में कटते मरते हैं और एक वह हैं जो क़िले और महल के अन्दर ही ख़ुफ़िया तरीक़े से क़त्ल कर दिए जाते हैं। तुम्हारा अन्जाम ऐसा ही हो सकता है। अपने मर्दाना हुस्न और जिस्म की दिलकशी को दायमी न समझो।"

"क्या तुम मुझे क़त्ल की धमकी दे रही हो?"

"नहीं!" अनोशी ने जवाब दिया– "मैं तुम्हें यह बताने की कोशिश कर रही हूँ कि तुम्हें अगर यह ख़्याल है कि मैं तुम्हारी ख़ूबसूरती और तुम्हारे जिस्म पर मरती हूँ तो यह ख़्याल दिल से निकाल दो। मैं जिस्मानी तईश का मुजस्सिम ज़रिआ हूं, मगर मैं जिस्मानी लज़्ज़त से बेज़ार हूँ। इन्सान कितना ही पत्थर क्यों न बन जाए, दिल को भी पत्थर क्यों न समझ ले, दिल पत्थर नहीं बन सकता। रूह मुरझा जाती है मरती नहीं। दिल और रूह को वह मोहब्बत ज़िन्दा रखती है जिसका तअल्लुक़ जिस्म के साथ नहीं होता मुझे और ज़्यादा ग़ौर से देखो। मेरा हुस्न और उसका तिलिस्म देखो। मैं गुनाह करती हूँ और दूसरों को गुनाहों की तरग़ीब देती हूँ। मुझे लोग शहज़ादी नही परी कहते हैं। तुम्हारे बादशाह और उमरा मेरे क़दमों में ईमान और अपना सर रख देते हैं मगर मैं एक ऐसी तिश्नगी से दोचार रही जिसे मैं कभी नहीं समझ सकी। तुम्हें देखा तो तुम मुझे अच्छे लगे। मैं पहली बार जब तुम्हारे क़रीब आई तो मेरी नीयत साफ़ नहीं थी। तुमने जब मुझे टाल दिया और उसके बाद बड़े अच्छे लफ़्ज़ों में धुतकार दिया तो मुझे मालूम हो गया कि वह तिश्नगी क्या है जो मुझे परेशान किए हुए थी। मैं तुम्हें दिल की गहराईयों से चाहने लगी। यह तुम्हारी सूरत का नहीं सीरत का असर था, और यह असर ऐसा था जिसने मेरे दिल में इस सबके खिलाफ़ नफ़रत पैदा की, जो मुझे अय्याशी का खिलौना समझते हैं और जो अपना ईमान और अपना क़ौमी वक़ार मेरे हाथ से लिए हुए शराब के प्याले में डूबो देते हैं।"

वह जज़्बात से मख़्मूर अवाज़ से बोल रही थी और आमिर बिन उस्मान उस ज़ेहनी कैफ़ियत में सुन रहा था कि दिल में यह डर था कि किसी ने देख लिया तो वह मारा जाएगा। यह ख़द्शा भी था कि शम्सुन निसा उसकी तलाश में इधर आ निकली तो उसकी मोहब्बत का

ख़ून हो जाएगा। वह सिर्फ़ सुन रहा था इतनी हसीन लड़की की ऐसी जज़्बाती बातें उसके दिल पर कोई असर नहीं कर रही थी।

"क्या तुम डरते हो या तुम्हारा दिल मुर्दा हो गया है?" अनोशी ने उसके गाल को हाथों में थाम कर कहा– "अगर मेरा दिल मुर्दा नहीं हुआ तो मैं मान ही नही सकती कि तुम्हारा दिल मर गया है।" उसने कान आमिर के सीने के साथ लगा दिया। उसके मोअत्तर और रेशम जैसे बिखरे–बिखरे बाल आमिर के जवां साल गाल से छूने लगे। वह आख़िर जवान था। उसकी ज़ात में हलचल बपा हो गयी। उसे अनोशी की हंसी का तरन्नुम सुनाई दिय। हंस कर बोली– "दिल ज़िन्दा है। धड़क रहा है....मैं तुम से क्या माँगती हूँ? कुछ भी नहीं। तुम मुझ से माँगो। हीरे, जवाहरात, सोने के सिक्के कहो क्या चाहिए।"

"मुझे कुछ भी नहीं चाहिए सूडानी परी।"

"मुझे अनोशी कहो।" लड़की ने कहा– "सूडानी परी कहने वाले मोहब्बत से आरी हैं। गुनाहगार हैं। तुम उन सबसे बुलन्द हो, मुझसे ख़ज़ाने ले लो। उनके एवज़ में मुझे मोहब्बत दे दो।" उसने अपना गाल आमिर के गाल के साथ लगा दिया। आमिर तड़प कर पीछे हट गया। उसकी हालत अब उस परिन्दे की सी थी जिसे पिंजरे में बन्द कर लिया गया हो। वह तड़पने और फड़कने लगा।

"मालूम होता है तुम्हारे दिल में किसी और की मोहब्बत है।" अनोशी ने कहा– "मेरे तिलिस्म में कभी कोई यूं तड़पा नहीं। मुझे कह दो कि तुम्हें मुझसे मोहब्बत नहीं।" उसने दांत पीस कर कहा– "तुम्हें इतना भी एहसास नहीं कि एक गुनाहगार लड़की तुमसे पाक मोहब्बत की भीक माँगती है और हो सकता है वह गुनाहों से तौबा करके तुम्हारे क़दमों में सज्दा रेज़ हो जाए। बदबख़्त इन्सान! यह भी सोच लो कि तुम उसलड़की को धुतकार रहो हो जिसने हुकूमतों के तख़्ते उलट दिए हैं और जो भाई के हाथों भाई का ख़ून बहा देती है। तुम मेरे सामने एक कीड़े से बढ़कर कोई हैसियत नहीं रखते।"

"फिर मुझे मसल डालो।" आमिर ने कहा–"मैं तुम्हारे क़ाबिल नहीं।" वह उठ खड़ा हुआ।

"मैं तुमसे कुछ नहीं माँगती आमिर!" अनोशी ने उसके दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर कहा– "सिर्फ़ यह करो कि मेरे पास बैठे रहा करो। मुझे पनाह में ले लिया करो।"

आमिर उससे हटकर अपने घोड़े के पास गया। अनोशी वहीं खड़ी रही। आमिर घोड़े पर सवार हुआ और कुछ कहे बेग़ैर चला गया।

❖

आमिर बिन उस्मान का घोड़ा आहिस्ता–आहिस्ता चल रहा था। आमिर का सर झुका हुआ था। उसकी नाक में अनोशी के बालों की ख़ुश्बू तरो ताज़ा थी। वह गालों पर अनोशी के बालों के लमस का गुदाज़ महसूस कर रहा था। वह इस हसीन जाल से निकलने की कोशिश कर रहा था, और वह यह भी महसूस कर रहा था कि अगर अनोशी एक बार फिर ऐसी ही तारीके और तन्हाई में उसे मिली तो उसकी क़स्में टूट जाएंगी, फिर वह कहीं का नहीं रहेगा।

उसने अपने ख़्यालों का रूख़ शम्सुन निसा की तरफ़ फेर दिया। तब उसे याद आया कि शाम ख़ेमे नस्ब करते ज़िरह सी देर शम्सुन निसा के पास रूका था और उन्होंने मिलने का वक़्त और जग तय की थी। उसे याद आ गया कि वह उसी जगह की तरफ़ जा रहा था, रास्ते में अनोशी ने रोक लिया– "उसने घूम कर पीछे देखा। उसे अंधेरे में अनोशी नज़र आई। वह एक टीकरी से मुड़कर उस जगह पहुंचा जहाँ शम्सुन निसा को आना था। आमिर ने जिस तरह अनोशी का साया देखा था उसी तरह उसे शम्सुन निसा का साया नज़र आया जो घोड़े की तरफ़ बढ़ा। वह घोड़े से उतरा।

"कहाँ रहे?" शम्सुन निसा ने उससे पूछा– "बहुत देर से इन्तज़ार कर रही हूँ।"

"मेरे काम से आगाह हो।" आमिर ने झूठ बोला– "इधर ही आ रहा था कि एक जगह काम से रूकना पड़ा और इतनी देर हो गयी।"

"अपने आदमियों भी ख़्याल रखना।" शम्सुन निसा ने कहा– "वह सब बहुत होशियार हैं। किसी को उन पर शक नहीं होगा।"

शम्सुन निसा उन 'अपने आदमियों' का ज़िक्र कर रही थी जो हलब के अन्दर सुल्तान अय्यूबी और रज़ीअ खातुन के लिए जासूसी और मुख़्बिरी कर रहे थे। उनमें जो महल के अन्दर मुलाज़िम थे वह उसी हैसियत से साथ जा रहे थे और जो शहर में कोई काम-काज करते थे उन्हें आरज़ी मज़दूरों के बहरूप में रास्ते में ख़ेमे लगाने और उखाड़ने और दिगर कामों के लिए साथ ले लिया गया था। उनके मुतअल्लिक यह तय किया गया था कि मुसिल शहर में मुख़्तलिफ़ कामों पर लगा दिया जाएगा। रज़ीअ खातुन की ख़ादिमा ने यह तमाम आदमी शम्सुन निसा और आमिर बिन उस्मान को दिखा दिए थे।

"आओ, कुछ देर बैठ जाएं।" शम्सुन निसा ने अपने बाज़ू आमिर के कमर के गिर्द लपेट कर कहा।

आमिर ने अपना बाज़ू शम्सुन निसा के कमर के गिर्द लपेटा। शम्सुन निसा उसके साथ लग गयी। एक कदम उठाया और रूक गयी। उसने नाक आमिर के सीने से लगाकर सूंघा और उससे अलग हट कर बोली– "तुम कहाँ थे? किसके पास थे।"

"मैं जानवरों को देखकर आ रहा हूँ।" आमिर ने जवाब दिया।

"जानवर अतर कबसे लगाने लगे हैं?" शम्सुन निसा ने दबे–दबे गुस्से से कहा– "तुमने कभी अतर नहीं लगाया।" आमिर चुप रहा। शम्सुन निसा ने कहा– "तुम्हें वह ख़ुबसूरत डायन मिल गयी होगी। तुम उसके जाल में आ गये हो।"

"अभी नहीं आया शम्सी!" आमिर ने कहा– "वह मुझे रास्ते में मिल गयी थी। मैं तुम्हें बताना नहीं चाहता था। तुम्हें किसी वहम में मुब्तला नहीं होना चाहिए। मैं इतना कच्चा आदमी नहीं हूँ। तुमने मेरे सीने से जो ख़ुश्बू सूंघी है यह उसी की है लेकिन तुम मेरे सीने के अन्दर देखने और सूंघने की कोशिश करो।" आमिर के लहजे में घबराहट का हल्का–हल्का लरज़ा था। कहने लगा– "मैं बहुत परेशान हूँ शम्सी! मैं कोई अमीर या हाकिम या सालार नहीं, अदना मुलाज़िम हूँ। अनोशी मुझे आसानी से इन्तक़ाम का निसाना बना सकती है।"

"मालूम होता है आज उसने तुम्हें कुछ ज़्यादा ही परेशान किया है।" शम्सुन निसा ने कहा।

"बहुत ज़्यादा।" आमिर ने जवाब दिया– "आज उसने अपना दिल खोल कर मेरे आगे रख दिया है। उसने यहाँ तक कह दिया है कि वह गुनाहगार और बदकार है। उसने मुझ पर वाज़ेह कर दिया है कि वह यहाँ बदकारी फैलाने और भाई को भाई से लड़ाने आई है। उसने मुझसे पाक मोहब्बत की इल्तज़ा की है और कहा है कि उसके एवज जितनी दौलत मागूं दूंगी। मैनें बडी मुश्किल से उसके बाज़ूओं से रिहाई हासिल की है। ख़ुदा के लिए मुझे बताओ शम्सी, मैं क्या करूं। वह दुनिया की सारी दौलत मेरे कदमों में रख दे तो भी मैं तुम्हें धोखा नहीं दे सकता।"

"फिर उसे धोखा दो।" शम्सुन निसा ने कहा– "उसे वही मोहब्बत दो जो वह माँगती है। उसके एवज उससे वह राज़ लो जो हम माँगते हैं। उसने तुम्हें बता दिया है कि उसे किस मकसद के लिए यहाँ भेजा गया है। तुम तजुर्बाकार दानिशमन्द हो। यह तुम ख़ुद समझ सकते हो कि उसे साफ़ कह दो कि तुम्हें अन्दर के राज़ों की ज़रूरत है या उसे बताए बेग़ैर उससे राज़ उगलवाते रहो।"

"मैं यह सोच चुका हूँ।" आमिर ने कहा–"मगर डरता हूँ कि तुम एक न एक दिन मेरे ख़िलाफ़ ग़लतफ़हमी में मुब्तला हो जाओगी।"

"मैं तुम्हें और अपनी मोहब्बत को ख़ुदा के सुपुर्द करती हूँ।" शम्सुन निसा ने कहा– "माँ हर रोज़ मुझे जो बातें बताती हैं वह मेरी रूह में उतर गयी हैं। मेरी मोहब्बत मर नहीं सकती, मैं उसे इस अज़ीम मकसद पर कुर्बान कर सकती हूँ जो मुझे माँ ने दिया है। अपने अल्लाह और अपने हलफ़ को याद रखोगे तो कोई ग़लतफहमी पैदा नहीं होगी।" उसने पूछा– "क्या उसे मालूम हो गया है कि तुम मुझे मिलते हो?"

"उसने ज़िक्र नहीं किया।" आमिर ने जवाब दिया– "उसे यकीनन मालूम नहीं।"

"काम की एक बात सुन लो।" शम्सुन निसा ने कहा– "हलब से रवांनगी से कुछ देर पहले काहिरा से एक आदमी यह मालूम करने आया है कि अज़ाउद्दीन की नीयत क्या है और सलीबियों के मंसूबे क्या हैं। उसे कोई ठोस जवाब नहीं दिया जा सका। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी बहुत जल्दी काहिरा से फ़ौज के साथ रवाना होने को तैय्यार बैठे हैं। उस आदमी ने बताया है कि सुल्तान अय्यूबी इस वजह से जल्दी कूच करना चाहते हैं कि सलीबी फ़ौज ने मुसिल, हलब और दमिश्क की तरफ़ पेशकदमी कर दी तो काहिरा से फौज को बरवक़्त पहुंचना मुम्किन नहीं होगा। ख़तरा यह है कि सुल्तान अपनी फ़ौज ले आयें और सलीबियों की चाल कुछ और हो तो सुल्तान की फ़ौज नुक़सान उठा सकती है। हमें बहुत जल्द अपने मुसलमान उमरा और सलीबियों के अज़ाइम मालूम करने हैं।"

"मैंने सुना था कि सुल्तान अय्यूबी के जासूस आसमान से तारे भी तोड़ लाते हैं।" आमिर बिन उस्मान ने कहा–"क्या सलीबी इलाक़ों में उसका कोई आदमी नहीं?"

"माँ ने मुझे बताया है कि इस्हाक तुर्क एक बड़ा ही काबिल और होशियार आदमी है।"

शम्सुन निसा ने जवाब दिया—"वह बैरूत गया हुआ है।" सही ख़बर तो वही लायेगा लेकिन उसकी तरफ से कोई इत्तलाअ काहिरा नहीं पहुंची...देखो आमिर! फ़ौजों की नक़्ल व हरकत होती है तो यह राज़ बेनक़ाब हो जाते हैं मगर यहाँ कोई ऐसी हलचल नज़र नहीं आती। जो राज़ है वह अज़ाउद्दीन और इमादुद्दीन के सीने में है। यह अन्दरूनी हलकों से मिल सकता है और तुमहें यह राज़ अनोशी दे सकती है।"

"मगर वह जो कीमत माँगती है वह मैं नहीं दे सकूंगा।" आमिर ने कहा।

'तुम्हें यह कीमत देनी पड़ेगी।" शम्सुन निसा ने कहा— "मैं यह कीमत देने को तैय्यार हूँ।" मैं अपने भाई के गुनाहों का कफ़्फ़ार अदा करना चाहती हूँ। मज़हब और सुन्नते रसूल की अज़मत के लिए हमारी आपस में मोहब्बत और दिलों की ख़्वाहिशें कोई मानी नहीं रखतीं। हमें उन शहीदों का फ़र्ज़ अदा करना है जो इस्लाम के नाम पर अपनी दुल्हनों को नौजवानी में बेवा कर गये....आमिर! कुछ न सोंचो। कुर्बान हो जाओ।"

❖

उस वक़्त इस्हाक तुर्क बैरूत में था। बैरूत सलीबी हुक्मरान बिल्डून के फ़िरंगी लशकर का बहुत बड़ा छावनी बना हुआ था। इस सिलसिले में पिछली इक्सात में सुनाया जा चुका है कि बिल्डून को एक शिकस्त सुल्तान अय्यूबी के भाई अल आदिल ने दी थी और थोड़े ही अर्से बाद उसने सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज को घात में लेने की कोशिश की तो ख़ुद अय्यूबी के घात में आ गया था। वह गिरफ्तार होते हुए बचा और दोनों बार उसकी फ़ौज तितर बितर होकर पस्पा हुई। वह तो जैसे रातों को सोता भी न था। इन दोनो पस्पाइयों का इन्तकाम लेने के लिए मंसूबे बनाता रहता था। उसने अल्मलकुस्सालेह को अपना इत्तेहादी बना लिया था, मगर उसका यह इत्तेहादी मर गया। अब वह अज़ाउद्दीन और इमादुद्दीन को सुल्तान अय्यूबी के खिलाफ़ अपने मुहाज़ में शामिल कर रहा था। उसने काहिरा में जासूस भेज रखे थे जो सुलतान अय्यूबी के इरादों का पता चला रहे थे।

इस्हाक तुर्क बैरूत पहुँच चुका था और बिल्डून की हाई कमाण्ड तक पहुंचने की तरकीबें सोंच रहा था। वहाँ जिससे मिलता अपने आप को किसी मुसलमान इलाके से भागा हुआ ईसाइ बताता था। इस त रह उसने बहुत से लोगों की हमदर्दियां हासिल कर लीं। वह चूंकि तुर्की का बाशिन्दा था। इसलिए सफ़ेद फाम था। ख़ुबरू और तनूमन्द भी था। घोड़सवारी, नेज़ाबाज़ी, तीर अन्दाज़ी और तेग़ज़नी में ख़ुसूसी महारत रखता था। उसके बाज़ू लम्बे और उनमें ताकत थी। दिमाग़ भी तेज़ और बारीक था। दूसरों का दिल मोहने के लिए, भड़काने के लिए और हर किसी को अपना गुरवीद बनाने के लिए वह मुनासिब ढोंग रचाने के फ़न का माहिर था। वह अपने साथियों से कहा करता था कि मेरी असल कुव्वत मेरा ईमान और मेरा किरदार है।

उन दिनों बैरूत में सुल्तान अय्यूबी के खिलाफ़ जंगी तैय्यारिया हो रही थीं। वहाँ के लोगों को फ़ौज में भर्ती करने के लिए फ़ौजी मेले हो रहे थे जिनमें फ़ौजी करतब दिखाते और तेग़ज़नी वग़ैरह के मुकाबले करते थे। एक रोज़ इस्हाक तुर्क ऐसे ही एक मुकाबले का तमाशा

देखने जा पहुँचा। यह सलीबियों का एक पुराना खेल था। दो घोड़सवार हाथों में लम्बी बरछियाँ ताने एक दूसरे की तरफ घोड़े सरपट दौड़ाते और एक दूसरे को बरछी से घोड़े से गिराने की कोशिश करते थे। अगर कोई पहली बार न गिरे तो एक बार फिर एक दूसरे की तरफ घोड़े दौड़ाते और एक दूसरे को बरछी से गिराने के लिए वार करते थे। सवार ज़िरह बकतर पहने हुए थे।

यह मुकाबला होता रहा। सवार गिरते रहे। दूसरों के मुकाबले के लिए ललकारते रहे। एक सवार ने कई सवारों को गिराय। उसने किसी और को ललकारा तो कोई भी सामने नहीं आया। इस्हाक तुर्क सेहराई लिबास में था। वह मैदाने जंग में आ गया। मुकाबला करने वाले सवार फ़ौजी थे और ज़िरह पोश। इस्हाक को आम लिबास में मैदान में उतरते देखकर तमाशाइयों ने कहकहा लगाया। वहाँ सलीबी जरनल और दिगर कमाण्डर वग़ैरह भी थे। वह भी खूब हंसे। जिस घोड़ सवार ने सबको ललकारा था वह घोड़े पर सवार मैदान में घोड़े को इधर उधर भगा रहाथा। वह सलीबी फ़ौज के एक दस्ते का कमाण्डर था। उसने अज़ राहे मज़ाक घोड़े का रुख़ इस्हाक की तरफ किया और करीब आकर बरछी इस्हाक़ को मारी। इस्हाक़ वार बचा गया। तमाशाइयों ने एक और कहकहा लगाया। फिर शोर उठा। पागल,पगल। यह कोई पागल है। इसे जान से मार डालो।"

घोड़ सवार कमाण्डर ने घोड़ा पीछे को मोड़ा। उसके साथी कमाण्डरों में से किसी ने उसे कहा-- "अबके उसे बरछी में उड़स कर साथ ले आओ। ज़िन्दा न रहे।" किसी और ने चिल्लाकर कहा-- "यह तुम्हारी तौहीन है। एक पागल देहाती ने तुम्हें ललकारा है।"

घोड़ सवार ने ऐड़ लगाई। इस्हाक तन्हा था। घोड़े को अपनी तरफ़ आते देखकर उसने चुग़ा उतार फेंका और बरछी का वार बचाने के लिए तैय्यार हो गया। घोड़ सवार ज़िरह सा झुका। बरछी हाथ में तौली। करीब आकर उसने इस्हाक़ पर वार किया। इस्हाक़ कुछ दूर घोड़े के साथ इस तरह दौड़ता गया जैसे बरछी उसके जिस्म में उतर गयी है और वह उसके साथ घसीटता जा रहा हो। तमाशाइयों ने दाद व तहसीन का शोर बपा कर दिया लेकिन यह देखकर सब पर सन्नाटा तारी हो गया कि इस्हाक तुर्क दौड़ते दौड़ते सवार के पीछे घोड़े पर सवार हो गया था। बरछी को उसने पकड़ रखा था। सवार ने भी बरछी को पकड़ रखा था। उसने घोड़े को घुमाया। एक चक्कर में दौड़ाने लगा। इस्हाक से बरछी छीनने की कोशिश कर रहा था।

उसने बरछी छीन ली और दौड़ते घोड़े से कूद कर खड़ा हो गया। उसने बरछी लहरा कर ललकारा-- "मुझे एक घोड़ा देदो। कोई भी मेरे मुकाबले आये। ज़िरहबकतर के बेग़ैर मुकाबला करूंगा।"

घोड़ सवार कमाण्डर घोड़े से उतर कर इस्हाक के पास आया। उसने बाज़ू फैला रखे थे। इस्हाक ने बरछी ज़मीन में गाड़ दी। सलीबी सवार ने उसे गले लगा लिया। इस्हाक़ ने कहा मुकाबला करूंगा, मुझे घोड़ा दे दो....उसे एक घोड़ा और एक बरछी दे दी गयी। वह उसी कमाण्डर के मुकाबल में आया। तमाशाई दम बखुद थे। उन्हें यकीन था कि यह बदकिस्मत

देहाती ज़िरह बकतर के बेग़ैर बरछी सो बहुत बुरी मौत मरेगा। दोनों घोड़े दूर आमने सामने खड़े हो गये। इशारे पर घोड़े दौड़े। कमाण्डर ने बरछी इस्हाक़ के पेट के सीध में रखी हुई थी। इस्हाक़ ने अपने जिस्म को ज़िरह सा मोड़कर कमाण्डर का वार खता कर दिया। इसके साथ ही बरछी कमाण्डर के पेट में लगी। कमाण्डर घोड़े की दूसरी तरफ़ गिर पड़ा। उसने ग़लती यह की कि उस तरफ़ वाला पाँव रिकाब से निकालना भूल गया। घोड़ा उसे घसीटने लगा।

इस मुक़ाबले में किसी तमाशाई को किसी सवार की मदद करने की इजाज़त नहीं थी। सवार मर भी जाते थे। कमाण्डरर को घोड़ा घसीट रहा था। इस्हाक़ ने घूम कर देखा तो उसने अपने घोड़े को घूमाया, ऐड़ लगाई और कमाण्डर के घोड़े के पहलू में आकर अपने घोड़े से कूद कर उसके घोड़े के पीठ पर जा बैठा लगाम खींची और घोड़े को रोक लिया। कमाण्डर ने चूंकि ज़िरहबकतर पहन रखी थी इसलिए उसका जिस्म ज़मीन की रगड़ से महफ़ूज़ रहा वरना उसकी खाल उतर जाती।

कमाण्डर ने उसे अपने बाज़ूओं के घेरे में ले लिया और उससे पूछा कि वह कौन है। इस्हाक़ तुर्क ने बताया कि वह मुसलमानों के इलाक़े से भागा हुआ ईसाई है। वह अपने आप को आम क़िस्म का ईसाई तो कह नहीं सकता था। ऐसी घोड़ सवारी और ऐसी नेज़बाज़ी का माहिर कोई फ़ौजी हो सकता था या कोई ऊँचे खानदान का फ़र्द। उसने कमाण्डर को बताया कि मुसलमान उसे ज़बरदस्ती फ़ौज में भर्ती करना चाहते थे। इसलिए वह वहाँ से भाग आया।

कमाण्डर उसे अपने साथ ले गया।

यह कमाण्डर बिल्डून की फ़ौज का नायब था। नायब सलीबी फ़ौज का बहुत बड़ा एजाज़ और रूत्बा होता था जो उस कमाण्डर को दिया जाता था जो ज़ाती तौर पर निडर और माहिर जंगजू हो और इज्तमाई तौर पर बहुत बड़े दस्ते को जंगी अहलियत से लड़ा सके। इस एज़ाज़ के लिए जो औसाफ़ देखे जाते थे वह किसी–किसी में पाये जाते थे। यह एज़ाज़ जिसे मिलता उसे सर से पांव तक ज़िरहबकतर मिला करती थी। सलीबियों के नायब जंगी क़ाबिलियत और बेख़ूफ़ी की बदौलत आजतक मशहूर हैं। उनका इतना रूत्बा होता था कि उनके मश्वरों से बादशाह अपने फ़ैसले बदल दिया करते थे।

इस्हाक़ तुर्क ने ज़िरहबकतर के बेग़ैर इस नायब को पछाड़ दिया और उसे घोड़े के पावं तले आने से बचा भी लिया तो नायब उसकी क़दर व क़ीमत समझ गया। उसने अपने घर लेजाकर नायबने उसे शराब पेश की। मुसलमान जासूसों के लिए यह एक मुश्किल पैदा हो जाया करती थी कि दुश्मन के इलाक़े में वह ईसाइयत का बहरूप धार लेते और ऊंचे हल्क़ों में भी पहुंच जाया करते थे मगर वहाँ शराब पानी की तरह पिलाई जाती थी। मुसलमान शराब पीने से गुरीज़ करते थे। बहाने तराशते थे। बाज़ जासूस शराब के सिलसिले में शक में पकड़े भी गये थे। उल्मा ऐसा फ़तवा देने से हिचकिचाते थे कि इन हालात में शराब पीना जायज़ है। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने यह हिदायत जारी की थी कि शराब पीने की इजाज़त नहीं दी जा सकती क्यों मज़हब में हराम होने के अलवा यह ख़तरा था कि शराब नोशी आदत बन जाती

है, दूसरे यह कि जिसने शराब कभी न पी हो वह होश खोकर अपनी असलियत बेनक़ाब कर सकता है। अलबत्ता सुल्तान अय्यूबी ने कहा था कि दुश्मन के मुल्क में शराब से गुरीज़ की कोशिश करो। अगर फ़र्ज़ का तक़ाज़ा यही हो कि शराब पी लो तो इतनी पी ली जाए जो बदमस्त न करे।

यही मुश्किल इस्हाक़ तुर्क के सामने आ गयी। वह ईमान का पक्का था। उसने पीने से इन्कार कर दिया और कहा– "मेरी कुव्वत आपने देख ली है। इसका राज़ सिर्फ़ यह है कि मैं शराब नहीं पीता। मेरे उस्ताद ने कहा था कि तुम्हारे जिस्म में शराब चली गयी तो तुम्हारे नीचे जो घोड़ा होगा वह महसूस करेगा कि उसकी पीठ पर एक कमज़ोर इन्सान बैठा है। फ़िर घोड़ा भी हुक्म नहीं मानेगा।" इस्हाक़ ने गर्दन से लटकते धागे को खींचा। उसके कुर्ते के अन्दर से छोटी सी सलीब बाहर आई। इस्हाक़ ने कहा– "मैंने अपनी ताक़त को इस सलीब के तहफ़्फ़ुज़ के लिए सर्फ़ करने के लिए सलीब हाथ में रखकर क़सम खाई थी कि शराब नहीं पीऊंगा, बदकारी नहीं करूंगा.....मेरी क़सम न तोड़ें।"

"तुम कहां रहते हो?" नायब ने पूछा– "घर वाले तुम्हारे साथ आये हैं?"

"नहीं।" इस्हाक़ ने जवाब दिया– "मैं घर वालों से यह कह कर भागा था कि अपने किसी इलाक़े में कोई तसल्ली बख़्श ठिकाना बन गया तो उन्हें यहां ले आऊंगा।"

"तुम्हारा ठिकाना बन गया है।" नायब ने कहा– "मैं तुम्हें अपनी बक़ायदा फ़ौज में नहीं ले रहा। तुम मेरे ज़ाती मुहाफ़िज़ हो गये। हर कमाण्डर के साथ दो चार मुहाफ़िज़ होते हैं लेकिन मैं तुम जैसे औसाफ़ के आदमियों का क़दरदां हूँ। मेरी पसन्द का सिर्फ़ एक मुहाफ़िज़ मेरे पास है। तुम दूसरे होगे। तुम्हारा रिहाईश का इन्तज़ाम कर दिया जाएगा।"

वह ज़माना जंगजूओं का था। इस्हाक़ जैसे ताक़तवर और दिलेर आदमियों की ख़ूब क़दर होती थी। नायब ने उसकी रिहाईश का इन्तज़ाम कर दिया। उसके लिए अरबी घोड़े और दिगर सामान का बन्दोबस्त कर दिया और उसकी तन्ख़्वाह मुक़र्रर कर दी। इस्हाक़ तुर्क को ख़ुदा ने दिमाग़ी सलाहितें बड़ी फ़याज़ी से अता की थीं। उन्हें बरोएकार लाते हुए वह दो दिनों में इस सलीबी नायब का मोअतम्द बन गया।

"मेरी सिर्फ़ एक ख़्वाहिश है।" उसने नायब से कहा– "जिस तरह मुसलमानों का क़िब्लाअव्वल हमारे क़ब्ज़े में आ गया है, उनके ख़नाकाबा पर भी हमार क़ब्ज़ हो जाए। इस्लाम थोड़े से अर्से में हमेशा के लिए मर जाएगा। अगर सारी दुनिया पर नहीं तो दुनियाए अरब पर सलीब की मुक़द्दस हुक्मरानी हो जानी चाहिए।"

"तुम ख़्वाब देख रहे हो मेरे दोस्त!" नायब ने कहा– "मुसलमानों को इतनी जल्दी शिकस्त देना आसान नहीं। अगर हमने मुसलमानों के काबे की तरफ़ पेशक़दमी की तो सारी दुनिया के मुसलमान इकठ्ठे हो जाएंगे। उन्हें छोड़ो, हम अभी तक अकेले सलाहुद्दीन अय्यूबी को शिकस्त नहीं दे सके।"

"आप लोग अपने ही पैदा किए हुए वहमों को शिकार हो गये हैं।" इस्हाक़ तुर्क ने कहा– "मुसलमान में इत्तेहाद नहीं रहा। सलाहुद्दीन अय्यूबी अपने मुसलमान दुश्मनों में अकेला

रह गया है। क्या हलब और मुसिल के नये हुक्मरान, अज़ाउद्दीन और इमादुद्दीन आपके हिमायती नहीं? वह आपके मदद के मुहताज और मुन्तजिर हैं। आपके जासूसों ने मुसलमानों को खोखला कर दिया है। मैं आपको वहाँ की सही तस्वीर बताता हूँ।" उसने अल्फाज़ में ऐसी तसव्वुर पेश की जिससे नायब की बाछें खिल गयीं। इस्हाक़ ने ऐसे मश्वरे दिए जो कोई जरनल ही दे सकता था। नायब की आँखें खुल गयीं।

"तुम मुझे हैरान कर देने की हद तक ज़हीन हो।" नायब ने कहा– "हम कुछ ऐसे ही मंसूबे बना रहे हैं। जो तुम्हारी ख़्वाहिशों और अज़ाइम के मुताबिक़ हैं।"

"मेरे इस मश्वरे को ज़िरह अहमियत दें कि सलाहुद्दीन अय्यूबी की तरह छापामार जैश तैय्यार करें।" इस्हाक़ ने कहा– "एक जैश मेरे हवाले कर दें। मैं मुसलमान इलाक़ों और उनकी नाज़ुक रगों से अच्छी तरह वाक़िफ़ हूँ। मुझे दूर अन्दर तक मालूम हैं जहाँ वह रस्द वग़ैरह के ज़खीरे रखते हैं। इधर जंग हुई तो उधर उनका कोई ज़ख़ीरा नहीं रहने दूंगा।"

"ऐसा ही होगा।" नायब ने कहा– "हम तुम्हें मौक़ा देंगे।"

❖

"मैंने तुम्हें शम्सुन निसा के साथ बातें करते देखा था।" अनोशी आमिर बिन उस्मान से कह रही थी। वह मुसिल में थे। आमिर ने उसे मोहब्बत का झांसा दे दिया था। अनोशी आधी रात के बाद उसके कमरे में आ गयी थी। कहने लगी– "शम्सुन निसा मुझसे ज़्यादा ख़ूबसूरत तो नहीं।"

"उसका नाम न लो।" आमिर ने उकताहट से कहा– "वह शहज़ादी है। मुझे अपना नौकर समझती है और हुक्म चलाती है। मैं कभी उसके पास खड़ा होता भी हूँ तो यह हुक्म की तामील होती है। तुमसे भी मैं इसीलिए डरता रहता था। तुम्हें भी शहज़ादी समझता रहा, लेकिन तुमने मेरा डर दूर कर दिया है। फ़िर भी कभी–कभी डर आ ही जाता है कि तुम मुझे किसी धोखे में मुब्तला कर रही हो। यह न भी हुआ तो अपना यह अन्जाम मुझे साफ़ नज़र आ रहा है कि बड़ों ने मुझे तुम्हारे साथ देख लिया तो मुझे तहखाने में बन्द कर देंगे।"

"अगर तुम्हें किसी ने तहखाने में बन्द किया तो मेरे इशारे पर मुसिल की ईंट से ईंट बज जाएगी।" अनोशी ने कहा और उसे अपने साथ लगा लिया। प्यार से बोली–"तुम्हारा यह डर बेजा है कि मैं तुम्हें कोई धोखा दे रही हूँ। मेरा वजूद एक दिलकश धोखा है लेकिन तुम मुझे इन्सान के रूप में देखो। मुझे अपनी इबादत करने दो।"

अनोशी पर बेख़ुदी सी तारी हो गयी। आमिर बिन उस्मान की उंगलियां उसके बालों में रेंग रही थीं। रात गुज़रती जा रही थी। अनोशी के लहजे में ख़ुमार आ गया। आमिर बिन उस्मान के लिए यह बड़ा ही सख़्त इम्तेहान था। वह जवान था, तनूमन्द था और वह गैर शादीशुदा था। कई बार उसके जज़्बात अपने क़ाबू से निकल चले थे। उसने दिल ही दिल में ध्यान ख़ुदा की तरफ़ कर दिया उससे इल्तिजाएं करने लगा कि उसकी ज़ातेबारी उसे सब्र और हिम्मत व इस्तक़लाल अता फ़रमाये।"

रात थोड़ी सी रह गयी थी जब अनोशी उसके कमरे से निकली। फिर ऐसी तीन चार रातें

आयीं। अनोशी उसके वजूद में जज़्ब हो चुकी थी। उसने देख लिया था कि आमिर हैवान नहीं इन्सान है मगर आमिर की ज़ात में जो लरज़े बपा हो रहे थे उनसे अनोशी वाकिफ़ नहीं थी।

"मुझे इन मुसलमान हुक्मरानों से नफ़रत हो गयी है।" एक रात आमिर ने अनोशी से कहा–"मैंने सलीबी हुक्मरान नहीं देखे। हमारे हुक्मरानों से तो अच्छे होंगे। उसने राज़दारी से पूछा– "क्या यह मुम्किन नहीं कि सलीबी आकर इन इलाकों पर कब्ज़ा कर लें?"

अनोशी बड़ी ही चालाक लड़की थी बचपन से उस्तादों के हाथों में खेली थी। उसका हुस्न किलों की दिवारें तोड़ देता था। जाबिर हुक्मरानों को वह अपना गुलाम बना लिया करती थी, मगर वह इन्सानी फ़ितरत की कमज़ोरियों और फ़ितरी तकाज़ों और मुतालबों से अज़ाद नहीं थी। कोई भी इन्सान ख़्वाह वह औसाफ़ और आदात के लिहाज से दरिन्दा ही क्यों न बन जाए, इस फ़ितरत की ज़ंजीरों से आज़ाद नहीं हो सकता जो ख़ुदा ने बनाई है। अनोशी अपनी तिश्नगी आमिर बिन उस्मान को बताचुकी थी। यह उसकी दुखती रग थी जो उसने आमिर के हाथ में दे दी थी। सच्चे प्यार की तिश्नगी और आमिर के वजूद ने उसको डंक मार दिया था। वह शराब के नशे को जानती थी मोहब्बत के ख़ुमार से वाकिफ़ नहीं थी। यह ख़ुमार जब तारी हुआ और आमिर ने सलीबी हुक्मरानों के हक में बात करदी तो अनोशी की तमाम तर तरबियत बेकार हो गयी। उसने आमिर के साथ ऐसी बातें शुरू कर दीं जो जासूस और तख़रीबकार नहीं किया करते।

आमिर का मकसद पूरा हो गया। उसने बच–बच कर सवाल पूछने शुरू कर दिए। अगर उस वक़्त अनोशी उसके सलीबी उस्ताद या अज़ाउद्दीन और उसके वह दो आला हाकिम जो उसे गौहरे नायाब हीरा समझते थे तो यकीन न करते कि यह वह लड़की है जिसे वह सूडानी परी कहा करते हैं। वह मासूम सी बच्ची बनी हुई थी और उसे ज़िरई भर भी एहसास नहीं था कि वह सल्तनते इस्लमिया की जड़े खोखली करने की बजाए सलीब को दीमक की तरह खा रही है। आमिर बिन उस्मान उसकी फ़ितरत के तकाज़े पूरे कर रहा था।

अनोशी जब उस रात आमिर के कमरे से निकली तो रात का आख़िरी पहर था। वह बड़े ही अहम राज़ आमिर के सीने में डाल गयी थी।

❖

बहुत दिन गुज़र गये थे। बैरूत में इस्हाक तुर्क अपने सलीबी नायब का ज़ाती मुहाफ़िज ही नहीं उसका हमराज़ दोस्त और काबिले एअतमाद साथी बन चुका था। उसने यह भी देख लिया था कि बिल्डून के फ़िरंगी लशकर के एक बड़े दस्ते का यह कमाण्डर सलीब के इतना ख़ैरख़्वाह नहीं जितना अपनी उस ख़्वाहिश और अज़्म का गुलाम है कि वह अगली ज़ंग में बढ़चढ़ कर कामयाबी हासिल करे और शाह बिल्डून से अरब का कोई टुकड़ा ईनाम के तौर पर हासिल कर ले। उसके दिमाग़ पर ख़ुदमुख़्तार हुक्मरानी सवार थी और उसकी सोंचे उसी ख़्वाहिश के ताबेअ थीं। इस्हाक तुर्क अपने उस्ताद अली बिन सुफ़ियान की तरबियत के मुताबिक उसके नफ़सीयात से खेलने लगा। जिस तरह अनोशी जैसी ख़तरनाक लड़की

फ़ितरते इन्सानी की कमज़ोरियों और तक़ाज़ों के सामने बेबस हो गयी थी उसी तरह सलीबियों का यह नायब अपने नज़रिए से हट कर अपनी ख़्वाहिशात से मग़लूब होकर यह सोचने की ज़रूरत ही महसूस नहीं कर रहा था कि जिस अजनबी को उसने अपना दोस्त बना लिया है वह सिर्फ़ उसकी नहीं, उसके बादशाह और उसकी सलीब की शिकस्त का पयाम्बर है।

एक रोज़ नायब इस्हाक़ तुर्क को बैरूत से दूर ले गया। इस्हाक़ को पता चला कि नायब का दस्ता रात को बड़ी जल्दी में कूच कर गया है। नायब इस दस्ते को मुख़्तलिफ़ जगहों पर तकसीम करने के लिए ले जा रहा था। इस्हाक़ मुहाफ़िज़ के तौर पर उसके साथ था। दस्ते तक पहुंचे तो देखा कि ख़ेमें नहीं लगाये गये थे। उसमें घोड़सवार भी थे और प्यादे भी। नायब ने अपने मातेहत कमाण्डरों को बुलाकर मुख़्तलिफ़ जगहें बतायीं और हुक्म दिया कि उन जगहों पर वह ख़ेमे गाड़ लें और तैय्यारी की हालत में रहें। इस्हाक़ पास खड़ा यह एहकाम सुन रहा था।

"हो सकता है तुम्हें एक महीने तैय्यारी की हालत में रहना पड़े।" नायब ने अपने छोटे कमाण्डरों सेकहा– "लेनिक उकताना नहीं। हमें कल क़ाहिरा से आये हुए एक जासूस ने इत्तलाअ दी है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ने बैरूत को मुहासिरे में लेकर इस शहर पर क़ब्ज़ा करने का फ़ैसला कर लिया है। हमें तवक्को थी कि वह अब भी दमिश्क़ की तरफ़ आयेगा और सबसे पहले अपने मुसलमान उमरा को जिनमें हलब,मुसिल और हरान के उमरा ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं, अपने साथ मिलायेगा, उसके बाद वह हमें ललकारेगा, मगर अब यह क़ाबिले एतमाद इत्तलाअ मिली है कि वह सबसे पहले हमारे दिल पर वार करेगा और उसके बाद अपने उन उमरा से जिन्हें हमने अपना दरपरदा दोस्त बना रखा है, निपटेगा। अगर हमें यह इत्तलाअ न मिलती तो हम बैरूत के अन्दर उसके मुहासिरे में आ जाते। तुममे से बहुत से ऐसे हैं जिन्हें यह मालूम नहीं कि सलाहुद्दीन अय्यूबी मुहासिरे का माहिर है। उसके मुहासिरे में आई हुई फौज के पास सिर्फ़ यह चाल रह जाती है कि हथियार डाल दे। सलीब की बदौलत से हमें बहुत पहले इशारा मिल गया है।"

इस्हाक़ सुन रहा था। उसने अपने कपड़ों के अन्दर पसीने की नमी महसूस की। उसे यह सुनकर गुस्सा आने लगा कि सलाहुद्दीन अय्यूबी के अन्दरूनी हल्के में भी सलीबियों के जासूस मौजूद हैं जिन्होंने इतनी ख़तरनाक इत्तलाअ यहाँ पहुंचा दी है। उसे मालूम था कि मुसलमान ईमान फ़रोशी पर फौरन उतर आते हैं। सुल्तान अय्यूबी के हमराज़ हल्के में कोई सलीबी तो नहीं जा सकता था। अब यह ज़िम्मेदारी इस्हाक़ तुर्क बड़ी शिद्दत से महसूस करने लगा कि वह क़ाहिरा पहुंचे और अली बिन सुफ़ियान को बताये कि अगर सुल्तान ने वाक़ई बैरूत पर फ़ौजकशी का फ़ैसला कर लिया है तो सीधा बैरूत न जाए।

"इस इत्तलाअ से हम यह फ़ायदा उठा रहे हैं कि जिस तरह हमारा दस्ता इस इलाके में घात की सूरत मे भेजा गया है, उसी तरह चन्द और दस्ते जिनमें घोड़सवार ज़्यादा हैं बैरूत के इर्द गिर्द और दूर–दूर भेज दिए गये हैं। सलाहुद्दीन अय्यूबी का इस्तकबाल वह दस्ते करेंगे जो बैरूत में तैय्यार होंगे। वह उसकी फौज को यह तास्सुर दे कर उलझा लेंगे कि

उसने बैरूत को अचानक आ दबोचा है। वह जब मुहासिरे को तंग कर रहा होगा हम अक़्ब से उस पर हम्ला कर देंगे। फिर वह बैरूत के अन्दर वाली हमारी फ़ौज और हमारे बाहर वाले दस्तों में आकर हमेंशा के लिए पिस जाएगा।"

"जनाब!" एक पुरानी उम्र के क़माण्डर ने कहा– " यह मालूम हो चुका है कि वह किस तरफ़ से आयेगा?"

"अभी यह मालूम नहीं हो सका।" नायब ने जवाब दिया– "मुम्किन यह नज़र आता है कि वह हमारे इलाकों में से गुज़र कर आने का ख़तरा मोल लेगा। शाह बिल्डून ने हिदायत जारी है कि रास्ते में उसके साथ झड़प न ली जाए। उसे दूर अन्दर तक, बैरूत तक आने दिया जाए, यहाँ हम उसकी फ़ौज को रस्द से महरूम करके मार देंगे।"

"और आप को यह मालूम होगा कि बेरूत समन्दर पर वाक़ेअ है।" उसी कमाण्डर ने कहा– "वह अपनी बहरी क़ुव्वत भी इस्तेमाल कर सकता है।"

"वह बहरी कुव्वत इस्तेमाल करेगा।" नायब ने कहा– "उसकी बहुत सी फ़ौज बहरी जहाज़ों से आ रही है। हम ने उसका भी इन्तज़ाम कर लिया है। हम समन्दर में उसे मुक़ाबला नहीं करेंगे। उसकी फ़ौज को उतरने का मौक़ा देंगे। इस तरह हम उसके जहाज़ों को तबाह करने या उन्हें भागने का मौक़ा देने की बजाए जहाज़ों पर क़ब्ज़ा करेंगे.....मेरे दोस्तो! तुम जानते हो कि फ़ौज को राज़ की ऐसी बातें नहीं बताई जातीं क्योंकि जिस तरह हमारे जासूस मुसलमान इलाको में मौजूद हैं उसी तरह हमारे इलाके में मुसलमान जासूस सरगर्म हैं। सिपाहियों के मुंह से निकली हुई बात सलाहुद्दीन अय्यूबी के कानों तक पहुंच सकती है, मगर बाज़ हालात में अपने कमाण्डरों को मालूम होना चाहिए कि आनेवाले हालात कैसे होंगे और उनका पसेमन्ज़र क्या है। यह इहतियात करें कि सिपाहियों को पता न चलने पाये कि हमें सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुतअल्लिक़ कोई इत्तलाअ मिली है वरना वह अपना फ़ैसला बदल देगा।"

"क्या आप को मुसलमान उमरा की नीयत का इल्म है?" एक और कमाण्डर ने पूछा– "ऐसा न हो कि वह हमपर हम्ला कर दें।"

"उनकी तरफ़ से हमें कोई ख़तरा नहीं।" नायब ने कहा– "हलब का वालिये अज़ाउद्दीन मुसिल में आ गया है और मुसिल का अमीर इमादुद्दीन हलब चला गया है। यह तबादला हमारी कारिस्तानी से हुआ है। वहाँ के हालात हमारे क़ब्ज़े में हैं। अल्बत्ता यह तवक़्क़ो रखी जा सकती है कि उनमें से कोई मुसलमान हुक्मरान सलाहुद्दीन अय्यूबी पर हम्ला कर दे या उसे रस्द देने से इन्कार कर दे। बहरहाल यह यक़ीन है कि अपने मुसलमान उमरा की तरफ़ से सलाहुद्दीन अय्यूबी को तआवुन नहीं मिलेगा।"

❖

रात को इस्हाक़ तुर्क ने नायब के साथ सुल्तान अय्यूबी के मुतवक़्क़े हम्ले और बैरूत के मुहासिरे पर तबादला ख़्याल और ख़ुशी का इज़हार किया कि उसे अपनी ख़्वाहिश की तकमील का मौक़ा मिल जाएगा। उसने कुछ और ज़रूरी बातें मालूम कर लीं। उसके सामने अब यह

मस्ला था कि वहाँ से निकले और काहिरा पहुंचे। वह आसानी से फ़रार हो सकताथा लेकिन उसने सोंच लिया था कि ग़ायब हो जाने से नायब को शक हो जाएगा कि यह जासूस था जो सब कुछ देख कर चला है लिहाजा वह अपनी स्कीम में रद्दो बदल कर लेंगे। वह नायब को बताकर जाने को सोंचने लगा। उसे एक बहाना मिल गया जो यह था कि वह अपने घर के तमाम अफ़राद को मुसलमान इलाके में छोड़ आया है, अब चूंकि उसका ठिकाना बन गया है इसलिए वह उन्हें वहाँ से निकालना चाहता है वरना मुसलमान उन्हें परेशान करेंगे।

यह बहाना पेश करके उसने नायब से कहा– "एक आध महीने बाद हम जंग में उलझ जाएंगे फ़िर न जाने कब फुर्सत मिले। उन्हें अभी ले आऊं तो बेहतर है। यह भी मुम्किन है कि मैं जंग में मारा जाऊं मरने से पहले उन्हें यहां लाना चाहता हूँ ताकि मेरे बाद मेरी बहने मुसलमानों के हाथों ख़राब न होती फिरें।"

बहाना माकूल था। नायब ने उसे जो घोड़ा दे रखा था वही उसके पास रहने दिया और कहा– "अभी रवाना हो जाओ और जिस कदर जल्दी आ सको वापस आओ।"

इस्हाक़ तुर्क उस सलीबी नायब से ज़्यादा जल्दी में था। उसे बहुत जल्दी काहिरा पहुंचना था लेकिन उससे पहले हलब और मुसिल जाना ज़रूरी था क्योंकि उसके कानों में वहाँ के हुक्मरानों और उमरा के मुतअल्लिक़ बातें पड़ी थीं। उसे यह पता चल सका था कि सुल्तान अय्यूबी जब इन इलाक़ों में फ़ौज लायेगा मुसिल के हुक्मरानों और सालारों का रवैया क्या होगा। उसे मालूम था कि हलब में उसके साथी जासूस कौन–कौन हैं और वह कहाँ मिल सकते हैं मगर नायब की ज़ुबान से उसने सुना था कि अज़ाउद्दीन मुसिल और इमादुद्दीन हलब चला गया है। उसका मतलब यह हो सकता था कि रज़ीअ खातुन भी मुसिल में होगी, और अगर वह मुसिल में है तो उसकी ख़ादिमा भी साथ होगी। महल के अन्दर की दुनिया से राब्ता इस ख़ादिमा के ज़रिए हो सकता था। बहरहाल उसे वहाँ के हालात के और हालात की ख़बर देने वाले ख़ुफ़िया साथियों का कुछ पता न था सिवाये दो के जो मुसिल में थे।

वह उसी रात रवाना हो गया। घोड़ा अच्छा था। इस्हाक़ माहिर सवार था। महीनों की मुसाफ़त दिनों में तय करने का उसे तजुर्बा था। वह फ़ासला तय करता और ख़ुदा से यही दुआएं माँगता जा रहा था कि उसके काहिरा पहुंचने से पहले सुल्तान अय्यूबी कूच न कर चुका हो। घोड़ा दौड़ से थक गया तो इस्हाक़ ने उसे रोका नहीं घोड़ा अपनी सहूलत की चाल आहिस्ता–आहिस्ता चलता गया। इस्हाक़ ने आगे झुक कर पूट ज़ीन के साथ लगा लिया और चलते घोड़े पर सो गया। सेहर की तारीकी में उसकी आँख खुली। उसने घबराकर आसामन की तरफ़ देखा। उसकी रहनुमाई करने वाला सितारा चमक रहा था। घोड़ा सही सिम्त जा रहा था। सुबह की रौशनी में एक जगह घोड़े को पानी पिलाया और कुछ खिला कर उसने ख़ुद भी ज़िरह आराम किया, घोड़े को भी आराम दिया और चल पड़ा।

यह दिन भी गुज़र गया। रात आई और गुज़र गयी। सलीबी नायब के दीये हुए अरबी घोड़े ने इस्हाक़ का ख़ूब साथ दिया। सूरज गुरुब होने में अभी बहुत देर थी जब उसे मुसिल के मीनारों के गुल्स नज़र आने लगे। इस्हाक़ तुर्क इस शहर से अच्छी तरह वाकिफ़ था और उसे

अपने दो साथी जासूसों के ठीकानों का भी इल्म था। उसे मालूम नहीं था कि वह उसे कुछ बता सकेंगे या हलब का रास्ता दिखा देंगे।

❖

अज़ाउद्दीन को इत्मीनान हो गया कि रज़ीअ खातुमन उसके ज़ौजियत में खुश है और अब वह उसके कामों के मुतअल्लिक कोई बात नहीं करती, न कुछ पूछती है। रज़ीअ खातुन ने उससे यह भी नहीं पूछा था कि उसने इमादुद्दीन के साथ इमारतों का तबादला क्यों कर लिया है। रज़ीअ खातुन ने जिस मकसद के लिए अज़ाउद्दीन के साथ शादी की थी वजह पूरा न हो सका, ताहम वह इस पहलू को देखकर मुत्मईन हो गयी कि वह उस पुरइसरार दुनिया के अन्दर आ गयी है और सुल्तान अय्यूबी ने यहाँ जासूसी का जो जाल बिछा रखा है उसे वह मज़ीद मज़बूत और कारआमद बना रही है। शम्सुन निसा को उसने तरबियत दे ली थी और उसकी बेटी लड़कपन के खिलन्डरे जज़्बात से निकल कर मुजाहिदा बन गयी थी। इस लड़की ने अज़ाउद्दीन के ज़ाती मुहाफ़िज़ आमिर बिन उस्मान को मुख़्बिर और जासूस बना दिया था। इसके लिए उसने यह कुर्बानी दी थी कि उसे ऐसी चालाक लड़की के हवाले कर दिया था जो आमिर को उससे हमेशा के लिए छीन सकती थी।

आमिर बिन उस्मान ने अनोशी के सीने से जितने राज़ निकाले थे वह शम्सुन निसा के ज़रिए रज़ीअ खातुन तक पहुंचा दिए थे। यह निहायत अहम राज़ थे जो काहिरा तक पहुंचाने थे। हलब से सुल्तान अय्यूबी के जो जासूस आये थे। उनके कमानदार से पूछा गया कि काहिरा जाने वाले कोई आदमी तैय्यार करो। उसने कहा था कि इस्हाक तुर्क बैरूत से आ जाएगा। वहाँ की जब तक ख़बर नही मिलेगी काहिरा के लिए इत्तलाअ नामुकम्मल रहेगी। अली बिन सुफ़ियान से सुल्तान अय्यूबी बार–बार कह रहा था कि सलीबियों के आइंदा इकदाम के मुतअल्लिक मालूमात हासिल करो।

अनोशी ने आमिर बिन उस्मान को जो बातें बताई थीं वह ग़लत नहीं हो सकती थी। वह अज़ाउद्दीन और उसके खुसूसी मुशीरों पर इतनी ग़ालिब आई हुई थी कि वह उस लड़की की मौजूदगी में इन्तेहाई नाज़ुक बाते करते रहते थे। इन लोगों के साथ उसे कोई दिलचस्पी नहीं थी। उन्हें वह काबिले नफ़रत इन्सान समझती थी। वह तो अपना फ़र्ज़ अदा कर रही थी। उसे अभी यह मालूम नहीं हुआ था कि जिस आमिर को वह दिल व जान से चाहती है वह अपना फ़र्ज़ अदा कर रहा है। आमिर का अन्दाज़ ऐसा था जैसे वह अपनी दिल चस्पी की ख़ातिर ऐसी बातें पूछ रहा हो।

अज़ाउद्दीन ने रज़ीअ खातुन की सैर के लिए बघी वक्फ़ कर रखी थी। एक शाम रज़ीअ ख़ातुन शम्सुन निसा के साथ बाहर निकल गयी। शहर के करीब ही सब्ज़ा ज़ार था जिसमें एक चश्मा भी था। यह जगह इतनी ख़ूबसूरत थी कि सिर्फ़ शाही खानदान के लिए वक़्फ़ कर दी गयी थी। रज़ीअ ख़ातुन के साथ उसकी ख़ादिमा भी थी और मुहाफ़िज़ के तौर पर आमिर बिन उस्मान भी साथ था। अज़ाउद्दीन को आमिर बिन उस्मान पर भरोसा था और उसने आमिर को हुक्म दे रखा था कि रज़ीअ ख़ातुन जब भी सैर के लिए बाहर जाए तो आमिर साथ

हो। उस जगह पहुंच कर बग्घी को दूर खड़ा कर दिया गया। रज़ीअ ख़ातुन और शम्सुन निसा चश्मे की तरफ़ गयीं। आमिर बिन उस्मान भी साथ रहा। यह सिर्फ़ सैर नहीं थी बल्कि सैर के बहाने आमिर से मालूम करना था कि उसे और क्या कुछ मालूम हुआ है।

उस वक़्त इस्हाक़ तुर्क अपने एक साथी के पास पहुंच चुका था और यह साथी उसे बता रहा था कि रज़ीअ खातुन भी उनके गिरोह में शामिल हो गयी है बल्कि सरपरस्ती कर रही है। उन दोनों के दर्मियान कुछ बातें हुई तो उनका एक और साथी आ गया। उसने इस्हाक़ को बताया कि रज़ीअ खातुन की ख़ादिमा इस वक़्त चश्मे पर गयी है। बेहतर है इस्हाक उसे वहाँ मिले। इस्हाक़ ने अपने उन साथियों को बताया कि वह बहुत जल्दी में है और काम की कोई बात मालूम हो सके तो वह रात रूकने के बजाए फ़ौरन क़ाहिरा को रवाना हो जाए। इसीलिए उसे बताया गया था कि ख़ादिमा चश्मे पर मिलेगी। इस आदमी ने रज़ीअ खातुन के सवारी उधर जाते देखी थी। इस्हाक़ को यह बता ही दिया गया था कि रज़ीअ ख़ातुन भी उनके साथ है। लिहाजा यह उम्मीद रखी जा सकती थी है कि उसके साथ भी मुलाक़ात हो जाए।

आमिर बिन उस्मान चश्मे के किनारे रज़ीअ ख़ातुन और शम्सुन निसा को बता रहा था कि अनोशी की बताई हुई बातों के मुताबिक़ यह यक़ीन हो गया है कि सलीबियों के खिलाफ़ जंग की सूरत मे अज़ाउद्दीन सुल्तान अय्यूबी को दोस्ती के धोखे में रखेगा। अगर सुल्तान रस्द माँगेगा तो रस्द बरवक़्त पूरी नहीं पहुंचेगी। अगर सुल्तान ने फ़ौज माँगी तो यह बहाना पेश किया जाएगा कि उसके तअल्लुकात इमादुद्दीन के साथ अच्छे नहीं रहे और इमादुद्दीन मुसिल पर हम्ले के लिए आरमिनियों के साथ साज़ बाज़ बना रहा है। इसलिए फ़ौज क़िले में मौजूद रहनी चाहिए। आमिर ने बताया कि इमादुद्दीन का रवैया भी ऐसा ही होगा। इन हालात से सुल्तान अय्यूबी का बाख़बर होना ज़रूरी था क्योंकि वह इन दोनों को अपना इत्तेहादी समझता था।

ख़ादिमा इधर उधर टहल रही थी। उसे किसी के गाने की आवाज़ सुनाई दी– "रेगज़ारों के राही राहों से भटके, सितारों को देखें।" सैरगाह से कोई गाता हुआ गुज़र रहा था। ख़ादिमा के कान खड़े हो गये। यह जासूसों के इस गिरोह के ख़ुफ़िया अल्फ़ाज़ थे जो वह एक दूसरे से मुलाक़ात के लिए तरन्नुम में इस तरह इस्तेमाल किया करते थे कि जैसे कोई मुसाफ़िर अपना दिल बहलाने के लिए गुनगुनाता जा रहा हो। ख़ादिमा पौधों की ओट में आगे चली गयी। उसने इस्हाक़ तुर्क को पहचान लिया। उसे रोका। इस्हाक़ ने उसे कहा कि वक़्त नहीं है। ख़ादिमा ने कहा कि इसी तरह टहलते रहो, और वह रज़ीअ ख़ातुन के पास गयी।

❖

सूरज ग़ुरूब हो चुका था। सैरगाह पर तारीकी छा रही थी। इस्हाक़ तुर्क एक ऐसी जगह रज़ीअ ख़ातुन, शम्सुन निसा और आमिर बिन उस्मान के पास बैठा था जहाँ उन्हें कोई नहीं देख सकता था। रज़ीअ खातुन उसे हलब और मुसिल के तमाम इसरार और धोखे उसे बता चुकी थी। उसने इस्हाक़ से कहा– "सलाहुद्दीन अय्यूबी से कहना मैं ने नुरूद्दीन ज़ंगी का मुक़ाम अज़ाउद्दीन को दिया था। मैंने इस उम्मीद पर अपने दिल पर पत्थर रखकर फ़ैसला

किया था कि अज़ाउद्दीन को जंगी मरहूम का सही जानशीन बना दूंगी और यह जंगी की तरह तुम्हारा दायां बाज़ू बनेगा मगर शादी के बाद राज़ खुला कि मैंने उम्र भर की एक भयानक ग़लती की है। मुझे कैद कर लिया गया है। अब दमिश्क की लाज तुम्हारे हाथ है। बैरूत के इलाके में तुम्हारा जिस तरह इस्तक़बाल होगा वह तुम इस्हाक़ से सुन लोगे। तुम ही फ़ैसला कर सकते हो कि इन हालात में जबकि बैरूत के मुहासिरे में लेने का तुम्हारा मंसूबा पहले ही बैरूत पहुंच गया है, तो तुम बैरूत ही जाओ या अपना मंसूबा बदल दोगे। इस सवाल का जवाब अली बिन सुफ़ियान दे सकता है कि यह राज़ बैरूत किस ने पहुंचाया। हमारी कौम में ईमान का नीलाम आम हो गया है। अरब के उमरा की अय्याशियों का यही आलम रहा तो क़िब्लाअव्वल की तरह ख़ाना काबा भी बेच खायेंगे। अय्याशी और हुक्मरानी मिल कर मुल्कों को टुकड़ों में काटती और कौमों का नाम व निसान मिटा देती हैं....अज़ाउद्दीन और इमादुद्दीन पर भी भरोसा न करना। यह तुम्हें मदद नहीं मदद का धोखा देंगे। बैरूत की बजाए हलब और मुसिल को मुहासिरे में लेकर ईमान फ़रोश हुक्मरानों से हथियार डलवा लो और यह अहम इलाके अपनी अलमबरदारी में ले लो यह इस्लाम की बहुत बड़ी ख़िदमत होगी। अपने आबाव अजदाद की तारीख पर एक नज़र डालो। हमारे बादशाहों ने हमेशा मुल्कों के सौदे किये हैं और उन सौदों पर इस्लाम के सिपाही ने लकीर फेर दी और कौम की लाज रखी है। दुश्मन को सिर्फ़ सिपाही देखता है और दुश्मन के हाथों सिर्फ़ सिपाही कटता और मरता है इसलिए वतन और क़ौम की क़दर व क़ीमत सिर्फ सिपाही जानता है.......

"जब अय्याश हुक्मरान दुश्मन की भेजी हुई शराब, हसीन लड़कियों और दौलत के नशे में बदमस्त पड़े होते हैं उस वक़्त अल्लाह के सिपाही रेगज़ारों, कोहिस्तानों और समन्दरों में कट रहे होते हैं। सलाहुद्दीन भाई! तुम्हारी उम्र भी सेहराओं में लड़ते गुज़र रही है, मेरा पहला खाविन्द भी सारी उम्र दीन के दुश्मनों से लड़ता रहा, मगर जब तुम ईमान फ़रोश हुक्मरानों के खिलाफ़ उठते हो तो वह तुम्हें अपनी कौम का क़ातिल और ग़द्दार कहते हैं। इन फ़तवों की परवाह न करो। यह सब सलीबियों और यहूदियों के फ़तवे हैं जो हमारे अपने भाई तुम्हारे खिलाफ़ दाग़ रहे हैं। आओ, तूफ़ान की तरह आओ। ख़ुदा तुम्हारे साथ है। मैं तुम्हारे लिए ज़मीन हमवार कर रही हूँ। यहाँ का बच्चा-बच्चा तुम्हारे साथ होगा......बाकी खबरे इस्हाक से सुन लेना।"

इस्हाक़ तुर्क को तमाम तर मालुमात दे दी गयीं। वह उठा और पौधों को रौंदता हुआ बाहर निकल गया। उसने कुछ ऐसा महसूस किया कि जैसे उसने किसी के क़दमो की हल्की सी आहट सुनी हो। उसने इधर उधर देखा। उसे यह शक भी हुआ जैसे उसे कुछ दूर एक साया सा जाता और पौधों में ग़ायब होता नज़र आया हो। उसने ज़्यादा तवज्जो न दी। उसके ज़ेहन पर यह मसला सवार था कि जिस क़दर जल्दी हो सके वह क़ाहिरा पहुंचे, कहीं ऐसा न हो सुल्तान अय्यूबी फौज के साथ कूच कर चुका हो। उसे इस कामयाबी की बहुत खुशी थी कि उसे हर जगह से निहायत कारआमद मालूमात मिल गयी थीं। वह अपने साथियों के पास गया। बहुत जल्दी में खाना खाया और रवाना हो गया। उसे अपना सफ़र इस वजह से लम्बा

करना पड़ा कि हलब में अपने कमानदार से मिलना ज़रूरी था।

हलब पहुंचा। कमानदार से मिला। उसने इस्हाक को ताज़ा दम निहायत अच्छी नस्ल का घोड़ा दिया। पानी के छोटे मश्कीज़े और खाने की चीज़ों से थैला भर कर घोड़े के साथ बांध दिया। इस्हाक काहिरा के लिए रवाना हो गया।

❖

उस रात का ज़िक्र है जिस रात इस्हाक सैरगाह में रज़ीअ ख़ातुन से मिला था कि अनोशी तबीअत खराबी का बहाना करके अज़ाउद्दी और उसके करीबी हमराज़ों के महफ़िल में नहीं गयी। अज़ाउद्दीन उसकी मिज़ाज पुर्सी के लिए गया तो अनोशी का चेहरा उतरा हुआ था। वह बात करती तो ज़ुबान से हकलाती थी। अज़ाउद्दीन ने अपने तबीब को बुलाया। तबीब ने दवा दी जो अनोशी ने यह कह कर रख ली कि खालेगी। उसने कहा कि वह अब आराम करना चाहती है, यह शब बेदारी और ज़्यादा शराब पी लेने के असरात हैं। वह बहुत बेचैन थी। उसने कई बार खिड़की का पर्दा उठाकर बाहर देखा और कमरे में कभी टहलती, कभी रूकती और फ़िर खिड़की का पर्दा हटा कर बाहर देखती।

उसने अपने ज़ेवरात वाला ख़ुश्नुमा बॉक्स खोला। उसमें से एक अंगूठी निकाली। उसके नगीने वाली जगह डिबिया की शकल की थी। ख़ुश्नुमा और वज़नी अंगूठी थी। उसने उस पर जड़ी हुई छोटी सी डिबिया को जो अंगूठी का हिस्सा थी, खोला। उसमें सफ़ेद सफ़ूफ़ भरा हुआ था। उसने सफ़ूफ़ को ज़िरह सी देर देखा और डिबिया बन्द करके अंगूठी अपनी उंगली में डाल ली। उससे उसे कुछ सकून महसूस हुआ जैसे उसने अपनी बेचैनी और उदासी का ज़रिआ पैदा कर लिया हो।

रात आधी गुज़र गयी थी। उसकी ज़ाती ख़ादिमा उसके कमरे के करीब एक कमरे में सोयी हुई थी। अनोशी ने उसे कह दिया था कि आज रात उसे उसकी ज़रूरत नहीं। आधी रात के बाद वह ख़ादिमा के कमरे में गयी और उसे जगाकर कहा कि आमिर बिन उस्मान को बुला लाओ। उसकी ख़ादिमा उसकी और आमिर की मुलाकातों की राज़दां थी। वह गयी और आमिर बिन उस्मान को बुला लाई। अनोशी ने ख़ादिमा से कहा कि वह कमरे से बाहर बैठी रहे।

"आमिर!" अनोशी ऐसे लहजे में बोली जिससे आमिर वाकिफ़ नहीं था– "आज शाम वह कौन था जो सैरगाह में तुम सबके साथ बैठा हुआ था?"

"कोई भी नहीं।" आमिर ने लाइल्मी का इज़हारकरते हुए जवाब दिया– "मेरे पास कोई नहीं आया था मैं तो ख़ातुन की सवारी के साथ मुहाफ़िज़ बन के जाता हूँ और उनसे दूर रहता हूँ।"

"आमिर!" अनोशी ने बिल्कुल ही बदले हुए लहजे में कहा– "मुझसे ज़मीन की तहों के राज़ पूछ लो। मैंने तुम्हें दिल की गहराईयों से चाहा है मगर तुमने मुझे कोई सीधी सादी सेहराई लड़की समझ लिया। तुम, रज़ीअ ख़ातुन, शम्सुन निसा और उनकी ख़ादिमा इकठ्ठे बैठे हुए थे और एक अजनबी तुम्हारे दर्मियान बैठा था। राज़ व नियाज़ की बातें हो रही थीं।

सबूत चाहते हो? मैं नक़ाब ओढ़कर और मस्तूर होकर वहाँ गयी थी। तुम सब सरगोशियों में बातें कर रहे थे फ़िर वह अजनबी वहाँ से उठा और चला गया। मैं वहां से आ गयी।"

इस्हाक तुर्क जब उन लोगों से उठ कर जा रहा था तो उसने किसी के कदमों की दबी–दबी आहट सुनी थी और कुछ दूर एक साया भी देखा था। यह अनोशी थी जो चोरी छिपे रज़ीअ खातुन, शम्सुन निसा और आमिर बिन उस्मान के पीछे गयी थी।

आमिर बिन उस्मान से कोई जवाब न बन पड़ा। उसने कोई बेमानी बात की। अनोशी उस्ताद थी। वह समझ गयी कि उसके शकूक बेबुनियाद नहीं। उसने कहा– "अगर शम्सुन निसा अकेली होती तो मैं समझती कि इस शहज़ादी ने तुम्हें घेर रखा है मगर यह मामिला कुछ और है........मुझे यह बताओ कि तुम मुझसे यह राज़ की बातें क्यों पूछते रहे हो?"

"वैसे ही।" आमिर ने हंसने की कोशिश करते हुए जवाब दिया– "इन बातों के साथ मेरी क्या दिल चस्पी हो सकती है। मैं सिर्फ़ उससे लुत्फ़ उठाता था कि हम इन बादशाहों को क्या समझते हैं और यह अन्दर से क्या हैं?"

"आमिर!" अनोशी ने क़हर भरी आवाज़ में कहा– "तुम जानते हो कि मैं कौन हूं। मेरे इशारे पर इस शहर की ईंट से ईंट बज सकती है। मुझे मेरे प्यासे जज़्बात ने धोखा दिया और मैं तुम्हारी मोहब्बत के नशे में अपने फ़राईज़ को फ़रामोश कर बैठी और तुम अपना फ़र्ज अदा करते रहे। फ़िर भी हमारे दिल में तुम्हारी मोहब्बत है जिसका सबूत यह है कि तुम मेरे कमरे में ज़िन्दा और सलामत हो। मैं अगर चाहती तो इस वक़्त तुम कैदखाने की उस कोठरी में बेहोश पड़े होते जहाँ अज़ीयतों के बाद ग़द्दारों को और जासूसों को डाल दिया जाता है। मैंने तुम्हें इस जहन्नम से बचा लिया है। मुझे सिर्फ़ यह बता दो कि तुम ने मेरे सीने से राज़ निकाल कर उस अजनबी को दिए हैं और वह काहिरा चला गया है। मेरा ख़ुलूस और मेरी मोहब्बत देखो कि मैंने उस आदमी को निकल जाने की मुहलत दी। मैं उसे उसी वक़्त पकड़वा सकती थी मगर तुम्हारी मोहब्बत ने मेरा ज़हर चूस लिया है।" उसकी आँखों में आँसू आ गये। "मैं इतना दिलनशीन धोखा हूँ धोखे का शिकार हो गयी हूँ। तुम जीत गये हो। सच कह दो आमिर, सच कह दो।"

"हाँ अनोशी!" आमिर ने कहा–"तुमने अपना फर्ज़ अदा किया है, मैंने अपना फ़र्ज अदा किया है। तुम मुझे कैदखाने में बन्द करवा दो।"

अनोशी के आँसू बह निकले थे लेकिन उसने क़हक़हा लगाया और कहा–"बस इतनी सी बात पूछनी थी जो तुमने बता दी है। तुम्हें कोई कैद में नहीं डाल सकता। अब मैं भी इस ख़ुश्नुमा पिंजरे से आज़ाद होना चाहती हूँ। तुम शराब नहीं पीते। मैं तुम्हें बादशाहों का शरबत पिलाऊंगी।"

वह उठी और उस मेज़ के पास जा खड़ी हुई जिस पर सुराही रखी थी। उसकी पीठ आमिर की तरफ़ थी। अनोशी ने दो प्याले अपने सामने रखे। नाख़ून से अंगूठी के साथ जड़ी हुई डिबिया खोली। उसमे जो सफूफ़ था वह कुछ एक प्याले में और बाकी दूसरे प्याले में डाल दिया। आमिर न देख सका। अनोशी ने दोनों प्यालों में सुराही से शरबत डाला। एक प्याला

आमिर को दे दिया और एक अपने हाथ में रखा।

"सूंघ लो।" अनोशी ने कहा–"यह शराब नहीं शरबत है। यह मेरी मोहब्बत का जाम है, पी लो।" उसने प्याला होंठों से लगा लिया। आमिर ने प्याला होंठों से लगा लिया। दोनों ने प्याले खाली कर दिए। अनोशी ने उसके हाथ से प्याला ले लिया और दोनों प्याले परे फेंक कर बाज़ू आमिर के गले में डाल दिये। अपने रूख़सार उसके गालों पर रगड़ती हुई बोली– "अब हम आज़ाद हैं।"

अनोशी उचक कर आमिर से अलग हो गयी और बोली–"तुम भी गुनूदगी महसूस कर रहे हो?"

"हाँ!" आमिर ने जवाब दिया–"मैं गहरी नींद से सोकर आया हूँ। नींद परेशान कर रही है।"

"अब हम इतनी गहरी नींद सोयेंगे कि हमें कोई जगा नही सकेगा।" अनोशी ने ऐसी आवाज़ में कहा जिसे गुनूदगी का नुमाया असर था। कहने लगी– "मैं तुमसे ज़्याद थकी हुई हूँ। गुनाहों ने थका दिया है।" उसका सर डोलने लगा। उसने संभल कर कहा– "ज़्यादा बातों का वक़्त नहीं आमिर! तुम मेरी पहली और आख़िरी मोहब्बत हो। अब हम अगले जहांन में इकठ्ठे उठाये जाएंगे। मैं अपना फ़र्ज़ अदा कर चुकी हूँ तुम अपना फ़र्ज़ अदा कर चुके हो। मैंने इस शरबत में ज़हर मिलाया था जो मुझ जैसी लड़कियों को देकर परदेश भेजा जाता है। यह ज़रूरत के वक़्त के लिए दिया जाता है। इससे कोई तकलीफ़ और तल्ख़ी महसूस नहीं होती। बड़ी मीठी गुनूदगी में इन्सान हमेशा की नींद सो जाता है। मैं इसलिए ज़िन्दा नहीं रहना चाहती कि ज़िन्दा रही तो तुम्हें सज़ा दिला दूंगी। तुम्हें इसलिए जिन्दा नहीं रहने दिया कि कोई लड़की यहन कहे कि आमिर को उससे मोहब्बत है।"

आमिर बिन उस्मान लेट गया था जैसे वह अनोशी की बातें सुन ही नहीं रहा था। उसकी आँखें बन्द हो चुकी थीं। अनोशी का सर डोल रहा था। वह लड़खड़ाते हुए क़दमों से दरवाज़े तक गयी। ख़ादिमा दरवाज़े के साथ ही खड़ी थी। उसने अन्दर बुलाकर कहा–"हम दोनों ने ज़हर पी लिया है। सबको बता देना कि हमने ख़ुद ज़हर पिया है। किसी और ने नहीं पिलाया। कोई सलीबी मिले तो बता देना कि सूडानी परी अपना फ़र्ज़ अदा करके मरी है।"

उसकी आवाज़ दब गयी। वह गिरती–गिरती आमिर तक पहुंची। ख़ादिमा बाहर निकली। थोड़ी देर बाद कमरे में कई लोग आ गये। उन्होंने देखा कि आमिर बिन उस्मान पलंग पर चीत पड़ा है और अनोशी उसके साथ लगी इस तरह लेटी हुई है कि उसका सर आमिर के सीने पर और उसका एक हाथ आमिर के सर पर था जिस की उंगलियां बालों में उलझी हुई थीं। दोनो मेरे हुए थे।

❖

उस वक़्त इस्हाक़ तुर्क मुसिल से जा चुका था। अनोशी ने यह जानते हुए भी कि अजनबी सुल्तान अय्यूबी का जासूस हो सकता है उसका तआक्कुब न किया, न गिरफ़्तार कराने की सोंची। उसने जिन्दगी की यह चन्द ही सायतें रूहानी सकून पाया था जो उसने आमिर के साथ प्यार के धोखे में गुज़ारी थीं। उसने इस प्यार का सिला यह दिया कि इस्हाक़ तुर्क को

जाने दिया।

इस्हाक़ तुर्क काहिरा से अभी कई दिनों की मुसाफ़त जितना दूर था कि उसके घोड़े को साँप ने डस लिया। इस हादसे की तफ़सीलात इस कहानी की पिछली किस्त में सुनाई जा चुकी हैं। मन्दरजाबाला वाक़िआत इस हादसे से पहले के हैं जो यह वाज़ेह करने के लिए सुनाना ज़रूरी थे कि इस्हाक़ तुर्क कितनी अहम इत्तलाअत लेकर काहिरा जा रहा था। इस्लाम की इज्ज़त और बेइज़्ज़ती का दारोमदार उस पर था कि यह अकेला मुजाहिद इतने वसीअ और ऐसे ज़ालिम सेहरा से गुज़र कर कहिरा बरवक़्त पहुंचता है या नहीं, मगर उसके घोड़े को सांप ने डस कर मार दिया और यह सवार सेहरा के मुज़ालिम से बेहोश हो गया। होश में आया तो वह सलीबियों के खेमें में पड़ा था जहाँ दो सलीबी लड़कियाँ थीं। एक का नाम मीरीनिया और दूसरी का नाम बारबरा था। यह तफ़सीलात पिछली क़िस्त में पढ़ लें ताकि वह वाक़िआत एक बार फिर आप के ज़ेहन में ताज़ा हो जाएं।"

इस्हाक़ तुर्क बेहोशी में बड़बड़ाता रहा था जिससे सलीबियों की इस टोली पर ज़ाहिर हो गया कि यह मुसलमान जासूस है और कोई अहम ख़बर लेकर क़ाहिरा जा रहा है। दोनो लड़कियों, मीरीनिया और बारबरा की आपस में रक़ाबत थी दोनों अपने कमाण्डर को चाहती थीं और कमाण्डर बारबरा को मोहब्बत का धोखा देकर मीरीनिया के साथ गहरी दोस्ती लगाये हुए थे।

बारबरा ने इन्तक़ाम लेने के लिए इस्हाक़ को चोरी छुपे बता दिया कि वह सलीबी जासूसों के जाल में आ गया है। इस्हाक़ उस जाल में ऐसी बुरी तरह आया कि उसने एअतराफ़ कर लिया कि वह सुल्तान अय्यूबी का जासूस है और हलब से आया है। सलीबियों के सरबराह ने उससे पूछा कि वह क्या ख़बर ले जा रहा है? इस्हाक़ ने बताया कि ख़बर सिर्फ़ इतनी सी है कि नुरूद्दीन ज़ंगी की बेवा रज़ीअ ख़ातुन ने अज़ाउद्दीन के साथ शादी कर ली है। सलीबी सरबराह ने कहा कि यह ख़बर पुरानी हो गयी है। और अब सुल्तान अय्यूबी शाम की तरफ़ पेशक़दमी करने वाला है।

इस सलीबी ने इस्हाक़ तुर्क से कहा कि वह सलीबियों के लिए जासूसी करे और यह भी कि वह बताये कि वह क्या राज़ ले के जा रहा था और बैरूत में जो मुसलमान जासूस हैं वह कौन–कौन हैं और अगर वह नहीं बतायेगा तो उसे सलीबी इलाके में लेजाकर कैदखाने के तहख़ाने में डाल दिया जाएगा। इस्हाक़ तुर्क ने यह सोंच कर हथियार डाल दिये कि वह उनकी हिरासत से फरार की कोशिश करेगा। उसने वादा किया कि वह सलीबियों के लिए जासूसी करेगा। उससे यह भी पूछा जा रहा था कि वह क्या राज़ लेकर जा रहा है। उसने चन्द एक बातें बता दी जो ज़्यादा शाम के मुसलमान उमरा से तअल्लुक़ रखती थीं। बैरूत के मुतअल्लिक़ उसने बेख़बरी का इज़हार कर दिया और यह भी कहा कि उसे बैरूत के रास्ते का भी इल्म नहीं।

जैसे कि पिछली क़िस्त में बताया जा चुका है कि यह सलीबी जासूसों और तख़रीबकारों की पार्टी थी। उसके साथ उनके मुहाफ़िज़ भी थे और दो लड़कियां। इस पार्टी की नफ़री

आठ नौ थी। यह काहिरा से बैरूत को वापस जा रहे थे। उनके सरबराह ने इस्हाक़ को बताया था कि वह रात को रवाना हो रहे हैं। इस्हाक़ ने जब यह सुना कि वह बैरूत जा रहे हैं तो और ज़्यादा परेशान हो गया। वहाँ उसकी मुलाक़ात अपने नायब से भी हो सकती थी लेकिन यह कोई ऐसा मसला नहीं था, असल मसला तो उसे सुल्तान अय्यूबी को बिल्डून की फ़ौज का डिप्लाइ बताना था और उसे ख़बरदार करना था कि वह बैरूत का मुहासिर तर्क कर दे। उसके बाद इस्हाक़ जान देने के लिए तैय्यार था मगर वह क़ैदी बन चुका था और निहत्था था।

रात को उस काफ़िले ने वहां से कूच किया। इस्हाक़ का हाथ पीठ पीछे बांध कर एक ऊंट पर सवार किया गया था। इस ऊंट पर सामान भी लदा हुआ था। सुल्तान अय्यूबी का यह जासूस बैरूत से क़ाहिरा को रवाना हुआ था मगर क़ाहिरा पहुंचे बग़ैर बैरूत को वापस जा रहा था। मुसाफ़त बड़ी लम्बी थी। इस्हाक़ तुर्क इस उम्मीद पर जा रहा था कि फ़रार की कोई सूरत पैदा कर लेगा।

❖

"मैं अब एक रोज़ भी इन्तज़ार नहीं कर सकता।" सलाहुद्दीन अय्यूबी अपने सालारों से कह रहा था— "फ़ौज तैय्यारी की हालत में है। इस हालत में फ़ौज को ज़्यादा अर्सा रखना मुनासिब नहीं होता। सिपाहियों के एअसाब थक जाते हैं। यह कैफ़ियत जंग के लिए नुक़सानदा होती है। इसके अलावा मैं सलीबियों को तैय्यारी की हालत में दबोच लेना चाहता हूँ। हम जब भी लड़े अपने इलाक़ों में लड़े हैं और इसी पे ख़ुश हुए कि हमने दुश्मन को पस्पा कर दिया है। दुश्मन हमारी ही ज़मीन पर हम्लावर हुआ और पस्पा होकर हमारी ही ज़मीन पर रहा। अब मेरा हर एक इक़्दाम जारहाना होगा। फ़िरंगी फ़ौज बैरूत में है। मुझे इसके मुतअल्लिक़ कोई इत्तलाअ नहीं मिली। अगर बिल्डून ने कोई नक़ल व हरकत की होती तो इत्तलाअ आ जाती। मेरा क़यास यह है कि वह और दूसरे सलीबी हमारे मुसलमान उमरा को अपना हिमायती और हमारा दुश्मन बनाने की कोशिशों में मसरूफ़ हैं। वह एक बार फिर हमें ख़ानाजंगी में उलझायेंगे। वह ज़मीनदोज़ कार्रवाइयों में लगे रहें, हम बैरूत को मुहासिरे में लेंगे और अल्लाह की मदद शामिल हाल रही तो यह अज़ीम शहर हमारे क़ब्ज़े में आजायेगा।"

सलारों के इस इज्लास में सुल्तान अय्यूबी की बहरिया का अमीरूल बहर भी मौजूद था। एक मिस्र वक़ाअ निगार मोहम्मद फ़रीद अबू हदीद ने उसका नाम हिसामुद्दीन लौलूअ लिखा है। यह बहेरी जंग का माहिर और ग़ैर मामूली तौर पर क़ाबिल अमीर अलबहर माना जाताथा। बैरूत चूंकि बहेरा रोम के साहिल पर वाक़ेअ था इसलिए सुल्तान अय्यूबी मुहसिरा मुकम्मल करने के लिए समन्दर की तरफ़ से फ़ौज भेजने का फ़ैसला कर चुका था।

'जिन दस्तों को बहरी जहाज़ों से जाना और साहिल पर उतरना है वह सिकन्दरिया पहुंच चुक हैं। हिसामुद्दीन को हिदायात दी जा चुकी हैं।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा—"समन्दर से जाने वाले दस्ते जल्दी मंज़िल पर पहुंच जाएंगे, इसलिए यह कुछ दिन बाद रवाना होंगे ताकि ख़ुश्की वाले दस्ते पहुंच जाएं, समन्दरी दस्ते साहिल पर उतरेंगे। तेज़ रफ़्तार क़ासिद हमें उतरने की इत्तलाअ देंगे। शहर पर उनकी यलग़ार तूफ़ानी होगी। अगर फ़िरंगियों ने हथियार

न डाले तो आप सब को इजाज़त होगी कि शहर को तबाह व बर्बादकर दें। औरत, बच्चे,बूढ़े औ मरीज़ पर हाथ नहीं उठाया जाएगा। उन्हें पनाह में लिया जाएगा। फौजियों को हलाक नहीं कैद किया जाएगा। किसी सूरत में लूट मार नहीं होगी। आप सबको इजाज़त होगी कि उन एहकाम की खिलाफवरज़ी करने वालों को मौका पर कत्ल कर दें, ख़्वाह वह कितने ही ऊंचे ओहदे के अस्करी क्यों न हों। ख़ुश्की की तरफ़ से जाने वाले दस्तों की पेशक़दमी अमन के अन्दाज़ से नहीं जंगी रफ़्तार से होगी। पड़ाव बग़ैर ख़ेमो के होंगे। कोई सामान खुला नहीं जाएगा। सबको पानी महदूद मिकदार में मिलेगा। खाना पकाया नहीं जाएगा। ख़जूरों वग़ैरह का ज़ख़ीरा साथ जा रहा है। जानवरों को पूरी ख़ुराक दी जाएगी।"

सुल्तान अय्यूबी ने चादर जितने चौड़े कपड़े पर क़ाहिरा से बैरूत तक का नक़्शा तैय्यार कर रखा था जो उसने दिवार के साथ लटकाया और पेशक़दमी के रास्ते पर उंगली चलाते हुए कहा– "यह होगा हमारा पेशक़दमी का रास्ता।"

इज्लास की ख़मोशी और ज़्यादा गहरी हो गयी। सुल्तान अय्यूबी ने सबके चेहरों को देखा और मुस्कुरा कर बोला– "ख़मोश क्यों हो? कहते क्यों नहीं हम दुश्मन के इलाकों में से गुज़र कर जा रहे हैं....मेरे दोस्तों! हम इहतियात के उसूलों पर जंग लड़ते रहे हैं। पेशक़दमी से पहले हम पहलूओं की हिफ़ाज़त और पस्पाई का रास्ता देखते रहे हैं। इसका नतीजा यह है कि सलीबी फ़िलिस्तीन पर काबिज़ हैं और वह दमिश्क और बग़दाद पर काबिज़ होकर मक्का और मदीन मनव्वरह की तरफ़ बढ़ने के मंसूबे बनाये हुए हैं। ज़ेयाद का बेटा तारिक समुन्दर से दूर मिस्र के साहिल पर बैठा रहता तो यूरोप तक इस्लाम का परचम कभी नहीं पहुंचता। क़ासिम का बेटा मोहम्मद इस क़दर ख़तरनाक और इस क़दर लम्बी मुसाफ़त तय करके हिन्दुस्तान पहुंचा था जिससे तारीख़ के वर्क़ भी फड़फड़ा उठे थे। सलीबी बहुत दूर से हमारी सरज़मीन में आये थे। अगर आप इस्लाम की बुलन्दी चाहते हैं तो आग में से गुजरना होगा। अगर सिर्फ़ हुकूमत करनी है तो आओ मिस्र और शाम को टुकड़ों में बांट लें और बादशाह बन कर बैठ जाएं। फिर अपनी अपनी बादशाही को कायम करने रखने के लिए सलीबियों और यहूदियों से मदद लेते रहेंगे और अपना दीन व ईमान उनके पास गिरवी रख देंगे।"

"मोहतरम सुल्तान!" एक सालार ने उठकर कहा– "हम एहकाम और हिदायात के मुन्तजिर हैं। हममें से कोई भी इससे ख़ौफ़ज़दा नहीं कि हम दुश्मन के इलाकों से गुज़रेंगे। हमें यह बताइये कि उन इलाक़ों से गुज़रते हमारी तरतीब क्या होगी? क्या हर दस्ता अपनी हिफ़ाज़त ख़ुद करेगा?"

"नहीं!" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "मैं उन्हीं हिदायात की तरफ़ आ रहा था। हर दस्ता अपनी पेशक़दमी जारी रखेगा। दायें–बायें, आगे और पीछे जो कुछ होता रहे उसकी तरफ़ आप ध्यान नहीं देंगे। रस्द इकट्ठी नहीं जा रही। उसे कई हिस्सों में तक़सीम कर दिया गया है ताकि दुश्मन उसे तबाह न कर सके। सारी फ़ौज की हिफ़ाज़त छापामार जैश करेंगे। छापामारों के सालार सारम मिस्री यहाँ मौजूद हैं। उन्हें बहुत पहले हिदायात दे दी गयी थीं।

उन्होंने छापामारों को तरबियत और मश्क दे ली है। बाकी सब अपनी नज़रें बैरूत पर रखेंगे।"

सुल्तान अय्यूबी ने हर किस्म की हिदायत दे कर कहा– "कूच आज रात के पहले पहर होगा, और सबसे ज़रूरी इहतियात यह करनी है कि इस कमरे से बाहर किसी को पता नहीं चले कि हमारी मंज़िल क्या है। सिपाहियों और कमानदारों तक के कान में न पड़े कि हम कहाँ जा रहे हैं।"

सुल्तान अय्यूबी के वहम व गुमान में भी नहीं था कि बैरूत में उसके इस्तकबाल का इन्तज़ाम कर दिया गया है और वह फ़िरंगियों को बेख़बरी में शायद न दबोच सके।

रात को जब फौज कूच कर रही थी, सुल्तान अय्यूबी अपनी हाई कमान के सालारों के साथ रास्ते में खड़ा हर दस्ते की सलामी ले रहा था और दुआएं दे रहा था। उसके साथ उसके एक बेटे का बुज़ुर्ग अतालिक भी खड़ा था। सुल्तान अय्यूबी असातज़ा और उलमा की बहुत क़दर करता था। मोहम्मद फ़रीद की तहरीर के मुताबिक जब फ़ौज का आख़िरी दस्ता भी चला गया तो सुल्तान अय्यूबी भी रवाना होने लगा, उसके बेटे के अतालिक ने अरबी में एक शेर पढ़ा जिसका तरजुमा यूं है।

"आज .... के फूल इरार की ख़ुश्बू से लुत्फ उठा लो। शाम के बाद यह फूल नहीं मिला करता।"

यह मिस्री वकाअ निगार लिखता है कि उस वक़्त तक सुल्तान अय्यूबी का मिज़ाज हशाश बशाशा था मगर यह शेर सुनकर उसपर उदासी तारी हो गयी। उसने बवक़्ते रुख़सत इस शेर को बदशगूनी समझा। वह फ़ौज के पीछे रवाना हो गया। रास्ते में उसने अपने सालारो से कहा– "इस बुज़ुर्ग से मुझे तवक्को थी कि अलविदा के वक़्त दुआएं देंगे। उन्होंने ऐसा शेर सुना दिया है जिसने मेरे दिल पर बोझ डाल दिया है।" और हुआ भी यही कि इस रवानगी के बाद सुल्तान अय्यूबी मिस्र आ ही नहीं सका। उसकी बाकी उम्र सरज़ीमन अरब पर जंग व जदल में ही गुज़र गयी। मिस्र वालों को इरार का यह फूल फिर कभी नज़र नहीं आया।

मिस्र से सुल्तान की रवानगी मई 1182 ई० में हुई थी।

❖

सेहरा का वह ख़ित्ता बड़ी ही हौलनाक था जहाँ सलीबी जासूसों और तख़रीबकारों का काफिला दाख़िल हो गया। इस्हाक तुर्क उनका कैदी था लेकिन अब उसके हाथ बंधे हुए नहीं थे। दो दिन और दो रातें उसके हाथ खाने के वक़्त के सिवा हर वक़्त बंधे रहते थे। उसने इस पार्टी के सरबराह से कहा था कि वह भाग नहीं सकता। भाग कर जायेगा कहाँ। पा प्यादा तो वह कहीं जा नहीं सकता। बड़ी मुश्किल से दो कोस चलेगा और सेहरा उसे उसी तरह बेहोश करके ख़त्म कर देगा जिस तरह वह बेहोश हो कर पकड़ा गया था। सरबराह ने अपने साथियों से मशवरा करके हाथ खोल दिए थे और उनसे कहा था कि उसपर नज़र रखें। इस्हाक़ तुर्क ने उनपर एतमाद जमा लिया। उसने सुल्तान अय्यूबी और दूसरे मुसलमान हुक्मरानों को बुरा भला कहना शुरू कर दिया था। उसने सलीबी सरबराह को यक़ीन दिला दिया था कि वह उनका जासूस बन जाएगा मगर उससे जब यह पूछते थे कि वह क्या राज़ लेकर जा रहा था

तो वह सही जवाब नहीं देता था।

दो सलबी लड़कियों की रकाबत बदस्तूर चल रही थी। मीरीनिया अपने सरबराह की मन्जूरे नज़र थी और बारबरा को सरबराह ने इस हद तक धुतकार दिया था कि उसके साथ जो भी बात करता तंज़िया करता था। बारबरा बुझ के रह गयी थी। मीरीनिया इस कोशिश में थी कि वह इस्हाक़ तुर्क के सीने से वह राज़ निकाल ले जो वह काहिरा ले के जा रहा था। उस दिलकश लड़की ने रातों को इस्हाक़ के पास बैठकर उसके जज़्बात को मुश्तअिल करने का हर दाव आज़मा लिया लेकिन इस्हाक़ पत्थर का बुत बना रहा। बारबरा की ख़्वाहिश यह थी कि इस्हाक़ मीरीनिया को कुछ भी न बताये। पार्टी के सरबराह के बाद का रूत्बा मार्टिन नाम के एक आदमी का था। यह आदमी बारबरा को चाहता था मगर बारबरा ने उसे बुरी तरह धुतकार दिया था। वह इस लड़की को धमकियां भी दे चुका था कि उसने काहिरा में जो ग़ल्तियां की हैं उनकी सज़ा दिलायेगा। यही धमकी उसे सरबराह भी दे चुका था। वह मायूस तो थी ही, अब ख़ौफ़ज़दा भी रहने लगी थी।

बारबरा का ख़ून उस वक़्त खौलता था जब मीरीनिया उसके साथ तंज़िया बात करती थी। एक रोज़ उसने बारबरा से कहा– "बारबरा! तुम इस क़ाबिल नहीं हो। तुम्हारी खोपड़ी मे दिमाग़ है ही नहीं। तुम किसी क़हवा ख़ाने में नाचने और गाहकों का दिल बहलाने पर जाने वाली औरत हो। मेरा कमाल देखो। सेहरा में भी एक मुसलमान जासूस को पकड़ लिया है। यह मेरा शिकार है। तुम उसके क़रीब न जाना। बैरूत में इसका मुझे ईनाम मिलेगा।"

बारबरा जल उठी। उस रात उसका दिमाग़ जैसे जवाब दे गया। मार्टिन तो उसके पीछे पड़ा ही रहता था। उस रात वह ख़ुद मार्टिन के पास गयी और उसे कहा कि वह मीरीनिया से इन्तक़ाम लेना चाहती है। उसने इस ख़ौफ़ का इज़हार भी किया कि बैरूत पहुंच कर उसे सज़ा मिलेगी क्योंकि काहिरा में उससे अपनी ज़मीनदोज़ सरगर्मियों में कोताही हुई थी। वह अपने आप को बेबस और तन्हा महसूस कर रही थी। वह मार्टिन से मदद, हमदर्दी और पनाह माँग रही थी। मार्टिन तो उसका शैदाई था। उसने बारबरा से मदद का मुआविज़ा यह माँगा कि उसी की हो जाए। बारबरा कौन सी शरीफ़ लड़की थी। वह मॉन गयी। गुनाहों मे पली हुई और गुनाहों की तरबियतयाफ्ता लड़की के लिए यह मुआविज़ा जो मार्टिन ने माँगा था कोई ज़्यादा नहीं था। मार्टिन ने फ़ौरन एक तरकीब सोंच ली और बारबरा को बता दी। उस पर अमल दरआमद के लिए अगली रात मुक़र्रर की गयी।

अगली रात जहां क़याम किया गया वह सेहरा का बड़ा ही हौलनाक ख़ित्ता था। दूर–दूर तक अजीब व ग़रीब शकलों के टीले खड़े थे। बाज़ सुतूनो और मीनारों जैसे थे। बाज़ टेढ़ी दिवारों की तरह और कुछ जानवरों की शकलों के भी थे। यह टीले बिखरे हुए थे पानी और सब्ज़े का वहाँ नाम व निसान न था। रात को यह टीले यूं नज़र आते थे जैसे देव खड़े हों। इस ख़ित्ते में काफ़िला शाम अंधेरा फैल जाने के बाद रूका। मार्टिन ने अंधेरे से यह फायदा उठाया कि अपना घोड़ा अपने खेमे के साथ बांधा और ज़ीन उतार कर उसके क़रीब रख दी।

इस्हाक़ के लिए अलग खेमा था जो मार्टिन ने अपने क़रीब नस्ब कराया था। इस्हाक़ के

मुतअल्लिक अब सरबराह भी मुत्मईन हो गया था। रात घोड़ों और ऊंटों के इर्द गिर्द मुहाफ़िज़ सोते थे। ऐसा इमकान नहीं था कि इस्हाक़ घोड़ा खोल लेगा, किसी को पता चले बग़ैर ज़ीन कस लेगा और भाग निकलेगा– काफ़िले वाले थके हुए थे। सब सो गये। इस्हाक़ भी सो गया। आधी रात को किसी के आहिस्ता–आहिस्ता हिलाने पर वह जाग उठा और सरगोशी सुनाई दी– "उठो, साथ वाले ख़ेमे के पास घोड़ा खड़ा है। ज़ीन पास पड़ी है। देर न करो, भागो।"

"कौन हो तुम?"

"बारबरा!" लड़की ने जवाब दिया– "मुझसे यह न पूछना कि मुझे तुम से क्या हमदर्दी हो सकती है। यह मैं ही थी जिसने तुम्हें बताया था कि हम सब सलीबी जासूस हैं और तुम्हें ग़लत बताया जा रहा है कि हम मुसलमान हैं। वक़्त ज़ाया न करना। सब सोये हुए हैं। जल्दी उठो। घोड़े वाले ख़ेमे से बायें तरफ़ हो जाना। आगे रास्ता साफ़ है। मैं अपने ख़ेमें में जाती हूँ।"

बारबरा अपने ख़ेमें में चली गयी। वहाँ कमान पड़ी थी। उसने कमान और तीरों की तरकश उठाई और ख़ेमे से बाहर निकलकर उस रास्ते के क़रीब बैठ गयी जो उसने इस्हाक़ को फ़रार के लिए बताया था। इस्हाक़ ने बड़ी तेज़ी से घोड़े पर ज़ीन डाल कर कस ली। घोड़ा खोला और दबे पांव चल पड़ा। रेत पर घोड़े के क़दमों की आहट नहीं थी। सब सोये हुए थे। ख़ेमे से ज़रा दूर जाकर वह घोड़े पर सवार हुआ। कुछ और आगे जाकर उसने ऐड़ लगाई। सेहरा की ख़मोश और ख़ुनक रात में कमान की 'पिंग' सुनाई दी और एक तीर इस्हाक़ की पीठ में उतर गया। फ़ौरन बाद दूसरा तीर आया और यह भी उसके पीठ में लगा। इसके साथ ही एक लड़की का शोर सुनाई दिया– "भाग गया। भाग गया। उठो। जागो।"

सब जाग उठे। मशाले जलाई गयीं। बारबरा शोर बपा किये हुए थी कि क़ैदी भाग गया है। उसके हाथ में कमान थी। बहुत जल्दी घोड़े दौड़ा दिए गये। उन्हें ज़्यादा दूर न जाना पड़ा। इस्हाक़ को दो तीरों ने घोड़े से गिरा दिया था और घोड़ा कुछ दूर खड़ा था। तीर क़रीब से चलाये गये थे इसलिए जिस्म में गहरे उतर गये थे। इस्हाक़ अभी होश में था। उसे उठा कर ले आए। सरबराह ने उससे पूछा कि उसे भागने में किसी ने मदद की थी? उसने जवाब दिया– "नहीं। मैंने घोड़ा और ज़ीन देखी। सब सो गये थे। मैं भाग उठा।" उसके फ़ौरन बाद वह ग़शी में चला गया और ग़शी में ही शहीद हो गया।

"मैंने उसे घोड़े पर सवार होते और भागते देखा था।" इत्तफ़ाक़ से कमान और तरकश मेरे ख़ेमे में थी। मैंने उठाई और उसके पीछे दौड़ी। यके बाद दिगरे दो तीर चलाए। दोनों उसे लग गये वरना निकल गया था।"

"आज ही यह इत्तफ़ाक़ क्यों हुआ कि कमान और तकरश तुम्हारे ख़ेमें में थी? मीरीनिया ने बारबरा से पूछा।

"और मार्टिन यह घोड़ा तुम्हारा था।" सरबराह ने कहा– "यह कहाँ था और ज़ीन कहाँ थी?"

"यह घोड़ा क़ैदी के ख़ेमें के क़रीब बंधा था।" एक मुहाफ़िज़ ने कहा।

"तुम मेरे इस कारनामे पर मिट्टी डालना चाहते हो?" बारबरा ने ग़ुस्से से कहा– "यह

कोई अहम राज काहिरा ले जा रहा था। मैंने उसे सिर्फ भागने से नहीं रोका बल्कि राज़ काहिरा पहुंचने से रोका है।"

यह दर असल मार्टिन का तैय्यार किया हुआ ड्रामा था कि इस्हाक़ को भागने की सहूलत दो और बारबरा घात में बैठ कर उस पर तीर चलाए ताकि यह कारनामा बारबरा के खाते में लिखा जाए, मगर उनका सरबराह तजुर्बाकार जासूस और सुराग़सां था। उसने मार्टिन और बारबरा को गहरी नज़िरहें से देखा और कहा– "मार्टिन! मैं अपने पेशे में तुमसे बहुत अर्सा पहले आया था। बैरूत पहुंचने तक तुम और बारबरा कोई बेहतर जवाब सोंच लो।"

यह उन लोगों की ज़ाती रक़ाबत और दोस्ती दुश्मनी थी सियासत थी जिसका शिकार सुल्तान अय्यूबी का एक बड़ा क़ीमती जासूस हो गया।

❖

सुल्तान अय्यूबी की पेशक़दमी बहुत तेज़ थी। उसकी फ़ौज आधी से ज़्यादा मुसाफत तय करके उस इलाक़े मे दाख़िल हो गयी थी जिस पर सलीबियों का साया पड़ा हुआ था। उस जगह तक फ़ौजियों का हुलिया एक जैसा था। गर्द की तहों में किसी का चेहरा पहचाना नहीं जाता था। मई का महीना था जब सेहरा लोहे की तरह तप रहा था। सब ने मुंह सर कपड़ों में लपेट रखे थे। कोई भी इजाज़त के बेग़ैर पानी नहीं पी सकता था। दस्ते तरतीब में नहीं रहे थे। घोड़ों और ऊंटों के सवारों ने पयादों को बारी–बारी से घोड़ों और ऊंटों पर चढ़ाना शुरू कर दिया। फ़िज़ा जल रही थी। और एक गूंज दूर–दूर तक सुनाई दे रही थी। "लाइलाह इल्लल्लाह, लाइलाह इल्लल्लाह" कभी चन्द सिपाही मिल कर कोई तराना गाते थे और फ़ौज जुनून और वजद की कैफ़ियत में चली जा रही थी।

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी फ़ौज के दर्मियान जा रहा था। उसने अपने आपको पानी पीने की इजाज़त नहीं दी थी। उसने घोड़े से ज़िरह ऊपर उठकर देखा और घोड़े का रूख़ बदल कर ऐड़ लगा दी। उसकी हाई कमान के सालारों और दिगर अमला जिसमें तेज़ रफ़तार क़ासिद थे उसके पीछे गये। आगे वही इलाक़ा था जहाँ इस्हाक़ तुर्क शहीद हुआ था। डरावनी शकलों के टीले थे। सुल्तान अय्यूबी ने उन के दर्मियान जाकर घोड़ा रोक लिया और छापामर दस्तों के कमाण्डर सारिम से कहा– "सारिम दोस्त! यहाँ से तुम्हारा काम शुरू होता है। अपने दस्तों को फैला दो। हर जैश दूसरे से दूर रहे। आगे जाने वाले जैश फ़ौरन चले जाएं।"

'और बाक़ी फ़ौज उसी तरह चलती रहे।" सारिम मिस्री के जाने के बाद सुल्तान अय्यूबी ने दूसरों से कहा– "कुछ ही हो जाए फ़ौज पेशक़दमी जारी रखे। हम दुश्मन के इलाक़े में आ गये हैं।"

एहकाम और हिदायात देकर सुल्तान अय्यूबी ने घोड़ा आहिस्ता–आहिस्ता चलाया। उसे एक तरफ़ ज़मीन पर ऐसे आसार नज़र आए जैसे यहाँ कोई मुसाफ़िर रूके हों। वहीं एक लाश पड़ी नज़र आई जो रेत में दबी हुई थी लेकिन नज़र आती थी। सुल्तान रूक गया। लाश खाई हुई थी। हड्डियां नज़र आ रही थीं। एक आदमी ने इस ढांचे को सीधा किया। पीठ पर दो तीर

लगे हुए थे। चेहरे का गोश्त सूख गया था।

"जाने दो।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "किसी काफ़िले का मकतूल मालूम होता है। सेहरा में आकर इन्सान पागल हो जाते हैं।"

सुल्तान अय्यूबी को मालूम नहीं था कि वह उसका अपना काबिल एतमाद जासूस इस्हाक तुर्क था जो उसे यह बताने आ रहा था कि बैरूत न जाना। सलीबियों ने वहाँ अपनी फ़ौज को जिस तरह फैला रखा था उसका नक्शा उसने ज़ेहन में महफ़ूज़ कर लिया था। इस्हाक की हड्डियों का पिंजरा उसे कुछ भी न बता सका।

छापामार जैश इस तरह फैल गये कि पेशकदमी करती हुई फ़ौज के पहलूओं में दो तीन मील दूर तक चले गये चन्द एक जैश हरावल से भी आगे निकल गये तो रात आ गयी। फ़ौज चलती रही। आधी रात के करीब पड़ाव का हुक्म मिला। फ़ौज रुक गयी लेकिन छापामार मुतहरिक और सरगर्म रहे। उनके लिए एहकाम यह थे कि कोई मश्कूक आदमी नज़र आए और वह भागने की कोशिश करे तो उसे हलाक कर दो। कोई काफ़िला देखो तो उसे भी रोक लो और फ़ौज बहुत दूर आगे निकल जाए तो उसे चलने की इजाज़त दो।

फ़ौज चलती रही। रुकती रही। सूरज तुलूअ होता, मुजाहिदों के इस काफ़िले को झुलसता और गुरूब होता रहा, और सुल्तान को पहली इत्तलाअ मिली कि सलीबियों की सरहद की एक चौकी पर अपने छापामार शबखून मार कर सबको ख़त्म कर दिया है। रेगज़ार ख़त्म होता जा रहा था। दरख़्त भी नज़र आने लगे थे और कहीं–कहीं सब्ज़ा भी दिखाई देता था। छोटे–छोटे गांव भी नज़र आने लगे।

बैरूत में बिल्डून अपने मुख़्तलिफ़ फ़ौजी शोबों से रिपोर्टें ले रहा था। उसके पास अभी वही इत्तलाअ थी कि सुल्तान अय्यूबी बैरूत का मुहासिर करेगा। उसने उसका इन्तज़ाम तो कर लिया था लेकिन उसे इससे आगे कोई इत्तलाअ नहीं मिल रही थी कि सुल्तान अय्यूबी ने काहिरा से कूच किया है या नहीं। इस दौरान जासूसों का एक काफ़िला भी बैरूत पहुँच गया था जिस ने इस्हाक तुर्क को पकड़ा और मारा था। यह काफ़िला भी बिल्डून को कोई ख़बर न दे सका। बिल्डून ने देख भाल के लिए बीस पचीस घोड़ सवारों का एक जैश आगे भेजा था। वह भी वापस नहीं आया था। वह वापस आ भी नहीं सकता था।

घोड़ सवारों का जैश बहुत दूर निकल गया था। उसे दूर से गर्द उठती नज़र आई जो किसी काफ़िले की नहीं हो सकती थी। ज़मीन से उठते हुए गर्द के यह बादल फ़ौज के ही उड़ाए हुए हो सकते थे। घोड़ सवार टीलों के अन्दर चले गये। उनका कमाण्डर एक टीले पर चढ़ा और देखने लगा। कहीं से एक तीर आया जो उसकी गर्दन के आर पार हो गया। दूसरे सवार नीचे थे। अचानक उन पर तीर बरसने लगे। उसमें से चन्द एक ने भागने की कोशिश की लेकिन सारिम के मिस्री छापामारों ने किसी को ज़िन्दा न जाने दिया। उनके हथियार और घोड़े कब्ज़े में ले लिए गये।

कोई ख़बर न मिलने के बावजूद बिल्डून और उसके जरनल मुत्मईन थे। उन्होंने बैरूत को मुहासिरे से बचाने के लिए निहायत कारगर इन्तज़ामात कर रखे थे। वह इसलिए भी

मुत्मईन थे कि सुल्तान अय्यूबी अभी काहिरा से रवाना नहीं हुआ और जंग अभी बहुत दूर है, लेकिन जंग शुरू हो चुकी थी। ज्यों—ज्यों सुल्तान अय्यूबी आगे बढ़ता जा रहा था, छापामारों के हम्लों और सरगर्मियों की इत्तलाऐं ज़्यादा आने लगी थीं। अब तो यह इत्तलाऐं भी आने लगी थीं कि इतने मील दूर दुश्मन के एक दस्ते के साथ झड़प में इतने छपामार शहीद और इनते ज़ख्मी हो गये हैं। सुल्तान अय्यूबी ऐसी हर इत्तलाअ पर एक ही जवाब देता—"शहीदों को कहीं दफ्न कर दो....ज़ख्मियों को पीछे भेज दो।"

यह सुल्तान अय्यूबी की जंगी अहलियत का कमाल था कि वह अपनी फौज को ऐसे इलाके से सही व सालिम ले जा रहा था जहाँ जगह—जगह दुश्मन मौजूद था। उसके थोड़ी—थोड़ी नफरी के छापमार जैश शबखून मारते, दुश्मन की जमीअत को बिखेरते और बेकार करते जा रहे थे। बाज़ शबखून बड़े पैमाने की लड़ाई की सूरत इख़्तियार कर जाते थे; लेकिन छापमार जम कर नहीं लड़ते थे। वह भागते दौड़ते, वार करते और दुश्मन की बड़ी से बड़ी जमीअत को बिखेर देते थे। यह झड़पें और ख़ून खराबा सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज से दूर—दूर होता था।

❖

सिकन्दरिया में हिसामुद्दीन लौलूअ का बहरी बेड़ा तैय्यार था। जहाज़ों में जाने वाली फ़ौज भी तैय्यार थी। हिसामुद्दीन ने सुल्तान अय्यूबी की मुसाफ़त और रफ्तार का हिसाब अन्दाज़े से रखा हुआ था। एक रोज़ उसने फ़ौज को जहाज़ों में सवार होने का हुक्म दिया और रात के वक़्त जहाज़ों के लंगर उठाकर बादबान खोल दिए गये। जहाज़ समन्दर के सीने पर सरकने लगे। खुले समन्दर में जाकर हिसामुद्दीन ने जहाज़ों को दूर—दूर फैला दिया। वह माहिर अमीर अलबहर था। उसके जाहज़ों में जो फ़ौज जा रही थी उसके सालारों और नायब सालार सुल्तान अय्यूबी के तरबियतयाफ़्ता थे। वह अंधा धुंध नहीं जा रहे थे। उन्होंने देख भाल के लिए तरबियतयाफ्ता फ़ौजी माहीगीरों के बहरूप में छोटी—छोटी बादबानी कश्तियों में आगे भेज दिए थे।

दिनों रात की मुसाफ़त तय हो चुकी थी। उफ़क पर बैरूत उभरने लगा था मगर कोई कश्ती वापस नहीं आई थी। हिसामुद्दीन ने जहाज़ रोक दिए और देख भाल के लिए एक और कश्ती उतारी। रात को उसके रूके जहाज़ के करीब समन्दर से किसी ने चिल्ला कर कहा—"रस्सा फेंको, रस्सा फेंको।" रस्सा फेंका गया एक बेहरी सिपाही ऊपर आया जो अध मुंआ हो चुका था। वह कशती में था जो समन्दर में उतारी गयी थी। उसने बताया कि उनकी कश्ती को सलीबियों के एक कश्ती ने रोक लिया था। उसमें फ़ौजी थे। हिसामुद्दीन के आदमियों ने कश्ती निकालने की कोशिश की। तीरों का तबादला हुआ। यह आदमी समन्दर में कूछ गया। उसके साथी पकड़े गये या मारे गये, और आदमी यह ख़बर लेकर आ गया कि आगे दुश्मन बेदार है। इससे समझ लिया गया कि देखभाल के लिए जो आदमी भेजे गये थे वह भी पकड़े गये हैं और इमकान यही नज़र आता है कि उन आदमियों से दुश्मन को बहरी बेडे के आमद का इल्म हो गया है।

बहरी बेड़ा बैरूत से इतनी दूर था कि सूरज गुरूब होते बादबान खोले जाते तो जहाज़ आधी रात को बैरूत के साहिल से जा लगते मगर यह ख़तरा था कि साहिल पर सलीबियों ने आतिशगीर गोले फेंकने के लिए मिन्जनिकें लगा रखी हों, जिन से जहाज़ों का बचाना मुहाल हो जाएगा। मगर इन ख़तरों से डरकर पीछे रहना भी मुनासिब नहीं था। सुल्तान अय्यूबी को समन्दर की तरफ से मदद की शदीद ज़रूरत होगी..... इस असना में एक कश्ती नज़र आई। यह अपने बहरी बेड़े की थी। इसके बहरी सिपाही दो सलीबियों को समन्दर से पकड़ लाए थे। यह उसी कश्ती में थे जिसने हिसामुद्दीन के बेड़े की क़श्ती पर हम्ला किया था। यह भी समन्दर में कूद गये थे और तैरते–तैरते इधर उधर निकल आए थे। उन्हें हाथ पांव बांध कर समन्दर में जिन्दा फेंक दिए जाने की धमकी दी गयी तो उन्होंने बताया कि साहिल पर बिल्डून की फौज घात में है और जहाज़ों को आग लगाने के लिए मिन्जनिकें तैय्यार हैं। इन सिपाहियों से मज़ीद पूछ गछ से मालूम हुआ कि बैरूत की फौज अन्दर कम और शहर से दूर–दूर ज़्यादा है।

यह ख़बर बड़ी ख़ौफ़नाक थी। अमीर अलबहर हिसामुद्दीन और सालारों ने बाहम ग़ौर किया और इस नतीजे पर पहुंचे कि फ़िरंगियों को हमारी आमद का पता चल चुका है। यह मालूम नहीं था कि सुल्तान अय्यूबी को इल्म है या नहीं। फ़ैसला हुआ कि सुल्तान को ख़बर दी जाए। इस वक़्त उसे बैरूत के करीब होना चाहिए था। इस फ़ैसले के तेहत उसी वक़्त एक कश्ती उतारी गयी जिसमें दो घोड़े और दो क़ासिद थे। उन्हें बताया गया कि वह साहिल पर किस जगह उतरें, और वह से किस सिम्त जाएं। उन्हें बता दिया गया कि वह सुल्तान अय्यूबी को क्या ख़बर देंगे।"

❖

यह बादबानी कश्ती थी। हवा का रूख़ मवाफ़िक़ था। बैरूत से दूर जुनूब की तरफ साहिल से जा लगी। वहां चट्टाने थीं। क़ासिदों ने घोड़े उतारे। उन पर सवार हुए और रवाना हो गये। कश्ती वहीं चट्टानों में छुपा दी गयी।

क़ासिद रात को पहुंचे मगर सुल्तान अय्यूबी फ़िरंगियों के फंदे में आ चुका था। उसने बैरूत को मुहासिरे में ले लिया था। ख़ुश्की की तमाम इतराफ़ उसने फौज को फैला दिया था। सुल्तान अय्यूबी ने अपने महफ़ूज़ा दस्ते को जवाबी हम्ले के लिए इस्तेमाल किया मगर फिरंगियों ने जम कर मुकाबला किया। अगले रोज़ मुहासिरे के एक और हिस्से पर ऐसा हम्ला हुआ। सुल्तान अय्यूबी ने उसके खिलाफ़ भी महफूजा को भेजा। तब सुल्तान ने महसूस किया कि वह महफूजा को इस्तेमाल किए बेग़ैर जंग जीत लिया करता था मगर उसके महफूजा की आधी क़ुव्वत इब्तेदा में ही लड़ाई में झोंकी गयी थी। वह मुहासिरे को कमज़ोर नही करना चाहता था। उसे कुछ शक होने लगा।

उसका देख भाल और छापामारों का इन्तज़ाम निहायत अच्छा था। उसे इत्तलाएं मिलने लगीं कि अक़ब से हर तरफ दुश्मन मौजूद हैं। एक छापामार जैश में से सिर्फ एक सिपाही ख़ून मे डूबा बच कर आया। वह सिर्फ यह बता कर शहीद हो गया कि उसका पूरा जैश फिरंगियों के पूरे दस्ते के घेरे में आ गया था। कोई भी जिन्दा नहीं रहा, और यह कि हमारा मुहासिरा

फ़िरंगियों की बहुत बड़ी फौज के मुहासिरे में है।

उसके फौरन बाद समन्दरी क़ासिद पहुंच गये। उन्होंने समन्दर की ख़बर सुनाई और हिसामुद्दीन के लिए हुक्म माँगा।

"सलीबियों को मैंने इस तरह तैय्यारी की हालत में कभी नहीं देखा था। सुल्तान अय्यूबी ने अपनी हाई कमान के सालारों वग़ैरह से कहा– "साफ़ पता चल रहा है कि उन्हें क़ब्ल अज़ वक़्त पता चल गया है कि हम बैरूत को मुहासिरे के लिए आ रहे हैं। हम खुद मुहासिरे में आ गये हैं। अपने मुस्तक़िर से इतनी दूर आकर हारी हुई जंग नहीं लड़ सकता।" उसने हिसामुद्दीन के क़ासिदों से कहा– "हिसामुद्दीन से कहो कि बेड़ा वापस ले जाए और उसमें जो फौज है सिकन्दरिया उतार कर दमिश्क़ रवाना हो जाए।"

क़ासिद चले गये तो सुल्तान अय्यूबी ने मुसिल की तरफ़ पस्पाई की हिदायत देनी शुरू कर दी, लेकिन पस्पाई आसान नहीं थी। इसके लिए छापामारों को इस्तेमाल किया गया। रातों को दस्ते आहिस्ता–आहिस्ता समेटे और निकाले गये। कुछ झड़पें हुईं लेकिन छापामारों और अक़्बी दस्ते ने जान और ख़ून की कुर्बानियां देकर फौज को वहाँ से निकाल लिया। फ़िरंगियों ने तआक़्क़ुब न किया।

मुसिल के रास्ते में सुल्तान अय्यूबी को मुसिल से आया हुआ एक जासूस मिला जिसने उसे इस्हाक़ तुर्क की रवानगी और मुसिल के वालिये अज़ाउद्दीन के अज़ाइम के मुतअल्लिक इत्तलाअ दी। सुल्तान गुस्से से लाल हो गया। उसने हुक्म दे दिया कि मुसिल को मुहासिरे में ले लिया जाए।

क़ाज़ी बहाउद्दीन ने अपनी याददाश्तों में लिखा है– "सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी बरोज़ जुमेरात ग्यारह रजब 578 हि0 (नवम्बर 1182 ई0) मुसिल के क़रीब पहुंचा। मैं उस वक़्त मुसिल में था। अज़ाउद्दीन ने मुझे कहा कि मैं ख़लीफ़ा की मदद हासिल करने जाऊं। मैं दजला के साथ–साथ इतनी तेज़ रफ़्तारी से गया कि दो दिनों और दो घंटों में बग़दाद पहुंच गया। ख़लीफ़ा ने मुझे कहा कि वह शैख़ुलउलमा से कहेंगे कि मुसिल के वाली और सुल्तान अय्यूबी के दर्मियान सुलह सफ़ाई करा दें। मुसिल के वालिये ने आज़र ....के हुक्मरान को मदद के लिए कह दिया था मगर इस हुक्मरान ने जो शराईत पेश कीं उनसे बेहतर यह था कि अज़ाउद्दीन सुल्तान अय्यूबी के आगे हथियार डाल दे।"

सुलह सफ़ाई की बात चीत होने लगी। 16 शाबान 578 हि0 (15 दिसम्बर 1182 ई0) के रोज़ सुल्तान अय्यूबी ने मुसिल का मुहासिरा उठा लिया और नसीबा के मुकाम पर फौज को लम्बे अर्से केलिए पड़ाव डालने का हुक्म दे दिया।

"बैरूत का मुहासिरा सलीबियों ने नहीं मेरे ईमान फ़रोश भाईयों ने नाकाम किया है।" सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अपने सालारों से कहा– "मैं आपस के ख़ून ख़राबे से बचना चाहता था मगर मुम्किन नज़र नहीं आता।"

❖❖

सुन्नत, सारा और सलीब

बैरूत के मुहासिरे की नाकामी सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की दूसरी शिकस्त थी। इस नाकामी में उसने खोया कुछ भी नहीं मगर पाया भी कुछ नहीं था। इसलिए वह उसे अपनी शिकस्त समझता था। अगर सुल्तान अय्यूबी की नहीं तो यह उसकी इन्टेलीजेंस की शिकस्त ज़रूर थी। बैरूत वालों को कब्ल अज़ वक़्त पता चल गया था कि सुल्तान अय्यूबी बैरूत को मुहासिरे में लेने आ रहा है। सलीबियों को यह ख़बर क़ाहिरा से ही मिली होगी, हालांकि सुल्तान ने अपनी हाई कमाण्ड के सालारों के सिवा किसी को पता नहीं चलने दिया था कि उसका हदफ़ क्या है।

"आप इसे शिकस्त न कहें।" एक सालार ने सुल्तान अय्यूबी को मायूसी के आलम में देखकर कहा-- "बैरूत वहीं है जहाँ पहले था। वहीं रहेगा। हम इस शहर पर एक बार फिर हम्ला करेंगे।"

"इतना बड़ा शिकार मेरे हाथ से निकल गया।" सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा-- "मैं उसे मुहासिरे में लेने और उस पर क़ाबिज़ होने आया था लेकिन मैं ख़ुद मुहासिरे में आ गया और मुझे मुहासिरा उठा कर पस्पा होना पड़ा। यह शिकस्त नहीं तो और क्या है? हमें तस्लीम करना चाहिए कि यह शिकस्त है। मेरे मुशीरों और सालारों में भी ईमान फरोश मौजूद हैं।"

ख़ेमे में सन्नाटा तारी हो गया। उस वक़्त सुल्तान अय्यूबी नसीबा के मक़ाम पर ख़ेमा ज़न था। बहुत दिन गुज़र गये थे। उसकी फ़ौज बहुत थकी हुई थी। बहुत सी नफ़री ज़ख्मी भी थी। उसने क़ाहिरा से बैरूत तक बहुत तेज़ पेशक़दमी कराई थी। महीनों का फ़ासला दिनों में तय किया था। फासला तय करने के फ़ौरन बाद फ़ौज को सलीबियों के मुहासिरे से निकलने के लिए ख़ूंरेज़ लड़ाई लड़नी पड़ी, फिर तेज़ रफ़तार पस्पाई हुई। सुल्तान अय्यूबी फ़ौज को मुकम्मल आराम देने के लिए नसीबा के मुक़ाम पर पड़ाव किया....आराम फ़ौज केलिए था, सुल्तान अय्यूबी की तो नींद उड़ गयी थी। दिन को वह बेचैनी से ख़ेमे में टहलता या बाहर निकल कर इधर उधर घूमता रहता था। अपने सालारों के साथ भी कम बोलता था। इसी कैफ़ियत में उसे एक सालार ने कहा कि उसे शिकस्त न कहें। सुल्तान अय्यूबी का जवाब सुनकर सालार ख़ामोश हो गया। सुल्तान अय्यूबी अपने ख़ेमे में टहल रहा था। वहाँ एक सालार और भी था। बहुत देर तक दोनों सालार ख़मोश रहे। सुल्तान अय्यूबी के मिज़ाज में जैसे गुस्सा था ही नहीं, फिर भी सालार उसके साथ बात करते डरते थे।

"तुम दोनों क्या सोंच रहे हो?" सुल्तान अय्यूबी ने पूछा।

"मैं सोंच रहा हूँ कि आप इसी तरह मायूसी और ग़ुस्से की हालत में रहे तो आप के फ़ैसले मज़ीद नुक़सान का बाइस बनेंगे।" एक सालार ने कहा– "मैंने आपको इस हालत में रम्ला के शिकस्त के वक़्त भी नहीं देखा था। अपने आप को ठंडा करें और इस जज़्बाती कैफ़ियत से निकलने की कोशिश करें।"

"और मैं सोंच रहा हूँ कि कुफ़्फ़ार हमारी जड़ों में उतर गये हैं।" दूसरे सालार ने कहा– "हम इस वक़्त अपनी सरज़मीन पर खड़े हैं। हमारी जंग सलीबियों से है और हमारा मक़सद फ़िलिस्तीन की आज़ादी है मगर मुसलमान उमरा में से कोई एक भी अमीर हमारे पास नहीं आया। अज़ाउद्दीन और इमादुद्दीन कहाँ हैं? क्या उन्होंने हमारे साथ मुआहिदा किया था कि ज़रूरत के वक़्त हमें अपनी फ़ौज देंगे? उनका यह सर्द रवैया बताता है कि वह अभी तक सलीबियों के हाथों में खेल रहे हैं। तो क्या हम आपस में लड़ते रहेंगे?"

सुल्तान अय्यूबी ख़ेमे में टहल रहा था। रुक गया। आसमान की तरफ़ देख कर उसने आह भरी और कहा– "मेरे रसूल की उम्मत का ज़वाल शुरू हो गया है। जब ग़ैर मज़हब के असरात क़ुबूल किये जाते हैं तो इसका नतीज़ा यही होता है कि जो हम देख और भुगत रहे हैं। सलीबी और यहूदी मुसलमान को अपना ग़ुलाम बनाने के लिए इन्सानी फ़ितरत की सबसे बड़ी कमज़ोरी को इस्तेमाल कर रहे हैं यह कमज़ोरी लालच है। इन्सानों पर हुकूमत करने का लालच, बादशाह और शहज़ादा बनने का लालच और यह लालच कि मैं रूई जैसे मुलायम कालिनों पर चलूं और लोग नंगे पांव गर्म रेत पर चलें। उनके पांव जलें तो मेरे आगे सज्दे करें। जब यह लालच दिल में उतर जाता है तो दिल से ईमान निकल जाता है। अक़्ल पर ऐसा पर्दा पड़ता है कि क़ौमी ग़ैरत और ख़ुद्दारी बेमानी से जज़्बात बन जाते हैं। जब कोई इन्सान इस मुक़ाम पर पहुँच जाता है तो वह ग़द्दारी को क़ाबिले फ़ख़्र इक़दाम समझता है। सलीबियों ने हमारे बेशतर उमरा को इस मुक़ाम तक पहुँचा दिया है। उन्होंने अपनी तहज़ीब की बेहायाई मुसलमानों में भी फैला दी है। जब तहज़ीब बदल जाती है तो मज़हब एक कमज़ोर सा ख़ोल बनके रह जाता है जो उतार का फेंका जा सकता है और क़ौम को धोखा देने के लिए अपने ऊपर चढ़ाया भी जा सकता है।"

दोनों सालार ख़ामोशी से सुन रहे थे। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ठहरी–ठहरी आवाज़ में बोल रहा था। वह चुप हो गया, फ़िर गहरा सांस लेकर बोला– "तुम महसूस नहीं कर रहे कि यह भी मेरी शिकस्त है कि मैं जो अमल के मैदान का मर्द हूं ख़ेमे में खड़ा औरतों की तरह बातें कर रहा हूँ। हमें इस वक़्त बैतुल मुक़द्दस में होना चाहिए था। मेरी पेशानी मजिस्दे अक़्सा में सज्दे करने को तड़प रही है। मुझे उन शहीदों के ख़ून का ख़िराज अदा करना है जो फ़िलिस्तीन की आबरू और आज़ादी पर क़ुर्बान हो गये हैं।" सुल्तान अय्यूबी की आवाज़ में यकलख़्त क़हर आ गया। उसने टहलते टहलते रूक कर सालारों के सामने खड़े होकर कहा–"क्या तुम उन बच्चों का सामना कर सकते हो जिन्हें मेरे हुक्म और मेरे अज़ाइम ने यतीम किया है? क्या तुम उन औरतों के सामने जाकर अपना सर ऊंचा कर सकते हो जिनके ख़ाविन्द नारे लगाते हमारे साथ आये और उनके लहूलुहान जिस्म घोड़ों के सुम्मों से क़ीमा

हो गये? तुम खुबरू और जवान छापामारों को कैसे भूल सकते हो जो हमसे बहुत दूर दुश्मन के इलाकों में दूर अन्दर जाकर शहीद हो गये?.........मैं उनमें से किसी के माँ के सामने जाने से डरता हूँ। डरता इसलिए हूँ कि उसने यह कह दिया कि मेरा बेटा वापस करो या मुझे किब्ला अव्वल ले चलो मैं अपने बेटे की शहादत पर शुकराने के नफिल पढ़ूं तो मैं उस माँ को क्या जवाब दूंगा?

"शहीदों का ख़ून रायगां नहीं जाएगा मोहतरम सुल्तान!" यह छापामार दस्तों के सालार सारिम मिस्री की आवाज़ थी जो सुल्तान अय्यूबी के ख़ेमे के दरवाज़े में आ खड़ा हुआ था। सुल्तान अय्यूबी की उधर पीठ थी।

"किसी शहीद की माँ अपने बेटे के ख़ून का हिसाब नहीं माँगेगी। रसूल का कलमा पढ़ने वाली माओं का दूध आबे ज़मज़म जैसा पाक और मुकद्दस है। उस दूध के पले हुए बेटे आपके हुक्म से नहीं अल्लाह के हुक्म से लड़ा करते हैं। आप उन के ख़ून का खिराज अपने ज़िम्मे न लें। ग़द्दारों के ख़ून की बात करें। हमारी तलवारें ग़द्दारों के ख़ून की प्यासी हैं।"

"तुमने मेरे हौसले पर जान डाल दी है सारिम!" सुल्तान अय्यूबी ने कहा—"मेरे यह दोनों रफ़ीक़ भी यही कह रहे थे कि मायूस और जज़्बाती होने की ज़रूरत नहीं।"

"ज़रूरत है भी क्या!" सारिम मिस्री ने कहा— "शिकस्त शिकस्त है मगर दायमी नहीं। हम इसे फ़तह में बदल कर दिखायेंगे।"

"अगर बात मैदान जंग की होती तो मैं एक बाज़ू कटवाकर भी परेशान और मायूस नही होता।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा— "मुश्किल यह पैदा हो गयी है कि दुश्मन ज़मीन के नीचे चला गया है। सलीबी और यहूदी हमारी कौम में ऐसे ज़हरीले असरात छोड़ रहे हैं जो पुरकशिश और तिलिस्माती हैं। कौम और फौज के मुतअल्लिक मुझे इत्मीनान है। सिपाही और आम आदमी इन असरात को कुबूल नहीं करता। उन्हें यह चन्द एक अफ़राद कुबूल करते हैं और कर चुके हैं जिनका असर कौम पर है। यह उमरा और हाकिमों का तब्का है। इनमें बाज़ मज़हबी पेशवा भी शमिल हैं और उनमें चन्द एक सालार भी हैं जो रियासतों के हुक्मरान बनने के ख़्वाब देख रहे हैं। यह ईमान फ़रोशों को एक गिरोह है जो सीधे सादे लोगों को मज़हब का धोखा देकर उनमें मज़हब का जुनून पैदा करते और उन्हें मुसलमान भाईयों के खिलाफ़ उकसाते और भड़काते और अपने मुफाद के लिए इस्तेमाल करते हैं। ग़ैर मज़हब के लोग मुसलमान उमरा इसी सतह के तब्के को अपने ज़ेरे असर लेते हैं। फिर यह तब्का लोगों को मज़हब और मोहब्बत का धोखा देता और उन्हें भूखा और बेबस रखता है ताकि लोग यह न देख सकें कि यह तब्का दरपरदा क्या कर रहा है।"

"मगर हम आलिम नहीं।" एक सालार ने कहा—"हम ख़तीब और मस्जिदों के इमाम नहीं की तलवारें फेंक कर लोगों को वाअज़ और ख़ुत्बे सुनाते फिरें। हमें यह मसला तलवार से हल करना होगा। इन पत्थरों को घोड़ों के सुम्मों तले रौंदना होगा।"

"यह लोग कुर्आन के मुन्किर हैं।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा— "कुर्आन का हुक्म बड़ा वाजेह है कि कुफ़्फ़ार को दोस्त मत समझो। उनकी बातों में न आओ। तुम नहीं जानते कि

उनके दिल हमारे ख़िलाफ़ कुदूरतों से भरे हुए हैं।"

"यह लोग नाम के मुसलमान हैं।" सारिम मिस्री ने कहा—"कुर्आन का उनके साथ कोई तअल्लुक नहीं।"

"यह सूरतेहाल बहुत नुक़सानदह है कि इन लोगों ने कुर्आन भी हाथों में उठा रखा है और कुफ़्फ़ार के इशारों पर भी नाच रहे हैं।" सुल्तान अय्यूबीने कहा— "कौम ने हमेशा ऐसे ही सरबराहों के हाथों धोखा खाया है जिनके हाथ में कुर्आन और दिल में सलीब है। यह लोग आज़ान की आवाज़ पर ख़ामोश हो जाते हैं मगर उनके दिलों में गिरजों के घंटे बजते हैं। कौम उनका असली रूप नहीं देख सकती और उनके दिल की आवाज़ नहीं सुन सकती। यही वजह कि हम एक ख़ानाजंगी में एक दूसरे का ख़ून बहा चुके हैं और दूसरी ख़ानाजंगी की तलवार हमारी गर्दन पर लटक रही है।"

"हम इस तूफ़ान को रोक सकेंगे।" एक सालार ने कहा—"लेकिन मुझे यह कहने की इजाज़त दीजिए कि हम अब कोई मुआहिदा और कोई सुलहनामा न करें। हमें अपने भाईयों का ख़ून बहाना पड़ेगा और हमें उनके हाथों मरना भी होगा।"

सुल्तान अय्यूबी के चेहरे पर उदासी का साया आ गया। उसकी आँखें जैसे उफ़क पर किसी चीज़ को देख रही थीं। साफ़ पता चल रहा था कि उसकी नज़रें आने वाली सदियों का सीना चाक कर रही हैं। ख़ेमे में एक बार फिर गहरा सकूत तारीहो गया। तीनों सालार अपने सुल्तान के इस तास्सुर से जो उस पर कभी—कभी तारी हुआ करता था अच्छी तरह वाकिफ़ थे।

"मेरे अज़ीज़ों रफीकों!" सुल्तान अय्यूबी ने कहा— "मुझे नज़र आ रहा है कि मेरे रसूल की उम्मत आपस में लड़लड़कर ख़त्म हो जाएगी। सलीबी और यहूदी उसे खाना जंगी में उलझाये रखेंगे। हुक्मरानी का लालच भाई को भाई का दुश्मन बनाए रखेगा। फ़िलिस्तीन ख़ून से लाल होता रहेगा। मुसलमान हुक्मरान सल्तनतों में बट कर ऐश व ईशरत में पड़े रहेंगे। हमारा किब्ला अव्वल उम्मते रसूल को पुकारता रहेगा और उस पुकार को कोई मुसलमान नहीं सुनेगा। अगर कोई फ़िलिस्तीन की सरज़मीन को अज़ाद कराने उठेगा तो वह कोई हम जैसा दिवाना होगा। ऐसे दिवानों को ख़ुद अपने मुसलमान हुक्मरान धोखें देंगे और दरपरदा दोस्त बने रहेंगे। तुमने कहा है कि हम इस तूफान को रोक सकेंगे, मगर हमारे मरने के बाद यह तूफ़ान फ़िर उठेगा।"

"फ़िर एक औा सलाहुद्दीन अय्यूबी पैदा होगा।" सालार सारिम मिस्री ने कहा— "एक और नुरुद्दीन ज़ंगी पैदा होगा। मुसलमान मायें मुजाहिदीन को जन्म देती रहेंगी।"

"और यह मुजाहिदीन अय्याश हुक्मरानों के हाथों में खिलौने बने रहेंगे।" सुल्तान अय्यूबी ने तंज़िया लहजे में कहा— "औरवह वक़्त भी आ जाएगा जब फ़ौज भी अय्याश सिपाहियों का गिरोह बन जाएगी और उसके सालार कुफ़्फ़ार के हाथों में खेलेंगे।" सुल्तान अय्यूबी इस अन्दाज़ से ख़ामोश हो गया कि जैसे उसे कुछ याद आ गया हो। उसने तीनों सालारों की तरफ़ बारी—बारी देखा और कहा—"मगर हम यह बातें कब तक करते रहेंगे? हम चारों एक

दूसरे को ख़ुत्बे सुना रहे हैं। अल्लाह के सिपाही ख़तीब नहीं हुआ करते। हमें अमल करना है। हम मैदाने अमल के मर्द हैं। सारिम! तुमने मेरी पहली हिदायत के मुताबिक़ अपने छापामार दस्तों को मेरी बताई हुई जगहों पर फैला रखा होगा और तुम जानते हो कि हमारी यह ख़ेमागाह किस ख़तरे में है।"

"अच्छी तरह जानता हूँ सुल्ताने मोहतरम!" सालार सारिम मिस्री ने जवाब दिया– "हम बैरूत का मुहासिरा उठा कर इस तरफ़ आये थे तो हमारी तवक़्क़ो के ख़िलाफ़ सलीबियों ने हमारे तआक्कुब में फ़ौज नहीं भेजी थी, लेकिन हम इस ख़ुशफ़हमी में मुब्तला नहीं हुए कि सलीबी हमें बख़्श देंगे। मैं वसूक़ से कह सकता हूँ कि वह खुला हम्ला नहीं करेंगे। वह हम पर हमारे अन्दाज़ के शबखून मारेंगे, बल्कि उनके छापों और शबखूनों का सिलसिला शुरू हो गया है। ख़ेमागाह से बहुत दूर से फ़िरंगियों और हमारे गश्ती दस्तों की छोटी–छोटी झड़पों की ख़बरे आने लगी हैं। मैनें छापामार दस्तों को दूर–दूर तक फैला रखा है। मुझे शक है कि कुफ़्फ़ार का अड्डा कहीं बाहर नहीं बल्कि मुसिल में है और वालिये मुसिल अज़ाउद्दीन उन्हें पनाह और मदद दे रहा है।"

"अगर ऐसी बात है तो इसकी इत्तलाअ मुझे मिल जाएगी।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "अगर मुसिल में ही सलीबियों का ख़ुफ़िया अड्डा हुआ तो मैं इसका बन्दोबस्त कर लूंगा।" उसने दूसरे दो सालारों से कहा– "हमें मुसलमान उमरा के उन किलों पर क़ब्ज़ा करना होगा जो मुसिल और हलब के दर्मियान हैं। मैं इन दोनों शहरों को एक दूसरे से काट देना चाहता हूं। वह एक दूसरे की मदद करने के क़ाबिल नहीं रहेंगे। उनके क़ासिदों को भी रास्ता नही मिलेगा। मैंने बहुत कोशिश की है कि मेरी तलवार किसी मुसलमान के ख़िलाफ़ न्याम से न निकले लेकिन मैं नाकाम रहा। मैं इन हुक्मरानों और उमरा को ख़त्म करूंगा जो सलीबियों के दोस्त हैं। मैं ख़ुद कौम की आड़ में नहीं बैठूंगा न कौम का ख़ून बहने दूंगा। मै उन उमरा को घुटनों बैठा दूंगा जो कौम को गुमराह कर रहे हैं।"

सुल्तान अय्यूबी ने नक़्शा निकाला और अपने सालारों को दिखाने लगा।

❖

बैरूत में बिल्डून के महल में उसने अपने सालारों और तीन चार सलीबी हुक्मरानों को मुदअू कर रखा था। बहुत बड़ी ज़याफत का इहतिमाम था। बेशुमार सलबी मेहमानों में दो मुसलमान भी शराब के प्याले उठाये इधर उधर घूमते फिरते नज़र आ रहे थे। शराब पेश करने वाली लड़कियां ऐसे बारीक रेशमी लिबास में मलबूस थीं कि उरियां लगती थीं। ज्यों–ज्यों शराब असर दिखाती जा रही थी लड़कियों के साथ मेहमानों की दस्त दराज़ी बढ़ती जा रही थी और लड़कियां पहले से ज़्यादा बेहया होती जा रही थीं। उन दो मुसलमानों की तरफ दूसरे मेहमानों की निस्बत ज़्यादा तवज्जो दी जा रही थी। दो लड़कियां उनके इर्द गिर्द अठखेलियां करती फिर रही थीं। यह दोनों लिबास और शकल व सूरत से किसी शाही खानदान के अफ़राद मालूम होते थे।

एक सलीबी आया। दोनों से कहा कि उन्हें शाह बिल्डून ने अपने कमरे में बुलाया है।

दोनों शराब के प्याले रख कर चले गये। वह जिस ग़ुलाम गर्दिश से गुज़र कर बिल्डून के कमरे में गये उसमें एक आदमी हाथ में बरछी उठाये फ़ौजी अन्दाज़ से टहल रहा था। उसका लिबास ख़ास किस्म का था। उसके पहलू में जो तलवारें लटक रही थी, उसकी न्याम पालिश से चमक रही थी। उसके सर पर फ़ौलाद की चमकदार ख़ोद थी। महल में उस लिबास में कई आदमी सीना ताने और गर्दने अकड़ाए टहल रहे थे। यह महल के ख़ुसूसी मुलाज़िम थे जो सालारों के कमरों के सामने मौजूद रहते और ज़याफ़तों में बारामदों और ग़ुलाम गर्दिशों में टलहते रहते थे। फ़ानूस की रौशनी में उनका लिबास और उनकी चाल अच्छी लगती थी। यह दर असल नुमाईश के लिए रखे गये थे और यह तरबियत याफ़्ता लड़ाके भी थे।

यह आदमी जिस ने दो मुसलमानों को बिल्डून के कमरे की तरफ़ जाते देखा, गोरे रंग का था। वह रुककर उन्हें जाते हुए देखता रहा। वह दोनों बिल्डून के कमरे में दाख़िल हो गये और दरवाज़ा बन्द हो गया। उस दरवाज़े के सामने उसी आदमी जैसे लिबास में दो आदमी पहरे पर खड़े थे। उनमें से एक ने उसे कहा– "हैलो जैकब।" इधर क्यों घूमते फिर रहे हो? उधर जाओ जहाँ परियाँ नाच रही हैं। हम तो यहाँ से एक क़दम इधर उधर नहीं हो सकते।"

"जैकब ने उनके मज़ाक का जवाब देकर कहा– "यह दो आदमी जो अन्दर गये हैं मुसलमान मालूम होते हैं। कौन हैं यह?"

"तुम्हें उनसे क्या दिलचस्पी है?"

"तुम मुझसे पूछ रहे हो कि इनसे मुझे क्या दिलचस्पी है?" जैकब ने कहा– "क्या तुम जानते नहीं कि मुसलमान के ख़िलाफ़ कितनी नफ़रत पायी जाती है? यह दोनों किसी जुनूनी सलीबी यहूदी के हाथों क़त्ल हो सकते हैं। इनकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी हमें दे दी गयी है लेनिक यह नहीं बताया गया है कि यह मुसलमान हैं या मुसलमान इलाके के ईसाई।"

"यह मुसलमान इलाके के मुसलमान हैं।" उसे जवाब मिला– "यक़ीन से नहीं कहा जा सकता, जहाँ तक हम जानते हैं यह मुसिल से आए हैं। ग़ालिबन अज़ाउद्दीन के एल्ची हैं।"

"सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ मदद माँगने आये होंगे।' जैकब ने कहा– "इन एल्चीयों को कौन बताए कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ख़त्म हो चुका है। रम्ला से शिकस्त खाकर भागा तो बैरूत को मुहासिरे में लेने आ गया। उसके बहरी बेड़े को आगे आने की जुर्रत न हुई। मुझे हमेशा अफ़सोस रहेगा कि हमारी फ़ौज ने अय्यूबी की फ़ौज का तआक्कुब नहीं किया, वरना आज अय्यूबी क़ैदखाने में होता।"

"तुम अपना काम करो दोस्त!" एक पहरेदार ने तंज़िया कहा– "सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी क़ैदी हो गया तो उसकी सल्तनत तुम्हें नहीं मिलेगी। अगर शाह बिल्डून मारा गया तो बैरूत की बादशाही तुम्हारे नाम नहीं लिखी जाएगी।"

जैकब वहाँ से हट आया लेकिन घूम–घूम कर बन्द दरवाज़े को देखता रहा जिसके पीछे यह दोनों मुसलमान गुम हो गये थे।

❖

वह दोनों अज़ाउद्दीन वालिये मुसिल के एल्ची थे। इस सिलेसिले की पिछली क़िस्त में

बयान किया जा चुका है कि अय्यूबी जब बैरूत का मुहासिरा उठाकर मुसिल की तरफ़ गया तो अज़ाउद्दीन ने क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद को ख़लीफ़ा की तरफ़ बग़दाद को इस अर्ज़दाश्त के साथ दौड़ा दिया था कि सुल्तान अय्यूबी के साथ उसकी सुलह करा दें। दूसरे लफ़्ज़ों में उसने यह दरख़्वास्त की थी कि उसे सुल्तान अय्यूबी से बचाया जाए। ख़लीफ़ा ने यह काम शैख़ुल उलेमा के सुपुर्द कर दिया और सुल्तान अय्यूबी ने अज़ाउद्दीन को बख़्श दिया। अज़ाउद्दीन बज़ाहिर सुल्तान अय्यूबी के आगे हथियार डालकर सुलह का मुआहिदा कर लिया था लेकिन उसने दरपरदा एल्चीयों को सलीबी हुक्मरान बिल्डून के पास भेज दिया था। यहदो एल्ची अब बिल्डून के कमरे में बैठे थे।

"वलिये मुसिल ने कहा है कि आप नेसुल्तान अय्यूबी का तआक्कुब न करके बहुत बड़ी ग़लती की है।" एक एल्ची ने बिल्डून को बताया– "आपने उसकी फ़ौज को आराम करने का मौक़ा दे दिया है। वालिये मुसिल ने कहा है कि मैं तहरीरी पैग़ाम नहीं दे सकता क्योंकि रास्ते में पकड़े जाने का ख़तरा है। मैं आप को मुश्वरा देता हूं कि दमिश्क़ की तरफ़ पेशक़दमी करें और उस शहर को मुहासिरे में लेकर उस पर क़ब्ज़ा कर लें। आपकी फ़ौज ऐसे रास्ते से और इतनी तेज़ी से दमिश्क़ पहुंचे कि सलाहुद्दीन अय्यूबी बरवक़्त न पहुंच सके। मैं आपके साथ वादा करता हूँ कि सुल्तान अय्यूबी जब आप की हम्ले की इत्तलाअ पर यहाँ से रवाना होगा तो मुसिल और हलब की फ़ौजें आमने सामने लड़ने की बजाए उसकी फ़ौज पर शबख़ून मारती रहेंगी। इससे उसकी पेशक़दमी बहुत सुस्त हो जाएगी और आप दमिश्क़ पर आसानी से क़ब्ज़ा कर लेंगें। हमारे इलाक़ों में जो छोटे मोटे उमरा हैं, मैं उन सब को अपने साथ मिला लूंगा। आप उनके क़िले इस्तेमाल कर सकते हैं। मैं आपकी फ़ौज को मुसिल के अन्दर क़याम की इजाज़त नहीं दे सकता, क्योंकि उससे साफ़ ज़ाहिर हो जाएगा कि मेरा और आपका इत्तेहाद है। सलाहुद्दीन अय्यूबी को यह तास्सुर दे रहा हूं कि मैं उसका दोस्त हूँ।"

एल्ची जब यह पैग़ाम दे रहे थे उस वक़्त बिल्डून के साथ उसके दो जरनल थे। अज़ाउद्दीन के एल्ची भी फ़ौजी मुशीर थे। जंगी उमूर को अच्छी तरह समझते थे। बिल्डून उनके साथ इस मसले पर बहस और बात चीत करता रहा। उसने देख लिया था कि यह मुसलमान उसके जाल में आ गये हैं। चुनांचे उसने अपनी शर्तें आयद करनी शुरू कर दीं।

'अज़ाउद्ददी को शायद पूरी तरह एहसास नहीं कि सुल्तान अय्यूबी को बेख़बरी में नहीं दबोचा जा सकता।" बिल्डून ने कहा– "हम दमिश्क़ को मुहासिरे में लेंगे तो वह बर्क़ रफ़्तार पेशक़दमी करके हम पर अक़्ब से हम्ला कर देगा। मैं इसे मुम्किन नहीं समझता कि हम दमिश्क़ की तरफ़ पेशक़दमी करें तो सलाहुद्दीन अय्यूबी को क़ब्ल अज़ वक़्त ख़बर न हो। वह उक़ाब और गिद्ध की तरह बहुत दूर से शिकार को देख लेता है और ऐसा झपटा मारता है कि पस्पाई भी मुहाल हो जाती है। हम अभी खुली जंग का खतरा मोल नहीं ले सकते। हम इसके लिए तैय्यारी कर रहे हैं। फ़ौरी तौर पर हम ने यह बन्दोबस्त कर दिया है कि छापमार दस्ते भेज दिए हैं जो सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज को आराम से नहीं बैठने देंगे। इन दस्तों के लिए हमें मुस्तक़िल अड्डे की ज़रूरत है। यह आप मुहैया कर देंगे तो हम सुल्तान अय्यूबी की

फ़ौज को सिर्फ़ छापामार दस्तों से ही बेहाल कर सकते हैं। वह न लड़ने के क़ाबिल रहे न भाग सकेगा। आप हमारे दस्तों को पनाह, मदद और ख़ुराक वग़ैरह मुहैया करते रहें। हम अस्लेहा और सामान भेजते रहेंगे। आप हलब के वालिये इमादुद्दीन से भी कह दें कि हमपर भरोसा रखें और हमारे छापामार दस्तों को बवक़्ते ज़रूरत पनाह और मदद देता रहे। दूसरे उमरा और क़िलादार भी आप के साथ होने चाहिए। उनका ख़्याल रखें कि इनमें से कोई सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास जाकर उसका इत्तेहादी न बन जाए।"

इत्तेहाद की शराईत तय कर ली गयीं। अज़ाउद्दीन ने एल्चीयों को पूरा इख़्तियार दे दिया था कि वह शराइत तय करके आएं और वह जो मराआत सलीबियों को देना मुनासिब समझें दे आयें। चुनांचे उन्होंने अपना ईमान एक सलीबी हुक्मरान के हाँ सिर्फ़ इसलिए गिरवी रख दिया कि उनकी हुक्मरानी महफ़ूज़ रहे। उन्होंने अपना काम कर लिया तो ज़याफ़त में शरीक होने के लिए चले गये। उन्हें दरअसल शराब और शराब पिलाने वाली लड़कियों के साथ ही दिलचस्पी थी।

"इन मुसलमानों पर ज़्यादा एतमाद न करें।" एक जनरल ने बिल्डून से कहा– "मुसिल मेरा अड्डा बन गया तो मैं आहिस्ता–आहिस्ता पूरी फ़ौज वहाँ ले जाऊँगा और अज़ाउद्दीन को वहाँ से बेदख़ल कर दूंगा। हम सबका मंसूबा यह होना चाहिए कि इन मुसलमानों को हम मुत्तहिद न होने दें बल्कि उन्हें आपस में लड़ाते रहें और आहिस्ता–आहिस्ता उनके इलाक़ों पर काबिज़ हो जाएं। हम सबने देख लिया है कि मुसलमान ऐश व ईशरत और हुकमरानी का लालच दे दो तो वह अपनी ख़ुद्दारी और अपना मज़हब तुम्हारे क़दमों में रख देता है। अज़ाउद्दीन, इमादुद्दीन और दूसरे छोटे मोटे मुसलमान उमरा सिर्फ़ इसलिए सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ हैं कि वह सब ख़ुद मुख़्तार बने रहना चाहते हैं और ऐश व ईशरत की ख़ातिर पुर सुकून जिन्दगी की ख़्वाहिश रखते हैं, सलाहुद्दीन अय्यूबी ऐश व ईशरत और हुक्मरानी का क़ायल नहीं। वह इन सबको एक मुहाज़ पर मुत्तहिद करके फ़िलिस्तीन से हमें बेदख़ल करने का मंसूबा बनाये हुए है लेकिन जिन्हें वह मुत्तहिद करने की कोशिश कर रहा है वह जंग व जदल से डरते हैं। मुझे उम्मीद है कि अज़ाउद्दीन और उसका टोला हमारे हाथ से निकलेगा नहीं। अगर किसी ने निकलने की कोशिश की तो उसे हम हशीशीन के हाथों क़त्ल करा देंगे।

बिल्डून ने अपने जरनलों को चन्द एक हिदायात देकर कहा– "अज़ाउद्दीन के इन दोनो एल्चीयों की इतनी ख़ातिर तवाज़ो करो कि इनकी अकल बिल्कुल ही मारी जाए और इन्हें याद ही न रहे कि इनका मज़हब क्या है।" उसने जिस हिदायात पर सख़्ती से अमल करने को कहा वह यह थी कि इस कमरे में उन एल्चीयों के साथ जो बातें हुई हैं वह बातें कमरे से बाहर न जाएं।" बिल्डून ने कहा– "सलाहुद्दीन अय्यूबी के जासूस बैरूत में मौजूद हैं।" दोनों एल्ची शराब और लड़कियों के नशे में बदमस्त हुए जा रहे थे। मेहमान इधर उधर बिखरे हुए शराब पी रहे थे और ख़ुश गप्पियों में मसरूफ़ थे। जैकब इन दो एल्चीयों को ढूंढ रहा था। उनमें से एक उसे अलग मिल गया। जैकब ने फ़ौजी अन्दाज़ से उसे सलाम किया और

पूछा–"आप ग़ानिबन मुसिल के मेहमान हैं? हम मुसिल वालों से बहुत मोहब्बत करते हैं।"

"हम मुसिल के हुक्मरान अज़ाउद्दीन के एल्ची हैं।" एल्ची ने शराब के नशे में बदमस्त होते हुए कहा– "हम यह मालूम करने आये हैं कि बैरूत के सलीबियों के दिल में मुसिल के मुसलमानों की कितनी मोहब्बत है।" एल्ची की जिस तरह ज़ुबान लड़खड़ा रही थी उसी तरह उसकी टांगे भी लड़खड़ा गयीं। वह इतनी ज़्यादा पी चुका था कि पांव पर खड़ा भी नहीं हो सकता था। उसने जैकब के कंधे पर ज़ोर से हाथ मारकर कहा–"शराब का यही कमाल है कि इन्सान के दिल से मज़हब निकल जाता है और उसकी जगह मोहब्बत आ ज़ाती है। मुझे सलीब से मोहब्बत है और मुझें तुम्हारी इस बरछी से मोहब्बत है। जिस रोज़ यह बरछी सलाहुद्दीन अय्यूबी के सीने में उतर जाएगी उस रोज़ मैं सालारे आज़ाम बन जाऊंगा।"

जैकब वहाँ ज़्यादा देर खड़ा नहीं रह सकता था क्यों कि उसकी ड्यूटी घूमने फिरने की थी। वह एल्ची को झूमता लड़खड़ाता छोड़कर इधर उधर हो गया। कुछ देर बाद उसने देखा कि एल्ची को दो आदमी लेकर जा रहे थे। वह होश में नहीं रहा था।

❖

आधी रात के करीब जैकब की ड्यूटी ख़त्म हो गयी। नाच गाना जारी था। जैकब और उसके साथियों की जगह दूसरे आदमी आ गये। जैकब अपने कमरे में गया। वर्दी उतारी और अपने कपड़े पहन लिए। वह बहुत थका हुआ था। उसे सो जाना चाहिए था लेकिन वह बाहर निकल गया। उसका रुख़ किसी और तरफ़ था लेकिन वह उस तरफ़ चला गया जहाँ लड़कियाँ रहती थीं। यह एक इमारत थी जिस का एक हिस्सा इतना ख़ुबसूरत था जैसे वहाँ शहज़ादियाँ रहती हों। यह उन लड़कियों की रिहाईशगाह थी जो जासूसी के लिए और किरदार की तखरीबकारी के लिए मुसलमानों के इलाकों उमरा और सालारों और हुक्मरानो को सलीब के जाल में फांसने भेजी जाती थीं। उन्हें उन इलाकों में जो सलीबियों के कब्ज़े में आ गये थे, मुसलमान जासूसों को फांसने के लिए भी इस्तेमाल किया जाता था।

इसी इमारत के दूसरे हिस्से में नाचने गाने वाली लड़कियाँ रहती थीं। उनकी क़दरो, क़ीमत जासूस लड़कियों जितनीनहीं थी जो जिस्मानी हुस्न के लिहाज से जासूस लड़कियों से कम नहीं थीं। उनका काम सिर्फ़ यह था कि महल में ज़याफ़तो पर नाचा करती थीं। बाहर के मेहमान आयें तो नाच गाना ज़रूरी होता था। उसरात मुसिल के मुसलमान एल्ची के एजाज में जो ज़याफ़त दी गयी थी उसमें नाच गाने का इहतिमाम किया गया था। उनमें सारा नहीं थी। सारा बहुत ख़ूबसूरत लड़की थी। उसके ख़दो खाल और उसके बालों और आँखों का रंग यूरोप की लड़कियों जैसा नही था। वह बैरूत की ही रहने वाली हो सकती थी, मिस्र की भी और वह यूनान की भी हो सकती थी। किसी को मालूम नहीं था कहाँ की रहने वाली है।

जैकब किसी और तरफ़ जा रहा था। उसे याद आ गया कि नाचने गाने वालियों में उसे सारा नज़र नहीं आयी थी। उसकी ग़ैरहाज़िरी की वजह यह हो सकती थी कि वह बीमार है या इस पेशे से तंग आकर भाग गयी है। जैकब को मालूम था कि सारा इस पेशे से ख़ुश नहीं है क्योंकि वह ख़ुद नहीं आई लाई गयी है। जैकब भी उसी महल के करीब रहता था और उसकी

ब्यूटी महल में ही होती थी। ऐसी ही एक ज़ियाफ़त के दौरान सारा इत्तेफ़ाक से जैकब से मिली थी। सारा को सब मग़रूर लड़की कहा करते थे क्योंकि वह किसी के साथ बोलती नहीं थी। जैकब में न जाने उसे क्या नज़र आया कि उसे वह पसन्द करने लगी। जैकब को भी यह लड़की अच्छी लगने लगी।

एक रात सारा महल से फ़ारिग होकर अपने कमरे की तरफ़ जा रही थी। उसे जैकब मिल गया। सारा ने उसे कहा– "मैं अकेली जा रही हूँ। मेरे साथ कमरे तक नहीं चलोगे?"

"अकेले जाते डर आता है?" जैकब ने कहा– "यहाँ से तुम्हें कोई अग़वा करके नहीं ले जा सकता।"

"अब मैं अग़वा नहीं हो सकती।" सारा की मुस्कुराहट बुझ गयी। कहने लगी– "अब तो अपने आप को ख़ुद ही अग़वा करूंगी......मेरे साथ चलो। अकेले जाते डर तो नही आता, तुम्हारे साथ की ज़रूरत है।"

सारा जैसी हसीन लड़की का जैकब को पसन्द करना कोई अजूबा नहीं था। जैकब मर्दाना हुस्न और वजाहत का शाहकार था। चन्द और लड़कियों ने भी उसके साथ दोस्ती की पेशकश की थी लेकिन जैकब उनसे दूर ही रहा था। दूर रहने की वजह थी कि यह सब नापाक और इस्मत बुरीदा लड़कियाँ थीं। जैकब ने उनकी पेशकश ठुकराकर अपनी किसमत चढ़ाली और अपनी कशिश में इज़ाफ़ा कर लिया था। वहाँ तो यह आलम था कि बदकारी को गुनाह की बजाए तफ़रीह बल्कि जाय्ज़ समझा जाता था। पहली मुलाक़ात में जैकब सारा को भी ऐसी ही बदकार लड़की समझा था लेकि सारा में संजीदगी और मतानत सी थी जो जैकब को अच्छी लगी थी। सारा को जब यह पता चला कि जैकब शराब नहीं पीता है तो वह उसे ज़्यादा अच्छा लगने लगा था। फ़िर एक रात सारा ने उसके मुंह से अपनी तारीफ़ कराने के लिए पूछा था–"तुमने मेरे रक़्स की कभी तारीफ़ नहीं की। दूसरे मुझे रास्ते में रोक कर मेरे फ़न और जिस्म की तारीफ़ें किया करते हैं?"

"मेरी ज़ुबान से तुम अपने फ़न की तारीफ़ कभी नहीं सुनोगी।" जैकब ने जवाब दिया–"अलबत्ता तुम्हारे जिस्म में जादू का सा असर है। बहुत अच्छा जिस्म है। ख़ुदा ने तुम्हारे चेहरे मुहरे में जो कशिश पैदा की है वह ख़ुदा के बन्दों की नज़िरहें को जकड़ लेती है लेकिन यह जिस्म नाचता हुआ अच्छा नहीं लगता, न किसी को उंगलियों पर नचाता हुआ अच्छा लगता है। यह जिस्म किसी एक मर्द की मिल्कियत होता। वह मर्द छः कलमे पढ़कर इस जिस्म को एहतराम और प्यार के साथ मस्तूर करके ले जाता तो इस जिस्म पर अल्लाह की रहमत नाज़िल होती। तुम ख़ुदा की तौहीन कर रही हो।"

"जैकब?" सारा ने हैरान सा होके कहा– "तुम कौन से छः कलमों की बात कर रहे हो? ईसाई अपनी दुल्हनों को मस्तूर करके नहीं ले जाते।"

जैकब घबरा गया, फ़िर अचानक क़हक़हा लगा कर बोला– "मेरे दिमाग़ पर मुसलमान सवार रहते हैं। मेरी अपनी तो शादी हुई नहीं, मुसलमानों की शादियाँ देखी हैं।"

उसने वजाहत की कि "छः कलमें" उसके मुंह से निकल गये हैं मगर सारा उसे अजीब

सी नजरों से देखती रही, फिर वह चुप हो गयी और ख़लाओं में टकटकी बांध कर देखने लगी। बेताब सी होकर उसने जैकब के बाज़ू पर हाथ रखा और पूछा—"तुम मुसलमान तो नहीं हो जैकब? मेरा कहने से यह मतलब नहीं कि तुम जासूस हो। हो सकता है मुलाज़िमत के ख़ातिर तुम अपने आप को ईसाई बना रखा हो या ईसाई मज़हब कुबूल कर लिया हो।"

"जैकब मुसलमान नहीं हुआ करते सारा!" जैकब ने कहा— "मेरा नाम गिल्बर्ट जैकब है. ...तुम इतनी परेशान और उदास क्यों हो? मालूम होता है तुम्हारे दिल में मुसलमानों के खिलाफ़ इतनी नफ़रत है कि तुम उन कलमों का नाम भी नहीं सुनना चाहती।"

"तुम्हें राज़ की एक बात बताऊं?" सारा ने कहा— "शायद तुम अच्छा न जानो। मुझे मुसलमान अच्छे लगते हैं। इसकी वजह शायद यही है कि वह छः कलमें पढ़कर अपनी दुल्हनों को मस्तूर करके ले जाते हैं।" उसने आह भर कर कहा—"औरत उरियां कर दी जाती है तो उसे एहसास होता है कि मस्तूर होने में जो रूहानी क़रार था वह छिन गया है। नाचने में भी लज्ज़त नहीं और हुस्न का जादू तारी करके दूसरों को उंगलियो पर नचाने में भी क़रार नहीं। मैं जब तन्हाई में आइने के सामने खड़ी होती हूँ तो आइने में मुझे एक क़ाबिले नफ़रत औरत नज़र आती है। मैं अपने अक्स को मस्तून नहीं कर सकती, इसपर पर्दा नहीं डाल सकती। अलबत्ता मेरी रूह पर स्याह पर्दा पड़ गया है।"

"तुम इस पेशे से इतनी मुतन्फ़िर हो तो निकल भागो यहाँ से?" जैकब ने कहा।

"क़िधर को?" सारा ने कहा— "यहाँ से भागोगी तो किसी क़हबाखाने वालों के क़ब्ज़े में आ जाओगी.....क्या तुम मेरे रक़्स को पसन्द करते हो या मुझे?"

"मैं उस सारा को पसन्द करता हूँ जो इस पेशे से नफ़रत करती है, उदास और परेशान रहती है।" जैकब ने कहा—"मैं कह चुका हूँ कि तुम ख़ुदा की तौहीन कर रही हो।"

"तुम फ़ौज में किस तरह आ गये हो?" सारा ने कहा—"तुम्हें किसी देहाती गिरजे में पादरी होना चाहिए था.....तुम हर रोज़ कितनी शराब पीते हो?"

"उसकी बू से भी नफ़रत है।"

"फ़िर तुम मुसलमान हो।" सारा ने वसूक़ के लहजे में कहा— "अगर तुम नहीं तो तुम्हारा बाप मुसलमान था। तुम औरत को मस्तूर देखना चाहते हो। तुम्हें रक़्स पसन्द नहीं। तुम्हें शराब की बू से भी नफ़रत है। शायद यही वजह है कि तुम मुझे अच्छे लगते हो। मुझे जो कोई भी देखता है खा जाने की नज़िरहें से देखता है। तुम मेरे दिल के दर्द को समझते हो ना?"

"समझता हूँ सारा!" जैकब ने कहा— "यह दर्द मेरे दिल ने महसूस किया था।"

फ़िर वह कई बार मिले। सारा जैकब के साथ दिल की बातें किया करती थी। उसने जैकब से कई बार कहा था कि वह तुम्हारी चाल ढाल और तुम्हारे ख़्यालात मुसलमानों जैसे हैं। जैकब ने कई बार उससे पूछा था कि वह मुसलमान को इतना ज़्यादा पसन्द क्यों करती है? सारा ने कभी कोई ठोस जवाब नहीं दिया था। अलबत्ता दोनो ने यह ज़रूर महसूस किया था कि वह एक दूसरे के दिल में उतर गये हैं।

❖

ज़याफ़त की रात जब जैकब अपनी ड्यूटी से फ़ारिग़ होकर किसी और तरफ़ जा रहा था वह सारा की रिहाईश की तरफ़ चल पड़ा। ज़याफ़त में सारा की गैरहाजिरी की वजह बीमारी ही हो सकती थी। उस इमारत में किसी को जाने की इजाज़त नहीं थी। जैकब ने वहाँ जाने का ख़तरा इसलिए मोल ले लिया कि लड़कियाँ ज़याफ़त में गयी हुई थीं और वहाँ मुलाज़िम औरतें भी नहीं थीं। जैकब अंधेरी तरफ गया वह सारा का कमरा जानता था। वह दबे पांव कमरे के दरवाज़े तक पहुंचा। हाथ लगाया तो किवाड़ खुल गया। एक कमरे से गुज़र कर वह दूसरे कमरे में गया। वहाँ छोटी सी कंदील जल रही थी जिसकी मद्धिम सी रौशनी में सारा सोई हुई नज़र आ रही थी। उसे यह लड़की दूध पीते बच्चे की तरह मासूम लगी। उसका हाथ अपने ही बिखरे हुए बालों मे उलझा हुआ था। खिड़की खुली थी। बहिरा रोम की ठंडी हवा के तेज़ झोंकों से सारा के बिखरे हुए बाल आहिस्ता--आहिस्ता हिल रहे थे। वह गहरी नींद सोई हुई थी। जैकब ने हाथ उसकी पेशानी पर रखा। पेशानी इतनी ही गरम थी जितनी उस उम्र की सोई हुई लड़की की गर्म होनी चाहिए थी। जैकब को यह इत्मीनान हो गया कि सारा को बुखार नहीं।

"नख़लिस्तान की फूल हो जो बादशाहों की ख़्वाबगाहों में आकर मुरझा जाता है।" जैकब ने दिल ही दिल में सारा से कहा--"तुम सुबह का सितारा हो जो सूरज की चमक से बुझ जाता है और रात को फिर चमक उठता है। तुम्हारी ज़िन्दगी रातों के अंधेरे में बीत रही है। तुम्हारी किस्मत अंधेरे में लिखी गयी है.....तुम मुझे क्यों अच्छी लगती हो? मुझसे बार बार क्यों पूछती हो कि मैंने छः कलमों का ज़िक्र क्यों किया था? तुम किसी मुसलमान माँ की कोख की पैदवार तो नहीं? तुम्हारी रगों में किसी मुसलमान बाप का ख़ून तो नहीं? इस राज़ से पर्दा कौन उठायेगा? मैं तुम्हारे लिए राज़ हूँ तुम मेरे लिए राज़ हो।"

जैकब को याद आ गया कि सलीबी फ़ौजी मुसलमानों के काफ़िलों को लूटते रहते हैं। उनकी बच्चियों को उठा ले जाते हैं और उन्हें अपने रंग में रंग कर जासूसी और बेहयाई और रक़्स की तरबियत देते हैं। सारा भी शायद उन्हीं बदनसीब लड़कियों में से होगी, वरना यह क़ौम एहसासात और जज़्बात के लिहाज से मुर्दा और बेहायाई में पूरी तरह ज़िन्दा होती है। जैकब भूल गया कि वह कहाँ खड़ा है। किसी मर्द को उन कमरों में आने की इजाज़त नहीं थी। सारा उसके दिल में ऐसे उतरी थी कि वह ख़तरों से बेनयाज़ हो गया था। उससे रहा न गया। उसने कंदील बुझा दी और उसके साथ ही सारा की आँख खुल गयी।

जैकब को उसकी घबराई हुई आवाज़ सुनाई दी--"कौन हो?"

"जैकब।"

"इस वक़्त यहाँ क्यों आ गये हो?" सारा ने ऐसे लहजे में कहा जिसमें मोहब्बत भी थी हमदर्दी भी-- "किसी ने देख लिया तो तुम सीधे क़ैदख़ाने में जाओगे। मुझे बाहर बुला लिया होता।"

"यह परेशानी मुझे इस ख़तरे में ले आई है कि तुम बीमार हो?" जैकब ने अंधेरे में उसकी पलंग पर बैठते हुए कहा-- "रौशनी इसलिए गुल कर दी है कि कोई देख न ले। मैं किसी और

नीयत से नहीं आया सारा! मालूम नहीं क्या कशिश है जो मुझे यहाँ ले आई है। तुम्हें बुख़ार तो नहीं?"

"मेरी रूह अलील है।" सारा ने कहा–"मैं तो अब भी महफ़िलों और ज़याफ़तों में नाचती हूँ मेरा दिल साथ नहीं होता। मेरा जिस्म नाचता है और रूह मर जाती है, मगर आज जब मुझे कहा गया कि मुसिल से दो बड़े ही अहम मेहमान आ रहे हैं तो रूह के साथ मेरा जिस्म भी बेजान हो गया। मुझे मतली आने लगी और सर चकराने लगा। मुझे इन बादशाहों की जंगों और उनके अमन और दोस्ती के मुआहिदों के साथ कोई दिलचस्पी नहीं लेकिन मेरे कानों में जब यह बात पड़ी की मुसिल से अहम मेहमान आ रहे हैं तो मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे सलीबियों और मुसलमानों में से किसी एक के साथ मेरा गहरा तअल्लुक है। मैं अभी तक यह नहीं सोंच सकी कि मेरा रूहानी तअल्लुक किसके साथ है, सिर्फ़ यह एहसास जाग उठा कि मैं इस महफ़िल में नाच नहीं सकूंगी। मैं मुसिल के मेहमानों का सामना नहीं कर सकूंगी या वह मुझे देखकर वहाँ से भाग जाएंगे।"

"क्यों?" जैकब ने पूछा–"मुसिल वालों के साथ तुम्हारा क्या तअल्लुक है?"

"मैं बता नहीं सकती।" सारा ने कहा–"मैं तो अपने आपको भी यह बताने से डरती हूँ कि मुसिल वालों के साथ मेरा क्या तअल्लुक है।

"सारा!" जैकब ने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर कहा–"तुम अपना आप मुझसे क्यों छुपा रही हो? क्या तुम्हें किसी काफ़िले से अग़वा किया गया था? तुम किस बाप की बेटी हो?"

सारा कोई जवाब न दे सकी। जैकब चौंक उठा। दोनों ने खिड़की की तरफ़ देखा जो खुली हुई थी। वहाँ एक साया खड़ा नज़र आया। सारा ने जैकब के कान में सरगोशी की–"पलंग के नीचे हो जाओ।" जैकब ने अंधेरे से फ़ायदा उठाया। आहिस्ता–आहिस्ता से सरक कर फ़र्श पर बैठा और अवाज़ पैदा किये बग़ैर पलंग के नीचे चला गया। सारा लेट गयी।

"सारा!" खिड़की के साथ खड़े साये की आवाज़ आई। यह एक बूढ़ी औरत की आवाज़ थी जो बाज़ रातें नाचने गाने वालियों को देखा करती थी कि कोई लड़की ग़ैरहाजिर तो नहीं।

उसके आवाज़ पर सारा न बोली। औरत ने उसे एक और आवाज़ दी। सारा फिर भी न बोली। औरत ने तेज़ लहजे मे कहा–"सारा तुम सोई हुई नहीं हो। मुझे जवाब दो। क़ंदील क्यों बुझी हुई है?"

सारा ने मुंह से ऐसी आवाज़ निकाली जैसे हड़बड़ा कर जाग उठी हो। घबराहट की अदाकारी करते हुए बोली– "कौन हो? क्या हो गया है?"

"मैं उधर से आकर बताती हूँ।" औरत का साया खिड़की से हट गया। वह दरवाज़े की तरफ से आना चाहती थी। सार ने झुक कर जैकब से कहा–"वह दूसरी तरफ़ से आ रही है। बाहर आओ और खिड़की से कूद जाओ।"

"नहीं सारा!" जैकब ने पलंग के नीचे से निकल कर कहा–"मैं उसे जानता हूँ। आने दो उसे। मैं उसकी मुठ्ठी गरम कर दूंगा तो ख़ामोशी से चली जाएगी।"

"यह ख़बीस औरत है।" साराने कहा– "यह दरपरदा लड़कियों की दलाली करती है।

तुम फ़ौरन निकलो यहाँ से, वरना मेरा झूठ मुझे मरवा देगा। मैं उसे संभाल लूंगी।"

वह औरत अभी दरवाज़े तक आई ही थी कि जैकब खिड़की से बाहर कूद गया। सारा ने कंदील जला दी। औरत अन्दर आई। जिस्म के लिहाज से वह औरत कम और मर्द ज़्यादा थी। वह सारा पर बरस पड़ी। सारा ने उसे यकीन दिलाने की कोशिश की कि इस कमरे में और कोई नहीं था और वह शायद ख़्वाब में बोल रही होगी। औरत ने उसे कहा कि ख़्वाब में औरत की आवाज़ मर्द जैसे भारी नहीं हो जाया करती।

"यह क्या है?" औरत ने झुक कर पलंग के करीब फ़र्श पर गिरा हुआ एक रूमाल उठाया। यह गज़ भर लम्बा और उतना ही चौड़ा कपड़ा था जो मर्द गर्मी से बचने के लिए सर पर डाल लिया करते थे। "यह किसका है? यह उसका है जो तुम्हारे पास आया बैठा था। वह कौन था? तुमने उससे कितनी रकम ली है?"

"मैं इस्मत फ़रोश नहीं।" सारा ने ग़ुस्से से कहा– "मैं रक़ासा हूँ तुम जानती हो कि मैं किसी मर्द से मुंह नहीं लगाती।

"सुनो सारा!" औरत उसके पास बैठ गयी और उसके कंधे पर हाथ रख शफ़कत से बोली–"यह तो मैं भी जानती हूँ कि तुम रक़ासा हो मगर तुम यह नहीं जानती कि रक़ासा फ़ौज की जरनल या शहर की हाकिम नहीं हुआ करती। मैं इतनी सी बात कह दूंगी कि तुम्हारे पास रात को एक आदमी आया था वह तुम्हें बैरूत के किसी इन्तेहाई घटिया क़हबाखाने में बेच डालेंगे या तुम्हें क़ैद में डाल देंगे। उस नशे में बात न करो कि तुम शाही रक़ासा हो। यहाँ तुम्हारा कोई मुक़ाम नहीं।"

"तुम मतलब की बात करो।" सारा ने कहा–"तुम मुझ पर जो मेहरबानी करना चाहती हो उसका मुआविज़ा क्या लोगी? मैं अभी अदा कर देती हूँ।"

"मैं तुमसे कुछ नहीं लूंगी।" औरत ने कहा–"मैं किसी और से मुआविज़ा वसूल करूंगी। तुम्हारी वहाँ की ज़रूरत है।'

सारा उसका मतलब समझ गयी। बाहर से शाही मेहमान आते ही रहते थे। उनमें ईसाई भी होते थे, मुसलमान भी। शाही हैसियत के मेहमानों की खातिर तवाज़ो के लिए लड़कियाँ मौजूद रहती थीं, लेकिन उनके साथ जो अमला आता था उन्हे इस क़िस्म की अय्याशी मुहैया नहीं कीजाती थी। यह औरत उन लोगों से मिलकर उनके पास लड़कियाँ भेजा करती और मुंहमाँगा मुआविज़ा वसूल करती थी। यह उसका ख़ुफ़िया कारोबार था। बाज़ शाही मेहमान ऐसे होते थे जो सरकारी तौर पर दी हुई लड़की से मुत्मईन नहीं होते थे। यह औरत दरपरदा महल के एक दो मुलाज़िमों के ज़रिए उनकी यह ज़रूरत पूरी करती और ईनाम लेती थी। सारा उनके हाथ कभी नहीं आई थी मगर अब यह लड़की उसके जाल में आ गयी। वह अगर बताती कि उसके पास जैकब आया था और उसके साथ उसका तअल्लुक़ पाक है तो यह औरत कभी यकीन न करती और दूसरा ज़ुल्म यह होता कि जैकब को क़ैद में डालकर बड़ी ज़ालिमाना अज़ीयतें दे दे कर मार दिया जाता।

"सारा!" औरत ने कहा–'अगर अपने हौलनाक अन्जाम से बचना चाहती हो तो मेरी बात

मान लो। बाहर से मेहमान आये हुए हैं। बहुत दौलत मन्द हैं। परसों से वह मुलाज़िमों से कह रहे है कि उन्हे अच्छी किस्म की लड़कियों की ज़रूरत है। यह दरअसल उनकी आदत है। अपने हाँ हरमों में बीस–बीस तीस–तीस लड़कियाँ जमा किये रखते हैं। यहाँ भी चाहते हैं कि उनके कमरों में लड़कियों की चहल पहल लगी रहे। कल तुम इनमें से एक के पास चली जाना।"

"कौन हैं वह?" सारा ने पूछा– "अगर मुसलमान हैं तो मैं उनके पास नहीं जाऊंगी।"

"तो कैदखाने में जाओ।" औरत ने कहा–"होश में आओ। अपने आप को देखो। तुम क्या हो। अपने पेशे को देखो। शरीफ़ बनने की कोशिश न करो। वह दिल खोल कर ईनाम देंगे। जिसमें तुम्हारा हिस्सा भी होगा।"

"और पकड़े गये तो?"

"मैं पकड़ने वालों का मुँह बन्द रखा करती हूँ।" औरत ने कहा– "कल रात तैय्यार रहना। अब तुमसे कल नहीं पूछूंगी कि अभी अभी तुम्हारे पास कौन आया था।"

औरत चली गयी। सारा के आँसू बहने लगे।

❖

जैकब भागने वाला आदमी नहीं था लेकिन वह इस डर से निकल गया कि सारा की मुसीबत आ जाएगी। उसे उम्मीद थी कि सारा इसी ग़लीज़ दुनिया की लड़की है, वह इसऔरत को संभाल लेगी। वह शहर की तरफ़ चला जा रहा था। उसके ज़ेहन पर सारा छाई हुई थी। सरा से उसे दिली मोहब्बत थी और सारा उसके लिए मुअम्मा बन गयी। उसे रह–रह कर यह ख़्याल आ रहा था कि सारा किसी मुसलमान बाप की बेटी है....वह चलते–चलते शहर की तंग व तारीक गलियों में दाखिल हो गया। गलियों के मोड़ मुड़ता एक मकान के सामने रूका और दरवाज़े पर दस्तक दी। कुछ देर बाद दरवाज़ा खुला।

"कौन?"

"हसन!" जैकब ने जवाब दिया।

"इतनी रात गये?" दरवाज़ा खोलने वाले ने पूछा– "फ़ौरन अन्दर आ जाओ। किसी ने देखा तो नहीं?"

"नहीं।" जैकब ने जवाब दिया–"काफ़िरों की ज़याफ़त से अभी फ़ारिग़ हुआ हूँ। एक ज़रूरी इत्तलाअ लाया हूँ।"

वह अन्दर चला गया। दरवाज़ा बन्द हो गया। अब वह जैकब नहीं बल्कि हसन अलदूरदेश था। वह सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का जासूस था। उसने एक साल पहले अपने आपको एक ईसाई ज़ाहिर करके और नाम गिल्बर्ट जैकब बताकर सलीबी फ़ौज में मुलाज़िमत कर ली थी। गोरे रंग का जवान था। ट्रेनिंग के मुताबिक वह अदाकारी और चरब ज़ुबानी का माहिर था। उसकी शकल व सूरत और दराज़कद की बदौलत उसे महल की ख़ुसूसी ड्यूटी के लिए मुन्तख़ब कर लिया गया था। यहाँ से वह काहिरा को ख़बरे भेजता रहता था। उसके गिरोह का लीडर हातिम उस मकान में रहता था जिसमे में वह दाखिल हुआ था।

"मुसिल के दो एल्ची बिल्डून के पास आये हैं।" हसन ने अपने लीडर को बताया– "मैंने यकीन कर लिया है कि यह दोनों मुसिल से आये हैं और दोनों मुसलमान हैं। उन्हें बिल्डून अपने कमरे में ले गया था। इसमें कोई शक नहीं कि वह वालिये मुसिल अज़ाउद्दीन का कोई पैग़ाम लेकर आये हैं।"

"और यह सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ़ मुआहिदे का पैग़ाम होगा।" लीडर ने कहा– "यह मालूम कर लिया कि उनके दर्मियान क्या तय पाया है? सुल्तान भी अभी तक इस धोंखे में हैं कि अज़ाउद्दीन और इमादुद्दीन हमारे दोस्त हैं या कम अज़कम हमारे खिलाफ़ लड़ेंगे नहीं।"

"उनकी बात चीत बन्द कमरे में हुई है।" हसन ने कहा– "मेरा ख़्याल है कि जो कुछ तय होना था, हो चुका है। मैंने उनमें एक के साथ बात की थी। वह बहुत ख़ुश नज़रआता था। बदबख़्त ने शराब इस क़दर पी ली थी कि उसने नशे मे मुझे बड़ा साफ़ इशारा दे दिया कि वह दोनों मुसलमान हैं और मुसिल से आये हैं। मुझे कहता था कि वह हमारी यानी सलीबियों की मोहब्बत देखना चाहता है। वह पाँव पर खड़ा न हो सका और गिर पड़ा।"

"हम सुल्तान को सिर्फ़ यह इत्तलाअ भेजवायें कि बैरूत में मुसिल से दो आदमी आये थे काफ़ी नहीं।" हातिम ने कहा– "हम अपने सुल्तान से बहुत शर्मसार हैं कि उन तक हमारी यह इत्तलाअ न पहुंच सकती कि वह बैरूत को मुहासिरे में लेने का मंसूबा तर्क कर दें क्योंकि बिल्डून को इस मंसूबे की इत्तलाअ क़ाहिरा से मिल गयी है।"

"इसमें हमारा कोई क़सूर नहीं था।" हसन ने कहा– "इस्हाक़ तुर्क बरवक़्त रवाना हो गया था। वह धोखा देने वाला आदमी नहीं था। वह रास्ते में सेहरा का शिकार हो गया या पकड़ा गया है।"

"बैरूत के मुहासिर में सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी को जो नुक़सान हुआ है। हमें उसका इज़ाला करना है।" हातिम ने कहा– "उनके लिए यह ख़बर अहम है कि मुसिल वाले बैरूत वालों के साथ दोस्ती का मुआहिदा कर रहे हैं लेकिन हमें पूरी इत्तलाअ देनी चाहिए कि मुआहिदे में क्या–क्या शराईत तय हुए हैं और क्या मंसूबा बना है। इस वक़्त सुल्तान बहुत बड़े ख़तरे में बैठे हैं। वह समझते होंगे कि वह दोस्तों के दर्मियान महफ़ूज़ हैं लेकिन वह दरअसल दुश्मनों के घेरे में पड़ाव डाले हुए हैं। हातिम ने हसन से पूछा– "महल में तुम कोई ऐसा ज़रिआ पैदा नहीं कर सकते कि जो अन्दर की बातें बता सक?"

"बातें बन्द कमरे में हुई हैं।" हसन ने जवाब दिया– "बिल्डून या उसके मुशीरों और सालारों से तो पूछा नहीं जा सकता। उन दोनों आदमियों के सीने से राज़ निकालने की कोशिश की जा सकती है जो मुसिल से आये हैं। मैं ज़रिआ पैदा करने की कोशिश करूंगा। अगर न हुआ तो दूसरा तरीक़ा इख़्तियार करेंगे। यह जब वापस जाएंगे तो उन्हें रास्ते में अग़वा कर लिया जाएगा या ज़रूरत पड़ी तो ख़त्म कर दिया जाएगा।"

"उन्हें ख़त्म करने से हमारा मसला हल नहीं होगा।" हातिम ने कहा– "हमें बिल्डून और अज़ाउद्दीन के मंसूबे की ज़रूरत है।"

"मेरी कोशिश यही होगी।" हसन ने कहा– "अगर मंसूबा न मिला तो दोनों को सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास पहुंचा दिया जाएगा।"

"अगर उन्हें कत्ल करना हुआ तो वह मैं यहीं करा सकता हूँ।" हातिम ने कहा– "जिस कदर जल्दी हो सके मुझे बताओ कि तुम मतलूबा मालूमात हासिल कर सकते हो या नहीं। मैं सुबह एक आदमी को सुल्तान को ख़बर देने के लिए रवाना करूंगा कि बिल्डुन के पास अज़ाउद्दीन के एल्ची आये हैं और उनके दर्मियान कोई मुआहिदा हो गया है, ताकि सुल्तान इस ख़ुशफ़हमी में न पड़े रहें कि अज़ाउद्दीन उनका दोस्त है। तुम बहुत थोड़े से वक़्त में मुकम्मल इत्तलाअ हासिल करने की कोशिश करो।"

"मेरी कामयाबी के लिए दुआ करें।" हसन उठा और बाहर निकल गया।

❖

"सलीबी छापामारों को ज़िन्दा पकड़ने की कोशिश करो।" सारिम मिस्री ने अपने छापामार दस्तों के कमानदारों को हिदायात दे रखी थीं– "लेकिन अपनी जान को ख़तरे में न डालो। जहाँ हम्ला करो वहाँ कारी जरब लगाओ और निकलने की कोशिश करो। अब जब तुम पर हम्ला हो तो जम कर लड़ो और दुश्मन को निकलने न दो। यह इतनी ज़्यादा फ़ौज तुम्हारे भरोसे पर आराम की नींद सोती है और इतनी ज़्यादा रसद तुम्हारी ज़िम्मेदारी पर पड़ी है।"

छापामारों को अपनी ज़िम्मेदारी का पूरा एहसास था। सुल्तान अय्यूबी ने ख़ेमागाह से दूर चट्टानों और बुलन्द जगहों पर बीस से चालीस नफ़री की चौकियाँ क़ायम कर रखी थीं जिनके ज़िम्मे देख भाल और ख़ेमागाह की हिफ़ाज़त थी। ऐसी ही एक चौकी जो पहाड़ियों में घिरी हुई एक चट्टान पर थी दुश्मन के तीरों का निशाना बनी हुई थी। उसके पीछे ऊंची पहाड़ियाँ थीं और एक वादी। उस वादी में से फ़ौज गुज़र सकती थी। इस ढकी छुपी गुज़रगाह पर नज़र रखने केलिए यह चौकी क़ायम की गयी थी। वहाँ दो सवार दो घोड़ों के साथ हर वक़्त तैय्यार रहते थे। वहाँ रोज़ मर्रा का मामूल बन गया था कि सूरज ग़ुरूब होने के बाद तीन चार तीर आते और एक दो सिपाहियों को ख़त्म कर देते। एक शाम एक घोड़े को बयक वक़्त तीन तीर लगे और घोड़ा तड़प तड़प कर मर गया। तीर करीब की पहाड़ी से आते थे। उसके फ़ौरन बाद अंधेरा छा जाता था, इसलिए तीर चलाने वालों को ढूंढा नहीं जा सकता था।

एक रोज़ शाम से पहले चौकी के दो सिपाही पहाड़ी पर कहीं छुप कर बैठ गये। सूरज ग़ुरूब होने को था। दो तीर आये, दोनों इन दो सिपाहियों की पीठों में लगे। दोनो शहीद हो गये। सुबह उनकी अध खाई लाशें उठायी गयीं। रात को भेड़िए लाशों को खाते रहते थे। साफ़ ज़ाहिर था कि यह सलीबी छापामारों का काम है। एक रोज़ दस सिपाहियों का एक गश्ती जैश इलाके की तलाशी के लिए भेजा गया। पहाड़ी इलाके में जाकर चार–चार अफ़राद में तक़सीम होकर बिखर गये, एक जगह दस बारह साल की उम्र का एक बच्चा नज़र आया। वह सिपाहियों को देखकर दौड़ पड़ा और एक बुलन्द चट्टान के दामन में ग़ायब हो गया। वह गड़ेरिया हो सकता था लेकिन वहाँ कोई भेड़ बकरी और कोई ऊंट नहीं था। सिपाही वहाँ तक गये तो चट्टान में तंग सा एक दहाना नज़र आया जो किसी ग़ार का था। बच्चा उसीमें चला

गया था।

सिपाहियों ने दहाने के साथ कान लगाये तो अन्दर से उन्हें बातों की धीमी--धीमी आवाज़े सुनाई दी। किसी बच्चे का ग़ार में छुप जाना कोई अजीब बात नहीं थी। यह सिपाही उस बच्चे से सलीबी छापामारों के बारे में पुछना चाहते थे। उन्होंने बहुत पुकारा लेकिन ग़ार में खामोशी छा गयी। सिपाहियों ने धमकी दी कि जो कोई अन्दर है बाहर आ जाए वरना हम अन्दर आकर सबको क़त्ल कर देंगे। अन्दर से एक जवान औरत निकली। वह उस इलाके की ज़ुबान में सिपाहियों को कोसने लगी। फिर रो पड़ी और कहा कि मुझे क़त्ल करदो, मेरे बच्चों को बख़्श दो। उसके दो बच्चे थे। एक दस बारह साल का था जो बाहर से दौड़ पड़ा था और दूसरा चन्द महीनों का था जो इस औरत ने अन्दर सुलाया हुआ था।

सिपाहियों ने उसे बताया क्रि वह मुसलमान सिपाही हैं मगर औरत उन्हें गालियां देने लगीं और मिन्नत समाजत भी करने लगी। उसने बताया कि दो रोज़ हुए उसके गांव में पन्द्रह सोलह सलीबी सिपाही आए और गांव पर कब्ज़ा कर लिया......उन्होंने तमाम घरों की तलाशी ली। उस औरत के ख़ाविन्द को क़त्ल कर दिया। क़त्ल इस तरह किया कि उन्होंने गांव के तमाम बच्चों, जवानों, बूढ़ों और तमाम औरतों को एक जगह इकठ्ठा करके कहा कि किसी को पता न चलने दें कि इस गांव में सिपाही रहते हैं। उन्होंने अपनी और घोड़ों की ख़ुराक की ज़िम्मेदारी गांव पर डाल दी। उनके कमानदार ने तलवार निकाली। इस औरत का ख़ाविन्द सबसे आगे खड़ा था। कमानदार ने ख़ाविन्द को बाज़ू से पकड़ कर आगे किया और तलवार के एक ही वार से उसका सर तन से जुदा कर दिया। उसने गांव वालों से कहा कि उनके हुक्म की नाफ़रमानी की तो उसे ऐसी सज़ा मिलेगी।

इन सिपाहियों ने अपने लिए तीन झोंपड़े खाली करा लिए और गांव की औरतों को बुलाकर उनसे खिदमत खातिर कराने लगे। यह औरत रात को मौका पाकर वहाँ से भाग आई। उसे मालूम नहीं था कि सिपाही अभी तक गाँव में मौजूद हैं या नहीं। यह गाँव वहाँ से थोड़ी ही दूर था। सिपाही औरत को वहीं छोड़कर गांव की तरफ़ गये। पहाड़ी सिलसिला खुल जाता था। वहाँ वसीअ मैदान था जिसमें पन्द्रह बीस झोंपड़ों का एक गाँव था। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का गश्ती जैश घोड़ों पर सवार था। उन्होंने गाँव पर यलग़ार करने क लिए घोड़े दौड़ा दिए। उस वक़्त सलीबी सिपाही जो गाँव पर काबिज़ थे गांव में मौजूद थे। उन्होंने शायद पहरा खड़ा कर रखा था। घोड़ सवार अभी गाँव से कुछ दूर थे कि तमाम सलीबी सिपाही बाहर आ गये। उनके आगे चन्द एक बच्चे और बहुत सी औरते थीं। उन्होंने बच्चों और औरतों को एक जगह इकठ्ठा करके खड़ा कर दिया और खुद नंगी तलवार हाथों में लेकिन उनके गिर्द नीम दायरे में खड़े हो गये। एक ने सुल्तान अय्यूबी के सवारों से मुख़ातिब होकर चिल्ला कर कहा-- "अगर तुम आगे आओगे तो हम इन बच्चों और औरतों को क़त्ल कर देंगे।"

सवार बीस--पच्चीस क़दम दूर रुक गये। वह मुसलमान बच्चों और औरतों को सलीबियों को हाथों क़त्ल नहीं कराना चाहते हैं।

"बुज़्दिलों!" सुल्तान अय्यूबी के छापामार जैश के कमानदार ने कहा– "सलीब की ख़ातिर लड़ने आये तो मर्दों की तरह सामने आकर लड़ो। औरतों और बच्चों की ढाल के पीछे क्यों खड़े हो।"

"तुम वापस चले जाओ।" सलीबी कमानदार ने कहा–"हम गाँव से चले जाएंगे।"

जिन बच्चों और औरतों को सलीबी सिपाहियों ने ढाल बना रखा था, उनमें से एक औरत ने सुल्तान अय्यूबी के सिपाहियों से बुलन्द आवाज़ से कहा– "इस्लाम के सिपाहियों रूक क्यों गये हो। हमें अपने घोड़ों तले रौंद डालो। इन काफ़िरों में से किसी को ज़िन्दा न जाने दो। हम अपने बच्चों समेत मरने को तैय्यार हैं।"

सलीबी कमानदार ने तलवार कर भरपूर वार किया। उस औरत का सर उसके जिस्म से कट कर गिर पड़ा। सुल्तान अय्यूबी के गश्ती जैश ने अपने सिपाहियों को तीर व कमान निकालने का हुक्म दिया। पलक झंपकते ही उन्होंने कमानों को कंधों से उतारीं, आगे कीं और तरकश से एक–एक तीर निकाल कर कमानों में डाल लिया तमाम सलीबी सिपाही बच्चों और औरतों के पीछे बैठ गये।

"झूठे मज़हब के पुजारियो!" मुसलमान कमानदार ने कहा– "सिपाही बच्चों और औरतों के पीठ पीछे नहीं छुपा करते।"

सलीबी एक ग़लती कर बैठे। वह शायद भूल गये थे कि गाँव में मर्द भी हैं। इन मर्दों को सलीबियों ने बहुत ख़ौफ़ज़दा कर रखा था। वह भी अपने बच्चों और औरतों के क़त्ल के डर से डरते थे। इतने में एक औरत ने ललकार कर कहा– "यह काफ़िर बुज़्दिल हैं, तुम हमारे ख़ून से क्यों डरते हो।" उसने अपने सामने खड़े तीन चार साल के बच्चे को उठाया और उसे आगे ज़मीन पर फेंक कर कहा– "मैं अपने बच्चे की क़ुर्बानी ख़ुशी से देती हूँ। हल्ला बोलो। दस काफ़िरों की जान लेने के लिए मैं अपना बच्चा क़ुर्बान करती हूँ।"

एक सलीब तलवार सूंत कर उस औरत को क़त्ल करने के लिए उठा मगर उसे इतनी मुहलत नहीं मिली। उनके अक़ब से गांव के तमाम आदमी बरछियां, लाठियाँ जो हाथ लगा उठाए सलीबी सिपाहियों पर टूट पड़े। सलीबी बच्चों और औरतों के पीछे तीरों से बचने के लिए बैठे हुए थे। वह जब मुक़ाबले के लिए उठे, मुसलमान सिपाहियों ने हल्ला बोल दिया। उनमें से दो तीन सिपाही चिल्ला रहे थे– "औरतें निकल भागें। बच्चों को एक तरफ़ कर लो।"

उनके घोड़े सहराई आंधी की तरह आ रहे थे। औरतों ने बच्चों को उठाया और निकल भागीं। गाँव के आदमी घोड़ों से बचने लगे। ज़िरह सी में दो सलीबियों के सिवा बाक़ी तमाम को मार डाला गया। गाँव वालों ने उनकी लाशों का क़ीमा बना दिया। वह दो ज़िन्दा सलीबियों को भी अपने हाथों मारना चाहते थे लेकिन मुसलमान जैश के कमानदार ने बड़ी मुश्किल से उन्हें समझाया कि इन दो से बाक़ी साथियों का सुराग लगाया जाएगा।

उन दोनों को सुल्तान अय्यूबी के इन्टेलीजेंस के नायब सरबराह हसन बिन अब्दुल्लाह के हवाले कर दिया गया। उसने इनसे कहा कि वह अपने छापामार दस्तों के मुतअल्लिक़ सब

कुछ बतादें। वह सिपाही थे। उन्होंने सब कुछ बता दिया। यह बिल्डून के फ़ौज के छापामार थे। वह कम व बेश एक हज़ार छापामार सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज और रस्द को नुक़्सान पहुंचाने के लिए बैरूत से भेजे गये थे। उनका एक भी कोई मुस्तक़िल अड्डा नहीं बना था। वह तमाम इलाक़े में पार्टियों में तक़सीम हो गये थे। उन्हे बताया गया था कि वह इसी तरह छोटे–छोटे गांव पर क़ब्ज़ा करके वहीं से ख़ुराक वग़ैरह हासिल करें और सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज के लिए मुसीबत बने रहें।

उन्हें सुल्तान अय्यूबी के सामने ले जाया गया। उसने इनकी बातें सुनीं और हुक्म दिया–कि "इन दोनों को दूर लेजाकर क़त्ल कर दिया जाए। यह क़ातिल और लूटेरे हैं।" उसने अपने सालारों से कहा– "इससे यह ज़ाहिर होता है कि सलीबी छापामारों को मुसिल में या किसी क़िले में रहने की इजाज़त नहीं मिली वरना यह गाँव को अड्डे न बनाते।" सुल्तान अय्यूबी ने हुक्म दिया–"ऐसे हर एक गाँव में थोड़ी–थोड़ी नफ़री भेज दो। सिपाहियों को सख़्ती से कहना कि गाँव में किसी को परेशान न करें। अपनी और घोड़ों के ख़ुराक फ़ौज की रस्द से लें। किसी गांव से अनाज का एक दाना और चारे का एक तिनका भी न लिया जाए।"

❖

हसन हातिम को रिपोर्ट देकर वापस आया तो वह बाक़ी रात सो न सका। उसके ज़ेहन पर सारा सवार थी। उसे दिन को ही पता चल सकता कि सारा को उस औरत ने पकड़ लिया था। उसकी उसे कोई सज़ा तो नहीं मिली? हसन को मालूम था कि वह औरत कौन है लेकिन उस औरत से मिल कर वह सारा की सिफ़ारिश नहीं कर सकता था क्योंकि वह उसे बता नहीं सकता था कि रात सारा के कमरे में वही था। हसन यह भी सोंच रहा था कि वह मुसिल के एल्चीयों से किस तरह मालूम करे कि बिल्डून के साथ उन्होंने क्या मुआहिदा तय किया है। यह राज़ उन्हीं से लिया जा सकता था। उस इज्लास में कोई मुलाज़िम अन्दर नहीं था जिससे हसन कुछ मालूम कर लेता। वह जिस क़दर ज़ेहन पर ज़ोर दे कर उस मसले का हल ढूंढता था, सारा उतनी ही ज़्यादा उसके ज़ेहन पर ग़ालिब आ जाती थी।

"सारा!" उसके मुंह से सरगोशी निकल गयी जो ग़ैरइरादी थी। उससे वह चौंक उठा उसे कुछ ऐसा इत्मीनान होने लगा जैसे उसे मसले का हल मिल गया हो और सारा इस मसले को हल कर देगी। उसे यह सवाल परेशान करने लगा– "क्या सारा किसी मुसलमान बाप की बेटी है?" और दूसरा सवाल यह कि उसे अगर अपना बचपन याद आ जाए तो क्या वह उसका मसला हल कर सकती है? इसका यही एक ज़रिआ था कि सारा मुसिल के किसी एक एल्ची को अपना गरवदा बना ले और उस पर शराब और अपने हुस्न का तिलिस्म तारी करके उसके सीने से राज़ निकाल ले मगर सवाल यह था कि सारा मान जाएगी? कहीं उसे ही न पकड़वा दे?"

जासूसों को ख़तरे मोल लेने पड़ते थे। उनकी कोशिश तो यही होती थी कि पकड़े न जाएं लेकि वह डर से दुबक के भी नहीं बैठ सकते थे कि वह पकड़े या मारे जाएंगे। हसन को अपनी ज़ुबान के फ़न का कमाल दिखाना था। उसे सारा की बातें याद आ रही थीं जिनसे

साफ़ ज़ाहिर होता था कि वह मुसलमानों को पसन्द करती है। हसन को यह भी एहसासा हो गया था कि सारा को शक हो गया है कि वह (हसन) मुसलमान है। हसन का दिमाग़ सोंच–सोंच कर थक गया। उसे दूर से सुबह की आज़ान सुनाई देने लगी। उसके दिमाग़ पर इस्लाम और ख़ुदा का तक़द्दस तारी हो गया। उसकी मदद ख़ुदा ही कर सकता था। उसने उठकर वज़ू किया और कमरे का दरवाज़ा बन्द कर लिया। सलीबियों की इस दुनियामें वह मुसलमान नहीं ईसाई था। हसन अल इद्रिस नहीं गिल्बर्ट जैकब था। वह छोटे से कमरे मे अकेला रहता था जहाँ उसने हज़रत ईसा का बुत सलीब के साथ लटका हुआ लटका रहता था। दिवार के साथ किसी मुसव्विर की बनाई हुई मरीयम की तस्वीर आवीज़ां रखी थी। क़रीब ही सलीब लटक रही थी। उसने यह बुत, तस्वीर और सलीब पलंग के नीचे रख दीं। दरवाज़े के अन्दर वाली ज़ंजीर चढ़ाकर किब्ला रू हुआ और नमाज़ पढ़ने लगा। वह हर रोज़ इसी तरह छुप कर नमाज़ पढ़ा करता था मगर उसकी जज़्बाती हालत कभी ऐसी नहीं हुई थी जैसी इस सुबह की नमाज़ में हुई। उसके आँसू निकल आए थे। उसके मुँह से यह अल्फाज़ "ईय्या–क नाअबदो–व–ईय्या–क नस्तईन" (तेरी ही ईबादत करते हैं और तुझ से ही मदद माँगते हैं) बुलन्द आवाज़ से निकल गये थे। उसे पहली बार महसूस हुआ। जैसे ख़ुदा उसके सामने खड़ा है और इतनी करीब खड़ा है कि वह ख़ुदा को छु सकेगा। उसने नमाज़ खत्म करके दो नफ़िल पढ़े और दुआ के लिए हाथ उठाये। उसकी आँख बन्द हो गयीं। उसकी ज़ुबान से अलफ़ाज़ उसके सोंचे बेग़ैर फिसलने लगे–"किब्ला अव्वल के ख़ुदा! आज तेरा नाम लेने वाले तेरे रसूल का कलमा पढ़ने वाले मुसलमान उन इन्सानों के डर से तेरी मस्जिदे अक़्सा में तेरी हुज़ूर सज्दा करने से डरते हैं जो तेरे रसूल के मुन्किर हैं। आज तेरा किब्ला अव्वल वीरान हो गया है। जो ज़मीन तेरे रसूल के कदमों से मुकद्दस और मुबारक हुई थी, उसपर आज सलीब का स्याह साया पड़ गया है जिस बनी इस्राईल को तेरी ज़ात ने धुतकार दिया था, वह आज तेरे किब्ला अव्वल को हैकल सुलैमानी कह रही है....

"मेरे खुदा! अपनी अज़मत का पता दे। मुझे बता दे कि तू अज़ीम है या ख़ुदाए यहूदा। मुझे बता हज़रत ईसा तेरे पास हैं, या सलीबियों के सलीब पर लटक रहे हैं। अपनी अज़मत का पता दे। कुर्आन की अज़मत का पता दे। अपने रसूल की अज़मत का पता दे, और उसका सबब बना कि मैं तेरे रसूल सल्ल0 और तेरे कुर्आन की अज़मत का पता यहूदियों और सलीबियों को दूँ मुझे हिम्मत अता फ़रमा कि मैं उन पहाड़ों को रेज़ा–रेज़ा कर सकूं जो सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी और किब्ला अव्वल के दर्मियान हायल हो गयी हैं। मुझे रौशनी दिखा कि मैं इन अंधेरों में अपने फ़र्ज की मंज़िल देख सकूं। मुझे इतने सख्त इम्तेहान में डाल कि मेरी जान तेरे नाम पर कुर्बान हो जाए लेकिन वादा फ़रमा कि मेरी जान रायगां नहीं जाएगी। तुझे तेरे नाम पर कुर्बान होने वाले शहीदों के यतीम बच्चों की क़सम! मुझे हिम्मत और रौशनी अता फ़रमा कि मैं उन यतीमो के बापों के ख़ून के एक–एक क़तरे का इन्तक़ाम ले सकूं......

"तुझे रसूल की उम्मत की उन बेटियों की क़सम जिनकी इस्मतें मस्जिदें अक़्सा की

आबरू की खातिर लूटी गयी हैं। मुझे जुर्रत अता फ़रमा कि कुफ़्र के हर क़िले को मिस्मार कर सकूं। अपने ग़ाज़ी बन्दों को, अपने हिजाजी बन्दों को हिम्मत और हिदायत अता फ़रमा कि वह अपनी ग़ैरत का इन्तक़ाम लें और आने वाली नस्लें यह न कहें कि हम बेग़ैरत थे। आज बुत भी तेरे नाम पर हंस रहे हैं। मेरा ख़ून खौल रहा है। मुझे वह शुजाअत अता कर कि पत्थर के इन बुतों का मज़ाक़ उड़ा सकूं। मेरे ख़ुदा! अगर तू यह नहीं कर सकता तो मेरे ख़ून को सर्द कर दे। मुझे ऐसा बेग़ैरत बना दे कि मुझे याद ही न रहे कि ग़ैरत किस चीज़ का नाम है। मेरी बीनाई वापस ले ले कि मैं इस्लाम की बेटियों को बेहया और बेआबरू होता न देख सकूं। या मेरे कान बन्द कर दे कि मैं तेरा नाम न सुन सकूं। मैं उन मुसलमानों की फ़रियादे न सुन सकूं जो फ़िलिस्तीन में सलीबियों और यहूदियों के ग़ुलाम हो गये हैं।"

हसन की आवाज़ बुलन्द हो गयी– "तू कहाँ है?....तू कहाँ है?....बोल मेरे ख़ुदा! मुझे ज़ुबान देने वाले ख़ुदा! ख़ुद भी बोल। मुझे बता कि सुन्नत बरहक़ है या सलीब, या मुझे फ़ैसला करने दे कि सच्चा कौन है! सुन्नत या सलीब। क़ुर्आन तेरी आवाज़ है या किसी बन्दे की?"

बड़ी ही हौलनाक गड़गड़ाहट सुनाई दी जैसे छत हिल रहा हो। उसके फ़ौरन बाद ही इतनी ज़ोर से कड़की कि हसन का कमरा हिल गया। कमरे की दरज़ों में से हसन को बिजली की चमक दिखाई दी। उसने और ज़्यादा बुलन्द आवाज़ से कहा– "इस बिजली से मुझे भस्म कर दे या अपनी मस्जिदे अक़सा को। मुसाफ़िर न रहें, न मन्ज़िल रहे। बिजलियां उन पर गिरा जिनके सुहाग तेरे नाम पर उजड़ गये हैं। अपने नाम यतीम होने वालों बच्चों पर बिजलियां गिरा। अपने रसूल के नाम लेवाओं पर बिजलियाँ गिरा ताकि किसी की फ़रियाद तेरे कानों तक न पहुंच सकें।"

बिजली फिर कड़की और उसके बाद घटायें गरजने लगीं। बैरूत का साहिल क़रीब ही था। उन दिनों समन्दर ख़मोश हुआ करता था मगर समन्दर जोश में आ गया। उसकी लहरों की महीब आवाज़ हसन को यूं सूनाई देने लगी जैसे बहेरा रोम की ग़ुस्से में आई हुई मौजें उसके कमरे की दिवारों से टकरा रही हों। घटाओं की गरज, बिजली की कड़क और समन्दर का जोश मिलजुल कर क़यामत का शोर बन गये। हसन की आवाज़ ज़्यादा बुलन्द हो गयी।

"ऐसे ही तूफ़ान मेरे अन्दर उठा कि मैं कुफ़्र के हर निसान को उड़ाता और बहाता ले जाउं। मेरे ख़ून के क़तरे बहा दे लेकिन मस्जिदे अक़सा के सेहन मे। मैं शर्मसार हूँ कि क़िब्लाअव्वल का पासबान सलाहुद्दीन अय्यूबी यहाँ तेरा लश्कर लेकर आया तो मैं उसे ख़बर न कर सका कि बेरूत से दूर रहे कि यहाँ कुफ़्फ़ार का फंदा तैय्यार है। यह मेरी मजबूरी थी। यह मेरा गुनाह था। मुझे जुर्रत और शुजाअत अता कर कि मैं गुनाह का कफ़्फ़ारा अदा कर सकूं, वरना यह बुत मेरी रूह को ताने देते रहेंगे कि तेरा तो ख़ुदा ही कोई नहीं। मुझे इन बुतों के आगे शर्मसार न कर, मुझे शहीदों की रूहों के आगे शर्मसरा न कर। अगर मेरी दुआ क़ुबूल न हुई तो रोज़े क़यामत मेरे मुर्दे में जान न डालना वरना तेरा गरीबांन पकड़ लूंगा और तेरी महफ़िलों से कहूंगा कि यह है वह ख़ुदा जिसने अपने रसूल की लाज नहीं रखी, इस ख़ुदा

ने रसूल के नाम लेवाओं को इतना मजबूर बना और बेबस किया कि किब्लाअव्वल वीरान हो गया और उसपर सलीब और यहूदा के स्याह साये पड़ गये।"

बिजली ज़ोर से कड़की। हसन के कमरे की छत,दरवाज़े और खिड़की के किवाड़ जोर से खटके और छत पर पर यूं आवाज़ें आने लगीं जैसे घोड़े दौड़ रहे हो। मुसलाधार बारिश शुरू हो गयी थी। तूफ़ान वादबारान ज़मीन व आसमान को हिला रहा था।

हसन के दिल पर ऐसी गिरफ्त आ गयी जिसमें खौफ भी था और जज़्बात की शिद्दत भी। कभी उसे ऐसे लगता जैसे वह ख़्वाब देख रहा हो। उसने ख़ुदा से इस तरह कभी बातें नहीं की थीं। वह छुप कर नमाज़ पढ़ा करता था और मुख़्तरसर अल्फ़ाज़ में दुआ माँग कर हसन से जैकब बन जाया करता था।

उस रात जब वह हातिम को रिपोर्ट दे कर आया था, उसकी जज़्बाती कैफ़ियत कुछ और थी। उस पर नींद का असर भी था। उसके सामने मसला ऐसा आ गया था कि वह सोंच-सोंच कर दिवाना होने लगा था। उसके लिए आसान रास्ता यह था कि जिस मसले का हल कोई नहीं उसे ज़ेहन से निकाल देता। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी, अली बिन सुफ़ियान और उसके लीडर हातिम को क्या ख़बर थी कि अज़ाउद्दीन के एल्ची बिल्डून के पास आए हैं और कोई मुआहिदा हो रहा है। वह खामोश रहता। उसके घर में उसके माँ बाप को उसकी तन्ख़्वाह और ग़ैर ममालिक में जासूसी के फ़ालतू पैसे बाक़ायदा पहुंच रहे थे। बैरूत में उसे अच्छी पोज़ीशन और ऐश व ईशरत का सामान हासिल था, मगर वह ईमान वाला मर्देमोमिन था। अपने फ़राईज़ को नमाज़ रोज़े की तरह मोतबर्रक समझता था। उसे एहसास था कि कौम का हर फ़र्द यह समझ ले कि यह काम कोई और करेगा तो यह रवैया सीधा शिकस्त, कौम की तबाही और कुफ़्फ़ार की फ़तह की तरफ़ ले जात है।

❖

रात भर जागे हुए जवान और तवाना हसन को नींद ने मुसल्ले पर ही दबोच लिया। उसकी जज़्बाती कैफ़ियत में उसे नींद नहीं आनी चाहिए थी लेकिन उसकी सोंच ने कुछ ऐसा क़रार और सकून महसूस किया कि रूह ने जिस्म और दिमाग़ को सुला दिया। वह वहीं औंधा हो गया। उसे इतनी मुहलत न मिली कि मुसल्ला छुपाकर और हज़रत ईसा का बुत, मरीयम की तस्वीर सलीब पलंग के नीचे से उठाकर अपनी-अपनी जगह रख देता। दरवाज़ा खोल देता और जैकब के बहरूप में पलंग पर सो जाता। वह ख़्वाबों की दुनिया में पहुंच गया। उसने मजिस्दे अक़्सा देखी। यह मस्जिद उसने एक बार देखी थी जब वह बैतुल मुकद्दस में जासूसी के एक मिशन पर गया था। यह मस्जिद वीरान थी। उसके खुले हुए दरवाज़े अपने नमाज़ियों की राह देख रहे थे मगर मुसलमान छोटी-छोटी मस्जिदों या घरों में नमाज़ पढ़ लिया करते थे। सलीबियों और यहूदियों के बच्चों ने मस्जिदे अक़्सा के सेहन को खेल का मैदान बनाया हुआ था जहाँ बेशुमार बच्चे जूतों समेत खेल रहे थे। सलीबियों ने वहां के मुसलमानों को खौफ़ज़दा कर रखा था। हसन मस्जिदे अक़्सा के मुकद्दस मुकाम और मुसलमानों के लिए उसकी अहमियत से अच्छी तरह वाकिफ़ था। वह जब वहाँ गयाथा तो

उसका नाम रीलफ निक्सन था।

अब वह बैरूत में ख़्वाब में मस्जिदे अक़्सा देख रहा था। उसके गुम्बदों पर बेशुमार कबूतर बैठे थे। कबूतर यक बारगी उड़े और तमाम कबूतर फ़िज़ा में जाकर शरारे बन गये। यह शरारे मस्जिदे अक़्सा के इर्द गिर्द गिरने लगे। मस्जिद के अन्दर से सलीबियों और यहूदियों का एक हुजूम निकला। उन सबके कपड़ों को आग लगी हुई थी। वह सब इधर उधर भाग गये। वह सब चीख और चिल्ला रहे थे मगर किसी की आवाज़ सुनाई नहीं देती थी। फ़िज़ा से बरसते हुए शरारे रंग बिरंग के परिन्दे बन गये, और एक–एक करके मस्जिदे अक़्सा के गुम्बद पर बैठने लगे। अब मस्जिद में न कोई सलीबी था न यहूदी। हसन आहिस्ता–आहिस्ता मस्जिद की तरफ़ चला। आसमान नीला था। दिन की रौशनी भी नीली थी। मस्जिद के दरवाज़े में ऐसी चमक दिखाई दी जैसे बहुत बड़े आइने पर सूरज की किरने पड़ी हों।

हसन की आँखें ख़िरा हो गयीं। उसने आँखें बन्द करके खोलीं। चमक या नूर का गोला वहाँ नहीं था। वहाँ सारा खड़ी मुस्कुरा रही थी। हसन हैरतज़दा होकर रूक गया। सारा पांव से सर तक चांद की तरह सफ़ेद लिबास में मलबूस थी। उसका चेहरा और दोनों हाथ नज़र आ रहे थे। उसकी मुस्कुराहट से उसके दांत इतने ज़्यादा सफेद नज़र आ रहे थे जितनी सफ़ेदी इस ज़मीन के लोगों ने कभी नही देखी। सारा ने बाज़ू फ़ैला दिए। उसके होंठ हिले नहीं थे, लेकिन हसन को उसकी मुतरन्निम आवाज़ सुनाई दी– "आ जाओ, मस्जिद अक़्सा हमारी है। इस मस्जिद में जो काफ़िर दाख़िल होगा उसपर आसमान आग बरसायेगा और जो मुसलमान इस मस्जिद के तक़द्दुस को भूल गये हैं, उन पर भी आग बरसेगा। मैंने इसके सेहन को ज़मज़म के पानी से धो दिया है। मेरे गुनाह धुल गये हैं। आओ.......आओ।"

हसन की आँख खुल गयी। उसने फ़िर आँख मूंद ली। वह इस ख़्वाब से दस्तबरदार नहीं होना चाहता था मगर मुंदी हुई आंखों में अंधेरे के सिवा कुछ नहीं था। वह अब हक़ीकत की दुनिया में लौट आया था। छत पर और इधर उधर मुसलाधार बारिशों का क़यामत ख़ेज़ शेर और चीख़ें थीं। उसमें समन्दर की आवाज़ भी थी जो पहले से ज़्यादा गुस्से में आ गया था। बादो बारां और बहेरा रोम के इस हंगामे मे हसन को ऐसे लगा जैसे किसी ने उसके दरवाज़े पर दस्तक दे दी हो। यह उसका वहम भी हो सकता था। वह वहम से ही बेदार हुआ था। उसने सलीब, हज़रत ईसा का बुत और मरीयम की तस्वीर उठाकर सबको अपनी–अपनी जगह लटका दिया। इस दौरान दरवाज़े पर दस्तक बड़ी साफ़ हुई। हसन ने मुसल्ला लपेट कर तकिए के नीचे रख दिया और दरवाज़ा खोला।

दरवाज़े में सारा खड़ी मुस्कुरा रही थी। बादबारां का यह समा कि बरामदे से परे कुछ और नज़र नहीं आता था। सारा के कपड़ों और बालों से पानी टपक रहा था।

"तुम इस तूफ़ान में मेरे पास आई हो?" हसन ने उसे बाज़ू से पकड़ कर अन्दर घसीटते हुए कहा।

"नहीं जैकब!" सारा ने जवाब दिया– "मैं किसी और के पास गयी थी। वह मिला नहीं। गहरी नींद सोया हुआ है। रात भर सब शराब पीते और बेहूदगी करते रहे हैं। अब शाम को ही

जागेंगे। मैंने इन्तज़ार किया लेकिन मायूस होकर इधर आगयी। यह तूफ़ान आगे नहीं जाने दे रहा था। दिन के वक़्त तो तुम्हारे पास आने से मुझे कोई नहीं रोक सकता।"

हसन ने एक कपड़ा उठाया जो उसने सारा के सर पर डाल दिया और अपने हाथों से उसके बाल उस कपड़े से ख़ुश्क करने लगा। सारा को यह बेतल्लुफ़ी बहुत पसन्द आयी। हसन ने उसका चेहरा भी पोंछ दिया। फिर एक चादर उसे देकर कहा–"मैं मुँह उधर कर लेता हूँ तुम भींगे हुए कपड़े उतार कर चादर लपेट लो।"

सारा ने जब भींगे हुए कपड़े उतारे तो वह सोंचने लगी कि इस शख़्स को इतनी ज़्यादा रूहानी मोहब्बत है कि उसके जिस्म की दिलकशी के साथ इसे कोई दिलचस्पी नहीं, या उसका दिल बिल्कुल ही मुर्दा है.......सारा ने जब उसे कहा कि मैंने कपड़े बदल लिए हैं तो हसन ने मुँह फेरा और उसके कपड़े बरामदे में जाकर निचोड़ लाया।

"अब बताओ तुम कहाँ गयी थी।" हसन ने पूछा– "और रात मेरे बाद क्या हुआ था? वह औरत अन्दर आ गयी थी?"

"इसी सिलसिले में मैं इधर आई थी।" सारा ने कहा और उसे बताया कि रात को उस औरत ने उसके कमरे में आकर माफी की क्या शर्त पेश की है। उसने कहा– "मैंने यह नहीं बताया कि तुम मेरे कमरे में आये थे। मैंने सिर्फ़ इसलिए उसकी शर्त मान ली कि तुम्हारा नाम लिया तो मेरे साथ तुम्हें भी सज़ा मिलेगी और तुम जानते हो कि यह सज़ा कैसी भयानक होगी। तुम शायद हैरान होगे कि मैं कोई पाक साफ़ लड़की नहीं, फिर भी मैं मुसिल के मेहमानों या किसी और की ख़्वाबगाह में जाने को पसन्द नहीं करती। मैं रक़ासा ज़रूर हूँ लेकिन मैं यूं खिलौना नहीं बनना चाहती जिस तरह यह बुढ़िया बनाना चाहती है। मेरी अपनी कोई पसन्द और नापसन्द है। मैंने बहुत गुनाह किए हैं लेकिन किसी की आमदनी और किसी और के गुनाहों का ज़रिआ नहीं बनूंगी।

उस औरत ने कहा कि वह मुझे इस चोरी छिपे कारोबार मे से मुआविज़ा देगी। वह मुझे मुआविज़ों की भूखी समझती है। मैंने उसे कह दिया है कि मैं उसकी इस ख़्वाहिश के मुताबिक़ आज रात मुसिल के एक मेहमान के पास चली जाऊंगी लेकिन मैं अब कोशिश कर रही हूँ कि हाकिमों को बतादूं कि यह औरत दरपरदा क्या कारोबार करती है।"

"और वह कह देगी कि तुम्हारे कमरे में आदमी जाते हैं।" हसन ने कहा।

"कहती रहे।" सारा ने कहा– "मैं अब सज़ा लेने को भी तैय्यार हूँ और मैं ख़ुदकुशी के लिए भी तैय्यार हूँ। मैं इस औरत को बेनक़ाब करके रहूंगी। मैं रक़ासा हूँ। मैं इस्मत फ़रोशी नही करूंगी।"

"मैं सामने आकर यह क्यों न कह दूं कि तुम्हारे कमरे में मैं गया था।" हसन ने कहा– "मैं कहूंगा कि मेरा तुम्हारे साथ जिस्मानी नहीं जज़्बाती तअल्लुक़ है।"

"अगर यह कहना होता तो मैं ख़ुद कह देती कि मेरे कमरे में जैकब आया था।" सारा ने कहा–"मगर ऐसा कहना तुम्हें घोड़े के पीछे बांध कर घोड़ा दौड़ा देने के बराबर है। कोई नहीं मानेगा कि मेरा तुम्हारा जज़्बाती तअल्लुक है। यह लोग किसी के जज़्बात से वाक़िफ़ नहीं।

उनके यहाँ सबकुछ जिस्मानी है....तुम अलबरद को जानते हो। इटली का रहने वाला है। नेक और रहम दिल अफ़सर है। बिल्डून पर उसका ख़ासा असर है। सिर्फ़ यह एक बड़ा अफ़सर है जो मुझ जैसी लड़कियों को साफ़ सुथरी निगाहों से देखता है। मैं उसे रात की बात सुनाऊंगी और अपनी इज़्ज़त बचाने की कोशिश करूंगी। अगर मेरी यह कोशिश नाकाम रही तो मैं समन्दर में कूद जाऊंगी। अगर समन्दर ने मेरी लाश उगल दी तो तुम भी देख लेना वरना अलविदा। बहेरा रोम की मछलियां खाओगे तो शायद उनमें तुम मेरे जिस्म की बू सूंघ सकोगे।"

"सारा!" हसन ने कहा–"तुम ईसाई नहीं हो। तुम्हारे साथ रहने वाली कोई एक लड़की भी नहीं जो जिस्मानी अय्याशी और मुआविज़े को तुम्हारी तरह ठुकरा दे। तुमने आबतक मेरे साथ जो बातें की हैं उनसे मुझे यक़ीन हो गया है कि तुम्हारी रगों में मुसलमान का ख़ून है। इस ख़ून में अब उबाल आया है जब तुम सलीबियों की गुनाहों के दलदल में फंस गयी हो। कहो, मैं झूट बोल रहा हूँ"

साराने उसकी तरफ़ देखा। आह ली और बोली– "सुनो जैकब!....."

"मैं जेकब नहीं सारा!" हसन ने कहा–"मेरा नाम हसन अल इद्रिस है और मुल्क शाम का रहने वाला हूँ। यहां मेरा नाम गिल्बर्ट जैकब है।"

"जासूस हो?"

"कोई और वजह भी हो सकती है।" हसन ने कहा–"जासूसी ही वजह नहीं। जिस तरह हम दोनों एक दूसरे की रूह में उतर गये हैं इसकी वजह यह है कि हम दोनों मुसलमान की औलाद हैं।" उसने तकिए के नीचे से मुसल्ला निकाला, और दिवार में से एक पत्थर हटाकर उसके पीछे से कुर्आन का एक छोटा सा नुस्ख़ा निकाला। सारा को दिखा कर कहा–"मैं इनके बेग़ैर नहीं रह सकता। यह बुत,यह तस्वीर और यह सलीब धोखा है।"

"अगर मैं किसी से कह दूं कि तुम ईसाई नहीं मुसलमान हो तो क्या करोगे?" सारा ने हंस कर कहा– "तुम जासूस नहीं हो सकते। जासूस अपना आप इस तरह ज़ाहिर नहीं किया करते।"

"कह दो।" हसन ने कहा–"मैं तुम्हारी नज़िरहें के सामने से इस तूफ़ाने बादबारां में ग़ायब हो जाऊंगा जासूस मेरी तरह अपना आप ज़ाहिर नहीं किया करते और जब ज़ाहिर करते हैं तो इतनी आसानी से हाथ भी नहीं आते, जितना तुम समझती हो.....लेकिन सारा! मुझे यक़ीन है तुम किसी से नहीं कहोगी।"

हसन ने आगे बढ़कर सारा का चेहरा अपने हाथों के प्याले में लेकर बिल्कुल करीब कर लिया। उसकी आँखों में आँखें डाल कर धीमी मगर पुरअसरार आवाज़ में कहा–"तुम किसी से नहीं कहोगी कि यह शख़्स जैकब नहीं हसन है। तुम कह ही नहीं सकोगी। हमारी रगों में रसूल सल्ल० के शैदाइयों का ख़ून है। यह ख़ून सफ़ेद नही हो सकता। यह ख़ून अपने क़तरों को धोखा नही दे सकता।" सारा की आँखों को हसन की आँखों ने जकड़ लिया। वह महसूस करने लगी जैसे यह ख़ुबरू जवान बड़े ही हसीन आसेब की तरह उसके दिमाग़ पर और उसके दिल पर ग़ालिब आ गया हो। हसन कह रहा था–"तुम रक़्स के लिए नहीं मस्जिदे

अक़्सा को कुफ़्फ़ार से आज़ाद कराने के लिए पैदा हुई हो। ख़ुदा ने मुझे ख़्वाब में बशारत दे दी है। अब यह न कहना कि तुम मुसलमान नहीं। तुम कह ही नहीं सकोगी। बोलो सारा! मैंने तुम्हें अपना राज़ दे दिया है, तुम मुझे अपना राज़ दे दो। मुझे तुम्हारे जिस्म से कोई सरोकार नहीं ! मैं तुम्हारी रूह को पाक देखना चाहता हूँ।"

सारा पर हसन तिलिस्म बनकर तारी हो चुका था। सारा की आँखों में आँसू आ गये। आहिस्ता से बोली– "हाँ हसन, मैं मुसलमान हूँ। मैं अपने बाप की गुनाहों की सज़ा भुगत रही हूँ। मैं सारा नहीं सायरा हूँ।"

"गुनाह किसी के भी थे।" हसन ने कहा–"मैंने आज तक तुम्हारी ज़ुबान से जो बातें सुनी हैं और जिस अन्दाज़ से तुमने यह बातें की हैं, मैं ने अन्दाज़ा लगाया है कि यह गुनाह तुम्हारे दिल और रूह में चुभ रहे हैं। तुम सलीबियों के खिलाफ़ नफ़रत का और मुसलमानों की पसन्दीदगी का इज़हार करती रही हो। इससे ज़ाहिर होता है कि यह चुभन तुम्हे बेचैन रखती है।"

"जबसे तुमने मेरी रूह को पाक प्यार से आशा किया है, मुझे ऐश व ईशरत की यह जिन्दगी जहन्नम से ज़्यादा आतिशीं और अज़ीयतनाक महसूस होने लगी है। मैं गुनाहों में पली, बढ़ी और गुनाहों मे जवान हुई। गुनाहों का हुस्न ज़हरीला नाग बन गया है। मैं अब ज़िन्दा नहीं रहना चाहती।"

"अपनी जान लेना भी गुनाह है।" हसन ने कहा–"अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। यह अल्लाह का वादा है। गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा करो, सब बेक़रारियां रूहानी सकून में बदल जाएगी।"

"क्या करूं?" सारा ने आंसू पोंछते हुए पूछा–"नमाज़ पढ़ा करूं? तारूकुद्दुनिया हो जाऊं? बताओ क्या करूं?"

"जासूसी।" हसन ने जवाब दिया–"सिर्फ़ एक बार। पहली और आखिरी बार.....लेकिन तुम उस वक़्त तक जासूसी नहीं कर सकोगी जब तक यह न समझ लो कि उसका मक़सद क्या है। इन्सान अपने मक़सद की अज़मत से अज़ीम बना करते हैं। जानती हो नुरूद्दीन ज़ंगी का मक़सद क्या था? सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का मक़सद क्या है? यह तो बहुत बड़े लोगों की बातें हैं। मैं उनके मुक़ाबले कुछ भी नही लेकिन तुमने मेरी ज़ात में और मेरी आँखों में ऐसा तास्सुर देखा होगा जिसने तुमसे सच बात कहलवा ली है। यह दरअसल मेरी ज़ात का असर नहीं यह मेरे मक़सद की अज़मत है जो मुझे ईमान से ज़यादा अजीज़ है। मक़सद की ही अज़मत है और उसी का तक़द्दुस है कि तुम्हारा हुस्न और तुम्हारे जिस्म की यह कशिश जो इबादत गुज़ारों को चौका देती है, मुझ पर असर नहीं कर सकी। क्यों नहीं कर सकी? सिर्फ़ इसलिए कि मैं इन्सानों और अशिया को रूह की नज़िरहें से देखा करता हूँ।"

" मैं सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का मक़सद अच्छी तरह जानती हूं।" सारा ने कहा– "यह भी जानती हूँ कि सलीबी हुक्मरान मुसलमान उमरा और हुक्मरानों को मदद और अय्याशी का सामान देकर उन्हें सुल्तान के खिलाफ लड़ा रहे हैं। और मैं यह भी जानती हूँ कि

सलीबी आलमे इस्लाम को सलीब के साये में लाना चाहते हैं। हसन! मैं ने यह मकसद यहीं आकर पहचाना है वरना मैं भी सलीब के सैलाब मे बह गयी थी। यह सैलाब मुझे यहां तक ले आया है। यह भी सुनाऊंगी कि कैसे कुछ दिनों से मस्जिदे अक़्सा मेरे दिल पर ग़ालिब आ गयी है। दो राते गुज़रीं, मैंने ख़्वाब में मस्जिदे अक़्सा देखी है। मैंने अभी तक यह मस्जिद नही देखी। मुझे मालूम नहीं कि यह कैसी है। ख़्वाब में यह मस्जिद देखी और उसके अन्दर गयी। मस्जिद खाली और वीरान थी। मुझे एक गूंजदार आवाज़ सुनाई दी– "यह तेरे ख़ुदा का घर है। इसे आबाद करो, मैं देख रही हूँ कि आवाज़ कहाँ से आई है लेकिन आँख खुल गयी। यह आवाज़ मेरे दिल में उतर गयी है.....क्या मैं अपना मकसद बना सकती हूं?'

"यह हर मुसलमान का फ़र्ज़ है।" हसन ने कहा–"लेकिन इस के लिए कुर्बानियाँ देनी पड़ती हैं। मैं बैरूत मे हर लम्हा मौत का इन्तज़ार करता हूँ। मैं जिस रोज़ पकड़ा गया वह मेरी ज़िन्दगी का आख़िरी दिन होगा।"

"मैं कुर्बानी देने को तैय्यार हूँ।" सारा ने कहा–'मुझे मेरा फ़र्ज़ बताओ।"

"तुम्हें इस बूढ़ी भद्दी औरत ने मुसिल के जिस एल्ची की तफ़रीह के लिए जाने को कहा है, तुम उसके पास चली जाओ।" हसन ने कहा।

सारा ने उसे इतनी ज़्यादा हैरत से देखा कि उसकी आँखे ठहर गयीं।

"हाँ सारा!" हसन ने कहा– "तुम्हें यह कुर्बानी देनी होगी। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी औरत को जासूसी के लिए नहीं भेजा करते। वह कहा करते हैं कि एक औरत की इस्मत बचाने केलिए मैं एक मज़बूत किला दुश्मन को देने के लिए तैय्यार हूँ। हम इस्मतों के मुहाफ़िज़ हैं, मगर सारा! तुम यहाँ मौजूद हो। हमें जो फ़र्ज़ अदा करना है वह सिर्फ़ तुम्हारे ज़रिए हो सकता है। तुम्हारे लिए यह कोई नई बात नहीं होगी कि किसी की तफ़रीह का सामान बनो। मैं तुम्हे एक दो तरीक़े बताऊंगा जिनसे तुम इन बूढ़े मुसलमानों के सीनो से राज़ भी निकाल सकोगी और अपनी इज़्ज़त भी बचा लोगी। तुम्हारा मकसद बड़ा पाक और बुलन्द है। मुझे उम्मीद है कि ख़ुदा तुम्हारी आबरू की हिफ़ाज़त करेगा।"

"मुझे बताओ करना क्या है।" सारा ने कहा– "मैं बेआबरू लड़की हूँ। अगर ख़ुदा भी मुझसे यही कुर्बानी लेकर ख़ुश हो सकता है तो मैं यह कुर्बानी देने को तैय्यार हैं।"

"यह दोनो एल्ची मुसिल के हुक्मरान अज़ाउद्दीन की तरफ़ से आये हैं।" हसन ने उसे बताया–"मुझे यक़ीन है कि वह सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ़ बिल्डून से मदद लेने आए हैं। इस वक़्त हमारी फ़ौज नसीबा के मुक़ाम पर ख़ेमाज़न है। सुल्तान को यह ख़ुशफ़हमी है कि वह अपने दो दोस्तों के दर्मियान ख़ेमाज़न हैं मगर वह अपने मुसलमान दुश्मनों के नर्ग़े में आए हुए हैं। हमें यह मालूम करके सुल्तान को ख़बरदार करना है कि सलीबी कैसा जंगी इक़दाम करेंगे और मुसिल और हलब औरदिगर छोटी–छोटी मुसलमान इमारतों का रवैया क्या होगा। क्या वह सलीबियों के इत्तेहादी बन जाएंगे?" हसन ने उसे बड़ी लम्बी तफ़सील से उसका काम समझा और यह भी बताया कि सलीबी लड़कियां मुसलमान इलाक़ों में जाकर किस तरह मुसलमान उमरा और सालारो और दिगर हुक्काम पर अपनी

पुरकशिश निस्वानियत का जादू तारी करके राज़ ले आती हैं। हसन ने कहा–"तुम्हें खुदकुशी करने की ज़रूरत महसूस नहीं होगी। मैं तुम्हें पाक और मुसर्रत भरी ज़िन्दगी में दाख़िल कर रहा हूँ। तुम मज़लूम लड़की हो। तुम्हें ग़ालिबन बचपन में सलीबियों ने किसी काफ़िले से अग़वा किया था। उन्हीं ने तुम्हें गुनाहों की ज़िन्दगी में दाख़िल किया है।"

"नहीं हसन!" सारा ने कहा– "मैंने अपने आप को खुद ही अग़वा किया था। यह कहानी फ़िर कभी सुनाऊंगी। मुझे अभी यह काम करने दो। दुआ करो अल्लाह मुझे सुरख़ुरू करे और मैं गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा कर सकूं।"बारिश थम गयी तो सारा अपने कपड़े पहन कर हसन के कमरे से निकली। वह जब उस इमारत में दाखिल हुई जहाँ उसका कमरा था तो उसे वह औरत मिल गयी जो उन सब लड़कियों की कमाण्डर थी। उसने सारा को देखा और मुस्कुरा कर कहा–"रात को तैय्यार रहना। मेरे आदमी ने मुसिल के एक आदमी के साथ बात कर ली है। आज रात न कहीं नाच गाना होगा न कोई ज़ियाफ़त। मैं तुम्हें उसके कमरे में छोड़ आऊंगी।"

"मैं तैय्यार रहूंगी।" सारा ने कहा।

❖

मुसिल के दोनों एल्चीयों की हालत भूखे भेड़ियों जैसी थी। वह यहाँ अज़ाउद्दीन अका और अपना ईमानफ़रोख़्त करने आये थे। वह अपनी ग़द्दारी को कामयाब बनाने के लिए इस सलीबी बादशाह से मदद लेने आये थे। यह बादशाह अपने मुफाद की ख़ातिर और मुसलमानों के हुक्मरानों को आपस में लड़ाने की ख़ातिर उन्हें शह, पुश्त पनाही और मदद दे रहा था। उन मुसलमान एल्चीयों के पास न ईमान रहा था, न ज़ाती वक़ार न क़ौमी वक़ार। उनकी दिलचस्पी अब इसमें रह गयी थी कि शाह बिल्डून उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा अय्याशी कराये और ईनाम व इकराम दे। इन दोनों को बैरूत के गिर्दोनवाह और समन्दर की सैर कराने के लिए रोक लिया गया था। इस दौरान नाचने गाने वाली लड़कियों की कमाण्डर ने अपने एक आदमी को उनके पास भेजा था। उस आदमी ने उन्हें कहा था कि वह उन्हें ऐसी लड़कियाँ ला देगा जो उन्होंने कभी नहीं देखी होगी। उन दोनों की बांछे खिल गयीं और मुआविज़ा तय हो गया। उनमें से एक के पास सारा को भेजने के लिए तैय्यार किया गया।

रात सारा को स्याह लबादे में छुपा कर एक एल्ची के कमरे तक पहुंचा दिया गया। एल्ची जो वालिये मुसिल अज़ाउद्दीन का फ़ौजी मुशीर था, पचास साल से उपर की उम्र का आदमी था। गुज़िश्ता रात उसने इस क़दर शराब पीली थी कि बेहोश हो गया था, लेकिन आज रात वह अपने कमरे में आहिस्ता–आहिस्ता पी रहा था। वह एक रक़ासा का इन्तज़ार बेताबी से कर रहा था जिसके हुस्न के उसे अफ़साने सुनाए गये थे। उसका दरवाज़ा खुला। एक लड़की सर से पांव तक स्याह लबादे में मस्तूर उसके कमरे में दाख़िल हुई। दरवाज़ा बन्द हो गया। एल्ची उसकी तरफ़ लपका और उसका चेहरा बेनक़ाब होने से पहले ही बड़े ही फ़ुहश अल्फ़ाज़ कह कर उससे लिपट गया। वह अपनी उम्र को भूल गया।

सारा ने उसके बाज़ूओं से आज़ाद होकर स्याह लबादे को परे फेक दिया। उसने एल्ची

की तरफ़ देखा तो हैरत से उसका मुँह खुल गया। वह पीछे हटने लगी हत्ता कि उसकी पीठ दिवार से जा लगी। उसने दोनों हाथों से अपने कान ढांप लिए। एल्ची ने सारा का चेहरा देखा तो उसे हिचकी सी आई और उसके मुँह से सरगोशी निकली– "सायरा?"

सारा ख़ामोशी से उसे देखती रही जैसे उसकी ज़ुबान बन्द हो गयी हो। एल्ची ने घबराई हुई और हैरतज़दा आवाज़ में एक बार फिर पूछा– "सायरा? तुम सायरा हो?" वह खिसियानी सी हंसी हंस कर बोला– "नहीं मुझे ग़लती हुई है। तुम्हारी शकल मेरी एक बेटी से बिल्कुल मिलती जुलती है। उसका नाम सायरा है।"

"वह सायरा मैं ही हूँ जो आपकी बेटी है।" सारा की ज़ुबान अचानक खुल गयी। उसने नफरत से दांत पीस कर कहा–"मैं ही आपकी बेटी हूँ। महलात में दूसरों की बेटियों को नचाने वाले की बेटी भी नाच सकती है। मैं एक बेग़ैरत बाप की बेटी हूँ।"

एल्ची लड़खड़ाया और पलंग पर गिरने के अन्दाज़ से बैठ गया। अब उसकी ज़ुबान बन्द हो गयी थी। सायरा उसीकी बेटी थी। बाप बेटी को जुदा हुए दो साल हो गये थे।

"ईमान फ़रोशों की बेटियाँ इस्मत फरोश हुआ करती हैं।" सारा आगे बढ़ी और बाप के सामने रूक कर नफ़रत से दांत पीसने लगी। उसने कहा– "आज अपनी ग़ैरत और अपनी इज़्ज़त का अन्ज़ाम देख। तू अपनी बेटी की इस्मत का गाहक है। तेरी बेटी तेरी ख़्वाबगाह में रात गुज़ारने आई है।" सारा ने तीर की तेज़ी से एक हाथ आगे किया और कहा–"ला, मेरी उजरत निकाल। मैं रात तेरे साथ बसर करने आई हूं।"

"तू......तू....." उसके बाप की ज़ुबान लड़खड़ा कर हकलाने लगी–"तू घर से भाग आई थी। मैं बेग़ैरत नहीं हूं, तू बेग़ैरत है।"

"जो बाप अपनी जवान बेटी के सामने बेटी के उम्र की लड़कियों के साथ बेहयाई की हरकतें करता है और अपनी बेटी जैसी लड़कियों को नचाता है और शराब के नशे में बदमस्त होकर उसके साथ बेटी के सामने दस्तदराज़ी करता है, उस बाप की बेटी ग़ैरत वाली नहीं बन सकती। वह भी रक़ासा या तवाइफ़ बनती है। बाप उसकी शादी करदे तो वह अपने ख़ाविन्द को धोखे देती और दरपरदा कई ख़ाविन्द बनाये रखती है। सुन मेरे बाप! तुझे तेरा माज़ी और अपना हाल बताती हूँ– "मैंने तेरे घर में दमिश्क में होश सम्भाला तो तुझे औरतों से दरपरदा ऐश करते देखा। नुरूद्दीन ज़ंगी मर गये तो तू अल्मलकुस्सालेह के साथ हलब भाग गया। तू मुझे और मेरी माँ को भी साथ ले आया। हलब में तू शराब भी पीने लगा। तब मैं लड़कपन में थी। तेरे पास गोरे चिठ्ठे सलीबी आने लगे। उन्होंने तुझे दौलत दी। बड़ी ख़ूबसूरत लड़कियाँ दीं और तू खुलेआम शराब पीने लगा। तेरे में की महफ़िलें जमने लगीं। लड़कियाँ नाचने लगीं। सलीबियों ने मेरे साथ छेड़छाड़ की तो तू खुश हुआ......

"फिर अल्मलकुस्सालेह मर गया। तेरे पास सलीबी पहले से ज़्यादा आने लगे। तू पहले से ज़्यादा अय्याश हो गया। अज़ाउद्दीन ने तुझे बहुत बड़ा ओहदा और रूत्बा दे दिया। तेरी चहिती रक़ासा लड़कियों में उठने बैठने लगी। उनसे मैंनें रक़्स सीखा। तुझे पता चला तो तू ख़ुश हुआ। सलीबियों ने मुझे देखा तो उन्होंने तेरे सामने मुझे अपने सीने से लगाया। तुने बुरा

क्यों न माना? सिर्फ़ इसलिए कि वह मेरे बदले तुझे यूरोप की एक लड़की दे देते थे तूने अपना ईमान बेच डाला। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ़ साज़िशें की। तेरा किरदार ख़त्म हो गया। तू यह भी न देख सका कि अपनी बेटी को भी तूने अपनी राह पर डाल दिया है। फिर एक सलीबी ने मुझे सब्ज़ बाग़ दिखाए और मैं तेरे घर को ख़ैरबाद कहकर अपने ख़्यालों की जन्नत को रवाना हो गयी। मुझसे यह न पूछ कि मैं जिस तरह आज तेरी ख़्वाबगाह में आई हूँ इस तरह कितनी ख़्वाबगाहों की रौनक बनी हूँ। उस सलीबी ने मुझे मोहब्बत का फ़रेब देकर मुझे बेच डाला। मैं तुझ जैसे बेशुमार दौलतमन्दों की तफ़रीह का ज़रिआ बनकर बैरूत पहुंची जहाँ मुझे शाही रक़ासा की हैसियत से रख लिया गया। आज अपना बाप मेरी इस्मत का गाहक है।"

एल्ची ने सर अपने हाथ से थाम लिया। उसका जिस्म कांप रहा था।

"आज तू अपने ईमान की दौलत वसूल करने आया है।" सारा ने हिक़ारत आमेज़ लहजे में कहा– "तू फ़िलिस्तीन और क़िब्लाअव्वल का सौदाकरने आया है। अपनी बेटी की क़ीमत देने आया है।" सार की आवाज़ भर्रा गयी उसने कहा– "यह मेरी ज़िन्दगी की आख़िरी रात है। मैं बाप की गुनाहों की सज़ा भुगत कर इस दुनिया से जा रही हूँ।"

उसके बाप ने आहिस्ता–आहिस्ता सर उठाया। उसकी आँखों से आँसू बह–बह कर गालों को तर कर रहे थे। उसने उठकर दिवार से लटकी हुई तलवार उतारी। न्याम से तलवार निकाली और तलवार सारा के आगे करके कहा–"यह लो। अपने हाथों मुझे ख़त्म कर दो। शायद मेरे गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा हो जाए।"

सारा ने उसके हाथ से तलवार ले ली और कहा– "आज रसूल सल्ल0 की उम्मत इस मुक़ाम पर आ पहुंची है जहाँ एक बाप अपनी बेटी के हाथ में तलवार देकर यह कहने की बजाए कि जा बेटी क़िब्ला अव्वल को इस तलवार से आज़ाद और आबाद कर, यह कह रहा है कि मुझे इस तलवार से क़त्ल करके मेरे गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा कर दे।" अपने बाप की जज़्बाती हालत और शर्मसारी के आँसू देखकर सारा का लहजा बदल गया। बाप का एहतराम लौट आया। उसने कहा– "मर कर ही गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा नहीं किया जा सकता। एक तरीक़ा यह भी है कि ज़िन्दा रहो और दुश्मन को क़त्ल करो। मैं आप को बताऊं?"

बाप ने शिकस्त खुर्दा के अन्दाज़ से बेटी की तरफ़ देखा।

"शाह बिल्डून के साथ आपने जो मुआहिदा किया है और सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी को शिकस्त देने के लिए जो मंसूबा तय किया है वह मुझे बता दें।" सारा ने कहा–"मै सुल्तान तक पहुँचा दूंगी। इससे बड़ी नेकी और कोई नहीं हो सकती। आप के सारे गुनाह बख़्श दिए जाएंगे।" बाप खामोशी से सुन रहा था। सारा ने कहा–"हम दोनों की निजात इसमें है कि हम दोनों यहाँ से फरार होकर सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास पहुंच जाएं और आप सारी बात अपनी ज़ुबान से कह दें।"

"मैं तैय्यार हूँ।" बाप ने कहा– "लेकिन हम यहाँ से निकलेंगे कैसे?"

"इन्तज़ाम हो जाएगा।" सारा ने कहा।

बाप ने बेटी को गले लगा लिया और फूट—फूट कर रोने लगा। उसके अपने गुनाहों ने उससे हथियार डलवा लिए थे।

❖

लड़कियों की कमाण्डर बहुत खुश थी कि उसे बड़ा मोटा गाहक मिल गया है। वह इत्मीनान से सो गयी। उसे मालूम था कि सारा सुबह वापस आयेगी मगर सारा हसन अल इद्रिस के कमरे में थी। उसने जब हसन को बताया कि उसका गाहक उसका बाप है तो हसन को चक्कर आ गया था। सारा ने हसन को सुनाया कि उसके बाप ने घर का माहौल किस कदर गुनाह आलूद बना रखा था और किस तरह उन्हीं गुनाहों का शैदाई होकर एक सलीबी के साथ घर से भागी और किस तरह इस मकाम तक पहुंची थी। सारा ने उसे बताया कि उसका बाप सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास जाने को तैय्यार है।

"मैंने तुम्हें कहा था कि तुम्हारा मकसद पाक है।" हसन ने कहा– "मुझे उम्मीद है कि ख़ुदा तुम्हारी आबरू की हिफ़ाज़त करेगा। ख़ुदा ने मेरी उम्मीद पूरी कर दी है......अब मैं तुम्हारे बाप से मिलूंगा और कहूंगा कि तैय्यार रहना।"

दिन को हसन सारा के बाप से मिला। बच बच कर बात की। उसकी ग़ैरत को झंझोड़ा और जब देखा कि वह बहुत ही नादिम है तो हसन ने उसे वहाँ से निकलने का सेहल तरीका बताया। उसके साथ सारी बातें तय करके वह सारा से उस महफ़ूज़ जगह पर मिला जहां वह कभी—कभी मिला करते थे। सारा के बाप ने अपने मेज़बानों से ख़्वाहिश ज़ाहिर की कि वह अकेले ज़िरह सैर के लिए जाना चाहता है। उसे घोड़ा दे दिया गया। वह अपने साथी एल्ची को यह बता कर चला गया कि शाम तक लौट आयेगा। वह शहर से निकला तो एक जगह हसन घोड़े पर सवार उसके इन्तज़ार में खड़ा था। एक और जगह सारा छुपी हुई थी। उसे बाप ने अपने घोड़े पर सवार कर लिया और नसीबा की सिम्त रवाना हो गये।

वह बच—बच कर और छुप—छुप कर चलते रहे। बहुत दूर निकल गये तो उन्होंने घोड़े दौड़ा दिए। सफर बहुत लम्बा था जो उन्होंने एक रात और एक दिन में तय कर लिया। बैरूत के सुराग़रसानों के लिए शाह बिल्डून कहर बना चहुा था। मुसिल का एक एल्ची लापता हो गया था। एक शाही रक्कासा जो शाह बिल्डून को ज़ाती तौर पर अच्छी लगती थी, ग़ायब हो गयी थी और गिल्बर्ट जैकब नाम का एक ख़ुसूसी बॉडीगार्ड भी लापता था। तीनों का कोई सुराग़ नहीं मिल रहा था। लड़कियों की कमाण्डर औरत की ज़ुबान बन्द थी। वह किसी को बताने से डरती थी कि उसने सारा को गुमशुदा एल्ची के कमरे मे भेजा था। बैरूत में सिर्फ़ एक आदमी को मालूम था कि यह तीनों कहाँ हैं। इसआदमी का नाम हातिम था मगर हातिम गुमनाम सा नालसाज़ था। उसे वही लोग जानते थे जो उससे घोड़ों को नाल लगवाया करते थे। किसी के वहम व गुमान में भी नहीं था कि यह ग़रीब नालसाज़ सुल्तान अय्यूबी के उन जासूसों के गिरोह का लीडर है जो बैरूत के अन्द सरगर्म है। सुराग़रसां अपने कयाफ़ों और कयास आराइयों से बावले हुए जा रहे थे।

हसन अल इद्रिस, सारा और उसका बाप सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास पहुंच

चुके थे। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी आदत के मुताबिक ख़ेमे में टहल रहा था। सारा का बाप उसे बता चुका था कि बिल्डून के साथ उसने क्या मंसूबा तैय्यार किया है। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उसी वक़्त अपने सालारों को बुला लिया और नक़्शा सामने रखकर उन्हें बताने लगा कि सलीबियो का मंसूबा क्या है और उनके ख़िलाफ़ क्या कार्रवाई करना चाहता है।

❖❖

चले क़ाफ़ले हिजाज़ के

इस ख़बर ने सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी को हैरानकुन किया कि हलब और मुसिल के हुक्मरानों, इमादुद्दीन और अज़ाउद्दीन ने सलीबियों के साथ उसके खिलाफ़ दरपरदा गठजोड़ कर लिया है। यह तो जैसे उसे उस दौर का रस्म बन गयी थी कि छोटे बड़े मुसलमान उमरा सलीबियों के साथ दरपरदा दोस्ताना गांठने लगे थे। उसकी वजह सिर्फ़ यह थी कि सुल्तान अय्यूबी उन सबको एक खिलाफ़त के तेहत लाकर एक मुत्तहिद कौम बनाना चाहता था मगर यह उमरा अलग–अलग रियासतें बरक़रार रखकर उनके हुक्मरान बने रहने को अपना मक़सद बनाए हुए थे। उन्हे तवक्क़ो थी कि उनका मक़सद सलीबियों की दोस्ती से पूरा हो सकता है।

आप पहले पढ़ चुके हैं कि इन सब में अहम हुक्मरान अज़ाउद्दीन और इमादुद्दीन थे। उनकी रियासतें, हलब और मुसिल, महले वकूअ, वुसअत, दिफ़ाई इस्तेहकाम वग़ैरह के लिहाज़ से जंगी अहमियत हासिल थीं। सलीबी इस कोशिश में थे कि मुसलमानों के यह दोनों मक़ाम उनके क़ब्ज़े में आ जाएं या सुल्तान अय्यूबी के क़ब्ज़े में न चले जाएं, क्योंकि इन पर सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का क़ब्ज़ा हो जाने से अफ़वाज और रस्द वग़ैरह के लिए दो ऐसे अड्डे मिल जाते थे जहाँ से वह आसानी से बैतुल मुक़द्दस पर फ़ौजकशी कर सकता था।

"रब्बे काबा की क़सम! मैं हलब और मुसिल पर क़ब्ज़ा नहीं करना चाहता।" सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने मुत्तदद बार कहा था–"मैं किसी मुसलमान रियासत में से अपनी फ़ौजें गुज़ारना भी पसन्द नहीं करूंगा। मेरा मुद्दआ है कि यह उमरा और हुक्मरान सलीबियों के खिलाफ़ मुत्तहिद हो जाएं खिलाफते बग़दाद के वफ़ादार हो जाएं जो कुर्आन का हुक्म है। मैं उन्हें अपने ज़ेरे नगीन नहीं करूंगा। मैं ख़लीफ़ा नहीं हूँ। मै तो ख़ुद ख़लीफ़ा का पैरोकार और ख़ादिम हूँ।"

खिलाफ़त के तेहत आ जाने से उन लोगों को यह ख़तरा नज़र आ रहा था कि अय्याशियाँ बन्द हो जाएंगी और सलीबियों की तरफ़ से उन्हें लड़कियो और शराब के जो तोहफ़े मिलते थे। वह बन्द हो जाएंगे। वह हुकूमत, दुनिया की झूठी शान व शौकत और ऐश ईशरत के आदी हो गये थे। उनकी नज़िरहें में सल्तनते इस्लामिया की कोई वक़अत नही रही थी।

1183 ई० के आवइल में सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी नसीबा के मक़ाम पर ख़ेमाज़न था। यहाँ से उसे बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ पेशक़दमी करनी थी मगर उसे मुसलमान उमरा की नीयत में फ़तूर नज़र आ रहा था। वह अब यह मालूम करने की कोशिश कर रहा था कि हलब और मुसिल के वालियों की दरपरदा सरगर्मिया क्या हैं और सलीबी क्या मंसूबा बना रहे हैं।

उसे अपने जासूस हसन अल इद्रिस ने बैरूत से आकर पूरी इत्तलाअ दे दी। इस जासूस ने दूसरा कारनामा यह दिखाया था कि अज़ाउद्दीन के एक फ़ौजी मुशीर और उसकी बेटी को जो घर से भाग कर बैरूत में सलीबियों के पास रक़ासा थी, अपने साथ ले आया था। हसन अल इद्रिस सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास आया और बताया कि अज़ाउद्दीन ने बैरूत दो एल्ची सलीबियों के पास जंगी इमदाद के लिए भेजे हैं। सुल्तान अय्यूबी इस इत्तलाअ पर हैरान न हुआ, अलबत्ता यह इत्तलाअ उसके लिए अहम थी। उसने उसी वक़्त सालारों को बुला लिया और नक़्शा सामने रखकर उन्हें बताया कि सलीबियों का मंसूबा क्या है।

अज़ाउद्दीन का जो एल्ची बैरूत सलीबियों से मदद लेने गया था उसका नाम इहतशामुद्दीन था। अब सुल्तान अय्यूबी के पास उसकी हैसियत एक क़ैदी की थी लेकिन सुल्तान अय्यूबी ने एहतराम से अपने सालारों के साथ बैठाया।

इहतशामुद्दीन को तक़रीबन हर एक सालार जानता था। कोई उसे हिकारत से घूर रहा था और किसी के चेहरे पर ख़ुशी के आसार थे कि वह उनके दर्मियान बैठा है और क़ैद है। सुल्तान अय्यूबी ने हसन अल इद्रिस की रिपोर्ट सुन ली थी।

"मुझे उम्मीद है कि हमारा दोस्त इहतशामुद्दीन आप को खुद ही बतायेगा कि अज़ाउद्दीन और इमादुद्दीन की नीयत क्या है।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "मैं इहतशामुद्दीन पर इल्ज़ाम आयद नहीं करता कि यह हमारे ख़िलाफ़ लड़ने के लिए सलीबियों से जंगी इमदाद लेने गया था। इसे वालिये मुसिल अज़ाउद्दीन ने भेजा था। यह अज़ाउद्दीन का मुलाज़िम है।"

"सुल्ताने मोहतरम!" एक सालार ने कहा– "मुझे उम्मीद है आप मुझे यह कहने से नहीं रोकेंगे कि इहतशामुद्दीन अपने हुक्मरानों का मामूली मुलाज़िम नहीं। यह उसका फ़ौजी मुशीर है। यह सालार है। इसे अपने हुक्मरानों को ऐसा मश्वरा नहीं देना चाहिए था कि सलीबियों से मदद हासिल की जाए।"

"मुझे हुक्म दिया गया था।" इहतशामुद्दीन ने जवाब दिया–"अगर मैं हुक्म उदूली करता तो..........."

"तो आप को जल्लाद के हवाले कर दिया जाता।" एक नायब सालार ने कहा–"आपने मौत के डर से अपने बादशाह का ऐसा हुक्म माना जो आपकी अपनी कौम और अपने मज़हब की ज़िल्लत का बाइस है। क्या हम अपने घरों से दूर, अपनी औलाद से बेख़बर, अपने आपसे बेनयाज यहाँ अपनी उम्रें लम्बी करने बैठे हैं? एक मुद्दत से हम इन चट्टानों में मारे–मारे फ़िर रहे हैं और रात इस पत्थरीली ज़मीन पर सोते हैं जब आप हलब के महल में शहज़ादों जैसे ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। आप शराब पीते हैं। नाचने वाली हसीन यहूदी, सलीबी लड़कियां और मुसलमान लड़कियाँ आपका दिल बहलाती हैं और आप नर्म बिस्तर पर सोते हैं जिन पर मख़मल के पलंग पोश बिछे हैं। हम यहाँ मरने आये हैं। हमारे रफ़ीक़ों की लाशें जाने कहाँ–कहाँ गुम हो गयी हैं। हमारे सिपाहियों की हड्डियां सारे इलाके में बिखर गयी हैं। तुम किसी शहीद की कोई हड्डी देखोगे तो कहोगे कि यह किसी जानवर की हड्डी है। ऐश

6
5

व ईशरत ने तुम्हारी नज़िरहें में शहीदों को शराब में डूबो दिया है। दोस्त और दुश्मन को एक कर दिया है। हम मरने आए हैं तो तुम्हें जीने का क्या हक़ है?"

"एहराम!" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "इहतशामुद्दीन ने मेरे पास आकर गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा कर दिया है। अगर इसे ताने देने होते तो मैं भी दे सकता था।"

"सुल्तान ज़ीशान!" एक और सालार ने कहा।

"ख़ुदा के लिए मुझे सिर्फ़ सुल्तान कहो।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "मुझे शान व शौकत से दूर रहने दो। मुझे बादशाह बनाने की कोशिश न करो। मैं सिपाही हूँ मुझे सिपाही रहने दो. ......कहो, क्या कहना चाहते हो?"

"मैं इहतशामुद्दीन और अपने इन तमाम हथियार बन्द भाइयों को जो यहां मौजूद हैं यह बताना चाहता हूँ कि जो सालार अपने हुक्मरानों का इतना गुलाम हो जाता है कि उसे ख़ुश करने के लिए उसका ग़ल्त हुक्म भी मान लेता है, वह अपनी क़ौम की इज्ज़त का क़ातिल होता है। क़ौम की इज्ज़त के मुहाफ़िज़ हम हैं। सल्तनत का मालिक बादशाह या सुल्तान नहीं क़ौम होती है। आज हम जिस दौर में से गुज़र रहे हैं, यह सिपाही का दौर है, यह जिहाद का दौर है। अगर खलीफ़ा और सुल्तान सल्तनत का कारोबार दियानतदारी से नहीं चलाएंगे तो अल्लाह के सिपाही उन्हें अपना ही दुश्मन समझेंगे जैसे यहूदी और सलीबी हैं, और जब इहतशामुद्दीन की तरह अल्लाह के सिपाहियों पर भी सुल्तान बनने का नशा तारी हो जाएगा तो लाइलाहा इल्लल्लाह की लाश पर गिरजों के घंटे बजेंगे।"

"इस्लाम पर जो भी दौर आयेगा वह अल्लाह के सिपाही का दौर होगा।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "जब तक इस्लाम जिन्दा है कुफ़्फ़ार इस्लाम के दुश्मन ही रहेंगे। आज हमारे सालारों के दिलों मे जाह व हशमत की जो ख़्वाहिशें पैदा हो गयी है, वह किसी भी वक़्त इस्लाम को ले डूबेगी। मुझे नज़र आ रहा है कि इस्लाम ज़िन्दा रहेगा मगर उस शेर की तरह ज़िन्दा रहेगा जिसे सधा लिया गया हो और उसे फ़रामोश कर दिया गया हो कि वह बादशाह है। यह शेर बकरियों से भी डरता रहेगा। मुसलमान कुफ़्फ़ार की उंगलियों पर नाचेंगे। अल्लाह का सिपाही मौजूद होगा मगर उसके हाथ में तलवार नहीं होगी। अगर तलवार होगी तो किसी सलीबी की दी हुई होगी जिसे वह न्याम से बाहर निकालने के लिए सलीबी से इजाज़त लेगा।" सुल्तान अय्यूबी बोलते–बोलते चुप हो गया। उसने नज़रें घूमा कर सबको देखा और बोला– "मैं भी बातों में उलझ गया हूँ। मेरे रफ़ीक़ों! हमें काम करना है। अगर हम इस बहस में पड़ गये कि यह गुनाह किसका है और वह ख़ता किसकी है, और कौन सच्चा और कौन झूठा है तो हम सिर्फ़ बातें ही करते रहेंगे.....इहतशामुद्दीन बतायेगा कि हलब और मुसिल के हुक्मरानों ने सलीयिों के साथ क्या तय किया है और हमें किस क़िस्म के दुश्मन से किस क़िस्म की लड़ाई लड़नी पड़ेगी।"

❖

इहतशामुद्दीन उठा और सबके सामने जा खड़ा हुआ। सबको नज़रें घूमा कर देखा और बोला– "मेरे दोस्तों! मैं तुम्हारी नज़िरहें में हिक़ारत और क़हर देख रहा हूँ। तुम्हें हक़

पहुंचता है कि मेरे लिए सज़ाए मौत तजवीज़ करो, मगर मैं तुम्हारे लिए इबरत का सामान हूं यह दुरुस्त है कि मैंने वालिये मुसिल अज़ाउद्दीन की ख़ुश्नूदी हासिल करने के लिए अपना ईमान फ़रोख़्त किया और उसका एल्ची बनकर बैरूत गया और सलीबियों से मदद माँगी, मगर यह भी दुरुस्त है कि जिस तिलिस्म ने मेरी अक़्ल और मेरे ईमान को अपने क़ब्ज़े में ले लिया उससे तुम में कोई भी नहीं बच सकता। क्या तुम में से सालार और हाकिम ग़द्दारी का जुर्म करते पकड़े नहीं गये? उनमें बहुत से ऐसे थे जिनपर सुल्तान का इतना एतमाद था कि जितना उन्हें अपनी ज़ात पर है मगर वह ईमान फ़रोश निकले। मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूँ कि इन्सानी फ़ितरत में एक ऐसी कमज़ोरी है जो इन्सान को ऐश व ईशरत मे डाल देती है, और जहाँ के रोज़ व शब मे हुकूमत और मुआशिरे में गुनाह की तरग़ीब देने वाली बातें हूँ वहाँ ज़ाहिद भी ऐश पसन्द और गुनाहगार बन जाते हैं। हर कोई अमीर और सुल्तान बनने के ख्वाब देखने लगता है। हर किसी की ज़ात का किला मिस्मार हो जाता है........

"अगर तुम मुझे गुनाहगार समझते हो तो मेरी तलवार से मेरा सर तन से जुदा कर दो। अगर मुझे तौबा का मौका देते हो तो मैं अज़मते इस्लाम की पासबानी और सल्तनते इस्लामिया की तौसीअ के लिए तुम्हारी बहुत मदद कर सकता हूँ।"

"सलीबी शायद तुम से आमने सामने की टक्कर नहीं लेंगे।" इहतशामुद्दीन ने कहा– "उन्होंने हमें हमारी अपनी तलवारों से मरवाने का इन्तज़ाम कर लिया है। उन्हें अपनी फौजें मरवाने की ज़रूरत नहीं रही। वह मुसलमानों को मुसलमानों के खिलाफ लड़ाने के लिए उन्हें मदद और शह दे रहे हैं। यह छोटी–बड़ी मुसलमान इमारतें और रियासतें जो दरअसल खिलाफ़ बग़दाद के सूबे में हैं, सब दरपरदा सलीबियों के ग़ुलाम बन गये हैं ताकि ख़ुद मुख़्तार रहें। अपने मरकज़ से कट कर ख़ुद मुख़्तारी इसी सूरत में हासिल की जा सकती है कि दुश्मन की मदद लो और अपने भाई को दुश्मन कहो। ख़ानाजंगी में सिर्फ़ एक फ़रीक़ सच्चा और मुहिब वतन होता है। दूसरा फ़रीक दुश्मन का दोस्त होता है। दुश्मन उसे ख़ुलूस से मदद नहीं देता बल्कि अपने फ़ायदे और अपने अज़ाइम की तस्कीन के लिए मदद देता है. .....

"सलीबी हमारे मुख़ालिफ़ ढड़े को मदद दे रहे हैं। उसकी सूरत यह है कि वह मुसिल को अपने छापामार दस्तों का अड्डा बना रहे हैं। वह कुछ अर्से तक छापों और शबख़ूनों की जंग लड़ेंगे। रफ़्ता–रफ्ता वह हलब को और दिगर तमाम मुसलमान रियासतों को अपने अड्डे बना लेंगे जो आप के खिलाफ़ते इस्तेमाल होंगे। मैं जब बैरूत में था तो मुझे पता चला था कि सलीबी मुसिल से कुछ दूर पहाड़ी इलाके में बेशुमार अस्लेहा और सामान छुपाकर रखेंगे। उसमें आतिशगीर मादा बहुत ज़्यादा होगा। उसे वह अपने छापामारों के लिए इस्तेमाल करेंगे और बाद में खुली जंग में भी। वह खुली जंग इसी सूरत में लड़ेंगे जब बहुत सी मुसलमान इमारतों मे अपने अड्डे बना कर मुस्तहकम कर चुके होंगे। मैं अभी यह मालूम नहीं कर सका कि वह अस्लेहा और आतिशगीर मादा किस मकाम पर रखेंगे। यह मालूम करना आपके जासूसों का काम है।"

सुल्तान अय्यूबी ने सालारों को भेज दिया सिवाये हसन बिन अब्दुल्लाह के जो जासूसी और सुराग़रसानी के मुहकमे का सरबराह था और सालार सारिम मिस्री को भी सुल्तान अय्यूबी ने अपने पास रोक लिया। यह छापामार दस्तों का सालार था।

"मेरा क़यास सही निकला है।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा–"मुझे मालूम था कि सलीबी मुसिल और हलब को दरपरदा तरीक़ों से अपने अड्डे बनाने की कोशिश करेंगे और हमारे मुसलमान भाई उनके साथ पूरा तआवुन करेंगे। तुम ने इहतशामुद्दीन की ज़ुबान से सुन लिया है कि बिल्डून और दूसरे सलीबी मुसिल से कुछ दूर कहीं जंगी सामान और आतिशगीर सयाल का बहुत बड़ा ज़ख़ीरा जमा कर रहे हैं। तुम जानते हो कि जिस तरह हमें रस्द के ज़ख़ीरे की ज़रूरत है उसी तरह सलीबियों को भी ज़रूरत है। हम में से जिसका ज़ख़ीरा ख़त्म या तबाह हो गया वह आधी जंग हार जाएगा। हमारे कुछ दस्ते टोलियों में तक़सीम होकर मुसिल और हलब के दर्मियान बैठे हैं। उन्हें मैंने अज़ाउद्दीन और इमादुद्दीन का आपस में राब्ता तोड़ने के लिए बैठाया है। अब बैरूत और उन दोनो जगहों के रास्ते रोकने हैं। यह मुहिम ज़िरह मुश्किल और खतरनाक होगी क्योंकि छापामारों को अपने मुस्तक़र से दूर जाना होगा।'

"यह मुझे देखना है कि यह मुहिम मुश्किल है या आसान।" सारिम मिस्री ने कहा–"और यह मेरा फ़र्ज़ है कि मुश्किल को आसान करूं। आप हुक्म दें।"

"कोई काफ़ला नज़र आये उसे रोक लो।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "तलाशी लो। मज़ाहमत हो तो पूरा मार्का लड़ो। कोशिश करो कैदी ज़्यादा हों।" उसने हसन बिन अब्दुल्लाह से कहा– "और हसन! तुम मुझे यह काम करके दिखाओ कि मालूम करो कि सलीबी अस्लेहा और आतिशगीर सयाल का ज़ख़ीरा कहां जमा कर रहे हैं। हो सकता है कि वह ज़ख़ीरा कर भी चुके हों। अगर तुम जगह मालूम कर सको तो उसकी तबाही का इन्तज़ाम कर दूंगा।"

"यह इन्तज़ाम इन्शाअल्लाह मेरा होगा।" सारिम मिस्री ने कहा।

"यह ज़ेहन में रखो कि कुछ अर्सा हमारी जंगी आँख मिचोली होगी।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा–" सलीबी खुली जंग लड़ने की बजाए शबख़ून और तख़रीब कारी की जंग लड़ेंगे। वह शायद मुझे मुश्तअिल करने की कोशिश करेंगे कि मैं उन पर खुला हम्ला करूं। मैं ऐसी हिमाक़त नहीं करूंगा। वह मुझे कई जगहों पर घात लगायेंगे। मैं सबसे पहले अपने उन उमरा को साथ मिलाउंगा जो सलीबियों के दोस्त बनते जा रहे हैं। मैं उनसे ताअवुन की भीख नहीं माँगूगा मैं अब तलवार की नोक पर उनसे तआवुन लूंगा। मैं उनमें से किसी का भी ख़ून बहाने से दरीग़ नहीं करूंगा। यह बराए नाम मुसलमान हैं। मुसलमान के खिलाफ काफ़िर के साथ दोस्ती करने वाला मुसलमान भी काफ़िर होता है। मुझे अब परवाह नहीं कि तारीख़ मुझे क्या कहेगी। अगर मुझे आज कोई कहे कि आने वाली नस्लें मुझे अपने भाइयों का क़ातिल और खानाजंगी का मुजिरम कहेंगी तो भी मैं अपने इरादों से बाज़ नहीं आऊंगा। मैं तारीख़ और आने वाली नस्लों के आगे नहीं ख़ुदा के आगे जवाबदेह हूँ। ख़ुदा के सिवा नीयत को और कोई नहीं जानता। मेरे और फ़िलिस्तीन के दर्मियान अगर मेरे बेटे हायल होंगे तो मैं उन्हें भी

क़त्ल कर दूंगा। अगर हमने आज किब्ला अव्वल को सलीबियों से आज़ाद न कराया तो हमारे बाद सलीबी और यहूदी ख़ानाकाबा पर भी काबिज़ हो जाएंगे। मुझे अपने उमरा और हुक्मरानों के तेवर और तौर तरीके बतारहे हैं कि वह शाह बनेंगे और उनकी औलाद भी बादशाह होगी और यह लोग फ़िलिस्तीन को यहूदियों के तसल्लुत में दे देंगे। तलवार के सिवा मेरे पास अब कोई इलाज नहीं रहा।"

"हम आपके हुक्म के मुन्तज़िर हैं।" सारिम मिस्री ने कहा– "अगर आप मेरी राय लें तो मैं यही कहूंगा कि मरकज़ से खुद मुख़्तारी या नीम ख़ुदमुख़्तारी माँगने वालों को ग़द्दारी की सज़ा मिलनी चाहिए।"

"और मैं उन्हें सज़ा दूंगा।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा।

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने सारिम मिस्री और हसन बिन अब्दुल्लाह को जंगी नवैइयत की हिदायात देकर रूख़सत कर दिया।

❖

वह दोनों चले गये तो सुल्तान अय्यूबी एक और मसले पर ग़ौर करने लगा। उसने जब बैरूत से मुहासिरा उठाया था और वह नसीबा के मुकाम पर आकर ख़ेमाज़न हो गया था, उस से कुछ अर्से पहले से बहेरा कुलज़ुम के मुश्रीकी इलाके के मुतअल्लिक़ यह इत्तलाअ मिली थी कि सलीबी फौजी दस्ते इस इलाके में काफ़लों को लूट लेते हैं। सलीबी सिर्फ मुसलमान काफलों को लूटते हैं। माल दौलत के अलावा ऊंट और घोड़े ले जाते और कमसिन और जवान लड़कियों को भी उठा ले जाते थे। ज़्यादा तर रहज़नी उन दिनों होती थी जिन दिनों मिस्र के हाजियों के काफ़ले जाते और आते थे। इन डाकूओं को फ़ौजी पैमाने पर ही रोका जा सकता था, लेकिन सुल्तान अय्यूबी के पास इतनी फ़ौज नहीं थी। उसके अलावा उसके दिमाग़ पर फ़िलिस्तीन और वह मुसलमान उमरा सवार थे जो सलीबियों के साथ दरपरदा सुलह और मदद के लिए मुआहिदे कर रहे थे। इसलिए सुल्तान अय्यूबी इधर तवज्जो नहीं दे सका था।

आप पढ़ चुके हैं कि बैरूत के मुहासिरे में सुल्तान अय्यूबी ने बहरी बेड़ा भी इस्तेमाल किया था। जिसका अमीर अलबहर हिसामुद्दीन लौलूअ था। मुहासिरा इब्तेदा में ही नाकाम हो गया तो सुल्तान अय्यूबी ने हिसामुद्दीन को पैग़ाम भेजा था कि वह बेड़ा सिकन्दरिया ले जाए। उसके फ़ौरन बाद क़ाहिरा से सुल्तान अय्यूबी को पैग़ाम मिला कि सलीबयों ने काफ़लों को लूटना बक़ायदा पेशा बना लिया है। और अब कोई काफ़ला मंज़िल तक पहुंचता ही नहीं। सुल्तान अय्यूबी ने क़ाहिरा को जवाब देने की बजाए सिकंदरिया के अमीर अलबहर हिसामुद्दीन को हुक्म भेजा कि वह अपने बेड़े के उस हिस्से की जाकर कमान ले जो बहेरा कुलज़ुम मे है।

सुल्तान अय्यूबी का हुक्म यह था– "बहेरा कुलज़ुम में तुम्हारा मुक़ाबला दुश्मन के बहरी बेड़े से नहीं होगा, बल्कि तुम ख़ुश्की पर घात लगाकर उन डाकूओं को पकड़ोगे जो मुसलमानों के काफ़लों को लूटते हैं। मुझे बताया गया है कि यह डाकू सलीबी फ़ौजी हैं जो बाक़ायदा मंसूबे और उपर वालों के एहकाम के तेहत लूट मार कर रहे हैं। यह सेहरा में नहीं रहते।

समन्दर के किनारे रहते हैं। तुम फौज का एक मुन्तख़ब दस्ता साथ ले जाओ और समन्दर में घूमते फिरते रहो। जहां डाकूओं का शुबहा हो तो वहां सिपाहियों को कश्तियों से उतार कर खुश्की पर भेज दो और डाकूओं का खातमा कर दो। मेरे अगले हुक्म तक तुम कुलजुम में ही रहोगे।"

हिसामुद्दीन हुक्म मिलते ही बहिराए कुलजुम में चला गया। उस दौर में बहिराए रोम और कुलजुम को मिलाने के लिए नहर स्वेज़ नहीं थी। बहिराए कुलजुम में सुल्तान अय्यूबी ने चन्द एक जंगी जहाज और कश्तियां रखी हुई थीं। अगर आप मश्रीकी वुस्ता का नक़्शा देखें तो आप को बहिराए कुलजुम और उसके उपर ख़लीज स्वेज नहर नज़र आयेगी। इस समन्दर के मग़रीबी किनारे पर मिस्र और मश्रीक़ी किनारे पर सऊदी अरब है। शुमाल में सेहराए सीनाई और ख़लीज उक्बा है। बाज़ काफ़ले जो मिस्र से हज के लिए जाते थे। वह ऊंटों और घोड़ों समेत कश्तियों के ज़रिए ख़लीज स्वेज़ उबूर करते थे। अक्सर काफ़ले ख़ुश्की पर ही जाते थे। और बहिराए कुलजुम के साथ--साथ सफर करते थे क्योंकि समन्दर के करीब गर्मी की कमी रहती थी।

हिसामुद्दीन ने वहाँ जाते ही साहिल के साथ--साथ ख़ुश्की पर छापे मारने शुरू कर दिए और चन्द एक डाकूओं को पकड़कर वहीं क़त्ल कर दिया लेकिन उसे उनमें सलीबी अफ़वाज का कोई एक भी सिपाही न मिला।

हिसामुद्दीन को एक रोज़ इत्तलाअ मिली कि मिस्र से एक बहुत बड़ा काफ़ला हिजाज़ के लिए रवाना हो गया है। उस वक़्त काफ़ले को सेहराए अरब में होना चाहिए था। हिसामुद्दीन ने तीन चार सिपाहियों को खानाबदोशों के लिबास में गश्त के लिए भेजा मगर उन्हें कहीं काफ़ला नज़र नहीं आया। यह एक बदक़िस्मत काफ़ला था जो साहिल से दूर--दूर जा रहा था। एक रात काफ़ले ने एक जगह क़याम किया। उसमें ताजिर भी थे और हिजाज़ भी। कई एक पूरे--पूरे कुम्बों को साथ लिए जा रहे थे। उनमें बच्चे भी थे, बूढ़े भी और चन्द एक कमसिन और नौजवान लड़कियाँ भी थीं। ऊंटों और घोड़ों की तादाद ख़ासी थी और अफ़राद कमोबेश छः सौ थे। यह सब खा पीकर सो गये थे।

काफ़ला सेहर की तारीकी में जागा। किसी ने अज़ान दी। सबने तयम्मुम करके बाजमाअत नमाज़ पढ़ी और जब रवांगी की तैय्यारी होने लगी तो कहीं से बुलन्द ललकार सुनाई दी-- "सामान मत बांधो। सब एक तरफ़ खड़े हो जाओ। किसी ने मुक़ाबला करने की कोशिश की तो वह ज़िन्दा नहीं रहेगा।"

काफ़ले में कई एक की घबराई हुई आवाज़ सुनाई दी-- "डाकू, डाकू।"

सुबह की रौशनी साफ़ हो गयी। काफ़िले वालों ने देखा। इनमे इर्द गिर्द सेहराई लिबास में मलबूस सैकड़ों आदमी खड़े थे। उनमें बाज़ घोड़ों पर सवार थे। उनके हाथों में बरछियां और बाज़ के पास तलवारें थीं। उनके सर और चेहरे साफ़ों में लिपटे हुए थे। काफ़ले की तादाद ज़्यादा थी इसलिए यह आरजी क़यामगाह वसीअ थी। डाकूओं ने घेरे तंग करना शुरू कर दिया। काफ़ले वाले मुसलमान थे। ख़ामोशी से हथियार डाल देना उनका उसूल नहीं

था। उन्हें मालूम था कि काफ़लों पर हम्ले हुआ करते हैं, इसलिए वह मुसल्लह थे और लड़ने के लिए तैय्यार।

"औरतों और बच्चों को दर्मियान में एक जगह कर लो।" किसी ने आहिस्ता से कहा और यह हिदायत कानों कान बिखरे हुए काफ़िले तक पहुंच गयी।

औरतें और बच्चें कयामगाह के वस्त जाने लगे। डाकू आगे बढ़ने लगे। काफ़िले में से तलवारें निकल आईं। कुछ बरछियाँ भी थीं। डाकूओं ने हल्ला बोल दिया। उसके बाद घोड़ों के दौड़ने की, ललकार का और तलवारें टकराने का शोर था जिस में औरतें और बच्चों की चीखें सुनाई देतीं और शोर में डूब जाती थीं। डाकूओं मे ज़्यादा तर घोड़ों पर सवार थे इसलिए पल्ला उन्हीं का भारी था और वह तरबियतयाफ़्ता और तजुर्बाकार फ़ौजी थे। काफ़ले वाले जम कर मुकाबला कर रहे थे और नारे भी लगा रहे थे। एक आवाज़ बार–बार सुनाई दे देती थी– "लड़कियों को दर्मियान में रखना......लड़कियों को अलग न होने देना।"

एक लड़की की आवाज़ सुनाई दी– "हमारा ग़म न करो। हम तुम्हारे साथ हैं।"

काफ़िले वालों को अगर घोड़ों पर सवार हो जाने का मौका मिल जाता तो वह ज़्यादा बेहतर तरीके से लड़ सकते थे, मगर उनके घोड़े अभी ज़ीनों के बेग़ैर बंधे हुए थे। वह सलीबियों के घोड़ों तले रौंदे जा रहे थे। इनमें से बाज़ गिर भी रहे थे। ज़्यादा तर नुक़सान काफ़िले वालों का हो रहा था इसकी वजह यह थी कि वह औरतों और बच्चों को अपने हिसार में लिए हुए थे। वह घूम फिर कर नहीं लड़ सकते थे। मार्का फ़ैलता भी जा रहा था काफ़िले में सात आठ लड़कियां भी थीं। इनमें सिकन्दरिया की रहने वाली एक रक़ासाभी थी जिसका नाम रआदी था। वह अपने पेशे से उसी उम्र में मुतनफ़िर हो गयी और हज के लिए जा रही थी। उसके साथ वह आदमी था जिससे उसे मोहब्बत हो गयी थी। वह उसी के सहारे अपने आक़ाओं से भाग आई थी। उन्होंने अभी शादी नहीं की थी। दोनों ने फ़ैसला किया थ कि वह मक्का जाकर शादी और फिर हज करेंगे।

राअदी रक़ासा थी इसलिए उसका जिस्म फुर्तीला था। कुछ देर तक वह उस आदमी के साथ रही जिसके साथ वह हज को जा रहीथी। उस आदमी के पास तलवार नहीं थी जो उस ज़माने में लोग लिबास का हिस्सा समझ कर अपने साथ रखते थे। उसकी बजाए उसके पास ख़जर था। उसने राअदी को अपने साथ रखा और उसका चेहरा और सर इस तरह कपड़े में लपेट दिया कि पता न चले कि यह लड़की है। उस आदमी ने एक डाकू को जो घोड़े पर सवार नहीं था पीछे से पीठ पर ख़जर मारा। ख़जर इतन गहरा उतरा कि फ़ौरन बाहर निकल न सका। डाकू ने घूम कर उस आदमी के पहलू में बरछी की तरह तलवार घोंप दी, फिर दोनों गिर पड़े।

उस डाकू की पीठ के साथ तीरों से भरी हुई तरकश बंधी हुई थी और उसके कंधे और गर्दन में कमान भी लटक रही थी। राअदी ने उसकी कमान और तरकश उतार ली। यह तीनों कयामगाह के किनारे पर थे। करीब ही कुछ सामान पड़ा था जिसमें ख़ेमे भी थे। रआदी सामान और ख़ेमों के ढेर के पीछे छुप गयी। सलीब डाकूओं के घोड़े दौड़ते हुए उसके सामने

से गुज़रते थे। राअदी की कमान से तीर निकलता और घोड़सवार औंधा हो जाता।

इस तरह उसने कुछ सवारों को गिरा लिया और उकसे बाज़ तीर घोड़ों को लगे जो बेक़ाबू होकर और ज़्यादा तबाही मचाने लगे।

रआदी को कोई भी न देख सका मगर उसने एक सवार पर तीर चलाया जो सवार कीबजाए घोड़े की गर्दन में उतर गया। घोड़ा बेक़ाबू होकर घूमा और दूर का चक्कर काट कर सामान और ख़ेमों के उसी ढेर पर आ गया जिसमें रआदी छुपी हुई थी। घोड़ा सामान के साथ टकराया और ढेर हो गया। सवार दूर जा पड़ा। ढेर से एक चीख सुनाई दी। घोड़ा रआदी के ऊपर गिरा था लेकिन वह अभी मरा नहीं था। उसकी गर्दन में तीर उतरा हुआ था। वह फ़ौरन उठा और अंधाधुंध भाग गया। सवार उठा तो उसे लिपटे हुए खेमों में एक सर नज़र आया जो किसी औरत का था। सवार ने ख़ेमे हटा कर देखा। उसे एक बड़ी ही ख़ूबसूरत लड़की नज़र आई। वह उठने के क़ाबिल नहीं थी और वह बेहोश नहीं थी। सलीबी ने उसे उठाया तो वह कराहने लगी।

दो रोज़ बाद हिसामुद्दीन एक बहरी जहाज़ में अपने केबिन में बैठा हुआ था। दरवाज़े पर दस्तक हुई। बर्री फ़ौज के दस्ते का कमाण्डर दरवाज़ा खोलकर अन्द आया। उसके साथ एक आदमी था जिसका चेहरा उतरा हुआ था और लाश की तरह सफ़ेद था।

"सलीबी डाकूओं ने बहुत बड़े काफ़ले को लूट लिया है।" दस्ते के कमाण्डर ने हिसामुद्दीन से कहा– "यह आदमी उनकी क़ैद से भाग कर आया है। बाक़ी इससे सुन लें।"

उस आदमी ने तफ़सील से बताया कि काफले पर किस तरह हम्ला हुआ था– "हम ने बहुत मुक़ाबला किया लेकिन हमारे घोड़े ज़ीनों के बग़ैर अभी बंधे हुए थे वरना हम घोड़सवारों को कामयाब नहीं होने देते। काफ़ले के थोड़े से आदमी ज़िन्दा हैं जो डाकूओं के क़ब्ज़े में हैं। मेरा ख़्याल है कि अब तक उन्हें क़त्ल किया जा चुका होगा। मैं भी उन्हीं क़ैदियों में था। हम तो मर्द थे, शर्मनाक सूरत यह पैदा हो गयी है कि पाँच जवान लड़कियाँ और दस बारह कमसिन लड़कियाँ उनके क़ब्ज़े में हैं। काफ़ले में बड़ा ही क़ीमती सामान था। नक़दी हर एक के पास थी। नब्बे घोड़े और तक़रीबन डेढ़ सौ ऊंट हैं।

"अब कहां हैं?"

"वहाँ डरावने–डरावने से सीधे खड़े टीले हैं।" उसने जवाब दिया– "टीलों मे डाकूओं ने कमरो जैसे ग़ार बना रखे हैं। उनके पास पानी का ज़ख़ीरा है। मालूम होता है यह उनका मुस्तक़ल अड्डा है। वीराने में होते हुए यह जगह वीरान नहीं लगती।" उसने जो जगह बताई वह समन्दर से बीस मील दूर थी। उसने कहा– "कुछ डाकू भी हमारी तलवारों और बरछियों से मरे हैं लेकिन ज़्यादा नुक़सान हमार हुआ है। हम जो ज़िन्दा रह गये उन्हें वह अपने साथ ले आये। शाम तक वह हमारे तमाम ऊंट, घोड़े और सामान उठा कर अपने टीलों वाले अड्डे पर ले आये। रात को उन्होंने शराब पी और हमारा सामान खोल खोल कर देखने लगे। उसका एक सरदार भी है। लड़कियाँ उसके हवाले कर दी गयी थीं। मैने फिर लड़कियों को नहीं देखा। वह हमसे हमारा सामान उठवार कर एक वसीअ ग़ार में रखवा रहे थे। बहुत सी मशाले

जल रही थीं। मेरे ज़्यादा तर साथी ज़ख़्मी थे। मैंने उन्हें बताया कि मैं भागने की कोशिश करता हूँ। उनमें से किसी ने बताया कि अगर ख़ैरियत से निकल जाओ तो समन्दर तक पहुंचने की कोशिश करना। वहाँ अपनी फ़ौज की गश्ती कश्ती मिल जाएगी। उसमें अपने अस्करी होंगे। उन्हें बताना कि हम पर क्या मुसीबत टूटी है.....

"मुझे याद आ गया कि हम मिस्र की सरहद से निकल रहे थे तो वहां अपने अस्करी मिले थे। उन्होंने हमें कहा था कि रास्ते में कोई मुश्किल पैदा आ जाए तो साहिल पर चले जाना, वहाँ से तुम्हें फ़ौज की मदद मिल जाएगी.....डाकू शराब में बदमस्त हुए जा रहे थे। हम सामान उठा–उठा कर ग़ार में रख रहे थे। मुझे अंधेरे में भागने का मौका मिल गया। इन टीलों मे से निकलने का रास्ता नहीं मिलता था। दो बार घूम फिर कर वहीं पहुंच गया जहाँ से भागा था। मैंने अल्लाह को याद किया। कुर्आन की जो आयात याद थी वह पढ़ने लगा और आधी रात के बहुत बाद टीलों की गलियों से निकल आया। समन्दर की सिम्त का ख्याल न रहा। मैं अंधा धुंध चलता रहा और सुबह होने तक इतनी दूर आ गया जहाँ डाकू न देख सकते थे। सारा दिन अल्लाह को याद करता रहा। पानी का यह छोटा सा मश्कीज़ा साथा था। थोड़ी सी ख़जूरें भी थीं। उन्होंने मुझे ज़िन्दा रखा.....

"थकन से चला न गया तो दोपहर के वक़्त एक रेतीले टीले के दामन में गिर पड़ा। टीले के साये में नींद आ गयी। सूरज गुरूब हुआ तो आँख खुली। सितारे रौशन हुए तो सिम्त का अंदाज़ा हुआ बहुत देर बाद हवा में समन्द की बू महसूस होने लगी। मैं हवा के मुखालिफ़ चलता आया और शायद सेहर का वक़्त था जब मैं साहिल पर आ गया और जिस्म ने जवाब दे दिया। मैं गिरा और जाने बेहोश हो गया या सो गया। किसी ने मुझे जगाया। सूरज बहुत ऊपर आ गया था। मुझे जगाने वाला कोई अस्करी था। साहिल के साथ मुझे एक कश्ती नज़र आई। उसमें अस्करी भी थे। वह सब मेरे पास आये। मैंने उन्हें यही क़िस्सा सुनाया जो आप को सुना रहा हूँ। उन्होंने मुझे कश्ती में बिठा लिया। खिलाया पिलाया और मुझे यहां ले आये। यहाँ इन (कमाण्डर) के हवाले कर दिया। यह मुझे आपके पास ले आये।"

"हमारी रहनुमाई के लिए हमारे साथ चलोगे।" हिसामुद्दीन ने उसे कहा– "लेकिन तुम्हारी हालत ऐसी बुरी है कि फ़ौरन हमारे साथ नहीं चल सकोगे। थकन ने तुम्हें लाश बना दिया है।"

"मैं फ़ौरन आपके साथ चलने को तैय्यार हूँ।" उसआदमी ने कहा–"मैं आराम किस तरह कर सकता हूं, जब मुसलमान लड़कियाँ डाकूओं के क़ब्ज़े में हैं। अगर इस सफ़र में मुझे थकन से मरना है तो मैं मरने के लिए तैय्यार हूँ। मुझे कुर्आन की आयात ने उस जहन्नम से निकाला है, मुझ पर कुर्आन का फ़र्ज़ आयद होता है कि इन मासूम बच्चियों को ज़ालिमों के चंगुल से छुड़ाऊं। मैं इस फ़र्ज़ पर जान देना चाहता हूं।"

"डाकूओं की तादाद कितनी है?"

"पाँच सौ से ज़्यादा होगी।" उसने जवाब दिया।

"पाँच सौ आदमी काफ़ी होंगे?" हिसामुद्दीन ने बर्री दस्ते के कमाण्डर से पूछा– "मुझे

साथ होना चाहिए।"

"काफी होंगे।" कमाण्डर ने जवाब दिया– "उनमें कम अज़ कम एक सौ सवार बाकी पयादे होंगे। हमें छापा मारना हैं इसलिए हदफ़ तक ख़मोशी बरक़रार रखनी होगी। घोड़े जितने ज़्यादा होंगे उतना ही शोर का ख़तरा होगा। इस शख़्स से उस जगह की मज़ीद तफ़सील पूछ लेते हैं और अभी रवाना हो जाएंगे। यह चूंकि भटकता और गिरता पड़ता आया है इसलिए इतनी देर से पहुंचा। मैंने सिम्त का अन्दाज़ा कर लिया। मुझे उम्मीद है कि हम शाम के चले आधी रात के क़रीब हदफ़ पर पहुंच जाएंगे।"

"छोटी मिन्जनिकें साथ ले लेना।" हिसामुद्दीन ने कहा– "हांडियां (आतिशगीर सयाल वाली) और फलीते वाले तीर भी साथ हों...और इसे शाम तक मुकम्मल आराम करने दो...... सबको बता देना कि मुकाबला डाकूओं से नहीं सलीब के तजुर्बाकार फ़ौजियों के साथ है।"

बर्री फ़ौज का कमाण्डर उस आदमी को अपने साथ ले गया।

❖

सेहरा का वह खित्ता जहाँ सलीबी डाकूओं ने अपना अड्डा बना रखा था किले से कम न था। बल्कि इस लिहाज़ से किले से ज़्यादा मज़बूत और नाकाबिले तस्ख़ीर था कि वहाँ टीलों ने भूल भुलइयां जैसी गलियाँ बना रखी थीं जो थोड़े–थोड़े फ़ासिले पर मुड़ जातीं या शाख़ों में तकसीम हो जाती थीं। इस ख़ित्ते के दर्मियान एक वसीअ मैदान था। इसके इर्द गिर्द टीलों में सलीबियों ने ऊंचे और लम्बे चौड़ें कमरे खोद रखे थे। ऊंटों और घोड़ों की रहने की जगह अलग थी। हिसामुद्दीन का बर्री फ़ौज का दस्ता पूरी ख़ामोशी से आधी रात से पहले उस खित्ते के क़रीब पहँच चुका था। सलीबियों ने पकड़े जाने का ख़तरा ग़ालिबन कभी भी नहीं महसूस किया था वरना वह इधर उधर पहरे का इन्तज़ाम करते।

हिसामुद्दीन ने घोड़ों को पीछे रखा ताकि उनके हिनहिनाने की आवाज़ दुश्मन त क न पहँचे। दस्ते के कमाण्डर चार सिपाहियों को साथ लेकर टीलों की एक गली में चला गया। घूमता मुड़ता बहुत आगे गया तो उसे घोडों की हल्की–हल्की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। वह घोड़ों की रात की अवाज़ से वाकिफ़ था। एक जगह वह एक बुलन्द टीले पर चढ़गया। वह शबख़ून का माहिर था और उसे छुपे हुए हदफ़ पर पहुंचने का तजुर्बा था। वह टीले के उपर गया। उपर चौड़ाई थी। वहां से उतरना पड़ा, फिर एक और बुलन्दी पर चढ़ा। उसे आदमियों की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। जो हुल्लड़बाज़ी की तरह थीं। वहाँ से भी उसे उतरना पड़ा। वह एक गली में जा रहा था कि क़रीब ही उसे किसी के बोलने की आवाज़ सुनाई दी। उसने अपने सिपाहियों को इशारा किया और सब अपने हथियार तान कर टीले के साथ हो गये। आगे मोड़ था।

दो आदमी बातें करते मोड़ मुड़े। वह शराब पिये हुए थे जो उनके लहजे से ज़ाहिर होता था। सिपाहियों से दो चार क़दम आगे गये तो पीछे से सिपाहियों ने तलवारें उनके पहलूंओं से लगा दीं। कमाण्डर ने उनकी ज़ुबान में जो फ़िलिस्तीनी, अरबी और इबरानी आमेज़िश थी कहा कि अवाज़ निकाली तो मारे जाओगे। उन्हें वहाँ से दूर ले गये। उन्होंने जान के ख़ौफ़ से

बता दिया कि उनके साथी कहाँ हैं और उन तक कौन सा रास्ता जाता है। मुसलमान कमाण्डर, उनमें से एक को अपने साथ बुलन्दी पर ले गया जहाँ से वह मैदान नज़र आता था। जहाँ उसके साथी जश्न मना रहे थे। कमाण्डर ने ऊपर से देखा और वह हैरान रह गया। इस बेरहम सेहरा में जो जहन्नम से कम न था, इन सलीबियों ने जन्नत का मंज़र बना रखा था। जहाँ मुसाफिर प्यासे मर जाते थे वहां यह लोग शराब पी रहे थे। उनमें से कुछ इधर उधर बेसुध पड़े थे। बाज़ टोलियों में बैठे गा रहे थे या हुल्लड़बाज़ियों मे मसरूफ थे।

एक जगह एक लड़की नाच रही थी। मशाले इस तरह जल रही थीं कि उनके डंडे उमूदी टीलों में गाड़े हुए थे।

"बहुत से अन्दर हैं।" सलीबी कैदी ने कमाण्डर को बताया– "वह शराब से बेहोश पड़े होंगे। ऐसा जश्न सिर्फ उस वक़्त मनाया जाता है जब कोई बहुत बड़ा काफ़ला लूटा जाता है। तीन चार रातें जश्न मनाया जाता है।"

"तादाद कितनी है?"

"छः सौ के क़रीब होगी।" उसने जवाब दिया– "कमाण्डर एक नायब है। वह इस वक़्त लड़कियों के दर्मियान बदमस्त पड़ा होगा।"

कमाण्डर ने बुलन्दी से मैदान का जायज़ा लिया। उसे मशालों की रौशनी में जो कुछ नज़र आ रहा था, वह उसने देख लिया जो कुछ नज़र नहीं आ रहा था वह उसे सलीबी कैदी ने बता दिया। वह ऐसे रास्ते मालूम कर रहा था जिनकी नाकाबन्दी की जा सके। उसने अपने कैदियों को साथ लिया और वहाँ से उतर आया। दोनों कैदी और अपने सिपाहियों को भी साथ लेकर वह हिसामुद्दीन के पास गया और उसे बताया कि किस क़िस्म की कार्रवाई करनी है।

❖

मैदान में मशालों की रौशनी में हुल्लड़बाज़ी करने वाले सलीबियों की तादाद कम हो गयी थी। अब उनमें से चन्द एक ही जाग रहे थे। हिसामुद्दीन ने कहा कि ज़्यादा से ज़्यादा डाकूओं को ज़िन्दा बाहर लाना। कमाण्डर ने उस पर एतराज़ किया और कहा– "मैं इनसे इन्तक़ाम लेना चाहता हूँ। मैं इनकी लाशें यहीं गलने सड़ने के लिए और सेहराई लोमड़ियों क लिए पड़ी रहने दूंगा। आप इन्हें ज़िन्दा कैदी बनाकर उनके हुक्मरानों के साथ कोई सौदा करना चाहते हैं।"

"नहीं हिसामुद्दीन ने कहा– "मुझे भी इन्तक़ाम लेना है। मुझे अपने मुसलमान कैदियों के ख़ून का इन्तक़ाम लेना है जिन्हें सलीब के एक जंगजू बादशाह अर्नात ने अकरा में क़त्ल किया था। जंगी कैदियों को क़त्ल नहीं किया जाता मगर अर्नात ने हमारे तमाम कैदियों को पहले भूखा रखा। उनसे मुशक्कत कराई फिर उन्हें क़तार में खड़ा करके क़त्ल किया था। इस वाक़िआ को सात साल गुज़र गये हैं। मैं उसे सारी उम्र नहीं भूल सकता। आज इन्तक़ाम का मौक़ा मिला है। मैं यह नहीं सुनना चाहता कि यह सलीबी डाकू हमारे साथ लड़ते हुए मारे गये। उन्हें जिन्दा लाओ लेकिन मैं उन्हें ज़िन्दा नहीं रहने दूंगा। मैं उन्हें उसी तरह क़त्ल

करूंगा जिस तरह सलीबियों ने हमारे कैदी कत्ल किये थे।"

हिसामुद्दीन के सिपाही तीन रास्तों से मैदान में दाख़िल हुए। उन्होंने जलती हुई मशालों से अपनी मशाले जला लीं। जो जाग रहे थे, उन्होंने नशे की हालत में गालिया दीं। वह लड़ने की हालत में नहीं थे। हम्लावर सिपाहियों ने उन्हें ज़िन्दा पकड़ने के बजाए तलवारों से ख़त्म कर दिया। जो सोये हुए थे वह शोर गुल से जाग उठे। पेशतर उसके कि वह समझ पाते कि यह क्या हो रहा है, वह बरछियों की अन्नियों पर घर लिए गये। उन्हें हथियार उठाने की मुहलत न मिली। ग़ार नुमा कमरों में से चन्द एक बरछियां और तलवारें लेकर निकले लेकिन कुछ मारे गये, बाक़ी हथियार फेंक कर अलग खड़े हो गये। उनका नायब इस हालत में मदहोश पड़ा था कि जिस्म पर कोई कपड़ा नहीं था। वह गालियां बकने लगा। मुसलमान सिपाहियों को वह अपने सिपाही समझ रहा था। उसके कमरे से तीन मुसलमान लड़कियाँ बरामद हुईं।

दूसरे कमरों से भी चन्द एक लड़कियाँ निकलीं। यह सब मुसलमान थीं उनकी हालत बहुत बुरी थी। वह मुसलमान सिपाहियों को शायद डाकूओं का कोई दूसरा गिरोह समझ रही थीं। इसीलिए वह दहशत से दुबकी हुई थीं। जब उन्हें पता चला कि यह मुसलमान सिपाही हैं तो लड़कियाँ पागलों की सी हरकतें करने लगीं। वह रोती थीं कभी सलीबियों को दांत पीस–पीस कर गालियां देती और कभी मुसलमान सिपाहियों को कोसने लगतीं। उन्होंने उन्हें बेग़ैरत और बुज़्दिल कहा और उनमें से बाज़ बार–बार कहती थी– "अगर तुम मुसलमान हो तो इन काफ़िरों को कत्ल क्यों नहीं करते? क्या हम तुम्हारी बहने और बेटियां नहीं? क्या हमारी इस्मतें तुम्हारी बेटियों की इस्मतों जैसी नहीं?"

उस वक़्त हिसामुद्दीन और बर्री दस्ते का कमाण्डर कमरो की तलाशी ले रहे थे। बाहर अब कोई लड़ाई नहीं हो रही थी सलीबियों को एक जगह बैठा दिया गया। उनके गिर्द मुसल्लह सिपाही खड़े थे जिनमें बहुत से सिपाहियों ने कमानों मे तीर डाल रखे थे।

❖

सुबह जब सलीबियों का नशा उतरा तो वह समन्दर के किनाने बैठे थे। लड़कियों को हिसामुद्दन ने अपने बहरी जहाज़ों में रखा। कैदियों की तादाद कम व बेश पांच सौ थी। बाक़ी मारे गये थे। उन्होंने टीलों के अन्दर जो सामान और रक़म जमा कर रखी थी वह कैदियों से उठवाकर साहिल पर लायी गयी। इन कैदियों के कमाण्डर से जो मालूमात हासिल हुई, उनसे यह इन्कसशाफ़ हुआ कि यह एक मशहूर सलीबी बादशाह रिनॉल्ड डी सायतून की फ़ौज का एक दस्ता था। मुसलमान काफ़लों को लूटने के लिए इतनी नफ़री का एक दस्ता यहाँ मौजूद रहता था। कुछ अर्से बाद ददूसरा दस्ता भेज दिया जाताथा। सामान जो लूटा जाता था उसमें से कुछ हिस्सा सिपाहियों को मिलता था बाक़ी सब अपने बादशाह को भेज दिया जाता था। ऊंट घोड़े भी सरकारी मिल्कियत में चले जाते थे।

लड़कियों के मुतअल्लिक़ यह एहकाम थे कि कमसिन बच्चियाँ जो ग़ैर मामूली तौर पर ख़ूबसूरत होती थीं, वह सलीबियों के हेडक्वार्टरों मे भेज दी जाती थीं जहां उन्हें ट्रेनिंग देकर

जवानी की उम्र में जासूसी और तख़रीबकारी के लिए मुसलमानों के इलाकों मे भेजा था। जवान लड़कियों में कोई बहुत ही ख़ूबसूरत हो तो उसे भी हैड्क्वार्टरों के हवाले कर दिया जाता था। बाक़ी लड़कियों को यह सलीबी सिपाही और कमाण्डर अपने पास रख लेते थे।

"इस काफ़ले के साथ भी बच्चियाँ होंगी।" हिसामुद्दीन ने पूछा।

"बारह चौदह थीं।" सलीबी कमाण्डर ने बताया– "सिर्फ़ एक भेजी गयी है।"

"और बाक़ी?"

"क़त्ल हो चुकी हैं।"

"और काफ़ले के जिन आदमियों को साथ लाए थे?"

"उन्हें सामान उठाने के लिए लाए थे। फ़िर उन्हें क़त्ल कर दिया था।"

उसने जवान लड़कियों के मुतअल्लिक़ बताया कि उनमें एक रक़ासा थी। बहुत ख़ूबसूरत थी। उसका जिस्म, हुस्न और उसका रक़्स हमारी इस ज़रूरत के मुताबिक़ था जिसके लिए हम लड़कियाँ हासिल करते हैं। उस रक़ासा को उसी शाम भेज दिया गया था। फ़ौरन भेजने की वजह यह बताई थी कि ऐसी क़ीमती और दिलकश लड़की का सिपाहियों में रखना ख़तरनाक होता है। कोई भी सिपाही उसे अज़ादी का झांसा देकर भगा ले जा सकता है।"

"इन्होंने उस काफ़ले को क़त्ल किया है जो हज को जा रहा था।" हिसामुद्दीन ने कमाण्डर से कहा– "काफ़ला हिजाज़ तक न पहुंच सका। उन बदनसीबों की बजाए मैं उनके कातिलों को हिजाज़ भेजूंगा और वहाँ इन्हें क़त्ल कराऊंगा।"

हिसामुद्दीन तमाम कैदियों को उस जगह ले गया जहाँ उन्होंने काफ़ले को लूटा और क़त्ल किया था। वहाँ लोमड़ियों, भेड़ियों और गीदड़ों की खाई हुई लाशें बिखरी हुई थीं। हिसामुद्दीन ने कैदियों से क़ब्रें खुदवाई। उसने सबकी नमाज़ जनाजा पढ़ाई और सबको दफ़्न कर दिया। उसने क़ाहिरा से हुक्म लिए बग़ैर इन तमाम कैदियों को एक ही बहरी जहाज़ में ठूंसा और जिद्दा की तरफ़ ले गया। वहाँ उन्हें उतारा और इस पैग़ाम के साथ हिजाज़ रवाना कर दिया कि इन्हें मीना के मैदान में क़त्ल कर दियाजाए। पैग़ाम में उसने तफ़सील से लिखा कि उनका जुर्म क्या है।

यूरोपी मोअर्रिख़ों ने सलीबी सिपाहियों और उनके कमाण्डर के क़त्ल को बहुत उछाला और ग़लत रंग में पेश किया है। उन्हें उन्होंने जंगी क़ैदी कहा लेकिन यह नहीं बताया कि वह कौन सी जंग के जंगी कैदी थे। वह किसी किले में नहीं थे मुसलमान मोअर्रिख़ों ने असल वाक़िआ लिखा। उनकी तहरीरों से यह साबित होता है कि यह अमीर अलबहर हिसामुद्दीन लौलूअ का फ़ैसला था जिससे सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी बिल्कुल बेख़बर था।

❖

इस सलीबी डाकू दस्ते के कमाण्डर ने जिस रक़ासा के मुतअल्लिक़ बताया था कि उसे उसी शाम यहाँ से भेज दिया गया था, वह राअदी थी। उसके कहने के मुताबिक़ उसे इतनी जल्दी इसलिए भेज दिया गया था कि घोड़े के नीचे आकर उसकी हालत अच्छी नहीं थी। कमाण्डर ने इस डर से उसे भेज दिया कि उसपर यह इल्ज़ाम आयद न हो कि इस

रकासा को उसके तशद्दुद ने इस हालत तक पहुँचाया है। यह कमाण्डर जिस वक़्त हिसामुद्दीन को अपना बयान दे रहा था, उस वक़्त रक़ासा रआदी चार सलीबी सिपाहियों के साथ वहाँ से बहुत दूर पहुँच चुकी थी। वह घोड़े पर सवार थी। उसकी हालत बहुत बेहतर हो गयी थी। रास्ते में उसने सिपाहियों से कई बार कहा था कि वह उसे काहिरा ले चलें जहाँ वह उन्हें बेशुमार रक़म देगी मगर सिपाही न माने। आख़िर एक सिपाही ने उसे कहा— "तुम देख रही हो कि हम तुम्हें शहज़ादियों की तरह साथ ले जा रहे हैं। तुम इतनी ज़्यादा ख़ूबसूरत होऔर तुम्हारे जिस्म में ऐसा जादू है कि जिसे इशारा करो वह तुम्हारें कदमों में जान दे देगा, लेकिन हम तुम्हारे जिस्म से चार कदम दूर रहते हैं। वजह यह है कि तुम हमारे पास अमानत हो और यह अमानत हमारे बादशाह की है जो सलीब का बादशाह है। अगर तुम्हारा कहा मान लें या तुम्हें अपनी मिल्कियत समझ लें तो हमें बादशाह बख़्शेगा न सलीब।"

"हमारी मंज़िल कहाँ है?" राअदी ने पूछा।

"बहुत दूर।" उसे जवाब मिला— "सफ़र कठिन है और लम्बा भी। अभी एक ख़तरा यह भी है कि हमें उस इलाक़ों से भी गुज़रना पड़ेगा जो मुसलमानों के कब्ज़े में है।"

राअदी को यह चार सलीबी वाक़ई शहज़ादियों की तरह ले जा रहे थे।" तुम किसी बड़े हाकिम की बेटी मालूम होती हो या किसी दौलत मन्द ताजिर की बेटी। तुम अपने ख़ानदान के साथ हज को जा रही थी?" एक सलीबी ने पूछा।

"तुम्हें किसी ने बताया नहीं कि मैं रक़ासा हूँ?" राअदी ने जवाब दिया— "मेरा कोई बाप नहीं, कोई भाई नहीं। मेरी माँ इस्माइलीया में मशहूर रक़ासा और मोग़िन्निया हैं। मुझे बिल्कुल इल्म नहीं कि मैं उसके किस चाहने वाले की बेटी हूँ। माँ ने बचपन में ही मुझे रक़्स की तरबियत देनी शुरू कर दी थी। मुझे रक़्स और गाना अच्छा लगता था। मैं सोलह सतरह साल की हुई तो माँ ने मुझे एक बहुत अमीर आदमी के घर भेजा। वह बूढ़ा आदमी था। शराब पिए हुए था। बूढ़े ने मुझे कहा कि वह मेरी मोहब्बत में दिवाना हुए जा रहा है। मुझे उस बूढ़े से नफ़रत हो गयी। मुझे यह एहसास हुआ कि मेरा बाप नहीं है। इस बूढ़े को देखकर मुझे अपने बाप का ख़्याल आ गया था। उस बूढ़े ने मुझे अपने पास बैठाकर ऐसी ज़लील हरकतें की कि मुझे पता चल गया कि यह मेरा बाप नहीं, न उसके दिल में मेरी मोहब्बत है, यह मेरा गाहक है.

.....

"मैं वहाँ से अकेली भाग गयी। माँ को बताया तो उसने मुझे समझाया कि यह हमारा पेशा है। मैं न मानी। माँ ने मुझे मारा पीटा। मैंने कहा कि मैं नाचूंगी, गाऊंगी लेकिन किसी के घर नहीं जाऊंगी। माँ ने मेरी शर्त मान ली।

जिनके पास दौलत थी वह हमारे घर आने लगे। मैं चूंकि किसी के घर नहीं जाती थी इसलिए मेरी क़ीमत बढ़ गयी। तीन साल गुज़र गये और उस दौरान मेरे दिल में यह आरज़ू पैदा हुई कि कोई मेरे हुस्न और मेरे रक़्स के बजाए मेरे साथ मोहब्बत करे जिसमें अय्याशी और बदमाशी का दखल न हो। आख़िर एक आदमी मुझे मिल गया। वह दोबार मेरे यहाँ आया था। वह मुझे अच्छा लगता था। मुझ से सात आठ साल बड़ा था। मेरी और उसकी मुलाक़ातें

बाहर होने लगीं। मैं बघी में सैर के बहाने चली जाती और वह वहाँ मौजूद होता.....

"वह तो शहज़ादा था। शराब पीता था। मैंने एक शाम उसे कहा कि शरब छोड़ दो। उसने क़सम खाकर कहा कि वह आइंदा शराब नहीं पीएगा। उसने वादा पूरा कर दिखाया। एक रोज़ उसने मुझे कहा कि नाचना छोड़ दो। मैंने क़सम खाकर कहा कि मैं इस पेशे पर लानत भेजूंगी लेकिन जब तक इस घर में हूं मुम्किन नहीं। उसने कहा कि मैं अय्याश बाप का अय्याश बेटा हूँ। मेरे बाप के हरम में तुमसे छोटी उम्र की लड़कियाँ हैं। मैं उस घर में रहकर नेक नहीं बन सकता। मैंने उसे कहा कि मैं नाचने वाली माँ की नाचने वाली बेटी हूँ। तुम्हें अपने बाप की अय्याशी ख़राब कर रही है और मुझे अपनी माँ का पेशा खराब कर रहा है। आओ, कहीं दूर चलें और मियां बीवी की तरह पाक ज़िन्दगी बसर करें। वह मान गया.....

"वह मुसलमान था। मेरा कोई मज़हब नहीं। मुझे यह भी मालूम नहीं कि मेरा बाप मुसलमान था, ईसाई या यहूदी था।

मैंने उसे कहा कि मुझे मुसलमान समझो और बताओ कि मज़हब क्या है। मुझे मोहब्बत दो, मुझे पाक जिन्दगी दो। उसने बहुत सोंचा और बोला पाक होना है तो हिजाज़ चलो। मैंने हिजाज़ की बहुत बातें सुनी थीं। मुझे ऐसे गाने बहुत पसन्द आते थे जिनमें हिजाज़ और जहाज़ के काफ़लों का ज़िक्र होता। मैं एक गाना अकेले भी गुनगुनाया करती थी– "चले काफ़िले हिजाज़ के" उसने हिजाज का नाम लेकर मेरी आरजू को शोला बना दिया। मैंने उसे कहा कि मैं तैय्यार हूं। हिम्मत करो, मेरी आरजू पूरी कर दो। उसने पूछा– "तुम जानती हो मैं तुम्हें हिजाज़ क्यों ले जा रहा हूँ? मैंने कहा कि वह बहुत ख़ूबसूरत सरज़मीन है। उसने कहा कि सिर्फ़ ख़ूबसूरत नहीं, वह पाक सरज़मीन है। वहां ख़ानाकाबा है। वहां आबे ज़मज़म है और वहाँ जो जाता है उसकी रूह पाक हो जाती है। उसने यह भी कहा कि वहां हम हज्जे काबा करेंगे और पाक होकर शादी करेंगे फिर वहीं रहेंगे.....

"मैं उस वक़्त को भूल नहीं सकती जब वह मेरे साथ बातें बच्चों की तरह कर रहा था और मैं जैसे उसकी आँखों में उतर कर उसकी रूह में समा गयी थी। मेरी ज़ात फ़ना हो गयी थी, मेरा वजूद उसके वजूद में तहलील हो गया था और मैंने उसे कहा था कल चलना है तो अभी चलो। उसने कहा काफ़ले जाते रहते हैं। मैं मालूम कर लूंगा.......

फ़िर एक शाम उसने कहा कि आज रात यहीं आज जाना। काफ़ला रवाना हो गया है। हम उससे जा मिलेंगे। मैंने उसे कहा कि मैं घर चली गयी तो रात कोई आने नहीं देगा। अभी ले चलो। उसने कहा आ जाओ। मैंने बघी वाले को कुछ न बताया। शाम गहरी हो गयी तो। छुप कर उसके साथ चली गयी। उसने मुझे एक खंडर में छुपा दिया और चला गया। वह कुछ देर बाद दो घोड़े लेकर आया। वह घोड़े पर सवार था। दूसरा घोड़ा खाली था। दोनों के साथ पानी और खाने का सामान बंधा था......

"हम अगली शाम काफले जा मिले और रात वहाँ जा पहुंचे जहाँ तुमने मेरे ख़्वाब मेरी मोहब्बत के लहू में ग़र्क कर दिए। वह मारा गया, मैं पकड़ी गयी, हिजाज़ के काफला को लूटा गया और ख़ानाकाबा से दूर ही अल्लाह के हज़ूर चला गया........ख़ुदा ने मेरे गुनाह बख़्शे

नहीं। मेरे माथे की किस्मत में काबा का सज्दा नहीं लिखा था। मेरा वजूद नापाक था जो अल्लाह को पसन्द नहीं था कि उसके काबे तक पहुंचे।"

"तुम मज़हब में पनाह लेना चाहती हो तो हमारे मज़हब को क़रीब से देखना।" एक सिपाही ने कहा।

"तुमने मेरा एक पाक तसव्वुर रेज़ा–रेज़ा कर दिया है।" रआदी ने कहा– "क्या तुम्हारे मज़हब ने यह हुक्म दिया है जिसकी तुमने तामील की है? मैं जो तसव्वुर लेकर निकली थी वह ऐसा भयानक तो नहीं था?"

"यह हमारा मज़हब नहीं।" एक सिपाही ने कहा– "यह उन इन्सानों का हुक्म था जिनके हम मुलाज़िम हैं।"

"तुमसे तो मैं अच्छी हूँ जिसके क़दमों में शहज़ादे ज़र व जवाहरात के साथ अपना सर भी रखते थे।" राअदी ने कहा– "मगर मैं सेहराओं की ख़ाक छानने निकल आयी....हुक्मवह मानो जो अपनी रूह से निकले। मै। उसके मज़हब की मुरीद हूँ जिसने मुझे पाक मोहब्बत दी और पाकीज़ा तसव्वुर दिया। उससे मैं समझी कि उसका मज़हब भी पाक होगा। वह मुझे मेरे तसव्वुरों की सरज़मीन हिजाज़ की तरफ़ ले जा रहा था। तुम मुझे कहाँ ले जा रहे हो?"

"हम इन्सानों के हुक्म के पाबन्द हैं।' सिपाही ने कहा।

"मैं ख़ुदा की हुक्म की पाबन्द हूँ।" राअदी ने कहा।

"ख़ुदा ने तुम्हें धुतकार दिया है।" एकऔर सिपाही बोला– "तुम इस वक़्त हमारी पाबन्द हो। हम जहाँ तुम्हें ले जा रहे हैं वहाँ सोंचना कि ख़ुदा को राज़ी किस तरह किया जाए। कोई नेकी करना। शायद ख़ुदा तुम्हें बख़्श दे।"

"मैं जानती हूं तुम मुझे कहां ले जा रहे हो और क्यों ले जा रहे हो।" राअदी ने कहा– "मेरा वजूद सरापा गुनाह होगा और मैं कोई नेकी नही कर सकूंगी।"

"तुम कोई नेकी सोंच भी नहीं सकती।" एक सिपाही ने कहा– "तुम गुनाह की पैदवार हो। गुनाहों में तुमने परवरिश पाई है। एक गुनाहगार के साथ घर से भाग कर जा रही थी.... तुम नेकी क्या करोगी?"

"उन बेगुनाहों के ख़ून का इन्तक़ाम लूंगी जिन्हें तुमने क़त्ल किया है।" रआदी ने दांत पीस कर कहा।

चारो सिपाहियों ने बड़ी ज़ोर से क़हक़हा लगाया और एक ने कहा– "हम पर तुम्हारा एहतराम फ़र्ज़ है। हमें हुक्म ही ऐसा मिला है वरना तुम ऐसे अल्फ़ाज़ दूबारा ज़ुबानसे न निकालती।"

राअदी उन्हें देखती रही और उसके दिल में नफ़रत गहरी होती गयी।

❖

मुसिल में एक दुरवेश की शोहरत आनन फ़ानन फैल गयी। वह एक ज़ईफ़ उल उम्र इन्सान था। लोग कहतेथे कि वह किसी ख़ुशनसीब इन्सान के साथ ही बात करता है और वह जिसकी बात करता है। उसकी हर मुराद पूरी हो जाती है। किसी ने उसे शहर की दिवारों के

बाहर एक झोंपड़ा दे दिया था। उसकी करामात सारे शहर में मशहूर हो गयीं। लोग उसके झोंपड़े के गिर्द हुजूम किये रखते। वह ज़िरह सी देर के लिए बाहर आता। बाज़ू ऊपर करके लोगों को ख़ामोश रहने का इशारा करता। हुजूम पर ख़ामोशी तारी हो जाती। वह इशारों में उन्हें तसल्ली देता और झोंपड़े में चला जाता। उसके साथ चार पांच ख़ुबरू आदमी थे जिनके चेहरे सफ़ेद और गुलाबी थे और वह सरसे पाँव तक सब्ज़ लिबादों मे मलबूस थे।

फ़िर यह मशहूर हो गया कि दूरवेश मुसिल वालों के लिए कोई ख़ुशख़बरी लाया है। शहर में अजनबी से कुछ लोग नज़र आते थे। वह लोगों को दूरवेश के मुतल्लिक कुछे ऐसी बातें सुनाते थे जो हर किसी के दिल में उतर जाती थीं। हर किसी को अपनी—अपनी मुराद पूरी होती नज़र आती थी। चन्द दिनों में ही मशहूर हो गया कि दूरवेश इमाम मेंहदी हैं। बाज़ उसे हज़रत ईसा कहने लगे। फ़िर एक रोज़ लोगों ने देखा कि दूरवेश वालिये मुसिल की बघी पर महल को जा रहा है। अज़ाउद्दीन के मुहाफ़िज़ों ने उसका इस्तकबाल किया। और वह महल में चला गया। कई घंटों बाद वहाँ से निकला और शाही बघी पर चला गया। लोग जब उसके झोंपड़े को गये तो वहाँ कोई भी नहीं था। दूरवेश को बघी कहीं दूर ले गयी थी। शाम को बघी वापस आई। उसमें बघी बान और दो मुहाफ़िज़ थे। लोगों ने बघी रोक कर और मुहाफ़िजों सेपूछा कि दूरवेश कहाँ चला गया है।

"हमें कुछ इल्म नहीं वह कहाँ है।" एक मुहाफ़िज़ ने लोगों को बताया—"उसने पहाड़ियों के क़रीब बघी रोकवा ली और हमें कहा कि तुम चले जाओ। हमने उसके साथ एक आदमी से पूछा कि दूरवेश कहा जा रहा है। उन्होंने बताया कि वह इन पहाड़ियों में से किसी चोटी पर बैठेगा। उसे उफ़क से एक निसानी नज़र आयेगी। दूरवेश पहाड़ी से उतर कर आयेगा और वालिये मुसिल को बतायेगा कि वह क्या करे, फ़िर मुसिल की फ़ौज जिधर जाएगी उधर पहाड़ उसे रास्ता दे देंगे, सेहरा सर सब्ज़ हो जाएंगे। दुश्मन की फ़ौजें अंधी हो जाएंगी और वालिये मुसिल जहाँ तक पहुंच सकेगा उसकी हुक्मरानी होगी। सलाहुद्दीन अय्यूबी अज़ाउद्दीन के आगे हथियार डाल देगा। सलीबी उसके ग़ुलाम हो जाएंगे औ मुसिल के लोग आधी दुनिया के बादशाह होंगे। सोने चांदी में खेलेंगे......हमें यह मालूम नहीं कि कौन से पहाड़ियों के चोटी पर बैठेगा।"

मुसिल से कुछ दूर कोहिस्तानी इलाका था वहाँ कोई आबादी नहीं थी। जहाँ कहीं पहाड़ों में घिरा हुआ मैदान था, वहाँ दो चार झोंपड़े नज़र आते थे। इलाका हरा भरा था। गड़ेरिए मवेशी लेके वहाँ जाते थे। एक रोज़ गड़ेरियों को उधर जाने से रोक दिया गया। लोगों को दूर से गुज़रने की इजाज़त थी। मुसिल के फ़ौज के संतरी गश्त कर रहे थे। उनके साथ बाहर के अजनबीलोग भी थे। कोहिस्तान का एक वसीअ इलाका था जिसके क़रीब जाने से लोगों को मना कर दिया गया। इन पाबन्दियों का नतीजा यह हुआ कि यह ख़ित्ता लोगों की तवज्जो का मरकज़ बन गया। उसके मुतअल्लिक अजीब बातें सुनने में आने लगीं। यह तो एक दिन में हर किसी की ज़ुबान पर चढ़ गया कि दूरवेश को आसमान से एक निसानी नज़र आयेगी फिर आधी दुनिया पर मुसिल वालों की बादशाही होगी।

सिर्फ एक चारदिवारी थी जिसके अन्दर चार आदमी बैठे कुछ और किस्म की बातें कर रहे थे। उनमें एक हसन अल इद्रिस भी था। पिछली किस्त में आप तफ़सील से पढ़ चुके हैं कि हसन अल इद्रिस सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का जासूस था जो बैरूत से निहायत क़ीमती ख़बर लाया था और उस ख़बर के साथ वालिये मुसिल अज़ाउद्दीन के एल्ची इहतशामुद्दीन और उसकी रक़ासा बेटी सायरा को भी सुल्तान अय्यूबी के पासले आया था। यह एक बेमिसाल कामयाबी थी। इस्लाम की तारीख पर इसजासूस ने बहुत बड़ा एहसान किया था। इहतशामुद्दीन ने सुल्तान अय्यूबी को बताया था कि सलीबी मुसिल के करीब पहाड़ियों की खोह में अस्लेहा और आतिशगीर सयाल और रस्द का बहुत बड़ा ज़खीरा जमा करेंगे जिससे ज़ाहिर होता था कि वह इसकोहिस्तान को अपनी फ़ौज का अड्डा बनायेंगे। मुसिल को तो वह अपने छापामारों का अड्डा बना रहे थे। इस हकीकत को सुल्तान अय्यूबी और सालार ही समझ सकते थे कि जिस फ़ौज का अड्डा और रस्द क़रीब हो आधी जंग जीत लेती है। सलीबी फ़ौज को यह तल्ख़ तजुर्बा हो चुका था कि उन्होंने जब कभी पेशक़दमी की या हम्ला किया तो सुल्तान अय्यूबी के छापामारों ने अक़ब से जाकर उनकी रस्द तबाह कर दी या रस्द और फ़ौज के दर्मियान हायल होकर रस्द रोक ली। आगे सुल्तान अय्यूबी ने यह इन्तज़ाम कर रखा होता था कि पानी जहाँ कही होता था वहाँ क़ब्ज़ा कर लेता था। जहाँ कहीं घास और चारा होता वहाँ वह क़ब्ज़ा कर लेता या घास वग़ैरह कटवा लेता या तबाह कर देता ताकि सलीबियों के घोड़ों और ऊंटों को चारा न मिल सके। इसके अलावा वह बुलन्दियों पर अपने तीर अन्दाज़ों को बैठा देता था।

आप पढ़ चुके हैं कि सुल्तान अय्यूबी ने अपनी इन्टेलीजेंस के सरबराह हसन बिन अब्दुल्लाह से कहा था कि वह मालूम करे कि सलीबी किस मुक़ाम पर ज़ख़ीरा कर रहे हैं। उसने छापामार दस्तों के सालार सारिम मिस्री से कहा था कि जब ज़ख़ीरे का मुकाम मालूम हो जाए तो उसे तबाह करने की कोशिश की जाए। सुल्तान अय्यूबी की दूरबीन निगाहों ने देख लिया था कि सलीबी मुकम्मल तैय्यारी करके खुली जंग लड़ेंगे। इससे पहले वह सलीबी इलाकों पर हम्ला नहीं करना चाहता था।

उसे जब इहतशामुद्दीन की ज़ुबानी सलीबियों के अज़ाइम की इत्तलाअ मिली तो उसने यह मंसूबा बनाया कि सलीबियों को कहीं भी क़दम न जमाने दिये जाएं। उसने एक हुक्म यह दिया कि मालूम करो कि सलीबी कोहिस्तान मे कहाँ ज़ख़ीरा जमा कर रहे हैं और दूसरा हुक्म यह दिया कि संजार की तरफ़ पेशक़दमी करो और किले को मुहासिरे में ले लो। संजार मुसिल से कुछ दूर एक अहम किला और जंगी अहमियत का एक क़स्बा था। उसका अमीर शर्फुद्दीन बिन क़ुतुबुद्दीन था। संजार को अपने कब्ज़े में लेने का इक्दाम सुल्तान अय्यूबीके उसे मंसूबे की कड़ी थी जिसके मुतअल्लिक़ उसने कहा कि वह अब किसी से तआवुन की भीख नहीं माँगेगा बल्कि तलवार की नोक पर तआवुन हासिल करेगा। उसे मालूम था कि यह छोटे–छोटे मुसलमान उमरा ख़ुद मुख़्तार हुक्मरान रहना चाहते हैं, इसलिए सलीबियों के

साथ दरपरदा मुआहिदे कर रहे हैं। संजार के अमीर शरफुद्दीन के मुतअल्लिक सुल्तान अय्यूबी को यक़ीन हो गया था कि वह वालिये मुसिल अज़ाउद्दीन का दोस्त है और इस दोस्ती की बुनियाद यही है कि सुल्तान अय्यूबी के खिलाफ़ मुहाज़ मज़बूत किया जाए।

हसन बिन अब्दुल्लाह ने अपने जासूसों का जायज़ा लिया। मुसिल में उसके जासूस मौजूद थे लेकिन वह महसूस कर रहा था कि किसी ज़्यादा ज़हीन और जुर्रत मन्द जासूस को उनके पास भेजा जाए क्योंकि उसे ख़्याल था कि सलीबियों का ज़ख़ीरा मालूम करना मुश्किल काम हो सकता है। हसन अल इद्रिस ने अपनी खिदमात पेश कीं। हसन बिन अब्दुल्लाह उसे नही भेजना चाहता था क्योंकि वह लम्बे अर्से तक बैरूत रहा था, इसलिए उसे पहचाना जा सकता था। हसन अल इद्रिस भेस और अपना लब व लहजा बदलने का माहिर था। उसने हसन बिन अब्दुल्लाह से कहा कि वह अगर बैरूत चला जाए तो ऐसा बहरूप धार लेगा कि जो उसे पहचानते हैं वह भी नहीं पहचान सकेंगे। मुसिल में तो उसे कोई भी नहीं जानता था। आख़िर उसी को रवाना करने का फ़ैसला किया गया और सुल्तान अय्यूबी ने ख़ुद उसे कुछ हिदायात दीं।

"मेरे अजीज़ दोस्त!" सुल्तान अय्यूबी ने अपने हाथ सीने पर रखकर हसन अल इद्रिस से कहा– "तारीख में नाम सुल्तान अय्यूबी का आयेगा। शिकस्त खाउंगा तो तारीख मुझे शर्मसार करेगी और फ़तह हासिल करके मरूंगा तो लोग मेरी क़ब्र पर फूल चढ़ायेंगे और आने वाली नस्लें मुझे ख़िराज तहसीन पेश केंगी। यह बहुत बड़ी बेइन्साफ़ी होगी। फ़तह का सेहरा तुम्हारे सर होगा, तुम्हारे उन साथियों के सर होगा जो दुश्मन के अन्दर जाकर ख़बरें लाते हैं और मेरी फ़तह का बाइस बनते हैं। ख़ुदा इस हक़ीक़त को देख रहा है। तुम्हारे सर पर सेहरा ख़ुदा अपने हाथों बाधेंगा। मैं शिकस्त खाउंगा तो यह मेरी अपनी ग़ल्ती होगी कि मैंने तुम्हारी इत्तलाअ के मुताबिक अमल न किया, और मैं फ़तह हासिल करूंगा तो यह तुम्हारी फ़तह होगी क्योंकि तुम मेरी आँखें और मेरे कान हो। मेरी रूह तुम्हारी क़ब्र पर फूल चढ़ाती रहेगी। अज़ीम तुम हो और तुम्हारे जासूस साथी। मेरी कोई अज़मत नहीं। मैं पूरी फ़ौज लेकर संजार जा रहा हूँ। तुम अकेले जा रहे हो। मैं जो फ़तह पूरी फ़ौज के साथ हासिल करूंगा वह तुम अकेले कर लोगे। जाओ मेरे दोस्त! ख़ुदा हाफ़िज।"

जब हसन अल इद्रिस एक ग़रीब मुसाफ़िर के भेस में एक ऊंट पर सवार होकर नसीबा की ख़ेमागाह से निकला, उस वक़्त सूरज ग़ुरूब हो चुका था। वह दूर निकल गया तो उसे बेशुमार घोड़ों के टापों की आवाज़ सुनाई देने लगीं। वह रूक गया। उसे मालूम था यह घोड़े किस के हैं। यह सुल्तान अय्यूबी संजार को मुहासिरे में लेने जा रहा था। उसने नसीबा से अपना कैम्प उखाड़ा नहीं था। अपना हैडक्वार्टर और कुछ अमला वहीं रहने दिया और अपने महफ़ूज़ा को भी तैय्यारी की हालत में नसीबा छोड़ गया था।

❖

"तुम यहाँ यह मालूम करने आये हो कि सलीबी पहाड़ों में अपना ज़ख़ीरा कहाँ रखेंगे।" मुसिल के जासूसों के कमाण्डर ने कहा– "और हम यहाँ यह मालूम करने की सोच रहे हैं कि

यह दरवेश कौन है जो उन्हीं पहाड़ों में कहीं जा बैठा है। कोई उसे इमाम मेंहदी कहता है और कोई ईसा।" उसने हसन अल इद्रिस को पूरी तफ़सील से बताया कि उस दूरवेश को शहर में और इर्द गिर्द के इलाके में कैसी शोहरत हासिल हुई है– "उन पहाड़ों के करीब से गुज़रने की भी इजाज़त नहीं। कुछ तो अपनी फ़ौज के संतरी हैं और कुछ अजनबी से आदमी हैं जा किसी को आगे नहीं जाने दते। दूरवेश किसी पहाड़ की चोटी पर बैठा है। उसे ख़ुदा आसमान से कोई इशारा देगा। रात को लोग अपनी छतों पर खड़े होकर आसमान की तरफ़ देखते रहते हैं। कोई सितारा टूटता है तो वह चिल्ला उठते हैं, वह रहा इशरा। लोग ख़ुदा और रसूल को भूलते जा रहे हैं।"

यह चारों जासूस थे। उन्हें ख़ुसूसी ट्रेनिंग दी गयी थी जिसमें यह तालीम शामिल थी कि तोहम परस्ती हराम है और ख़ुदा और रसूल के बाद जो कुछ है वह इन्सान ख़ुद है। जहाँ मुसिल के हर बाशिन्दे के दिमाग़ पर यह दूरवेश ग़ालिब आ गया था वहाँ चार जासूस दूरवेश की हक़ीक़त मालूम करने की फ़िक्रमन्द थे।

"मेरे दोस्तो! मेरी बात हंसी में न टाल दो तो कहूं।" हसन अल इद्रिस ने कहा– जहाँ दूरवेश है वहाँ संलीबियों का ज़ख़ीरा है, और यह कोई मामूली ज़ख़ीरा होता तो इस इलाके के लोगों के लिए मम्नूअ करार देकर दूरवेश का ढोंग न रचाया जाता। तुम जानते हो कि इतने वसीअ इलाके के इर्द गिर्द पूरी फ़ौज का पहरा खड़ा कर दो तो भी कोई न कोई अन्दर चला ही जाता है, लेकिन सिर्फ़ यह कह देना कि यहाँ ख़ुदा का भेजा हुआ एक दूरवेश बैठा है और वह नहीं चाहता कि उसके इलाके में कोई आये तो कोई उधर देखने की जुर्रत भी नहीं करता।"

"यह ऐलान में कहा गया है कि जिसने इस इलाके में जाने की और दूरवेश को देखने की कोशिश की तो वह कोढ़ी हो जाएगा और उसके बच्चे अंधे हो जाएंगे।" हसन अल इद्रिस के एक और साथी ने कहा– "तुमने यह बता कर कि सलीबी वहाँ कुछ रखेंगे हमारा आधा मसला हल कर दिया है। अब हमें क्या करना है? सिर्फ़ यह मालूम करना है कि दूरवेश सलीबियों का कोई ढोंग है या यह मालूम करना है कि उन्होंने वहाँ क्या ज़ख़ीरा किया है?"

"दरवेश को ज़ख़ीरे के साथ तबाह करना है।" हसन अल इद्रिस ने कहा।

"और लोगों को इस वहम से बचाना है जो उन पर तारी कर दिया गया है।" जासूस के कमाण्डर ने कहा– "सलीबियों की अक़्ल की तारीफ़ करो। वह इस जगह एक दूरवेश को बैठाकर अपने ज़ख़ीरे को लोगों की नज़िरहें से दूर रखना चाहते हैं। उसके साथ ही वह मुसिल की फ़ौज और लोगों को और वालिये मुसिल को भी ख़ुदा के इशारे का झांसा देकर जंगी तैय्यारियों से बाज़ रखना चाहते हैं। इस वक़्त हालत यह है कि फ़ौज भी और लोग भी ख़ुदा के उस इशारे के इन्तज़ार में बैठ गये हैं जो दरवेश को मिलेगा।"

"वालिये मुसिल का दरवेश के मुतअल्लिक़ क्या रवैया है?" हसन अल इद्रिस ने पूछा।

"दरवेश उसके महल में छः घोड़ों की बघी पर गया था।" कमाण्डर ने जवाब दिया– "और दूरवेश उस बघी में पहाड़ियों में गया है। इससे साबित होता है कि अज़ाउद्दीन इस

साज़िश में शामिल है या वह इस साज़िश का शिकार है। जो कुछ भी है, हमें मालूम हो जाएगा। रज़ीअ खातुन महल में मौजूद हैं। उससे मालूम हो जाएगा कि महल में दरवेश की हैसियत क्या है।"

उन्होंने उस इलाके और दरवेश की हैसियत मालूम करने पर ग़ौर करना शुरू कर दिया।

❖

संजार के क़िले की दिवारों पर संतरी नीम बेदार थे। वह ज़माना जंग व जदल का था मगर संजार के अमीर शरफुद्दीन बिन कुतुबुद्दीन को कोई ख़तरा महसूस नहीं रहा था। वह सलीबियों का हाशिया बरदार था, इसलिए उनसे उसे कोई ख़तरा नहीं था। वालिये हलब इमामुद्दीन और वालिये मुसिल अज़ाउद्दीन ने उसे कहा था कि उसे जब भी ज़रूरत पड़ी वह दोनों उसकी मदद को पहुंचेंगे। वह इस खुशफ़हमी में मब्तला था कि सुल्तान अय्यूबी को उसकी नीयत का इल्म नहीं। वह शराब और औरत में बदमस्त होकर गहरी नींद सोया हुआ था। सलीबियों ने उसे दो बड़ी हसीन लड़कियाँ तोहफ़े के तौर पर भेजी थीं। यह लड़कियाँ उसे बेदारी के ख़वाबों में मगन रखती थीं।

क़िले की दिवार के उपर से एक शरारा सा गुज़र गया। उसके फ़ौरन बाद एक और फिर एक और.....संतरी पर दहशत तारी हो गयी। यह शरारे क़िले के अन्दर गिरे और भयानक शोले बन गये। क़रीब ही कोई सामान पड़ा था और उसके क़रीब एक मकान था। दोनों को आग लग गयी। यह आतिशगीर सयाल की हांडियाँ थीं जो सुल्तान अय्यूबी की फौज ने मिन्जनिकों से फेंकी थीं। उनके साथ जलते हुए फ़लीते बंधे हुए थे। हांडियां मिट्टी की थीं जो गिरकर टूटीं तो और अन्दर का सयाल फैल गया और जलते फलीतों ने उसे आग लगा दी।

क़िले में क़यामत बपा हो गयी क़िले के उपर रात रौशन हो गयी। हर कोई जाग उठा। अमीर शरफुद्दीन को जगाया गया। उसने खिड़की में से शोले देखे तो वाही तबाही बकता हुआ बाहर आया। किसी वक़्त शरफुद्दीन मर्दे मैदान हुआ करता था मगर सलीबियों ने उसे शराब और लड़कियों से इस हाल तक पहुंचा दिया था कि उस रात उसके क़दम नहीं उठते थे। रातों को रेगज़ारों और संगलाख़ वादियों में बिना थके लड़ने वाला जंगजू चलने के काबिल नहीं रहा था.....फिर क़िले का रात की डूयूटी वाला कमाण्डर उपर से दौड़ा आया और शरफुद्दीन को बताया कि क़िला मुहासिरे में है।

"किस बदबख़्त ने मुहासिरा किया है?" उसने पूछा।

"सुल्तान अय्यूबी ने।" कमानदार ने जवाब दिया—"वह बाहर से ललकार रहे हैं कि क़िले के दरवाज़े खोल दो, वरना हम क़िले को जलाकर भस्म कर देंगे।"

रफुद्दीन का नशा उतर गया। वह सोंच में पड़ गया। बहुत देर बाद बोला—"दरवाज़ा खोल दो। हम ख़ुद बाहर जाएंगे।"

कुछ देर बाद क़िले का दरवाज़ा खुला और ख़ुद शरफुद्दीन बाहर निकला। उसके साथ

मशाल बरदार थे। उधर से सुल्तान अय्यूबी ने अपने एक सालार से कहा कि वह आगे जाकर शरफुद्दीन को उसके पास ले आए। वह ख़ुद ही आ रहा था। उसके इस्तकबाल के लिए सुल्तान अय्यूबी एक कदम आगे न बढ़ा। शरफुद्दीन सुल्तान अय्यूबी के सामने जाकर घोड़े से उतरा और बाज़ू फैलाकर उसकी तरफ दौड़ा लेकिन सुल्तान अय्यूबी ने ऐसा सर्द रवैया इख़्तियार किया कि बद दिली के साथ हाथ मिलाया।

"शरफुद्दीन!" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "अपनी फौज और जंगी सामान के सिवा क़िले में से कुछ ले जाना चाहते हो, सुबह तुलूअ होने से पहले निकाल कर ले जाओ, फिर इधर का रुख़ न करना।" उसने अपने एक सालार से कहा– "कुछ नफरी अपने साथ ले जाओ और नज़र रखो कि क़िले से फ़ौज और जंगी सामान बाहर न जाए। फ़ौज की गिनती करो और उसे अपनी फ़ौज में शामिल करलो।

"मैं आपका गुलाम हूँ सुल्तान!" शरफुद्दीन ने कहा– "क़िला और फ़ौज आपकी होगी। मुझे क़िले में रहने दें।"

"क़िले की ज़रूरत थी तो मुकाबला करते।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "तुम जैसे बुज़्दिलों और ईमानफरोशों को हक हासिल नहीं कि इतने बड़े क़िले का अमीर कहलाएं।"

"मैं और आपका मुकाबला करता?" शरफुद्दीन ने कहा– "मैंने सुना कि आप आयें हैं तो फ़ौरन बाहर आ गया। मुसलमान मुसलमान के ख़िलाफ़ कैसे लड़ सकता है?"

"जैसे पहले लड़ चुका है।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "शरफुद्दीन! तुम सलीबियों के दोस्त हो और नाम के मुसलमान। ज़िरह अपनी हालत देखो। तुम सिपाही से क्या बन गये हो। ईमान बेच कर अय्याशी ख़रीदने वालों की यही हालत होती है। शराब और औरत ने तुममें जुर्रत नहीं रहने दी। तुम झूठ बोलते हो। अगर तुममें ज़िरह सी भी ग़ैरत होती तो अपना क़िला यूं लड़े बेग़ैर और मरे बेग़ैर मेरे हवाले न करते।"

"सुल्ताने आली मुकाम!" शरफुद्दीन ने इल्तिजा की– "मुझे क़िले में रहने दीजिए।"

सुल्तान ने अपने एक सालार से कहा– "इसे क़िले में ले जाओ और कैद में डाल दो। इसकी ख़्वाहिश पूरी कर दो।"

तीन आदमी आगे बढ़े तो शरफुद्दीन ने सुल्तान अय्यूबी के करीब होकर कहा– "मैं मुसिल जाना चाहता हूँ।"

"हाँ। अज़ाउद्दीन तुम्हारा दोस्त है।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "उसके पास चले जाओ।"

संजार पर सुल्तान अय्यूबी ने कब्ज़ा कर लिया और तकीउद्दीन को इसका क़िलादार और अमीर मुकर्रर किया।

इससे आगे आमद एक क़िला था। सुल्तान अय्यूबी ने रात का बाकी हिस्सा संजार क़िले में गुज़ार कर और सुबह को आमद की तरफ़ कूच कर गया। आमद जिसे आज का अमीदा कहा जाता है, दजला के किनारे एक मशहूर कस्बा था और उसका भी अमीर मुसलमान था। यह कस्बा एक क़िला था। सुल्तान अय्यूबी ने उसे मुहासिरे में ले लिया। वहाँ की फौज और

शहरियों ने मुकाबला करने कोशिश की मगर आठवें रोज़ अमीर ने हथियार डाल दिए। सुल्तान अय्यूबी ने वहाँ का जो अमीर और किलादार मुकर्रर किया उसका नाम नुरूद्दीन था जो कारा अरसलान का बेटा था।

❖

रआदी चार सलीबियों के साथ अभी सफ़र में थी। उसकी जिस्मानी हालत ठीक हो गयी थी। सलीबियों ने उसके आराम का बहुत ख्याल रखा था लेकिन उस रात के बाद जब उसने अपनी ज़िन्दगी की कहानी सुनाई थी, उनके साथ कोई बात न की। उसके ज़ेहन में सलीबी के यह अल्फ़ाज़ गूंज रहे थे– "तुम्हें ख़ुदा ने धुतकार दिया है। कोई नेकी करो, ख़ुदा तुम्हें बख़्श देगा।" उसकी जिस्मानी हालत तो ठीक थी लेकिन जज़्बाती हातल बहुत बुरी थी। वह जिसके साथ हज्ज को जा रही थी, उसकी याद उसे तड़पाती रहती थी। उसके साथ उसके तसव्वुरों में हिजाज के क़ाफ़ले सूए मंज़िल चलते रहते थे। वह जब परेशान हो जाती तो यह सोंचने लगती कि ख़ुदा उसे उसके गुनाहों की सज़ा दे रहा है। उसे मालूम नहीं था कि गुनाहों से बख़्शिश किस तरह माँगी जाती है।

रआदी अपने चार मुहाफ़िज़ों के साथ मंज़िल के करीब आ गयी थी। यह अब मुसिल के इलाक़े में दाखिल हो गये थे। एक रोज़ उन्होंने एक शुतर सवार देखा जिस ने उन्हे देखकर ऊंट रोक लिया था। उसने सर और चेहरा स्याह पगड़ी में लपेट रखा था। सिर्फ़ आँखें नज़र आती थीं। उसकी नज़रें रआदी पर जमी हुई थीं। सलीबी सिपाही अपनी फ़ौजी वर्दी में नहीं थे इसलिए कोई कह नहीं सकता था कि यह सलीबी हैं। उन्हें डाकू या मुसाफ़िर कहा जा सकता था।

"उस शुतर सवार की आँखें देखी थीं?" एक सलीबी ने अपने साथियों से पूछा।

"बहुत ग़ौर से देखी थी।" दूसरे सिपाही ने जवाब दिया– "मैं उन नज़िरहें को पहचानता हूँ। अब हमे ज़्यादा होशियार रहना पड़ेगा। यह लड़की इतनी ख़ूबसूरत है कि किसी डाकू की नज़र में आ गयी तो मुश्किल पैदा हो जाएगी। आगे इलाका पहाड़ी है।"

वह दिन भर चलते फिरते रहे। शाम के बाद दो चट्टानों के दर्मियान मौज़ूं जगह देखकर उन्होंने घोड़े रोक लिए और खाने पीने का इहतिमाम करने लगे। खाने के बाद वह बेसुद्ध हो गये। सिर्फ़ एक सिपाही हर रात की तरह जागता रहा। थोड़ी देर बाद उसे कोई आहट सुनाई दी। यह किसी गड़ेरिए वग़ैरह की चलने से ढलान से पत्थर लुढ़का होगा लेकिन सिपाही चौकन्ना हो गया। उसने कान खड़े कर लिए। आहट फिर सुनाई दी। उसने अपने एक साथी को जगाया और उसे कान में बताया कि उसे किसी की आहट सुनाई दे रही है। वह भी उठा। दोनों ने कमानों में तीर डाल लिए और एक एक तरफ़ और दूसरा दूसरी तरफ़ खड़ा हो गया।

रात तारीक थी। कुछ नज़र नहीं आता था। अब कोई आहट सुनाई नहीं देती थी। रात के सकूत में एक के बाद दिगरे दो मर्तबा "पिंग पिंग" की आवाज़ सुनाई दी। पेशतर उसके कि दोनो सिपाही उन आवाज़ों की सिम्त मालूम कर सकते एक–एक तीर दोनों की पसलियों में उतर गया। उनके साथी दिन भरके थके हुए थे गहरी नींद सो रहे थे। उन दोनों ने तीर

खाकर उन्हें आवाज़ें दी वह हड़बड़ा कर उठे। भागते कदमों की आवज़ें सुनाई दीं तो एक मशाल भी जल उठी जो उनके दोनों सिपाहियों की तरफ बढ़ रही थी। फौरन बाद वह सात आठ आदमियों के मुहासिरे में आ गये। उनमें एक ने चेहरा और सर पगड़ी में लपेट रखा था। यह वही मालूम होता था जो दिन के वक़्त ऊंट पर सवार था और उसने रुक कर राअदी को गहरी नज़िरहें से देखा था।

दोनों सिपाही थे। उन्होंने तलवारों से मुकाबला किया लेकिन सात आठ बरछियों ने उनके जिस्म को छलनी कर दिए। और राअदी हम्लावरो के कब्ज़े में आ गयी। वह अलग खड़ी थी। उसके चेहरे पर ख़ौफ़ की हल्की सी भी झलक नहीं थी। मशाल के नाचते हुए शोले में उसका हुस्न ऐसा पुरअसरार लग रहा था जैसे वह इस दुनिया की मख़लूक़ न हो।

राअदी को घोड़े पर सवार कर लिया गया। स्याह पगड़ी वाला भी घोड़े पर सवार हुआ और दोनों घोड़े पहलू ब पहलू चलने लगे। उसने रआदी से पूछा– "अपने मुतअल्लिक कुछ बताओगी?" रआदी ने अपने मुतअल्लिक सब कुछ बता दिया।

❖

राअदी को जहाँ ले जाया गया वह कोई महल या मकान नहीं बल्कि एक चौकोर खेमा था। उसका आधा हिस्सा ज़मीन के उपर और बाकी निस्फ ज़मीन में था। कनातें और उपर शामियाना भूलदार रेशमी कपड़े का था। अन्दर कालीन बिछा हुआ था और चौड़ा पलंग था। फानूस रौशन थे। गुमान नहीं होता था कि यह खेमा है। शराब की सुराही भी रखी थी। वहाँ तीन आदमी मौजूद थे जिन के मुतअल्लिक फौरन पता चल गया कि सलीबी हैं। उन्होंने राअदी को देखा तो वह खामोशी से और हैरत से उसे देखने लगे। स्याह नकाब पोश उसके साथ था। उसने पगड़ी और नकाब उतार फेंका और बोला– "ऐसा तोहफ़ा पहले कभी देखा है?......और यह रकासा है।"

राअदी ख़मोशी से खड़ी रही। फ़ानूस की रौशनी में उसका हुस्न और ज़्यादा तिलिस्माती लगता था। वह यहाँ भी ख़ौफ़ज़दा नहीं थी। उसे पलंग पर बैठाया गया और पूछा गया कि वह कौन है और कहाँ जा रही थी। राअदी ने अपनी ज़िन्दगी की कहानी एक बार फ़िर सुना दी। उसकी कहानी से वहाँ कोई भी मुतास्सिर न हुआ। उन लोगों के पास मुतास्सिर होने वाले जज़्बात की कमी थी। इस सवाल के जवाब में कि वह कहाँ जा रही थी। उसने कहा– "मुझे किसी सलीबी बादशाह के पास ले जाया जा रहा था।"

"तो क्या तुमने चार सलीबियों को कत्ल कर दिया है?" एक आदमी ने गुस्से से उस आदमी से पूछा जो राअदी को लाया था।

"वह सलीबी नहीं लगते थे।" उसने जवाब दिया– "तुमने मुझे कहा कि दो तीन लड़कियाँ ले आओ ताकि इस वीराने मे दिल बहलाने का कोई ज़रिआ हो। मुझे इत्तफ़ाक़ से यह नज़र आ गयी। मैंने उन चारों को मश्कूक मुसलमान समझा। पीछा किया और उन्हें कत्ल करके लड़की ले आया।"

"तुम्हारे साथ कौन–कौन था?"

"सिर्फ दो आदमी थे।" उसने जवाब दिया-- "बाक़ी पाँच मुसिल के मुसलमान थे। जो यहाँ पहरे का काम करते हैं।"

"अगर यह राज़ फ़ाश हो गया कि तुमने अपने हुक्मरान का तोहफ़ा उसके मुहाफ़िज़ों को क़त्ल करके उड़ा लिया है तो उसका नतीजा जानते हो क्या होगा?"

वह ख़ामोश रहा। अचानक एक आदमी ख़ेमे में उतरा और बोला-- "यह राज़ फ़ाश नहीं होगा। तुम डरते हो कि हम जो मुसलमान तुम्हारे साथ हैं, यह राज़ फ़ाश कर देंगे। ऐसा नहीं होगा।"

"यह कौन है?"

"यह मेरा ख़ास आदमी है।" स्याह पगड़ी वाले ने जवाब दिया और मुसिल के किसी बड़े आदमी का नाम लेकर कहा-- "उसने दीया है। क़ाबिले एतमाद और अक्ल मन्द है।"

"मैं आपका ही आदमी हूँ।" उसने कहा-- "मुसिल और इस इलाक़े के जो राज़ आप के पास जाते हैं वह मेरे और मेरे साथियों के हासिल किए होते हैं।"

उससे कुछ और बातें पूछी गयीं जिनके जवाब में उसने ऐसे अन्दाज़ से बातें कीं कि सबने उसे काबिले एतमाद समझ लिया। किसी को ज़िरह भी शुबहा न हुआ यह सलाहुद्दीन अय्यूबी का बड़ा ही ख़तरनाक जासूस है जिसका असल नाम हसन अल इद्रिस है। खुदा ने उसके चेहरे मोहरे और जिस्म की साख़्त में ऐसी जाज़बियत पैदा की थी कि देखने वाला उसे नज़रअन्दाज़ नहीं कर सकता था। उसने अपनी ज़ुबान और लब और लहजे में ऐसा जादू पैदा कर लिया था कि जैसे सुनने वाला मस्हूर हो जाता था। वह अदाकारी और लहजा बदल कर बात करने का माहिर था। मुसिल में सुल्तान अय्यूबी के जासूस थे उनका राब्ता हुकाम के हलक़े तक भी था। उन्होंने मालूम कर लिया था कि इस दूरवेश से वालिये मुसिल अज़ाउद्दीन भी मुतास्सिर है। उसने मुसिल के हर बाशिन्दे की तरह तस्लीम कर लियाथा कि वह दरवेश को आसमान से इशारा मिलेगा और उसके बाद अज़ाउद्दीन अपनी फौज को बाहर निकालेगा फिर यह फ़ौज फ़तह पर फ़तह हासिल करती चली जाएगी।

जासूसों को अज़ाउद्दीन के अक़ीदे के मुतअल्लिक़ उसकी बीवी रज़ीअ ख़ातुन (बेवा नुरूद्दीन जंगी) ने इत्तलाअ दी थी। इस खातुन के मुतअल्लिक़ आप पिछली इक़सात में पढ़ चुके हैं। वह सुल्तान अय्यूबी की अक़ीदतमन्द थी। महल की ख़बरें उसी के ज़रिए बाहर आती थीं। उसने जासूसों को तफ़सील से बताया था कि अज़ाउद्दीन सलीबियों के जाल में बुरी तरह फ़ंस गया है। सलीबियों ने उसपर जादू सा कर दिया है। यह दरवेश अगर सलीबियों का कोई ढोंग नहीं और दरवेश ही है तो यह कोई पागल है। उसका यह कहना कि ख़ुदा उसे फ़तह का इशारा देगा, हमारे इस्लामी अक़ीदे के मनाफ़ी है। इस पैग़ाम के साथ रज़ीअ खातुन ने जासूसों से कहा था कि इस दूरवेश को बेनक़ाब करें औ मुम्किन हो तो क़त्ल कर दें। रज़ीअ खातुन ने इस शक का भी इज़हार किया कि सलीबी उन पहाड़ियों के अन्दर कुछ और कर रहे हैं। मालूम करो कि यह क्या है और उसकी इत्तलाअ सुल्तान अय्यूबी तक पहुंचाओ।

❖

हसन अल इद्रिस दूरवेश की पुरअसरार दुनिया में दखिल हो गया था और उस ने उन सलीबियों में एतमाद हासिल कर लिया था जो पहाड़ियों में रहते थे मगर उसके एक हद से आगे पहाड़ियों में नहीं जाने दिया जाता था जो राज़ था वह इस हद से आगे था। वहाँ पहाड़ियां ऊंची थीं और उनमें घिरी हुई चट्टाने थीं। हसन अल इद्रिस दूरवेश को देखना चाहता था मगर वह उसे नज़र नहीं आता था। वह किसी से पूछता नहीं था ताकि उस पर कोई शक न करे। उसने इस क़दर एतमाद हासिल कर लिया था कि वह उसे राअदी के अग़वा के लिए भी साथ ले गये थे।

रआदी उस नीम ज़मीनदोज़ सायबान में रहने वाले दो तीन सलीबियों के लिए तफ़रीह का सामान बन गयी थी। इनमें जो उन का सरबराह था वह रआदी को तफ़रीह के ज़रिए से कुछ और अहमियत देने लगा था इसलिए वह उस लड़की को हर किसी का खिलौना बनने की इजाज़त नहीं देता था। यह रआदी के हुस्न का असर भी था जो बाज़ारी क़िस्म के नाचने वालियों की निस्बत पाक और मासूम लगता था और यह असर उसकी बातों का भी था जो नाचने वालियों जैसी नहीं थीं। एक रात उस सरबराह ने उससे पूछा– "क्या तुम मेरी ख़ुश्नूदी के लिए नाचती हो और क्या तुम मेरे साथ रातें गुज़ारने में ख़ुशी महसूस करती हो?"

"न आपको ख़ुश होना चाहिए न मैं ख़ुश हूँ।" रआदी ने मतानत से कहा– "मज़बूरी ने मुझे खिलौना बना दिया है। मैं दिल की बात कहने से डरूंगी नहीं। मुझे आप से नफ़रत है। मैं आप के हर हुक्म की तामील शदीद हिक़ारत से करती हूँ।"

"तुम जानती हो कि इस बदज़ुबानी की पादाश में, मैं तुम्हारा सर तन से जुदा कर सकता हूं?" सरबराह ने कहा– "मैं तुम्हारा यह हसीन चेहरा गिद्धों के आगे फेंक सकता हूँ।"

"और यह मेरे लिए बहुत बड़ा ईनाम होगा।" रआदी ने कहा– "मेरे लिए यह बहुत सख़्त सज़ा है कि मेरा सर मेरे तन के साथ है और आप जैसा गिद्ध मेरी रूह को खा रहा है। आप अपने आपको जंगजू और बहादुर समझते हैं। एक बेबस और मजबूर लड़की को क़ैद में रखकर फ़ख़्र महसूस करते हैं। मर्दानगी और तलवार के ज़ोर से आप मुझे अपनी लौंडी बनाना चाहते हैं। मेरे दिल पर इस तरह हुकूमत करें कि आप मुझ से यह न पूछें कि मैं आपकी ख़ुश्नूदी के लिए आपका हुक्म मानती हूं? बल्कि मैं आपसे पूछूं कि मेरे रक़्स और मेरे वजूद से आपको मुसर्रत हासिल होती है या नहीं?"

"अगर मैं तुम्हारे सोने की डलियाँ रख दूँ तो दिल से मुझे अपना आक़ा तस्लीम कर लोगी?"

"नहीं।" रआदी ने जवाब दिया– "मुझे जिस ईनाम की ज़रूरत है, वह तुम्हारे पास नहीं है। वह जिसके पास था वह मर गया है........वह इन्सान था जिसे मेरे जिस्म के साथ कोई दिलचस्पी नहीं थी....और तुम?.....तुम गिद्ध हो, गीदड़ हो, भेड़िए हो।"

"उसने तुम्हें मोहब्बत दी थी।" सरबराह ने कहा– "अगर मैं तुम्हें वही मोहब्बत दे दूं तो?"

"मैं नहीं मेरी रूह मोहब्बत की प्यासी है।" उसने कहा– "सरबराह ने शराब का प्याला

उठाया। मुँह से लगाने लगा तो रआदी ने प्याला पकड़ लिया और उसके हाथ से लेकर रखा नहीं बल्कि परे फेंक दिया। और कहा— "मुझे बातों पर उकसाया है तो मेरी बातें सुन लो। शराब पी लोगे तो तुम्हारी अकल पर और जज़्बात पर पर्दे पड़ जाएंगे। तुमने पूछा है कि तुम मुझे वही मोहब्बत दे दो तो मैं कुबूल कर लूंगी? मुझे पहले अपनी मोहब्बत दिखाओ। यह सच्ची हुई तो मुझे अपने जलते हुए सेहरा में ले चलोगे तो हंसी खुशी चलूंगी। तुम्हारे साथ जल कर मर जाऊंगी।"

सरबराह ने उसे देखा। उसने उस लड़की के जिस्म के रोवें रोवें को देखा था। कई रोज़ से देख रहा था। उसके भूरे—भूरे बिखरे हुए बालों के गुदाज़ से भी लुत्फ़ अन्दोज़ हुआ था। उसने इन रेशमी बालों का सेहर उस वक़्त भी देखा था जब यह बाल उसके उरिया सीने पर और उरियां पीठ पर बिखरे हुए थे। वह लड़की के जिस्म से इतना ही वाकिफ़ हो गया था जितना अपने जिस्म से वाकिफ़ था मगर लड़की ने नफ़रत और हिकारत का इज़हार ऐसी बेख़ुदी से कर दिया और उसके हाथ से प्याली छीन कर परे फेंक दिया तो उस शख़्स की मर्दानगी जवाब दे गयी। उसने अपने आप में ऐसी बेबसी महसूस की जैसे यह लड़की पर उस पर तिलिस्म बन कर ग़ालिब आ गयी हो। ....मर्दों का मुकाबला कर सकता है, दरिन्दों से भी लड़ा जा सकता है मगर एक औरत जिसे वह पसन्द करता है .... तो वह रेत की ढेर बन जाता है। यही जज़्बाती हालत उस शख़्स की हुई जिसने जवानी मैदाने जंग में गुज़ारी और मुसलसल मौत से खेल रहा था।

"मैं तुम्हें अपने किसी साथी के साथ खिलौना नहीं बनने दूंगा।"

"मैं हुक्म की पाबन्द हूँ।" रआदी ने कहा—"मैं ख़ुदकुशी नहीं करूंगी। यह बुज़्दिली है। मैं भागने की भी कोशिश नहीं करूंगी। यह धोखा है। मैं ख़ुदकुशी कर चुकी हूँ। अपना मन मार दिया है।"

वह आहिस्ता—आहिस्ता उठा और इस तरह कदम फूंक कर रआदी की तरफ़ बढ़ा जैसे उस लड़की ने उसे हिप्नोटाईज़ कर लिया हो। उसने आहिस्ता—आहिस्ता अपना हाथ उठाया और रआदी के बालों पर हाथ फेर कर बोला— "तुम मेरे तसव्वुरों से भी ज़्यादा ख़ूबसूरत हो।" उसने हाथ पीछे कर लिया और बोला— "मैंने आज पहली बार महसूस किया है कि तुम्हारी आवाज़ में सोज़ है। तुम रकासा हो। मुग़न्निया तोनहीं?"

"मैं गाती भी हूँ।" रआदी ने कहा— "लेकिन नग़मा वह सुनाऊंगी जो मुझे पसन्द होगा, जिसमें मेरा दर्द होगा।"

वह गुनगुनाने लगी— "चले काफ़ले हिजाज़ के।"

सायेबान के अन्दर माहौल पर वजद तारी हो गया। अवाज़ रआदी के दिल से निकल रही थी। इस नग़मे में उसकी मोहब्बत के बैन थे दिल की आहें थीं। आरज़ूओं का सोज़ था और उसके उन ख़्वाबों की हसरत थी जो हिजाज़ के रास्ते में शहीद हो गये थे। रआदी की आँखों में आँसू तैरने लगे, उसकी आवाज़ पुरअसरार हो गयी— "और अजीबत बात यह हुई कि सलीबी सरबराह को ऐसी गुनूदगी होने लगी कि जो उसे पहले कभी नहीं आई थी। उसे हर

रात शराब मदहोश करती और वह उसी मदहोशी में सो जाया करता था।

वह गहरी नींद सो गया तो रआदी की नज़र उस शख़्स पर पड़ी जो पलंग के क़रीब तिपाई पर पड़ा था। रआदी ने आहिस्ता से ख़ंजर न्याम से निकाला। उसकी नोक पर उंगली रखी और ख़ंजर मजबूती से पकड़कर सोये हुए सलीबी के क़रीब गयी। उसने ख़ंजर की नोक उसकी शहे रग के क़रीब की, फिर दिल के क़रीब ले गयी। हाथ उपर उठाया तो उसे अवाज़ सुनाई दी– "शी।" उसने उधर देखा। सायबान का पर्दा उठाये वही खुबरू आदमी खड़ा था जिसने कहा था कि वह सलीबियों का जासूस है। वह हसन अल इद्रिस था।

❖

हसन अल इद्रिस ने रआदी को इशारे से अपनी तरफ़ बुलाया। रआदी ने ख़ंजर न्याम में डाला और पर्दे तक गयी– "हसन अल इद्रिस ने उसे बाज़ू से पकड़ा और बाहर ले गया, बोला–"आज रात यह अकेला है। दूसरे बहुत दिनो के लिए चले गये हैं। यह शख़्स मेरी ज़िम्मेदारी और हिफ़ाज़त में है लेकिन मैं सोये हुए को क़त्ल नहीं करूंगा। उसे जो क़त्ल करने आयेगा मेरे हाथों मारा जायेगा....तुम तो उसे कह रही थी कि मैं ख़ुदकुशी नहीं करूंगी कि यह बुज़िदली है और मैं भागूंगी नहीं कि यह धोखा है, मगर तुम सोये हुए को क़त्ल करने लगी थीं। यह धोखा नहीं?"

"तुम उसे बता दोगे कि मैंने उसकी शहेरग और दिल पर ख़ंजर रखा था?" उसने पूछा और आह लेकर बोली– "बता देना। वह मुझे क़त्ल कर देगा। इससे मेरा भला हो जाएगा, और वह तुम्हें ईनाम देगा। उससे तुम्हारा भला हो जाएगा।"

"मुझे इस शख़्स से उतनी ही नफ़रत है जितनी तुम्हारे दिल में है।" हसन अल इद्रिस ने कहा– "मैं इसे कुछ नहीं बताऊंगा।"

"और मुझसे ईनाम माँगोगे?" रआदी ने पूछा– "बल्कि मुझे ईनाम के तौर पर माँगोगे?"

"नहीं।" हसन अल इद्रिस ने कहा– "मुझे किसी ईनाम की ज़रूरत नहीं।" वह लड़की को ज़िरह परे ले गया और अपनाइयत के लहजे में बोला– "मैं भी तुम्हारी तरह हिजाज़ का मुसाफ़िर हूँ। हमने जिस रात तुम्हें उन आदमियों से छीना था उस रात तुमने अपनी ज़िन्दगी की कहानी सुनाई थी। तुमने अपनी जज़्बात और ख़्वाहिश का भी इज़हार किया था। मैं उस रात से सोंच रहा हूँ कि तुम्हें कौन सी नेकी बताऊं जिससे तुम खुदा की ख़ुश्नूदी हासिल कर सकती हो।" हसन अल इद्रिस की ज़ुबान की सेहर ने रआदी को मस्हूर कर लिया। वह बोलता रहा। वह सुनती रही। सुल्तान अय्यूबी के उस जासूस ने उस हसीन लड़की के दिल पर क़ब्ज़ा कर लिया.......रआदी वहाँ से उठने पर आमादा नहीं थी। हसन अल इद्रिस ने उसे जाने पर मजबूर किया तो वह चली गयी।

वह तीन चार रातें मिले। हसन अल इद्रिस ने रआदी को अपनी जज़्बाती बातों और नेक नीयती के जादू में गिरफ़्तार कर लिया था। रआदी उससे हिजाज़ की बातें पूछती थी और वह जज़्बाती अन्दाज़ में उसे हिजाज़ की दिलकश बातें सुनाता था। दिन के वक़्त हसन अल इद्रिस इस कोशिश में लगा रहता था कि मालूम कर सके कि जहाँ उसे नहीं जाने दिया जाता

वहाँ क्या है मगर वह कुछ भी न मालूम कर सका। एक रात उसने लड़की को एतमाद में ले लिया और कहा कि इन लोगों ने इन पहाड़ियों में क्या छिपा रखा है। रआदी ने फ़ौरन जवाब दिया– "जंगी सामान है। उस (सरबराह) ने मुझे बताया था। कहता था कि इसमें आग लगाने वाला तेल इतना ज़्यादा है कि मुसलमानो के सारे शहरों को जला कर भी ख़त्म न हो....बेशक मैं इस शख़्स की लौंडी बल्कि दाश्ता हूँ लेकिन यह मेरे आगे ग़ुलामों जैसी हरकते करता है।"

"क्या तुम उससे ख़ुश हो कि तुम इतने ऊंचे रुत्बे वाले सलीबी की दाश्ता हो और यह तुम्हारा ग़ुलाम है?"

"नहीं!" रआदी ने उदास लहजे में जवाब दिया– "मैं अपने जिस्म कीजात कर रही हूँ। मेरी रूह कभी ख़ुश नहीं होगी। मुझे जो हिजाज़ के रास्ते से अग़्वा करके लाये थे वह कहते थे कि ख़ुदा तुम से नाराज़ है। कोई ऐसी नेकी करो कि ख़ुदा तुम्हारे गुनाह बख़्श दे, और वह जो मुझे हिजाज़ ले जा रहा था और जिसे मैंने चाहा था, वह कहता था कि हज करके हम पाक हो जाएंगे, फ़िर वहीं शादी करेंगे। मैं तो गुनाहों में डूबती चली जा रही हूं। मैं क्या नेकी करूंगी। ख़ुदा मुझे सज़ा देता चला जाएगा।"

"ज़मज़म का पानी ही नहीं, आग भी तुम्हें पाक कर सकता है।" हसन अल इद्रिस ने हंस कर कहा–"तुम हिजाज़ न पहुंच सकी। पासबाने हिजाज़ को ख़ुश कर दो तो ख़ुदा तुम्हारी रूह को गुनाहों से पाक कर देगा, तुम निजात पा लोगी।"

"कौन है पासबाने हिजाज़?" रआदी ने हैरान होकर पूछा– "और यह कौन सी आग है जो मुझे पाक कर सकती है?"

"पासबाने हिजाज़ सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी है।" हसन अल इद्रिस ने कहा– "और आग यह है जो इन पहाड़ियों में कनस्तरों और मटकों में तेल की सूरत में भरी पड़ी है। उससे हिजाज़ तक को आग लगाई जायेगी। तुम किसी तरह मुझे वहां तक पहुंचा दो जहां आग और जंग का सामान भरा पड़ा है।"

रआदी कुछ न समझ सकी। हसन अल इद्रिस ने उसे बड़ी लम्बी कहानी सुनाई। सुल्तान अय्यूबी का अज़्म और उसका किरदार बताया। सलीबियों के अज़ाइम बताए और उसे ऐसी बातें सुनायीं कि उसके दिल में सलीबियों के लिए नफ़रत पैदा हो गयी औरउसे हक़ और बातिल का तज़ाद मालूम हो गया।

❖

दूसरे दिन हसन अल इद्रिस ने देखा कि रआदी घोड़े पर सवार सलीबी सरबराह के हमराह पहाड़ियों के उस हिस्से की तरफ़ जा रही थी जिधर हसन अल इद्रिस को और सलीबी पहरेदारों को भी जाने की इजाज़त नहीं थी......रात को सरबराह रआदी से दिल बहला कर गहरी नींद सो गया। यह नींद बहुत ही गहरी थी क्यों रआदी हसन अल इद्रिस का दिया हुआ चुटकी भर सफ़ूफ़ उसके शराब के प्याले में डाल दिया था। जासूस बेहोश करने वाला सफ़ूफ़ अपने साथ रखा करते थे। रआदी उस जगह पहुँच गयी जहाँ हसन अल इद्रिस उसके इन्तज़ार में खड़ा था।

"वहां तो बहुत बड़ा ग़ार है।" रआदी ने उसे बताया–"इन लोगों ने खोद–खोद कर उसे और ज़्यादा वसीअ बना लिया है। इतना चौड़ा और लम्बा कि दहाने से दूसरा सिरा नज़र नहीं आता। अन्दर आग लगाने वाले तेल के हज़ारहा मटके और कनस्तर रखे हैं। साथ ही बरछियाँ, तीर व कमान, अनाज, ख़ेमे, कपड़े और बेअन्दाज़ा सामान पड़ा है....मैंने इस सलीबी सरदार से बच्चों की तरह कहा कि मैं इन पहाड़ियों के अन्दर की सैर करना चाहती हूँ। उसने कहा कि कल दिन को ले चलूंगा। तुम तो मेरी मलिका हो। किसी को बताना मत कि मैं तुम्हें उधर ले गया था। वह मुझे ले गया।" रआदी ने उसे बताया कि उस ग़ार में सामने दो आदमी पहरे पर खड़े रहते हैं और ग़ार का दहाना खुला रहता है। ग़ार से डेढ़ सौ गज़ दूर पहरेदार दस्ते के ख़ेमे हैं। रआदी ने कहा– "ग़ार से ज़िरह परे एक ख़ेमा है जिसके बाहर एक ज़ईफ़ आदमी बैठा ऊंघ रहा था। सरबराह ने उसे पांव की ठोकर से बेदार करके कहा– "आए दूरवेश! कोई तकलीफ़ तो नहीं? खाना ठीक मिलता है?' बूढ़े ने ज़ईफ़ आवाज़ में पूछा– "जनाब, मुझे कब रिहा करोगे? मुझे अब जाने दो।" सरबराह ने नफ़रत से कहा–"अभी इन्तज़ार करो। बहुत ईनाम मिलेगा।" यह शायद वही दूरवेश है जिसका तुमने ज़िक्र किया था।"

"हाँ!" हसन अल इद्रिस ने कहा– "यह सलीबियों का वही ढोंग है जिसने मुसिल के बाशिन्दों और उनके वालिये अज़ाउद्दीन को भी दिवाना बना रखा है....आओ रआदी! हम दोनों मिलकर ख़ुदा से तुम्हारे गुनाहों की बख़्शिश हासिल करेंगे।"

दोनों चल पड़े मगर छुप कर। रात का अंधेरा फ़ायदा दे रहा था। वह चट्टानों की तंग गलियों से गुज़रते, रूकते, इधर उधर देखते, कान खड़े किये हुए उस जगह पहुंच गये जहाँ दो पहरेदार खड़े थे। उनके क़रीब एक मशाल जल रही थी। जिसका डंडा ज़मीन में गड़ाह हुआ था। हसन अल इद्रिस और रआदी उनसे पन्द्रह बीस क़दम दूर छुपे रहे। दोनों अपनी–अपनी जान की बाज़ी लगाने आये थे। ख़ुदा देख रहा था। हसन अल इद्रिस खाँसा और रआदी को एक तरफ़ कर दिया और ख़ुद बैठ गया। एक संतरी "कौन है?" पुकार कर उधर आया। अंधेरे में उसे कुछ नज़र नहीं आया। हसन अल इद्रिस ने पीछे से उसकी गर्दन बाज़ू के घेरे में जकड़ ली और दूसरे हाथ से ख़ंजर के तीन चार वार उसके दिल के मक़ाम पर किए। संतरी गिर पड़ा।

हसन अल इद्रिस इन्तज़ार करता रहा। दूसरे संतरी ने अपने साथी को पुकारा। उसे जवाब न मिला तो वह आहिस्ता–आहिस्ता इधर आया। वह जब अपने मरे हुए साथी के क़रीब पहुंचा तो अंधेरे में उसे कोई ज़मीन पर पड़ा नज़र आया। उसने झुक कर देखा और वह हसन अल इद्रिस के शिकन्जे में आ गया। रआदी ने इन्तज़ार न किया। वह ग़ार की तरफ़ दौड़ी और ज़मीन से मशाल उखाड़ कर ग़ार के अन्दर चली गयी। हसन अल इद्रिस ने दूसरे संतरी को भी ख़त्म कर दिया। पहरेदारों का दस्ता ख़ेमों में सोया हुआ था। हसन अल इद्रिस ने रआदी को पुकारा मगर वह वहाँ नहीं थी। वह ग़ार की तरफ़ दौड़ा। वहाँ मशाल भी नहीं थी।

इतने में ग़ार में एक शोला उठा। रआदी दौड़ती बाहर आई। उसके कपड़ों को आग लगी हुई थी। उसने ग़ार के अन्दर आतिशगीर सयाल का एक मटका औंधा कर मशाल से उसे

आग लगा दी। उसे मालूम न था कि यह सयाल किस तरह भड़क कर जल उठता है। शोले ने फैल कर रआदी को भी जद में ले लिया। जब हसन अल इद्रिस ने उसे पकड़ा उस वक़्त उसका इतना हसीन चेहरा स्याह हो चुका था और उसके रेशम जैसे बाल जल चुके थे। हसन अल इद्रिस ने उसके कपड़ों की आग बुझाते अपने हाथ जला लिए। कपड़ों की आग तो बुझ गयी मगर रआदी पर ग़शी तारी हो रही थी। उसकी आँख झुलस कर बन्द हो गयी थीं।

हसन अल इद्रिस ने उसे कंधे पर उठाया और दौड़ पड़ा। मम्नूआ इलाके से निकल कर उसे अगले इलाके से पूरी वाकफ़ियत थी। ग़ार में रूकी हुई आग ने बन्द कनस्तरों और मटकों को इतनी हरारत दे दी कि एक मुहिब धमाका हुआ जिससे ज़मीन जलजले की तरह कांपी। हज़ारो मन बन्द आतिशगीर सयाल एक ही बार फट गया था। उसने जहाँ तबाही का सारा सामान तबाह किया, वहाँ सलीबिसों का छुपाया हुआ तमाम तर अस्लेहा और दिगर सामान भी भस्म हो गया।

धमाके ने मुसिल शहर को जगा दिया। लोगों पर दहशत तारी हो गयी। हसन अल इद्रिस शहर में दाख़िल नहीं हो सकता था क्यों शहर के दरवाज़े बन्द थे। वह शहर की बजाए नसीबा की तरफ़ चल पड़ा। वह ख़तरे से निकल गया था। उसने रआदी को कंधे पर डाल रखा था। बहुत दूर जाकर वह थक गया। रूका और रआदी को ज़मीन पर लिटा दिया। रआदी ने सरगोशी की– "आग ने हमें पाक कर दिया है।" वह हंसी और ख़्वाब में बड़बड़ाने के लहजे में बोली– "काफ़ला हिजाज़ को जा रहा है। वहाँ जाकर शादी करेंगे।"

"रआदी–रआदी।" हसन अल इद्रिस ने उसे बुलाया।

"ख़ुदा ने मेरे गुनाह बख़्श दिए हैं ना?" रआदी ने पूछा। वह उठ बैठी और बाज़ू आगे कर के बोली–"वह जा रहे हैं। देखो। वह काफ़ले हिजाज़ को जा रहे हैं। मैं जा रही हूं।"

वह एक तरफ़ गिरी। हसन अल इद्रिस ने उसे बुलाया, हिलाया, आख़िर नब्ज़ पर हाथ रखा– रआदी की रूह हिजाज़ के काफ़ले के साथ जा चुकी थी।

हसन अल इद्रिस ने ख़जर से क़ब्र खोदी। सुबह तक वह दो ढाई फिट गहरा और रआदी के क़द जितना लम्बा गद्‌ढा खोद सका। उसने रआदी को उसमें लिटाया और उपर से मिट्टी डाल दी।

जब कुछ रोज़ बाद सुल्तान अय्यूबी को सलीबियों के ज़ख़ीरे की तबाही की इत्तलाअ मिली उस वक़्त वह एक मशहूर मुकाम तिल खालिद की तरफ़ पेशक़दमी कर रहा था। तिल खालिद एक बड़ी रियासत थी जिसका हुक्मरान सौकमान अलकुत्बी शाह अरमन था। वह उस वक़्त हरज़म के मुक़ाम पर था जहाँ उसे वालिये मुसिल अज़ाउद्‌दीन ने मुलाक़ात के लिए बुलाया था। मुलाकात का मकसद यह था कि शाह अरमन सुल्तान अय्यूबी के खिलाफ़ लड़ने के लिए अज़ाउद्‌दीन को फ़ौज और दिगर जंगी मदद दे। सुल्तान अय्यूबी को इस मुलाक़ात का इल्म क़ब्ल अज़ वक़्त हो गया था। उसने शाह अरमन के दारूलहुकूमत तिल खालिद को मुहासिरे में लेने के लिए पेशक़दमी कर दी। ❖❖

दूसरा दरवेश

सलीबियों के लिए यह चोट मामूली नहीं थी कि उन्होंने मुसलमानों के इलाके मुसिल के करीब पहाड़ियों के ग़ारों को वसीअ करके इतना ज़्यादा अस्लेहा और आतिशगीर सयाल छुपा रखा था जिससे वह सल्तनते इस्लामिया की तमाम तर किला बन्दियों को खंडरों मे बदल सकते थे, मगर करीब के तबाहकार जासूस ने उसे उड़ा दिया था। यह सामान चूंकि पहाड़ी के अन्दर वसीअ ग़ार में था। उसके धमाके ने दूर–दूर तक ज़मीन यूं हिला दी थी कि जैसे ज़लज़ला आया हो। यह तो किसी को भी मालूम नहीं था कि यह तबाही किस तरह की गयी है जिसे सिर्फ सलीबियों की ही नहीं बल्कि सलीबियों के सब से बड़े इत्तेहादी अज़ाउद्दीन की कमर टूटी गयी थी। उन्होंने सुल्तान अय्यूबी के खिलाफ़ जो दरबपरदा मुआहिदा कर रखा था उस मुआहिदे के परखच्चे उड़ गये थे। सलीबियों को यकीन था कि यह सुल्तान अय्यूबी के जासूसों का काम है। उन्होंने सोंचा ही नहीं था कि यह इत्तेफ़ाकिया हादसा भी हो सकता है।

पिछली किस्त में तफ़सील से बयान किया जा चुका है कि सलीबी मुसिल के वालिये मुसिल अज़ाउद्दीन को अपना इत्तेहादी बना कर मुसिल के पहाड़ी इलाके को अपना फ़ौजी अड्डा और अस्लेहा बारूद और दिगर रस्द का बहुत बड़ा ज़खीरा बनाना चाहते थे मगर रआदी नामी सिर्फ़ एक लड़की ने अपने साथी हसन अल इद्रिस के तआवुन से उनका ज़ख़ीरा तबाह कर दिया। इस इलाके से लोगों को दूर रखने के लिए एक दूरवेश की नुमाईश करके उसकी ज़ुबानी यह मशहूर करा दिया गया था कि यह दूरवेश इस इलाके की एक पहाड़ी पर बैठेगा और उसे ख़ुदा मुसिल की फतह का इशारा देगा फिर मुसिल यानी अज़ाउद्दीन की सल्तनत दूर–दूर तक फैल जाएगी। इस दूरवेश का यह अन्ज़ाम हुआ कि अस्लेहा और आतिशगीर सयाल की तबाही के साथ ही तबाह हो गया।

दूसरे दिन मुसिल के लोगों पर दहशत तारी थी। उन्हें बताने वाला कोई न था कि रात यह धमाका और ज़मीन का लरज़ा कैसा था और पहाड़ियों में से यह जो स्याह बादल उठ–उठ कर आसमान को जा रहे हैं यह कैसे हैं। आतिशगीर सयाल कई रोज़ जलता रहा था। उसके साथ वसीअ ग़ार में अन्दर जो सामान रखा था वह भी जल रहा था। डर के मारे कोई उधर जाता नहीं था। सब उसे दूरवेश की करामात या कहर समझ रहे थे। ऐसी दहशतज़दगी की अज़ीयतनाक कैफ़ियत में उन्हें एक सदा सुनाई दी– "वह जहन्नम की आग में जल गया है। वह अपने जहन्नम में जल गया है।"

यह एक और दूरवेश था जो सब्ज़ कबा में मलबूस था सर के बाल लम्बे और सफ़ेद थे,

दाढ़ी भी लम्बी और सफ़ेद थी। उसके चेहरे पर बुढ़ापे की झुरियां थीं। एक हाथ में लम्बा असा और दूसरे में कुर्आन था। यह उसी दूरवेश की मानिन्द था जो उसी की तरह अचानक नमूदार हुआ और उसने ऐलान किया था कि उसे ख़ुदा आसमान से एक इशारा देगा। यह नया दूरवेश भी अचानक नमूदार हुआ और जब वह बाज़ार में आया तो ख़ौफ़ से कांपते हुए लोगों ने उसे रोककर घेर लिया। उसकी आँखें नीम दवां थीं। उसने रुक कर कहा– "वह जहन्नम में जल गया है जो कहता था ख़ुदा इशारा देगा। उसके अन्जाम से इबरत हासिल न करने वालो! तुम सब उसी जहन्नम में, इसी दुनिया में जलोगे। ख़ुदा तुम्हें रात को बिजली की कड़क की आवाज़ से इशारा दे दिया है। वह स्याह धुआ देखो। अल्लाह के क़हर से डरो। इस किताब को मानो जो मेरे हाथ में है यह अल्लाह का कलाम है। यह कुर्आनपाक है।"

"ख़ुदा के लिए हमें कुछ बता।" एक बूढ़े ने आगे होकर पूछा–"यह सब कुछ क्या था? वह कौन था? तुम कौन हो? हमें बता कि रात ज़मीन क्यों लरज़ी थी और यह स्याह धुंआ कैसा है?"

"वह मनज़ूब था।" नये दूरवेश ने कहा– "पागल था। उसने अल्लाह के राज़ों की दुनिया में दख़ल दिया। अल्लाह के सिवा कोई और फ़तह या किसी ख़ुशख़बरी का इशारा नहीं दे सकता। फ़तह और शिकस्त, ख़ुशी और ग़म अल्लाह के हाथ में है। उसने अपने आप को अल्लाह का एल्ची कहा और गुनहगार हुआ। उसने सज़ा पा ली। जाकर देखो। उसकी एक हड्डी भी नज़र नहीं आयेगी। वह जिस पहाड़ी पर बैठा था उस पहाड़ी को भी सज़ा मिली है। वह स्याह धुंआ देखो। पहाड़ अभी तक जल रहा है। उस झूठे दूरवेश को अब भी सच्चा मानोगे तो तुम भी जलोगे।"

"हमें बता सच्चा कौन है?" लोगों ने पूछा– 'क्या तू सच्चा है?"

"नहीं" उसने जवाब दिया और कुर्आन बुलन्द करके कहा– "अल्लाह का यह कलाम सच्चा है। उस दूरवेश को भूल जाओ। इस किताब की बात मानो। जो इशारे अल्लाह ने इसमें दिए हैं वह कोई इन्सान नहीं दे सकता।"

वह आगे चल पड़ा।

❖

वह दिन भर मुसिल में यही सदा लगाता रहा– "वह जहन्नम की आग में जल गया है। वह अपनी आग में जल गया है।"

जहाँ उसे लोग रोक लेते वह उस मौज़ूअ पर वाअज़ देता कि ग़ैब का हाल कोई इन्सान नहीं जानता और ख़ुदा का इशारा यह हैं जो कुर्आन में हैं। उसने ज़ोहर की नमाज़ एक मस्जिद में पढ़ी, अस्र की किसी दूसरी मस्जिद में और मग़रिब की एक और मस्जिद में पढ़ी। वह जिस मस्जिद में गया वहाँ नमाज़ियों के हुजूम जमा हो गये। उसने हर मस्जिद में यही वाअज़ दिया कि बरहक़ सिर्फ़ कुर्आन है और ऐ लोगों! कुर्आन के इशारों पर अमल करो।'

वह मग़रिब की नमाज़ पढ़ कर निकला तो रात गहरी हो रही थी। वह एक वीराने की तरफ़ चल पड़ा। लोग भी उसके पीछे चल पड़े। उसने सब को रोक कर कहा– "अब मेरे पीछे कोई

न आये। मैं सारी रात वीराने में इबादत करूंगा और तुम्हारे गुनाहों की बख़्शिश मागूंगा।"

उसने लोगों पर ऐसा तास्सुर पैदा कर दिया था कि उनके दिलों से पहले दूरवेश की वहशत निकल गयी थी। उसने लोगों से वहीं रूकने को कहा तो वह रूक गये। उसने कुछ दुआइया अल्फ़ाज़ कहे और अंधेरे में ग़ायब हो गया। लोग वहीं खड़े बातचीत करते रहे। किसी में उसके पीछे जाने की जुर्रत नज़र नहीं आती थी मगर एक आदमी ऐसा था जो अंधेरे से फ़ायदा उठाते हुए, लोगो की नज़रें बचा कर दूरवेश के पीछे जा रहा था। दूरवेश लोगों की नज़िरहें से ओझल होकर तेज चलने लगा था। उसके पीछे जाने वाले आदमी ने भी क़दम तेज़ कर लिए। उसके क़दमों की आवज़ पर दूरवेश रूका और पीछे देखा। वह आदमी जिसे अंधेरे मे दूरवेश साये की तरह नज़र आ रहा था फ़ौरन रूका और बैठ गया। दूरवेश को कुछ भी नज़र न आया तो वह चल पड़ा लेकिन वह बार–बार घूम कर देखता था।

कुछ और आगे गये तो यह आदमी दूरवेश के क़रीब पहुंच गया। दूरवेश ने बुलन्द अवाज़ से कुछ पढ़ना शुरू कर दिया। यह किसी आयत का विर्द था। उसने क़दम सुस्त कर लिए। पीछे वाले आदमी ने अपने कमर बन्द से ख़जर निकाला और दबे पांव वह फ़ासला त: किया जो उसके और दूरवेश के दर्मियान रह गया था। उसने ख़ज़र वाला हाथ उपर किया। वह पीछे से दूरवेश पर वार करके उसे ख़त्म करने को था। ख़जर अभी ऊपर ही था कि दूरवेश बिजली की तेज़ी से घूमाँ उसने अपना मोटा असा उपर को घूमाया। असा उस आदमी की ख़ज़र वाली कलाई पर लगा। उसके साथ ही उसने उस आदमी के पेट में ऐसी लात जमाई कि वह आदमी दुहरा हो गया। दूरवेश के एक हाथ में कुर्आन था इसलिए वह एक हाथ से लड़ सकता था। उसने असा उस आदमी के सर पर मारा। उसका ख़जर उसके हाथ से छुट गया।

दूरवेश ने ख़ज़र उठा लिया। वह आदमी आहिस्ता–आहिस्ता उठ रहा था। दूरवेश ने उससे कहा– "ख़जर मेरे हाथ में है पेट के बल लेटे रहो।"

वह आदमी पेट के बल लेट गया। दरवेश ने मूँह से किसी जानवर की आवाज़ निकाली। ऐसी ही अवाज़ दूर से भी सुनाई दी। इसने फिर अवाज़ निकाली। अंधेरे में दौड़ते क़दमों की आहट सुनाई दी। दो आदमी दूरवेश के क़रीब आ रूके। दूरवेश ने हंस कर कहा– "इस बदबख़्त ने वही हरकत की है जिसका हमे पहले ही खतरा था। मुझे तो उम्मीद थी कि दिन के वक़्त मुसिल के किसी दरीचे से तीर आयेगा और मेरे दिल में उतर जाएगा लेकिन उन्होंने मुझे रात को इससे क़त्ल कराने की कोशिश की है। यह लो इसका ख़जर।" दूरवेश ने ज़मीन पर लेटे हुए आदमी को असा की हल्की सी ज़रब लगा कर कहा– "उठो मरदूद! तू मुसलमान है?

"हाँ मेरे बुज़ुर्ग!" उस शख़्स ने अदब से कहा– "मैं मुसलमान हूँ।"

दूरवेश और उसके साथियों ने क़हक़हा लगाया। दूरवेश ने उसे कहा– "मुझे बुज़ुर्ग न कहो दोस्त! मैं तुमसे ज़्यादा जवान हूँ।"

"तुम्हारा बहरूप कामयाब रहा है।" दूरवेश को उसके एक साथी ने कहा।

उस आदमी को तीनों अपने साथ एक ख़ेमें में ले गये जिसके क़रीब चार पांच ऊंट बंधे

थे। इर्द गिर्द चट्टाने थीं। उस आदमी को ख़ेमें में बैठाया गया। एक दीया जल रहा था उसने देखा कि दूरवेश का चेहरा झुर्रियों भरा था जैसे वह अस्सी साल का बूढ़ा हो लेकिन अब उसकी आवाज़ जवानों जैसी थी। दूरवेश ने सफ़ेद दाढ़ी और सर के लम्बे बाल उतार दिए उसके एक साथी ने उसे पानी में भींगा हुआ कपड़ा दिया जो दूरवेश ने अपने मुंह पर रगड़ा। बूढ़ापे की झुर्रियां गायब हो गयीं। इनमें से जो चेहरा बरामद हुआ वह एक जवान आदमी का चेहरा था जिस पर सलीके से तराशी हुई छोटी–छोटी दाढ़ी थी।

"तुम असल में कौन हो?" हम्ला करने वाले ने उससे पूछा।

"जिसे तुम क़त्ल करने आये थे।" उसने कहा– "अब बता दो कि किसने तुम्हें मेरे क़त्ल के लिए भेजा था। कुछ छुपाने की कोशिश करोगे तो बहुत बुरी मौत मरोगे।"

"मेरे पास छुपाने के लिए कुछ भी नहीं।" उस आदमी ने जवाब दिया– "मुझे महल के एक हाकिम अहमद बिन उमरू ने कहा था कि शहर में एक दूरवेश फिर रहा है। उसने मुझे तुम्हारा हुलियाऔर तुम्हारीआवाज़ बताई थीं और कहा था कि इस दूरवेश को अंधेरे में क़त्ल करना है। किसी को पता न चले। अहमद बिन उमरू ने कहा था कि दूरवेश को क़त्ल करके आओगे तो दो सौ दिनार मिलेंगे।"

"क्या अहमद बिन उमरू मुझे बूढ़ा दूरवेश समझ रहा था?"

"उसने बताया नहीं।" उस आदमी ने जवाब दिया– "उसने यही कहा था कि दूरवेश को क़त्ल करना है।"

दरवेश का बहरूप धारने वाले और उसके दोनों साथी सुल्तान अय्यूबी के ज़मीनदोज़ गिरोह के आदमी थे जो मुसिल में काम कर रहे थे। पिछली कहानी में जिस दूरवेश का ज़िक्र आया है उसके असरात को ज़ाइल करने के लिए सुल्तान अय्यूबी के गिरोह के इन आदमियों ने एक आदमी को दूरवेश बनाया और उसे शहर में घूमाया था। लोग तोहम परस्त थे। दूरवेश को ख़ुदा की आवाज़ समझते थे। पहले दूरवेश को सलीबियों ने अपने एक फ़रेब की कामयाबी के लिए इस्तेमाल किया था। सुल्तान अय्यूबी के आदमियों ने अपने एक जवान साथी को दूरवेश के बहरूप में पेश करके लोगों को तौहम परस्ती से हटा कर कुर्आन की तरफ़ माइल करने की कामयाब की कोशिश की थी।

अहमद बिन उमरू जो मुसिल में बिन उमरू के नाम से मशहूर था, वालियेमुसिल अज़ाउद्दीन की इन्तज़ामिया का एक आला हाकिम था जिसकी हैसियत वज़ीर जितनी थी। उसे इत्तलाअ मिली कि एक दूरवेश शहर में पहले दूरवेश के खिलाफ़ सदाएं लगाता फ़िर रहा है तोवह समझ गया कि यह सुल्तान अय्यूबी के हामी गिरोह का आदमी है, लिहाज़ा उसे क़त्ल करना ज़रूरी है वरना लोगों को पहले दूरवेश की असलियत का इल्म हो जाएगा और उन्हें यह भी पता चल जाएगा कि पहाड़ों मे क्या जल रहा है। सुल्तान अय्यूबी के इस जासूस को क़त्ल करने के लिए महल के हिफ़ाज़ती दस्ते का एक सिपाही मुन्तख़ब किया गया और उसे दो सौ दीनार का लालच दे कर 'दूरवेश' के क़त्ल के लिए भेजा गया। क़िराये का यह कातिल जिसे बूढ़ा समझ रहा था वह एक जवान आदमी निकला। उसे मालूम नहीं था कि बूढ़े

के बहरूप में यह जवान आदमी तजुर्बाकार लड़ाका जासूस और छापामार है।

बिन उमरू के भेजे हुए इस कातिल को दीए की रौशनी में ख़ेमे में बैठाकर बहुत कुछ पूछा गया लेकिन उससे कोई राज़ मालूम न हो सका। वह सलीबियों के किसी बाकायदा जासूस या तख़रीबकार गिरोह का आदमी नहीं था। वह उजरत पर सिर्फ़ कत्ल करने आया था। जिस ने दूरवेश का बहरूप धारा था उसने अपने दोनों साथियों की तरफ़ देखा। तीनों ने आँखें ही आँखों में कुछ तय कर लिया। उनमें एक उठा और ख़ेमे से रस्सी का एक गज़ लम्बा टुकड़ा उठाया। वह किराये के इस कातिल के पीछे हुए और तेज़ी से रस्सी उसकी गर्दन के गिर्द लपेट कर ऐसा फंदा बनाया कि यह आदमी तड़पने लगा और ज़िरह सी देर में ठंडा हो गया।

❖

दूसरे दिन अहमद बिन उमरू वालिये मुसिल अज़ाउद्दीन के डेवढ़ीनुमा कमरे में उसके पास खड़ा था। वह गुस्से में था और अज़ाउद्दीन के चेहरे पर परेशानी थी। अहमद बिन उमरू के हाथ में एक कागज़ था। उनके सामने फ़र्श पर एक लाश पड़ी थी जिसकी गर्दन के गिर्द रस्सी लिपटी हुई थी और उस रस्सी के साथ यह कागज़ बंधा हुआ था जो अज़ाउद्दीन के पास था। यह हिफ़ाज़ती दस्ते के उस सिपाही की लाश थी जिसे उसने नये दूरवेश को अंधेरे में कहीं जाकर कत्ल करने को भेजा था। बिन उमरू सारी रात उस सिपाही का इन्तज़ार करता रहा। सुबह उसे इत्तलाअ मिली कि उसके घर के सामने एक लाश पड़ी है। वह बाहर आया। ज़मीन पर उसके सिपाही की लाश पड़ी थी। आँखें खुली हुई थी। ज़ुबान बाहर आ गयी थी। गर्दन के गिर्द रस्सी थी और रस्सी के साथ कागज़ बंधा था।

कागज़ पर लिखा था– "अज़ाउद्दीन वालिये मुसिल के नाम– तुम्हारे एक हाकिम, अहमद बिन उमरू ने इस आदमी को मेरे कत्ल के लिए भेजा था। मैं इसकी लाश इज़्ज़त व एहतराम से अहमद बिन उमरू की दहलीज़ पर रख चला हूँ। यह बदनसीब सिपाही मुझे कत्ल नहीं कर सका तुम भी इसी तरह के बदनसीब हो जो सुल्तान अय्यूबी का अभी तक कुछ नहीं बिगाड़ सके और आइंदा भी कुछ नहीं बिगाड़ सकोगे। कुफ़्फ़ार की दोस्ती से तुम ज़िल्लत के सिवा कुछ हासिल नहीं कर सकोगे। हम तुम्हें चैन से जीने नहीं देंगे। एक रोज़ तुम्हारी लाश भी तुम्हारे महल की दहलीज़ पर पड़ी होगी। अहमद बिन उमरू जैसे हाकिमो और मुशीरो से बचो। यह ख़ुशामदी टोला तुम्हारा कभी वफ़ादार नहीं हो सकता। यही लोग तुम्हारे ज़वाल का बाइस बनेंगे। हमारी ताकत देखो। तुम्हारा फ़ौजी मुशीर इहतशामुद्दीन बैरूत सलीबियों के साथ दरपरदा मुआहिदे के लिए गया लेकिन हमने उसे लापता कर दिया। वह अब सुल्तान अय्यूबी के पास है। तुम्हारे सलीबी दोस्तों ने पहाड़ियों को खोद कर उनके अन्दर जंगी सामान रखा। हमने यह सामान नज़रे आतिश कर करके तुम्हारी रियासत को ज़लज़ले का झटका दिया। तुमने अपने एक सिपाही को मेरे कत्ल के लिए भेजा और हमने तुम्हारे सिपाही की लाश तुम तक पहुंचा दी है। हम जिन्न भूतों की तरह तुम पर ग़ालिब रहेंगे मगर तुम हमें देख नहीं सकोगे। तुम्हारा ज़वाल शुरू हो चुका है। तुम्हारी निजात उसी में है कि सुल्तान अय्यूबी की इताअत कुबूल कर लो और अपनी फ़ौज उसके हवाले करदो। हमें

किब्ला अव्वल आज़ाद कराना है। इस दुनियावी बादशाही और जादू व जलाल से बाज़ आओ। तख़्त व ताज ने किसी का भी कभी साथ नहीं दिया।"

अहमद बिन उमरू ने लाश को अपने घर के सामने से उठवाई और अज़ाउद्दीन के सामने जा रखवाई। अज़ाउद्दीन ने भी यह तहरीर पढ़ी और काग़ज़ बिन उमरू को देकर गहरी सोंच में खो गया। बिन उमरू गुस्से का इज़हार कर रहा था लेकिन अज़ाउद्दीन का गुस्सा सर्द पड़ चुका था।

"मुझे इत्तलाअ मिली है कि मस्जिदों में भी इस नये दूरवेश के चर्चे हो रहे हैं।" अज़ाउद्दीन ने कहा– "और अब इस तहरीर से यह साबित हो गया है कि यह कोई दूरवेश नहीं बल्कि सलाहुद्दीन अय्यूबी का कोई आदमी है।" उसने काग़ज़ मरोड़ कर लाशा पर फेंक दिया।

"मैं उसे तलाश कर लूंगा।" बिन उमरू ने गुस्से से कहा– "और सरेआम उसका सर तन से जुदा कराऊंगा।

"ठंडे दिल से सोंचो।" अज़ाउद्दीन ने कहा– "इस एक आदमी को कत्ल कर देने से तुम सलाहुद्दीन अय्यूबी को कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकते हमे कुछ और करना है, कुछ और सोंचना है। मैं चाहता था कि सलीबी सलाहुद्दीन अय्यूबी पर हम्ला कर देते मगर मालूम नहीं वह आगे क्यों नहीं आ रहे। वह चाहते हैं कि मैं सलाहुद्दीन अय्यूबी से बराहेरास्त टक्कर लूं फिर वह मेरी मदद इस तरह करेंगे कि उनके छापामार दस्ते सलाहुद्दीन के पहलूंओं और अक़्ब पर और उसकी रस्द पर शबख़ून मारते रहें। इस तरह मुझे मैदान जंग में बरतरी और कामयाबी हासलि होगी।"

'और ज़रूर होगी।" बिन उमरू ने फ़र्श पर पांव मरते हुए कहा।

"इस तहरीर में सही लिखा है कि तुम ख़ुशामदी हो।" अज़ाउद्दीन ने कहा– "मैं एक उलझन में पड़ा हुआ हूँ और तुम ख़ुश करने के लिए बच्चों की तरह बातें कर रहे हो। क्या तुम मुझे कोई बेहतर मश्वरा नहीं दे सकते?" उसने ताली बजाई। एक नौजवान ख़ादिमा दोड़ी आई। उसने झुक कर सलाम किया। अज़ाउद्दीन ने कहा– "दरवान से कहो कि यह लाश उठवा ले और कहीं दफ़्न कर दे।" यह कह कर वह दूसरे कमरे में चला गया जो उसका ख़ास कमरा था। अहमद बिन उमरू भी साथ था। अज़ाउद्दीन फ़िर इधर आया और ख़ादिमा से कहा–"सुराही और प्याले ले आओ। दरवान से कहा किसी को इधर न आने दे।"

❖

ख़ादिमा लाश देखी तो वह डर गयी। उसकी नज़र मरोड़े हुए कागज़ पर पड़ी। वह अरबी पढ़ सकती थी। उसने तहरीर पढ़ी और काग़ज़ अपने कपड़ों के अन्दर छुपा लिया। दौड़कर बाहर गयी। दरवान से कहा कि लाश उठवाकर दफ़्न करा दे और सुराही और प्याले सुनहरी थाली में रख कर अज़ाउद्दीन के कमरे में चली गयी।

"शाह आरमिनिया ने मेरे पैग़ाम का जवाब दिया है।" अज़ाउद्दीन ने बिन उमरू से कह रहा था– "उसने मुझे अपने दारूलहुकूमत तिल ख़ालिद में मिलने की बजाए मुझे हरजम बुलाया है। वह तिल खालिद से रवाना हो गया है। मैं दो रोज़ बाद उसे मिलने जा रहा हूँ।"

ख़ादिमा ने प्यालों में जल्दी–जल्दी शराब डालने की बजाए कपड़े से प्याले पोछने शुरू कर दिए। उसके कान अज़ाउद्दीन की बातों पर लगे हुए थे।

"मेरा ख़्याल है शाहआरमिनिया तिल खालिद से हरज़म जाने की ग़लती कर रहा है।" बिन उमरू ने कहा।

"क्योंकि सलाहुद्दीन अय्यूबी तिल ख़ालिद की तरफ पेशक़दमी कर रहा है।" अज़ाउद्दीन ने कहा– "तुम्हें यह डर है कि शाह आरमिनियां की ग़ैरहाज़िरी में सलाहुद्दीन अय्यूबी तिलखालिद को मुहासिरे में ले लेगा.....ऐसा नहीं होगा। अगर ऐसा हुआ भी तो मि सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज पर अक़्ब से हम्ला कर देंगे। हम इस लड़ाई को तवील कर देंगे और सलीबियों को इत्तलाअ देंगे कि वह भी सलाहुद्दीन अय्यूबी पर हम्ला कर दें। मुझे यक़ीन है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज पिस के रह जाएगी।"

"आप कब जा रहे हैं?" बिन उमरू ने पूछा।

"दो रोज़ बाद।" अज़ाउद्दीन ने जवाब दिया।

ख़ादिमा शराब पेश करने में उससे ज़्यादा ताख़ीर नहीं कर सकती थी। उसने प्यालों में शराब डाली और दोनों को पेश की। अज़ाउद्दीन ने उसे कहा कि वह चली जाए। वह डेवढ़ी नुमा कमरे में गयी तो वहाँ लाश उठाई जा चुकी थी। ख़ादिमा अभी वहाँ से बाहर नहीं जा सकती थी। उसे डेयोढ़ी पर रहना था। वह बैठ गयी और सोंचने लगी। अचानक उसके मुँह से 'हाय' निकली। उसने दोनों हाथ पेट पर रख लिए और दूहरी हो गयी। दरवान और दूसरे मुलाज़िम दौड़े आये। उसने कराहते हुए बताया कि उसके पेट में अचानक दर्द उठा है। उसकी जगह फ़ौरन दूसरी ख़ादिमा बुलाकर वहाँ बैठा दी गयी और उसे तबीब के पास ले गये। तबीब को उसने बताया कि उसे पेट दर्द है। उसे दवाई दी गयी। उसने कहा कि वह काम के क़ाबिल नहीं रही।

कुछ देर बाद उसकी तबीअत संभल गयी। तबीब ने फ़ौरन उसे दो दिनों की छुट्टी लिख दी और उसे कहा कि अपने घर चली जाए। वह अपने घर को जाने की बजाए गुलाम गर्दिशों वग़ैरह से गुज़रती अज़ाउद्दीन की बीवी रज़ीअ खातुन के कमरे में चली गयी। रज़ीअ खातुन के मुतअल्लिक पहले तफ़सील से बताया जा चुका है कि नुरूद्दीन ज़ंगी की बेवा थी। अज़ाउद्दी ने उसके साथ शादी कर ली थी। रज़ीअ खातुन ने इस उम्मीद पर शादी क़ुबूल की थी कि अज़ाउद्दीन को वह सलाहुद्दीन अय्यूबी का दोस्त और इत्तेहादी बना देगी और मुसलमान उमरा और हुक्मरान मुत्तहिद होकर फ़िलिस्तीन से सलीबियों को निकाल देंगे, मगर अज़ाउद्दीन ने जिस नीयत से शादी की थी वह रज़ीअ खातुन की नीयत से उलट थी। दमिश्क़, बग़दाद और इन मुक़ामात के गिर्दोनवाह के तमाम इलाकों पर रज़ीअ खातुन का असर था और रज़ीअ खातुन अपने मरहूम ख़ाविन्द नुरूद्दीन ज़ंगी की तरह सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की मोअतद और उसके नेक अज़ाइम की हामी थी। उसने जवान लड़कियों की फौज बना रखी थी।

अज़ाउद्दीन ने इस अज़ीम ख़ातुन के साथ इस नीयत से शादी की थी कि उसे सुल्तान

सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ़ इस्तेमाल करे और अगर यह मुम्किन न हो सका तो उसे ज़ौजियत की कैद में रखे ताकि दमिश्क़ और बग़दाद के लोग उसकी क़यादत से महरूम हो जाएं। रज़ीअ खातुन ने शादी के बाद उसकी नीयत पहचान ली थी। पहले तो उसने इहतिजाज़ किया लेकिन औरत अक्ल वाली थी। उसने अज़ाउद्दीन पर अपना एतमाद पैदा करके जासूसी शुरू कर दी और शहर में सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के जो जासूस थे, उनके साथ दरपरदा राब्ता क़ायम कर लिया। उसकी बेटी (जो ज़ंगी की बेटी थी) शम्सुन निसा जवान थी। वह भी जासूसी कर रही थी। माँ बेटी ने सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी तक बड़े कीमती राज़ पहुंचाये थे। उसके साथ ही रज़ीअ खातुन ने अज़ाउद्दीन के दो सालारों और एक मुशीर को अपने हाथ में ले लिया था। अज़ाउद्दीन को उसने यक़ीन दिला दिया था कि वह अब सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के हक़ में नहीं रही या कम अज़कम उसके खिलाफ़ नहीं रही। रज़ीअ ख़ातुन ख़ूबसूरत औरत थी। उसने निस्वानियत की शीरनी और ज़ुबान की चाशनी से अज़ाउद्दीन को अपने क़ब्ज़े में ले लिया था। उसके साथ ही महल के अन्दर भी जासूसों का गिरोह बना लिया।

वह अपने कमरे में बैठी थी कि अज़ाउद्दीन की नौजवान ख़ादिमा अन्दर आई।

"पेट दर्द का बहाना करके आई हूँ।" ख़ादिमा ने रज़ीअ खातुन से कहा– "तबीब ने आज और कल की छुट्टी दे दी है।" उसने क़मीज़ के अन्दर से वह काग़ज़ निकाला जो उसने लाश से उठाया था। काग़ज़ रज़ीअ खातुन को दिया और उसे बताया कि यह काग़ज़ एक सिपाही की लाश के साथ था।

रज़ीअ ख़ातुन ने तहरीर पढ़ी और बोली– "आफ़रीन, हमारे मुजाहिद काम कर रहे हैं, तो इसका मतलब यह हुआ कि इन कम्बख़्तों ने हमारे आदमी को क़त्ल कराने की कोशिश की थी। मुझे इत्तलाअ मिल चुकी है कि हमारे इस दूरवेश ने लोगों के दिलों से सलीबियों के दूरवेश की दहशत और वहम निकल दिया है।"

"यह तहरीर उसी की है।" ख़ादिमा ने कहा–"मैं उसका हाथ पहचानती हूं।"

रज़ीअ खातुन ने हंस कर कहा– "मुझे मालूम है कि तुम उसका हाथ ही नहीं उसका दिल भी पहचानती हो, लेकिन यह ख़्याल रखना कि दिलों के जाल में ही न उलझ जाना। फ़र्ज़ पहले।"

ख़ादिमा शरमा गयी। कहने लगी– "अभी तक अपने जज़्बात को फ़र्ज़ के रास्ते पर नहीं आने दिया। मैं फ़हद को भी यही कहा करती हूँ कि उसे मुझ से दिली मोहब्बत है तो अपने फ़र्ज़ को जज़्बात पर हावी रखे।"

फ़हद वही जवान साल आदमी था जिसने नये दूरवेश का रूप धारा था। वह बग़दाद का रहने वाला था। उसमें जासूस बनने की तमाम तर ख़ूबियां मौजूद थीं। ख़ुबरू नौजवान था। दो साल से मुसिल में मुक़ीम था और कामयाबी से जासूसी कर रहा था और नज़रयाती मुहाज़ पर भी उसने अपने साथियों के साथ नुमाया कामयाबियां हासिल कर ली थीं। इसी सिलसिले मे उसकी मुलाक़ात अज़ाउद्दीन की इस ख़ादिमा से हुई थी और दोनों एक दूसरे के दिल में

उतर गये थे। ख़ादिमा शहर में रहती थी लेकिन उसका ज़्यादा वक़्त महल में गुज़रता था। जासूसी की ज़मीनदोज़ कार्रवाइयों के अलावा भी उन दोनों की मुलाक़ातें होती रही थीं।

"मैं जो ख़बर लाई हूँ वह अभी बताई ही नहीं।" ख़ादिमा ने रज़ीअ ख़ातुन से कहा– "अज़ाउद्दीन दो रोज़ बाद शाह आरमिनिया से मिलने हरज़म जा रहे हैं। मैंने शराब पेश करने के दौरान उनसे यह बात सुनी है। वह अहमद बिन उमरू को बता रहे थे कि शाह आरमिनिया ने उन्हें पैग़ाम भेजा है कि वह तिल खालिद से हरज़म रवाना हो रहा है और अज़ाउद्दीन उसे वहाँ मिलें.....मैं रात तक फ़ारिग़ नहीं हो सकती थी। मैंने पेट के दर्द का बहाना बनाया और आप तक पहुंची हूँ।

रज़ीअ ख़ातुन ने अपने ज़ानू पर हाथ मार कर कहा– "सलाहुद्दीन अय्यूबी तिल ख़ालिद की तरफ़ पेशक़दमी कर रहा है मुझे मालूम नहीं कि तिल ख़ालिद में अपने जासूस हैं या नहीं। यह ख़बर सलाहुद्दीन तक पहुंचनी चाहिए। हो सकता है कि वह इन दोनों को हरज़म में पकड़ लें। यह काम तुम ही करो। फ़हद या उसके किसी साथी तक पहुंचो और उसे यह ख़बर सुनाकर मेरा पैग़ाम दो कि सलाहुद्दीन अय्यूबी अभी तिल ख़ालिद के रास्ते में होगा, यह ख़बर उस तक पहुंचा दो। अभी जाओ।"

ख़ादिमा चली गयी।

❖

कुछ ही देर बाद अज़ाउद्दीन रज़ीअ ख़ातुन के कमरे में दाख़िल हुआ। उसके चेहरे पर घबराहट बड़ी साफ़ थी। रज़ीअ ख़ातुन को मालूम था कि वह क्यों परेशान है, फिर भी उस परेशानी की वजह पूछी।

"मैं सलाहुद्दीन अय्यूबी की दुश्मनी और सलीबियों की दोस्ती के पत्थरों में पिस रहा हूँ।" अज़ाउद्दीन ने हारे हुए लहजे में कहा।

"मेरी तमाम तर दिलचस्पियां आप के साथ हैं।" रज़ीअ ख़ातुन ने कहा– "मगर मैं सलाहुद्दीन के हक़ में कोई बात कहूं तो आप को शक होता है कि मैं उसकी हामी और आप के ख़िलाफ़ हूँ। आप की परेशानी की वजह यह नहीं कि आप के और सलाहुद्दीन के दर्मियान अदावत पैदा हो गयी है, असल वजज यह है कि आप ने उस क़ौम को दोस्त समझ लिया है जो आप की दोस्त हो सकती आप के मज़हब की दुश्मन ही रहेगी। सलीबी अपने अज़ाइम की तकमील के लिए आपको धोखा देंगे और ज़रूर देंगे।"

"तो क्या मैं सलाहुद्दीन के क़दमों में जाकर तलवार रख दूं?" अज़ाउद्दीन ने तंज़िया लहजे में पूछा– "अगर मैं ऐसा कर गुज़रूंगा तो अपनी फ़ौज के सामने किस मुँह से खड़ा हूंगा।"

"सलाहुद्दीन आपको अपना महकूम नहीं अपना इत्तेहादी बनाना चाहता है।" रज़ीअ ख़ातुन ने कहा।

"तुम उस शख़्स की नीयत नहीं समझ सकी।" अज़ाउद्दीन ने कहा–"वह सल्तनते इस्लामिया की बात करता है,मगर उसे अपनी ज़ाती सल्तनत बनायेगा।"

"इसका मतलब यह हुआ कि आप उससे लड़ेंगे।" रज़ीअ खातुन ने कहा–"अगर आपका यही इरादा है तो परेशान होने की बजाए जंग की तैय्यारी करें। फ़ौज में इज़ाफ़ा करें।"

"मेरी परेशानी यह है कि सलाहुद्दीन ने जासूसों और तबाह कारों का जला बिछा दिया है।" अज़ाउद्दीन ने कहा– "तुम्हें मालूम है कि मेरा इतना काबिल फ़ौजी मुशीर इहतशामुद्दीन बैरूत बिल्डून से मुआहिदा करने गया और वहाँ से ग़ायब हो गया। मुझे इत्तलाअ मिली है कि वह सलाहुद्दीन के साथ है। हमारे तमाम राज़ उसके पास हैं। मैंने सलीबियों से अस्लेहा आतिशगीर सयाल और दिगर सामान का ज़खीरा अपने क़रीब जमा कराया था। वह तबाह हो गया है। आज मेरे हिफ़ाज़ती दस्ते के एक सिपाही की लाश मेरे पास आई है।"

"उसे किसने क़त्ल किया है?" रज़ीअ खातुन ने अन्जान बनकर पूछा।

"हाँ" अज़ाउद्दीन ने असल बात पर पर्दा डाल कर कहा– "उसे किसी ने क़त्ल कर दिया है। उसे एक ख़ास काम के लिए भेजा गया था। उसके कातिल सलाहुद्दीन के अदमी मालूम होते हैं।"

उस लाश के साथ फ़हद का लिखा हुआ जो कागज़ था वह रज़ीअ खातुन के पास था लेकिन वह अन्जान बनी रही। उसने सोंचा कि अज़ाउद्दीन घबराया हुआ है, उसपर और ज़्यादा घबराहट तारी की जाए।

"आपको अच्छी तरह मालूम है कि सलाहुद्दीन सिर्फ़ मैदान में नहीं लड़ता।" रज़ीअ ख़ातुन ने कहा–"वह जब अपने घरमें सोया हुआ होता है तो उसके दुश्मन समझते हैं जैसे वह उनके सर पर बैठा है। इस वक़्त वह तिल ख़ालिद की तरफ़ जा रहा है लेकिन यूँ मालूम होता हे जैसे वह मुसिल में बैठा है और अपनी निगरानी मे तबाही करा रहा है। सलीबियों की फ़ौज का अन्दाज़ा करें। सलाहुद्दीन की फ़ौज से दस गुना ज़्यादा है मगर सलीबी आगे बढ़कर उस पर हम्ला करने की जुर्रत नहीं करते। सलीबियों के मुक़ाबले में आप के पास जो फ़ौज है वह आप जानते हैं। आप को यह भी जान लेना चाहिए कि आप की फ़ौज में ऐसे कमानदार मौजूद हैं जो आपके वफ़ादार नहीं। वह आप को धोखा दे सकते हैं।"

अज़ाउद्दीन और ज़्यादा घबरा गया और बोला–"मैं इस हद तक पहुंच चुका हैं जहाँ से मैं आसानी से वापस नहीं आ सकता। मैं दो रोज़ बाद कहीं बाहर जा रहा हूँ। अगर हालात ने साथ दिया तो कामयाब हो जाउंगा।" वह चुपहोकर गहरी सोंच में खो गया। कुछ देर बाद बोला–"रज़ीअ! मैंने एक उम्मीद तुम्हारे साथ वाबस्ता कर रखी है।"

"मैं आप की हर उम्मीद पूरी करूंगी।" रज़ीअ खातुन ने कहा– "अगर आप मुझे सलाहुद्दीन के खिलाफ़ कोई कार्रवाई करने के लिए कहेंगे तो मैं कर गुज़रूंगी। मैं आपके एक बच्चे की माँ बन चुकी हूँ। मुझे बताएं कि मैं आपकी कौन सी उम्मीद पूरी कर सकती हूँ। मुझे किसी कड़ी आज़माईश में डालें।"

"मैं बाहर जा रहा हूँ।" अज़ाउद्दीन ने कहा–"मुझ से अभी यह न पूछना कि मैं कौं जा रहा हूँ। उसे अभी राज़ में रखना। इसके बाद मैं सलाहुद्दीन के खिलाफ़ कोई कार्रवाई करूंगा। अगर हालात मेरे खिलाफ़ हो गये तो मैं तुमसे उम्मीद रखूंगा कि तुम मेरी तरफ़ से

सुल्तान अय्यूबी के पास जाओगी और उसके साथ मेरा समझौता करा दोगी। हो सकता है कि उस वक़्त मैं उसके पास जाऊं तो वह मुझसे मिलने से भी इन्कार कर दे।"

रज़ीअ ख़ातुन ने उसे यह मश्वरा दिया कि वह शिकस्त से पहले ही सलाहुद्दीन अय्यूबी के साथ समझौता कर ले उसने अज़ाउद्दीन से यह भी न पूछा कि वह कहाँ जा रहा है। उसे ख़ादिमा बता गयी थी कि वह हरज़म शाह आरमिनिया से मिलने जा रहा है और यह सुल्तान अय्यूबी के खिलाफ़ मुहाज़ बना रहा है। रज़ीअ ख़ातुन को वह अभी नहीं बताना चाहता था कि वह कहां जा रहा है क्योंकि उसे वह राज़ रखना चाहता था। उसे मालूम नहीं था कि वह सुल्तान अय्यूबी की जासूस से बातें कर रहा है। ताहम रज़ीअ खातुन ने उसे यक़ीन दिलाया कि वह जब भी कहेगा सुल्तान अय्यूबी के साथ उसका समझौता करा दिया जाएगा। अज़ाउद्दीन के घबराहट से रज़ीअ ख़ातुन को ख़ुशी महसूस हो रही थी।

अज़ाउद्दीन सर झुकाए हुए कमरे से निकल गया। रज़ीअ ख़ातुन की ज़ाती ख़ादिमा जो उसी की उम्र की थी अन्दर आई और रज़ीअ ख़ातुन से पूछा कि वालिये मुसिल बहुत परेशान दिखाई देते हैं। यह खादिमा भी रज़ीअ ख़ातुन के ज़मीनदोज़ गिरोह की फर्द थी।

"ईमान और किरदार से मुन्हरिफ़ होकर इन्सान की यही हालत हुआ करती है।" रज़ीअ खातुन ने कहा– "यह हुक्मरान जो कौम से अलग होकर अपनी रियासतों के बादशाह बनने के ख़्वाब देख रहे हैं किसी दरख़्त की उन टहनियों के मानिन्द हैं जो दरख़्त से अलग हो गयी हैं। उनकी किस्मत में अब यही लिखा है। उनके पत्ते झड़ जाएंगे, बिखर जायेंगे और बिखर जायेंगे और टहनियां सूख जाएंगी। यह हुकूमत का लालच है जिस ने मेरे ख़ाविन्द को शराब और औरत का शैदाई बनाया है। उस शख़्स ने सलीबियों का मीठा जहर अपनी रगों में उड़ लिया है। अज़ाउद्दीन मैदाने जंग का बादशाह था। उसकी तलवार से सलीब का दिल कटता था लेकिन आज उसकके दिल पर खौफ़ तारी है। उस शख़्स की जुर्रत जवाब दे गयी है। मुझ से, एक औरत से मदद मांग रहा है। बादशाही का नशा, शराब और औरत इन्सान का यही हश्र किया करती है। उसकी किस्मत में शिकस्त लिख दी गयी है। जब एक सालार तख़्त व ताज का ख़्वाहां हो जाता है तो उसकी पूरी फ़ौज दीन व ईमान से दस्तबरदार हो जाती है, फिर मुल्क का वक़ार व मिल्लत ख़ाक में मिलता और दुश्मन सर पर सवार हो जाता है।"

❖

वह नौजवान ख़ादिमा जो फ़हद को यह पैग़ाम देने निकली थी कि अज़ाउद्दीन शाह आरमिनिया से मिलने हरज़म जा रहा है, उस ठीकाने पर गयी जहाँ फहद को होना चाहिए था मगर वहाँ ताला लगा हुआ था। फ़हद उमूमन शुतरबानों के भेस में रहता था। वह दो ऊंट अपने साथ रखता था और ताजिरों वग़ैरह का सामान इधर उधर ले जाता था। वह उस जगह गयी जहाँ वह अपने उंटों के साथ बैठाया खड़ा होता था। वह वहाँ भी नहीं था। उसने एक शुतरबान से पूछा कि फ़हद कहाँ है। शुतरबान की हैसियत से उसका नाम कुछ और था। उसे बताया गया कि वह ऊंटों पर सामान लादकर फलां जगह चला गया है। ख़ादिमा उधर को चल पड़ी– और उसे पता न चला कि एक और आदमी उसके ताआक्कुब में आ रहा है।

यह आदमी था तो मुसिल का मुसलमान लेकिन सलीबियों का जासूस था और उसका तअल्लुक अज़ाउद्दीन के महल के अमले से था। उसने ख़ादिमा को तबीब के पास पेट के शदीद दर्द की हालत में देखा था। वह उस लड़की को जानता था। उसने उस लड़की को उस वक़्त भी देखा था जब वह दवाई लेकर महल से निकल रही थी। उसे यह तो मालूम न था कि यह रज़ीअ ख़ातुन से मिल कर आई है। उसने यह देखा था कि लड़की इतनी तेज़ चल रही थी जैसे उसे कोई तकलीफ़ न हो। यह आदमी सलीबियों का तैय्यार किया हुआ जासूस था। उसे उस लड़की पर शक हुआ। अज़ाउद्दीन का अपना जासूसी निजाम तो इतना अच्छा नहीं था सलीबियों ने उसे बताए बेग़ैर वहाँ अपने जासूस छोड़ रखे थे। उनके ज़िम्मे दो काम थे। एक यह कि अज़ाउद्दीन पर नज़र रखें कि वह कहीं दरपरदा सुल्तान अय्यूबी का दोस्त तो नहीं बन रहा। दूसरा यह कि उन अफ़राद की निसानदेही करें जो अज़ाउद्दीन के महल में मुसिल में मौजूद हैं और जासूसी कर रहे हैं।

सलीबियों के इस जासूस ने उस लड़की का तआक्कुब शुरू कर दिया और जब वह देखा कि वह और ज़्यादा तेज़ चल रही है और किसी को ढूंढती फिर रही : तो उसका शक पुख़्ता हो गया। उसे अब यह देखना था कि वह किसे ढूंढ रही है। अगर यह लड़की वाक़ई जासूस है तो उससे एक या एक से ज़्यादा जासूसों को पकड़ा जा सकता था। लड़की को अब एक शुतरबान ने बताया था कि वह कहाँ गया है। वह उस तरफ़ जा रही थी और जासूस उसके पीछे जा रहा था।

एक जगह ऊंटों से समान उतारा जा रहा था फहद भी सामान उतार रहा था। उसने लड़की को देख लिया। क़रीब से गुज़रते हुए लड़की ने फहद की आँखों में आँखे डालीं और आगे निकल गयी। फ़हद को मालूम था कि वह कहाँ उसका इन्तज़ार करेगी। जासूस उसके पीछे लगा रहा। लड़की को मालूम न था। फ़हद ने जल्दी--जल्दी अपने ऊंटों से सामान उतारा और लड़की के पीछे गया। उसने एक ऊंट की मुहार पकड़ रखी थी। दूसरे ऊंट की मुहार ऊंट के पीछे बंधी थी। लोग आ जा रहे थे। फ़हद लड़की के साथ हो गया। लड़की रूकी नहीं। यूं मालूम होता था जैसे अपने ध्यान से जा रही हो, फ़हद भी बज़ाहिर उसकी तरफ़ तवज्जो नहीं दे रहा था लेकिन लड़की उसे पैग़ाम दे रही थी।

चन्द क़दमों तक लड़की ने पैग़ाम सुना दिया और कहा--"यह काम करके आओगे तो वहाँ मिलूंगी जहाँ हम कुछ देर बैठा करते हैं। अभी नहीं। कहीं ऐसा न हो कि हम अपने फ़र्ज़ से भटक जाएं.........तुम्हें मालूम होगा। सुल्तान अय्यूबी की फौज कहाँ होगी?"

"मुझे मालूम है" फ़हद ने जवाब दिया--"मैं अभी रवाना हो जाऊंगा।"

"ख़ुदा हाफ़िज़।" लड़की ने कहा।

"फ़ी अमानिल्लाह।"

लड़की एक तरफ मुड़ गयी। वह एक गली थी। तब उसने घूम कर देखा। एक आदमी उसके पीछे आ रहा था। उसे याद आया कि उस आदमी को उसने फ़हद की तलाश के दौरान तीन चार मर्तबा देखा था। उसे यह भी ख़्याल आया कि उस आदमी को उसने महल में भी

देखा है। ज़ेहन पर जोर दिया तो उसे याद आया कि यह शख़्स महल में मुलाज़िम है। लड़की को कुछ शक हुआ। उसने उस आदमी की नीयत मालूम करने के लिए गलियों के दो तीन मोड़ मुड़े। यहआदमी उसके पीछे रहा। लड़की आबादी से बाहर निकल गयी। यह आदमी भी बाहर निकल गया। कुछ दूर दरख़्तों का झुंड था। लड़की वहाँ बैठ गयी। यह आदमी आगे निकल गया। उसे ग़ालिबन शक हुआ होगा कि लड़की किसी के इन्तज़ार में बैठी है। वह बहुत आगे चला गया।

लड़की होशियार थी। वह जल्दी से क़रीब की झाड़ियों में छुप गयी। वहाँ से सरकती झाड़ियों से निकली और एक गली में ग़ायब हो गयी। वह आदमी दूर जाकर वापस आय। अब उसने दूसरा रास्ता इख़्तियार किया था। उसे तवक्को थी कि लड़की के पास कोई आदमी बैठा होगा मगर उसने क़रीब आकर देखा तो वहाँ लड़की नहीं थी। उसने इधर उधर देखा। लड़की का नाम व निसान नहीं था।

लड़की अपने घर पहुंच चुकी थी।

❖

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी आरमिनिया की तरफ़ बढ़ रहा था। उसने अपनी जिन्दगी का सबसे बड़ा ख़तरा मोल ले रखा था। सलीबी अफ़वाज किसी भी वक़्त मुत्तहिद होकर उस पर हम्ला कर सकती थीं और वह अकेला था। मुसलमान उमरा उसके ख़िलाफ़ थे। अपनी–अपनी रियासत और हुक्मरानी अलग–अलग क़ायम करने के लिए वह ईमान सलीबियों के हाथ बेच चुके थे। ख़ानाजंगी तक हो चुकी थी जो सलीबियों की दरपरदा कोशिश का नतीजा था। अब सुल्तान अय्यूबी उन तमाम मुसलमान उमरा को बज़ोर शमशीर अपने मुहाज़ पर मुत्तहिद करने का अज़्म लिए हुए था। उसने कहा था कि उनमें से जो मेरी सफ़ों में नही आता वह ख़ुद मुख़्तार भी नहीं रहेगा। उसने चन्द एक किलों पर क़ब्ज़ा कर लिया था और वहाँ के उमरा और क़िलादारों ने उसकी इताअत क़ुबूल कर ली थी। अब वह उन हुक्मरानों की तरफ़ बढ़ रहा था जो कुछ ताक़त रखते थे। वह कमाले दिलेरी से उन दुश्मनों के दर्मियान फ़ौज को घूमा फिरा रहा था यह सब बहुत बड़ा खतरा था।

"अगर तुम्हारे इरादे नेक हैं तो तुम्हें डरना नहीं चाहिए।" सुल्तान अय्यूबी तिल ख़ालिद में एक पड़ाव किए पड़ा था। उसने अपने ख़ेमों में सालारों को बुलाकर रखा था और कह रहा था–"मैं जानता हूँ कि तुम क्या सोंच रहे हो। अगर तुम में से कोई मेरे इस फ़ैसले से मुत्तफ़िक़ नहीं कि सलीबियों की तरफ़ से बेख़बर होकर ग़लत सिम्त को चल पड़ा हूं तो में उसे हक़ बजानिब समझूंगा। मैं उसे यह नहीं कहूँगा कि वह मेरा हुक्म माने और मेरे ग़लत फ़ैसले पर अमल करे। मैं उसे यही कहूंगा कि वह मेरे मकसद को समझे और दिल से तमाम ख़ौफ़ निकाल दे। हमारी मंज़िल योरूशलं है। बैतुल मुक़द्दस – क़िब्ला अव्वल ख़ुदा ने हमें इस कड़ी आज़माईश मे डाल दिया है कि हमारे भाई ईमान फ़रोश निकले। उन्हें क़िब्लाअव्वल नहीं हुक्मरानी चाहिए...याद रखो मेरे रफ़ीकों जब तारीख लिखी जाएगी तो उसमें यह तहरीर होगा कि हमारे दौर की फ़ौज बुज़्दिल और नाअहल थी। शिकस्त की लानत हमेंशा फ़ौज के

हिस्से में आती है। हुक्मरान अगर कुफ़्फ़ार के दरपरदा दोस्त ही हुए, आने वाली नस्लें फौज पर लानत भेजेंगी...

"हमें ख़ुदा के ख़ुसूसी हुज़ूर में जाना है ख़ुदा ने हम पर फ़र्ज़ आयद किया है वह हमें पूरा करना है या उस फ़र्ज़ की अदायगी में जान देनी है। मरकज़ से अलग होने वालों के लिए मेरे दिल मे कोई रहम नहीं। अगर हम ने आज अलग–अलग रियासतें बनाने के रूजहान को न रोका तो एक दिन यही रूजहान इस्लाम के ज़वाल का बायस बनेगा। कहने को यह इस्लामी मुल्क होंगे लेकिन अपनी बादशाहियोंऔर ऐश व ईशरत कायम रखने के लिए अपने ताक़तवर दुश्मन के साथ समझौते करते और अपना ईमान नीलाम करते फिरेंगे। अपने ताक़तवर दुश्मन को ख़ुश करने केलिए दरपरदा एक दूसरे की जड़ें खोखली करते रहेंगे। उनका कमजोर सा दुश्मन भी उनके लिए ताक़वतर होगा। एक हुक्मरान अपनी पूरी रिआया को बेवक़ार बना देगा। हमें कोशिश करनी चाहिए कि क़ौम के बिखरे हुए शीराजे को आज ही समेट लें......

"मैं अब यह बातें बार–बार इसलिए कर रहा हूँ कि अपना नुक़्ता नज़र जो वक़्त की ज़रूरत है तुम्हारे दिलो पर नक्श हो जाए और ऐसा न हो कि अपने किसी ऐसे भाई को देखकर जो हमारे मज़हब का दुश्मन हो, तुम्हारी तलवार झुक जाए। कौम की मरकज़ीयत और इत्तेहाद को ख़त्म करने वाला भाई दुश्मन से ज़्यादा खतरना होता है.......मैं तुम्हें बता चुका हूँ कि हम तिल ख़ालिद के मुहासिरे के लिए जा रहे हैं और यह हमारा आख़िरी पड़ाव है। उसके आगे तिल ख़ालिद है। मुहासिरे के लिए मैं तुम सबको बता चुका हूँ कि किस–किस के दस्ते होंगे। महफ़ूज़ा मेरे हाथ में होगा। छापामार दस्ते टोलियो में तक़सीम होकर उन रास्तों को ज़द में ले लेंगे जिनसे सलीबी फ़ौज के आने का ख़तरा हो सकता है या आरमिनिया की फौज का मुहासिरा तोड़ने के लिए आ सकती है। जासूसों की इत्तलाअ के मुताबिक़ सलीबी हम्ले का ख़तरा नहीं, फिर भी इहतियात लाज़िमी है.....

"हम आरमिनिया पर क़ब्ज़ा नहीं करना चाहते। हमें शाह आरमिनिया से अपनी शराईत तस्लीम करानी है। मैं तुम्हें बता चुका हूँ कि अज़ाउद्दीन शाह आरमिनिया की मदद का तलबगार है। हमें आरमिनिया पर ख़तरा बन कर सवार हो जाना है ताकि शाह आरमिनिया अज़ाउद्दीन को मदद न दे सके लेकिन मैं तुम्हें किसी ख़ुशफ़हमी में मुब्तला नहीं करना चाहता कि यह ऐन मुम्किन है कि आरमिनिया की फ़ौज और शहरी हमारा मुक़ाबला इतना सख़्त करें कि हमे पस्पा होना पड़े। इस सूरत में अज़ाउद्दीन भी हम पर हम्ला कर सकता है और हलब का वालिये इमादुद्दीन भी। हमें गिरता देखकर छोटे–छोटे उमरा भी घोड़े तले रौदेंगे। इन नताइज और ख़तरों कोसामने रख कर हमें लड़ना है। मै तुम्हें नक़्शा दिखा चुका हूँ। किसी के दिल में कोई शक हो तो रफ़ा कर लो। यह मुहासिरा और हम्ला हमें इतनी बड़ी मुश्किल मे डाल सकता है कि हम शिकस्त भी खा सकते हैं।"

❖

रात का पहला पहर था जब सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी उस आख़िरी पड़ाव में अपने

सालारों को अपनी पहले दी हुई हिदायात याद दिला रहा था। उसके सामने नक्शा पड़ा था। दरवान ने ख़ेमा में आकर उसके कान में कुछ कहा– "सुल्तान अय्यूबी ने उसे कहा–"फ़ौरन अन्दर भेज दो।"

दरवान ने खेमा का पर्दा उठाया और सर से इशारा किया। फ़हद खेमे में दाख़िल हुआ। उसने मुसिल से यहाँ तक कहीं रूके बेग़ैर मुसाफ़त तय की थी। उसका चेहरा उतरा हुआ था। होंठ ख़ुश्क थे और आँखें बन्द हुई जा रही थीं। जासूसी और सुराग़रसानी के मुहकमे का सरबराह हसन बिन अब्दुल्लाह ख़ेमे में मौजूद था।

"मालूम होता है तुमने आराम किए बेग़ैर सफ़र किया है।" सुल्तान अय्यूबी ने फ़हद से कहा– "बैठ जाओ।" दरवान को आवाज़ देकर उसे कहा– "इसके लिए खाना यहीं ले आओ।"

"ख़बर ऐसी थी कि अराम की मुहलत हासिल करना गुनाह मालूम होता था।" फ़हद ने उखड़ी हुई साँसो से कहा– "मेरा घोड़ा शायद ज़िन्दा न रह सके।"

"क्या ख़बर है?"

"शाह आरमिनिया अपने दारूल हुकूमत में नहीं।" फ़हद ने कहा– "वह हरज़म में ख़ेमाज़न है। अज़ाउद्दीन उसे मिलने हरज़म जा रहा है। ज़ाहिर है कि यह हमारी फ़ौज के खिलाफ़ मुआहिदा होगा। शाह आरमिनिया के साथ अपनी फ़ौज के भी दो दस्ते होंगे और अज़ाउद्दीन भी अपनी फ़ौज के दो तीन दस्ते अपने साथ ला रहा है।"

"यह बादशाह शाही शान व शौकत से एक जगह इकठ्ठे हो रहे हैं।" सुल्तान अय्यूबी ने मुस्कुराकर कहा। फिर पूछा– "मुसिल में सलीबियों का क्या रंग ढंग है।"

"सलीबी ठंडे–ठंडे से मालूम होते हैं।" फ़हद ने जवाब दिया– "उनकी ज़ख़ीरे की तबाही की इत्तलाअ आप को मिल चुकी है। हम ने वहाँ के लोगों के दिलों से पहले दूरवेश का वहम और फ़रेब निकाल दिया है।"

शाह आरमिनिया और अज़ाउद्दीन की हरज़म मुलाक़ात के मुतअल्लिक़ तुम्हें कहाँ से इत्तलाअ मिली है?" सुल्तान अय्यूबी ने पूछा–"मैं कैसे यक़ीन कर लूं यह इत्तलाअ सही है?"

"रज़ीअ ख़ातुन की इत्तलाअ ग़लत नहीं हो सकती।" फ़हद ने कहा।

"अल्लाह उस अज़ीम औरत को अपनी रहमतों से नवाज़े।" सुल्तान अय्यूबी ने कहाँ और जज़्बात के ग़ल्बे से उसकी आवाज़ भर्रा गयी।

"रज़ीअ ख़ातुन ने आपको सलाम कहा है।" और यह भी कि अज़ाउद्दीन के पाँव लड़ने से पहले ही उखड़ गये हैं। उसपर घबराहट तारी है और अगर उसे एक ज़रब और पड़ी तो वह घुटने टेक देगा।"

"मुसिल में कोई फ़ौजी हलचल है?" सुल्तान अय्यूबी ने पूछा–"कोई जंगी तैय्यारी?"

"सलीबी जासूस और मुशीर सरगर्म हैं।" फ़हद ने जवाब दिया–"कोई जंगी तैय्यारी नज़र नहीं आती। अज़ाउद्दीन सलीबियों से जिस किसम की इआनत माँग रहा है वह आप को अच्छी तरह मालूम है। शहर में हमारे आदमी पूरी कामयाबी से अपना काम कर रहे हैं और

रज़ीअ ख़ातुन और उनकी बेटी शम्सुन निसा की कोशिशों से किले और महल के अन्दर का हर गोशा और हर राज़ हमारी नज़र में है।"

"सद आफ़रीन मेरे दोस्त!" सुल्तान अय्यूबी ने उठकर उसके गाल को थपकाया और कहा– "तुम्हें मालूम नहीं कि तुम जो इत्तलाअ लाए हो वह कितनी कीमती है। मुझे उम्मीद है कि फ़ौजों का अब इतना ख़ून खराबा नहीं होगा जितना मुहासिरे और हम्ले में होता।" उसने सालारों से मुख़ातिब होकर कहा–"अब हम तिल ख़ालिद का मुहासिरा नहीं करेंगे। फ़ौज उधर ही जाएगी। छापामारों का सिर्फ़ एक दस्ता मेरे साथ हरज़म की सिम्त जाएगा।"

❖

हरज़म एक ख़ूबसूरत जगह थी। हर तरफ सब्ज़ाज़ार, चश्मे और हरेभरे दरख़्त थे। हरयाली से ढकी हुई चट्टानें भी थीं। उस खित्ते को कुदरत ने तो हुस्न दिया ही था, आरमिनिया के बादशाह ने उसे आकर जन्नत अरज़ बना दिया था। शामियानों और कनातों ने महल का मंज़र बना दिया। उनके अन्दर रंगीन रोशनियों वाले फ़ानूस लटकाए गये थे। छः छः घोड़ों की बघियां भी थीं और मुहाफ़िज़ दस्ते के सवार और घोड़े तिलिस्माती सी शान के हामिल थे। रक़्स व सुरूद का ख़ास इन्तज़ाम था। आरमिनिया की सबसे ज़्यादा हसीन और नाचने वाली लड़कियां साथ लाई गयी थीं। हरम की मुन्तख़ब लड़कियों के ख़ेमे अलग थे। शाह आरमिनिया ने मरवीन के अमीर को वहाँ मदू कया था। मरवीन हरज़म के करीब ही एक इलाक़ा था जिसका अमीर कुतुबुद्दीन ग़ाज़ी था। मरवीन उसकी जागीर थी– शामियानों, कनातों और ख़ेमों से कुछ दूर शाह आरमिनिया की दो दस्ते फ़ौज ख़ेमाज़न थी।

शाह आरमिनिया अमीर मरवीन के साथ दो तीन रोज़ शिकार खेलता रहा, फिर एक रोज़ वालिये मुसिल अज़ाउद्दीन आ गया। उसके साथ भी अपनी फ़ौज के दो मुन्तख़ब दस्ते थे। रात को रक़्स व सुरूद की महफ़िल जमी। शराब की सुराहियां खाली हुई, औरत और शराब ने वह कैफ़ियत पैदा कर दी कि यह मुसलमान हुक्मरान, उनके उमरा वुज़रा और सालार क़िब्लाअव्वल के साथ ख़ानाकाबा को भी भूल गये। रात ऐश व ईशरत में गुज़ार कर वह सारा दिन गहरी नींद सोए रहे। उस रात जब वह शराब और औरत के नशे में मख़मली कालीनों पर रंगीन फ़ानूस के नीचे बदमस्त हो रहे थे, उस रात सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी वहाँ से दो ढाई मील दूर छापामारों के एक दस्ते के साथ पत्थरीली जमीन पर सोया हुआ था। उसने छोटा सा सफ़री ख़ेमा साथ रखा ताकि नस्ब करने और गाड़ने में ज़्यादा वक़्त सर्फ़ न हो। वह यहाँ सुल्तान नहीं छापामार बन के आया था।

उसने ख़ानाबदोशों के बहरूप में अपने जासूस हरज़म के उस शाहाना कैम्प का जायज़ा लेने और तमाम हर ज़रूरी मालूमात हासिल करने के लिए भेज दिए थे। उनमें फ़हद भी था। उसने फटे पुराने कपड़े पहन रखे थे। यह तीन चार जासूस अपने ऊटों की मुहारें पकड़े कैम्प के इर्द गिर्द घूमते रहे थे। उन्हें कोई वहाँ से हट जाने को कहता तो वह हाथ फ़ैलाकर खाने की भीख माँगते। फ़हद शाही शामियानों के क़रीब से गुज़िरह तो उसे वह नौजवान ख़ादिमा नज़र आई जिसने उसे रज़ीअ ख़ातुन का पैग़ाम दिया था। फ़हद ने उसे पहचान लिया। यह

लड़की अज़ाउद्दीन की ख़ुसूसी ख़ादिमा थी जो यहाँ भी उसके साथ आई थी।

फ़हद ने भीखारियों की तरह सदा लगाई– "शहज़ादी! आप का गुलाम सफ़र में है। कुछ खाने को मिल जाए।"

"भाग जाओ यहाँ से।" लड़की ने दूर से कहा– "वरना पकड़े जाओगे।"

"फहद को मुसिल में कोई नहीं पकड़ सका।" फहद ने अपनी असली आवाज़ में कहा– "तुम यहा पकड़वा दो।"

"ओह!" लड़की इधर उधर देखकर उसके क़रीब आ गयी–"तुम पहुंच गये हो? देख लो। मेरी ख़बर ग़लत तो नहीं थी.....लेकिन यहाँ न रूको। चले जाओ.....तुम रात कहां होंगे? आज रात शायद मैं जल्दी फ़ारिग़ हो जाउँ। बैठे मुद्दत गुज़र गयी है।"

"तुमने ही कहा था कि जज़्बात पर फ़र्ज़ को ग़ालिब न आने देना।" फ़हद ने कहा– "हमारा फ़र्ज अभी अदा नहीं हुआ। ज़िन्दा रहे तो मिलेंगे"

"तुमने सबकुछ देख लिया है?" लड़की ने पूछा– "सुल्तान कहाँ है?"

"सुल्तान जल्दी आजाएगा।" फ़हद ने जवाब दिया।

"ओए कौन है यह?" किसी की आवाज़ आई– "हटाओ इस बदबख़्त को यहाँ से।"

लड़की फ़हद को डाँटने लगी और फ़हद वहाँ से चला गया। लड़की एक ख़ेमे की ओट से उसे जाता देखती रही। इस ख़याल से उसके आँसू निकल आये कि फ़हद का फ़र्ज़ कैसा अज़ीयत नाक है और कितना ख़तरनाक। वह उस ख़ुबरू तनूमन्द नौजवान को दिल व जान से चाहती थी मगर वह चोरी छीपे मिलते थे तो अपने जज़्बात की कम और फ़र्ज़ की बातें ज़्यादा करते थे। कई मार्के जो उनकी फ़ौज ने जीते थे वह फ़हद और उस लड़की जैसे जासूसों की बदौलत जीते थे। यह दुश्मन के घर में रहकर ज़मीन दोज़ मार्का लड़ते थे। उनकी जान हर लम्हा मौत के मुँह में रहती थी। उस नौजवान और हसीन ख़ादिमा के जज़्बात उबल आए। अगर उसका फ़र्ज़ रास्ते में हायल न होता तो वह फ़हद को यूं मारा मारा फिरने न देती। वह जानती थी कि फ़हद इतन पथरीली वादियों में कहीं सो जाता होगा।

"हम ख़ुदा के हुज़ूर मिलेंगे।" लड़की ने औपने आप से कहा और अपने काम को चली गयी।

रात का पहला पहर था। आज रात हरज़म के शाही कैम्प में कोई गाना बजाना नहीं था। ख़ामोशी तारी थी। शाह आरमिनिया के शामियाने में उसके पास अज़ाउद्दीन और अमीर मरदीन कुतुबुद्दीन ग़ाज़ी बैठे थे। अज़ाउद्दीन कह रहा था– "इसमें किसी शक की कोई गून्जाईश नहीं रही कि सलाहुद्दीन अपनी सल्तनत वसीअ कर रहा है। अगर हम उसके इत्तेहादी बन जाएं तो वह हमें अपना अमीर बनाकर रखेगा। हम ख़ुद मुख़्तार नहीं होंगे। हाल ही मैं वह मुसलमान उमरा के कई क़िलों पर क़ब्ज़ा कर चुका है और उसके फ़ौजी ताक़त के ख़ौफ से यह तमाम उमरा और किलादार उसकी इताअत क़ुबूल कर चुके हें। अगर मैंने उसे न रोका तो वह सिर्फ़ मुसिल पर नहीं, हलब पर भी हाथ साफ़ करने की कोशिश करेगा मगर मैं अकेला उसके ख़िलाफ़ नहीं लड़ सकता। इमादुद्दीन मेरे साथ है लेकिन इस सूरत में कि

सलाहुद्दीन अपनी फ़ौज लूटेरों की तरह लिए दनदनाता फिर रहा है, इमादुद्दीन को अपनी फ़ौज हलब से नहीं निकालनी चाहिए। हलब का दिफ़ाअ ज़्यादा ज़रूरी है। क्योंकि यह मुक़ाम बहुत अहम है।"

"मैं जानता हूँ।" शाह आरमिनिया ने कहा–"सलीबियों की भी नज़रें हलब पर लगी हुई हैं।"

"इसीलिए सलीबियों के साथ कोई मुआहिदा नहीं करना।" अज़ाउद्दीन ने कहा– "वह हम से मदद के एवज़ में हलब माँगेगे।"

"और वह ज़रूर मागेंगे।" कुतुबुद्दीन ग़ाज़ी ने कहा– "मैं बेहतर यही समझता हूँ कि आप को आपस में कोई मुआहिदा कर लेना चाहिए। आप दोनों की फ़ौजें मिल कर सलाहुद्दीन अय्यूबी को शिकस्त दे सकती हैं।"

"मुझे मालूम हुआ है कि सलाहुद्दीन की फ़ौज तिल ख़ालिद की तरफ़ जा रही है।" अज़ाउद्दीन ने कहा।

"मेरी उसके साथ कोई दुश्मनी नहीं।" शाह आरमिनिया ने कहा– "मेरा ख़्याल है कि वह मेरी सरहदों से दूर रहेगा। मैंने उसकी पेशक़दमी की सिम्त का जायज़ा लियाहै। वह कहीं और जा रहा है।"

"मुझे सलीबियों पर भरोसा नहीं।" अज़ाउद्दीन ने कहा– "वह मुझे हर तरह की मदद देते हैं लेकिन जंग सिर्फ़ सामान और मुशीरों से नहीं लड़ी जा सकती। मैं उन्हें कहता हूँ कि मैं सलाहुद्दीन की फ़ौज को जंग में उलझा लेता हूं और वह उस पर हम्ला कर दें। मैंने उन्हें यह मश्वरा भी दिया था कि वह दमिश्क़ और बग़दाद को मुहासिरे में ले लें। अगर वह ऐसा करें तो सलाहुद्दीन हमारे इलाक़ों से निकल जाएगा मगर वह न जाने क्या सोच रहे हैं।"

"वह हम सबको अपना महकूम बनाने की सोंच रहे हैं।" शाह आरमिनिया ने कहा–"सुल्तान अय्यूबी न रहा तो सलीबी हमें खा जाएंगे। हमें उनपर भरोसा करना ही नहीं चाहिए।"

"फ़िर आप मेरी मदद करें।" अज़ाउद्दीन ने कहा– "मैं आगे बढ़ कर सलाहुद्दीन से लड़ता हूँ। आप उस पर हम्ला करें।"

इस मौज़ूअ पर वह बहुत देर तबादला ख़्याल करते रहे। आख़िर शाह आरमिनिया ने इस शर्त पर अज़ाउद्दीन की तजवीज़ मान ली कि उसकी फ़ौज के इन्सानों और जानवरों की ख़ुराक की ज़िम्मेदारी अज़ाउद्दीन ले। अज़ाउद्दीन ने यह शर्त मान ली और तय हुआ कि अज़ाउद्दीन सुल्तान अय्यूबी के साथ आमने सामने की टक्कर लेगा और शाह आरमिनिया की फ़ौज सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज पर अक़ब से हम्ला कर देगी। अज़ाउद्दीन तजुर्बाकार जंगजू था। जंग लड़ना और लड़ाना जानता था। उसने वहीं जंग की मंसूबाबन्दी कर ली।

❖

आधी रात से कुछ देर पहले का ज़िक्र है। जब अज़ाउद्दीन और शाह आरमिनिया जंग का प्लान बना रहे थे रात घोड़ों के टापों से लरज़ने लगी। शाह आरमिनिया ने दरबान को बुलाकर ग़ुस्से से कहा–"यह जिन सवारों के घोड़े खुल कर भाग रहे हैं उन्हें सुबह यहाँले

आओ। बदबख़्त बेख़बरी की नींद सोते हैं।"

मगर यह घोड़े उसके दस्ते के नहीं थे। यह सुल्तान अय्यूबी के छापामार सवार थे जिनकी तादाद चालिस और पचास के दर्मियान थी। यह उनका शबख़ून था। ज़िरह सी देर में बाहर क़यामत बपा हो गयी। छापामार दो हिस्सों में तक़सीम होकर सरपट आये और गुज़र गये। उनके हाथों में मशालें थीं जिनसे वह फ़ौज के ख़ेमों को जलाते गुज़र गये। कई ख़ेमों को आग लग गयी थी। सोय हुए सिपाही हड़बड़ा कर उठे। फ़ौरन बाद सवारों की एक और मौज आई जो बरछियों और तलवारों से अपने सामने आने वालों को काटते गुज़र गये। जलते हुए ख़ेमों ने रौशनी कर दी थी। फिर तीरों का मेंह बरसने लगा। उनमें जलते फलीतों वाले तीर भी थे। बंधे हुए घोड़ों और ऊंटों का वह ग़ुल कि दहशत तारी हुई जा रही थी। ज़ख्मियों की चीख़ व पुकार क़यामत ख़ेज़ थी।

फिर जानवरों के रस्से खुल गये। घोड़े और ऊंट डर कर इधर उधर दौड़ने लगे। उस ग़ुल ग़पाड़े और चीख़ पुकार में कैम्प के इर्द गिर्द से बुलन्द आवाज़ सुनाई दे रही थीं– "हथियार डाल दो। अज़ाउद्दीन हमारे सामने आ जाओ। शाह आरमिनिया तिल ख़ालिद हमारे मुहासिरे में है।"

उनमें से कोई भी सामने न आया। अज़ाउद्दीन ने अपने एक वफ़ादार कमानदार से कहा कि वह उसे एक घोड़ा ला दे। बड़ी मुश्किल से उसे घोड़ा दिया गया। वह सवार हुआ और अफ़रा तफ़री के इस क़यामत ख़ेज़ आलम में निकल गया। उसने अपने दस्तों की, अपने ज़ाती अम्ले की और अपने साथ जो लड़कियां लाया था, उनकी परवाह न की। जान बचाकर भाग गया।

उस दौर का एक वक़ाअ निगार असदुल असदी लिखता है कि सुल्तान अय्यूबी घेरा तंग करके उन हुक्मरानो को गिरफ़्तार कर सकता था लेकि उसने मसलेहतन ऐसा इक़्दाम न किया। इसकी वजह यही हो सकती थी कि वह उन हुक्मरानों को अपना इत्तेहादी बना कर उनकी फ़ौजों को फ़तह फ़िलिस्तीन के लिए इस्तेमाल करना चाहता था। वजह ख़्वाह कुछ और ही थी, फ़रवरी 1183 ई का यह मार्का सुल्तान अय्यूबी ने छापामारों से इसी तरह लड़ाया उसने आगे बढ़कर किसी को गिरफ़्तार करने की कोशिश ही न की। उस शबख़ून की निगरानी उसने ख़ुद की थी।

शाह आरमिनिया ने भागने की बजाए वहीं रूके रहना मुनासिब समझा। रात गुज़र गयी। सुबह हुई तो कैम्प में जले हुए ख़ेमो की राख़ बिखरी हुई थी। लाशें पड़ी हुई थीं। ज़ख़्मी तड़प रहे थे। घोड़े और ऊंट इधर उधर घूम फ़िर रहे थे। हम्लावरों का कुछ पता न था कहाँ हैं। शाह आमिनिया जानता था कि सुल्तान अय्यूबी यहीं कहीं क़रीब ही होगा। वह सोंचने लगा कि सुल्तान अय्यूबी को कहाँ तलाश करे। इतने में उसे दो सवार आते नज़र आए। वह शाह आरमिनिया के सामने आकर उतरे और सलाम किया। वह सुल्तान अय्यूबी के फ़ौजी हुकाम थे।

"सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने सलाम भेजा है।" एक ने कहा– "उन्होंने कहा है कि वह

किसी को गिरफ़्तार करने का इरादा नहीं रखते। अज़ाउद्दीन वापास मुसिल चला जाए और आराम से बैठ कर सोंचे और शाह आरमिनिया के लिए सुल्ताने मोहतरम ने पैगाम दिया है कि उनकी फौज तिलखालिद के क़रीब पहुँच गयी है। आप को शाम तक वहाँ से इत्तेलाअ मिल जाएगी। आप के पहुंचने तक आप का दारूलहुकूमत हमारे क़ब्ज़े में होगा। अगर आप सुल्तान ने शाम व मिस्र की शराईत कुबूल कर लें तो तिल ख़ालिद से फ़ौज वापस जा सकती है। अगर आप मुकाबल का फ़ैसला करते हैं तो नताइज पहले ज़ेहन में रख लें। हमें पैग़ाम का जवाब दें। आप हमारे मुहासिरे में हैं।"

"सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी को मेरा सलाम कहो।" शाह आरमिनिया ने कहा– "मैं अपने एक वज़ीर को शाम से पहले सुल्तान के पास भेज रहा हूँ।"

दोनों सवार चले गये। शाह आरमिनिया का यह वज़ीर बक्तैमूर था जो उसके साथ था। शाह आरमिनिया ने उसे कहा कि हमें उन लोगों के इख़्तलिफ़ात और आदवत में पड़ने की ज़रूरत नहीं। उधर तिल ख़ालिद मुहासिरे में है और हम यहाँ हैं। जाओ और सलाहुद्दीन से कहो कि अपनी फ़ौज को वापस बुलाए। हम उसके किसी दुश्मन के साथ कोई मुआहिदा और कोई इत्तेहाद नहीं करेंगे।"

बक्तैमूर दानिशमंद वज़ीर था। उसने सुल्तान अय्यूबी के साथ बात की। सुल्तान अय्यूबी ने बड़ी सख़्त शराईत पेश कीं और मनवालीं। बक्तैमूर ने तहरीरी वादे दे दिया कि शाह आरमिनिया की फौज सुल्तान अय्यूबी के किसी दुश्मन की मदद को नहीं जाएगी। सुल्तान अय्यूबी ने मुहासिरा उठा लिया और शाह आरमिनिया से मिले बेग़ैर तिलखालिद को रवाना हो गया।

❖

एक और अहम मुकाम दयारे बकर था जो उस ज़माने में अमीदा कहलाता था। उस मकाम को जंगी अहमियत हासिल थी और उसकी अहमियत यह भी थी कि उसके गिर्दोनवाह के इलाके के लोग जंगजू और फ़ने सिपहगीरी के माहिर थे। सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज में बहुत से सिपाही इसी इलाके के थे। अपनी फ़ौज की कमी सुल्तान इसी इलाके से पूरी किया करता था। यहाँ के लोग तो सुल्तान अय्यूबी के हामी थे मगर उनके हुक्मरान अपनी हुक्मरानी कायम रखने की ख़ातिर सुल्तान अय्यूबी का मुख़ालिफ़ था और मुसलमान होते हुए सलीबियों के साथ दरपरदा दोस्ती की कोशिश में था।

सुल्तान अय्यूबी ने अपनी फ़ौज को दयार बकर की तरफ़ पेशक़दमी का हुक्म दिया। यह बर्क रफ़्तार पेशक़दमी थी। सुल्तान अय्यूबी ने अपने सालारों को इतना ही बताया था कि दयारे बकर को मुहासिरे में लेकर उस जगह पर क़ब्ज़ा करना है और फ़तह की सूरत में वहाँ के मौजूदा अमीर की कोई शर्त तस्लीम नहीं की जाएगा और कोई रहम नहीं किया जाएगा।

"मेरा ख़्याल है कि इन उमरा पर ज़ुल्म न किया जाए।" एक सालार ने कहा– "उनकी अफ़वाज को अपनी फ़ौज में शामिल करे उन्हें बराए नाम अमीर रहने दिया जाए।"

"मैं अब किसी सांप को क़ौम की आस्तीन में नहीं पलने दूंगा।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा–

"मुझे इत्तलाअ मिली हैं कि यह शख़्स अपने इलाके के लोगों को हमारी फ़ौज में शामिल होने से रोक रहा है और वह खिलाफ़त के खिलाफ़ कार्रवाइयाँ कर रहा है। हमेशा याद रखो कि मरकज़ से खुद मुख़्तारी माँगने वाले या दरपरदा कोशिशों से अलग होने वाले ग़द्दार होते हैं और यह ग़द्दार बहुत ख़तरनाक होते हैं क्योंकि वह कौम के दुश्मन से मदद लेते और अपनी कौम यानी खिलाफ़त के खिलाफ़ इस्तेमाल करते हैं। मैं इन लोगों का सर कुचल देना चाहता हूँ ताकि जब आप असली दुश्मन यानी सलीबी आप के सामने आयें तो आप की पीठ पीछे से कोई वार करने वाला न हो और कोई साँप ज़मीन से निकल कर आपके डंक न मार सके। दयारे बकर अल्लाह के सिपाहियों का ख़ित्ता है। हमारी फौज की एक चौथाई नफरी इसी खित्ते की है। अगर हमने उन जंगजूओं के ग़द्दार हुक्मरान को बख़्श दिया तो इस खित्ते के लोगों का ईमान भी तबाह हो जाएगा और फ़ने सिपाहगीरी भी......

"सारी कौम या किसी मुल्क के तमाम लोग ग़द्दार या बेईमान नहीं हुआ करते। हुक्मरान अगर ईमान फ़रोश हो तो कौम के जौहर ख़त्म हो जाते हैं। अच्छी भली कौमें बेवक़ार हो जाती हैं। जज़्बे मर जाते हैं और फिर कौमें आज़ाद कौमों की तरह ज़िन्दा नहीं रहतीं। हमें अपने इस किस्म के हुक्मारानों को ख़त्म करना है और सल्तनते इस्लामिया का एक मरकज़ बनाना है। आपने देखा है कि ख़िलाफ़ते बग़दाद मफ़लूज होकर रह गयी है। अगर खिलाफ़त का हुक्म चलता तो हमें फ़ौज कशी न करनी पड़ती। यह फ़ौज का फ़र्ज है कि मुल्क के अन्दर इन्तेशार को और नाअहल और ईमान फ़रोश हुक्मरान को ख़त्म करे। मैं फिर वही अल्फ़ाज़ दुहराता हूँ कि तारीख़ यही कहेगी कि छठी सदी हिजरी की फ़ौज निकम्मी थी जिसने न खिलाफ़त का वक़ार बहाल किया न दुश्मन को शिकस्त दिया।

❖

दयारे बकर का मुहासिरा इतनी तेजी से हुआ कि अन्दर वालों को मुज़ाहमत की मुहलत न मिली। सुल्तान अय्यूबी ने हिदायात जारी की थी कि शहरियों का नुक़सान कम से कम हो। अन्दर अपने जासूस मौजूद थे और सुल्तान अय्यूबी खुद भी शहर से और हुक्मरान के महल और हैडक्वार्टर से वाकिफ़ था। इसलिए मिन्जनिकों से जो पत्थर और आतिशगीर सयाल की जो हाँडियाँ फेंकी गयीं वह सरकारी इमारतों पर फेंकी गयीं। बाहर से ऐलान किये गये कि अमीर हथियार डाल कर बाहर आ जाए लेकिन क़िले की दिवारों पर खड़े अमीर ने जवाबी ऐलान कराया कि हथियार नहीं डाले जाएंगे। लड़ो और शहर ले लो।

दयारे बकर की फौज ने जम कर मुक़ाबला किया। सुल्तान अय्यूबी मुहासिरे का माहिर था लेकिन उसने मज़ाहमत देखी तो समझ गया कि यह मुहासिरा तूल पकड़ेगा और उसके लिए कुछ ज़्यादा ही कुर्बानी देनी पड़ेगी। दिवार तोड़ने वाले अफ़राद रात की तारीकी में दिवार तक पहुंच गये लेकिन उपर से उन पर आग फेंकी गयी और वज़नी पत्थर भी फेंके गये। बड़े दरवाज़े पर मिन्जनिकों से आतिशगीर सयाल की हाडियाँ फेंक कर फ़लीते वाले तीर मारे गये जिससे दरवाज़े का लकड़ी का हिस्सा जल गया मगर उनका लोहे का ढाँचा घना था जिसमें से गुज़रना मुम्किन नहीं था ताहम गुज़रने की कोशिश की जा सकती थी।

फ़िज़ा में तीर उड़ रहे थे।

सुल्तान अय्यूबी हैरान था कि अन्दर वाले ऐसा सख़्त मुक़ाबला क्यों कर रहे हैं। यह राज़ बाद में खुला कि अमीर दयारे बकर ने मुहासिरे की इत्तलाअ मिलते ही शहर में एलान कराया था कि सलीबियों ने शहर का मुहासिरा कर लिया है। इस ऐलान पर शहर के लोग लड़ने और मरने के लिए तैय्यार हो गये थे और उन्होंने फ़ौज के दोश बदोश शहर की दिवार पर आकर मुहासिरा करने वालों पर तीररों और बरछियों का मेंह बरसा दिया। यह देखा गया था कि चारों तरफ़ दिवार पर फ़ौज के साथ शहरी भी थे। शहर के लोगों का हौसला बुलन्द था लेकिन सुल्तान अय्यूबी ने शहरियों को लड़ते देखकर भी यह हुक्म न दिया कि शहर पर आग बरसाई जाए।

मुहासिरा आठ रोज़ जारी रहा। ज़्यादा तर नुक़्सान सुल्तान अय्यूबी के फ़ौज का हो रहा था क्योंकि उसकी टोलिया आगे बढ़ती और तीरों का निसाना बनती थीं। फ़िर एक मुअज्ज़िा हुआ। शहर की दिवार पर नारे गरजने लगे– "यह सलीबी नहीं हैं। यह सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी है। उनके झंडे देखो। मुसलमानों! तुम आपस में लड़ते हो।" तब सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज में दयार बकर के इलाके के जो सिपाही कमानदार थे, उन्होंने बुलन्द आवाज़ से पुकारना शुरू कर दिया– "हम तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई हैं। दरवाज़ा खोल दो।"

यह इन्कशाफ़ भी बाद में हुआ था कि शहर के अन्दर सुल्तान अय्यूबीके जो जासूस और कारिन्दे थे, उन्होंने भाग दौड़ कर लोगों को बताया था कि मुहासिरा करने वाले सलीबी नहीं मुसलमान हैं और यह सुल्तान अय्यूबी है। यह मुहिम आसान नहीं थी। जासूस अज़ादी से लोगों को सरकारी ऐलान के खिलाफ़ कुछ कह नहीं सकते थे। इस मुहिम में दो जासूस पकड़े भी गये थे। उन्होंने कामयाबी हासिल कर ली। नौवें रोज़ अन्दर की फ़ौज और शहरियों की सोंच और जज़्बात बदल गये थे। शहरियों ने हुक्मरान और उसके हाशियाबरदारों की धमकियों और चीख व पुकार की परवाह न करते हुए शहर के दरवाज़े खोल दिए। जब सुल्तान अय्यूबी शहर में दाख़िल हुआ तो शहर के लोगों ने बेताबी से नारे लगा लगा कर, उसका इस्तक़बाल किया। औरतों ने मुंडरेरों और दरीचों से उस पर और उसकी फ़ौज पर अपने दूपट्टे और रूमाल फेंके।

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने दयारे बकर के अमीर को शहर से निकल ज़ाने का हुक्म दिया और यह शहर नुरूद्दीन इब्ने क़ारा अरसलान और एक और अमीर को दे दिया। क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद ने उसका नाम इब्ने निक्न लिखा है जो नुरूद्दीन के ही ख़ानदान का फ़र्द था। सुल्तान अय्यूबी ने उन्हें ज़रूरी हिदायात दीं। वहाँ की फ़ौज को अपनी फ़ौज का हिस्सा बनाया और हुक्म दिया कि इस इलाक़े से मज़ीद फ़ौज तैय्यार की जाए।

मई 1183 ई0 (579 हि0) में सुल्तान अय्यूबी ने दयारे बकर को अपनी अलमबरदारी में लिया और हलब की सिम्त कूच किया। उसके सबसे बड़े दुश्मन हलब का वालिये इमादुद्दीन और मुसिल का वालिये अज़ाउद्दीन थे। अब वह उनकी तरफ़ तवज्जो देना चाहता था। ❖❖

न मैं तुम्हारी, न मिस्र तुम्हारा

फ़्हत हासिल करके कौन ख़ुश नहीं होता? सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी को किसी मार्के, मुहासिरे या बड़ी जंग में फ़तह होती थी तो उसके चेहरे पर नुरानी सी रौनक आ जाती थी। उसकी फौज जैश जश्न मनाती, सिपाही रक़्स करते, गाते और रातों को सोते थे। बकरे, दुंबे और ऊंट जबह होते। सिपाही ख़ुद पकाते और सुल्तान अय्यूबी उनके लिए मशरूबात के मटके खोल दिया करता था, मगर 1183 ई0 (579 हि0) के दौरान उसके चेहरे पर रौनक़ नहीं थी न ही उसकी फ़ौज जश्न मना रही थी हालांकि उसने एक साल के अर्से में मुतअदद किले सर कर लिए और शाह आरमिनिया जैसे ताक़तवर हुक्मरान से शिकस्त के अहदनामें पर दस्तख़त कराके उससे अपनी शराईत मनवा ली थीं।

मोअर्रिख़ों ने उस दौर को सुल्तान अय्यूबी की फ़ुतूहात का दौर कहा है मगर उसकी जज़्बाती कैफ़ियत यह थी कि जैसे हर फ़तह के बाद उसके चेहरे पर बुढ़ापे की एक लकीर का इज़ाफा हो गया हो। यह लकीरें बूढ़ापे और उदासी की थीं। वह इनमें से किसी एक फ़तह और किसी कामयाबी पर भी ख़ुश न था। उसे जब छापामारों का सालार सारिम मिस्री फ़ातेहाना अन्दाज़ से रिपोर्ट देता था कि गुज़िश्ता रात छापामारों ने फ़लाँ जगह शबख़ून मार कर दुश्मन को इतना नुक़सान पहुँचाया है तो सुल्तान अय्यूबी आहिस्ता से सर हिलाकर उसे ख़िराजे तहसीन पेश करता और फिर उसका सर यूं झुक जाता था जैसे उसके ज़मीर पर ऐसा बोझ आपड़ा हो जो उसकी बर्दाश्त से बाहर हो।

"मुझे मुबारकबाद उस रोज़ कहना जिस रोज़ तुम सीलीबियों को शिकस्त दोगे।" एक रोज़ सुल्तान अय्यूबी ने अपने सालारों से कहा–" वह उसे दयारे बकर की फ़तह के बाद मुबारकबाद कहने आऐ थे। उस रोज़ तो उसकी आँखें लाल हो गयीं जैसे वह आँसूओं को रोकने की कोशिश कर रहा हो। उसने कहा– "तुम महसूस नहीं कर रहे कि हम घरों से निकले थे सलीबियों को शिकस्त देने और उन्हें अपनी सरज़मीन से निकालने के लिए मगर उंगलियो पर गिनों कि तुम कितने वर्षों से अपने ही भाइयों से लड़ रहे हैं और हिसाब करो कि हम एक दूसरे का कितना ख़ून बहा चुके हैं। क्या तुम उसे फ़तह कहते हो? मैं इस ख़ानाजंगी में जो भी फ़तह हासिल करता हूँ वह मेरी और तुम्हारी नहीं सलीबियों की फ़तह होती है। जब दो भाई आपस में लड़ते हैं तो ख़ुशी और कामयाबी उनके दुश्मन को होती है। मैं उसे फ़तह नहीं कहता जो हमने अपने भाईयों पर हासिल की है।"

"सलीबी क्यों दुबक गये हैं?' एक़ सालार ने कहा– "हम आप को उनपर भी फ़तह हासिल करके दिखायेंगे।"

"उन्हें वहाँ से निकलने की क्या ज़रूरत है जहाँ वह दुबककर बैठ गये हैं।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा—"जंग का पहला उसूल क्या है?..दुश्मन की अस्करी क़ुव्वत को तबाह करना। सलीबियो ने हमारी अस्करी कुव्वत को हमारे भाईयों के हाथों तबाह कराने का कामयाब इन्तज़ाम कर रखा है। हम आपस में लड़ लड़कर कमज़ोर होते जा रहे हैं और सलीबी इस सूरतेहाल से और इस वक़्त से फ़ायदा उठाते हुए रोज़ बरोज़ ताक़तवर होते जा रहे हैं। फ़िलिस्तीन पर उनका कब्ज़ा मज़बूत होता जा रहा है। हुक्मरानी सदा अल्लाह की है मगर हुक्मरानी का नशा इन्सान पर तारी होता है तो मज़हब और मिल्लत का वक़ार तो दूर की बात है, वह अपनी बेटियों को नंगा नचाने लगता है। झूठ और फ़रेबकारी को वह जायज़ और ज़रूरी समझने लगता है। सलीबी उम्मते रसूल मक़बूल सल्ल० को रियासतों में तक़सीम करते चले जा रहे और अल्लाह की फ़ौज को इन रियासतों में तक़सीम करके इस्लाम की अस्करी कुव्वत को पारा–पारा कर रहे हैं।"

"हमें इन इलाक़ों से फ़ौज के लिए बहुत भर्ती मिल रही है।" एक सालार ने कहा— "बड़े अच्छे सिपाही और सवार बड़ी ख़ुशी से आ रहे हैं।"

"लेकिन मुझे इसकी कोई ख़ुशी नहीं।" सुल्तान अय्यूबी ने सबको चौंका दिया। उसने कहा—"यह लोग सिर्फ़ इसलिए हमारी फ़ौज में भर्ती हो रहे हैं कि जिस शहर को फ़तह किया जाता है वहाँ हमारी फ़ौज लूट मार करती है और वहाँ से हसीन औरतें मिलती हैं।"

"हमने अपनी फ़ौज को ऐसी लूटमार और आबरूरेज़ी की इजाज़त कभी नहीं दी।" एक और सालार ने कहा।

"मगर हमारा दुश्मन हमारी फ़ौज के ख़िलाफ़ यही मशहूर कर रहा है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अपनी फ़ौज को लूट मार की और मफ़तूह की जवान लड़कियाँ उठा ले जाने की इजाज़त दे रखी है। दुश्मन ने हमारी फ़ौज के ख़िलाफ़ यह बेबुनियाद बातें इसलिए मशहूर कर रखी हैं कि ख़ुद मुसलमानों के दिलों में इस्लामी फ़ौज के ख़िलाफ़ नफ़रत पैदा हो जाए और हमें कहीं से भी लोगों का तआवुन न मिले बल्कि जिस शहर का मुहासिरा करें वहाँ के लोग मुसलमान होते हुए भी हमारी इस फ़ौज के ख़िलाफ़ लड़ें जो इस्लामी फ़ौज है और जो हर लिहाज से हिज़्बे अल्लाह कहलाने की हक़दार है। याद रखो मेरे दोस्तो! कौम बेग़ैर फ़ौज कौम के और फ़ौज के वालिहाना तआवुन के बेग़ैर दुश्मन के लिए आसान होती है। अपने दुश्मन को पहचानो। तुम्हारा दुश्मन दानिशमंद है। उसने हमारी कौम और फ़ौज में मुनाफ़िरत पैदा करने का बड़ा अच्छा इहतिमाम किया है। कुर्आन ने सीसा पिलाई हुई दिवार बन जाने का हुक्म सिर्फ़ कौम या सिर्फ़ फ़ौज को नहीं दिया। सीसा पिलाई दिवार कौम और फ़ौज मिल कर बनती है। इस दिवार में शगाफ़ डालने की यह तरीक़ए कार है कि फ़ौज को नाअहल, बुज़्दिल, ज़ानी और डाकू कह कर कौम की नज़िरहें से गिरा दिया जाए।"

"दयारे बकर के लोगों पर तो ऐसा कोई असर नहीं देखा।" सारिम मिस्री ने कहा—"उन्हें ज्योंहि पता चला कि मुहासिरा करने वाले हम हैं और उनका हुक्मरान अपनी फ़ौज को इस्लामी फ़ौज के ख़िलाफ़ लड़ा रहा है तो लोगों ने शहर के दरवाज़े खोल दिए थे।"

"यहां हमारे जासूस ज़्यादा तादाद में थे। सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "वहाँ की तामाम बड़ी मस्जिदों के इमाम हमारे आदमी थे। उन्होंने वहाँ के लोगों को सिर्फ़ नमाज़ रोज़ा और हज, जकात के वाअज नहीं दिए। उसके साथ ही वह लोगों को सलीबियों के अज़ाइम और अपने ईमान फ़रोश उमरा और हाकिमो के मुतअल्लिक भी बताते रहे हैं और यह भी कि जब एक मुसलमान दूसरे का खून बहता है तो अर्श मुअल्ला लरज़ जाता है और खुदा उस बस्ती पर अपना क़हर नाज़िल करता है जहाँ के मुसलमान मुसलमान के ख़िलाफ़ लड़ते और खून बहाते हैं तुम्हें यह मालूम नहीं कि दयारे बकर में सलीबियों के जासूस और तख़रीबकार भी दरवेशों, सूफ़ियों और आलिमों के बहरूप में मौजूद थे और नज़रयाती तख़रीबकारी कर रहे थे लेकिन हमारे आदमियों ने उनमें बाज़ को ख़ुफ़िया तरीक़ों से अग़वा और क़त्ल किया और उनकी आवाज़ को बेकार कर दिया, मगर हम इस वक़्त जिस इलाक़े में हैं यहाँ सलीबियों की तख़रीबकारी कामयाब हो रही है।"

"यह जो सिपाही और सवार लूट मार के लालच से भर्ती हो रहे हैं क्या यह पूरी फ़ौज को ख़राब नहीं करेंगे?" सालार ने पूछा।

"तुम ने देखा नहीं कि उन्हें किस क़िस्म की तरबियत दी जा रही है?" सुल्तान अय्यूबी ने कहा–"मैंने तुम्हें तरबियत और जंगी मश्कों का जो नया तरीका बताया है वह उन्हें सही सोच पर ले आयेगा। मैं फ़ौज में उनकी तकसीम ऐसे तरीके से कर रहा हूँ कि यह फौज नहीं बल्कि फ़ौज पर असर अन्दाज़ होगी। तुम बहुत जल्दी मेरा यह तहरीरी हुक्म भी देख लोगे कि मफ़तूहा इलाक़े में अपना कोई सिपाही लूट मार करता या किसी औरत पर हाथ डालता देखा जाए तो उसे तीर का निसाना बना दिया जाए या क़रीब जाकर उसकी गर्दन उड़ा दी जाए। दुश्मन के बेबुनियाद इल्ज़मात को ग़लत साबित करने का यही एक तरीक़ा है कि फ़ौज अपने किरदार से मफ़तूह लोगों पर अपनी क़ौम पर भी दिल मोह लेने वाला असर पैदा करे। मुझे यही ख़तरा नज़र आ रहा है कि सलीबी और यहूदी हर दौर में इस्लाम की फ़ौज और क़ौम के दर्मियान मुनाफिरत पैदा करने की कोशिश करते रहेंगे। क़ौम की किरदाकुशी अलग और फ़ौज की अलग करेंगे और इसतरह दोनों का ईमान और क़ौमी जज़्बा बरबाद करके उन्हें एक दूसरे का दुश्मन बनाये रखेंगे। यह काम वह मुसलमान के हाथों करायेंगे।"

❖

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी दरियाये फ़रात के किनारे ख़ेमा ज़न था। उसने कई एक छोटी–छोटी मुसलमान रियासतों के हुक्मरानों को मतीअ बना लिया और मुतअदद क़िलों पर क़ब्ज़ा कर लिया था। यह वह मुसलमान हुक्मरान थे जो दरपरदा सलीबियों के दोस्त और सुल्तान अय्यूबी की मुख़ालिफ़ थे। सुल्तान अय्यूबी की मंज़िल बैतुल मुक़द्दस थी जिसपर सलीबियों ने क़ब्ज़ा करके उसे योरूशलम का नाम दे रखा था मगर अपने मुसलमान हुक्मरान और उमरा सुल्तान अय्यूबी के रास्ते में हायल हो गये थे। सुल्तान अय्यूबी फ़ौज को चन्द दिन आराम देने के लिए फ़रात के किनारे रुक गया था। वहाँ घोड़ों, ख़च्चरों, ऊंटों और रस्द की कमी पूरी की जा रही थी।

सूरज ग़ुरूब होने से कुछ देर पहले सुल्तान अय्यूबी फ़रात के किनारे टहल रहा था। उसके साथ घोड़ सवार दस्तों का सालार और छापमार दस्तों का सालार सारिम मिस्री था। उन से कुछ दूर सफ़ेद जुब्बे मे मलबूस एक आदमी खड़ा था जिसने दुआ के लिए हाथ उठा रखे थे। सुल्तान अय्यूबी उधर चल पड़ा। क़रीब पहुंचा तो देखा कि वहां चार क़ब्रें हैं। उनमे से एक क़ब्र के सिरहाने एक डंडा गड़ा था और उसके साथ लकड़ी की एक तख़्ती जिस पर लाल रंग से अरबी ज़ुबान में लिखा था:

उमरूल ममलूक
अल्लाह तेरी शहादत क़ुबूल करे
नस्रूलममलूक

उसके साथ की क़ब्र पर भी ऐसी ही तख़्ती लगी हुई थी जिस पर उसी क़िस्म की लाल

तहरीर थी!
नस्रूलममलूक
अल्लाह मेरी शहादत क़ुबूल करे।

सुल्तान अय्यूबी ने दोनों तहरीरें पढ़ी और उस आदमी की रफ़ देखा जो क़ब्रों पर फ़ातिहा पढ़ रहा था। वह वज़अ और लिबास से आलिम फ़ाज़िल लग रहा था। सुल्तान अय्यूबी ने उसकी तरफ़ देखा तो उसने ज़िरह झुक कर कहा– "मैं इस गांव का इमाम हूं। जहां कहीं पता चलता है कि शहीद की क़ब्र है वहाँ चला जाता हूँ और फ़ातिहा पढ़ता हूँ। मेरा यह अक़ीदा है कि जिस जगह शहीद के ख़ून का क़तरा गिरता है वह जगह मस्जिद जितनी मुक़द्दस हो जाती है। मैं लोगों को यही बताया करता हूं कि मुजाहिद वह अज़ीम शख़्सियत है जिसके घोड़े के सुम्मो की उड़ाई हुई गर्द का एहतराम ख़ुदा ने भी किया है और जिहाद फ़ी सबीलील्लाह को ख़ुदाए ज़ुलजलाल ने अफ़ज़ल इबादत कहा है।"

"मगर अल्लाह के नाम पर जाने कुर्बान करने वाले ऐसे ही गुमनाम होते हैं जिनकी क़ब्र आप देख रहे हैं। तारीख़ में उनका नहीं मेरा नाम आयेगा मगर मुझे अज़मत देने वाले यह लोग थे।" उसने अपने सालारों की तरफ़ देखा और क़ब्रों की दोनों तख़्तियों पर हाथ फेर कर कहा– "यह अलफ़ाज़ रंग में उंगली डूबा कर लिखे गये हैं। लिखने वाला एक ही आदमी मालूम होता है।"

"लाल रंग नहीं सुल्ताने मोहतरम!" छापामार दस्तों के सालार सारिम मिस्री ने कहा– "यह ख़ून है। उमरूल मुलुक की कब्र की तख़्ती नस्रूलमुलुक ने अपने ख़ून से लिखी थी और उसने अपने ही ख़ून से अपनी कब्र की भी तख़्ती लिखी और शहीद हो गया था। सोलह सत्तरह दिन गुज़रे रात को दरिया से हमने एक बहुत बड़ी कश्ती पकड़ी थी जिसमें दुश्मन के छापामारों के लिए रस्द जा रही थी। आप को उस की इत्तलाअ दी गयी थी। यह कश्ती हमारे आठ छापामारों ने पकड़ी थी। उनमें से यह चार शहीद हो गये थे। हमें पहले इत्तलाअ मिल गयी थी कि एक बड़ी क़श्ती रात को गुज़रेगी जिसमें दुश्मन की रस्द और अस्लेहा होगा। मैंने अपने आठ छापामार भेजे। यह एक छोटी सी कश्ती में थे......

"आधी रात दूसरे किनारे के साथ-साथ वह कश्ती जा रही थी। हमें इत्तलाअ मिली थी कि उसमें चार पांच आदमी होंगे लेकिन हमारे छापामरों की कश्ती उसके करीब गयी तो उसमें कम व बेश बीस आदमी थे। इससे पहले कि हमारे छापामार दुश्मन की कश्ती में कूद जाते। दुश्मन के आदमी जो तलवारों से मुसल्लह थे, हमारी कश्ती में कूद आए। हमारे यह छापामार दरियाई छापों का तजुर्बा रखते थे। वह अपनी कश्ती से दरिया में कूदे और दुश्मन की कश्ती पर चढ़ कर उसके बादबानों के रस्से काट दिए। दोनों कश्तियों में ख़ूंरेज़ मार्का लड़ा गया। हमारे छापामारों ने बड़ी कश्ती से अपनी कश्ती पर तीर फेंके जिसमें दुश्मन के आदमी थे। बहरहाल हमारे जांबाज़ अकल और दाव पेच से मार्का लड़कर दोनों कश्तियां ले आए। दुश्मन के आदमी जो मरे नहीं थे दरिया में कूद कर दूसरे किनारे पर चले गये......

"कश्तियां किनारे लगीं। मुझे इत्तलाअ मिली तो मैं उन्हें देखने गया। सुबह तुलूअ हो रही थी। एक कश्ती में उमरूल ममलूक की और उसके दो साथियों की लाशें थीं और बाकी सब ज़ख़्मी थे। नस्रूलमलूक सबसे ज़्यादा ज़ख़्मी था। दो गहरे ज़ख़्म बरछी के और तीन ज़ख़्म तलवार के थे। वह होश में था। मरहम पट्टी के लिएले गये तो उसने मुझ से कहा कि उसे एक तख़्ती दी जाए जो वह अपने दोस्त की क़ब्र पर लगाना चाहता है। मैंने तरखानों से उसे तख़्ती मंगवा दी। उस दौरान उसने अपनी मरहम पट्टी न होने दी। तख़्ती आई तो उसने अपने ख़ून में शहादत की उंगली डूबो डूबो कर उमरूल ममलूक का नाम और यह तहरीर लिखी और तख़्ती मुझे दे कर कहा कि यह उमर की क़ब्र पर लगा दी जाए। मैंने यह तख़्ती एक डंडे के साथ लगाकर उमरूल ममलूक की क़ब्र के सिरहाने लगा दी....

"नस्रूल ममलूक के ज़ख़्मों से ख़ून निकलता रहा। बन्द नहीं हो रहा था। तीसरे दिन उसकी हालत बिगड़ गयी। मैं उसे देखने आया तो जर्राह ने मायूसी का इज़हार किया। ख़ुद नस्रूल ममलूक को महसूस होने लगा था कि यह ज़िन्दा नहीं रह सकेगा। उसने मुझे कहा कि उसे वैसी ही तख़्ती दी जाए। मैंने तख़्ती मंगवा दी। उसने तख़्ती अपने पास रख ली। रात को मुझे इत्तलाअ मिली कि नसर शहीद हो गया है। मैं गया तो उसके एक ज़ख़्मी साथी ने तख़्ती मुझे दी और बताया कि नसर ने अपने एक ज़ख़्म से पट्टी खोल ली। ख़ून निकल रहा था। उसने अपने ख़ून में उंगली डूबो-डूबो कर यह तहरीर लिखी— "नस्रूल ममलूक— अल्लाह मेरी शहादत कुबूल करे।' उसके साथी ने बताया कि नसर ने कहा था कि उसे अपने दोस्त उमरूल ममलूक के पहलू में दफ़्न किया जाए। उस तरह यह दोनों तख़्तियां एक ही शहीद के ख़ून से लिखी गयी हैं।"

"यह दोनों मम्लूक थे मोहतरम इमाम!" सुल्तान अय्यूबी ने इमाम से कहा— "आप जानते होंगे कि मम्लूक किस नस्ल से है। यह उन गुलामों की नस्ल से हैं जिन्हें आज़ाद कर दिय गया था। हमारे रसूल अकरम सल्ल0 ने गुलामी को मम्नूअ क़रार दिया और फ़रमाया था कि इन्सान इन्सान का गुलाम नहीं हो सकता। ज़िरह देखो इन गुलामों ने कैसा कार्नामा कर दिया है।यह आठ थे लेकिन बीस आदमियों से इतनी बड़ी कश्ती छीन कर ले आए हैं। मुझे अपनी फ़ौज में मम्लूकों और तुर्कों पर जितना भरोसा है और किसी पर नहीं।"

"अब इन्सान फिर इन्सान का गुलाम बनता जा रहा है।" इमाम ने कहा–"हुक्मरानी हासिल करने के जतन इसीलिए किए जाते हैं कि इन्सानों को गुलाम बनाया जाए लेकिन इन्सान समझता नहीं कि तख़्त व ताज ने किसी के साथ कभी वफ़ा नहीं की। फ़िरऔन भी मिट्टी में मिल गये। ख़ुदा ने हर उस इन्सान को इबरतनाक सज़ा दी है जिसने तख़्त व ताज से प्यार किया और हर उस इन्सान का ख़ून बहाया जिससे उसे अपनी बादशाही के लिए ख़तरे की बू आई।"

सुल्तान अय्यूबी के मुहाफ़िज़ दस्ते के कमाण्डर एक आदमी को साथ लिए आ रहा था। उस आदमी की हालत बता रही थी कि बड़े लम्बे सफ़र से आया है। कमाण्डर ने क़रीब आकर कहा–"क़ाहिरा से क़ासिद आया है।"

"क्या ख़बर लाए हो?" सुल्तान अय्यूबी ने उससे पूछा।

"ख़बर अच्छी नहीं।" क़ासिद ने कहा और कमरबन्द से एक काग़ज़ निकाल कर सुल्तान अय्यूबी को दिया।

सुल्तान अय्यूबी अपने ख़ेमे को चल पड़ा।

❖

ख़ेमें में बैठकर उस पैग़ाम को खोला। यह उस के जासूसी और सुराग़रसानी के सरबराह अलीबिन सुफ़ियान के हाथ का लिखा हुआ था। लिखा था–"हमारा सबसे ज़्यादा दीनदार और दिलेर नायब सालार हबीबुल क़ुदुस दस दिनों से लापता है। सलीबियों की तख़रीबकारी ज़ोरों पर है। हम यहाँ ज़मीन दोज़ जंग लड़ रहे हैं। ईमान फ़रोशों की तादाद में इज़ाफ़ा होता जा रहा है। इस मसले पर आपको परेशान होने की ज़रूरत नहीं। हम दुश्मन को कामयाब नहीं होने देंगे। परेशानी हबीबुल क़ुदुस ने पैदा कर दी है। उसका कोई सुराग़ नहीं मिल रहा। उसका सिर्फ़ लापता हो जाना परेशान कुन नहीं। हम एक और ख़तरा महसूस कर रहे हैं। आप को मालूम है कि हबीबुल क़ुदुस के मातेहत जितने दस्ते हैं, वह उनमें इतना हरदिल अजीज़ है कि सिपाही उसके इशारे पर ज़ाने कुर्बानकरते हैं। अगर वह ख़ुद दुश्मन से जा मिला है तो यह ख़तरा है कि वह अपने दस्तों को जो उसके ज़ेरे असर हैं सल्तनत के खिलाफ़ बग़ावत पर आमादा कर सकता है। मैं उसे तलाश करने की कोशिशों से दस्तबरदार या मायूस नहीं हुआ। मैं आप से सिफ़ यह इजाज़त लेना चाहता हूँ कि अगर तलाश के दौरान वह सामने आ जाए और ज़रूरत महसूस हुआ कि उसे मार डाला जाए तो उसे मार दिया जाए। आप के क़ायम मुक़ाम अमीरे मिस्र ने इसकी इजाज़त नहीं दी। सिर्फ़यह इजाज़त दी है कि मैं आप को बराहेरास्त ख़त लिखकर इजाज़त ले लूं। अगर मैं उसे तलाशा न कर सका तो आप मुझ पर बाज़ पुरस करेंगे और अगर वह मेरे हाथ से मारा गया तो भी आप पसन्द नहीं करेंगे। इस नायब सालार का हमारे दुश्मन के पास रहना हमारे लिए बहुत बड़ा ख़तरा है।"

सुल्तान अय्यूबी ने उसी वक़्त कातिब को बुलाया और पैग़ाम लिखवाने लगा:

"अज़ीज़ अली बिन सुफ़ियान! तुम पर ख़ुदा की रहमत हो। हबीबुल क़ुदुस पर मुझे इतना ही एतमाद था जितना तुम पर है जो इन्सान अपना ईमान फ़रोख़्त करने पर आजाए वह ख़ुदा

से नहीं डरता, वह मुझ जैसे हक़ीर इन्सान से क्यों डरेगा।

तुम्हें इस पर हैरान नहीं होना चाहिए कि हबीबुल कुदूस जैसा इन्सान भी धोखा दे सकता है। ईमान एक कुव्वत है मगर यह हीरे और जवाहरात की तरह चकमता नहीं। उसमें औरत के हुस्न व जमाल की कशिश नहीं और ईमान तख़्त व ताज भी नहीं। जब इन्सान पर दुनिया की लज़्ज़तों का सुरूर और ज़र व जवाहरात की हवस पैदा हो जातीहै तो ईमान से दस्तबरदार होने में कुछ वक़्त नहीं लगाता......हबीबुल कुदुस को तलाश करने की कोशिश करो। अगर कभी ज़रूरत महसूस हो कि उसे कत्ल कर दिया जाए तो तुम्हें मेरी तरफ़ से इजाज़त है, लेकिन यह मालूम करने की भी कोशिश करना कि उसे अग्वा तो नहीं किया गया? हालात तुम्हारी नज़र में हैं। जो बेहतर समझो वह करो। मुफ़ादे सल्तनत और मज़हब मुकद्दम है। एक इन्सान की ज़िन्दगी और मौत उस के रास्ते की रूकावट नहीं बन सकती। जहाँ फ़ौज की इतनी ज़्यादा तादाद मारी जा रही है, सिपाही अपनी जानें दे रहे हैं वहाँ एक ग़द्दार हाकिम को मार देने से पहले इतना ज़्यादा न सोंचो कि तुम्हारा क़िमती वक़्त सर्फ़ होता रहे। अल्लाह से गुनाहों की बख़्शिश माँगते रहो। हम सब गुनाहगार हैं। पाक ज़ात सिर्फ़ अल्लाह और उसे रसूल की है। तुम हक़ पर हो तो अल्लाह तुम्हारे साथ है।"

सुल्तान अय्यूबी ने पैग़ाम के नीचे अपनी मुहर लगाई और पैग़ाम क़ासिद के हवाले कर दिया और उसे कहा कि वह रात भर आराम करके सुबह रवाना हो जाए।

वह तारीख़े इस्लाम का पुर आशूब दौर था। इधर सरज़मीने अरब मुसलमानों के ख़ून से लाल हो रही थी। सलीबियों और यहूदियों ने मुसलमानों में ग़द्दार और साज़िशी पैदा करके मुसलमानों को ख़ानाजंगी में उलझा दिया था। उधर मिस्र में यही कुफ़्फ़ार मुसलमान हाकिमों में ग़द्दार पैदा करने की कोशिश्यों में मसरूफ़ थे। लोगों में सुल्तान अय्यूबी की हुकूमत के ख़िलाफ़ नफ़रत पैदा कर रहे थे और सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज पर बड़े ही शर्मनाक इल्ज़ामात की तशहीर कर रहे थे। उन्होंने यह मुहिजमीन तरीके से चला रखी थीं। अली बिन सुफ़ियान और क़ाहिरा का कोतवाल ग़यास बलबीस इस मुहिम के असरात ज़ायल करने और मुज्रिमों को पकड़ने में सरगर्म रहते थे।

एक नायब सालार का ग़ायब हो जाना मामूली वाक़िआ नहीं था मगर उसका कुछ भी सुराग़ नहीं मिल रहा था। हबीबुल कुदुस के मुतअल्लिक़ कोई सोंच भी नहीं सकता था कि वह भी ग़द्दारी का मुरतकिब हो सकता है लेकिन उस दौर में ग़द्दारी एक आम सी चीज़ बन गयी थी। हबीबुल कुदुस लापता हुआ तो सबने यही कहा कि वह कोई फ़रिश्ता तो नहीं था। उसकी तीन बीवियां थीं और यह कोई मायूब अमर नहीं था। उसकी हैसियत के हाकिमों ने चार–चार बीवियां रखी हुई थीं और जो ज़िरह ज़िन्दा दिल थे उनके हाँ एक दो दाश्ता औरतें भी होती थीं। हबीबुल कुदुस की ज़िन्दगी में शराब और राग रंग का ज़रा भर दख़ल नहीं था। सोम सलात का पाबन्द था और मैदाने जंग में दुश्मन के लिए सरापा क़हर। शुजाअत के अलावा फ़ने हरब और ज़रब में महारत रखता था। जंगी मंसूबा बन्दी ऐसी कि कम से कम नफ़री से कसीर तादाद दुश्मन का सत्या नास का देता था।

उसकी सबसे बड़ी ख़ूबी यह थी कि अपने दस्तों मे हरदिल अजीज़ था। उसके मातेहत जो कमानदार और सिपाही थे उनके लड़ने का अन्दाज़ यह होता था कि जैसे वह हुक्म से नहीं अक़ीदे से लड़ रहे हों। बाज़ा औकात तो यह गुमान होता था कि यह दस्ते उसकी ज़ाती फ़ौज हैं और यह सुल्तान अय्यूबी के हुक्म से नहीं हबीबुल कुदुस के इशारे पर ही लड़ते हैं। उनकी तरबियत उसने इतनी सख़्त कर रखी थी और उन्हें इतनी जंगी मश्कें कराता था कि आज की ज़ुबान में "क्रेक्टोप्स" बन गये थे। उनकी नफरी तीन हज़ार प्यादा और दो हज़ार सवार थी। तीर अन्दाज़ी में इतने माहिर जैसे अंधेरे में आवाज़ पर तीर चलाएं तो तीर बोलने वाले के मुंह में लगे।

अली बिन सुफ़ियान जासूसी और सुराग़रसानी का महिर था। ग्यास बलबीस कोतवाल और सिवील इन्टेलीजेंस में महारत रखता था। इन दोनों की राय यह थी कि हबीबुल कुदुस को दुश्मन ने उसकी इसी ख़ुबी की वजह से अपने जाल में लिया है कि वह अपने पांच हज़ार नफरी के दस्तों को बाग़ी कर सकेगा। पांच हज़ार नफरी मामूली नहीं थी। इन दस्तों को निहत्था कर देने की भी तजवीज़ पेश हुई थी जो अली बिन सुफ़ियान और ग्यास बलबीस ने यह दलील देकर मुस्तर्द कर दी थी कि इस तरह यह बाग़ी न हुए तो भी बाग़ी हो जाएंगे। उसकी बजाए उन्होंने इन दस्तों में किसी न किसी बहरूप में अपने जासूस छोड़ दिए थे जो बार्कों में सिपाहियों की गप शप सुनते रहते थे। कमानदारों पर भी उनकी नज़र थी।

गहरी नज़र हबीबुल कुदुस के घर पर रखी गयी थी। उसकी तीन बीवियों में एकी उम्र तीस और चालीस के दर्मियान थी और दो चौबीस पच्चीस साल की थीं। उनसे पूछा गया। उन्होंने इतना ही बताया था कि एक शाम उसके पास दो आदमी आये थे। हबीबुल कुदुस उनके साथ निकल गया था फिर वापस नहीं आया। मुलाज़िमों से भी बहुत गहरी तफ़तीश की गयी। उनसे भी कोईसुराग़ न मिला। बीवियों के मुतअल्लिक दरपरदा मालूम किया गया। उनमे कोई मश्कूक नहीं थी। सिर्फ इतना पता चला कि छोटी उम्र की दो बीवियों में एक से एक के साथ जिसका नाम ज़ोहरा था उससे सबसे ज़्यादा प्यार था। यह उसके एक सवार दस्ते के कमानदार की बेटी थी।

उस कमानदार से पूछा गया कि उसने अपनी उम्र के आदमी को अपनी जवान बेटी क्यों दी थी? क्या हबीबुल कुदुस ने उसे मातेहत समझकर मजबूर किया था?

"नहीं।" कमानदार ने जवाब दिया—"नायब सालार हबीबुल कुदुस इस्लाम और जिहाद के इतने ही मतवाले हैं जितना मैं हूं। मैने उनके साथ लड़ाइयां लड़ी हैं। वह कहा करते थे कि मोमिन की तलवार म्याम से निकल आए तो म्याम मे उस वक़्त तक नहीं जानी चाहिए जब तक दुश्मन का एक भी सिपाही सामने मौजूद है और वह कहा करते थे कि कुफ़्र का फ़ितना ख़त्म होने तक जिहाद जारी रहता है। ग़द्दारों से वह इतनी नफ़रत करते थे कि एक सरहदी लड़ाई में सूडानियों ने अचानक हम्ला किया तो हमारे दस सवार भाग उठे। नायब सालार ने देख लिया। उन्हें पकड़ने का हुक्म दिया। उन्हें पकड़ लाए। नायब सालार ने उनसे कुछ पूछे बग़ैर दोनों को उन्हीं के घोड़ों के पीछे अपने हाथ बांधा और घोड़ों पर दो सवार बैठाकर हुक्म

दिया कि घोड़े दौड़ाओ और रूको उस वक़्त जब घोड़ा खुद थक कर रूक जाएं...

"जब घोड़े वापस आये तो उनका पसीना बह रहा था औरॉस लेना मुश्किल हो रहा था। इनके पीछे बंधे हुए सिपाहियों का यह हाल था कि उनके जिस्म पर कपड़े नहीं थे और उनकी खालें उतर गयी थीं। जिस्म पर गोश्त भी पूरा नहीं था। लड़ाई इस तरह ख़त्म हो गयी थी कि सूडानियो में ज़्यादा तर मारे गये, कुछ पकड़े गये और बाक़ी भाग गये। हबीबुल कुदुस ने तमाम दस्ते को इकठ्ठा करके उन सिपाहियों की लाशें दिखाई और कहा कि अल्लाह की राह में लड़ने से भागने वालों की यह सज़ा दुनियावी है, अगले जहाँ उनके जिस्म सालिम होंगे और उन्हें दोज़ख़ में फेंक दिया जाएगा.....

"हम सब जिहाद और शहादत के जज़्बे से सरशार हैं। एक रोज़ मेरी बेटी साथ थी। मैंने अपनी बेटी को भी वही तरबियत दे रखी है जो बाप ने मुझे दी थी। मेरा एक बेटा इस वक़्त सुलतान की फ ौज के साथ शाम में हैं। मैं अपनी बेटी को बताया करता था कि हमारे नायब सालार हबीबुल कुदुस सुल्तान अय्यूबी जैसे मुजाहिद हैं। मेरी बेटी को उस रोज़ नायब सालार ने देख लिया और पूछा कि यह कौन है। मैं ने बताया कि मेरी बेटी है और यह मुजाहिदा है। बहुत दिनों बाद उन्होंने मुझे कहा कि वह उसकी बेटी से शादी का इरादा रखते हैं। मैने अपनी बेटी की माँ से बात की तो उसने कहा कि बेटी पहले ही कहती थी कि वह किसी ऐसे आदमी के साथ शादी करना चाहती है जो इस्लाम की पासबानी में अपनी जान की बाज़ी लगाने वाला हो। इस तरह मैं ने बड़ी ख़ुशी से अपनी बेटी की शादी नायब सालर से कर दी और मेरी बेटी ने उन्हें दिली तौर पर कुबूल कर लिया। अब सुना है कि वह लापता हैं। मैं आप को यक़ीन के साथ कहता हूँ कि उनके मुतअल्लिक़ अगर दिल से किसी को रंज है तो वह सिर्फ़ मेरी बेटी है। वह उसी को ज़्यादा चाहते थे। बाक़ी दो बीवियां कहती हैं कि यह कर गया है तो किसी और के साथ शादी कर लेंगी।"

❖

"मुझे अब यक़ीन सा होने लगा है कि उसका दिमाग़ हमारे क़ब्ज़े में आ गया है।" यह आवाज़ क़ाहिरा से बहुत दूर उन खंडरों से उभरी थी जहाँ किसी फ़िरऔन ने अपने ज़माने मे महल बनाया था। उस ज़माने में यह जगह बहुत ख़ूबसूरत और सर सब्ज़ होगी। इलाक़ा पहाड़ी था और दरियाए नील के किनारे पर था। पहाड़ियों पर दरख़्त और सब्ज़ा था और वहाँ दरिया कुछ अन्दर को जाता था। किसी फ़िरऔन ने यह महल बनाया था। सुल्तान के दौर में यह डरावना खंडर बन चुका था। दिवारों और सुतूनों पर काई उगी हुइ थी। चीलों जजिनते बड़े चमगादड़ों का स्याह बादल इस खंडर मे सिमटे रहते थे। खंडरों के बरामदों और कमरों में इन्सानी हड्डियाँ और खोपड़ियां बिखरी हुई थीं। उस दौर के हथियार भी इधर उधर पड़े नज़र आते हैं। उधर अब कोई नहीं जाता था। मशहूर हो गया था कि वहाँ जिन्नों, चुड़ैलों और बदरूहों का बसेरा है जो ज़िन्दा इन्सानों का शिकार करती हैं।

इस हौलनाक खंडर में जिस के मीलों दूर से भी कोई नहीं गुज़रता था, एक आदमी कह रहा था कि मुझे अब यक़ीन सा होने लगा है कि उसका दिमाग़ हमारे क़ब्ज़े में आ गया है। फिर

उसने कहा–"नहीं आयेगा तो यहाँ से ज़िन्दा नहीं निकलेगा।"

"हम उसे इसलिए नहीं लाए कि यहाँ लाकर उसे क़त्ल कर दें।" दूसरे ने कहा–"अगर क़त्ल करना होता तो उसे उसके घर से उठाने और इतनी दूर लाने की बजाए वहीं क़त्ल न कर देते? इसे उस काम के लिए तैय्यार करना है जिसके लिए इसे लाए हैं।"

"हशीश अपना काम कर रही है।"

"तुम किसी को नशा पिलाकर उससे ऐसी बातें कर सकते हो जिनका उसका अक्ल के साथ कोई तअल्लुक नहीं होता। हशीश से तुम किसी के ईमान और नज़रिए को नहीं बदल सकते। यह शख़्स पाँच हज़ार जंगी कुव्वत का हामिल है। हमें सिर्फ़ उसे नहीं उसकी पूरी नफ़री को अपने हाथ में लेना और उसे मिस्र की फ़ौज के खिलाफ़ लड़ाना है, फिर मिस्र हमारा होगा और फिर सलाहुद्दीन अय्यूबी की हालत उस शेर जैसी होगी जो बहुत से शिकारियों के घेरे में होगा। वह सबको चीर फाड़ देने को झपटेगा मगर उसे सिर्फ़ मौत मिलेगी.....अगर सुल्तान अय्यूबी का यह नायब सालार हबीबुल कुदुस अपने दस्तों को इशारा कर दे तो वह कुछ सोंचे बेग़ैर उसका हुक्म मानेंगे।"

हबीबुल कुदुस उसी खंडर के एक कमरे में बैठा था जिसे साफ़ कर लिया गया था। उसके नीचे नर्म गद्दे बिछे हुए और उसके पीछे गोल तकिए थे। आसाइश का सारा सामान मौजूदथा। उसके सामने एक आदमी बैठा था जिसने उसकी आँखों में आँखें डाल रखी थीं और वह कह रहा था–"मिस्र मेरी मम्लिकत है। सलाहुद्दीन अय्यूबी इराक़ी कुर्द है। उसने मेरी मम्लिकत पर कब्ज़ा कर रखा है। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने मेरी मम्लिकत की हसीन लड़कियों से अपना हरम भर रखा है। मेरे पाँच हज़ार जाँबाज़ पूरे मिस्र पर कब्ज़ा कर लेंगे।"

हबीबुल कुदुस के होंटों पर मुस्कुराहट थी। उसके चेहरे पर रौनक थी। वह बड़बड़ाने के लहजे में कहने लगा– "मेरी तलवार कहां है? मेरा घोड़ा तैय्यार करो। मैं सलाहुद्दीन को क़त्ल करूंगा। मेरे पाँच हज़ार जाँबाज़ एक दिन में मिस्र की फ़ौज से हथियार डलवा देंगे।"

"सलीबी मेरे दोस्त हैं।" उस आदमी ने आँखों में आँखें डाले हुए कहा– "वह मेरी मदद को आयेंगे। दोस्त वह जो बुरे वक़्त में मदद दे।"

"मेरी तलवार कहाँ है?" हबीबुल कुदुस ज़िरह साफ़ आवाज़ में बोलने लगा–"मिस्र बहुत ख़ूबसूरत हो गया है। मिस्र की लड़कियाँ ज़्यादा हसीन हो गयी हैं। मिस्र मेरा है। मिस्र मेरा है।"

एक लड़की अन्दर आई जिसका लिबास ऐसा था कि बरहना लगती थी। उसके बाल मुलायम और खुले हुए थे। उसका जिस्म हल्के गुलाबी रंगा का और सूडौल था। वह हबीबुल कुदुस के साथ लग कर बैठ गयी। उसने अपना एक बाज़ू हबीबुल कुदुस के कंधो पर डाल दिया। हबीबुल कुदुस अपना गाल उसके रेशमी बालों से मस करने लगा। उसने मख़्मूर लहजे में कहा– "मिस्र बहुत हसीन हो गया है।"

लड़की एक तरफ़ हट गयी और बोली–"लेकिन मुझ पर सुल्तान अय्यूबी का कब्ज़ा है।"

हबीबुल कुदुस ने लपक कर उसे अपने बाज़ूओं में ले लिया और अपने क़रीब घसीट कर

बोला– "तुम पर कोई कब्ज़ा नहीं कर सकता। तुम मेरी हो, मिस्र मेरा है।"

"जब तक सलाहुद्दीन अय्यूबी ज़िन्दा है या जब तक मिस्र पर उसकी बादशाही है, न मैं तुम्हारी हूँ न मिस्र तुम्हारा है।"

"मैं उसे क़त्ल कर दूंगा।" हबीबुल कुदुस ने कहा–"मैं उसे क़त्ल कर दूंगा।"

"रूक जाओ।" एक शख़्स की ग़ुसैली आवाज़ कमरे में गूंजी– यह एक सलीबी था जो मिस्री ज़ुबान बोल रहा था। यह वही था जिसे खंडर में किसी दूसरी जगह एक मिस्री बता रहा था कि अब यक़ीन होने लगा है कि कि उस शख़्स का दिमाग़ हमारे क़ब्ज़े में आ रहा है और उसने कहा था कि उसे हशीश के नशे के बेग़ैर अपने काम में लाना है। वह इस कमरे में आया जहाँ हबीबुल कुदुस के दिमाग़ को हशीश के नशे के ज़ेरे असर अपने रंग में रंगने की कोशिश की जा रही थी। उसने ग़ुस्से से कहा–"तुम हसन बिन सबाह के पुजारी हशीश और ख़ुफ़िया क़त्ल के सिवा कुछ भी नहीं जानते। लड़की को इसके पास रहने दो और तुम मेरे साथ आओ।"

वह उस आदमी को साथ ले गया। बाहर ले जाकर उसे कहा–"अब उसे हशीश न देना। उसका नशा उतर जाने दो। हमें उसके हाथ सलाहुद्दीन अय्यूबी का क़त्ल नहीं कराना। हमें उसके दस्तों को बग़ावत पर आमादा करना है। मैं बहुत देर से पहुँचा वरना उसका यह हाल न होने देता। होश में रखकर उसे सलाहुद्दीन अय्यूबी का दुश्मन बनाना है। तुम लोगों ने उसे जिस ख़ूबी से अग़वा किया है उसकी मैं दिल से तारीफ़ करता हूँ और उसकी तुम्हें इतनी क़ीमत दी जा रही है जो पहले तुम्हें कहीं नहीं मिली होगी मगर तुम ने उसे हशीश दे देकर हमारा काम मुश्किल बना दिया है। उसे अब सफ़ूफ़ और शर्बत दो जिसे नशे का असर उतर जाता है।"

❖

सलीबियों की जासूसी और तख़रीबकारी और मुसलमान नौजवानो की किरदारकुशी के तरीके अनाड़ियों वाले नहीं थे। उनके उस फ़न के महिरीन इन्सानी फ़ितरत की कमज़ोरियों और मुतालिबात से अच्छी तरह वाक़िफ़ थे। उनकी नज़र सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज और इन्तज़ामिया के हर अफसर पर थी। उधर अरब के उमरा वुज़रा और मुख़्तालिफ़ रियासतों के मुसलमान हुक्मरानों की ख़ामियों से भी वह आगाह थे। उनकी कोशिश यह होती थी कि ज़्यादा से ज़्यादा हुक्मरान और हाकिम उनके ज़ेरे असर हो जाएं और सुल्तान अय्यूबी के खिलाफ़ लड़ने पर आमादा हो जाएं। यहुदी अपनी दौलत और अपनी लड़कियों की सूरत में उनकी पूरी मदद कर रहे थे। उन कुफ़्फ़ार के माहिरीन ने मुसलमान हुक्मरान वग़ैरह को चन्द एक ज़ुमरें में तक़सीम कर रखा था।

एक ज़ुमरे में उन्हें रखा गया था जो एक दो ख़ूबसूरत और शोख़ लड़कियों, शराब और ज़र व जवाहरात के एवज़ अपना ईमान बेच डालते थे। दूसरे ज़ुमरे में वह थे जो अपनी अलग रियासत बनाकर उसके ख़ुदमुख़्तार बादशाह बनने के ख़्वाब देखा करते थे। तीसरे वह थे जो मुल्क व मिल्लत के वफ़ादार और पक्के मुसलमान थे। उनमें से सलीबी यह देखते थे कि कौन

असर व रसूख वाला है.जिसे हाथ में लिया जाए तो वह सुल्तान अय्यूबी की खुफ़िया पालिसियों और प्रोग्रामों से क़ब्ल अज़ वक़्त इत्तलाआत दे सकता हो और उनमें कौन ऐसा है जिस का फौज के कुछ हिस्से पर असर हो, और वह उस हिस्से को अपनी सल्तनत के खिलाफ़ बाग़ी कर सकता हो। इन पक्के दीनदारों और मुजाहिदों को हाथ मे लेने के लिएउनके पास कुछ तरीक़े थे जिनमें अग़्वा करना और उसे अपना इत्तेहादी बनाना था। एक तरीका क़त्ल का भी था लेकिन क़त्ल कम ही कराये जाते थे। अगर ज़रूरत पड़े तो क़त्ल हसन बिन सबाह के पेशावर क़ातिलों से कराया जाता था।

नायब सालार हबीबुल कुदुस ऐसा हाकिम था जिसे क़त्ल कराने से कुछ हासिल नहीं हो सक़ता था। उसे हाथ में लेना था। जैसा कि बताया जाचुका है कि मिस्र की फ़ौज की पाँच हज़ार नफ़री उसकी मुरीद थी। सलीबियों के मुसलमान एजेंटों ने उन्हें बताया था कि यह शख़्स ईमान नहीं जान देने वाला है और उसमें इतना शदीद जज़्बा है और ग़ैरमामूली अहलियत है कि अगर उसे अपने उन्हीं दस्तों के साथ एक लाख के लश्कर के खिलाफ़ लड़ाया जाए तो शाम का सूरज इतनी जल्दी उफ़क़ में नहीं गिरेगा जितनी जल्दी उसके आगे दुश्मन की लाशें और हथियार गिरेंगे।

सलीबियों ने तजुर्बा कर लिया था। वह इस तरह कि उन्होंने कभी उसके पास कोई नौजवान और ग़ैर मामूली तौर पर ख़ूबसूरत लडकी का एक नादार, यतीम और मज़लूम लड़की के बहरूप में मदद लेने के लिए भेजी। कभी किसी लड़की को और ज़ाती काम से भेजा। ज़याफ़तों और खेल तमाशों में बड़ी–बड़ी हसीन लड़कियाँ उसके पीछे डालीं मगर वह उस जाल में न आया जैसे पत्थर हो। मिस्र में बग़ावत कराना सलीबियों के लिए जरूरी हो गया था क्योंकि सुल्तान अय्यूबी शाम और फ़िलिस्तीन के इलाक़ों के बिखरे हुए मुसलमान उमरा को दलायल से या तलवार से अपना मुतीअ बनाता चला जा रहा था और उसके बाद उसे फ़िलिस्तीन का रूख़ करना था। उसकी तवज्जो फ़िलिस्तीन से हटाने के लिए यह तरीक़ा हो सकता था कि मिस्र में उसकी फ़ौज़ है उसे बग़ावत पर आमादा किया जाए।

इससे पहले सलीबी सूडानियों को मिस्री फ़ौज के खिलाफ़ इस्तेमाल करने की कोशिश कर चुके थे। सूडानी फ़ौज ने हम्ला किया भी था मगर सूडानी फ़ौज में अकसरियत वहाँ के हब्शियों की थी और वह तौहम परस्त थे। दूसरे यह कि वह हुजूम की सूरत में लड़ते और हुजूम की सूरत में भागते थे। सलीबियों ने उन्हें मिस्र के खिलाफ़ ही रखा, लेकिन लड़ाने की न सोची। अब बग़ावत मिस्र की फ़ौज से कराई जा सकती थी। उसके लिए उन्होंने जो मौज़ूं सालार देखा वह हबीबुल कुदुस था। जासूसों और माहिरीन ने उसके अग़्वा का फ़ैसला किया और हसन बिन सबाह के फ़िर्क़े के फ़िदाइयों को मुँह माँगी उजरत देकर उनसे अग़्वा करा लिया।

अग़्वा का तरीक़ा यह इख़्तियार किया गया कि एक शाम दो आदमी उसके घर गये और किसी गाँव का नाम लेकर कहा कि वहाँ की मस्जिद की छत बैठ गयी है और पूरी मस्जिद अज़ सर नौतामीर करनी है। उन्होंने कहा कि रात को गांव के लोग जमा हो रहे हैं और वह भी चलें

10
—
5

ताकि लोग दिल खोल कर माली मदद दें। इस सिलसिले में उन्होंने ऐसी जज़्बाती बातें की कि वह उनके साथ चल पड़ा। शहर से बाहर निकल गये तो चार और आदमी मिले। उन सब ने उसे जकड़ लिया और उस खंडर में ले गये। वहाँ पहुंचते ही उसे धोखे में हशीश पिलादी। सलीबी जो उससे बात करने और उसे अपना हम ख़्याल बनाने पर मामूर था वह किसी और काम से बाहर चला गया। उसे अग़वा करने वाले खंडर में मौजूद रहे। खंडर के एक कमरे में उसके लिए आसाईश की हर चीज़ पहुंचा दी गयी। दो लड़कियाँ भी थीं जो हसीन होने के अलावा दिलों को मोह लेने और पत्थर जैसे पुख़्ता किरदार आदमियों को भी हैवान बना देने की फ़न के माहिर थीं।

उन सबको मालूम था कि इस नायब सालार को क्यों अग़वा किया गया है। उन्होंने ईनाम व इकराम के लालच में अज़खुद ही उसके ज़ेहन को अपने मख़्सूस तरीके से अपने सांचे में ढालने की कोशिशें शुरू कर दीं। यह तरीका हशीश की एक ख़ास किस्म से नशा तारी करने का था जिसके दौरान मतलूबा फ़र्द के ज़ेहन में बातों के ज़रिए निपाहत दिलकश तसव्वुरात डाले जाते थे। यह एक किस्म के हिप्नोटाइज़ करने का तरीका था। उसमें नीम ... ख़ूबसूरत लड़कियाँ भी इस्तेमाल की जाती थीं। यह गिरोह कई दिनों से हबीबुल कुद्दुस पर यह तरीका इस्तेमाल कर रहा था और उसने उनके साथ मतलब की बातें शुरू कर दी थीं जिनसे उन्हें उम्मीद बंध चली थी कि उन्होंने उसके दिमाग़ को अपने क़ब्ज़े में कर लिया है।

❖

उधर काहिरा में मिस्री फ़ौज और कोतवाली के जासूस उसकी तलाश में परेशान हो रहे थे। सब का यही ख़्याल था कि वह सूडानियों या सलीबियों के पास चला गया है। अली बिन सुफ़ियान को मालूम था कि हबीबुल कुदुस का असर अपने दस्तों पर किस क़दर ज़्यादा है इसलिए उसने मिस्र के कायम मुकाम अमीर की इजाज़त से सुल्तान अय्यूबी को इत्तलाअ दे दी थी। तवक्को यही थी कि वह अपने मुअतमिद कमानदारों को कोई पैग़ाम भेजेगा। जासूसों और सुराग़रसनों ने हर तरफ़ नज़र रखी लेकिन मालूम यही होता था कि उसका पैग़ाम किसी की तरफ़ नहीं आया। यह भी देखा कि जा रहाथा कि उन दस्तों में से कौन सा कमानदार ग़ायब होता है लेकिन इतने दिनों में कोई भी ग़ैर हाजिर न हुआ।

इतने में वह सलीबी खंडरात में आ गया जिसे हबीबुल कुदुस के साथ बात चीत करनी थी। उसने पहला काम यह किया कि हशीश रूकवाई और हबीबुल कुदुस का नाशा उतारा। सलीबी ने पूरी रात नशे के असरात उतरने का इन्तज़ार किया। अगले रोज़ वह हबीबुल कुदुस के पास बैठ गया। वह अभी सोया हुआ था। उसकी जब आँख खुली तो उसने इधर उधर देखा और जब उसकी नज़रें सलीबी पर पड़ी तो वह फ़ौरन उठ बैठा और सलीबी को बड़ी ग़ौर से देखने लगा।

"मुझे अफ़सोस है कि इन लोगों ने आप के साथ बहुत बुरा सलूक किया है" सलीबी ने कहा–"आप इतने हैरान और परेशान न हों। यह बदबख़्त आप को हशीश पिलाते रहे और आपको बड़े ख़ूबसूरत ख़्वाब दिखाते रहे हैं। आप हशीश और फ़िदाइों के इस तरीके से

यक़ीनन वाकिफ होंगे। आपकी तौहीन की गयी है जिसकी मैं माँफी चाहता हूँ। मैं आपको कोई ख़्वाब नहीं दिखाउंगा। बड़ी ख़ूबसूरत हक़ीकत आप के सामने रखूंगा। अपने आप को कैदी न समझें। मैं आपका रुत्बा ऊँचा कर दूंगा। कम नहीं होने दूंगा।"

"यह लोग धोखे में मुझे यहाँ ले आए थे।" हबीबुल कुदुस ने कहा–"फ़िर शायद यह मुझे कहीं और ले गये थे।" उसने निगाहें घूमाकर हर तरफ़ देखा और हैरान सा होकर बोला–"वह कोई बहुत ही ख़ूबसूरत जगह थी...मुझे यहाँ कौन लाया है?"

"अपने आप को बेदार करें।" सलीबी ने कहा–"यह सब हशीश का असर था। आप पहले रोज़ से यहीं हैं।"

"मुझे अग़वा किया गया था?" हबीबुल कुदुस ने हक़ीकत को समझते हुए ज़िरह रोब से कहा–"तुम कौन हो?"

"मैं आपका एक मुसलमान भाई हूं।" सलीबी ने कहा–"मुझे आपसे लेना कुछ भी नहीं देना है।"

"अगर लेने देने से इन्कार कर दूं तो?"

"तो ज़िन्दा वापस नहीं जा सकेंगे।" सलीबी ने कहा– "आप क़ाहिरा से इतनी दूर हैं कि आप को मैंने आज़ाद कर दिया तो आप रास्ते में मर जाएंगे।"

"मुझे वह मौत ज़्यादा पसन्द होगी।" हबीबुल कुदुस ने कहा–"मैं अपने दुश्मन की कैद में नहीं मरना चाहता।"

"न आप कैद में हैं न मैं आपका दुश्मन हूँ।" सलीबी ने कहा–"इन हब्शियों ने आपके साथ तौहीन आमेज़ सलूक करके आपको बदज़न कर दिया है। मुझे आप से कुछ ज़रूरी बातें करनी हैं।"

"उन बातों के लिए मुझे अग़वा कर इतनी दूर लाने की क्या ज़रूरत थी?"

"अगर मैं यह बातें क़ाहिरा में आपके साथ करता तो हम दोनों कैदखाने के तहखाने में होते।" सलीबी ने कहा–"वहां क़दम–क़दम पर अली बिन सुफ़ियान और कोतवाल ग़यास बलबीस ने जासूस खड़े कर रखे हैं।"

हबीबुल कुदुस का ज़ेहन साफ़ हो चुका था। उसका दिमाग़ सोंचने के काबिल हो गया था। वह जान गया कि वह सलीबी तख़रीब कारों के चंगुल में आ गया है। उसने पूछा–"तुम सलीबियों के आमदी हो या सूडानियों के?"

"मैं मिस्र का आदमी हूँ।" उसने जवाब दिया–"और आप भी मिस्री हैं। आप बग़दादी, शामी या अरबी नहीं। मिस्र मिस्रियों का है। यह नुरूद्दीन ज़ंगी और सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़ानदान की जागीर नहीं। यह इस्लामी मुल्क है। यहाँ अल्लाह की हुक्मरानी होगी और इसका इन्तज़ाम और करोबार मिस्री मुसलमान चलाएंगे। क्या आपने कभी महसूस नहीं किया कि हम पर हुकूमत करने वाले बग़दाद और दमिश्क़ से आये हैं और उन्होंने मिस्र को शाम के साथ मिलाकर एक सल्तनत बना लिया है?"

"तुम मुझे मिस्र को सलाहुद्दीन अय्यूबी से आज़ाद कराने पर उकसा रहे हो?"

"मैं जानता हूँ कि आप सुल्तान अय्यूबी को पैग़म्बर नहीं तो पीर व मुर्शिद ज़रूर समझते हैं।" सलीबी ने कहा–"मैं उसके खिलाफ़ कोई बात नहीं करूंगा। अय्यूबी में बहुत सी ख़ूबियां हैं मैं भी उसे उतना ही पसन्द करता हूँ जितना आप करते हैं मगर हमें यह सोंचना चाहिए कि वह कब तक ज़िन्दा रहेगा। उसके बाद मिस्र उसके जिस भाई या बेटे के हाथ में आयेगा उसमें सलाहुद्दीन अय्यूबी की ख़ूबियाँ नहीं होंगी। मिस्र एक और फ़िरऔन के क़ब्ज़े में आ जाएगा।"

"मुझसे तुम क्या काम लेना चाहते हो?"

"अगर आप मेरी बात समझ गये हैं तो मैं आपको बता सकता हूं कि आप क्या कर सकते हैं।" सलीबी ने जवाब दिया–"अगर आप के दिल में शक है तो मुझ से न पूछें। पहले अपना शक रफ़ा करें। आप सोंच लें। आप अभी अभी जागे हैं। उन बदबख़्तों की दी हुई हशीश का भी आप पर असर है। मैं आप के लिए नाश्ता भेजवाता हूँ। इतने दिनों आप को किसी ने नहाने नहीं दिया। मैं आपको एक चश्में पर ले चलूंगा।"

वह उठा और बाहर निकल गया। थोड़ी देर बाद एक और आदमी आया। उसने कहा–"मेरे साथ चलें नाश्ते से पहले नहा लें।'

❖

खंडर से उसे किसी ऐसे रास्ते से निकाला गया जो पहाड़ियों में चला गया था। कुछ आगे एक चश्मा था जिसका शफ़ाफ़ पानी छोटे से कुदरती तालाब में जमा हो रहा था। वह पहाड़ियों से घूमकर चश्में की तरफ़ गये तो वहाँ दो लड़कियाँ बिल्कुल नंगी नहा रही थीं और एक दूसरी पर हाथों से पानी फेंक रही थीं। हबीबुल कुदुस रुक गया और उसने मुंह दूसरी तरफ़ फेर लिया। लड़कियाँ चीखती भाग उठीं। उस वीराने में ऐसी हसीन और बरहना लड़कियाँ जिन्न और चुड़ैलें लगती थीं। हबीबुल कुदुस ने इधर उधर देखा। हर तरफ पहाड़ियाँ थीं। उसने पीछे देखा। खंडर एक पहाड़ी के पीछे आ गया था। उसके साथ जो आदमी आया था वह उसके आगे–आगे जा रहा था।

हबीबुल कुदुस ने लपक कर एक बाज़ू उसकी गर्दन के गिर्द लपेट दिया और बाज़ू का शिकन्जा तंग करके उसने दूसरे हाथ से उसके पेट में पूरी ताक़त से तीन चार घूंसे मारे। यह आदमी दम घुटने से मर गया। हबीबुल कुदुस ने उसे घसीट कर एक घनी झाड़ी के पीछे फेंक दिया और ख़ुद भाग उठा। उसने एक पहाड़ी में से रास्ता देख लिया था। वहाँ पहुंचा तो एक आदमी बरछी ताने खड़ा था। उसने इतना ही कहा–"वापस।" वह तन्हा था। सर झुकाकर पीछे को मुड़ा। चन्द ही क़दम ही चला होगा कि सलीबी उसके सामने आ खड़ा हुँ

आ। वह मुस्कुरा रहा था।

"मैं आपको दानिशमन्द समझता हूँ।" सलीबी ने कहा– "आप इस इलाक़े से निकल नहीं सकते। अहमक़ बने। नहा लें। मेरे साथ आयें।"

वह झील से नहा कर निकला और कपड़े पहने। सलीबी उसे अपने साथ ले आया। रास्ते में उसने सलीबी से पूछा–"यह लड़कियाँ तुम्हारे साथ हैं?"

"इस वीराने में ऐसी रौनक़ साथ रखना ज़रूरी है।" सलीबी ने कहा–"क्या आपकी तीन

चार बीवियां नहीं?....

अगर आपको उनके साथ दिलचस्पी नहीं तो न सही। अगर आप तन्हाई या घबराहट महसूस करें तो उन लड़कियों में से किसी को अपने साथ रख सकते हैं।"

इतने में एक लड़की नाश्ता लेकर आई। हबीबुल कुदुस उसे देखता ही रहा। लड़की उसके पास बैठ गयी और सलीबी बाहर निकल गया। लड़की ने बातों और अदाओं से उस पर तिलिस्म तारी कर दिया। बहुत देर बाद जब सलीबी वापस आया और लड़की चली गयी तो हबीबुल कुदुस को अफ़सोस सा हुआ।

"आप आज़ादे मिस्र के सालारे आला होंगे।" सलीबी ने उसे कहा– "आपके दस्तों में जो तीन हज़ार प्यादे और दो हज़ार सवार हैं वह आपके मुरीद हैं आप उनकी मदद से मिस्र की हुकूमत पर क़ब्ज़ा कर सकते हैं।"

"सलाहुद्दीन अय्यूबी हम्ला करेगा तो क्या मैं इन्हीं दस्तों से मिस्र को बचा लूंगा?

"सूडानी मुसलमान जो कभी मिस्र की फ़ौज में हुआ करते थे हमारे साथ होंगे।" सलीबी ने कहा– "सुल्तान अय्यूबी की फौज में जो मिस्री हैं उनतक हम ख़बर पहुंचायेंगे कि यह ख़ानाजंगी नहीं बल्कि मिस्री मिस्र को आज़ाद कराने के लिए लड़ रहे हैं। आप अपने दस्तों से बग़ावत करायें। आपको जंगी ताक़त देना हमारा काम है।"

उस आदमी ने लम्बी तफ़सील से अपना मंसूबा उसे बताया। हबीबुल कुदुस अब इन्कार नहीं कर रहा था बल्कि यूँ सवाल कर रहा था जैसे वह कायल हो गया हो।

"मैं वापस क़ाहिरा नहीं जाऊंगा तो बग़ावत कैसे कराऊंगा?" हबीबुल कुदुस ने पूछा।

"आप वापस नहीं जाएंगे।" सलीबी ने कहा– "आप यहीं से अपने काबिल एतमाद साथियों को पैग़ाम देंगे। उसका इन्तज़ाम हम करेंगे.......आपने हमारे एक क़ीमती आदमी को मार डाला है। हम आप को क़त्ल कर सकते हैं। हमारे बाज़ू इतने लम्बे हैं कि आपके खानदान के बच्चे–बच्चे को क़त्ल कर सकते हैं। अगर आप ने हमें धोखा दिया तो हम ऐसा करके दिखा भी देंगे।"

"फ़िर यहाँ मुझे लम्बे अर्से के लिए रहना पड़ेगा।" हबीबुल कुदुस ने कहा।

"कुछ अर्सा तो लगेगा।" सलीबी ने जवाब दिया।

"मेरी एक ज़रूरत पूरी कर दो।" हबीबुल कुदुस ने कहा–"तुमने मुझे दो लड़कियां पेश की हैं। मैं गुनाह से बचना चाहता हूँ। ऐसा ही हो सकता है कि मैं इतनी हसीन लड़की में उलझ कर अपना असल मक़सद भूल जाऊं। उसकी बजाए यह इन्तज़ाम करदो कि मेरी सबसे छोटी बीवी को जिसका नाम ज़ोहरा है, यहाँ ले आओ। उसे मैं पैग़ाम रसानी के लिए भी इस्तेमाल कर सकूंगा।"

"उसे अग़वा करना पड़ेगा।" सलीबी ने कहा–"अगर उसे हम यह कहेंगे कि आप उसे बुला रहे हैं तो वह हम पर एतबार नहीं करेगी। वह हमें पकड़वा भी सकती है। हम आप को जो नेअमुलबदल दे रहे हैं, उसे आप कुबूल कर लें और पैग़ाम रसानी के लिए अपने किसी आदमी का अतां पता दें।"

"फिर मुझ पर एअतबार करो।" हबीबुल कुदुस ने कहा–"मुझे काहिरा पहुंचा दो। मैं एक माह के अन्दर बग़ावत करा दूंगा।"

"यह नहीं हो सकता।" सलीबी ने कहा–"मोहतरम! हम जो कुछ कह रहे हैं वह मिस्र के मुफ़ाद में है और उसमें आप का भी फ़ायदा है। मैं या मेरी तंजीम का कोई भी फर्द मिस्र का हुक्मरान बनने का ख़्वाब नहीं देख रहा। आप समझने की कोशिश करें।"

"मैं समझ गया हूँ" हबीबुल कुदुस ने कहा–"और मैं सोंच समझ कर बात कर रहा हूँ। मेरी बीवी ज़ोहरा तक मेरा पैग़ाम पहुंचाओ कि मेरे पास आए। जो काम वह कर सकती है वह कोई नहीं कर सकता। उसके आने के बाद देखूंगा कि इस मंसूबे को किस तरह कामयाब बनाया जा सकता है।"

वह एक भिखारन थी जिसने ज़ोहरा को रास्ता में रोक लिया था। वह दो तीन दिनों से देख रही थी कि ज़ोहरा हबीबुल कुदुस के घर से हर रोज़ बाद दोपहर अपने माँ बाप के घर जाती है। भिखारन ने उसके आगे हाथ फ़ैलाकर कहा– "नायब सालार हबीबुल कुदुस ने आप को बुलाया है। यह उनके हाथ की तहरीर है।" ज़ोहरा ने कागज़ हाथ में लेकर तहरीर पढ़ी। यह उसके ख़ाविन्द के हाथ की थी। भिखारन ने कहा–"वह जाँ कहीं भी हैं ख़ुद गये हैं। इतने बड़े आदमी को कोई उठाकर नहीं ले जा सकता। वह सिर्फ़ आपको चाहते हैं और कहते हैं कि ज़ोहरा के बेग़ैर ज़िन्दा नहीं रह सकता...और मैं आप को यह भी बता दूं कि आप ने मुझे पकड़वाने की कोशिश या कोतवाल को इत्तलाअ दी तो दोनों को क़त्ल कर दिया जाएगा। हबीबुल कुदुस के पास आपको जाना ज़रूरी है।"

"मैं तुम पर किस तरह एतबार कर लूं?" ज़ोहरा ने पूछा।

"मैं भिखारन नहीं।" औरत ने जवाब दिया–"यह मेरा बहरूप है। मैं भी आप की तरह शहज़ादी हूं। हमारा मक़सद नेक और मुक़द्दस है। आप दिल में कोई वहम न रखें।"

उस औरत ने और भी बहुत सी बातें की जिनसे ज़ोहरा मुतास्सिर हो गयी। उसने उस औरत के कहने के मुताबिक़ रात को एक जगह चोरी छुपे पहुंचने का वादा कर दिया। उसने इस डर से किसी से ज़िक्र न किया कि उस औरत ने कहा था कि उसकी और उसके ख़ाविन्द की ज़िन्दगी और मौत का और मिस्र की आज़ादी और गुलामी का सवाल था।

उस रात मुक़र्रर की हुई जगह ज़्यादा इन्तज़ार न करना पड़ा। दो आदमी जिन्हें वह अंधेरे की वजह से पहचान न सकी, उसी भिखारन के साथ आए। भिखारन को उसने आवाज़ से पहचाना मगरवह अब भिखारियों के बहरूप में नहीं थी। वह कोई जवान और ख़ूबसूरत औरत थी। उसने ज़ोहरा से कहा–"अल्लाह के भरोसे पर उनके साथ चली जाओ। दिल में कोई डर न रखना।" उसे एक घोड़े पर बैठाया गया। वह दोनों भी घोड़ों पर सवार हुए और ज़ोहरा एक ऐसे सफ़र पर रवाना हो गयी जिसकी मंज़िल का उसे इल्म न था। औरत वहीं खड़ी रही। शहर से दूर जाकर सवारों ने ज़ोहरा से कहा कि उसकी आँख पर पट्टी बांधना ज़रूरी है। ज़ोहरा उनमें अकेली थी, मज़ाहमत नहीं कर सकी थी। उसकी आँखों पर पट्टी बांध दी गयी।

दो रोज़ बाद पता चला कि नायाब सालार हबीबुल कुदुस की छोटी बीवी लापता हो गयी है। सुरागरसानों ने इब्तेदाई तफ़तीश की तो वह मानने को तैय्यार न हुए कि उसे अग़वा किया गया है। हबीबुल कुदुस के मुतअल्लिक़ हर कोई कह रहा था कि वह सलीबियों या सूडानियों के पास चला गया है। अब लोग यह भी कहने लगे कि उसकी बीवी भी उसके पास चली गयी है। किसी को मालूम न हो सका कि वह किस वक़्त और किस तरह गयी है। उस वक़्त तक वह हबीबुल कुदुस के पास पहुंच चुकी थी। आँखें उस कमरे में खोली गयी थीं जहाँ उसका ख़ाविन्द उसके सामने खड़ा था। वह पूरी रात और अगला दिन आधा सफ़र में रही थी। रास्ते में उसे खाने पिलाने के दौरान आखों से पट्टी खोली गयी थी और उसे साथ ले जाने वाले आदमियों ने उसके साथ कोई बिला ज़रूरत या ऐसी वैसी बात नहीं की थी। उसे उन्होंने यह यक़ीन बार–बार दिलाया था कि उसको डरना नहीं चाहिए।

हबीबुल कुदुस को देखकर उसके जान में जान आई। उसके साथ सलीबी भी था। हबीबुल कुदुस ने ज़ोहरा से कहा–"यह हमारा दोस्त है और अपने आप को यहाँ क़ैदी न समझना। तुम बहुत थकी हुई हो। आज रात आराम कर लो। कल सुबह तुम्हें बतायेंगे कि हम क्या करने वाले हैं। तुम अक्सर कहा करती हो कि तुम मर्दों की तरह जिहाद में शरीक होना चाहती हो। मेरे इस दोस्त ने तुम्हारे लिए बड़ा अच्छा मौक़ा पैदा कर दिया है।"

सलीबी उन्हें अकेला छोड़कर बाहर निकल गया।

❖

ज़ोहरा अभी नौजवानी की उम्र में थी और उसके हुस्न में ख़ासी कशिश थी। जिस्म छरीरा और तबीअत में कुछ शोख़ी भी थी। शाम से ज़िरह पहले वह लड़कियां जिन्हें हबीबुल कुदुस ने तालाब में नहाते हुए देखा था उसके कमरे में आईं और ज़ोहरा को बेतल्लुफ़ सहेलियों की तरह अपने साथ ले गयीं। यह था तो हैबत नाक खंडर लेकिन लड़कियाँ जहाँ रहती थी वह कमरा सजा हुआ और वहाँ रंगीन फ़ानूस थे। उस कमरे में खंडर का गुमान नहीं होता था। ज़ोहरा थोड़े से वक़्त में उनमें घूल मिल गयी। उनमें से एक लड़की ने उसे कहा–"तुम्हारे माँ बाप कितने ज़ालिम हैं जिन्होंने तुम जैसी नौखेज़ कली को इस बूढे के क़दमों में फेंक दिया है। तुम्हें उसने ख़रीदा तो नहीं था?"

"हाँ!" ज़ोहरा ने रंजीदा लहजे में कहा–"उसने मुझे खरीदा था। मैं भाग कर कहीं जा भी तो नहीं सकती।"

"अगर कहीं पनाह मिल जाए तो भाग जाओगी?"

"अगर यह पनाह मेरी मौजूदा जिन्दगी से बेहतर हुई तो मैं ज़रूर भागूंगी।" ज़ोहरा ने कहा और बोली–"उसने मुझे यहाँ क्यों बुलाया है? तुम लोग कौन हो? क्या यह मुझे बेच रहा है?"

"अगर तुम हमारे पास आ जाओ तो शहज़ादी बनके रहोगी।" एक लड़की ने उसे कहा–"हम तुम्हें बता देंगी कि हम कौन हैं लेकिन इससे पहले यह देखना है कि तुम हमारे साथ रहने के काबिल हो या नहीं...तुम हमारे साथ बाहर जाकर हमारी तरह कपड़े उतार कर

तलाब में नहा सकोगी?"

"इस हैवान से मुझे आज़ाद करादो तो जो कहोगी करूंगी।" ज़ोहरा ने कहा।

एक आदमी ज़ोहरा को खाने के लिए बुलाने आ गया। उसने कहा कि नायब सालार खाने पर इन्तज़ार कर रहे हैं। ज़ोहरा चली गयी तो वही सलीबी आ गया जो हबीबुल कुदुस के साथ बात चीत करता रहा था। लड़कियों ने ख़ूशी का इज़हार करते हुए उसे बताया– "यह लड़की हमारे काम की है और वह उस बूढ़े ख़ाविन्द से सख़्त नफ़रत करती है। अगर तुम इजाज़त दो तो उसे अपने रंग में रंग लेती हैं। तुमने देख लिया है कि यह कितनी ख़ूबसूरत है। उसमें शोखी भी है और उसका जिस्म सख़्ती बर्दाश्त कर सकता है। तरबियत की ज़रूरत है।"

"लेकिन मैं यह सोंच रहा हूँ कि यह शख़्स तो यह कहता था कि उसे अपनी इस बीवी पर एतमाद है और वही पैग़ाम रसानी का काम कर सकती है।" सलीबी ने कहा–""अगर यह लड़की उस शख़्स से नफ़रत करती है तो उसे धोखा देगी और हम सबको पकड़वायेगी। इसका मतलब यह हुआ कि हमें इस मामिले में जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए। यह आदमी हमारे फ़रेब में आ गया है। मुझे मिस्री मुसलमन और वतन परस्त समझता है। हमारा काम करने को तैय्यार हो गया है। अगर यह लड़की उसे धोखा देने की सोंच सकती है तो हम उसे इस्तेमाल कर सकते हैं। मैं उसे परखूंगा। तुम रात को थोड़ी देर के लिए उसे मेरे पास ले आना किसी बहाने बाहर चली जाना।"

खाने के कुछ देर बाद लड़कियाँ फ़िर उसे हंसने खेलने और गप शप के लिए ले आईं। उसे पहले से ज़्यादा बेतकल्लुफ बल्कि किसी हद तक बेहया कर लिया। सलीबी आ गया और लड़कियाँ किसी बहाने बाहर निकल गयीं। सलीबी ने ज़ोहरा से वही बातें कीं जो लड़कियाँ उसके साथ कर चुकी थीं। सलीबी ने उसे अपने मीआर के मुताबिक़ परखा और उसे बाज़ू से पकड़ कर अपने क़रीब करने लगा ज़ोहरा ने अपना बाज़ू छुड़ा कर कहा–"मैं ऐसी आम और सस्ती चीज़ नहीं कि ज़िरह से इशारे पर आपकी गोद में गिर पड़ूगी।"

सलीबी को उसकी यह बात पसन्द आई। लड़की हर किसी के हाथ आने वाली नज़र नहीं आती थी। अलबत्ता उसने यह देख लिया कि ज़ोहरा में वह जौहर मौजूंद हैं जो जवान जासूस और तख़रीबकार लड़कियों में होते थे। ज़िरह तरबियत की ज़रूरत थी। उसे भी ज़ोहरा ने बताया कि उसे अपने ख़ाविन्द से नफ़रत है लेकिन वह चूंकि मजबूर है और नफ़रत का इज़हार नहीं कर सकती इसलिए वह समझता है कि वह उसे चाहती है।

"अभी भी नफ़रत का इज़हार न करना।" सलीबी ने उसे कहा–"मैं तुम्हें उससे आज़ाद करा दूंगा और तुम शहज़ादियों की तरह ज़िन्दगी बसर करोगी.....तुम यहीं बैठो। मैं तुम्हारी सहलियों को तुम्हारे पास भेज देता हूं।"

वह कमरे से निकल गया और लड़कियों के पास चला गया। उन्हें कहा–"लड़की काम की है। उसे अपने साये में ले लो। हबीबुल कुदुस उसे बुरी तरह चाहता है। उस लड़की को हम इस बात पर लायेंगे कि वह उसके साथ दिवानावार मोहब्बत का अमली इज़हार करती रहे

ताकि वह अपने काबिल एतमाद कमानदारों वग़ैरह के साथ उस लड़की की मारफ़त राब्ता कायम कर सके। यह तुम्हारा काम है कि लड़की को अपने जाल में ले लो। उसे अपनी ज़िन्दगी का शाहाना पहलू दिखाओ और तुम जानती हो कि उसे किस तरह और किस मक़सद के लिए तैय्यार करना है।"

❖

ज़ोहरा हबीबुल कुदुस के साथ वालिहाना मोहब्बत का इज़हार करती रही और सलीबी और उसकी साथी लड़कियों को बताती रही कि उसे हबीबुल कुदुस से नफ़रत है। दोनों लड़कियों ने उसे अपने साथ रखना और बाहर ले जाना शुरू कर दिया। उसे चश्में के तालाब पर ले गयीं तो उसने बिला झिझक तमाम कपड़े उतार दिए और लड़कियों के साथ पानी में खेलने लगी। फिर यह उनका रोज़ मर्रा का मामूल बन बया। रात वह हबीबुल कुदुस के साथ गुज़ारती थी। दिन का ज़्यादा तर वक़्त दोनों लड़कियाँ उसे अपने साथ रखतीं और कभी–कभी सलीबी भी उसके साथ दोस्ताना बातें करता था। ज़ोहरा चार पांच दिनों में उन लड़कियों जैसी हो गयी। उसकी शोख़ियां बेहायाई का रंग इख़्तियार करने लगीं और लड़कियाँ आहिस्ता–आहिस्ता उसे अपनी पुरअसरार ज़िन्दगी के मुतअल्लिक बताने लगीं।

उस दौरान सलीबी ने हबीबुल कुदुस के साथ बग़ावत का मंसूबा तय कर लिया। हबीबुल कुदुस ने मंसूबा तैय्यार करने में बहुत मदद दी। अब सलबी को उस पर एतबार हो गया था। उसने हबीबुल कुदुस को मिस्री फौज के एक दो आला हुक्काम और इन्तज़ामिया के हाकिमों के नाम बताए जो दरपरदा सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ थे और बग़ावत की सोंच रहे थे। उन्होंने ही यह फ़ैसला किया था कि किसी तरह उसे हाथ में लिया जाए। सलीबी ने उसे यह न बताया कि वह सलीबी है। वह अपने आप को मिस्री वतन परस्त ही बताता रहा। उसका मक़सद बग़ावत कराना था।

ज़ोहरा उन दोनो लड़कियों में इस क़दर शीरो शकर हो गयी थी कि अब यह कहना कि वह किसी शरीफ़ बाप की बेटी या एक मुसलमान नायब सालार की बीवी है ग़लत था। हबीबुल कुदुस उसे अपनी वफ़ादार बीवी समझता था। एक रोज़ उसने लड़कियों से कहा कि वह इस खंडर से और पहाड़ियों में घिरी हुई दुनिया से तंग आ गयी है। लड़कियों ने उसे कहा कि वह उसे पहाड़ों से परे की दुनिया दिखालाएंगी। चुनांचे वह उसे एक पहाड़ी के रास्ते से गुज़ारती एक झील के किनारे ले गयीं और उसके किनारे–किनारे जब वह और आगे गयी तो उसे दरियाए नील नज़र आया। उसी का पानी पहाड़ी के अन्दर आकर झील बना हुआ था। एक जगह पहाड़ी की ओट में एक कश्ती छुपी हुई थी। जिसमें दो चिप्पू थे। यह जगह बहुत ही ख़ूबसूरत थी। ज़ोहरा उन लड़कियों के साथ वहाँ हंसती खेलती रही।

"यहाँ फ़िरऔनों की शहज़ादियां खेला करती थीं।" एक लड़की ने कहा।

"तुम दोनों उनकी बदरूहें लगती हो।" ज़ोहरा ने हंस कर कहा।

"तुम्हारे मुक़ाबले में हम दोनों वाक़ई बदरूहें लगती हैं।" दूसरी लड़की ने कहा।

"सुनो ज़ोहरा!" एक लड़की ने उससे कहा–"तुम्हें मालूम हो गया है कि तुम्हारा यह बूढ़ा

ख़ाविन्द यहाँ क्यों छुपा बैठा है और तुम्हें क्यों लाया गया है?"

"वह तो पहले रोज़ ही उसने बता दिया था।" ज़ोहरा ने कहा– "मैं यह काम करूंगी मगर कहते हैं कि चन्द दिन रुक जाओ।"

"और तुम जानती हो कि हम आज़ाद मिस्र की शहज़ादियां होंगी?"

"मुझे उस ख़ाविन्द से आज़ाद करा देना तो मैं अपने आप को शहज़ादी समझने लगूंगी।" ज़ोहरा ने कहा।

"यह तय हो चुका है लेकिन तुम्हारे ख़ाविन्द को मालूम नहीं।" लडकी ने कहा– "क्या तुम इस काम के लिए तैय्यार हो जो उस सिलसिले में तुम्हें करना होगा?"

"वक़्त आयेगा तो देखना।" ज़ोहरा ने कहा–"अगर मुझे, यह काम न करना होता तो अपने ख़ाविन्द को यहाँ क़त्ल कर चुकी होती। यहां अच्छा मौक़ा था।"

❖

दूसरे दिन भी वह लड़कियों के साथ दरियाए नील के किनारे चली गयी। लड़कियाँ उसे जिस रास्ते दरिया तक ले जाती थीं, वह ऐसा रास्ता था कि वह अकेली जाती तो उसे यह रास्ता कभी न मिलता। यह रास्ता कुदरती था लेकिन ख़ुफ़िया। ज़ोहरा ने उन्हें एक दो बार कहा था कि कश्ती पर दरिया में चलें लेकिन लड़कियों ने उसे रोक दिया था। हबीबुल कुदुस पर भी अब पहले जैसी पाबन्दी नहीं रही थी, उसने यक़ीन दिला दिया था कि वह अज़ाद मिस्र का हामी है और सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का तख़्ता उलट कर दम लेगा। अब उसका यह हाल था कि सलीबी उसके साथ उस मौज़ूअ पर इतनी बातें नहीं करता था जितनी वह ख़ुद करने लगा था। उस शख़्स में इन्क़लाब आ गया था।

एक दो रोज़ बाद उस खंडर मे दो और आदमी आये। उनमें एक सूडानी था और दूसरा मिस्री। उन्हें हबीबुल कुदुस से मिलाया गया। वह उन दोनों को नहीं जानता था। उनके पास मिस्र, सूडान और अरब के नक़्शे थे कुछ और कागज़ात भी थे। उन्होंने हबीबुल कुदुस के साथ बग़ावत के हक़ीक़ी पहलूंओं पर बड़ी तवील बात की। हबीबुल कुदुस ने न सिर्फ़ दिलचस्पी का इज़हार किया बल्कि उन्हें ऐसे मश्वरे दिए जो उनके ज़ेहन में नहीं आए थे। उन्होंने हबीबुल कुदुस को चन्द और लोगों के नाम बता दिए जो मिस्र की फ़ौज और इन्तज़ामिया में थे और दरपरदा सुल्तान अय्यूबी के खिलाफ़ ज़मीन हमवार कर रहे थे। उन दोनों आदमियों ने यह भी बताया कि मिस्र की सरहद पर मिस्री फ़ौज के जो दस्ते हैं उन्हें ग़लत एहकाम देकर सरहदी दिफाअ में इतना शगाफ़ पैदा कर लिया जाएगा जिससे सूडान की फ़ौज के कुछ दस्ते अन्दर आकर बग़ावत में जान डाल सकेंगे।

"बग़ावत कामयाब होने की सूरत में मिस्र का अमीर कौन होगा?" हबीबुल कुदुस ने पूछा।

"चूंकि तंज़ीम ने फ़ैसला कर लिया है कि सालारे आला आप होंगे इसलिए सबने यह फ़ैसला भी किया है कि अमीर आप ही होंगे।" मिस्री ने कहा– "सलाहुद्दीन अय्यूबी यक़ीनन हम्ला करेगा और जंग तूल पकड़ सकती है इसलिए आज़ाद मिस्र का पहला अमीर सालार ही होना चाहिए। क्योंकि जंगी हालात में किसी ग़ैर अस्करी को इमारत की गद्दी पर बैठाना

मुनासिब नहीं होगा। आप में जो ख़ूबियां हैं वह और किसी सालार में नहीं।"

हबीबुल कुदुस का सीना और ज़्यादा फैल गया और उसकी गर्दन तन गयी।

"उम्मीद हैं कि आपको इस पर एतराज़ नहीं होगा कि ज़रूरत पड़ने पर हमने सलीबियों से भी मदद लेने का इन्तज़ाम कर लिया है।" सूडानी ने कहा।

"उन्हें मुआविज़ा किस शकल में दिया जाएगा?" हबीबुल कुदुस ने पूछा।

"उनके लिए यह मुआविज़ा काफ़ी है कि हम सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ़ लड़ेंगे और मिस्र को आज़ाद करायेंगे।" मिस्री ने कहा–"उन्हे मिस्र नहीं चाहिए। वह फ़िलिस्तीन को अय्यूबी से बचाने की फ़िक्र में हैं मिस्र अय्यूबी के हाथ से निकल गया तो वह उस फ़ौज से जो मिस्र में मौजूद है, महरूम हो जाएगा और उसे यहाँ से जो रस्द और दिगर जंगी इमदाद मिलती हैं वह बन्द हो जाएगी और उसने मिस्र पर हम्ला किया तो उसके साथ जो मिस्री सिपाही हैं वह अपने मिस्री भाईयों के खिलाफ़ नहीं लड़ेंगे।"

हबीबुल कुदुस ने उन्हें निहायत अच्छी तरकीबें बतायीं और यक़ीन दिलाया कि उसके मातेहत पाँच हज़ार नफ़री के जो दस्ते हैं वह उसके इशारे पर बग़ावत पर आमादा हो जाएंगे। अब तय यह करना था कि उन दस्तों को बग़ावत पर आमादा करने के लिए क्या क्या तरीके और ज़रिए इख़्तियार किये जाएं।'–'

"सूरत एक ही बेहतर है कि मैं वापस चला जाऊं।" हबीबुल कुदुस ने कहा–" मगर मुझे वापस नहीं जाना चाहिए क्योंकि मुझ से पूछा जाएगा कि मैं कहां रहा। मुझे अपनी बीवी ने बताया है कि अली बिन सुफ़ियान और ग़यास बलबीस यह कह रहे हैं कि मैं अपनी मरज़ी से दुश्मन के पास चला गया हूँ। उस शक के बिना पर वह मुझे हिरासत में ले लेंगे फिर हमारा खेल शुरू होने से पहले ही ख़त्म हो जाएगा। मैंने दरअसल यह ग़लती की है कि बीवी को यहाँ बुलाया है। उसे अगर वापस भेजा तो उसके साथ भी अच्छा सलूक नहीं होगा। मुझे यहीं रहना चाहिए। ज़िरह मुझे सोंचने दें कि मैं अपने कौन–कौन से कमानदार से आपका राब्ता क़ायम कराऊं।"

अब हबीबुल कुदुस की वफ़ादारी पर कोई शक नहीं रहा।

❖

"हलब का मुहासिरा खेल नहीं होगा।" सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी फ़रात के किनारे से खेमें में बैठा अपने सालारों से कह रहा था– "तुम सबको याद होगा कि हमने पहले भी एक बार उस शहर को मुहासिरे में लियाथा लेकिन हलब वाले ऐसी बेजिगरी से लड़े थे कि हमें मुहासिरा उठाना पड़ा था। यह हलब वालों की बहादुरी थी जिस ने हमें आने पर मजबूर कर दिया। अब वह हालात नहीं हैं,फ़िर भी हमें यह ख़तरे की पेशबन्द कर लेनी चाहिए। यहाँ से फ़ौज में जो भर्ती ली गयी है, उस पर अभी भरोसा नहीं किया जा सकता। मिस्र से कुमक मंगानी पड़ेगी। हो सकता है मैं नायब सालार हबीबुल कुदुस के दस्तों को बुला लूं।" यह कह कर सुल्तान अय्यूबी ख़ामोश हो गया। उसके चेहरे का रंग बदल गया। उसने दबी–दबी सी आवाज़ में कहता–"मैं मान नहीं सकता कि हबीबुल कुदुस मुझे धोखा दे गया है......वह

आख़िर कहाँ गया?......मैं जब मिस्र से रवाना होने लगा था तो उसने मुझे कहा था कि आप मिस्र का ग़म दिल से निकाल दें, सलीबियों या सूडानियों ने आप की ग़ैरहाज़िरी में मिस्र पर हम्ला किया तो सिर्फ़ मेरे तीन हज़ार पयादे और दो हज़ार सवार उनके हम्ले को पस्पा कर देंगे और अगर किसी ने मिस्र के अन्दर सर उठाया तो उसका सर उसके धड़ के साथ नहीं रहेगा......हम अल्लाह के सिपाही हैं लेकिन वह अल्लाह का शेर है।"

"मालूम होता है उसकी अपनी ख़ूबियों को देखते हुए दुश्मन ने उसे ग़ायब कर दिया है।" एक सालार ने कहा—"उसका आधी फौज पर बड़ा असर है। इस लिहाज़ से वह अपनी ज़ात में एक ताक़त है। दुश्मन ने हमें उस ताक़त से महरूम किया है।"

"अगर वह न मिला तो उसके दस्तों को यहां बुला लूंगा।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा—"लेकिन इतनी जल्दी नहीं बुलाऊंगा। मिस्र का दिफ़ाअ ज़्यादा ज़रूरी है। ख़तरा यह है कि मिस्र को बाहर से इतना खतरा नहीं जितना अन्दर से है। ईमान फ़रोश हमारे अन्दर बैठे हुए हैं। उन्होंने फ़िलिस्तीन को हमसे बहुत दूर कर दिया है।"

और इस वक़्त काहिरा से दूर पहाड़ियों में घिरे हुए एक डरावनें खंडर में सुल्तान अय्यूबी का काबिले एतमाद और बड़ा ही काबिल नायब सालार मिस्र में बग़ावत का इहतिमाम कर चुका था। खंडर में उस रात जश्न मनाया जा रहा था। अगर बाहर के लोग खंडर में आते तो डर कर भाग जाते। वह इन चन्द एक इन्सनों और इतनी हसीन लड़कियों को जिन्नात या बदरूहें समझते। सही मानों में जंगल में मंगल बना हुआ था। आठ दसआदमी थे। उनमें से हबीबुल कुदुस सिर्फ़ उस सलीबी को जो पहले दिन से उसके साथ था, मिस्री और सूडानी को जिनके साथ उसने बग़ावत के मंसूबे को आखिरी शकल दी थी, जानता था। दूसरों को उसने पहली बार देखा। यह सब उसी खंडर में हबीबुल कुदुस के आने से पहले मौजूद थे लेकिन पहाड़ियों के अन्दर और ऊपर छुप--छुप कर पहरा देते रहते थे। वह उन्हीं का एक साथी था जिसे हबीबुल कुदुस ने फ़रार की कोशिश में क़त्ल कर दिया था। अब पहरे की ज़रूरत नहीं थी। हबीबुल कुदुस उनका काबिल एतमाद दोस्त बन गयाथा। उसे उन्होंने ख़ुफ़िया तरीक़ों से आज़मा भी लिया था।

आज रात यह पूरा गिरोह जश्न मना रहा था। ज़याफ़त का वैसा ही इन्तज़ाम था जैसा किसी महफ़िल में होता है। शराब की सुराहियां खाली हो रही थीं। उनकी दोनो लड़कियों ने रक़्स भी किया था। हबीबुल कुदुस जश्न में शरीक था लेकिन उसने शराब पीने से इन्कार कर दिया था। उसे मजबूर न किय गया। ज़ोहरा ने दूसरी लड़कियों की तरह शराब पेश की लेनिक ख़ुद न पी। सलीबी ने मिस्री और सूडानी से कह दिया था कि ज़ोहरा के मुतअल्लिक मोहतात रहें वर्ना हबीबुल कुदुस बिगड़ जाएगा। ज़ोहरा ने दूसरी लड़कियों की तरह बेहायाई का मुज़ाहिरा न किया लेकिन जश्न में दिल चस्पी और जोश ख़रोश से हिस्सा ले रही थी।

आधी रात तक सब शराब में मदहोश हो चुके थे। मिस्री और सलीबी दोनों लड़कियों को अपने साथ ले गये। बाज़ तो बेहोश हो गये थे। ज़ोहरा ने हबीबुल कुदुस को आँख से इशारा किया। वह वहां से उठ गया। ज़ोहरा ने उस कमरे में जाकर झाँका जहाँ मिस्री और सूडानी

लड़कियों को ले गये थे। वह दोनों आदमी और लड़कियाँ बरहना हालत में पड़ी थीं। उनमें से कोई भी होश में नहीं था। ज़ोहरा को मालूम था कि हथियार कहां रखे हैं। वह एक बरछी, एक तलवार, दो कमानें और तीरों से भरे हुए दो तरकश उठा लाई। हबीबुल कुदुस उसके इन्तज़ार में खड़ा था। उसने ज़ोहरा के हाथ से तलवार ले ली। एक कमान और तरकश अपने कंधो से लटकाया और दूसरी ज़ोहरा के कंधों से लटका दी और बरछी उसके पास रहने दी।

"इन सबको कत्ल न कर दिया जाए?" ज़ोहरा ने हबीबुल कुदुस से पूछा।

"यहाँ से फौरन निकलना ज़्यादा ज़रूरी है।" हबीबुल कुदुस ने कहा—"मुझे दरिया तक ले चलो।"

ज़ोहरा ने दरिया तक रास्ता देख लिया था। अगर पहले यह रास्ता न देखा होता तो वह दोनों वहां से कभी न निकल सकते ज़ोहरा आगे—आगे चल पड़ी। वह दबे पांव जा रहे थे और उनके कान इधर उधर आवाज़ों पर लगे हुए थे हबीबुल कुदुस ने तलवार और ज़ोहरा नें बरछी तान रखी थी। ज़ोहरा हबीबुल कुदुस को कश्ती तक ले गयी जो छुपा कर रखी गयी थी। दोनों ने कश्ती खोली। उसमें बैठे और निहायत आहिस्ता—आहिस्ता चिप्पू मारने लगे ताकि आवाज़ पैदा न हो। हर लम्हा डर था कि कहीं न कहीं से कोई आदमी निकल आएगा या कहीं से तीर आयेगा.....कुछ भी न हुआ। कश्ती पहाड़ों के तंग रास्ते से निकल गयी और दरिया का शोर शुरू हो गया।

"अल्लाह का नाम लो और एक चिप्पू तुम सम्भाल लो।" हबीबुल कुदुस ने ज़ोहरा से कहा—"तुम जिहाद में हिस्सा लेने की ख़्वाहिश मन्द रहती थी। अल्लाह ने तुम्हें मौका दे दिया है। हम अभी ख़तरे से निकले नहीं। कश्ती को दरिया के दर्मियान ले चलते हैं।"

एक चिप्पू ज़ोहरा ने और दूसरा हबीबुल कुदुस ने ले लिया और दोनों कश्ती खेने लगे। पहाड़ियों के स्याह भूत पीछे हटने और छोटे होने लगे।

❖

उन दिनों दरियाए नील के किनारे से किनारे तक भरा हुआ और पूरे जोबन पर था। किनारे के साथ—साथ बहाव पुर सकून था, दर्मियान में बहते तेज़ और सरकश लहरें उठ रही थीं। हबीबुल कुदुस को वहाँ तक नहीं जाना चाहिए था लेकिन किनारे के साथ—साथ जाना भी पुरख़तर था। ज्योंहि कश्ती तेज़ बहाव में पहुंची, यूं लगा जैसे किसी कुव्वत ने उसे अपनी तरफ़ घसीट लिया हो। कश्ती तेज़ी से बहने लगी, ऊपर उठने और गिरने लगी। हबीबुल कुदुस ने ज़ोहरा से कहा—"घबरा न जाना, हम डूबेंगे नहीं। मैं ज़िरह सिम्त देख लूं।"

"आप मेरी फ़िक्र न करें।" ज़ोहरा ने कहा—"डूब गये तो क्या हो जाएगा। उन काफ़िरों की कैद से निकल तो आए हैं।" हबीबुल कुदुस ने आँखें सिकुड़ कर पहाड़ों की तरफ देखा जो अब ज़मीन के उभार की तरह नज़र आ रहे थे, फ़िर उसने आसमान की तरफ़ देखा और पुरजोश लहजे में कहा—"मैं इस जगह को पहचानता हूँ। इस पहाड़ी ख़ित्ते की सेहरा वाली तरफ़ अपने दस्तों को पहाड़ी जंग की मश्क करा चुका हूँ। इधर दरिया वाली तरफ़ से मैं वाकिफ़ नहीं था। हम सीधे काहिरा जा रहे हैं। नील हमें बड़ी तेज़ी से काहिरा ले जा रहा है..

...अल्लाह का शुक्र अदा करो ज़ोहरा! यह ख़ुदाई मदद है। अल्लाह नीयतों को पहचानता है. ....लेकिन हमें काहिरा से पहले एक और जगह रुकना है। कुछ दूर आगे दरिया का मोड़ है। उसके करीब हमारी फौजी चौकी है। दरियाई गश्त के लिए उनके पास कश्तियाँ हैं। उस चौकी की नफरी से मैं उन सब आदमियों को पकड़ सकूंगा, मगर वह बेदार हो जाएंगे।"

"मुझे उम्मीद है कि कल दोपहर तक उनमें से कोई भी बेदार नहीं हो सकेगा।" ज़ोहरा ने कहा–"मेरे हाथ से उन्होंने शराब खासी ज़्यादा पी ली थी और मैंने आख़िरी भरी हुई सुराही से उन्हें जो एक–एक प्याला पिलाया था, उसमें ख़ाकी से रंग का थोड़ा सा सफ़ूफ़ मिला दिया था।"

"वह क्या था?"

"उन लड़कियों पर मैंने जिस तरह एतमाद पैदा कर लिया था, वह तो आप को हर रात तन्हाई में बताती रही हूँ।" ज़ोहरा ने कहा–"कल की बात है कि उन्होंने हशीश दिखाई और उसका इस्तेमाल समझाया, फ़िर उन्होंने मुझे एक डिबिया खोल कर यह सफ़ूफ़ दिखाया और कहा कि बाज़ आदमियों को बेहोश करना ज़रूरी होता है। यह चुटकी भर सफ़ूफ़ शरबत या पानी या खाने में मिला दो तो वह आदमी बेहोश हो जाता है। उसे जहाँ जी चाहे उठा ले जाओ. ...आज रात जब मैं शराब के मटके से आख़िरी सुराही भरने गयी तो उस डिबिया में से आधा सफ़ूफ उसमे मिला दिया। अगर उसका असर वैसा ही है जैसा लड़कियों ने बताया है तो उन्हें कल शाम तक होश में नहीं आना चाहिए।"

हबीबुल कुदुस ने आंखें सुकेड कर पहाड़ों की तरफ देखा और पुर जोश लहजे में बोला–"मैं इस जगह को पहचानता हूँ।" उसके आँसू फूट आए। यह जज़्बात की शिद्दत और ख़िराजे तहसीन के आंसू थे। उसने रुंधी हुई आवाज़ में कहा–"मैंने तुम्हें बहुत सख़्त आज़माईश में डाल दिया था ज़ोहरा! मैंने तुम्हें जिस दुनिया का भेद लेने को कहा था वह गुनाहों की ग़लीज़ मगर बड़ी हसीन दुनिया है। तुमने मेरे लिए बहुत बड़ी कुर्बानी दी है।"

'आप के लिए नहीं इस्लाम की अज़मत के लिए।" ज़ोहरा ने कहा–"मैं आप की शुक्रगुज़ार हूं कि आपने मुझे यह मुकद्दस फर्ज़ अदा करने का मौका दिया। आप शायद मुझ पर एतबार न करें। गुनाहों की पुरकशिश दुनिया में जाकर भी अपना दामन गुनाह से पाक रखा है। यह भी अच्छा हुआ कि मुझे यहाँ लाया गया तो उन्होंने मुझे आप के साथ तन्हा रहने दिया वरना आप मुझे बता न सकते कि यह लोग आपको बग़ावत कराने के लिए अग़वा करके लाए हैं और मुझे उन लड़कियों में बेहाया और शोख लड़की बन कर यह ज़ाहिर करना है कि मुझे आप से नफ़रत है और मैं उससे भागना चाहती हूँ। आपने जब मुझे उन लड़कियों की ख़स्लतें और उनके कमालात बताए और कहा कि मैं भी ऐसी ही बन जाउँ तो मैं घबरा गयी थी क्योंकि मैं तसव्वुर में भी ऐसा नहीं कर सकती लेकिन यह बड़ी ही अजीब बात है कि यह हरकतें और यह सब बातें मुझ से बग़ैर कोशिश के हो गयीं और ख़ुदा ने मुझे कामयाबी अता फ़रमाई। अगर यह लड़कियाँ मुझे दरिया तक का रास्ता न दिखातीं तो हम वहाँ से कभी न निकल सकते... .क्या आप ने मुझे इसी काम के लिए यहाँ बुलया था?"

"नहीं!" हबीबुल कुदुस ने कहा–"यह सूरत तुम्हारें आने से अज़खुद पैदा हो गयी। मैंने कुछ और सोंचा था। तुम्हें इस्तेमाल अपने रिहाई के लिए करना था। तुम्हें फ़र्ज़ी पैग़ाम रँसा बनाना चाहता था लेकिन उन लड़कियों ने तुममें किसी और ही दिलचस्पी का इज़हार किया तो मेरे दिमाग़ में यह तरकीब आ गयी। जिस पर तुम ने निहायत ख़ूबी से अमल किया और अब हम आज़ाद हैं......मैंने उन लोगों पर एतमाद कर लिया था। मेरा ख़्याल था यह लोग ग़ैर मामूली तौर पर चालाक होते हैं लेकिन हम लोग अपने होश और ईमान क़ायम रखें तो यह लोग अहमक हैं। मेरे साथ जिस आदमी को तुमने देखा था वह अपने आप को मिस्र का मुसलमान जाहिर करता था। मैं पहले रोज़ ही जान गया था कि यह सलीबी है और मैं सलीबियों के जाल में आ गया हूं।"

❖

वह पहाड़ी ख़ित्ता बहुत दूर रह गया था। नील के दर्मियान की रू बहुत ही तेज़ हो गयी और ज़्यादा जोश में आ गयी थी। कश्ती उसके रहम व करम पर ऊपर उठती और गिरती जा रही थी। चिप्पू बेकार थे। दरिया के जोश और क़हर में जो इज़ाफ़ा हो गया था उससे अन्दाज़ा होता था कि दरिया तंग हो गया है और आगे मोड़ है। यह वही मोड़ था जिसके कुछ आगे फ़ौज की चौकी थी......अचानक कश्ती रुकी और घूम गयी। हबीबुल कुदुस ने चिप्पू थाम लिए। दरिया का शोर बहुत बढ़ गया था कश्ती एक चक्कर में घूमने लगी। कश्ती भंवर में आ गयी थी। हबीबुल कुदुस ने पूरी ताक़त से चिप्पू मारे मगर भंवर के चक्कर की ताकत बहुत ज़्यादा थी। कश्ती क़ाबू में नहीं रही थी। उसे अपने दोनों मुसाफ़िरो समेत दरिया के तह में जाना था।

"ज़ोहरा!" हबीबुल कुदुस ने चिल्ला कर कहा–"मेरी पीठ पर आ जाओ।"

ज़ोहरा उसकी पीठ पर सवार हो गयी और बाज़ू उसकी गर्दन के गिर्द लपेट लिए। हबीबुल कुदुस ने उसे कहा– "मुझे और ज़्यादा मजबूती से पकड़ लो और मुझ से अलग न होना!" यह कहकर उसने चक्कर में भंवर के ज़ोर पर तैरती कश्ती से दरिया में इस तरह छलांग लगाई कि भंवर से बाहर पहुंच जाए।

वह ज़ोहरा के साथ पानी के अन्दर चला गया और जिस्म की तमाम तर कुव्वतें मरकूज़ करके उभर आया। वह भंवर की ज़द से निकल गया लेकिन यह मोड़ था और दोनों तरफ़ चट्टाने थीं। पानी सिकुड़ गया था और मौजें ज़्यादा उंची और ग़ज़बनाक हो गयी थीं। ज़ोहरा तैरना नहीं जानती थी। उसने ख़ुदा से मदद माँगनी शुरू कर दी। हबीबुल कुदुस उसके बोझ तले सैलाब की मौजों से लड़ रहा था। वह उसे चट्टान के साथ पटख़ती थीं और वह चट्टान से बचने के लिए हाथ पांव मारता था। उसकी कोशिश यह थी कि अपना और ज़ोहरा का मुंह पानी से बाहर रखे लेकिन मौजें उसे बार–बार डूबो कर ऊपर से गुजर जाती थीं।

फ़िर मौजें उसे मोड़ से निकाल ले गयीं और दरिया चौड़ा हो गया। हबीबुल कुदुस के बाज़ू और टांगे शल हो चुकी थीं। उसने ताक़त के आख़िरी ज़र्रे यकजा किए और उस तुन्द

री से निकलने को ज़ोर लगाया। उसने महसूस किया कि ज़ोहर की गिरफ़्त ढीली हो गयी है। उसने ज़ोहरा को पुकारा वह न बोली। उसके बाज़ू बिल्कुल ढीले हो गये.....हबीबुल कुदुस समझ गया कि ज़ोहरा के मुँह और नाक के रास्ते पानी अन्दर चला गया है। उसे बचाना और तैरना बहुत मुश्किल हो गया। उसने एक हाथ से उसे संभाला और ज़ोर लगाया तो तुन्द रौ से निकल गया। किनारा भी दूर था। अब तैरना आसान था। उसने मदद लिए के चिल्लाना शुरू कर दिया।

उसका जिस्म अकड़ चुका था और ज़ोहरा गिरी जा रही थी कि एक कश्ती उसके क़रीब आई। उसे आवाज़ सुनाई दी–"कौन हो?" उसने आख़िरी बार बाज़ू मारे और लपक कर किनारा पकड़ लिया। उसने कहा–"इसे मेरे उपर से उठा लो।" ज़ोहरा को कश्ती वालों ने उपर घसीट लिया। वह बेहोश हो चुकी थी। कश्ती में उसके फ़ौज के सिपाही थे। उनकी चौकी यहीं थी। वह हबीबुल कुदुस की पुकार पर इधर आये थे।

चौकी मे जाकर उसने बताया कि वह नायब सालार हबीबुल कुदुस है। चौकी के कमानदार ने उसे पहचान लिया और बहुत हैरान हुआ। ज़ोहरा बेहोश पड़ी थी। हबीबुल कुदुस ने उसे पेट के बल लिटाकर पीठ और पहलू पर अपना वज़न डाला तो उसके मुंह से औरनाक से बहुत पानी निकला। वह अभी होश में नहीं आई थी। हबीबुल कुदुस ने कमानदार से कहा कि दो बड़ी कश्तियों में दस–दस सिपाही सवार करो और पहाड़ी ख़ित्ते तक चलो। उसने बताया कि पहाड़ियों के अन्दर जो खंडर है उसमें दस बारह सलीबी तख़रीबकार बेहोश पड़े हैं उन्हें लाना है और हो सकता है कि वहां कुछ और आदमी पहुंच चुके हों। मुझे ख़ुश्की की तरफ़ से अन्दर जाने के रास्ते का इल्म नहीं।

"मैं एक रास्ता जानता हूँ।" कमानदार ने कहा–"ख़ुश्की से आसान रहेगा।"

❖

बीस घोड़सवारों के आगे हबीबुल कुदुस और चौकी का कमानदार था। सुबह की रौशनी अभी धुंधली थी जब वह पहाड़ियों में दाखिल हो गये। ख़ामोशी की ख़ातिर उन्होंने घोड़े बाहर ही रहने दिए और पैदल आगे चले गये हबीबुल कुदुस की जिस्मानी हालत को दरिया ने चूस लिया था। फिर भी चला जा रहा था। वह अपनी बीवी को बेहोशी की हालत में चौकी में छोड़ आया था। उसके लिए ज़्यादा ज़रूरी तख़रीबकारों की गिरफ़्तारी थी। वह पहाड़ियों और चट्टानों के दर्मियान भूल भुलइयों जैसे रास्तों से गुज़रते गये। कुछ देर बाद उन्हें खंडर नज़र आने लगा।

सबसे पहले हबीबुल कुदुस को सलीब नज़र आया। उसके कदम डगमगा रहे थे और सर डोल रहा था उसे पकड़ा गया तो वह कुछ बड़बड़ाया। सात आठ आदमी वहीं बेहोश पड़े थे जहाँ रात को गिरे थे। कमरे में मिस्री और सूडानी और दोनों लड़कियां बरहना और बेहोश पड़ी थीं। उन सबको सिपाहियों ने उठा लिया। उनका सामान भी उठा लिया गया और उस सबको घोड़ों पर डाल कर चौकी पर ले गये। उस वक़्त ज़ोहरा होश में आ चुकी थी।

दिन का पिछला पहर था जब यह तख़रीबकार होश में आने लगे। उस वक़्त क़ाहिरा के

रास्ते में थे। वह घोड़ों के साथ बंधे हुए थे और वह बीस सिपाहियों की हिरासत में थे। हबीबुल कुदुस ने उनके साथ कोई बात न की। काफ़ला चलता रहा।

आधी रात के बाद अली बिन सुफ़ियान के मुलाज़िम ने उसे जगाया और कहा कि अमीर बुलाते हैं। वह फ़ौरन पहुँचा। वहाँ ग़यास बलबीस भी मौजूद था। अली बिन सुफ़ियान यह देखकर हैरान रह गया कि हबीबुल कुदुस भी बैठा था। उसने उन तमाम फ़ौजी और ग़ैर फ़ौजी हाकिमों के नाम बताये जो उसे खंडर से मालूम हुए थे। यह ग़द्दार थे। उन्हें बग़ावत में शामिल होना और कामयाब कराना था। कायम मुक़ाम अमीर के हुक्म से उसी वक़्त उन सबके घरों पर छापे मारे गये और सबको गिरफ़्तार कर लिया गया। उनके घरों से जो ज़र व जवाहरात बरामद हुए वह उनके जुर्म को साबित करते रहे थे।

❖

उस वक़्त सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी हलब को मुहासिरे में लेने के लिए उस शहर के क़रीब एक मुक़ाम मैदानुल खिदर पर ख़ेमाज़न था। उसने शाम और दूसरे मुक़ामात से अपनी फ़ौज के थोड़े–थोड़े दस्ते बुला लिए थे। हलब के मुतअल्लिक वह अपने सालारों से कह चुका था कि इस शहर के लोग उसी तरह बेजिगरी से लड़ेंगे जिस तरह वह पहले मुहासिरे में लड़े थे। गो उसके जासूसों ने जो हलब के अन्दर थे उसे यह इत्तलाअ दी थी कि अब इतने वर्षों की ख़ानाजंगी से हलब के लोगों के ख़्यालात बदल गये हैं। ख़्यालात बदलने के लिए सुल्तान अय्यूबी ने भी ज़मीनदोज़ इहतिमाम किया था। अब वहाँ का हुक्मरान सुल्तान इमादुद्दीन था जिसे लोग ज़्यादा पसन्द नहीं करते थे. फ़िर भी सुल्तान अय्यूबी किसी ख़ुशफ़हमी में मुब्तला न हुआ। उसने इधर उधर से दस्ते मैदानुल खिदर में जमा कर लिए।

वह अपने सालारों को आख़िरी हिदायात दे रहा था कि काहिरा से क़ासिद पहुंचा। उसने जो पैग़ाम दिया उसे पढ़कर उसका चेहरा चमक उठा। उसने बुलन्द आवाज़ से कहा–"मेरा दिल कह रहा था कि हबीबुल कुदुस मुझे धोखा नहीं देगा। अल्लाह इस्लाम की हर बेटी को ज़ोहरा का जज़्बा और ईमान दे।" अली बिन सुफ़ियान ने उसे नायब सालार हबीबुल कुदुस की वापसी की सारी रूएदाद लिखी थी जिसमें उसकी बीवी ज़ोहरा का तफ़सीली ज़िक्र था। उसने उसी वक़्त पैग़ाम का जवाब लिखवाया जिसमें उन ग़द्दारों के लिए जो पकड़े गये थे। यह सज़ा लिखी कि उन्हें घोड़ों के पीछे बांध कर घोड़े शहर में दौड़ाये जाएं और घोड़ों को उस वक़्त रोके जाएं जब उन ग़द्दारों का गोश्त हड्डियों से अलग हो जाएं

दो रोज़ बाद सुल्तान अय्यूबी ने हलब पर चढ़ाई कर दी जो मुहासिरा नहीं यलग़ार थी। बड़ी मिन्जनिकों से शहर के दरवाज़ों पर पत्थर और आतिशगीर सयाल की हाडियां मारी गयीं। शहर की दिवारों पर और अन्दर भी हाडियां फेंक कर आतिशी तीरों का मेंह बरसा दिया गया। दिवारों को तोड़ने वाले ज़ैश दिवारें तोड़ने लगे लेकिन शहर वालों और फ़ौज की तरफ़ से मज़ाहमत में इतनी शिद्दत नहीं थी। क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद ने अपनी याददाश्तों में लिखा है कि हलब के हुक्मरान इमादुद्दीन के उमरा वुज़र उसके ख़ामियों से आगह थे। उसने सलीबियों से जंगी इमदाद के अलावा सोने की सूरत में दौलत बहुत ली थी। उसके

उमरा वुज़रा की नज़रें उस पर थी। उन्होंने ऐसे मुतालिबात पेश किए कि इमादुद्दीन जो पहले ही सुल्तान अय्यूबी की तूफ़ानी यलग़ार से खौफज़दा था, उनके मुतालिबात से घबरा गया।

उसने हलब के क़िलादार (गर्वनर) हिसामुद्दीन को सुल्तान अय्यूबी के पास इस दरख़्वास्त के साथ भेजा कि उसे मुसिल का थोड़ा सा इलाका दे दिया जाए। सुल्तान अय्यूबी ने उसकी यह शर्त मान ली। यह ख़बर जब शहर के लोगों ने सुनी तो वह इमादुद्दीन के महल के सामने इकठ्ठे हो गये। इमादुद्दीन ने ऐलान किया कि यह ख़बर सही है कि वह हलब से दस्तबरदार होकर जा रहा है और लोग अपना कोई नुमाइंदा सुल्तान अय्यूबी के पास भेज कर उसके साथ सुलह कर लें या जो कार्रवाई वह करना चाहते हैं करें।

शहर के मुअज़्ज़ज़ीन ने अज़ाउद्दीन जरदोकुन्नूरी और ज़ैनुद्दीन को अपनी नुमाईंदगी के लिए सुल्तान अय्यूबी के पास भेजा। जरदोकुन्नूरी ममलूक था। वह 11 जून 1183 ई0 (17 सिफ़र 579 हि0) के रोज़ सुल्तान अय्यूबी के पास गये और अपनी तमाम फ़ौज को शहर के बाहर बुलाकर सुल्तान अय्यूबी के हवाले कर दिया। फ़ौज के साथ हलब के मुअज़्ज़ज़ीन और उमरा वुज़रा भी आये थे। सुल्तान अय्यूबी ने सबको बेशकीमत लिबास पेश किए।

छठे रोज़ जब सुल्तान अय्यूबी इस फ़तह से मसरूर था। उसे इत्तलाअ मिली थी कि उसका भाई ताजुल मुल्क जो उसी जंग में ज़ख़्मी हुआ था चल बसा है। सुल्तान अय्यूबी की मुसर्रत गहरे ग़म में बदल गयी। ताजुल मुल्क के जनाज़े में इमादुद्दीन भी शामिल हुआ। उसके बाद इमादुद्दीन हलब से निकल गया। सुल्तान अय्यूबी ने हलब की हुकूमत संभाल ली। बहाउद्दीन शद्दाद के बयान के मुताबिक़, उसने अपनी तमाम फ़ौज को जो लम्बे अर्से से मुसलसल लड़ रही थी रूख़्सत पर घरों को भेज दिया और ख़ुद हलब के इन्तज़ामी उमूर में मसरूफ़ हो गया। उसकी मंज़िल बैतुल मुक़द्दस थी।

❖❖

अय्यूबी ने क़सम खाई

सलाहुद्दीन अय्यूबी के चेहरे पर उस रोज़ रौनक थी और आँखों में वह चमक जिसे उसकी हाई कमाण्ड के सालार और उसके क़रीब रहने वाले सिवील हुक्काम बड़ी अच्छी तरह पहचानते थे। उसके चेहरे पर ऐसी रौनक और आँखों में ऐसी चमक उस वक़्त आया करती थी जब वह कोई तारीख़ी फ़ैसला कर चुकता था। वह मोहर्रम 583 हि0 (मार्च 1187 ई0) का महीना था। सुल्तान अय्यूबी दमिश्क़ में था। वह उन तमाम मुसलमान उमरा हुक्मरानों और क़िलेदारों को अपना मुतीअ और इत्तेहादी बना चुका था जो सलीबियों के दोस्त बनकर उसके ख़िलाफ़ मुहाज़आरा हो गये थे। उनमे से सबसे ज़्यादा अहम हलब और मुसिल के वालिये अज़ाउद्दीन और इमादुद्दीन थे। उन्होंने वर्षों पर फैली हुई ख़ानाजंगी के बाद सुल्तान अय्यूबी के आगे हथियार डाल दिए थे। उनकी फ़ौजें सुल्तान अय्यूबी के मुश्तर्का कमान के तेहत आग गयी थीं।

वह दमिश्क़ उस वक़्त गया था जब उसने यह अहद पूरा कर लियाथा कि फ़िलिस्तीन की तरफ पेशक़दमी से पहले ईमान फ़रोशों को घुटनों बिठाऊंगा ताकि उनमें से कोई भी उसके और क़िब्ला अव्वल के दर्मियान हायल न हो सके। उन गद्दारो को बज़ोरे शम्शीर राहे रास्त पर लाकर सुल्तान अय्यूबी ने अपनी ज़ुबान से यह नहीं कहा था कि फ़ातेह हूँ। वह कहा करता था कि इस्लाम की तारीख़ का यह बाब बड़ा ही शर्मनाक होगा जिसमें यह वाक़िआत बयान किए जाएंगे कि सलाहुद्दीन का दौर स्याह दौर था जब सलीबी बैतुलमुक़द्दस पर क़ाबिज़ थे और मुसलमान आपस में लड़ रहे थे। अल्बत्ता वह यह ज़रूर कहा करता था कि ग़द्दारों को अपना इत्तेहादी बनाकर हमने सलीबियों के अज़ाईम तबाह कर दिए हैं।

उस रोज़ दमिश्क़ में उसने अपनी हाई कमाण्ड के सालारों, मुशीरों और फ़ौज से तअल्लुक रखने वाले ग़ैर फ़ौजी हुक्काम को कान्फ़्रेंस के लिए बुलाया तो सबने सुल्तान के चेहरे पर मख़्सूस रौनक और आँखों में वह चमक देखी जो कभी-कभी देखने में आया करती थी। सब समझ गये कि उनके सुल्तान ने अपनी मंज़िल को रवाना होने का फ़ैसला कर लिया है। उसमें किसी को शक न था कि उसकी मंज़िल बैतुल मुक़द्दस है। अब उन्हें उसकी ज़ुबान से यह सुनना था कि किस रोज़ और किस वक़्त कूच होगा किस तरतीब से होगा और रास्ता कौन सा होगा।

"मेरे दोस्तो! मेरे रफ़ीको!" सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ठहरी हुई आवाज़ में उनसे मुख़ातिब हुआ-"आप सब यक़ीनन मेरी ताइद करेंगे कि हम बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ पेशक़दमी के लिए तैय्यार हैं। आज मैं आप से जो बातें करूंगा और आप अपने शकूक रफ़ा

करने के लिए मुझ से सवाल पूछेंगे और जो एतराज़ करेंगे वह हमारी तारीख़ होगी। हमारे अल्फ़ाज़ और हमारे अहद तारीख़ की तहरीर बनेंगे और तहरीर हमारी आख़िरी नस्ल तक जाएगी। यह भी न भूलना कि हम इस दुनिया में यह तहरीर छोड़ जाएंगे और ख़ुदा के हुज़ूर अपने आमाल लेकर जाएंगे। यह फ़ैसला आप को करना है कि हमें अपनी आने वाली नस्लों के आगे और ख़ुदाए ज़ुलजलाल के आगे शर्मसार होना है या सुर्ख़ुरू। फ़तह की ज़मानत हम में से कोई भी नहीं दे सकता मगर हम सब यह अहद कर सकते हैं कि हम लड़ेंगे, मरेंगे, वापस नहीं आयेंगे।"

सुल्तान अय्यूबी ने सबको देखा। उसकी निगाहें सब पर घूमीं। उसके होंठों पर मुस्कुराहट आ गयी। उसने कहा– "मैं तुम्हें ख़ुश फ़हमियों में मुब्तला नहीं करूंगा लेकिन आपमें से किसी के दिल में यह डर हो कि सलीबियों के पास जितनी फ़ौज है हम उससे आधी फ़ौज तैय्यार कर सके हैं और हम इतनी दूर लड़ने जा रहे हैं। मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि हम थोड़ी सी कम नहीं बल्कि बहुत कम तादाद से कई गुना ज़्यादा दुश्मन से लड़े और ...तह पाई है। जंग तादाद सेनहीं जज़्बे और अक़्ल से लड़ी जाती है। ईमान मज़्बूत हो तो बाज़ू, तलवारें और दिल भी मज़बूत हो जाते हैं। हमारे पास ईमान की कमी नहीं, अक़्ल की कमी नहीं। अपने ईमान को मज़बूत रखें और अक़्ल इस्तमाल करें।"

"हममें कोई एक भी नहीं जो अपनी और दुश्मन की फौजी ताक़त का मवाज़ना कर रहा हो।" छापामारों के सालार सारिम मिस्री ने उठकर कहा और अपने साथियों पर नज़रें दौड़ायीं। हर एक ने उसकी ताईद की। सारिम मिस्री ने कहा–"अलबत्ता यह देखना ज़रूरी है कि हम बैतुल मुक़द्दस तक किस तरफ़ से और किस अन्दाज़ से पहुंचेंगे। इहतियात लाज़िमी है। हम तकब्बुर से गुरीज़ और हक़ीक़त को तस्लीम करेंगे।"

"मैंने आपको यही बताने के लिए बुलाया है।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा–"मैं ने पेशक़दमी और जंगी मंसूबा आपके मश्वरों से तैय्यार किया है और मैंने कई रातों की सोंच के बाद फ़ैसला किया है कि हमारी पहली मंज़िल हतीन होगी। आप सब हतीन की जंगी अहमियत से आगाह हैं। वहाँ मुझे वह ज़मीन मिल जाएगी जहाँ मैं सलीबियों को लड़ाना चाहता हूँ। जंग का यह उसूल जो मैं आपको पहले भी कई बार बता चुका हूँ अपने ज़ेहन पर नक़्श कर लो कि जंग में आपकी बेहतरीन दोस्त ज़मीन है जिस पर आप दुश्मन को लाकर लड़ाते हैं। ज़मीन ऐसी मुन्तख़ब करो जो आप को फ़ायदे और दुश्मन को नुक़्सान दे। यह ज़मीन हमें हतीन के इलाक़े में मयस्सर आयेगी, बशर्तिया कि आप बर्क़ रफ़तारी, राज़दारी और पहल कारी से उस ज़मीन तक पहुंच जाएं और दुश्मन को तमाम फ़ायदों से महरूम कर दें..

"हतीन के इलाक़े में बुलंदियां भी हैं और पानी भी। आप बुलन्दियों और पानियों पर क़ब्ज़ा कर लें तो समझ लें कि आप आधी जंग जीत गये लेकिन दुश्मन को ऐसी ज़मीन पर लाना आसान काम नहीं। अगर हमारे मंसूबे की एक भी कड़ी पर अमल न हो सका तो सारा मंसूबा तबाह हो जाएगा और तबाही हमें वहाँ तक ले जाएगी जहां से वापसी नामुम्किन होगी। मेरा ख़्याल है कि हम इस माह के वस्त तक दमिश्क़ से कूच कर सकेंगे। मैंने हलब और मिस्र

क़ासिद भेज दिए हैं। उन्हें तेज़ रफ़्तारी से, कम से क़म पड़ाव करके, फ़ौजें भेजनी हैं जो हमें रास्ते में मिलेंगी। हमें अपनी तमाम फ़ौजों को एक जगह जमा करना है। बाहर से आने वाली फ़ौज और यहां की फ़ौज को मिलाकर और उनके सालारों को मुकम्मल मंसूबा बताकर फ़ौजों को तक़सीम करनी है हमारी पेशक़दमी फ़ौज के मुख़्तलिफ़ हिस्सो की पेशक़दमी होगी। हर हिस्से का रास्ता अलग होगा.....

"मैंने राज़दारी बरक़रार रखने का इन्तज़ाम हसबे मामूल कर दिया है। आप के सिवा किसी और को, किसी कमानदार और किसी सिपाही को मालूम नहीं होना चाहिए कि हम कहाँ जा रहे हैं। हमारे जासूस दुश्मन के इलाक़े में मौजूद हैं। वह दुश्मन की ज़िरह ज़िरह सी हरकत की इत्तलाअें बाक़ायदगी से भेज रहे हैं। अब ज़रूरत यह है कि दुश्मन के उन जासूसों को अंधा बहरा और गुमराह कर दिया जाए जो हमारे इलाक़े में मौजूद हैं। हसन बिन अब्दुल्लाह ने इसका भी इन्तज़ाम कर दिया है। एक बात मैं आप को अभी बता देना चाहता हूं। वह यह है कि फ़ौज का एक हिस्सा मेरे साथ होगा जिसे मैं कर्क ले जाऊंगा।"

सुल्तान अय्यूबी अचानक ख़ामोश हो गया। उसका सर झुक गया। कुछ देर बाद उसने सर को झटका देकर उपर किया और बोला—"चार साल गुज़रे मैंने एक क़सम खाई थी। मुझे यह क़सम पूरी करनी है।"

❖

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की यह क़सम तारीख़ी वाक़िआ था। उसने कान्फ़्रेंस में चार साल पहले का यह वाक़िआ सबको याद दिलाया। इस सिलसिले की पहली कहानियों में तफ़सील से सुनाया जा चुका है कि सलीबी हुक्मरान अख़्लाक़ और किरदार से ऐसे आरी थे कि मुसलमानों के क़ाफ़लों को लूट लेते थे। यह काम उनकी फ़ौज किया करती थी। जिन दिनों हाजियों के क़ाफ़ले हिजाज़ को जाते और वापस आते थे। उन दिनों सलीबी फ़ौज के दस्ते उन क़ाफ़लों को लूटने के लिए रास्तों में घात लगाते थे। एक सलीबी हुक्मरान अर्नात जो उस वक़्त कर्क पर क़ाबिज़ था यह काम अपने हुक्म और अपने ख़ास दस्तों से कराया करता था। अपने इस जुर्म पर वह नाज़ भी किया करता था और हाजियों के क़ाफ़ले लूट कर फ़ख़्र से उसका ज़िक्र किया करता था जैसे उसने मुसलमान पर बहुत बड़ी फ़तह हासिल की हो। उसकी इस रहज़नी का ज़िक्र सिर्फ़ मुसलमान मोअर्रिख़ों ने ही नहीं किया। यूरोपी मोअर्रिख़ों ने तफ़सील से लिखा है कि वह क़ाफ़लों को लूटने का इन्तज़ाम किस तरह किया करता था।

1183–84 ई0 में उसके एक दस्ते ने हिजाज़ से मिस्र को वापस जाने वाले हाजियों के एक क़ाफ़ले पर हम्ला किया था और लूट लिया था। एक मिस्री वक़ाअ निगार मोहम्मद फ़रीद अबू हदीद ने लिखा है कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की बेटी उस क़ाफ़ले में थी लेकिन और किसी मोअर्रिख़ों या उस वक़्त के वक़ाअ निगार ने यह नहीं लिखा कि उस क़ाफ़ले में सुल्तान अय्यूबी की बेटी थी। क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद की डायरी मुस्तन्द व दस्तावेज़ है क्योंकि वह वाक़िआत का ऐनी शाहिद है। अलबत्ता एक इशारा एक वक़ाअ निगार की तहरीर

से मिलता है जो इस तरह है कि जब सुल्तान अय्यूबी को इत्तेलाअ मिली कि अर्नात की फ़ौज ने मिस्र के एक काफ़ले को लूट लिया है तो सुल्तान अय्यूबी की ग़ज़बनाक और गरजदार आवाज़ सुनाई दी थी–"वह मेरी बेटी थी। मैं उसका इन्तक़ाम लूंगा। वह मेरी बेटी थी।"

काफ़ले में कोई नौजवान लड़की थी जिसे सलीबी उठा ले गये थे। सुल्तान अय्यूबी ने उसी वक़्त क़सम खाई थी–"अर्नात को आज से मैं अपना ज़ाती दुश्मन समझता हूँ। मैं क़सम खाता हूँ कि उससे अपने हाथों इन्तक़ाम लूंगा।"

सब जानते हैं कि उनके सुल्तान इस अन्दाज़ और इस लब वह लहजे में कभी बात नहीं की। वह भड़क कर बात करने और बड़ मारने को पसन्द नहीं करता था। उसकी हर बात फ़ैसला हुआ करती थी। उसने जब इन्तक़ाम की क़सम खाई तो सब समझ गये कि यह सुल्तान का अज़्म है और फ़ैसला है। यूं तो हर सलीबी हुक्मरान इस्लाम का दुश्मन था लेकिन अर्नात इस्लाम की और रसूल करीम की तौहीन करता रहता था। मुसलमान क़ैदियों को सामने खड़ा करके रसूले अकरम सल्ल0 पर वह दुश्नाम तराज़ी करता और कहा करता–"बुलाओ अपने रब्बे काबा को तुम्हारी मदद करे। पढ़ो अपने रसूल का कलमा कि तुम आज़ाद हो जाओ।" और वह क़हक़हे लगाया करता था। उसकी इस आदत से सुल्तान अय्यूबी भी वाक़िफ़ था, इसलिए वह अर्नात का जब नाम लेता तो नफ़रत का भरपूर इज़हार किया करता था।

आज चार साल बाद सुल्तान अय्यूबी जब सलीबियों के ख़िलाफ़ फ़ौजकशी की हिदायात अपने सालारो को दे रह था तो उसने यह सारा वाक़िआ याद दिला कर कहा–"उस बदबख़्त काफ़िर (अर्नात) से मुझे अपने हाथों से इन्तक़ाम लेना है। अल्लाह मुझे यह मौक़ा और हिम्मत अता फ़रमाए कि मैं अपने रसूल की हतक का इन्तक़ाम ले सकूं।" उसने सालारों को मज़ीद हिदायात देते हुए कहा–"मुझे उम्मीद है कि हम तीन माह बाद उस मौसम में हतीन के इलाके में पहुंचेगे जब सूरज का शोला पानी के क़तरों को रेत के ज़िर्रों में बदल देते हैं और जब रेत के यह जलते हुए ज़र्रे इन्सानों को भून डालते हैं और जब रेगज़ार में सराब और आसमान को उठने वाले रेत के बगूलों के सिवा कुछ नहीं होता। मैं सलीबियों को उस वक़्त लड़ाउंगा जब सूरज सर पर होगा। सलीबी लोहे के ख़ोदों और ज़िराबकतर में जल जाएंगे। लोहे का जो लिबास वह तीरों, तलवारों और बरछियों से बचने के लिए पहनते हैं वह हर सलीबी का अपना–अपना जहन्नम बन जाएगा।"

मोअर्रिख़ों और जंग के यूरोपी माहिरीन और मुबस्सिरों ने सुल्तान अय्यूबी के इस इक़दाम की तारीफ़ की है कि उसने जंग के लिए जिस मौसम का इन्तख़ाब किया वह जून जूलाई के दिन थे जब रेगज़ार भट्टी से निकाली हुई सिल की तरह गर्म होता है। सलीबी फ़ौजी आहनी चादरों की लिबास से महफ़ूज होते थे। उनके नायब (सरदार) सर से पांव तक ज़िराबकतर में मलबूस रहते थे। तीर व तलवार का उन पर कुछ असर नहीं होता था मगर सुल्तान अय्यूबी ने लोहे का यह लिबास उनकी बहुत बड़ी कमजोरी बना दिया था। एक तो वह छापामार क़िस्म की जंग लड़ता था। थोड़ी सी नफ़री से पहलूओं पर बर्क़ रफ़तार हम्ले करता

और हम्लावर दस्ते ज़रब लगाकर वहां रूकते नहीं थे। इस चाल से सलीबी फ़ौज को फैलना पड़ता और रफ्तार तेज़ करनी पड़ती लेकिन ज़िरहबकतर का वज़न रफ्तार इतनी तेज नहीं होने देता था....जितनी सुल्तान अय्यूबी के दस्तों की होती थी।

सुल्तान अय्यूबी ने ज़िराबकतर का दूसरा तोड़ यह सोचा था कि उस वक़्त जंग शुरू करता था जब सूरज सर पर और रेगिस्तान शोला बना होता था। जराबकतर तंदूर की तरह तप जाती थी। प्यास से जिस्म खुश्क हो जाता था और पानी पर सुल्तान अय्यूबी जंग से पहले कब्ज़ा कर लेता था। रेगिस्तान की झुलसा देने वाली तपिश इस्लामी फ़ौज के लिए भी दुश्वारियां पैदा करती थी लेकिन उसके लिबास हल्के फुल्के होते थे। इसके अलावा पहले की ट्रेनिंग बड़ी सख़्त थी। वह घोड़ों, ऊंटों और तमाम फ़ौज को लम्बे अर्से के लिए रेगिस्तान में रखता और खुद भी उनके साथ रहता था। उस ने फ़ौज को भूखा प्यासा रहने की ट्रेनिंग भी दे रखी थी। रमज़ान के महीने में वह ट्रेनिंग और जंगी मश्कें ज़्यादा किया करता और कहा करता था कि इस मुबारक महीने में ख़ुदाए ज़ुलजलाल अपने हाथों हमारी तरबियत करते हैं।

जिस्मानी ट्रेनिंग के अलावा उसने सिपाहियों की ज़ेहनी बल्कि रूहानी तरबियत का भी इन्तज़ाम कर रखा था। सिपाहियों को यह ज़ेहन नशीन कराया जाता था कि वह अल्लाह के सिपाही और दीन इस्लाम के मुहाफ़िज़ हैं, किसी बादशाह या सुल्तान की फ़ौज के मुलाज़िम नहीं। वह माल ग़नीमत सिपाहियों में तक़सीम करता था लेकिन उन्हें तास्सुर यह दिया जाता था कि जंग माले ग़नीमत के लिए नहीं लड़ी जाती और माले ग़नीमत जिहाद का ईनाम भी नहीं। ईनाम अल्लाह देता है। सबसे बड़ी चीज़ ग़ैरत थी जो उस ने सारी फ़ौज में पैदा कर रखी थी। वह सबसे ज़्यादा ज़िक्र उन मुसलमान लड़कियों का करता था जिन्हें सलीबी उठा ले जाते थे और उन ख़्वातीन का जो सलीबियों के मकबूज़ा इलाक़ों में सलीबियों की दरिन्दगी का शिकार हो रही थीं।

"क़ौम के शहीदों को और क़ौम की मज़्लूम बेटियों को भूल जाने वाली क़ौम की किस्मत में कुफ़्फ़ार की ग़ुलामी लिख दी जाती है।" यह अल्फ़ाज़ सुल्तान अय्यूबी की ज़ुबान पर रहते थे। वह सिपाहियों में घूमता फिरता रहता था उनकी गपशप और उनकी खेल कूद में शामिल हो जाया करता था। उनसे वह कहा करता था—"इन्तक़ाम फ़ौज लिया करती है। अगर फ़ौज ने फ़र्ज़ अदा न किया तो उसके लिए इस दुनिया में भी ज़िल्लत और अगली दुनिया में भी।

सामने सलीब .... रखी थी और उसके पास उस सलीब का मुहाफ़िज़, खड़ा था जो अकरा का बड़ा पादरी था। ईसाईयों के अकीदे के मुताबिक वह असल सलीब थी जिस पर हज़रत ईसा अलै० को मस्लूब किया गया था। कहते हैं कि इसस्रूबी सलीब पर अभी तक हज़रत ईसा अलै० के ख़ून के निसान मौजूद हैं। उसे सलीब आज़म भी कहते हैं। इसीलिए अकरा का पादरी "मुहाफ़िज़ सलीबे आज़म" कहलाता था और उसका हुक्म बादशाहों के हुक्म से ज़्यादा अहमियत रखता था। बादशाह भी उसके हुक्म के पाबन्द होते थे। ईसाईयों और यहूदी लड़कियों को उसी की इजाज़त से भेजा था था। जो लड़की उसकी ट्रेनिंग मुकम्मल करके

बाहर भेजी जाती उसे सलीब का मुहाफ़िज़े आज़म अपनी दुआओं के साथ रुख़सत किया करता था।

उन लड़कियों से सलीबुल सलबूत पर हाथ रखवाकर वफ़ादारी का और सलीब को धोखा देने का हलफ़ लिया जाता था। ऐसा ही हलफ़ सलीबी फ़ौज के हर अफ़सर और हर सिपाही से भी लिया जाता था। उसके बाद ऐसी ही एक छोटी सी सलीब उसके गले में लटका दी जाती थी।

नासिरा के मुक़ाम पर सलीबी हुक्मरान जमा थे। उनमें गाई ऑफ़ लोज़िनान, रिमाण्ड ऑफ़ त्रीपोली, ग्रेण्डमास्टर ग्राड, माउंट फीर्त, हम्फ़िरे ऑफ तौरन, इमारल्क और शहज़ादा अर्नात ऑफ कर्क क़ाबिले ज़िक्र हैं। और वहाँ अकरा का पादरी "मुहाफ़िज़े सलीब आज़म" भी मौजूद था। उनके लिए जो शामियाने और क़नातें लगायी गयी थी वह कपड़ों का एक ख़ुश्नूमा महल था। महल की तरह उसके कमरे, बरामदे और ग़ुलाम गर्दिशें थीं। रंगा रंग रौशनी वाले फ़ानूस की रौशनी ने उसे मर मर और ख़ारा महलात से ज़्यादा हसीन बना रखा था। उसे इर्द गिर्द रिहाईशी शामियानों और क़नातों के कमरे थे और उनके इर्द गिर्द सलीबी नायटों के ख़ेमें और उनकी फ़ौज के मुन्तख़ब दस्ते ख़ेमाज़न थे। शराब के मटकों के साथ उन हसीन और दिल कश लड़कियों के कुछ तादाद भी मौजूद थी जिन का तिलिस्माती हुस्न और शोख़िया भाई को भाई का और बाप को बेटा का दुश्मन बना देती थीं।

एक शामियाने तले जिस पर पुख़्ता महल के कमरे का गुमान होता था, सलीबुल सलबूत रखी हुई थी और उसके पास अकरा का पादरी खड़ा था। उसके सामने सलीबी हुक्मरान के जरनल और मुन्तख़ब नायट बैठे थे। सबको मालूम था कि यह एक तारीख़ी इज्तमाअ है और तारीख़ का एक नया बाब लिखा जाने लगा है। उस बाब का उन्वान था– "सलाहुद्दीन को हमेशा के लिए ख़त्म कर दो।"

"सलीब के मुहाफ़िज़ो!" अकरा के पादरी ने कहा– "यह है वह सलीब जिस पर तुम सबने हाथ रख कर हलफ़ उठाया था। आज यह सलीब तुम्हारे सामने इसलिए अकरा से लाकर रखी गयी है कि उसके साथ तुमने जो अहद किया था वह तुम्हारे दिलों में ताज़ा हो जाए। अब तुम्हें एक ख़ूंरेज़ और फ़ैसलाकुन जंग के लिए तैय्यार होना है। यह जंग तुम्हें लड़नी है। तुम सब जंगजू हो, जरनल हो, तुम्हारी उम्र मैदान जंग में गुज़र गयी है। मैं उस मैदान का आदमी नहीं हूं। मैं तुम्हारे मज़हब का पेशवा हूं। मैं तुम्हें यह बताने आया हूँकि सलाहुद्दीन अय्यूबी को शिकस्त दे कर दुनियाए अरब पर सलीब की हुक्मरानी क़ायम करनी है। योरूशलम तो है ही हमारा, यह मत भूलो कि मक्का और मदीना भी क़ब्ज़ा करना है और इस मुक़द्दस सलीब को मुसलमानों के ख़ानाकाबा के उपर रखना और उसे यीसू मसीह की इबादतगाह बनाना है.

"याद रखो कि तुम मदीना से तीन मील दूर तक पहुंच गये थे मगर मुसलमानों ने तुम्हें उससे आगे न बढ़ने दिया। तुम्हें भी उसी जुनून से लड़ना है जिस जुनून से मुसलमान अपने काबे के तहफ़ुज़ के लिए लड़ते हैं। सलाहुद्दीन अय्यूबी की नज़रें योरूशलम पर लगी हैं।

वह कहता है कि यह बैतुल मुकद्दस है और यहां किब्ला अव्वल है। अगर उससे योरुशलम को बचाना चाहते हो तो नज़रें मक्का पर रखो। ज़ेहन में यह याद रखो कि हमारी जंग सलाहुद्दीन से नहीं, यह सलीब और इस्लाम की जंग है। यह दो मज़हबों की, दो अकीदों की जंग है। यह जंग हम न जीत सके तो हमारी अगली नस्ल लड़ेगी। वह इस्लाम का ख़ातमा न कर सकी तो उसके अगली नस्ल लड़ेगी, ...दोनों में एक मज़हब ख़त्म हो जाएगा। ख़ातिमा इस्लाम का होगा और सारी दुनिया पर सलीब की हुक्मरानी होगी......

"हम ने मुसलमानो को शिकस्त देने के लिए दूसरे तरीके भी इख़्तियार किये हैं लेकिन वह कामयाब नहीं हो सके। तुम सब को याद होगा कि हम उस मुहिम मे कितनी लड़कियाँ ज़ाया कर चुके हैं। हम बेशुमार दौलत और अस्लेहा भी ज़ाया कर चुके हैं जो मुसलमान उमरा को सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ़ देते रहे। हमने उन लड़कियों और ज़र व जवाहरात से यह हासिल किया है कि मुसलमानों में शराब और अय्याशी की आदत पैदा कर दी है। उसी का नतीजा था कि हम छः सात साल उन्हें आपस में लड़ाते रहे उनकी इस ख़ानाजंगी से हमने यह फ़ायदा ज़रूर उठाया है कि मुसलमानों की जंगी कुव्वत ख़ासी हद तक ज़ाया कर दी है और सुल्तान अय्यूबी के बेहतरीन और तजुर्बाकार सिपाही और उन कमाण्डर खानाजंगी में मरवा दिए हैं। उस ख़ानाजंगी से हम ने यह फ़ायदा भी उठाया है कि सात आठ साल सलाहुद्दीन अय्यूबी को उसके अपने इलाके से बाहर नहीं निकलने दिया। उससे इस अर्से में हमने जंगी तैय्यारियां मुकम्मल कर लीं और योरूशलम का दिफाअ इतना मज़बूत कर लिया है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी के लिए उन रास्तों तक पहुंचना जो योरूशलम को जाते हैं। नामुम्किन हो गया है.....

"मगर उसने वह कैफियत फिर हासिल कर ली है जो उनकी ख़ानाजंगी से पहले थी। हलब और मुसिल की फ़ौजें भी उसे मिल गयी हैं। तमाम मुसलमान उमरा उसके हामी हो गये हैं। मुज़फ़रूद्दीन और ककबूरी जैसे सालार जो उसके खिलाफ़ लड़े और हमारे दोस्त बन गये थे उसके पास चले गये हैं। ग़द्दारों को उसने इतना कमज़ोर और बेबस कर दिया है कि वह अब हमारे किसी काम के नहीं रहे। अब कोई मुसलमान हुक्मरान ऐसा नहीं रहा जो सलाहुद्दीन अय्यूबी पर अक़ब से हम्ला करे। हम ने हशीशीन को भी आज़मा देखा है। वह चार पांच कातिलाना हम्लों में भी उसे कत्ल नहीं कर सके। अब इसके सिवा कोई चारा और कोई हल और कोई रास्ता नहीं रहा कि हम मिल कर सलाहुद्दीन अय्यूबी पर यलग़ार करें लेकिन अपने जरनलों ने यह मशवरा दिया है कि हम्ले मे पहल उसे करने दें। उसकी मुझे दो वजूहात बतायी गयी हैं। एक यह कि अपनी फ़ौजो को इतनी दूर नहीं ले जाना चाहिए कि रस्द का रास्ता मस्दूद और ख़तरनाक हो जाएं और दूसरी वजह यह है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी जिस तरीके की जंग लड़ता है उससे हमें अपनी फ़ौज दूर–दूर तक फैलानी पड़ती हैं। अब जबकि दुश्मन के इलाके में हमारा कोई हामी नहीं रहा, इसलिए हमें हम्ला का ख़तरा सोंच समझ कर मोल लेना चाहिए.....

"हमें ज़्यादा इन्तज़ार नहीं करना पड़ेगा। जासूसों की इत्तलाअ के मुताबिक सलाहुद्दीन

अय्यूबी योरूशलम की तरफ़ पेशक़दमी का फ़ैसला कर चुका है। यह तुम्हें देखना है कि उसकी पेशक़दमी का रास्ता कौन सा होगा और वह सीधा योरूशलम की तरफ़ आयेगा या क्या करेगा। हमें यह हक़ीक़त तस्लीम करनी चाहिए कि हम अकेले—अकेले उसके ख़िलाफ़ नहीं लड़ सकतेम। अब तुम मुत्तहिद हो गये हो। सलीबे आज़म को यहाँ उठा लाने का मक़सद यह है कि तुम सब एक ही बार सलीब पर हाथ रखकर हलफ़ उठाओ कि तुम दुश्मन के ख़िलाफ़ एक जान होकर लड़ोगे और ज़ाती रंजिशों और ज़ाती मुफ़ादात को नज़र अन्दाज़ करके मुत्तहिदा मुफ़ाद के लिए लड़ोगे और यह मुफ़ाद सलीबे आज़म और यीसू मसीह के अक़ीदे का होगा और तुम इस्लाम के ख़ातमे के लिए लड़ोगे।"

सब उठे। उन्होंने सलीब पर हाथ रखे और अकरा के पादरी ने हलफ़ के जो अल्फ़ाज कहे सबने दुहराये।

❖

दूसरे दिन सब बहुत देर से जागे। रात जब पादरी ने उन्हें छुट्टी दी तो वह शराब और रक़्स में मगन हो गये। वह अपनी—अपनी पसन्द की लड़कियाँ साथ लाए थे। उनके हुस्न व जमाल, नीम उरिया जिस्मो, खुले बिखरे हुए रेशमी बालों, नाज़ व अदा और शराब ने उस ख़ित्ते को जन्नते आरज़ी बनाए रखा। दूसरे दिन का सूरज तुलूअ हो चुका था मगर सलीबियों के इस शाहाना कैम्प में नींद ने मौत का सकूत तारी कर रखा था।

शहज़ादा अर्नात के ख़ेमे से एक जवां साल लड़की निकली। बहुत ही ख़ूबसूरत और लम्बे क़द की थी। उसका रंग दिलकश था और उसकी आँखों में सेहर था लेकिन यह रंग और यह आँखें सलीबी या यहूदी लड़कियों जैसी नहीं थी। यह सूडान, मिस्र या दमिश्क जैसे इलाक़ों की पैदवार मालूम होती थी। उसके हुस्न की यही ज़मानत काफ़ी थी कि अर्नात उसे अपने साथ लाया था।

उसे देखकर एक बूढ़ी ख़ादिमा दौड़ती हुई उस तक पहुंची। वहाँ जो फ़ौज उन हुक्मरानों के साथ गयी थी। उसकी इतनी नफ़री नहीं थी जितनी तादाद नौकरों और नौकरानियों की साथ थी। उस लड़की को अर्नात प्रिन्सेस लिली कहा करता था। वह शकल व सूरत और क़द बुत से शहज़ादी ही लगती थी। उसने ख़ादिमा से कहा कि सिर्फ़ मेरे लिए नाश्ता जल्दी लाओ और बघी तैय्यार करो, मैं इस इलाक़े की सैर को जा रही हूँ।

अर्नात गहरी नींद सोया हुआ था। उसे जागने की कोई जल्दी नहीं थी। वहाँ तो सिर्फ़ पादरी सुबह सवेरे जागा और इबादत करके फिर सो गया था। लिली के लिए कोई काम नहीं था। नाश्ता आने तक वह तैय्यार हो गयी और जब नाश्ता कर चुकी थी तो बघी आ चुकी थी। यह दो घोड़ों की ख़ूबसूरत बघी थी। कर्क से अर्नात के साथ वह उसी बघी में आई थी।

बघी में बैठने से पहले उसने बघीबान से कहा—"यह इलाक़ा बहुत ख़ूबसूरत है। मैं सैर के लिए जाना चाहती हूँ। तुम इस जगह से वाक़िफ़ तो नहीं होगे?"

"अच्छी तरह वाक़िफ़ हूँ शहज़ादी मोहतरमा!" बघीबान ने जवाब दिया—"अगर आप सैर के लिए जाना चाहती हैं तो मैं कमान और तरकश लिए चलता हूँ। आप शिकार भी खेल

सकती हैं। यहाँ हिरान ज़्यादा तो नहीं लेकिन कहीं–कहीं नज़र आ जाते हैं। ख़रगोश आम हैं। परिन्दें हैं।"

लिली ने मुस्कुराकर कहा–"क्या तुम मुझे तीर अन्दाज़ समझते हो?.....जाओ। ले आओ।"

"कोई मुश्किल नहीं।" बघीबान ने कहा–"आप लड़ाई पर तो नहीं जा रही हैं। शिकार पर चलाया हुआ तीर ख़ता कर गया तो क्या हो जाएगा।"

वह दौड़ता गया और कमान और तरकश उठा लाया।

बघी ख़ेमागाह से बहुत दूर चली गयी। यह खित्ता सर सब्ज़ था दरख़्त भी ख़ासे थे और ऊंची नीची टीकरियां थीं। मार्च अप्रैल के दिन थे। बहार का मौसम था। उससे यह खित्ता ज़्यादा ख़ूबसूरत हो गया था। बघी आहिस्ता–आहिस्ता चली जा रही थी। एक झुंड के नीचे लिली के कहने पर बघी रूक गयी वह उतरी। उसका बघीबान सीबल नाक का ईसाई था और उन्हीं इलाक़ों का रहने वाला था। उसकी उम्र तीस साल से कुछ उपर होगी। वह ख़ुबरू और दराज़ क़द जवान था। इसीलिए उसे अर्नात ने बघी के लिए मुन्तख़ब किया था। लिली को भी यह आदमी पसन्द था। ज़िन्दा दिल और फ़रमाबरदार था। लिली जब अर्नात के पास आई, उसे एक साल बाद सीबल उनके पास आया था।

"मुसलमान की सरहद कहां से शुरू होती है?" लिली ने बघी से उतर कर पूछा।

"जहाँ तक किसी की फौज पहुंच कर डेरा डाल दे वह उसकी सरहद बन जाती है।" बघी बान ने जवाब दिया–"मैं आपको इतना बता सकता हूँ कि यहाँ से आठ दस मील दूर समन्दर की तरफ़ एक वसीअ झील है जिसका नाम गीलिली है। उसके किनारे तिबरानियां नाम का एक कस्बा है। उसके कुछ इधर हतीन नाम का एक मशहूर गाँव है। उस झील से आगे से मुसलमानों का इलाक़ा शुरू हो जाता है।"

"यानी मुसलमानों का इलाक़ा यहाँ दूर नहीं।" लिली ने कहा–"क्या हम बघी पर झील तक जा सकते हैं?"

"हम कर्क से बघी पर आये हैं।" सीबल ने कहा–"झील तो यह क़रीब है। यह दो घोड़ों को बेग़ैर थके वहाँ तक पहुँचा सकते हैं।"

लिली ने बच्चों की तरह उससे रास्ता पूछना शुरू कर दिया और बघीबान ज़मीन पर लकीरें डाल कर उसे रास्ता समझाने लगा।

"दमिश्क़ को भी रास्ता जाता होगा?" लिली ने पूछा।

बघीबान ने उसे दमिश्क़ तक का रास्ता समझा दिया।

❖

लिली ने तरकश से तीर निकाला और दरख़्तों में परिन्दों को देखने लगी। उसने एक परिन्दे पर तीर चलाया जो ख़ता गया। लिली ने क़हक़हा लगाया। बघीबान ने उसे शिस्त लेने का तरीक़ा समझाया। उसने कुछ तीर इधर उधर चलाये।

"और आगे चलो।" लिली ने बघी में बैठते हुए कहा–"उस जगह चलो जहाँ हिरान हों। मैं हिरान को तो मार लूंगी।"

सीबल उसे डेढ़ दो मील दूर ले गया। एक जगह बघी रोक कर उसने कहा कि थोड़ी देर इन्तज़ार करें, शायद कोई हिरान या ख़रगोश नज़र आ जाए। वह ख़ुद एक तरफ़ को चल पड़ा। कोई बीस क़दम दूर एक दरख़्त था। सीबल उसके साथ कंधा लगा कर खड़ा हो गया। वह शहज़ादी लिली के लिए हिरान या ख़रगोश देख रहा था। लिली की तरफ़ उसकी पीठ थी। लिली ने कमान में तीर डाला और सीबल की पीठ का निसाना लिया। उसे कोई देखता तो यह कहता कि लिली मज़ाक़ कर रही है। उसने कमान खींची। उसके हाथों में कमान कांप रही थी। एक आंख बन्द किए वह सीबल की पीठ का निसाना लिए हुए थी।

उसने कमान और ज़्यादा खींची और तीर चला दियार। तीर सीबल के कंधे के बिल्कुल क़रीब दरख़्त के तने में लगा। सीबल घबड़ाकर हटा अैर मुड़ा। उसने दरख़्त में उतरे हुए तीरको फिर लिली को देखा,मगर लिली हंस नहीं रही थी। उसके चेहरे पर संजीदगी थी जो उसने पहले कभी नहीं देखी थी। फिर भी उसने हंस कर कहा–"आप मुझ पर तीर अन्दाज़ी की मश्क़ कर रही हैं?" और लिली की तरफ़ चल पड़ा।

लिली ने तरकश से एक और तीर निकाल कर कमान में डाल लिया और बोली–"वहीं रूक जाओ और इधर उधर न होना।"

सीबल रूक गया और लिली ने कमान सामने करके एक बार फिर खींची। सीबल ने चिल्ला कर कहा–"शहज़ादी! आप क्या कर रही हैं।"

शहज़ादी की कमान से तीर निकला। सीबल की नज़रें उसी पर थीं। वह बैठ गया और तीर झन्नाटे से उसके क़रीब से गुज़र गया। सीबल शहज़ादी का एहतराम और अपनी हैसियत को भूल गया। लिली तरकश से एक और तीर निकाल रही थी। सीबल बड़ी तेज़ी से उसकी तरफ़ दौड़ा। लिली इतनी जल्दी तीर निकाल कर कमान में न डाल सकी। सीबल उस पर लपका तो लिली दौड़ कर परे हो गयी, लेकिन सीबल मर्द था और जवान भी था। दौड़कर लिली तक पहुचा और उसे पकड़ लिया। उससे कमान छीन ली और उसके कंधो से तरकश भी उतार ली।

"मैं उन गुलामों में से नहीं हूँ जिनपर उनके आक़ा हर तरह का ज़ुल्म करते हैं।" सीबल ने कहा और एक तीर कमान में डाल कर लिली पर तारी। बोला–"क्या तुम मुझ पर मश्क़ करना चाहती हो? क्या मेरी खिदमात और फ़रमाबरदारी का यह सिला है?"

लिली ने कोई जवाब न दिया। उसके होंठ कांपने और उसकी आँखों में आँसू आ गये। सीबलने कमान परे फंक दी और आहिस्ता–आहिस्ता उसके क़रीब गया।

"मै कुछ भी न समझ सका कि आपने तीर मुझ पर क्यों चलाये और आप की आँखों में आँसू क्यों आ गये हैं?" सीबल ने पूछा।

"तुम मेरी कोई मदद नहीं कर सकते?" लिली ने ऐसे लहजे में कहा जो किसी शहज़ादी का नहीं एक डरी हुई लड़की का लहजा था।

"मैं आपकी ख़ातिर जान तक दे सकता हूँ।" सीबल ने कहा– "कैसी मदद?"

ईनाम से मालामाल कर दूंगी।" लिली ने कहा–"मुझे ईनाम के तौर पर मागोगे तो भी

क़बूल कर लूंगी। मुझे झील से आगे मुसलमानो के इलाके में ले चलो...दमिश्क़ तक चलो। वहाँ यह बघी और दोनों घोड़े तुम्हारे होंगे। ईनाम अलग दिलवाउंगी।"

"मुझे शक है कि आपकी दिमाग़ पर कोई गहरा असर हो गया है।" सीबल ने कहा—"चलिए। वापस चलें।"

"अगर मेरी बात नहीं मानोंगे तो वापस जाकर शाहज़ादा अर्नात से कहूंगी कि तुमने यहाँ मुझ पर दस्तदराज़ी की थी।" लिली ने उसकी सुनी अन सुनी करते हुए कहा।

"अच्छा हुआ आपने बता दिया।" सीबल ने कहा—"अब आप वापस नहीं जाएंगी, न मैं वापस जा रहा हूँ। आप के हाथ पाँव बाँध कर बघी मे डाल लूंगा और किसी शहर में जाकर आंपको बुरदा फ़रोशो के हाथ बेच डालूंगा.... मुझे बताओ मुसलमानों के पास क्यों जाना चाहती हो?"

तब लिली को एहसास हुआ कि वह एक जाल में फंस गयी है। वह बैठ गयी और सर घुटनों में देकर सीसकने लगी। सीबल उसे देखता रहा। यह लड़की उसके लिए अजनबी नहीं थी लेकिन अब वह उसे ग़ौर से देखने लगा। उसके बाल, उसकी रंगत और उसकी डील डौल सलीबी लड़कियों जैसी नहीं थी। उसे मालूम था कि सलीबियों के पास मुसलमानों की अग़्वा की हुई लड़कियां भी हैं। यह भी शायद अग़्वा की हुई होगी लेकिन उसे तो वह तीन सालों से ख़ुश ख़ुर्रम देख रहा था। वह उसके पास बैठ गया।

"अगर मुसलमान हो तो बता दो।" सीबल ने कहा—"तुम्हें शायद अग़्वा किया गया था।"

"और तुम शहज़ादा अर्नात को बताकर ईनाम लोगे।" लिली ने कहा—"और उसे बताओगे कि मैंने भागने की कोशिश की थी।" उसे सीबल के गले में एक डोरी लटकती नज़र आई। उसने यह डोरी खींची तो छोटी सी सलीब डोरी से बंधी हुई बाहर आ गयी। लिली ने कहा—"इसे हाथ में लेकर क़सम खाओ कि मुझे धोखा तो नहीं दोगे, अर्नात को नहीं बताओगे कि मैं ने तुम पर तीर क्यों चलाए थे।"

सीबल उसकी असलियत समझ गया। और बोला—"सलीब पर खाई हुई क़सम झूठी होगी।" उसने सलीब की डोरी गले से उतारी और सलीब परे फेंक दी। कहने लगा—"मुसलमान सलीब पर क़सम नहीं खाया करते।"

लिली ने चौंक कर सीबल को देखा जैसे उसे सीबल के अल्फ़ाज पर यक़ीन न आ रहा हो। उसने सलीब को देखा जो परे ज़मीन पर पड़ी थी। कोई सलीबी कितना ही गुनाहगार क्यों न हो सलीब की तौहीन नहीं करता। सीबल को बहरहाल यक़ीन आ गया था कि लिली किसी मुसलमान क़ी बेटी है।

"मैंने तुम पर अपना राज़ फ़ाश कर दिया है।" सीबल ने कहा—"अब तुम मुझे बता दो कि तुम्हें कब और कहाँ से अग़्वा किया गया था।"

"मैं हजे काबा से अपने वालिदैन के साथ मिस्र को वापस जा रही थी।" लिली ने डरते हुए लहजे मे बच्चे की तरह कहा—"बहुत बड़ा काफ़ला था। उस वक़्त मेरी उम्र सोलह सत्तरह साल थी। चार साढ़े चार साल गुज़र गये हैं। कर्क के क़रीब इन काफ़रों ने काफ़ले पर हम्ला

किया और माल अस्बाब लूट लिया। उन्होंने बहुत कुश्त व ख़ून किया था। मुझे मालूम नहीं कि मेरे वालिदैन मारे गये थे या ज़िन्दा हैं। यह काफ़िर मुझे अपने साथ ले आये। यह शायद मेरी बदकिस्मती थी कि मैं इतनी ख़ूबसूरत थी कि वालिये कर्क शहज़ादा अर्नात ने मुझे पसन्द कर लिया और अपने लिए रख लिया। अगर मैं इतनी ख़ूबसूरत न होती तो मालूम नहीं कैसे–कैसे दरिन्दों के हाथों अब तक मर चुकी होती...

"शहज़ादा अर्नात के आगे मैं बहुत रोई मगर बेकार था। उसने कहा कि मैं अपनी बादशाही छोड़ दूंगा तुम्हें नहीं छोड़ूंगा। फिर उसने मुझे शहज़ादियों की तरह रखा। उसने मेरे साथ शादी नहीं की और मुझे अपना मज़हब कुबूल करने को भी नहीं कहा। मैं उसकी अय्याशी का ज़रिआ बनी रही। उसके पास कई और जवान लड़कियाँ थीं। वह मेरी दुश्मन बन गयी लेकिन अर्नात सिर्फ़ मुझे साथ रखता और मेरी बात मानता था। मैंने अपनी इसहालत को कुबूल कर लिया। मैं और कर भी क्या सकती थी। औरत की क़िस्मत यही होती है जिसके क़ब्ज़े आ जाए उसीकी मिल्कियत और उसकी गुलाम होती है।"

"वह बोलते–बोलते चुप हो गयी। सीबल को ग़ौर से देख कर बोली– "क्या तुम यह सारी बातें शहज़ादा अर्नात को सुना दोगे?" फिर वह मुझे क्या सज़ा देगा?"

"अगर मैं वाक़ई सीबल होता तो यही करता जो तुम्हें डर है।" बघीबान ने कहा–"मैं शामी मुसलमान हूँ। मेरा नाम बकर बिन मोहम्मद है।"

"तुम उन जासूसों में से तो नहीं जिनके मुतअल्लिक़ अर्नात कहा करता है कि हमारे मुल्क मे छुपे हैं?" लड़की ने पूछा और बोली–"मेरा नाम कुल्सूम हुआ करता था।"

"मैं जो कुछ भी हूँ।" बकर ने जवाब दिया–"मुसलमान हूँ। मैं तुम्हें धोखा नहीं दूंगा। यह कोई नयी बात नहीं कि एक अग़्वा की हुई मुसलमान लड़की की मुलाक़ात किसी ऐसे मुसलमान से हो गयी जो सलीबियों के पास ईसाईयों के बहरूप में मुलाज़िम था। ऐसे वाक़िआत पहले भी हो चुके हैं। यहां तक भी हुआ है कि भाई जासूस बनकर सलीबियों के किसी शहर में गया तो वहाँ उसकी मुलाक़ात अपनी उस बहन से हो गयी जो बहुत अर्सा पहले तुम्हारी तरह अग़्वा हुई थी। हैरान हो कुल्सुम! तुम हजे काबा से वापस आ रही थीं। ख़ुदा ने तुम्हारा हज कुबूल कर लिया है। मैं आलिम फ़ाज़िल नहीं कि तुम्हें बताऊं कि ख़ुदा ने तुम्हें यह सज़ा क्यों दी है। अलबत्ता अब यूं नज़र आता है जैसे ख़ुदा ने तुमसे कोई नेकी का काम कराने के लिए इस जहन्नम मे फेंका था......तुम सिर्फ़ फ़रार होना चाहती हो या फ़रार का कोई मक़सद भी है?"

"बहुत बड़ा मक़सद" कुल्सुम ने कहा–"तुम शायद नहीं जानते कि अकरा के पादरी ने इस सलीबियों को यहाँ क्यों बुलाया है। रात अर्नात जब अपने ख़ेमे में आया तो नशे में झूम रहा था। उसने मुझे बाज़ूओं पर उठा लिया और बोला–"तुम बहुत बड़े मुल्क की मलिका बनने वाली हो। सलाहुद्दीन अय्यूबी चन्द दिनो का मेहमान है। वह हमारे जाल में आ रहा है। बहुत जल्दी आ रहा है।' मैंने ख़ुशी का इज़हार किया और उससे पूछा कि उनका मंसूबा क्या है। उसने मुझे पूरी तफ़सील से बता दिया कि यहां जितने सलीबी हुक्मरान आयें हैं उन्होंने सलीब पर हाथ रखकर इत्तेहाद और एक दूसरे से वफादारी का हलफ उठाया है।"

"क्या यह सलाहुद्दीन अय्यूबी के किसी इलाके पर हम्ला करेंगे?"

"मेरे फरार का मकसद यही है कि सुल्तान अय्यूबी तक यह ख़बर पहुँचाऊं कि सलीबियों के इरादे और मंसूबे क्या हैं और उन्होंने कितनी फ़ौज जमा कर ली है और उसे कहाँ तकसीम करके फैलाया है। अर्नात ने मुझे बताया है कि यह लोग हम्ला करने नहीं जाएंगे बल्कि सुल्तान अय्यूबी को हम्ले का मौका देंगे ताकि वहअपने मुस्तकर से दूर आ जाए और उसकी रस्द के रास्ते लम्बे हो जाएं। उनका इरादा यह भी है कि अगर सुल्तान अय्यूबी ने कुछ अर्से तक हम्ला न किया तो यह लोग तीन इतराफ़ से पेशक़दमी और यलग़ार करेंगे।"

"तुम्हें अचानक यह ख़्याल क्यों आया है कि यह ख़बर सुल्तान अय्यूबी तक पहुंचनी चाहिए?" बकर बिन मोहम्मद ने पूछा और उसे बताया–"कुल्सुम! मैं उसी मैदान का मुजाहिद हूँ। अगर मैं तुम्हें कहूँ कि तुम अर्नात के कहने पर सुल्तान अय्यूबी को ग़लत ख़बर देने जा रही हो ताकि वह गुमराह हो जाए तो उसका क्या जवाब दोगी?"

"यह कि तुम कम अक्ल आदमी हो।" कुल्सूम ने जवाब दिया–"अगर तुम सुल्तान अय्यूबी के जासूस हो तो तुम बेवकूफ जासूस हो। तुम अपनी फ़ौजों को सलीबियों के हाथों मरवाओगे। अगर अर्नात सुल्तान अय्यूबी को गुमराह करने की सोंचता है तो वह कोई और ज़रिआ इख़्तियार नहीं कर सकता था? अगर वह यह काम मुझ से ही कराना चाहता तो मुझे रात को बघी पर बैठाकर मुसलमान के इलाकों के क़रीब न छोड़ आता?.....सुनो बक़र! ग़ौर से सुनो। मैने तुम पर पहला जो तीर चलाया था उसका इरादा अचानक बिजली की तरह मेरे दिमाग़ में आया था। मैं तो सिर्फ सैर के लिए निकली थी। यह तुम थे जिसने कहा था कि तीर कमान साथ ले चलें, यहां शिकार होगा...

"यहाँ आकर मैंने तुमसे मुसलमानों की सहरद और दमिश्क़ के जो रास्ते पूछे वह यह मालूम करने के लिए पूछे थे कि मैं उस सरहद से कितनी दूर हूँ और क्या मैं आसानी से वहाँतक पहुंच सकती हूं? तुमने जब बताया कि यह इलाका चन्द मील दूर है तो मैं सोंचने लगी कि तुम्हें कोई लालच देकर साथ ले चलूं लेकिन तुम्हें मैं ईसाई समझती रही और बिल्कुल उम्मीद नहीं रखती थी कि तुम मेरी मदद करोगे बल्कि उम्मीद यह थी कि तुम अर्नात से ईनाम के लिए उसे बता दोगे कि यह लड़की मुसलमान जासूस है। मेरे लिए कोई रास्ता नहीं था। तुम मुझसे थोड़ी दूर दरख़्त के साथ लग कर खड़े हो गये तो मैंने दरख़्त पर एक परिन्दे पर तीर चलाने के लिए तीर कमान में डाला। उस वक़्त मेरी नज़रें तुम्हारी पीठ पर जम गयीं........

"तब मुझे अचानक ख्याल आया कि तुम इतने करीब हो कि तीर तुम्हारी पीठ में गहरा उतर जाएगा और मुझे दूसरा तीर चलाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। तुम मर जाओगे तो मैं बघी भगाकर उस रास्ते पर हो लूंगी जो तुमने मुझे समझा दिया था। मैंने कोई और ख़तरा सोंचा ही नहीं था। शायद मुझमे अक्ल कम और जज़्बात ज़्यादा थे और उन जज़्बात में इन्तकाम का जज़्बा ज़्यादा था। मैंने कांपते हाथों से तीर चला दिया। मुझ में यह इतनी सी भी अक़्ल नहीं रही कि तुम्हें कह देती कि तीर ग़लती से निकल गया है। तुम फ़ौरन मान लेते क्योंकि तुम

जानते हो मैंने कभी कमान हाथ में नहीं ली थी। मैंने यही राहे निजात देखी कि तुम्हें मार डालूं और मुसलमानों के इलाके की तरफ़ भाग जाऊं मगर मैं कामयाब न हो सकी।"

"इससे पहले तुम्हें कभी भागने का ख़्याल नहीं आया था?" बकरने कहा।

इब्तेदा में भागने का ही ख़्याल मेरे दिमाग पर सवार रहा मगर मुझे हकीकत को कुबूल करना पड़ा कि मैं भाग नहीं सकती।" उसने जवाब दिया—"उसमें कोई शक नहीं कि अर्नात ने मुझे सही मानों में शहज़ादी बना दिया था। वह कहा करता था कि मुझे किसी लड़की से कभी ऐसी मोहब्बत नहीं हुई थी जैसी तुमसे हो गयी है। मैं उसके साथ शराब भी पीती रही। उससे मैं बच नहीं सकती थी। जिस्मानी तौर पर मैं उसकी ज़िन्दगी में तहलील हो चुकी थी। ऐसी शाहाना ज़िन्दगी तो मैं ख़्वाब में भी नहीं देख सकती थी। लेकिन तन्हाई में मेरा दिल मुसलमान हो जाता था और यह ख़्याल मुझे तड़पा देता कि मैं हजकाबा से आई हूं। कभी—कभी मैं ख़ुदा से गिले शिकवे भी किया करती थी और अक्सर यूं होता कि मैं ख़ुदा कोभूल जाती थी. ...

"उसी दौरान सुल्तान अय्यूबी ने कर्क का मुहासिरा किया और आतिशी गोले फेंककर शहर का बहुत सा हिस्सा तबाह कर दिया था। मैं तैय्यार हो गयी थी कि अपनी फ़ौज शहर में दाख़िल हो जाएगी और मैं अर्नात को अपने हाथों क़त्ल करूंगी मगर हुआ यूं कि एक माह बाद सुल्तान अय्यूबी ने मुहासिरा उठा लिया और वापस चला गया। अर्नात कहकहा लगाता मेरे पास आया और बोला—"मैंने उसे फिर बेवकूफ़ बना लिया है। मैंने उसके साथ मुआहिदा कर लिया है कि आइंदा हाजियों के काफ़लों पर हाथ नहीं उठाऊंगा और मैंने उसके साथ जंग न करने का भी मुआहिदा कर लिया है'........

"मेरे दिल को बहुत सदमा हुआ। सुल्तान अय्यूबी को वापस नहीं जाना चाहिए था। मुझे रिहा कराये बग़ैर उसे मुहासिरे नहीं उठाना चाहिए था।"

"सुल्तान अय्यूबी के सामने उससे ज़्यादा बड़ी मुहिम है।" बकर ने कहा—"उसे बल्कि हमें बैतुल मुकद्दस आज़ाद कराना है जहाँ हमारा किब्ला अव्वल है। हमें अर्ज़े फ़िलिस्तीन को अज़ाद कराना है जो हमारे नबियों और पैग़ाम्बरों की सरज़मीन है। अगर सुल्तान अय्यूबी एक—एक मुसलमान लड़की को आज़ाद कराने निकल खड़ा हुआ तो वह अपनी मंज़िल अपने मक़सद से दूर भटकता और लड़ता ख़त्म हो जाएगा। कौमें इतने मुकद्दस मकसद की ख़ातिर अपने बच्चों को कुर्बान कर दिया करती हैं।"

"अर्नात की एक बुरी आदत ने मुझे यह फ़रामोश न करने दिया कि मैं मुसलमान हूँ।" कुल्सुम ने कहा—"वह रसूले ख़ुदा सल्ल0 की शान मे गुस्ताख़ी करता रहता है। वह यह भी कहता है कि सुल्तान अय्यूबी किब्ला अव्वल तक पहुँचने के लिए हाथ पाँव मार रहा है और हम उसके ख़ानाकाबा को मिस्मार करने और अपनी इबादतगाह बनाने के लिए जा रहे हैं।"

सलीबियों के अज़ाइम का तज़करा यूरोपी मोअर्रिख़ों ने भी किया है कि सलीबियों ने ख़ानाकाबा और रसूले मकुबूल सल्ल0 का रौज़ा मुबाकर मिस्मार करने का मंसूबा बना लिया था और एक बार वह मदीना से तीन मील दूर तक पहुंच भी गये थे। कर्क का जो मुहासिरा

सुलतान अय्यूबी ने किया और एक माह बाद उठा लिया था यह भी एक तारीख़ी वाकि़आ है। मुहासिरा उठाने की वजह यह नहीं थी कि अर्नात ने जंग न लड़ने और आइंदा हाजियों के काफ़लों पर हम्ले न करने का मुआहिदा कर लिया। वह तो सुल्तान अय्यूबी को मालूम था कि सलीबी मुआहिदा तोड़ने के लिए क्या करते हैं। मुहासिरा उठाने की असल वजह यह थी कि वह बैतुल मुक़द्दस की फ़तह की तैयारियों में मसरूफ़ था। अर्नात ने उस मुआहिदे के दो ही साल बाद हाजियों के एक और काफ़ले पर हम्ला किया था। उस मुआहिदे की मियाद 1188 ई0 तक थी। सुल्तान अय्यूबी 1187 ई0 में हतीन की तरफ पेशक़दमी की थी और इस अह्द के साथ निकला था कि अर्नात को अपने हाथों क़त्ल करेगा।

❖

कुल्सुम बकर को बता रही थी—"अर्नात के साथ मैं भी खुश रही और मेरे दिल में इन्तक़ाम भी मौजूद रहा। वह कभी–कभी मुझे बताया करता था कि सुल्तान अय्यूबी के जासूस भेस बदल कर आ जाते हैं और यहाँ के राज़ ले जाते हैं। उसने यह भी बताया था कि बड़ी ही हसीन सलीबी और यहुदी लड़कियाँ मुसलमानों के इलाक़ों में मुसलमानो की तरह की नामों से ऊंचे रूत्बों और ओहदेदारों वाले हाकिमों को जाल में फांस लेती और उन्हें सलीब के मक़ासिद के लिए इस्तेमाल करती हैं। अर्नात मुझे उन लड़कियों की कहानियां सुनाया करता था। यह सुन कर कई बार ख़्याल आया कि यह लड़कियाँ अपने मज़हब के लिए अपनी आबरू कुर्बान कर देती हैं। इस्मत ही वह मोती है जिसके तहफ़्फ़ुज के लिए औरत जान पर खेल जाती है लेकिन यह लड़कियाँ इतनी बड़ी कुर्बानियाँ दे डालती हैं......

"मेरी आबरू तो लुट ही चुकी थी। मैंने इरादा कर लिया कि अपने मज़हब के लिए कुर्बानी दूंगी मगर मुझे मौक़ा नहीं मिलता था। अब यहाँ आकर अर्नात ने मुझे ऐसा राज़ दे दिया है कि जो सुल्तान अय्यूबी तक पहुँचाना चाहिए। शायद ख़ुदा ने मुझे इसी नेकी के लिए इस जहन्नम में भेजा था क्या तुम मुझे बता सकते हो कि इस ख़बर से सुल्तान अय्यूबी को कोई फ़ायदा पहुंचेगा?"

"बहुत ज़्यादा।" बकर ने कहा–"लेकिन यह ख़बर तुम लेकर नहीं जाओगी। अगर तुम या हम दोनों यहां से ग़ायब हो गये तो शहज़ादा अर्नात फ़ौरन समझ जाएगा कि हम दोनों जासूस थे। इस तरह यह अपने मंसूबों में रद्दो बदल कर देंगे और हम सुल्तान अय्यूबी तक जो ख़बर पहुंचाएंगे वह उसकी शिकस्त का बाइस बन सकती है।"

"इसका मतलब यह हुआ कि इतनी अहम ख़बर सुल्तान अय्यूबी तक नहीं पहुंच सकती।" कुल्सुम ने कहा।

"पहुँच सकती है और पहुंचाई जाएगी। बकर ने कहा–"कर्क वापस जाकर यह इन्तज़ाम होगा।"

"तुम जाओगे?" कुल्सुम ने पूछा–"मैं यहाँ से भागना भी चाहती हूँ।"

12

"मैं नहीं जाउंगा।" बकर ने कहा–"तुम भी नहीं जाओगी। कर्क में मेरे साथी मौजूद हैं। ख़बरे ले जाने का काम उनकी ज़िम्मेदारी है। मेरा काम ख़बरे हासिल करना है। अब यह काम

तुम करोगी। तुम्हारा काम अभी ख़त्म नहीं हुआ, अभी शुरू हुआ है। मैं तुम्हें बताऊंगा कि सुल्तान को किस किस्म की मालूमात की ज़रूरत है। यह मालूमात तुम मुझे दोगी और मैं उन्हें दमिश्क तक भेजूंगा।"

"तो मुझे इस जहन्नम में ही रहना पड़ेगा?" कुल्सुम ने उदास सा होके पूछा।

"हाँ।" बकर ने जवाब दिया–"तुम्हें इस जहन्नम में और मुझे मौत के मुंह में मौजूद रहना पड़ेगा...कुल्सुम! तुम्हें यह कुर्बानी देनी पड़ेगी। सुल्तान कहा करते हैं कि एक जासूस या एक छापामार अपनी पूरी फ़ौज की फ़तह या शिकस्त का बाइस बन सकता है लेकिन जासूस हर लम्हा मौत के मुंह में खड़ा रहता है। जासूस जब दुश्मन के हाथ चढ़ जाता है तो फ़ौरन उसे कत्ल नहीं कर दिया जाता। उसे अज़ीयत दी जाती हैं। उसकी खाल आहिस्ता–आहिस्ता उतारी जाती है। उसे मरने नहीं दिया जाता, उसे जीने भी नहीं दिया जाता, लेकिन अपने मज़हब और अपने वतन के लिए किसी न किसी को अपनी ज़िन्दा खाल उतरवानी पड़ती है। कौमों का नाम व निसान उस वक़्त मिटना शुरू हो जाता है जब इनमें कुर्बानी का जज़्बा ख़त्म हो जाता है.....तुमने जहां चार साल गुज़ार दिए हैं वहाँ चार महीने और गुज़ार दो। तुम अब अर्नात को अपना अका़ समझो। उसके साथ पहले से ज़्यादा मोहब्बत काइज़हार करो लेकिन दिल में यह समझो कि तुमने एक ऐसे ज़हरीले नाग पर कब्ज़ा कर रखा है जो तुम्हारे हाथ से आज़ाद हो गया तो आलमे इस्लाम को डस लेगा।"

"मुझे बताओ।" कुल्सुम ने बेताब होकर कहा–"ख़ुदा के लिए मुझे बताते रहो कि मैं अपने ख़ुदा के हुज़ूर किस तरह सुर्ख़ुरू हो सकती हूँ।"

बकर ने उसे बताना शुरू कर दिया। उसे मुकम्मल हिदायत दीं और कहा–"सबके सामने यह ज़ाहिर न होने देना कि मेरा और तुम्हारा कोई और तअल्लुक है। यहाँ हमारे जासूस का सुराग़ लगाने वाले सलीबी जासूस भी भेस बदल कर घूमते फिरते रहते हैं। यह भी याद रखो कि सिर्फ़ हम दोनों जासूस नहीं, हमारे और भी बहुत से साथी हैं। वह हर उस शहर मे मौजूद हैं जहाँ सलीबी हुक्मारान और जरनल मौजूद हैं। उनमें एक से एक बहादुर अकलमन्द है। दिल मे यह ख़ुशफ़हमी न रखना कि हम दोनों कोई बहुत बड़ा कारनामा कर रहे हैं। ख़ुदा पर एहसान न करना। यह हमारा फ़र्ज़ है जो हमें अदा करना है ख़्वाह हमें कैसी ही अज़ीयत में क्यों न डाल दिया जाए।"

कुल्सुम जब ख़ेमागाह में अपने ख़ेमे के सामने बघी से उतरी उस वक़्त वह शहज़ादी लिली थी और बकर बिन मोहम्मद सीबल था। कुल्सुम जब बघी से उतर रही थी उस वक़्त सीबल उसके पास खड़ा गुलामों की तरह झुका हुआ था। ख़ेमे में गयी तो अर्नात एक नक्शे पर झुका हुआ था। कुल्सुम ने उसे कहा कि वह सैर के लिए निकल गयी और शिकार भी खेला था।

"क्या मारा?" अर्नात ने नक्शे से नज़रें हटाए बग़ैर पूछा।

"कुछ भी नहीं।" कुल्सुम ने जवाब दिया–"सब तीर ख़ता कर गये लेकिन जल्दी ही शिकार मारने के काबिल हो जाउंगी।" यह कहकर वह भी नक्शे पर झुक गयी। उसने पूछा–

"पेशक़दमी का नक़्शा है या दिफ़ाअ का?"

"पेशक़दमी सलाहुद्दीन अय्यूबी करेगा।" अर्नात ने बेख़्याली के आलम में कहा–"और दिफ़ाअ भी उसी को करना पड़ेगा क्योंकि हम उसे जाल में ला रहे हैं। उसका दम ख़म ख़त्म करके हम पेशक़दमी करेंगे। हमें रोकने वाला कोई न होगा। तुम अपने ख़ेमे में जाओ लिली! मुझे बहुत कुछ सोचना है। आज रात हमारी जो कान्फ्रेंस होगी उसमें जंग का मंसूबा और नक़्शा बनाया जाएगा। मुझे जो मश्वरे देने हैं उनमें कोई ग़ल्ती नहीं होनी चाहिए।"

❖

उसका नाम कुल्सुम है और बकर बिन मोहम्मद उसके साथ है।" वह अर्नात का बग़ीबान है।" सुल्तान अय्यूबी की इन्टेलीजेंस का नायब सरबराह हसन बिन अब्दुल्लाह उसे कर्क के जासूसों की भेजी हुई पूरी ख़बर सुना चुका था।

सुल्तान अय्यूबी की आँखें लाल हो गयीं। उसने कहा–"कौन बता सकता है कि हमारी कितनी बेटियाँ उन कुफ़्फ़ार के क़ब्ज़े में हैं और उनकी अय्याशी का ज़रिआ बनी हुई हैं। मैं अर्नात को नहीं बख़्शूंगा। ख़्याल रखना हसन! उस लड़की को वहां से निकालना है लेकिन अभी नहीं।"

कर्क में जो हमारे आदमी हैं वह उसे मौज़ूं वक़्त पर निकाल लाएंगे।" हसन बिन अब्दुल्लाह ने कहा–"अकरा का पादरी और यह सलीबी इत्तेहादी नासिरा में तीन रोज़ रहे और उन्होंने प्लान और नक़्शा तैय्यार कर लिया था। कुल्सुम ने अर्नात से सबकुछ मालूम कर लिया था और बकर को बता दिया। सलीबियों को भी सुल्तान अय्यूबी के राज़ मालूम हो गये थे। उनके जासूस मुसिल, हलब, दमिश्क, काहिरा और हर जगह मौजूद थे। उन्होंने सलीबियों को सही इत्तलाएं भेजी थीं। सलीबियो को यह भी पता चल गया था कि मिस्र से भी फ़ौज आ रही है। सलीबियों को यह भी मालूम हो गया था कि सुल्तान अय्यूबी बहुत जल्द पेशक़दमी करने वाला है लिहाजा उन्होंने दिफ़ाअ में लड़ने फ़िर सुल्तान अय्यूबी को घेरे में लेने का प्लान तैय्यार किया था। इस मक़सद के लिएउन्होंने मुख़्तलिफ़ जगहों पर फ़ौज ख़ेमाज़न कर दी थी। उन्हें अभी यह मालूम नहीं हुआ था कि सुल्तान अय्यूबी किधर से आयेगा और मैदाने जंग कौन होगा। अपने अन्दाज़े के मुताबिक़ उन्होंने सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज की नफ़री, प्यादा और सवार का हिसाब लगा लिया था।

हसन बिन अब्दुल्लाह ने कर्क से आए हुए अपने आदमी से तफसीली रिपोर्ट ली। उस जासूस ने कुल्सुम और बकर के मुतअल्लिक़ भी बताया। हसन बिन अब्दुल्लाह ने यह रिपोर्ट सुल्तान अय्यूबी को दी।

"यह इत्तलाअ उन तमाम इत्तलाओं की तस्दीक़ करती है जो हमें दूसरी जगहों के जासूसों ने भेजी हैं।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा–"यह तो हमें पहले ही मालूम हो चुका है कि सलीबी मेरा इन्तज़ार कर रहे हैं। अब कर्क की इत्तलाअ ने उसकी तस्दीक़ कर दी है। उसमें नई बात यह है कि चन्द एक सलीबियों ने इत्तेहाद कर लिया है और मुझे उनकी मुत्तहिदा फ़ौज से लड़ना होगा। इसके अलावा यह इत्तलाअ है कि जंगी ताक़त कितनी है, उनके साथ

दो हज़ार दो सौ नायट होंगे। यह बिला शुबहा बहुत बड़ी ताकत है। नायट सर से पांव तक ज़िरहबकतर में मलबूस और महफूज होता था। नायटों के घोड़े आम जंगी घोड़ों की निबस्त ज़्यादा ताकतवर और फुर्तीले होते हैं। मैं उन्हें गर्मियों के उरूज में लड़ाऊंगा।"

"और उन ज़िरहपोश नायटों के साथ आठ हज़ार सवार होंगे।" हसन बिन अब्दुल्लाह ने कहा–"प्यादा फौज की तादाद तीसर हज़ार से ज़्यादा हो गयी है।"

"मेरे लिए यह ख़बर नयी नहीं है कि शाह आरमिनिया की फौज भी सलीबियों के पास आ रही है।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा–"यह सलीबियों की तीस बत्तीस हज़ार फौज के अलावा होगी। यह मिलाकर दुश्मन की नफ़री चालीस हज़ार हो जाएगी। कर्क की इत्तलाअ और दूसरी जगहों से आने वाली इत्तलाअ से यह यकीन हो गया है कि सलीबी दिफ़ाई जंग लड़ेंग और मुझे घेरे में ले लेंगे। इसके मुताबिक मेरा यह फैसला सही मालूम होता है कि मै हतीन के मज़ाफ़ात में लडूंगा। उस इलाके से मैं अच्छी तरह वाकिफ़ हूँ।"

❖

"मेरे रफ़ीको! अब वक़्त आ गया है कि हम उस फ़र्ज की अदायगी के लिए निकल खड़े हों जो ख़ुदाए ज़ुलजलाल ने हमें सौंपा है।" सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने दमिश्क में अपने बड़े कमरे में सालारों और नायब सालारों से ख़िताब करते हुए कहा–"हम इक़्तेदार के लिए आपस में लड़ने मारने के लिए पैदा नहीं किये गये थे। हमने आपस में बहुत कुश्त व ख़ून कर लिया है। उस दौरान दुश्मन ने अर्ज़ फ़िलिस्तीन में अपने पंजे गहरे उतार लिए हैं। क़ौम ने हमारे हाथ में तलवार दी है और इस एतमाद के साथ दी है कि हम दुश्मनवाने दीन का ख़ातमा करेंगे और अरब की मुक़द्दस सरज़मीन को कुफ्फ़ार के नापाक वजूद से पाक करेंगे......

"आप कई वर्षों से मुसलसल लड़ रहे हैं लेकिन असल जंग अब शुरू हो रही है। अपने ज़ेहनों में इस जंग के मकसद को ताज़ा कर लो। यह फ़ैसला कर लो कि हमें एक अज़ाद और बावकार कौम की हैसियत से ज़िन्दा रहना है और हमें अपने ख़ुदा के अज़ीम मज़हब को कुफ्र के घिनावने साये से आज़ाद रखना है। हमें सल्तनते इस्लामिया को वहाँ तक ले जाना है, जहाँ तक मोहम्मद बिन कासिम ले गया था और जहाँ तक तारिक बिन ज़याद ले गया था। उनके बाद आने वालों का फ़र्ज़ यह था कि अल्लाह का पैग़ाम वहाँ से भी आगे ले जाते जहाँ तक कौम के यह बेटे ले गये थे मगर अल्लाह की सल्तनत ऐसी सिकुड़ी कि हमारे दीन के दुश्मन हमारे घर में आ बैठे हैं और वह ख़ानाकाबा और रौज़ाए मुबाकर को मिस्मार करने के मंसूबे बनाये हुए हैं। क्यों?........यह क्योंकर मुम्किन हुआ?.....जहाँ बादशाही का जुनून दिमाग़ों पर काबिज़ होता है वहाँ सरहदें सिकुड़ती हैं और तख़्त व ताज की खातिर उमरा अपने मज़हब और अपनी ग़ैरत को भी तर्क कर दिया करते हैं....

"हमारे ज़वाल का बाइस तख़्त व ताज का नशा और ज़र व जवाहरात की मोहब्बत है। कहाँ वह वक़्त कि हम दुनिया पर छा गये थे और कहां हमारा यह वक़्त कि दुनिया हम पर छा गयी है और हम आख़िरत को फ़रामोश किये बैठे हैं। हम में दोस्त और दुश्मन की पहचान नहीं

रही। अस्करी जज़्बे पर फानी दुनिया की झूठी लज़्ज़तों का जादू चल गया है। याद रखो मेरे रफीको! मैं आप को कई बार कह चुका हूँ कि कौम की किस्मत तलवार की नोक से लिखी जाती है और यह तहरीर उन मुजाहिदों की होती है जिनके हाथ में तलवार होती है। जब सालार तख़्त पर बैठकर सर पर ताज रख लेते हैं तो उनके हाथों में ताकत नहीं रहती कि तलवार न्याम से बाहर ख़ींच सकें। उनके दिलों में अपने अकीदे और अपनी कौम के वकार के तहफ़्फ़ुज का जज़्बा नहीं रहता, फिर मज़हब का इस्तेमाल यह रह जाता है कि अपनी रिआया को मज़हब के नाम पर धोख दो और दुश्मन के साथ दर परदा दोस्ती कर लो ताबक आराम से अल्लाह के नेक और सादा लौह बन्दों पर हुकूमत कर सको..........

"हम आज इस्लाम की अज़मत की ख़ातिर सिर्फ़ इसलिए घरों को ख़ैरबाद कहने और दुश्मन पर टूट पड़ने के काबिल हुए है कि हम ने इक्तेदार के पुजारियों को ख़त्म कर दिया है। हमने आस्तीन के सांपों का सर कुचल डाला है। अगर हम हार गये तो इसकी वजह इसके सिवा और कोई नहीं हो सकती कि हमारी नीयत में फुतूर था।"

सुल्तान अय्यूबी ऐसी जज़्बाती और लम्बी तकरीर करने का आदी नहीं था लेकिन जिस मुहिम के लिए वह निकल रहा था उसके लिए सब को ज़ेहनी और रूहानी तौर पर तैय्यार करना ज़रूरी था। यह उसके वफ़ादार और काबिले एअतमाद सालार और नायब सालार थे। उनमें मुज़फरूद्दीन जैसा काबिल और दिलेर सालार भी था जो किसी वक़्त उसका साथ छोड़ कर उसके मुख़ालिफ़ कैम्प में चला गया और उसके खिलाफ़ लड़ा भी था। उसके साथ तकीउद्दीन और अफज़लुद्दीन, फ़रूख़ शाह और मल्कुलआदिल जैसे सालार भी थे जो उसके अपने ख़ानदान और अपने ख़ून के रिश्ते के थे। सालार किकबूरी उसका दस्तेरास्त था। उनमे कोई भी ऐसा नहीं था जो फ़न्नी, टेक्निकी और जज़्बाती लिहाज से कमतर होता, लेकिन सुल्तान अय्यूबी पहली बार अरज़े फ़िलिस्तीन में हम्ले के लिए जा रहा था और उसकी मंज़िल बैतुल.मुकद्दस थी।

यह मुहिम आसान नहीं थी। सलीबियों की जंगी कुव्वत ज़्यादा भी थी और बरतर भी। सलीबियों को यह फ़ायदा हासिल था कि उन्हें दिफ़ाअ में अपनी ज़मीन पर लड़ना था जहाँ उन्हें रस्द का कोई मस्ला पेश नहीं था और वह अपने मुस्तकर के करीब थे सुल्तान अय्यूबी अपने मुस्तकर से दूर जा रहा था जहाँ तक रस्द के रास्ते मख़्दूश थे। जंगी फनून के मुताबिक वह दुश्वारियां हम्लावर को पेश आती हैं और हम्लावर की नफरी दुश्मन से अगर सेह गुना नहीं तो दुगुनी ज़रूर होनी चाहिए मगर सुल्तान अय्यूबी की नफरी कम थी। उसे यही यकीन था कि यह जंग बहुत तूल पकड़ेगी और घरों को वापस आना मुम्किन नहीं होगा, इसलिए उसने यह ज़रूरी समझा कि अपने सालारों को बतादे कि वह तारिक बिन ज़ेयाद की उस कार्रवाई को ज़ेहन में रखें जिसमें उसने बहेरा रोम पार करके कश्तियां जला डाली थीं कि वापसी का ख़्याल ही ज़ेहन से निकल जाए।

काज़ी बहाउद्दीन शद्दाद ने अपनी याददाश्तों बउन्वान "सुल्तान (सलाहुद्दीन) पर क्या उफताद पड़ी" में लिखा है--"सुल्तान का अकीदा यह था कि ख़ुदा ने कुफ़्फ़ार के ख़िलाफ़

लड़ने का जो हुक्म दिया है यह उसका फ़र्ज़े अव्वलीन है जिसे दुनिया के हर काम और हर फ़र्ज़ पर फ़ौक़ियत हासिल है। कुफ़्फ़ार से लड़ना अल्लाह की हुक्मरानी क़ायम करना उसका ऐसा फ़र्ज है जो ख़ुदा के हुक्म से उसे सौंपा गया है। ज़्यादा से ज़्याद मुलकों को अल्ल्लाह की सल्तनत में शामिल करना और बनी नूअ इन्सान को इतआत इलाही की तरफ़ लाना....उसने तमाम फ़ौजों को, जहाँ वह थीं, अशीतरा के मुक़ाम पर जमा होने का हुक्म भेजा उसमें अल्लाह के हुक्म के अल्फ़ाज़ भी लिखे।"

❖

सुल्तान अय्यूबी की नज़रे मुस्तकबिल की तारिकियों में झाँक रही थीं। उसने हतीन के मुक़ाम को मैदाने जंग बनाने का फ़ैसला किया था। हतीन फ़िलिस्तीन का एक गुमनाम सा गाँव था लेकिन सुल्तान अय्यूबी ने उसे वह अज़मत बख़्शी कि ईसाई दुनिया के जंगी मुबस्सिर आज भी तजजिए करते नज़र आते हैं कि सलीबी जंगो के इस हीरो ने किस क़िस्म की चालों और स्ट्रेट्जी से इतने ताक़तवर और बरतर अस्लेहा वाले दुश्मन को ऐसी शर्मनाक शिकस्त दी थी कि सलीबियों के एक के सिवा बाक़ी तमाम हुक्मरान जंगी क़ैदी हो गये थे।

जंगी उलूम की बारीकियों को समझने वाले मुबस्सिरों और मोअर्रिख़ों ने सुल्तान अय्यूबी को दिगर ख़ूबियों के अलावा उसके इन्टेलीजेंस और काउन्टर इन्टेलीजेंस और कमाण्डो आप्रेशन को ख़िराज तहसीन पेश किया है। यह है भी हक़ीकत कि बकर बिन मोहम्मद जैसे जासूस अपनी जानें मौत के मुँह में रखकर अहम मालूमात हासिल कर रहे थे और सुल्तान अय्यूबी तक पहुँचा रहे थे। कुल्सुम जैसी मज़लूम लड़कियाँ शाहाना ज़िन्दगी और ऐश व ईशरत को ठुकरा कर अपने तौर पर इस्लामी फ़ौज की मदद कर रही थीं। तारीख़ उन गुमनाम ग़ाज़ियोंऔर शहीदों के नाम बताने से क़ासिर है जिन्होंने पसे पर्दा और ज़मीनदोज़ ज़िहाद किया और हतीन को तारीख़ की अज़मत का निसान बना दिया।

सुल्तान अय्यूबी हमेंशा जुमा के मुबारक दिन लड़ाई के लिए कूच करता था कि यह कबूलियत का दिन है। उस मुबारक रोज़ हर मुसलमान ख़ुदा के हुज़ूर झुका हुआ होता है औरजब सिपाही अपनी क़ौम को इबादत में मसरूफ़ छोड़ कर ज़िहाद के लिए निकलता है तो सारी क़ौम की दुआएँ उसके साथ होती हैं। हतीन को कूच करने के लिए भी उसने जुमा का दिन मुन्तख़ब किया। यह 15 मार्च 1187 ई0 का दिन था। उसने फ़ौज का सिर्फ़ एक हिस्सा साथ लिया और कर्क के क़रीब जा ख़ेमाज़न हुआ।

सलीबी जासूसों ने फ़ौरन अपनी इत्तेहादी फ़ौज को ख़बर पहुँचा दी कि सुल्तान अय्यूबी कर्क के क़रीब ख़ेमाज़न हो गया है। इससे यह मतलब लिया गया कि वह कर्क का मुहासिरा करेगा लेकिन उसका मक़सद यह था कि मिस्र और शाम के क़ाफ़ले हजे काबा से वापस आ रहे थे। उन पर कर्क के क़रीब ही हम्ले हुआ करते थे। वालिये कर्क शहज़ादा अर्नात उस मामिले में बड़ा ही बद तीनत था। सुल्तान अय्यूबी उन काफ़लों को ख़ैरियत से वहाँ से गुज़ारने के लिए उस इलाक़े में चला गया था। इसके अलावा उसका मक़सद यह भी था कि सलीबियों को धोखा दे और वह अपना दिफ़ाअ फैला देने पर मजबूर हो जाएं। उसने अपने

सालारों को बता दिया था कि काफ़ले गुज़ार कर वह कहाँ जाएगा।

❖

कर्क के महल में तो जैसे ज़लज़ला आ गया था। शहज़ादा अर्नात को निस्फ़ शब के बाद जगा कर बता दिया गया कि कोई बहुत बड़ी फौज शहर से कुछ दूर ख़ेमे गाड़ रही है। वह हड़बड़ा कर उठा। यह सुल्तान अय्यूबी के सिवा कौन हो सकता था। कुल्सुम उसकी ख़्वाबगाह में थी। वह अर्नात के साथ दौड़ती शहर के बड़े दरवाज़े की ऊपर वाली दिवार पर गयी। वहाँ से सैकड़ों मशाले नज़र आ रही थीं। ज़्यादा तर मशालें मुतहरिक थीं। ख़ेमे गाड़े जा रहे थे। रात की ख़ामोशी में घोड़ों के हिनहिनाने की आवाज़ें साफ़ सुनाई दे रही थीं।

अर्नात ने अपनी फ़ौज को मुहासिरे में लड़ने के लिए दिवारों पर मोर्चा बन्द करा दिया। दरवाज़ों पर दिफ़ाई इन्तज़मात मज़बूत कर दिए गये। अर्नात भाग दौड़रहा था। उसे कुल्सुम का कोई ख़्याल नहीं था। कुल्सुम वापस गयी तो अर्नात का मुहाफ़िज़ दस्ता बेदार होकर हुक्म का मुन्तज़िर खड़ा था और एक जगह वह शाही बघी खड़ी थी जिस पर कुल्सुम नासिरा गयी और सैर के लिए भी गयी थी। उसके पास बकर बिन मोहम्मद चाक व चौपन्द खड़ा था। वहाँ हर आदमी अपनी ड्यूटी पर पहुंच गया था।

कुल्सुम ने हुक्म के लहजे में बकर से कहा–"सीबल बघी इधर लाओ।"

बकर बघी लाया तो कुस्लुम उसमे बैठ गयी और उसके किसी तरफ़ ले गयी। अर्नात के हरम की औरतें भी जाग कर बाहर आ गयी थीं। उन्होंने कुल्सुम को जो उनके लिए प्रिन्स लिली थी, बघीबान को हुक्म देते और बघी पर बैठकर जाते देखा तो उनमें से एक ने दांत पीस कर कहा–"यह बदबख़्त किसी मुसलमान की औलाद अपने आप को मलिका समझने लगी है। उसे ठिकाने लगाना ही पड़ेगा।"

"वक़्त आ गया है।" दूसरी ने कहा–"सलाहुद्दीन अय्यूबी का मुहासिरा बहुत ख़ौफ़नाक होता है। वह आग फेंकेगा, मिन्ज़निकों से पत्थर फेंकेगा। अन्दर भगदड़ और तबाही मचेगी और यह वक़्त होगा जब हम इस मुंह चढ़ी डाइन को ठिकाने लगा देंगी।"

"तुम्हारा चाहने वाला वह जरनल भी तो कुछ न कर सका।" तीसरी ने कहा।

"और बहुत हैं कुछ करने वाले।" उसने जवाब दिया–"कल शाम तक शहर की हालत देखना। फिर शहज़ादा अर्नात किसी और शहज़ादी लिली को तलाश करेगा।"

उस वक़्त कुल्सुम ने बघी एक अंधेरी जगह रूकवा रखी थी। बकर बघी के साथ खड़ा था। कुल्सुम उसे पूछ रही थी–"हमारे आदमी अन्दर से कोई दरवाज़ा खोलने का इन्तज़ाम कर सकेंगे?"

"कोशिश की जाएगी।" बकर ने कहा–"अगर यह फ़ौज हमारी है तो मैं हैरान हूँ कि हमें पहले इत्तलाअ क्यों नहीं दी गयी। सुल्तान अय्यूबी ऐसी ग़लती नहीं किया करते मुझे कुछ शक है। यह सही पता चलेगा कि यह किसकी फ़ौज है।"

"क्या हम यहां से फरार हो सकेंगे?" कुल्सुम ने पूछा।

"हालात पर मुन्हसिर है।"

"मैं इस अफरातफरी में अर्नात को आसानी से क़त्ल कर सकती हूं।"

"ऐसी हरकत न करना।" बकर बिन मोहम्मद ने कहा—"फौज शहर में दाख़िल हो गयी तो हम नज़र रखेंगे कि वह फरार होने की कोशिश न करे......कोई नयी ख़बर?"

"अर्नात सुल्तान अय्यूबी को देख रहा था कि किस तरफ़ पेशक़दमी करता है।" कुल्सुम ने कहा—"अब हालात कुछ और हो गये हैं। पहले कहता था कि वह अपनी फौज के साथ झील गीलीली को जा रहा है।"

"ज़्यादा देर न रूको।" बकर ने कहा—"चलो वापस चलें।"

❖

सुबह तुलूअ हुई तो कर्क की दिवारों पर दूर मार कमानों वाले तीर अन्दाज़ मुस्तैद खड़े थे। पत्थर और आग की हांडियां फेंकने वाली मिन्जनिकें नस्ब हो चुकी थीं। फौज तैय्यारी की हालत में खड़ी थी और शहज़ादा अर्नात दिवार पर खड़ा सुल्तान अय्यूबी की फौज को देख रहा था। यह यक़ीन हो गया कि यह सुल्तान अय्यूबी की फौज है। यह मालूम न हो सका कि सुल्तान ख़ुद भी साथ है, मगर उस फौज में मुहासिरे वाली कोई हरकत और सरगर्मी नहीं थी। ख़ेमे लगे हुए थे और सिपाही रोज़मर्रा के मामूल में लगे हुए थे।

यह दिन गुज़र गया, फिर पांच छः दिन गुज़र गये। अर्नात पर इन्तज़ार और इज़्तराब की कैफियत तारी रही। उसे जो नज़र नहीं आ रहा था वह यह था कि रात को सुल्तान अय्यूबी ने अपने घोड़सवार छापामार उसके रास्ते पर दूर तक फैला दिए थे जिनपर हिजाज़ के काफलों को गुज़रना था। चन्द दिनों बाद पहला काफला आता नज़र आया। यह मिस्र का काफला था। घोड़सवार उसके साथ हो गये। काफला सुल्तान अय्यूबी के ख़ेमागाह के क़रीब पहुंचा तो सुलतान दौड़ कर आगे बढ़ा और हिजाज़ से मुसाफहा किया। उसने अक़ीदत और एहतराम से सबके हाथ चूमें और अपनी ख़ेमागाह में उन्हें आराम और खाने के लिए रोका और उसके छापामार दूर तक हिजाज़ के साथ गये। एक ही रोज़ बाद शामी हिज़ाज़ का काफला भी आ गया। उसका भी सुल्तान अय्यूबी ने इस्तक़बाल किया। खाना खिलाया और अपने हिफाज़ती इन्तज़मात में उसे रूख़सत किया।

इतने दिन कर्क के अन्दर सलीबी फौज तैय्यारी की हालत में रही और शहर पर खौफ तारी रहा। सुल्तान अय्यूबी के जासूस अपनी सरगर्मियों में मस्रूफ रहे। एक सुबह अर्नात को इत्तलाअ मिली कि सुल्तान अय्यूबी की फौज जा रही है। अर्नात इसके सिवा कुछ भी न देख सका कि हिजाज़ के दोनो काफिले सुल्तान अय्यूबी की फौज की हिफाज़त में गुज़र गये हैं। सुल्तान अय्यूबी के सिर्फ जासूसों को मालूम था कि यह असल क़िस्सा क्या था। उसने कूच से पहले उन्हें इत्तलाअ भेजवा दी थी कि फौज कहीं और जा रही है और वह (जासूस) अर्नात की नकल व हरकत की इत्तलाअें देते रहें।

27 मई 1187 ई0 के रोज़ सुल्तान अलैश्तर के मुकाम पर ख़ेमाज़न हुआ। वहाँ मिस्र और शाम की फ़ौजें उससे जा मिलीं। उसका सबसे बड़ा बेटा अल्मुलकुल अफ़ज़ल जिसकी उम्र सोलह सतरह साल थी एक मशहूर सालार मुज़फरूद्दीन के साथ जा मिला। इस तरह

उसकी सारी फ़ौज जमा हो गयी। उसने तमाम सालारों, नायब सालारों को आख़िरी हिदायात के लिए जमा किया और कहा—"मेरे रफ़ीको! अल्लाह तुम्हारा मददगार हो। दिलों से अपने अज़ीजों और अपने घरों का ख्याल निकाल दो और दिलो में किब्लाअव्वल को बसा लो और दिलों में ख़ुदाए ज़ुलजलाल का नाम मुबारक नक़्श कर लो जिसने हमें यह सआदत बख़्शी है कि किब्लाअव्वल को अज़ाद करायें और अपनी बेटियों की बेइज़्ज़ती का इन्तक़ाम लें जो कुफ़्फ़ार के हाथों बेआबरू हुई.....

"अब हम जो बात करेंगे वह हक़ीकत की करेंगे। हमारी तादाद दुश्मन के मुकाबले कम है और आपका मुकाबला सात सलीबी बादशाहों की मुत्तहिदा फ़ौज के साथ है जिसमें दो हज़ार दो सौ सर से पाँव तक ज़िरहबकतर में डूबे हुए नायट हैं। उनकी दूसरी फ़ौज नीम ज़िरहपोश है। उस फौज को यह सहूलत हासिल है कि अपने मस्तक़र के क़रीब है और यह सारा इलाका उसका अपना है जहाँ उसे रस्द की कोई दुश्वारी नहीं होगी। हमें दो जगहें लड़नी हैं। एक बराहेरास्त दुश्मन के खिलाफ़ और दूसरी इन दुश्वारियों के खिलाफ़ जो हमें दरपेश हैं। यह दुश्वारियाँ दुश्मन की तरफ़ मुन्तकिल करनी हैं।"

उसने नक़्शा फैलाकर अपनी तलवार की नोक से सबको बता दिया कि उसका मैदानेजंग कौन सा होगा। जो सालार उस जगह से वाकिफ़ थे उन्होंने चौंक कर सुल्तान अय्यूबी की तरफ़ देखा। उनकी आँखों में हैरत थी। सुल्तान अय्यूबी उनके इस्तेजाब को समझ गया और मुस्कुराया।

"यह हतीन के मजाफ़ात का मैदान है।" उसने कहा—"आप सोंच रहे हैं कि यह ज़मीन सूखे हुए दरख़्त की खाल की तरह ख़ुश्क, ऊंची नीच और मौसम की बेरहमी से कटी फटी है और यह ज़मीन इतनी प्यासी है कि इन्सानों और हमारे घोड़ों का ख़ून पी जाएगी। आप ने देखा नहीं कि उसके इर्द गिर्द उंची नीची टीकरियाँ हैं। हाँ, यह सब बेआब व गयाह और प्यासी हैं। यह लोहे की तरह तप रही हैं। आपकी आँखों में जो सवाल है वह मैं समझता हूँ। वह कौन सी फ़ौज है जो उस जहन्नमनुमा इलाके में लड़ेगी? वह हमारी फ़ौज होगी। आप के हल्के फुलके सवारों के दस्ते यहाँ तितलियो की तरह उड़ते फ़िरेंगे और वह लोहे के लिबास में मलबूस नायटों और नीम ज़िरहपोश सलीबी सवारों को नचाते फ़िरेंगे। दुश्मन के सवार और प्यादे लोहे की तपिश से बहुत जल्दी प्यास से बेहाल हो जाएंगे और लोहे का वज़न उन्हें इतनी फुर्ती से हरकत नहीं करने देगी जिस तेज़ी से हमारे सवार भागें दौड़ेंगे.....

"आप जानते हैं कि मैं हर कार्रवाई जुमा के मुबारक रोज़ किया करता हूँ। मैं उस वक़्त बढ़ूंगा जब मस्जिदों में कौम ख़ुतबा सुन रही होगी। यह वक़्त कुबूलियत का होता है। मैंने हर कस्बे और हर गांव में इत्तलाअ भेजवा दिया था कि जुमा के रोज़ दुआओं में अपने उन मुजाहिदो को शामिल रखा करें कि जो जुमा की नमाज़ से महरूम हो कर मैदाने जंग में ज़ख़्मी होकर गिरते है। उठते हैं और जुमा न पढ़ सकने का खिराज लहू के नज़िरहनो से अदाकरते हैं। यह वह होगा जब सूरज सर पर होगा और लोहे को भट्टी की तरह गर्म कर देगा...

"और यह देखो। यह गलीली की झील है और यह दरिया है।" उसने तलवार को छुरी की तरह नक्शे पर मार मार कर बताया—"और यह वाहिद तालाब है जिसमें पानी है। बाकी तमाम तलाब ख़ुश्क हो गये हैं। यह वह महीना है जिसे सलीब के पुजारी जून कहा करते हैं। हमें पानी और दुश्मन के दर्मियान आना है। मैं अल्फ़ाज में दुश्मन को पानी से महरूम कर चुका हूँ उसको अमली तौर पर लाना आपका काम है। दुश्मन हतीन के मैदान में लड़ने से गुरीज़करेगा, मैं उसे यहीं लड़ाउंगा। फ़ौज को मैंने चार हिस्सों में तक़सीम किया है। आप देख रहे हैं कि मुज़फ़्फ़ररूद्दीन और मेरा बेटा अल अफ़ज़ल हममें नहीं हैं। वह एक हिस्से को साथ लेकर दरियाए उर्दन झील गीलीली के जुनूब से पार कर गये हैं। यह दस्ते तबूर (जबल तूर) तक पहुंचेंगे, शायद पहुंच चुके होंगे। यह एक धोखा है जो मैं दुश्मन को दे रहा हूँ।"

उसने फ़ौज के बाकी तीन हिस्सों की तफसीलात और उनके मिशनबताए। उन तीन में से एक हिस्सा (मेन बॉडी) अपनी कमान में रखा। मोअर्रिख़ों के मुताबिक़ यही हिस्सा रिजर्व और टास्क फ़ोर्स के तौर पर इस्तेमाल करना था। यह फ़ैसलाकुन कार्रवाई के लिए था। उन हिस्सों को मुख़्तलिफ़ मक़ामात से दरिया पार कराया गया। सलीबी अपने मुख़्बिरों और देख भाल के दस्तों के ज़रिए यह नक़ल वह हरक़त देख रहे थे लेकिन यह न समझ सके कि सुल्तान अय्यूबी का प्लान क्या है। सुल्तान अय्यूबी ने झील के मग़रीबी किनारे पर तिब्रिया के मुकाम पर एक पहाड़ी पर जा डेरे डाले।

❖

सलीबियों को एक और धोखा भी हुआ। सुल्तान अय्यूबी अक्सर छापामार क़िस्म की जंग लड़ा करता था शबख़ून ज़्यादा मारता था। कम से कम नफ़री से दुश्मन की ज़्यादा तादाद पर "ज़रब लगाओऔर भागो" के उसूल पर हम्ले करता और दुश्मन को फ़ैला देता था। सलीबी उसकी इस जंग के लिए तैय्यार थे। उसकी फ़ौज को जो हिस्सा मुज़फ़्फ़रूद्दीन और अल अफ़ज़ल के ज़ेरे कमान दरिया पार गया था उसने सलीबियों की फ़ौज की चौकियों (आउट पोस्टों) पर शबख़ून मारने शुरू कर दिए थे। उससे सलीबियों को यह धोखा हुआ कि सुल्तान अय्यूबी अपने मख़सूस अन्दाज़ से लड़ेगा, लेकिन अब उसने कोई और ही अन्दाज़ सोंच रखा था। छापामारों को उसने हसबे मामूल वही मिशन दिए जो हर जंग में उन्हें दिया करता था। सलीबी फ़ौज क़िला बन्दियों में थी और बाहर भी थी। सुल्तान अय्यूबी ने तेज़ रफ़्तारी से फ़ौज को इस तरह डिप्लाई किया कि झील और जोऐ दो पानी के तालाब थे वह उसके क़ब्ज़े में आ गये। सलीबियों की फ़ौज के एक हिस्से ने सीफ़ुरिया के मकाम पर इज्तेमाअ किया लेकिन सुल्तान अय्यूबी आगे बढ़ कर मुकाबिला करने कि बजाए तिब्रिया के मकाम पर रूका। वह सलीबियों को हतीन के क़रीब लाना चाहता था। सलीबी आगे आते नज़र न आये तो उसने प्यादा दस्ता जिरह सा आगे बढ़ा दिए और ख़ुद हल्का रेसाला लेकर तिब्रिया पर हम्ला कर दिया और हुक्म दिया कि तिब्रिया को तबाह व बर्बाद करके शहर को आग लगा दी जाए। उसके हुक्म पर अमल किया गया।

तिब्रिया क़िला ज़िरह हट कर था। फ़ौज क़िला में थी। शहर को बचाने के लिए फ़ौज

किले से बाहर निकल कर शहर को रवाना हुई। सुल्तान अय्यूबी ने उसका रास्ता रोक लिया। सुल्तान अय्यूबी ने अपनी फ़ौज के दूसरे हिस्से मुख़्तलिफ़ सिम्तों को रवाना कर दिए थे। सलीबियो की फ़ौज जो क़िले से आई थी उसकी कमान शाह रिमाण्ड के हाथ में थी। तिब्रिया की टीकरियों पर उसकी और सुल्तान अय्यूबी की आमाने सामने की लड़ाई हुई। क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद इस लड़ाई का आँखो देखा हाल इन अल्फ़ाज़ में बयान करता है—"दोनों फ़ौजों के सवारों ने एक दूसरे पर हल्ला बोल दिया। हरावल के सवार तीर चलाते आ रहे थे। फिर पयादा दस्तों को भी मैदान में उतार दिया गया। सलीबियों को मौत नज़र आने लगी थी और मुसलमनो के पीछे दरिया और सामने दुश्मन नज़र आ रहा था। पीछे हटने के लिए उनके पास कोई जगह नहीं थी, इसलिए दोनों फ़ौजें इतने कहर से लड़ीं जिसकी मिसाल तारीख़े पेश नहीं कर सकती।"

सारा दिन लड़ाई जारी रही। रात मुसलमान छापामारों ने ुश्मन को परेशान रखा। दुश्मन की फ़ौज और घोड़े प्यासे थे लेकिन पानी पर मुसलमान काबिज़ थे। छापामार दुश्मन को पानी की तलाश में जाने भी नहीं देते थे। अगले रोज़ सलीबियों ने टीकरियों पर चढ़कर लड़ाई लड़ी। मुसलमान बढ़ चढ़ कर हम्ले करते रहे थे मगर सलीबी बुलिन्दयों से फ़ायदा उठा रहे थे। मुसलमानो का रेसाला चूंकि हल्का फुल्का था इसलिए उन्होंने टीकरियों का घेरा करके उपर चढ़ना शुरू किया। प्यादा तीर अन्दाज़ों ने उनके सिरों के उपर से तीर बरसाये। इतने में सलीबियों ने देखा कि कमाण्डर का झंडा नज़र नहीं आ रहा। यह फ़ौरन ही समझ गये कि बादशाह रिमाण्ड मैदाने जंग से भाग गया है। हालांकि उसने सलीबे आज़म पर हाथ रखकर अपने इत्तेहादियों का वफ़ादार रहने का और पीठ न दिखाने का हलफ़ उठाया था। मोअर्रिख़ लिखते हैं कि सलीबे आज़म हतीन की इस जंग में साथ लाई गयी थी।

सलीबियों के भागने के रास्ते मस्दूद हो चुके थे। वह अब दिफ़ाई जंग लड़ रहे थे। बुलन्दियां उनकी मदद कर रही थीं। यह दिन भी गुज़र गया। मुसलमान फ़ौज ने बेअन्दाज़ा ख़ुश्क घास और लकड़ियां जमा करके सलीबियों के इर्द गिर्द आग लगा दी। रात को सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज घास और लकड़ियां जमा करती और आग तेज़ करती रही। दिन भर के प्यासे और थके हुए सलीबी टीकरियों पर झुलसने लगे। उनमे से एक दस्ते ने भागने की कोशिश की लेकिन मुसलमानों ने उनमें से किसी एक को भी ज़िन्दा न जाने दिया। दूसरे दिन सलीबी फ़ौज ने हथियार डाल दिए और जरनलों समेत सुल्तान अय्यूबी के क़ैद में आ गयी।

❖

सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज के दूसरे तीन हिस्से मुख़्तलिफ़ जगहों पर इस क़िस्म की जंग लड़ रहे थे कि कभी सलीबियों के पहलू पर हम्ला करते और निकल जाते और कभी उक्ब पर हम्ला करते और इधर उधर हो जाते। एक दो प्यादा दस्ते इस अन्दाज से दुश्मन के सामने रहे कि आगे बढ़ते और पीछे हट आते। इस तरह दुश्मन हतीन के मैदान में आ गया मगर उस वक़्त तक वह और उसके घोड़े प्यास से अध मुए हो चुके थे।

3 जुलाई 1187 ई0 के रोज़ सुल्तान अय्यूबी ने अपने प्लान की उस कड़ी पर कार्रवाई शुरू कर दी जो उसने हतीन के लिए बनाया था। यह भी जुमा का मुबारक दिन था। उसे पहले से जासूसों ने जिन में कुल्सुम और बकर काबिले ज़िक्र हैं यह बता दिया कि सात सलीबी बादशाहों ने इत्तेहाद कर लिया है, लिहाजा सुल्तान अय्यूबी की जंगी ताक़त जो थी सो थी, उसने अपनी चालों, फौज की तक़सीम, छापामारों के इस्तेमाल, देखभाल के इन्तज़ाम और मैदाने जंग में बर्क रफ़्तार नक़ल व हरकत के अन्दाज़ में रद्दो बदल और कारगर तरीके और दाव सोंच लिए थे। दुश्मन को वह बड़ी ख़ूबी से हतीन में ले आया था। इर्द गिर्द की किलाबन्दियों आबादियों पर वह काबिज़ हो चुका था। पानी उसके कब्ज़े में था और अब मौसम का कहर उसके हक़ में था।

दुश्मन जब हतीन में आया तो वह जान न सका कि वह सुल्तान अय्यूबी की निहायत ख़ूबी से तक़सीम और डिप्लाई की हुई फौज के नर्गे में आ गया है। सुल्तान अय्यूबी के छापामारों ने दुश्मन की देखभाल की चौकियों और गश्ती जैशों, आउट पोस्टों और रस्द के लिए क़यामत बपा कर रखी थी। रात को वह दुश्मन को न आराम करने देते थे न जरनलों को सोंचने की मुहलत देते थे।

4 जुलाई 1187ई0 के रोज़ सुल्तान अय्यूबी की फौज के दर्मियानी हिस्से ने आमने सामने हम्ला किया। टीकरियों की वजह से मैदान जंग तंग था। सलीबी इधर उधर से आंगे बढ़ने की कोशिश करते तो मुसलमान का लाइट रेसाला हरकत में आ जाता। तीर अन्दाज़ बुलन्दियों पर थे जहाँ से वह सलीबियों पर तीरों का मेंह बरसा रहे थे। सुल्तान अय्यूबी की कैफ़ियत यह थी कि कभी उपर कभी नीचे आता और उसके सबा रफ़्तार कासिद पैग़ाम ला और ले जा रहे थे। सलीबी नायटों को ज़िरहबकतर जला रही थी। उनके घोड़े प्यासे थे। पानी सामने नज़र आ रहा था जो प्यास को बढ़ा रहा था।

2 सलीबियों ने कुमक मंगवा कर एक जवाबी हम्ला किया जो उनकी आख़िरी उम्मीद थी। जहाँ उन्होंने हम्ला किया वहाँ की कमान तकीउद्दीन के हाथ थी। उसने हम्ला रोकने के लिए अपने दस्तों को नीम दायरे की शकल में कर दिया। दुश्मन सीधा और सरपट आया। तकीउद्दीन ने नीम दायरे के सिरे बन्द कर दिए और सलीबी घेरे में आ गये। मुसलमान सवारों ने उन्हें काट और कुचल डाला।

अब जंग की यह सूरत थी कि सलीबी हतीन के मैदान में दिफ़ाअी जंग लड़ रहे थे। हतीन से दूर उन का अगर कोई दस्ता रह गय था तो उसे मुसलमानों ने वहीं बेकार कर दिया जहाँ वह था। यह पहला और आख़िरी मौक़ा था कि अकरा का पादरी "मुहाफ़िज़े सलीबे आज़म" सलीबुल सलबूत के साथ मैदान जंग में मौजूद था। यानी जिस सलीब पर सलीबियों ने इस्लाम को ख़त्म करने का हलफ़ उठाये थे वह सलीब मैदाने जंग में लायी गयी थी मगर सलीबी बादशाहों ने पीठ दिखानी शुरू कर दी। गाई आफ़ लोज़िनिनान अपने दो साथियों के साथ भाग रहा था उसे मुसलमाम सवारों ने देख लिया और उन्हें ज़िन्दा पकड़ लिया।

अकरा का पादरी मारा गया और सलीब आज़म मुसलमानों के कब्जे मे आ गयी। मशहूर

मोअर्रिख़ों उस सलीब के मुतअल्लिक कुछ नहीं लिखा। उस दौर की तहरीरों से पता चलता है कि बैतुलमुक्द्दस की फतह के बाद सुल्तान अय्यूबी ने सलीब वहाँ के ईसाईयों को एहतराम से लौटा दी थी।

शाम तक जंगे हतीन का फ़ैसला हो चुका था। सलीबियों के जानी नुक़सान का कोई शुमार न था। बाकी फौज ने हथियार डाल दिए थे। सुल्तान अय्यूबी के सामने जो कैदी लाये गये उनमें रिमाण्ड के सिवा बाकी छः इत्तेहादी थे और उनमें कर्क का शहज़ादा अर्नात भी था जिसे अपने हाथों कत्ल करने की कसम सुल्तान अय्यूबी ने खाई थी। मोअर्रिख़ लिखते हैं। और उसका तफ्सीली ज़िक्र काज़ीबहाउद्दीन शद्दाद ने किया है कि सुल्तान अय्यूबी ने सलीबी बादशाह जेफ्रे को शरबत पेश किया। जेफ्रे ने आधा शर्बत पीकर गिलास अर्नात को दे दिया।

अर्नात शरबत पीने लगा तो सुल्तान अय्यूबी ने अपने तर्जुमान से गरज कर कहा-"उसे (अर्नात) को कि उसे मैने नहीं अपने बादशाह ने शरबत दिया है। अरबी मेज़बान सिर्फ उस दुश्मन को शरबत पेश करते हैं जिसकी वह जान बख़्शी कर देते हैं। मैंने अर्नात को शरबत पेश नहीं किया।" बहाउद्दीन शद्दाद लिखता है कि सुल्तान अय्यूबी की आँखों से जैसे शोला निकल रहे थे।

सुल्तान ने मुलाज़िमों से कहा कि उन सबको खाने पर बैठाओ। जब सब खाने वाले ख़ेमे में जाकर खाना खा चुके तो सुल्तान ने फिर जेफ्रे और अर्नात को अपने ख़ेमें में बुलाया। उसने अर्नात से कहा कि तुम हमेशा हमारे रसूल सल्ल0 की तौहीन करते रहे हो। तुम्हारी निजात इसमें है कि इस्लाम कुबूल कर लो। अर्नात ने इन्कार कर दिया। सुल्तान अय्यूबी को यही तवक्को थी। उसने बड़ी तेज़ी से तलवार निकाली और अर्नात का एक बाज़ू जिस्म से अलग कर दिया और चिल्ला कर कहा-"मरदूद! तू ने मेरे रसूल की तौहीन कीहै। अगर यह गालियाँ मुझे देता तो आज तू ज़िन्दा होता।" मोअर्रिख़ लिखते हैं कि सुल्तान अय्यूबी के ख़ेमे मे उसके जो तीन सालार थे। उन्होंने तलवारों से अर्नात को ख़त्म कर दिया। सुल्तान ने नफरत के लहजे में हुक्म दिया-"इस नापाक लाश को बाहर फेंक दो।"

बादशाह जैफ्रे ने अपने इत्तेहादी का यह अन्जाम देखा तोउसके चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं। वह समझ गया कि अब उसकी बारी है। सुल्तान अय्यूबी ने उसे देखा तो आगे बढ़कर उसके कंधे पर हाथ रख दिया और तहम्मुल से कहा-"बादशाह बादशाहों को कत्ल नहीं किया करते लेकिन उसके गुनाह ऐसे थे कि मुझे अपने हाथों कत्ल करने की कसम खानी पड़ी। आप न डरें।"

कैदी बादशाहों को कैदियों के खेमों में भेज दिया गया और सुल्तान अय्यूबी सज्दे में गिर पड़ा।

❖

कर्क के महल मे रात की ख़ामोशी थी। वहाँ अर्नात भी नहीं था और उसके जरनल और दरबारी भी नहीं थे। वहाँ उसके हरम की औरतें थीं, कुल्सुम थी और उनके नौकरानियां थीं

और किले में मुख़्तसर सी फ़ौज थी। वहां अभी अर्नात की मौत की इत्तलाअ नहीं पहुंची थी रात का पहला पहर गुज़र चुका था। उस वक़्त तक कुल्सुम सो जाती थी।

एक औरत दबे पांव कुल्सुम की ख़्वाबगाह में दाखिल हुई। उसके हाथ में ख़ंजर था। वह कुल्सुम के पलंग तक पहुंची। कमरे में कोई रौशनी नहीं थी। औरत ने ख़ंजर वाला हाथ बुलन्द किया और पूरी ताक़त से ख़ंजर का वार किया लेकिन उसे कोई चीख़ सुनाई न दी। ख़ंजर पलंग में उतर गया। उसने बिस्तर पर हाथ फेरा। वहाँ कुल्सुम नहीं थी। औरत यह समझ कर कि कुल्सुम कहीं निकल गयी होगी। पलंग के साथ छुप कर बैठ गयी।

ज़रा सी देर बाद कमरे में दबे पाँव किसी की आहट सुनाई दी जो पलंग तक गयी। औरत ने उठकर उस पर ख़ंजर का वार किया। फ़ौरन बाद उसके अपने पेट मे ख़ंजर उतर गया। फ़िर दोनों तरफ़ से ख़ंजरों के वार हुए, दोनों बाहर को दौड़ीं और बाहर जाकर गिर पड़ी। हरम की दूसरी औरतों ने देखा कि उनमें कुल्सुम नहीं थी। यह दोनों हरम की औरतें थीं जो कुल्सुम को क़त्ल करने के लिए गयी थीं। उसी रोज़ दोनों ने उसके क़त्ल का मंसूबा बनाया था मगर यह ग़लत फ़हमी रही कि क़त्ल करने कौन जाएगी। अंधेरे कमरे में दोनों एक दूसरी को कुल्सुम समझा।

उस वक़्त कुल्सुम महल से ही नहीं कर्क से दूर निकल गयी थी। उसी सेज़ बकर को अपने जासूस साथियों के ज़रिए इत्तलाअ मिली थी कि हतीन में सलीबियों को बहुत बुरी शिकस्त हो रही है। कर्क के जासूस ने ही बकर को मशवरा दिया था कि वह कुल्सुम को लेकर निकल जाए। कुल्सुम के लिए रात किले का दरवाज़ा खुलवाना मुश्किल नहीं था। सब जानते थे कि यह शहज़ादा अर्नात की चहीती है। बकर बिन मोहम्मद सीबल के रूप में उसके साथ और उसे शाही बघी में ले जा रहा था। हरम की कोई औरत कुल्सुम को जाते नहीं देख सकी थी।

शहर से जाकर उन्हें वह दो घोड़े मिल गये जो जासूसों के इन्तज़ाम के तेहत वहाँ इन्तज़ार में खड़े थे। बघी वहीं छोड़ दी गयी। कुल्सुम और बकर घोड़ों पर सवार हुए और ग़ायब हो गये। दूसरे दिन रास्ते में उन्हें अपनी फ़ौज के एक क़ासिद ने बताया कि सलीबियों को शिकस्त हो चुकी है, अर्नात्त मारा जा चुका है और सुल्तान अय्यूबी अभी हतीन और नासिरा के इलाके में है। कुल्सुम सुल्तान के पास जाना चाहती थी।

वह झील गीलीली पहुंच गये। और जब कुल्सुम को सुल्तान अय्यूबी के सामने ले जाया गया तो वह सुल्तान के पाँव पर गिर पड़ी।

"मेरी बेटी!" सुल्तान अय्यूबी ने उसे उठा कर शफ़क़त से गले लगा लिया और कहा—"मेरी इस फ़तह में तुम जैसी न जाने कितनी बेटियों का हाथ है।"

"मैं उसकी लाश देखना चाहती हूँ।" कुल्सुम ने कहा।

"सबकी लाशें दरिया में फेंक दी गयी हैं।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा—"उसे मैंने अपने हाथों सज़ा दी है....तुम्हें कल क़ाहिरा भेजवा दिया जाएगा। मुझे अभी दूर जाना है। जहाँ भी रहो बेटी! मेरे लिए दुआ करती रहना कि मैं आगे ही आगे दूर ही दूर जाता रहूं और जहाँ शाम

को सूरज डूब जाता है वहाँ तक अल्लाह और उसके रसूल का पैग़ाम पहुँचा दूं।"

हतीन की फतह इसलिए बहुत अहम थी कि उससे सुल्तान अय्यूबी ने अरज़े फिलिस्तीन का दरवाज़ा तोड़ लिया था और उसमें दाख़िल हो गया था। इतना वसीअ इलाका लेकर उसके बैतुल मुक़द्दस की फ़तह आसान हो गयी थी। उसने उस इलाके को फौजी मुस्तकर बना लिया और बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ पेशक़दमी की तैय्यारी और अस्लेहा और रस्द का ज़ख़ीरा करने लगा।

फ़सले सलीबी जिसने काटी थी

हतीन में सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने जो फ़तह हासिल की थी वह मामूली नवैइयत की नहीं थी। सात सलीबी हुक्मरान मुत्तहिद होकर सुल्तान अय्यूबी की जंगी ताकत को हमेशा के लिए ख़त्म करने और उसके बाद मदीना मनव्वरा और मक्का मुअज़्ज़मा पर क़ब्ज़ा करने के लिए आये थे लेकिन वह अपनी जंगी कुव्वत का यह हश्र करा बैठे जैसे सेहरा का टीला आंधी से रेत के ज़र्रों की सूरत में सेहरा में बिखर जाता है। चार मशहूर और ताक़तवर हुक्मरान जंगी क़ैदी बने जिनमें योरूशलम (बैतुल मुक़द्दस) का हुक्मरान गाई ऑफ लोज़िनान काबिले ज़िक्र है। सलीबी फ़ौज का मोराल टूट गया और सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज का मोराल बुलन्द हो गया।

जंग ख़त्म हो चुकी थी। छापामारों की जंग जारी थी। वह भागने वाले सलीबी सिपाहियों को पकड़ रहे थे। सलीबियों के हौसले इस हद तक पस्त हो चुके थे कि क़ाज़ी बहाउद्दीन के अल्फ़ाज़ में–''एक शख़्स ने जिसके मुतअल्लिक़ मुझे यक़ीन है कि सच बोलता है, मुझे बताया कि उसने अपनी फ़ौज के सिपाही को देखा जो तीस सलीबी सिपाहियों को ख़ेमे के एक ही रस्सी से बांधे हुए ला रहा था।' ऐ मनाज़िर तो कई एक देखने में आए कि एक–एक मुसलमान सिपाही कई–कई सलीबी सिपाहियों को निहत्था करके हांक कर ला रहे थे। बाज़ यूरोपी मोअर्रिख़ों ने सलीबियों की इस शिकस्त के इसी क़िस्म के कई वाक़िआत लिखे हैं और सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की जंगी अहलियत को ख़िराजे तहसीन पेश किया है।

बहेरा रोम के साहिल पर इस्राईल के शुमाल में अकरा एक मशहूर शहर था जिसे बाज़ा ने अक्का भी लिखा है। उस शहर की शोहरत की वजह यह है कि वहाँ सलीबे आज़म का मुहाफ़िज़ पादरी रहता था। पिछली किस्त में सुनाया जा चुका है कि वह सलीब अकरा के बड़े गिरजे में रखी थी जिसके मुतअल्लिक़ इसाईयों का अक़ीदा था कि हज़रत ईसा को उसी पर मस्लूब किया गया था। उसे सलीबुल सलबूत कहते थे। सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ लड़ने वाले बल्कि दुनियाए अरब पर क़ब्ज़ा करने के लिए लड़ने वाले ईसाई उसी सलीब पर हलफ़ उठाते थे। इसीलिए उन्हें सलीबी कहा गया था। हलफ उठाने वाले हर सलीबी के गले में लकड़ी की छोटी सी सलीब तावीज़ की तरह डाल दी जाती थी। लिहाज़ा जितने सलीबी फ़ौज जंग में गिरते थे इतनी ही सलीबें गिरती थीं। अल्लामा इक़बाल ने इसको फ़सले सलीबी कहा है।

हतीन और उसके गिर्दो नवाह के मील हा मील इलाके में और उससे भी दूर–दूर जहां–जहां जंग लड़ी गयी थी सलीबियों की लाशें बिखरी हुई थीं। मरने वाले तड़प–तड़प

कर मरे थे। मामूली तौर पर जख़्मी होने वाले भी मर गये थे जिसकी वजह जख़्म नहीं प्यास थी। अहनपोश नायटों के लिए ज़िरहबकतर तंदूर बन गयी और उनकी मौत का बाइस बनी थी। ज़ख़्मियों को पानी पिलाने वाला कोई न था, न कोई उनकी मरहम पट्टी करने वाला था। उनमें मुसलमान ज़ख़्मी और शहीद भी थे। उन्हें रात मशालों की रौशनी में उठा लिया गया था।

आज के दौर का मोअर्रिख़ एन्टोनी वलिस्ट उस दौर के मोअर्रिखों के हवाले से लिखता है कि हतीन के मैदाने जंग में लाशो की तादाद तीस हज़ार से उपर थी। लाशें उठाने का कोई इन्तज़ाम न किय गया। उनके जो साथी ज़िन्दा रहे वह जंगी कैदी हो गये या तितर बितर होकर भाग गये थे। एन्टोनी ने लिखा है कि उन लाशों को मुर्दाखोर परिन्दों और दरिन्दो ने खाया। मुर्दार खोर इतने नहीं जितनी लाशे थीं। बहुत सी लाशें चन्द दिनों मे हड्डियों के सालिम ढांचों में बदल गयीं। बुलन्दी से देखने वालों को हदे निगाह तक ज़मीन हड्डियों की वजह से सफेद नज़र आती थी। उन हड्डियों में हज़ारों छोटी–छोटी सलीबें बिखरी हुई थीं जैसे पके हुए फ़सल से फल गिर कर खुश्क हो गया हो।

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने यह फसल काट डाली थी। उसे उस इलाके को लाशों से साफ़ करने की ज़रूरत नहीं थी क्योंकि उसे वहाँ रूकना नहीं था। उसकी मंज़िल बैतुल मुक़द्दस थी लेकिन वह बातें अकरा की कर रहा था। अकरा के मुतअल्लिक हम बता चुके हैं कि सलीबुल सलबूत की बदौलत उसे वही मुक़ाम हासिल हो गया था जो हमारे लिए मक्का मोअज़्ज़मा का है। तमाम सलीबी हुक्मरान अकरा जाकर सलीब के मुहाफ़िज़े आज़म से दुआ लेते और सलीब आज़म को चूम कर मैदाने जंग में जाते थे, लेकिन अब यह सलीब सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़ेमे में बाहर पड़ी थी। उसका मुहाफिज़ पादरी मारा जा चुका था। यह भी एक वजह थी कि सलीबी दिल छोड़ बैठे थे।

❖

"हमें अब सीधा अकरा पर यलग़ार करनी है।" सुल्तान अय्यूबी ने अपने सालारों और नायब सालारों से कहा–"अल्लाह का शुक्र अदा करता हूँ कि मुझे पूरा महफूजा इस्तमाल करने की ज़रूरत नहीं पड़ी।" उसने सब पर निगाहें दौड़ायीं और मुस्कुरा कर कहा–"यह न समझो कि मुझे आपकी और आपकी दस्तों की थकन का एहसास नहीं। उसका अज्र तुम्हें अल्लाह देगा। तुम्हारा हज मस्जिदे अक़्सा में होगा। अगर हम यहाँ आराम करने बैठ गये तो सलीबी कहीं जमा होकर ताजा दम हो जाएंगे। मैं उन्हें जख़्म चाटने की भी मुहलत नहीं देना चाहता।"

सालार क़दरे हैरान हुए। उन्हें तवक्को थी कि सुल्तान अय्यूबी बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ पेशक़दमी का हुक्म देगा मगर उसने अकरा पर हम्ले का इरादा ज़ाहिर किया। उसके पीछे सलीबुल सलबूत रखी थी। उसने सलीब को देखा और कुछ देर देखता रहा। हाज़िरीन पर ख़ामोशी तारी रही। उसने अचानक तेज़ी से सालारों की तरफ़ घूम कर कहा–"मेरे रफ़ीको! यह दो अक़ीदों की जंग है। यह हक़ और बातिल का तसादुम है। इस सलीब पर हमारा लगा

ख़ून देखो। यह ख़ून हज़रत ईसा का नहीं। यह ख़ून उस पादरी का नहीं जिसे ईसाई दुनिया इस सलीब का मुहाफ़िज़ मानती थी और यह ख़ून उन राहिबों का भी नहीं जिन्होंने यह इतनी बड़ी सलीब मैदाने जंग में उठा रखी थी। वह सब अल्लाह के सिपाहियों के हाथों मारे गये हैं लेकिन यह ख़ून उनमें से किसी का भी नहीं। यह बातिल का ख़ून है, यह बेबुनियाद अक़ीदे का और इन्सानो के बनाए हुए नज़रिए का ख़ून है।"

सुल्तान अय्यूबी की आवाज़ में जज़्बात का जोश पैदा हो गया। उसने कहा–"मैं हर जंगी मुहिम जुमा के रोज़ शुरू करता हूँ। पेशक़दमी जुमा के रोज़ करता हूँ। जुमा मुबारक दिन है। मैं हर मुहिम की इब्तेदा जुमा के ख़ुत्बे के वक़्त किया करता हूँ क्योंकि यह वक़्त क़ुबूलियत का होता है और जब तुम दुश्मन से लड़ रहे ह ' हो, तुम पर तीरो का मेंह बरस रहा होता है, दुश्मन की मिन्जनिकें तुम पर आग और पत्थर बरसा रही होंती हैं उस वक़्त कौम के हर फ़र्द के हाथ अल्लाह के हुज़ूर तुम्हारी सलामती और फ़तह के लिए उठे हुए होते हैं। तुमने देखा नहीं कि मैंने कूच जुमा के रोज़ किया था और इस जंग की इब्तेदा भी जुमा के रोज़ की थी? और तुम फ़ातेह हो। तुम्हें अल्लाह की ख़ुश्नुदी हासिल है। यह हमारे अज़ीम अक़ीदे और नज़रिए की फतह है। यह चाँद सितारे और चूबी सलीब का मार्का था जो चांद सितारे ने जीत लिया......मैं तुम से यह बातें क्यों कह रहा हूँ? इसलिए कि तुममें से किसी के दिल में अपने अक़ीदे के मुतअल्लिक़ कुछ शक हो तो वह रफ़ा हो जाए और तुम अल्लाह की रस्सी को और ज़्यादा मज़बूती से पकड़ लो.....

"तुम शायद हैरान हो रहे हो कि मैंने अकरा पर हम्ले का फ़ैसला क्यों किया है। जज़्बाती अल्फ़ाज़ से उसकी वजह यह है कि सलीबियों ने एक बार मदीना मनव्वरा और मक्का मोअज़्ज़मा की तरफ पेशक़दमी की थी। शहज़ादा अर्नात मक्का से सिर्फ़ दो कोस दूर रह गया था। मैंने अर्नात से मक्का मोअज़्ज़मा को बुरी नज़र से देखने का इन्तक़ाम ले लिया। अब मुझे सलीबियों के हुक्मरानों और नायटों से इन्तक़ाम लेना है। अकरा उनका मक्का है। मैं उसे तहेतेग़ करूंगा। मस्जिदे अक़्सा की जो बेहुर्मती हो रही है मैं उसका इन्तक़ाम लूंगा..... और जंगी लिहाज से बैतुल मुक़द्दस से पहले अकरा पर क़ब्ज़ा करना इसलिए ज़रूरी है कि उससे सलीबियों के हौसले पस्त हो जाएंगे।"

सुल्तान अय्यूबी ने बहुत बड़ा नक्शा जो उसने अपने हाथ से बना रखा था, खोल कर सबके आगे फैलाया और हतीन पर उंगली रखकर कहा–"तुम इस वक़्त यहाँ हो।" वह अपनी उंगली इस तरह अकरा तक तेज़ी से ले गया जैसे उसने कुछ काटने के लिए ख़ंजर की नोक चलाई हो। कहने लगा–"मैं सलीबियों की हुकमरानी को दो हिस्सों में काट कर उन हिस्सों के दर्मियान आ जाऊंगा। अकरा पर क़ब्ज़ा करके मैं टाइर, बैरूत, हिफा, अस्क़लान और छोटे बड़े तमाम साहिली शहरों और क़स्बों को तबाह व बर्बाद करूंगा। किसी भी सलीबी को ख़्वाह वह फ़ौजी है या ग़ैर फ़ौजी उन इलाकों में नहीं रहने दूंगा। साहिली इलाकों पर क़ब्ज़ा इसलिए भी ज़रूरी है कि यूरोप की कुछ और बादशाहियां अपने सलीबी भाईयों की मदद के लिए अपनी फ़ौजें, माल व दौलत और जंगी असलेहा भेजेंगी। साहिल तुम्हारा होगा तो दुश्मन

का कोई बहरी जहाज़ साहिल के करीब नहीं आ सकेगा। यहाँ से हम बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ पेशक़दमी करेंगे। हमें जंग जारी रखनी चाहिए।"

अगर आप फ़िलिस्तीन (मौजूद इस्राईल) और लेबनान का नक़्शा देखें तो आपको झील गीलीली के किनारे पर हतीन और उसके बिलमुक़ाबिल समुन्दर के किनारे अकरा नज़र आएंगे। जुनूब में योरूशलम (बैतुल मुक़द्दस) है। हतीन से अकरा पच्चीस मील और हतीन से बैतुल मुक़द्दस सत्तर मील है। आज के लेबनान और फ़िलिस्तीन पर सलीबी काबिज़ थे। मोअर्रिख़ लिखते हैं कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ने प्लान बनाया था कि हतीन से अकरा तक इस तरह पेशक़दमी करेगा कि रासते में आने वाले इलाकों पर क़ब्ज़ा करता जाऐगा और वहाँ के सिर्फ़ मुसलमान बाशिन्दों को वहाँ रहने देगा और सलीबियों को वहाँ से निकाल देगा। जंगी उलूम के माहिरीन ने उसे निहायत उमदा प्लान कहा है। सुल्तान अय्यूबी ने यह प्लान सलीबियों की जंगी कुव्वत को दो हिस्सों में काटने के लिए ही बनाया था। उसकी फ़ौज सलीबियों से बरतर और नक़ल व हरकत की रफतार बहुत तेज़ थी।

❖

"अकरा का दिफ़ाअ बहुत मज़बूत है।" सुल्तान अय्यूबी ने अपने सालारों से कहा—"हमारे जासूस ने बताया है कि वहाँ जवान और तनूमन्द मुसमान बाशिन्दे क़ैद में पड़े हैं। औरतें और बच्चे भी क़ैद में हैं। वहाँ के ईसाई शहरी शहर के दिफ़ाअ में जान की बाज़ी लगाकर लड़ेंगे। चूंकि मुसलमान क़ैद में हैं इसलिए वह अन्दर से हमारी कोई मदद नहीं कर सकेंगे। मैं लम्बा मुहासिरा नहीं करना चाहता। तुम्हारी यलग़ार तूफ़ानी होनी चाहिए। अकरा तक हमारी पेशक़दमी की हिफ़ाज़त छापामार करेंगे। पेशक़दी फ़ैल कर होगी। रास्ते में कोई बस्ती आबाद न रहे मगर सिपाही माले ग़नीमत के लिए रूके नहीं। उस काम के लिए अलग जैश मुक़र्रर कर दिए गये हैं।"

अकरा में मुसलमानों की हालत यह थी कि कोई बूढ़ा या आपाहिज मुसलमान आज़ाद होगा। बाक़ी सब दहशतज़दगी की ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। बहाउद्दीन शद्दाद ने उन मुसलमानों की तदाद जो क़ैद में थे चार हज़ार से ज़ायद लिखी है। शद्दाद के अलावा उस दौर के दो वक़ाअ निगारों ने पांच और छः हज़ार के दर्मियान लिखी है। दूसरे लफ़्ज़ो में यह कह लें कि अकरा मुसलमानों के लिए क़ैदखाना था। किसी मुसलमान की बहू बेटी की इज़्ज़त महफ़ू नहीं थी। सलीबियों का मक़सद यह था कि मुसलमान चलती फ़िरती लाशें बनके रह जाएं और उनके बच्चों में मज़हब और क़ौमियत का एहसास ही पैदा न हो। वहाँ की मस्जिदें वीरान हो गयी थीं।

4 जूलाई 1187 ई० के बाद वहाँ के मुसलमानों पर सलीबियों ने ज़ुल्म व तशद्दुद का इज़ाफ़ा कर दिया। घरों में जो मुसलमान थे, उन्हें भी हांक कर खुले क़ैदखाने में ले गये। यह एक तरह का बेगार कैम्प था। वहाँ मुसलमानों से मवेशियों की तरह काम लिया जाता था। 5 जूलाई 1187 ई० के बाद उन्हें काम के लिए बाहर न निकाला गया और उन पर पहरा और सख़्त कर दिया गया। उससे उन बदनसीबों ने अन्दाज़ा लगा लिया कि सलीबयों को कहीं

शिकस्त हुई है या इस्लामी फौज ने शहर का मुहासिरा कर लिया है। औरतें ख़ुदा की हुज़ूर गिड़गिड़ाने लगीं। सज्दों पर सज्दे करने लगीं। कैदखाने में सिस्कियां सुनाई देने लगीं। माँओं ने नन्हें नन्हें बच्चों के हाथ पकड़े दुआ के लिए उठाए और कहा—"बेटा! कहो अल्लाह इस्लाम को फतह दे। कहो, मेरे अल्लाह, बाहर के मुसलमान को हिम्मत दे कि हमें ज़ालिमों की बस्ती से निका ले जाएं।"

सैंकड़ों बच्चे और सैकड़ों औरतें अल्लाह के हुज़ूर दस्त बदुआ थीं। बच्चे अपनी माँओं की सिस्कियां देखकर रोने लगे थे। उन्हें आह व बका सुनाई दी और उसके साथ कोड़ों के ज़न्नाटें सुनाई देने लगे। सब सिहम गये। उन्होंने देखा कि बहुत से कैदी लाये जा रहे थे। यह शहर के वह बाशिन्दे थे जो घरों मे थे। उनकी औरतों और बच्चों को भी साथ ले आए थे। उन पर कोड़े बरसाये जा रहे थे।

6/7 जूलाई की दर्मियानी रात आधी गुज़र गयी थी जब शहर में हुड़दंग बपा हो गयी और आग के शोले कहीं–कहीं से बुलन्द होने लगे। तीर उस खुले कैदखानों में भी गिरने लगे। उन कैदियों के इर्द गिर्द ख़ुश्क ख़ारदार झाड़ियों की घनी बाड़ बिछी हुई थी और रस्सों के जाल भी तने हुए थे। रात को कैदखाने के इर्द गिर्द जगह–जगह मशालें जला कर रर दी गयीं ताकि कैदियों पर नज़र रखी जा सके। किसी कैदी ने बाहर से आया हुआ एक तीर उठा कर मशाल की रौशनी में देखा तोउसने चिल्ला कर कहा—" मैं इस तीर को पहचानता हूँ। यह इस्लामी फौज की तीर है।"

रस्सों के जाल में से एक तीर सनसनाता हुआ आया जो उस कैदी के सीने मे उतर गया। यह किसी सलीबी संतरी ने उस मुसलमान को ख़ामोश करने के लिए चलाया था। शहर जाग उठा। शहर और किले की दिवारों पर भागदौड़ और शोर में इज़ाफ़ा होता जा रहा था और कमानों से तीर निकलने की आवाज़ें बढ़ती जा रही थीं। बाहर "अल्लाहु अकबर" के नारे गरजने लगे थे। धमक–धमक की आवाज़ें भी सुनाई देने लगीं। यह बड़े–बड़े पत्थर थे जो मुसलमानों की फौज की मिन्जनिकें दिवार के किसी एक मकाम पर फेंक रही थीं।

❖

यह सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का मुहासिरा था जो मुहासिरा कम और यल्ग़ार ज़्यादा थी। शहर में आग फेंकने वाली मिन्जनिकों के अलावा दरवाज़ों और दिवारों पर वज़नी पत्थर फेंकने वाली बड़ी मिन्जनिकें भी इस्तेमाल की जा रही थीं। बुलन्द मचाने साथ लाई गयी थीं। हर एक मचान पर दस और बीस सिपाही खड़े हो सकते थे। उनके नीचे पहिए थे। उन्हें घोड़े या ऊंट खींचते थे। यह मुतहर्रिक मचाने दिवार तक ले जाई जाती थीं मगर सलीबी शहर के दिफ़ाअ में बेजिगरी से लड़ रहे थे। शहरी भी अपनी फौज के दोश बदोश लड़ रहे थे। वह सुल्तान अय्यूबी की मुतहर्रिक मचानों पर तीरों की बौछारें मार कर मुसलमान सिपाहियों को ख़त्म कर देते थे। बाज़ मचानों को जो दिवार के करीब चली गयी थीं, उन पर सलीबियों ने जलती हुई मशालें फेंकी और आतिशगीर सयाल की हाडियाँ फेंक कर उन्हें जला डाला।

अन्दर कैदी कैम्प मे अब यह कैफ़ियत थी कि हज़ारहा कैदी एक ही अवाज़ में लाइलाह

इल्लल्लाह का बुलन्द विर्द कर रहे थे। औरतों ने झोलियाँ फैला रखी थीं और बहते आँसूओं से मर्दों के साथ आवाज़ मिला कर कलमा शरीफ़ का विर्द कर रही थीं। फ़िर किसी ने बुलन्द अवाज़ से कहा– "नस्रूम मेनल्लाहे व फ़तहु क़रीब" फ़ौरन ही तमाम मर्दों, औरतों और बच्चों की एक आवाज़ बन गयी जो जंग के शोर गुल से ज़्यादा बुलन्द थीं और सारे शहर में सुनाई दे रही थी।

दो तीन संतरी अन्दर आ गये। वह कैदियों को ख़ामोश कराने की कोशिश करने लगे। तीन चार जोशिले जवान उठे और संतरियों पर टूट पड़े। फाटक खुला था। बाक़ी कैदी बाहर को दौड़े मगर तीरों की बौछार ने आगे वालों को गिरा दिया, फिर घोड़े सरपट दौडते हुए आए। सवारों के हाथों में बरछियां थीं। कैदी अन्दर को भागे और जो पीछे रह गये थे वह सवारों की बरछियों से शहीद हो गये। फ़रार कामयाब न हो सका। औरतें और बच्चें अल्लाह के हुज़ूर सज्दे करने लगे और फ़िर सब एक ही आवाज मे कलाम पाक का विर्द करने लगे।

रात भर सुल्तान अय्यूबी के जाँबाज़ जैश दिवार तक पहुंचने और शगाफ़ डालने या सुरंग खोदने के लिए आगे बढ़ते रहे और उपर से सलीबी उन पर तीर, पत्थर और आग फैंकते रहे। सुल्तान अय्यूबी बे दरीग़ क़ुर्बानी दे रहा था। शहर की दिवार के एक मुकाम पर बड़ी मिन्जनिकों से वज़नी पत्थर मारे ज़ा रहे थे। सुबह तुलूअ हुई तो दिवार पर हर तरफ़ अकरा के शहरी और फ़ौजी मख्यिों की तरह नज़र आ रहे थे। वह तीर बरसा रहे थें। यह भी नज़र आया कि दिवार एक जगह फट रही थी। सुल्तान अय्यूबी घोड़े पर सवार ज़रा पीछे खड़ा देख रहा था। उसने हुक्म दिया कि जहाँ से दिवार फ़ट रही है, उसके उपर और दायें बायें से दुश्मन पर तीरों का मेंह बरसा दो। उसने दूसरी तरफ़ से भी तीर अन्दाज बुलाकर उसी मुक़ाम पर मरकूज़ कर दिए। उसने सुरंगे खोदने वाले जैश से कहा कि दौड़ कर दिवार तक पहुंचे।

जांबाज़ों का जैश पहुंच गया। दिवार के उपर इतने ज़्यादा और इतने तीर बरसाये जा रहे थे कि उपर वालों के लिए सर उठाना मुहाल हो गया। जांबाज़ों ने दिवार में इतना शगाफ़ डाल लिया। जिसमें से दो आदमी बएक वक़्त गुज़र सकते थे। सिपाहियों में इस क़दर जोश व ख़रोश था कि वह हुक्म के बेग़ैर शगाफ़ के तरफ़ उठ दौड़े और एक दूसरे के पीछे अन्दर चले गये। सलीबियों ने बेजिगरी से मुकाबिला किया मगर उन मुसलमान औरतों और मासूम बच्चों की दुआएं जो अन्दर कैद में पड़े कुफ़्फ़ार का ज़ुल्म व सितम सह रहे थे, अर्श तक पहुंच चुकी थीं। सुल्तान अय्यूबी की दरअसल क़ुव्वत तो यह थी।

❖

शहर के अन्दर भगदड़ मच गयी। वहाँ यह ख़बर पहले पहुँच चुकी थी कि सलीबुल सलबूत मुसलमानों के कब्जे मे चली गयी है और उसका मुहाफ़िज़े आज़ाम मारा गया है। हतीन की जंग से भागे हुए सलीबी सिपाही भी उस शहर में आये थे। कुछ जख़्मी भी पहुंच गये थे। उन्होंने अपनी शिकस्त और पस्पाई को बरहक साबित करने के लिए बड़ी दहशत नाक अफ़वाहें फैलाई थीं। उनके असरात उस वक़्त सामने आये जब सुल्तान अय्यूबी के जांबाज़ों ने दिवारों को तोड़ डाली और रूके हुए सैलाब की तरह अन्दर जाने लगे। सलीबियों ने

मुकाबल किया लेकिन शहरियों में भगदड़ बपा हो गयी। वह शहर से भागने के लिए दरवाज़ों पर टूट पड़े और सिपाहियों के रोकने के बावजूद दो तीन दरवाज़े खोल दिए।

शहरियों का हुजूम दरवाज़ों मे फंस गया। मुसलमान सवारों ने अपने कमानदारों के हुक्म से घोड़ों को ऐड़ लगा दी। घोड़े शहरियों को कुचलते हुए अन्दर चले गये। फिर मुजाहिदीन के सैलाब को कोई न रोक सका। तमाम दरवाज़े खुल गये और सलीबी हथियार डालने लगे। सूरज गुरूब होने से पहले अकरा का हुक्मरान सुल्तान अय्यूबी के सामने खड़ा था। सुल्तान अय्यूबी ने सलीबी फ़ौज के जरनलों और दिगर कमानदारों को अलग कर दिया और उस जगह चला गया जहाँ मुसलमानों के पूरे--पूरे कुम्बे कैद में पड़े थे। उनके संतरी भाग गये थे और कैदी फाटक और रस्सों का जाल तोड़ने की कोशिश कर रहे थे।

सुल्तान अय्यूबी उनसे दूर ही रुक गया। यह तो इन्सानी लाशें थीं। उसने औरतों और बच्चों को देखा तो उसकी आँखों में आँसू आ गये।

"जाओ रस्से काट दो। उन्हें आज़ाद कर दो।" सुल्तान अय्यूबी ने भर्राई हुई आवाज़ में कहा--"और उन्हें यह न बताना कि मैं यहाँ शहर में मौजूद हूँ। मैं उनका सामना नहीं कर सकता।"

सुल्तान अय्यूबी के हुक्म पर चन्द एक सवार सरपट घोड़े दौड़ा कर पहुँचे। उन्होंनें लकड़ी का फाटक तोड़ दिया। कई जगहों से रस्सों का जाल काट कर झाड़ियां हटा दीं। कैदियों का हुजूम भगदड़ के अन्दाज़ से निकल रहा था। सवारों ने उन पर काबू पाने के लिए चिल्लाकर कहा--" आराम से निकलो। अब तुम्हें पकड़ने कोई नहीं आयेगा। वह देखो। किले पर तुम्हारा झंडा लहरा रहा है।"

"उन्होंने हमारे गुनाहों की सज़ा भुगती है।" सुल्तान अय्यूबी ने अपने पास खड़े एक सालार से कहा--"यह गद्दारों के गुनाह थे जिनकी सज़ा मासूमों को मिली। अपने दीन के दुश्मनों को दोस्त समझने वालों ने यह कभी नहीं सोचा कि कौम का क्या हश्र होगा। मेरा रास्ता तख़्त व ताज के शैदाई और ग़द्दार न रोक लेते तो हमारे इन हज़ारों बच्चों और बेटियों की यह हालत न होती......हज़रत ईसा ने मोहब्बत और अमन का सबक दिया था लेकिन सलीब के पुजारियों में मुसलमानों के खिलाफ़ इतनी नफ़रत भरी हुई है कि वह अपने पैग़म्बर के फरमान की भी परवाह नहीं करते। दुनिया में सिर्फ़ दो मज़हब बाकी रहेंगे। इस्लाम और ईसाइयत। अगर हम ने दिल से दुनिया की झुठी लज़्ज़तों को न निकाला तो ईसाईयत हमारी कमज़ोरी से इस्लाम का ख़ातमा कर देगी।"

सुल्तान अय्यूबी उस जगह गया जहाँ सलीबी जरनल और दिगर कमाण्डर अलग खड़े थे। उसने कहा --"इन सबको साहिल पर ले जाओ और सबको कत्ल करके समन्दर में फेंक दो। दूसरे जंगी कैदियों में से छटनी कर लो। जिन्हें ज़िन्दा रखना चाहते हो उन्हें दमिश्क भेज दो और बाकी सबको ख़त्म कर दो। किसी निहत्थे शहरी पर हाथ न उठाना। उनमें से जो शहर से जाना चाहते हैं उन्हे मत रोको, जो यहाँ रहना चाहते हैं उन्हें इज़्ज़त से रहने दो।"

8 जूलाई 1187 ई0 अकरा पर कब्ज़ा मुकम्मल हो चुका था।

रात जब सुल्तान अय्यूबी खाने से फ़ारिग हुआ तो उसे इत्तलाअ दी गयी कि एक निहायत अहम क़ैदी उसके सामने लाया जा रहा है।

"कौन है वह?"

"हरमन।" सुल्तान को बताया गया।" सलीबियों का अली बिन सुफ़ियान।"

कार्ईन ने इस सिलसिले की पिछली कहानियों में हरमन का नाम कई बार पढ़ा होगा। यह अली बिन सुफ़ियान की तरह सलीबियों की इन्टेलीजेंस का सरबराह था और किरदार कुशी का माहिर था। वह अपनी बहुत सी लड़कियों के साथ अकरा में था और पकड़ा गया। वह शहर से निकल रहा था लेकिन अय्यूबी का एक जासूस उसके तआक्कुब में था। उसने हरमन को उसके बहरूप में भी पहचान लिया। वह लड़कियों को किसान औरतों जैसा लिबास पहना कर साथ ले जा रहा था। जासूस ने एक कमानदार को बताया।

कमानदार ने दो तीन सिपाहियों के साथ हरमन और उसके ज़नाना क़ाफ़ले को घेर लिया। हरमन लड़कियों के अलावा अपने साथ सोना भी ले जा रहा था। उसने लड़कियां कमानदार और उसके सिपाहियों के सामने खड़ी कर दीं और सोना उनके आगे रख दिया। बोला—"जिसे जो लड़की पसन्द है लेले और यह सोना भी आपस में बांट लो।"

"मुझे तमाम लड़कियाँ पसन्द हैं।" कमानदार ने कहा—"और मैं सारा सोना ले लूंगा। तुम भी मेरे साथ चलोगे।"

वह उन सबको साथ ले आया और सबको सोने समेत सुल्तान अय्यूबी के ज़ाती अमले के हवाले कर दिया। हरमन सुल्तान अय्यूबी के लिए अहम और क़ीमती क़ैदी था। उसे सुल्तान अय्यूबी के कमरे में दाख़िल कर दिया गया।

"तुम मेरी ज़ुबान जानते हो हरमन!" सुल्तान अय्यूबी ने कहा—"इसलिए मेरी ज़ुबान में बात करो। मैं तुम्हारे फ़न और तुम्हारी दानिशमंदी का एतराफ़ करता हूँ। तुम्हारी क़दर जितनी मैं कर सकता हूँ इतनी तुम्हारे हुक्मरान नहीं कर सके। मैं तुम्हारे साथ कुछ बातें करना चाहता हूँ।"

"अगर आप मुझ से बाते किए बग़ैर मेरे क़त्ल का हुक्म दे दें तो ज़्यादा अच्छा होगा।" हरमन ने कहा—"अगर मुझे अकरा की फ़ौज के जरनलों और कमाण्डरों की तरह क़त्ल होना और मेरी लाश मछलियों की ख़ुराक बनना है तो बातें करने से क्या हासिल?"

"तुम क़त्ल नहीं होगे हरमन!" सुल्तान अय्यूबी ने कहा—"मैं जिसे क़त्ल कराया करता हूँ उसकी सिर्फ़ सूरत देखा करता हूँ उससे कभी बात नहीं की।"

सुल्तान ने दरबान को बुलाया और उसे कहा कि हरमन को शरबत पेश करे। हरमन के चेहरे पर रौनक आ गयी। वह अरब के उस रिवाज से वाक़िफ़ था कि अरबी मेज़बान दुश्मन को पानी या शरबत या पानी पेश करे तो उसका मतलब यह होता है कि उसने दिल से दुश्मनी निकाल दी है और उसने जान बख़्शी कर दी है। दरबान ने शरबत पेश किया जो हरमन ने पी लिया।

"आप मुझ से यह पूछना चाहेंगे कि कौन—कौन से इलाक़े में हमारी कितनी—कितनी

फ़ौज है।" हरमन ने कहा—"और आप यह जानना चाहेंगे कि उनकी लड़ने की अहलियत कैसी है।"

"नहीं।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा—"यह तुम मुझसे पूछो कि तुम्हारे किस इलाके में कितनी फ़ौज है। मेरे जासूस तुम्हारे सीने के अन्दर बैठे रहे हैं....और अब मुझे इसकी परवाह नहीं कि कहाँ कितनी फ़ौज है। हतीन में तुम्हारी फ़ौज थोड़ी नहीं थी। थोड़ी फ़ौज मेरी थी। अब और थोड़ी रह गयी है। अरज़े मुक़द्दस से अब मुझे कोई फ़ौज नहीं निकाल सकती। तुम यह ख़बर सुनोगे कि सलाहुद्दीन अय्यूबी मर गया है, पस्पा नहीं हुआ।"

"अगर आप के तमाम कमानदार उस कमानदार के किरदार के हैं जो मुझे पकड़ लाया है तो मैं आपको यक़ीन के साथ कहता हूँ कि आप को बड़ी से बड़ी फ़ौज भी यहाँ से नहीं निकाल सकती।" हरमन ने कहा—"मैंने उसे जो लड़कियाँ पेश की थीं उन्होंने आपके पत्थरों जैसे सालारों और क़िलादारों को मोम कर लिया और सलीब के सांचे में ढाला है और सोना ऐसी चीज़ है जिसकी चमक आँखों को नहीं अक़्ल को अंधा कर देती है। मैं सोने को शैतान की पैदवार कहा करता हूँ। आपके कमानदार ने सोने की तरफ़ देखा तक नहीं। मेरी नज़र इन्सानी फ़ितरत की कमज़ोरियों पर रहती है। लज़्ज़त और ज़ेहनी अय्याशी ईमान को खा जाती है। मैंने आपके ख़िलाफ़ यह हथियार इस्तेमाल किया है। जब यह कमज़ोरियां किसी जरनल में पैदा हो जाती हैं, या पैदा कर दी जाती हैं तो शिकस्त उसके माथे पर लिख दी जाती है। मैंने अपकी हाँ जितने भी ग़द्दार पैदा किये हैं उनमें पहले यही कमज़ोरियां पैदा की थीं। हुकूमत करने का नशा इन्सानों को ले डूबता है।"

"मेरी फ़ौज के किरदार के मुतअल्लिक़ तुम्हारी क्या राय है?" सुल्तान अय्यूबी ने पूछा।

"अगर आपकी फ़ौज का किरदार वैसा ही होता। जैसा मैं बनाने की कोशिश कर रहाथा तो आज आप की फ़ौज यहां न होती।" हरमन ने कहा—"अगर आप बद किरदार हुक्मरानो, अमीरों वज़ीरों और सालारों को ख़त्म न कर चुके होते तो वह आप को कभी के हमारी कैद मे में डाल चुके होते। मैं आपकी तारीफ़ करूंगा कि आप ने दिल में हुकूमत की ख़्वाहिश नहीं रखी।"

"हरमन!" सुल्तान अय्यूबी ने कहा—"मैंने तुम्हारी जान बख़्शी की है। तुम्हें अपना दोस्त कहा है। मुझे यह बताओ कि मैं अपनी फ़ौज के किरदार को किस तरह मज़बूत और बुलन्द रख सकता हूँ और मेरे मरने के बाद यह किरदार किस तरह मज़बूत रह सकता है।"

"मोहतरम सुल्तान!" हरमन ने कहा—"मैं आप को जासूसी और सुराग़रसानी का उस्ताद समझता हूँ। आप सही मुक़ाम पर ज़रब लगाते हैं। आपका जासूसी का निज़ाम निहायत कारगर है। अली बिन सुफ़ियान, हसन बिन अब्दुल्लाह और बलबीस जैसे जासूसी के माहिरीन की मौजूदगी में आप नाकाम नहीं हो सकते, मगर मैं आपको यह बता दूं कि यह सिर्फ़ आपकी ज़िन्दगी तक है। हमने आपके हाँ जो बीज बो दिया है वह ज़ाया नहीं होगा। आप चूंकि ईमान वाले हैं इसलिए आप ने बेदीन अनासिर को दबा लिया है। ख़ानाजंगी किस ने कराई थी?... ...हमने। हमने आपके उमरा के दिलों में हुकूमत, दौलत, लज़्ज़त और औरत का नशा भर

दिया है। आप के जानशीन उस नशे को उतार नहीं सकेंगे। मेरे जानशीन उस नशे को तेज़ करते रहेंगे.....

"मोहतरम सुल्तान! यह जंग जो हम लड़ रहे हैं यह मेरी और आपकी, या हमारे बादशाहों की और आपकी जंग नहीं। यह कलीसा और काबा की जंग है जो हमारे मरने के बाद भी जारी रहेगी। हम मैदाने जंग में नहीं लड़ेंगे। हम कोई मुल्क फ़तह नहीं करेंगे। हम मुसलमानों के दिल व दिमाग को फ़तह करेंगे। हम मुसलमानों के मज़हबी अक़ायद का मुहासिरा करेंगे। हमारी यह लड़कियाँ, हमारी दौलत और हमारी तहज़ीब की कशिश जिसे आप बेहयाई कहते हैं, इस्लाम की दिवारों में शगाफ डालेंगी। फिर मुसलमान अपनी तहज़ीब से नफरत और यूरोप के तौर तरीकों से मोहब्बत करेंगे। वह वक़्त आप नहीं देखेंगे, मैं नहीं देखूंगा। हमारी रूहें देखेंगी।"

सुल्तान अय्यूबी जर्मन निज़ाद हरमन की बातें बड़ी ग़ौर से सुन रहा था। हरमन कह रहा था—"हमने फ़ारस, अफ़ग़ानिस्तान या हिन्दुस्तान पर जा कब्ज़ा क्यों नहीं जमाया? हमने अरब को क्यों मैदाने जंग बनाया?....सिर्फ़ इसलिए कि सारी दुनिया के मुसलमान इसी ख़ित्ते की तरफ़ मुँह करके इबादत करते हैं और यहाँ मुसलमानों का काबा है। हम मुसलमानों के इस मरकज़ को ख़त्म कर रहे हैं। आपका अकीदा है कि आप के रसूल मस्जिदे अक़्सा से आसमानों पर गये थे। हमने उसकी मुंडेर पर सलीब रख दी है और वहाँ के मुसलमानों को यह बता रहे हैं कि उनका अकीदा ग़लत है कि उनके रसूल कभी यहां आये और यहाँ से मेराज को गये थे।"

"हरमन!" सुल्तान अय्यूबी ने कहा—"मैं तुम्हारे नज़रिए और अज़ाइम की तारीफ़ करता हूँ। अपने मज़हब के साथ हर किसी को इसी तरह वफ़ादार रहना चाहिए जैसे तुम हो। ज़िन्दा वही कौम रहती है जो अपने मज़हब और अपनी मआशरिती इक़दार की पासबानी करके और उनके गिर्द ऐसा हिसार खींचे कि कोई बातिल नज़रिया उन्हें नुक़सान न पहुंचा सके। मैं जानता हूँ कि यहूदी हमारे यहाँ नज़रयाती तख़रीबकारी कर रहे हैं और वह तुम्हारा साथ दे रहे हैं। मैं बैतुल मुक़द्दस जा रहा हूँ और इसी ग़र्ज़ से जा रहा हूँ जिस ग़र्ज से तुम यहाँ आये हो। यह हमारे अकीदों का मरकज़ है। मेरे रसूल को अल्लाह तआला ने यहीं से मेराज की सआदत बख़्शी थी। मैं उसे सलीब के क़ब्ज़े से छुड़ाउंगा।"

"फ़िर क्या होगा?" हरमन ने कहा—"फ़िर आप इस दुनिया से उठ जाएंगे। मस्जिदे अक़्सा फ़िर हमारी इबादतगाह बन जाएगी। मैं जो पेशिनगोई कर रहा हूँ यह अपनी और आपकी कौम की फ़ितरत को बड़ी गौर से देख कर रहा हूँ। हम आपकी कौम को रियासतों या मुल्कों में तक़सीम करके उन्हें एक दूसरे का दुश्मन बना देंगे और फ़िलिस्तीन का नाम व निशान नहीं रहेगा। यहूदियों ने आपकी कौम के लड़कों और लड़कियों में लज़्ज़त परस्ती का बीज बोना शुरू कर दिया है। उनमें से अब कोई नुरुद्दीन ज़ंगी और सलाहुद्दीन अय्यूबी पैदा नहीं होगा।"

सुल्तान अय्यूबी का ज़ेहन फ़ारिग़ नहीं था। उसने हरमन से मुस्कुरा कर हाथ मिलाया

और कहा—"तुम्हारी बातें बहुत कीमती हैं। मैं तुम्हें दमिश्क भेज रहा हूँ। वहाँ तुम्हें मुअज़्ज़िज़ कैदियों में रखा जाएगा।"

"और यह लड़कियाँ जो मेरे साथ हैं?"

सुल्तान अय्यूबी गहरी सोंच में खो गया। कुछ देर बाद बोला—"मैं औरतों को जंगी कैदी नहीं बनाया करता। उन्हें क़त्ल करके समन्दर में फेंक सकता हूँ।"

"मोहतरम सुल्तान! यह बहुत ही ख़ूबसूरत लड़कियाँ हैं।" हरमन ने कहा—"आप उन्हें एक नज़र देखें तो आप उन्हें क़त्ल नहीं करेंगे, कैद में भी नहीं डालेंगे। आपके मज़हब में लौंडी के साथ शादी करने की इजाज़त है। लौंडियों को हरम में रखा जा सकता है।"

"मेरे मज़हब ने ऐसी अय्याशी की इजाज़त कभी नहीं दी।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा—"मैं अपने घरों में या किसी भी मुसलमान के घर सांप नहीं पाल सकता।"

"मगर उनका कोई कुसूर नहीं।" हरमन ने कहा—"उन्हें इस काम के लिए बचपन से तैय्यार किया गया था।"

"इसीलिए मैं उनको क़त्ल का हुक्म नहीं दे रहा।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा—"मैं उन्हें चले जाने की इजाज़त देता हूँ। मैं तुम्हारी इस सोंच की तारीफ़ करता हूँ कि तुम ये शीरींन ज़हर मेरी कौम में फैलाना चाहते हो, लेकिन मैं भी तुम्हारी तरह सोंच सकता हूँ। उन्हें कह दो कि अकरा से निकल जाएं। उनमें कोई भी यहाँ कहीं या जहाँ कहीं मैं गया नज़र आ गयी, उसे क़त्ल कर दिया जाएगा।"

❖

सुल्तान अय्यूबी ने दो तीन दिनो में अकरा पर अपनी हुकूमत क़ायम कर दी। मस्जिदों को साफ़ कराया। जो माले ग़नीमत हाथ आया था, उसमें से ख़ासा हिस्सा अपनी फ़ौज में तक़सीम कर दिया। कुछ उन मुसलमान घरानो को दे दिया जो कैद में पड़े रहे थे मगर उसकी दिलचस्पियों का मक़सद फ़िलिस्तीन का नक़्शा था। उसकी उंगली आज के लेबनान और इस्राईल के साहिल के साथ—साथ नक्शे पर चल रही थी और उसके दिल व दिमाग़ पर बैतुल मुक़द्दस ग़ालिब था। उसे इधर उधर की कोई होश नहीं थी। उसे मालूम था कि उसका कौन सा दस्ता कहाँ है। छापामार दस्तों की तक़सीम निहायत अच्छी थी। उनका दूसरे दस्तों के साथ बाक़ायदा राब्ता था।

"सुल्ताने आली मुक़ाम!" सुल्तान अय्यूबी को हसन बिन अब्दुल्लाह की आवाज़ सुनाई दी।

"हसन!" सुल्तान नक्शे से आँखें हटाये बग़ैर कहा—"जो कहना होता है फ़ौरन कहा दिया करो। हमारे पास वक़्त नहीं कि हम हर बात सरकारी तौर तरीकों से करें। मेरा मुकाम उस रोज़ आली होगा जिस रोज़ मैं फ़ातह की हैसियत से बैतुल मुक़द्दस में दाख़िल हूंगा।"

"त्रिपोली से इत्तलाअ आई है कि रिमाण्ड मर गया है।"

"ज़ख़्मी था?"

"नहीं सुल्तान!" हसन बिन अब्दुल्लाह ने जवाब दिया—"वह सही व सलामत त्रिपोली

पहुँचा था। दूसरे दिन अपने कमरे मे मरा हुआ पाया गया। हो सकता है उसने ख़ुदकशी की हो।"

"वह इतना ख़ुद्दार और ग़यूर नहीं था।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा–"वह पहले भी कई बार शिकस्त खाकर मैदान से भाग चुका है। बहरहाल मुझे उसके मरने का अफ़सोस है। उसने मुझे क़त्ल कराने के लिए हशीशीन से तीन हम्ले कराये थे।"

मोअर्रिख़ीन ने रिमाण्ड आफ त्रिपोली की मौत की मुख़्तलिफ़ वजूहात लिखी हैं। क़ाजी बहाउद्दीन शद्दाद ने फेफड़ों की बीमारी लिखी है लेकिन ज़्यादा तर ने लिखा है कि हशीशीन ने ज़हर दे दिया था। रिमाण्ड दोग़ले किरदार का और साज़िशी ज़ेहन का सलीबी हुक्मरान था। मुसलमानों में ख़ानाजंगी कराने में उसका भी हाथ था। सलीबी हुक्मरानों मे मुनाफिरत फैलाने से भी बाज़ नहीं आता था। उसका याराना हसन बिन सबाह की फ़िदाइयों के साथ था। सुल्तान अय्यूबी पर उसने एक दो क़ातिलाना हम्ले कराये थे। उसने एक दो सलीबी हुक्मरानों को भी फ़िदाई हशीशीन से क़त्ल कराने की कोशिश की थी मगर न सिर्फ़ नाकाम रहा बल्कि जिन्हें वह क़त्ल कराना चाहता था उन्हे उसके मंसूबे का इल्म भी हो गया था। उस दौर के कातिबों और वकाअ निगारों की गैर मतबूआत तहरीरो में ऐसे इशारे मिलते हैं कि रिमाण्ड इत्तेहादियों के साथ सलीब आज़म पर हलफ उठाकर हतीन के मैदान में गया था लेकिन भाग आया। त्रिपोली पहुंचा तो अगले ही रोज़ अपने कमरे में मुर्दा पाया गया। ज़िन्दगी की आख़िरी रात हशीशीन का सरदार शेख सन्नान उसके पास गया था।

उससे पहले एक और मशहूर सलीबी हुक्मरान बिल्डून मर गया था। यह फ़िरंगियों का जंगजू बादशाह था। आपने उसका ज़िक्र इन कहानियों में कई बार पढ़ा होगा। बैतुल मुक़द्दस उसकी अलमबरदारी में था। बिल्डून जंगी उमूर का महिर था। वह जानता था कि सुल्तान अय्यूबी बैतुल मुक़द्दस को फ़तह करना चाहता है। बिल्डून बैतुल मुक़द्दस को बचाने का यह इहतिमाम किये रखा था कि अपनी फ़ौजें मुसलमान इलाकों में घूमाता फिराता और लड़ाता रहा और यह उसकी काबिलियत का सबूत है कि उसने अज़ाउद्दीन, सैफुद्दीन और गुमश्तगीन को मुत्तहिद करके सुल्तान अय्यूबी के खिलाफ़ मुहाज़ आरा कर दिया था और उस मुहाज़ को वह जंगी साज़ो सामान, शराब, ज़र व जवाहरात और हसीन लड़कियों से मुस्तहकम करता रहता था। बूढा आदमी था। जंगे हतीन से चन्द रोज़ पहले मर गया। उसकी जगह गाई ऑफ लोज़िनिनान ने बैतुल मुक़द्दस की हुकूमत संभाल ली थी।

❖

तारीख़ आज तक ऐसी कमाण्डो और गोरिल्ला आप्रेशन की ऐसी मिसाल पेश नहीं कर सकी जैसी सुल्तान अय्यूबी के छापामार दस्तों ने की थी। छापामार दुश्मन के हाँ तबाही बपा कर सकते हैं लेकिन किसी इलाके पर क़ब्ज़ा नहीं कर सकते। क़ब्ज़ा फौज किया करती है बशर्ते कि वह फौज तेज़ हो और छापामारों की बपा की हुई अफ़रा तफ़री और तबाही के फ़ौरन बाद हम्ला कर दे। सुल्तान अय्यूबी ने छापामारों और फौज को मिशन दे दिया था जो मुख़्तसरसन यूं थी कि बैतुल मुक़द्दस के इर्द गिर्द, दूर–दूर तक के इलाके से सलीबी फ़ौज

को बेदख़ल करना, साहिली इलाकों की क़िलाबन्दियों पर कब्ज़ा करना और दुश्मन का जिस क़दर अस्लेहा और रस्द हाथ आए उसे महफ़ूज़ मुक़ामात पर ज़ख़ीरा करना।

सुल्तान अय्यूबी ने अपनी फौज को वाज़ेह मक्सद दे रखाथा। यही उसकी असल कुव्वत थी। सुल्तान अय्यूबी ने अपने सालारों से कह रखा था कि जिस शहर और क़स्बे पर कब्ज़ा करो वहाँ के मुसलमानों की हालत अपने सिपाहियों को दिखाओ, उन्हें वह मस्जिदें दिखाओ जिन्हें सलीबियों ने वीरान किया और बेहुर्मती की थी। उन्हें वह मुसलमान ख़्वातीन दिखाओ जो सलीबियों के हाथों बेआबरू होती रहीं। उन्हें अच्छी तरह दिखाओ कि हमारा दुश्मन कैसा है और उसके अज़ाइम क्या हैं।

यही वजह थी कि सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज का छोटे से छोटा दस्ता बड़े से बड़े दस्ते पर क़हर बन कर टूटा। सिपाहियों ने वह सबकुछ देख लिया था जो सुल्तान अय्यूबी उन्हे दिखाना चाहता था। यह दिवांनगी की कैफ़ियत थी, एक जुनून था, सुल्तान अय्यूबी के कानो में एक ही आवाज़ पड़ती थी—"फ़लां क़स्बे पर कब्ज़ा कर लिया गया है.....फ़लां मोर्चे से सलीबी पस्पा हो गये हैं।" सिपाही आराम के बेग़ैर मुसलसल लड़ और बढ़ रहे थे मगर एक रोज़ सुल्तान अय्यूबी सर से पांव तक हिल गया।

वह अपने कमरे में नक्शे पर झुका हुआ था अपनी हाई कमान के सालारों और मुशीरों से अगला प्लान तैय्यार कर रहा था बाहर शोर उठा—"मैं तुम्हारे सुल्तान को क़त्ल करूंगा। तुम सलीब के पुजारी हो। छोड़ दो मुझे.....नारे तकबीर—अल्लाहो अकबर।" यह एक ही आदमी की आवाज़ थी। उसके साथ कई और आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। "यहाँ से ले जाओ इसे..... सुल्तान ख़फ़ा होंगे.....मार दो। जान से मार दो इसे....उसके मुँह पर पानी फेंको....पागल हो गया है।"

सुल्तान अय्यूबी दौड़कर बाहर निकला। उसे तवक्को थी कि कोई सलीबी सिपाही होगा वह उसकी अपनी फ़ौज का एक कमानदार था जिसके दोनों हाथ ख़ून से लाल थे और उसके कपड़ों पर ख़ून ही ख़ून था। उसकी आँख ख़ून की तरह गहरी लाल थीं और उसके होठों के कोनों से झाग फूट रही थी। उसे चार आदमियों ने बाज़ूओं से जकड़ रखा था वह क़ाबू में नहीं आ रहा था।

"छोड़ दो इसे।" सुल्तान अय्यूबी ने गरज कर कहा।

"सुल्तान!" उस कमानदार ने क़हर भरी आवाज़ में कहा—"यहाँ आकर तुम्हारी सब फ़ौज बेग़ैरत हो गयी है। कुफ़्फ़ार क्यों ज़िन्दा निकल रहे हैं। तुम हमारे सुल्तान बने फ़िरते हो, तुमने उस मुसलमान औरतों और बच्चों को देखा था जो क़ैद में पड़े थे?"

सुल्तान के मुहाफ़िज़ दस्ते के कमाण्डर ने लपककर उस कमानदार के मुंह पर हाथ रख दिया। कमानदार ने उस कमाण्डर के बाज़ू पकड़कर इतनी ज़ोर से झटक दिया कि कमाण्डर उसके कंधो के उपर से होता सुल्तान अय्यूबी के सामने जा पड़ा।

"मत रोको इसे बोलने दो।" सुल्तान अय्यूबी ने एक बार फिर गरज कर कहा—"आगे आओ दोस्त! मुझे बताओ इन्होंने तुम्हें क्यों पकड़ लिया है?"

बात यह खुली कि वह एक जैश का कमानदार था। उसे यह फर्ज़ सौंपा गया था कि जो मुसलमान कुम्बे कैद में पड़े रहे थे उनके घरों में अनाज वग़ैरह पहुंचाए और उनमें जो बीमार हैं उन्हें फ़ौज के तबीबों के पास भेजे। उस काम के लिए सौ सिपाहियों के दो जैश मुक़र्रर किये गये थे। यह कमानदार मज़लूम मुसलमान घरों में जाता रहा। उसे मालूम होता रहा कि ईसाईयों ने उसके साथ कैसा सलूक किया था। यह तफ़सीलात बड़ी ही दर्दनाक और बड़ी ही शर्मनाक थीं। उस कमानदार ने अपनी फ़ौज के सिपाहियों को मस्जिदें साफ़ करते देखा। एक मस्जिद में से दो औरतों की बरहना लाशें निकलीं जो गल सड़ रही थीं। यह उस कमानदार ने देख लीं।

लाशें निकालनें और मस्जिद साफ़ करने वाले सिपाहियों के आँसू बह रहे थे। उनमें से एक कह रहा था हमारी बहनों और बेटियों की यह हालत होती रही और हमारे सुल्तान ने कुफ़्फ़ार को इजाज़त दे दी है कि जो यहाँ से जाना चाहे अपने कुम्बे को लेकर चल जाए।"

उस कमानदार का ख़ून खौल उठा। वह आगे गया तो पन्द्रह बीस लड़कियाँ उसे जाती नज़र आयीं। इनके साथ उसका एक साथी कमानदार चन्द एक सिपाहियों के साथ जा रहा था। लड़कियाँ ख़ूबसूरत थीं। कमानदार ने अपने साथी से पूछा कि यह लड़कियाँ कौन है और उनके साथ सिपाही क्यों जा रहे हैं?

"यह वह लड़कियां हैं जिन्होंने शाम में ग़द्दार पैदा किये थे।" कमानदार ने उसे बताया। वह उस काफ़ले के साथ चल पड़ा। उसके साथी ने उसे सुनाया—"उनकी कारस्तानियां तुम सुनते रहे हो। उनका सरदार (हरमन) पकड़ा गया है। यह सब सलीबी हैं। सुल्तान ने उनके सरदार को कैद में डाल दिया है और लड़कियों के मुतअल्लिक हुक्म दिया है कि उन्हें शहर से दूर ले जाकर उन ईसाईयो के हवाले कर दो जो अकरा से जा रहे हैं।"

"और तुम इन्हें ज़िन्दा छोड़ आओगे?" कमानदार ने पूछा।

"हमें हुक्म मिला है।"

"क्या यह हमारी उन बहनों से ज़्यादा पाक और मुकद्दस हैं जिनकी बरहना लाशें मस्जिदों से निकल रही हैं और जिन्हें कैद में रखकर बेआबरू किया जाता रहा है?"

उसके साथी ने आह भर कर कहा—"मैं हुक्म का पाबन्द हूँ।"

कमानदार रुक गया और उस काफ़ले को जाते देखता रहा। अचानक उसने तलवार निकाल ली और उसकी तरफ़ दौड़ पड़ा। उसने नारा लगाया—"मैं किसी का पाबन्द नहीं।" उसने तलवार इस क़दर चलाई कि पलक झपकते ही तीन चार लड़कियों के सर काट डाले। उनका मुहाफ़िज कमानदार उसे पकड़ने को दौड़ा। लड़कियाँ चीखती चिल्लाती इधर उधर भागीं। कमानदार एक लड़की के पीछे गया और मज़ीद तीन चार लड़कियों को ख़त्म कर दिया। एक सिपाही उसे पकड़ने के लिए क़रीब गया तो उसने इस सिपाही के पेट में तलवार बरछी की तरह घोंप दी। फिर उसके क़रीब कोई नहीं जाता था। उसने बाकी लड़कियों को देखा इधर उधर भाग गयी थीं

इस तरह वह शहर से बाहर निकल गये। उसे कुछ ईसाई शहर से जाते नज़र आये।

कमानदार ने उनपर हम्ला कर दिया। उसके सामने जो आया उसे उसने क़त्ल किया और यही नारे लगाता रहा--"मैं बेग़ैरत नहीं हूँ। अल्लाहो अकबर।"

उसके साथी कमानदार के वाविले पर कई एक सिपाही इकठ्ठे हो गये जिन्होंने उसे घेर कर पकड़ लिया। उसे घसीट कर ला रहे थे कि उस इमारत के क़रीब से गुज़रे जहाँ सुल्तान अय्यूबी अपने अमले के साथ क़यामपज़ीर था। किसी ने कहा कि इसे सुल्तान के अमले के हवाले कर दो। वह डरते थे कि सुल्तान के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी हुई है। किसी निहत्थे शहरी पर हाथ उठाने को जुर्म क़रार दिया गया था। यह कमानदार चिल्ला रहा था। उसका शोर सुन कर सुल्तान अय्यूबी बाहर निकल आया।

सुल्तान अय्यूबी ने यह वारदात सुनी और कमानदार की लान तान भी सुनी। सब डर रहे थे कि सुल्तान उसे क़ैद में डाल देगा लेकिन सुल्तान ने उसे गले लगा लिया और अन्दर ले गया। उसे शरबत पिलाया और उसे ज़ेहन नशीन कराया कि उनका मक़सद सलीबियों को क़त्ल करना नहीं बल्कि अपने किब्लाअव्वल को आज़ाद करके इस तमाम सर ज़मीने अरब से सलीबियों को निकालना है। कमानदार की ज़ेहनी हालत ठिकाने नहीं थी। उसे सुल्तान अय्यूबी ने अपने तबीब के हवाले कर दिया।

"फ़ौज को इतना जज़्बाती नहीं होना चाहिए।" सुल्तान अय्यूबी ने सालारों और मुशीरों से कहा--"लेकिन ईमान दिवानगी की हद तक ही पुख़्ता होना चाहिए। हमारा यह कमानदार होश और अक्ल खो बैठा है। अगर मुसलमान अपने दीन के दुश्मन को देखकर दिवाने हो जाएं तो इस्लाम का पर्चम वहां तक पहुंच जाए जहां यह ज़मीन ख़त्म हो जाती है।"

हरमन की जो लड़कियाँ उस कमानदार से बचकर भाग गयी थीं उनमें से दो समुन्दर के किनारे जा पहुंची। समुन्दर दूर नही था। वह ख़ौफ़ से काँप रही थीं और पनाह ढूंढ रही थीं वह एक जगह छुप कर बैठ गयीं। फ़ौरन बाद एक कश्ती किनारे आ लगी। उसमें दो मलाह थे और तीसरा कोई अफ़सर मालूम होता था। वह सुल्तान अय्यूबी की बहेरा का एक अफ़सर था जिसका नाम अल्फ़ारस बदरीन लिखा गया है। बहेरा का सबसे बड़ा कमाण्डर अब्दुल हसन था जो रईसुलबहरीन (दो समन्दरों, बहेरा रोम, बहेराअ हमर) का हाई एडमिरल कहलाता था। उसके नीचे अमीर अल्बहर हिसामुद्दीन लौलूअ था।

सुल्तान अय्यूबी के हुक्म से बहरी बेड़ा जिसका हैडक्वार्टर सिकन्दरिया में था, बहेरा रोम में गश्त करता था कि यूरोप से सलीबियों के लिए कुमक और सामान वग़ैरह आये तो उन के जहाज़ों को रास्ते में ही रोका जा सके। हिसामुद्दीन बहेरा अहमर में था। सुल्तान अय्यूबी चूंकि साहिली इलाके पर क़ब्ज़ा करना चाहता था इसलिए मिस्री बेड़े को हुक्म भेजा था कि छः बहेरी जहाज़ साहिल के साथ भेज दिए जाएं। यह जंगी जहाज़ थे जिनमें मिन्जनिकों के अलावा दूर मार तीर अन्दाज़ और लड़ाका दस्ते भी थे।

रईसुलबहरीन ने अल्फ़ारस बैदरीन की कमाण्ड में छः जहाज़ भेजे थे और अल्फ़ारस अपने बहरी जहाज़ से कश्ती में आया था। वह एहकाम लेने के लिए सुल्तान अय्यूबी के पास जा रहा था। साहिल पर उसे यह दो सलीबी लड़कियाँ नज़र आईं जो किसानों के लिबास में

थी। अल्फ़ारस उनके क़रीब चला गया और पूछा कि वह कौन हैं और यहाँ क्या कर रही हैं? लड़कियों ने बताया कि वह ख़नाबदोश क़बीले की हैं जो जंग की ज़द में आ गया था। उनके बहुत से मर्द मारे गये और बाक़ी इधर उधर भाग गये हैं।

"......और हम छुपती फिर रही हैं।" एक लड़की ने कहा—"ईसाईयों से हम इसलिए डरती हैं कि वह हमें मुसलमान समझते हैं और मुसलमानों में हमें ईसाई समझते हैं।"

"तुम मुसलमान हो या ईसाई?"

"हमारा मज़हब वही है जो हमारे मालिक का होगा।" दूसरी लड़की ने कहा—"हमें किसी न किसी के हाथ फ़रोख़्त ही होना है।"

अल्फ़ारस बैदरीन बहरी लड़ाई का माहिर और ग़ैर मामूली तौर पर दिलेर कमाण्डर था। उन ख़ूबियों के अलावा उसे इसलिए भी पसन्द किया जाता था कि वह शुगुफ़्ता तबीअत का ज़िन्दा मिज़ाज आदमी था। उस दौर में उसकी हैसियत के आदमी बयक वक़्त दो—दो तीन—तीन बीवियां रखते थे लेकिन उसने शादी ही नहीं की थी। वह जंग व जदल का ज़माना था। बहरिया को कई—कई महीने समन्दर में रहना पड़ता और ख़ुश्की देखनी नसीब नहीं होती थी। हर बहरी जहाज़ का कप्तान अपनी बीवी या बीवियों को साथ रखता था।

अल्फ़ारस को उन लड़कियों के हुस्न ने ऐसा मुतासिर किया कि उसके अन्दर यह एहसास बेदार हो गया कि वह तीन महीनों से ज़्यादा अर्से से समन्दर में घूम फिर रहा है। उसने लड़कियों से पूछा कि वह उसके साथ रहना पसन्द करेंगी उन्हें अपने जहाज़ में रखेगा।

"हम बेबस औरर कमज़ोर लड़कियाँ हैं। हमारे साथ धोखा नहीं होना चाहिए।"

"मैं तुम्हें फ़रोख़्त नहीं करूंगा।" अल्फ़ारस ने कहा—"मिस्र ले जाऊंगा और दोनों के साथ शादी कर लूंगा।"

लड़कियों ने एक दूसरी की तरफ़ देखा। आँखों ही आँखों में कुछ तय किया और अल्फ़ारस के साथ चलने को रज़ामन्दी ज़ाहिर कर दी। अल्फ़ारस ने अपनी कश्ती के मलाहों से कहा—"इन्हें मेरे जहाज़ में ले जाओ। इन्हें मेरे कमरे में खाना दो और इन्हें वहीं छोड़कर वापस यहीं आ जाओ और मेरा इन्तज़ार करो।"

लड़कियों को कश्ती में बैठाकर अल्फ़ारस रूमानी गीत गुनगुनाता अकरा चल दिया।

❖

"अल्फ़ारस!" सुल्तान अय्यूबी ने उससे कहा—"मैं तुम्हारे नाम से वाक़िफ़ हूँ। तुम्हारे दो तीन बहरी कारनामें भी सुने हैं, लेकिन अब सूरते हाल कुछ और है। पहले तुम इक्का दुक्का मार्का लड़ते रहे हो। अब बड़े पैमाने की बड़ी जंग का इमकान है। मैं बैतुल मुक़द्दस फ़तह करने आया हूँ लेकिन उससे पहले मैं तमाम बड़ी—बड़ी बन्दरगाहों पर क़ब्ज़ा करना और शुमाल से जुनूब तक के साहिली इलाक़ों को अपनी तहवील में लेना ज़रूरी समझता हूँ। उन साहिली शहरों में बैरूत, टाइर और अस्कलान बहुत अहम हैं। तुम्हारे साथ मेरा राब्ता क़ासिदों से होगा। तुम्हारी दो तीन कश्तियाँ साहिल के साथ मौजूद रहनी चाहिए। मैं ख़ुश्की पर जिधर जाऊंगा तुम्हें इत्तलाअ देता रहूंगा। तुम्हारे जहाज़ समन्दर में गश्त

करते रहेंगे....तुम्हारे जहाज़ों में अस्लेहा और रस्द की कमी तो नहीं?"

"हम हर लिहाज से तैय्यार होकर आये हैं।" अल्फ़ारस ने जवाब दिया।

"बड़े पैमाने की जंग का भी इमकान है।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा–"सलीबियों ने हतीन में जो शिकस्त खाई है और जिस बुरे तरीके से यह भागे हैं यह दुनियाए सलीब के लिए मामूली सा वाक़िआ नहीं। उनके चार हुक्मरान मेरी कैद में हैं। एक को मैंने क़त्ल कर दिया है। रिमाण्ड मर गया है। उनका बड़ा ही काबिल और दिलेर बादशाह बिल्डून भी मर गया है। उसके फ़िरंगी बहुत बड़ी ताक़त हैं। मुझे काहिरा से अली बिन सुफ़ियान ने इत्तलाअ दी है कि इंगलिस्तान का बादशाह रिचर्ड और जर्मनी का बादशाह फ़्रेडरिक अरज़े फिलिस्तीन पर सलीब की हुक्मरानी कायम रखने के लिए अपनी फ़ौजों और बहरी बेड़े के साथ आने की तैय्यारी कर रहे हैं। वह आये तो मैं फ़ैसला कर सकूं कि उन्हें खुश्की पर आने दूं या समन्दर में ही रोकने की कोशिश करूं। इंगलिस्तान के बहरी बेड़े के मुतअल्लिक सुना है कि ज़्यादा ताक़तवर है। मालूम हुआ कि उन्होंने बारूद तैय्यार किया है और ऐसी नलकियों में भरा है जिन्हें आग लगाओ तो नल्कियां उड़ती हुई आती और जहाज़ों को आग लगा देती हैं। मैं ऐसी नल्कियाँ हासिल करने की कोशिश करूंगा। हम खुद बना लेंगे...बहर हाल तुम साहिल के साथ अपने जहाज़ों को रखना। रईसुल बहरीन खुले समुन्दर में रहेगा।"

अल्फ़ारस ने मज़ीद एहकामात लिए और चला गया। कश्ती उसके इन्तज़ार में खड़ी थी। अपने बहरी जहाज़ों में जाकर उसने दूसरे जहाज़ों के कप्तानों को बुलाया, उन्हें हिदायात और एहकामात देकर रुख़सत कर दिया और अपने केबिन में चला गया जहाँ दो लड़कियाँ उसके इन्तज़ार में बैठी थीं। वह भोली भाली बनी रहीं और उससे पूछती रहीं कि वह समुन्दर में क्या करता है। अल्फ़ारस लम्बे अर्से से समुन्दर में था। उस पर हंसने खेलने की कैफ़ियत तारी हो गयी। उन लड़कियों को मर्दों की इस कैफ़ियत में लाने और उन्हें अपने रंग में इस्तेमाल करने की महारत हासिल थी।

20 जूलाई 1187 ई0 के रोज़ सुल्तान अय्यूबी अकरा से निकला। उसके छापामार दस्तों ने उसके लिए रास्ता साफ़ कर रखा था। साहिल के साथ–साथ उसने कई एक किले और क़स्बे फ़तह कर लिए। 30 जुलाई 1187 ई0 के रोज़ उसने बैरूत का मुहासिरा किया। सलीबियों ने उस अहम शहर को बचाने की बहुत कोशिश की लेकिन सुल्तान अय्यूबी ने बेदरीग़ कुर्बानी देकर बैरूत ले लिया। वहा भी मुसलमानों की वही हालत थी जो अकरा में थी।

29 जुलाई तक बैरूत को अपनी अलमबरदारी में लेकर सुल्तान अय्यूबी ने एक और मशहूर साहिली शहर, टाईर का रुख किया। वह जासूसों और देखभाल के जैशों से रिपोर्टें लिए बग़ैर पेशक़दमी नहीं किया करता था। उसे बताया गया कि अपनी फ़ौज बहुत ज़्यादा इलाके में फैल गयी है और इधर उधर भागे हुए सलीबी टाइर में जमा होकर मनज़्ज़िम हो रहे हैं। तमाम फ़िरंगी भी साहिली इलाके से पस्पा होकर टाइर चले गये थे। सुल्तान अय्यूबी ने टाइर पर हम्ले का इरादा तर्क कर दिया। वह बैतुल मुक़द्दस के लिए फ़ौज बचा कर रखना चाहता था।

इस दौरान अल्फ़ारस बैदरीन के बहरी जहाज़ साहिल से दूर गश्त और देख भाल करते रहे। दोनों लड़किया उसके जहाज़ में रहीं। वह उसके दिल पर ग़ालिब आ गयी थीं लेकिन उसने अपने फ़राईज़ में कोताही न की। जब कोई बहरी जहाज़ साहिल के क़रीब लंगर अन्दाज़ होता था, छोटी–छोटी कश्तियाँ उसके इर्द गिर्द घूमने लगती थीं। यह ग़रीब देहातियों की कश्तियाँ थीं जो फल, अंडे और मख्खन वग़ैरह मलाहों और फ़ौजी दस्तों के पास बेचते थे। जहाज़ों के कप्तान उनमें से किसी को रस्सा फेंक कर जहाज़ में उठा लेता और उससे ख़ुश्की की दुनिया की ख़बरे सुनते थे।

एक रोज़ अल्फ़ारस का जहाज़ साहिल पर चला गया। उसे वहां से बर्री फ़ौज के किसी कमानदार से कुछ पूछना था। दोनों लड़कियाँ जहाज़ के अर्शे पर जंगले का सहारा लिए खड़ी थीं। छोटी–छोटी तीन चार कश्तियाँ आ गयीं। उनमें फल वग़ैरह था। उनके मलाह जहाज़ों की मिन्नतें करने लगे कि वह उनसे कुछ ले लें। एक कश्ती में एक अधेड़ उम्र का आदमी था, जिसके जिस्म पर तहमन्द के सिवा कुछ भी न था। बहुत ग़रीब मालूम होता था। उसने दोनों लड़कियो को जहाज़ों में खड़े देखा तो कश्ती क़रीब ले गया।

"कुछ ले लो शहज़ादी।" उसने कहा–"बहुत ग़रीब आदमी हूँ।"

"लड़कियों ने उसे नज़र भर देखा तो उसने बांयें आँख से ख़फ़ीफ़ सा इशारा कर दिया। दोनो लड़कियाँ हैरान सा होकर एक दूसरी की तरफ़ देखा। उस आदमी ने इधर उधर देख कर सीने पर उंगली उपर नीचे और फ़िर दायें बायें चलाकर सलीब का निशान बनाया। एक लड़की ने अपने दायें हाथ की शहादत की उंगली पर दूसरे हाथ की शहादत की उंगली रख कर करास बनाया। आदमी मुस्कुराया। एक लड़की ने जहाज़ के मलाह से कहा कि उस आदमी को उपर लाओ।

मलाहों को मालूम था कि यह लड़कियाँ उनके जहाज़ के कप्तान की हैं जो तमाम जहाज़ों का कमाण्डर है। उन्होंने फ़ौरन रस्सों की सीढ़ी फेंकी। वह आदमी टोकरी में मुख़्तलिफ़ चीजें रखकर उपर ले आया और टोकरी लड़कियों के आगे रख दी। लड़कियाँ चीज़ें देखने लगीं। किसी और से उनके क़रीब आने की जुर्रत नहीं हो सकती थी।

"तुम यहाँ कैसे पहूँ गयी हो?" कश्ती के मलाह ने पूछा।

"इत्तफ़ाक की बात है।" एक लड़की ने जवाब दिया–"हरमन पकड़ा गया है।" उसने उस आदमी को सारा वाक़िआ सुना दिया और अल्फ़ारस के मुतअल्लिक़ बताया कि वह उन्हें खानाबदोश समझ कर अपने साथ ले आया है।

"कुछ सोंचा है क्या करोगी?" मलाह ने पूछा–"जाओगी कहां?"

"अभी तो सिर्फ़ जान बचाने का बन्दोबस्त किया है।" लड़की ने जवाब दिया–"कमाण्डर अल्फ़ारस की रगों पर हम ने क़ब्ज़ा कर लिया है। कहीं मौका मिला तो भागने की कोशिश करेंगी। अगर तुम रहनुमानई करो तो यहीं रह कर कुछ करेंगी।"

यह ग़रीब सा माहीगीर सलीबियों का जासूस था और वह उन लड़कियों को अच्छी तरह जानता था। वह भी उसे जानती थीं। उसने कहा–"साहिल पर उतर कर भागने की कोशिश

न करना। बहुत बुरी मोत मरोगी। बैरूत तक मुसलमानों का क़ब्ज़ा हो गया है। हमारी सलीबी फ़ौज हर जगह से पस्पा हो रही है। अब टाइर एक जगह रह गयी है जहाँ तुम्हें पनाह मिल सकती है अभी इसी जहाज़ में रहो। मैं तुम्हें मिलता रहूँगा। हमारे लिए हालात बहुत ही ख़तरनाक हो गये हैं। हर तरफ मुसलमान सिपाही दनदनाते फिर रहे हैं।"

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

"सलीब पर हाथ रखकर जो हलफ़ उठाया था वह पूरा करने की कोशिश कर रहा हूँ।" उसने जवाब दिया–"इन छः जहाज़ों की नक़ल व हरकत देख रहा हूँ। इन्हें तबाह कराने का इन्तज़ाम करूंगा।"

"अपने जहाज़ कहाँ हैं?"

"टाइर के क़रीब।' उसने बताया–"यह जहाज़ उधर गये तो अपने जहाज़ों को पहले से इत्तलाअ कर दूंगा। अब इत्फ़ाक़ से तुम कमाण्डर के जहाज़ में आ गयी हो। तुम मेरी मदद कर सकोगी और मैं तुम्हें इस जहाज़ से निकाल कर टाइर पहुँचा सकूंगा। मुझे अब जाना चाहिए। इशारो मुक़र्रर कर लो। मैं इन जहाज़ों के साथ साये की तरह लगा हुआ है यह जहाज़ कहीं भी साहिल के क़रीब लंगर डालेगा, वहाँ उसी भेस में मौजूद रहूँग।"

उन्होंने इशारे मुक़र्रर कर लिए। लड़कियों ने उसकी टोकरी में से कुछ चीज़ें उठा लीं। उसे पैसे दिए और वह दो रस्सों की सींढी से अपनी कश्ती में उतर गया।

❖

6 सितम्बर 1187 ई0 के रोज़ सुल्तान अय्यूबी ने एक और मशहूर साहिली शहर अस्क़लान का मुहासिरा कर लिया। यहाँ भी वज़नी पत्थर फेंकने वाली मिन्जनिकें और पहियों पर चलने वाली मचानें इस्तेमाल की गयीं। सुरंगे खोदने वाले जैश रात को दिवार तोड़ने की कोशिश करते रहे। क़रीब ही एक बुलन्दी थी। वहाँ से मिन्जनिकों से शहर के अन्दर पत्थर और आतिशगीर गोले फेंके गये। दूसरे दिन महसूरीन ने घबराकर शहर के दरवाज़े खोल दिए और हथियार डाल दिए।

उस शहर पर फ़िरंगी ने 19 सितम्बर 1153 ई0 में क़ब्ज़ा किया था। पूरे चौंतीन बर्ष बाद यह शहर आज़ाद कराया गया। अस्क़लान से बैतुल मुक़द्दस चालीस मील मश्रिक़ के सिम्त वाक़ेअ था। सुल्तान अय्यूबी के तेज़ रफ़तार दस्तों के लिए यह दो दिन का सफ़र था। उसके बाज़ दस्ते और छापामार जैश पहले ही बैतुल मुक़द्दस के क़रीब पहुंच चुके थे। उन्होंने सलीबियों की बैरूनी चौकियां तबाह कर दी थीं। बचे खुचे सलीबी बैतुल मुक़द्दस पहुंच रहे थे। सुल्तान अय्यूबी ने अपने बिखरे हुए दस्तों को अस्कलान में इकट्ठा होने का हुक्म दिया और बैतुल मुक़द्दस पर हम्ले की तैय्यारी करने लगा।

सुल्तान अय्यूबी की फ़तूहात और तूफ़ानी पेशक़दमी की ख़बरें दमिश्क़, बग़दाद, हलब, मुसिल और उधर क़ाहिरा तक पहुँच चुकी थीं। आख़िरी ख़बर यह पहुंची कि सुल्तान अय्यूबी अस्क़लान में है और बैतुल मुक़द्दस पर हम्ला करने वाला है। क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद जो उस हम्ले में सुल्तान अय्यूबीए के साथ था, अपनी याददाश्तों में लिखता है कि सुल्तान

अय्यूबी की फौज मुसलसल फतूहात की बदौलत थकन के एहसास से बेगाना थी। वह ज्यों–ज्यों इन मकबूज़ा इलाकों में मुसलमान की हालत देखती गयी कहर बनती गयी जो बैतुल मुकद्दस पर टूटने को बेताब था। यह तो सुल्तान अय्यूबी की जंगी कुव्वत थी। काज़ी बहाउद्दीन शद्दाद लिखता है कि अस्कलान में सुल्तान अय्यूबी के पास रूहानी कुव्वत पहुँचने लगी। यह दमिश्क, बग़दाद और दिगर बड़े शहरों के उलमा दूरवेश और सूफी मुन्श लोग थे। वह सुल्तान अय्यूबी के साथ बैतुल मुकद्दस में दाखिल होने आये थे। उन्होंने आकर सुल्तान अय्यूबी को दुआएं दी और उसकी फौज को बैतुल मुकद्दस की अहमियत और तकद्दस बताया और सिपाहियों को आग बगूला कर दिया। सुल्तान अय्यूबी उलमा और दूरवेशों का बहुत एहतराम करता था। उन्हें अपने साथ देखकर उसकी थकन ख़त्म हो गयी और उसने जोशे जज़्बात से कहा–"अब दुनिया की कोई ताकत मुझे शिकस्त नहीं दे सकती।"

अस्कलान से कूच से दो चार रोज़ पहले सुल्तान अय्यूबी के पास हलब से एक मेहमान आया जिसे देखकर सुल्तान अय्यूबी हैरान रह गया। उसे अपनी आँखों पर यकीन नहीं आ रहा था। यह नुरूद्दीन ज़ंगी मरहूम की बेवा रज़ीअ खातुन थी जिसने अज़ाउद्दीन के साथ शादी कर ली थी। वह घोड़े पर सवार थी। कूद कर घोड़े से उतरी और दौड़ कर सुल्तान अय्यूबी को गले लगा लिया। दोनों के जज़्बात उभर आये और उन पर रिक़्त तारी हो गयी।

ज़रा देर बाद ऊंटों की एक लम्बी कतार आ रूकी। उन पर कम व बेश दो सौ लड़कियाँ सवार थीं।

"यह क्या?" सुल्तान अय्यूबी ने रज़ीअ खातुन से पूछा।

"जख़्मियों की मरहम पट्टी के लिए तरबियतयाफ्ता लड़कियाँ हैं।" रज़ीअ खातुन ने जवाब दिया–"मैंने इन्हें लड़ाई की तरबियत भी दे रखी है। तीर अन्दाज़ी की भी इन्हें ख़ासी मश्क है....मुझे मालूम है कि तुम औरतों को मैदाने जंग में नहीं देखना चाहते लेकिन मेरे और उनके जज़्बात को कुचलने की कोशिश न करना। तुम नहीं जानते कि शाम में जवान लड़कियों पर काबू पाना मुहाल हो रहा है। जिसे देखो वह मुहाज़ पर पहुँचने के लिए बेताब है। अगर तुम इजाज़त दो तो मैं एक हज़ार लड़कियाँ मुहाज़ पर भेज दूं। सिपाहियों की तरह लड़ेंगी। जिन मांओं के बेटे यहाँ लड़ रहे हैं वह मायें उनकी ख़ैरियत की नहीं फ़तह की ख़बर सुनना चाहती हैं। आबादियों में एक ही आवाज़ सुनाई देती है– "मुहाज़ की क्या ख़बर है?" कहो सलाहुद्दीन! कितनी लड़कियाँ भेजूं?"

"मैं उन्हें अपने साथ रख लूंगा।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा–"और किसी को न भेजना।"

"उस उंट पर एक मेम्बर लदा हुआ है।" रज़ीअ खातुन ने कहा यह कहते हुए उसकी आँखों में आँसू आ गये कुछ देर ख़ामोश रहने के बाद कहने लगी–"तुम्हें शायद याद नहीं। मेरे मरहूम शौहर (नुरूद्दीन जंगी) ने यह मेम्बर इस अहद के साथ बनवा कर पास रख लिया था कि बैतुल मुकद्दस को सलीबियों से आज़ाद करायेगा तो यह मेम्बर मस्जिदे अक़्सा में रखेगा। बहुत ख़ुश्नूमा मेम्बर है। यह दमिश्क में रखा था। उठा लाई हूँ। अल्लाह तुम्हें फतह दे सलाहुद्दीन और मैं देखूं कि तुमने यह मस्जिदे अक़्सा में रखकर मेरे मरहूम शौहर का

अहद पूरा कर दिया है।"

सुल्तान अय्यूबी पर रिक़्क़त तारी हो गयी। उसके मुँह से सिस्की सी निकली। "अल्लाह यह अहद मुझसे पूरा कराये।"

एक जवान साल लड़की उनके करीब आ खड़ी हुई और सुल्तान अय्यूबी को मुस्कुरा कर सलाम किया। रज़ीअ ख ातुन ने कहा–"पहचाना नहीं सलाहुद्दीन? यह मेरी बेटी शम्सुन निसा है।" सुल्तान अय्यूबी ने लपक कर उसे गले लगा लिया और फिर वह अपने आँसू न रोक सका। उसने उस लड़की को उस वक़्त देखा था जब वह बहुत छोटी थी।

"यह तुम्हारे साथ मुहाज़ पर रहेगी।" रज़ीअ ख़ातुन ने कहा–"लड़कियाँ इसकी कमान में रहेंगी। मुझे वापस जाना है।"

❖

वह उल्मा और दूरवेश वग़ैरह जो सुल्तान अय्यूबी के पास आ गये थे विर्द, वज़ीफ़े और दुआओं में मस्रूफ़ रहते या सिपाहियों में घूमते फिरते और उन्हें रूहानी हौसला देते रहते। वह अस्कलान से बाहर वहाँ तक भी गये जहां दस्ते और जैश मौजूद थे। उनके वाअज़ और ख़ुत्बों के अल्फ़ाज़ कुछ इस किस्म के थे–"नौव्वे साल से कुफ़्फ़ार तुम्हारे क़िब्ला अव्वल पर काबिज हैं। कुर्आन के एहकाम को पढ़ो तो क़िब्ला अव्वल को कुफ़्फ़ार के नापाक क़ब्ज़े से छुड़ाने तक किसी मुसलमान को नींद नहीं आनी चाहिए थी। वह मस्जिदे अक़्सा जहाँ से हमारे रसूल सल्ल० अल्लाह के बुलावे पर मेराज पर तशरीफ़ ले गये थे। कुफ़्फ़ार की इबादतगाह बनी हु है। रसूले मक़बूल की रूहे मुकद्दस हम पर लानत भेज रही है। हम पर नींद, खाना पीना और हम पर अपनी बीवियां हराम होनी चाहिए थीं मगर नौव्वे साल से हम गहरी नींद सो रहे हैं और ऐश व ईशरत में मगन हैं.....

"अल्लाह के सिपाहियो! हमारे हुक्मरानों ने सलीबियों और यहूदियों के ख़ूबसूरत जाल में फंस कर उनके खिलाफ़ ख़ानाजंगी की जिन्हों ने क़िब्ला अव्वल कोआज़ाद कराने का अहद किया था। बैतुल मुकद्दस वह पाक जगह है जहाँ हमारे रसूल के मुबारक क़दम आये और उनकी जबीने मुबारक ने यहाँ सज्दे किये। हज़रत इब्राहीम, हज़रत सलैमान, हज़रत उमर, और हमारे न जाने कितने अम्बिया ने यहाँ विर्द फ़रमाया, मगर नौव्वे साल से यहाँ मुसलमानों पर जो कहर टूट रहा है वह तुम शहर में जाकर देखो। मस्जिदे अक़्सा पर सलीब खड़ी है। मस्जिदें अस्तबल बनी हुई हैं। मुसलमान का क़त्लेआम इस तरह हो रहा है कि गलियों में ख़ून नदी की तरह चलता रहा। मुसलमान कैद व बन्द की ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं और हमारी बेटियां कुफ़्फ़ार की लौंडियाँ बना दी गयी हैं.....

'अपने रसूल की नामूस पर मर मिटने वालो! अल्लाह ने यह सआदत तुम्हें अता की है कि बैतुल मुकद्दस को आज़ाद कराओ, पाक करो और अगर तुम नाकाम रहो तो वहाँ से तुम्हारी लाशें उठाई जाएं। और तुम सुन कर हैरान होगे कि जिस बैतुल मुकद्दस में हज़रत ईसा ने बनी नूअ इन्सान से मोहब्बत का सबक़ दिया था वहाँ सलीब के पुजारियों ने यहाँ तक दरिन्दगी की है कि जब उन्हें किसी मुहाज़ पर फ़तह होती वह बैतुल मुकद्दस में जश्न मनाते जिसमें

हमारी बेटियों को बरहना करके नचाते और चन्द एक तन्दरुस्त व नातवां मुसलमान को जबह करके उनका गोश्त पका कर खाते......

अब तुम को एक एक मासूम के खून के एक एक कतरे का इन्तकाम लेना है। दमिश्क से सुल्तान नुरुद्दीन ज़ंगी मरहूम की बेवा वह मेम्बर लाई है जो मरहूम ने मस्जिदे अक़्सा में रखने के लिए बनवाया था। यह ख़ातून दो सौ लड़कियों के साथ बहुत दूर का सफ़र करके आई है। यह अहद तुम्हें पूरा करना है।"

इस दौरान सुल्तान अय्यूबी अपने दस्तों को यकजा करके उनकी तक्सीम करता रहा और जासूसों की रिपोर्टों के मुताबिक़ बैतुल मुक़द्दस के मुहासिरे का प्लान बनाता रहा।

❖❖

अय्यूबी मस्जिदे अक़सा की दहलीज़ पर

लड़कियाँ जो बहरिया के कमानदार अल्फ़ारस बदरीन के जहाज़ में थीं उसी तरह शुगुफ्ता मिज़ाज और बुज़ला ....थीं। समुन्दर की तन्हाई में यह दोनों लड़कियाँ अल्फ़ारस के दिल को नई जिन्दगी दे रही थीं लेकिन यह उसके लिए मुअम्मा सा बन गयी थीं और उनके लिए अल्फ़ारस अजीब आदमी बना हुआ था। लड़कियों ने उसे बताया था कि वह ख़ानाबदोश हैं। उनका क़बीला जंग की ज़द में आ गया था और वह दोनो बड़ी मुश्किल से छुपती छुपाती साहिल तक पहुँची हैं, मगर अल्फ़ारस देख रहा था कि दोनों की आदतें और तौर तरीके ख़ानाबदोशों वाले नहीं। ख़ानबदोश हसीन हो सकती थीं मगर उनमें यह शाइस्तगी नहीं हो सकती थी कि जो उन दोनों में थीं। उन दोनों लड़कियों में किसी हद तक बेहायाई भी थी जो ख़ानाबदोश औरतों में उमूमन नहीं हुआ करती थी।

लड़कियों के लिए अल्फ़ारस अजीब आदमी था। लड़कियों को तवक़्क़ो थी कि वह उनके साथ वही सलूक करेगा जो हर उस मर्द ने उनके साथ किया है जिसके ज़ेहन पर क़ब्ज़ा करने के लिए उन्हें भेजा गया था। अल्फ़ारस ने इनमें उस किस्म की दिलचस्पी का इज़हार न किया जिससे यह लड़कियाँ इब्तेदा में मायूस हुई लेकिन उन्होंने उसकी एक और कमज़ोरी भांप ली। वह यह थी कि वह फ़र्ज़ के मामिले में जहाँ बड़ा ही सख़्त गीर और सख़्त कोश था वहाँ फ़राग़त के वक़्त खिलन्डरा बच्चा बन जाया करता था। उन लड़कियों के साथ वह हमराज़ सलेहियों की तरह खेलता और उनके हुस्न और उनकी शोख़ियों से लुत्फ़ उठाता था उनके बिखरे—बिखरे रेशमी बालों से खेलता और उनमें मगन होकर दुनिया को भूल जाता था।

एक रोज़ एक लड़की ने जब दूसरी लड़की कमरे में नहीं थी, उसके जज़्बात को मुश्तअिल करने या यह समझने की कोशिश की उस आदमी के अन्दर जज़्बात हैं भी या नहीं तो अल्फ़ारस ने यह खुले इशारे समझते हुए कहा—"मैंने जब तुम्हें पहले दिन साहिल पर कहा कि मैं तुम्हें अपने जहाज़ में पनाह दे सकता हूँ तो तुमने कहा था कि हमारे साथ धोखा नहीं होना चाहिए। मैंने कहा था कि तुम्हें मिस्र लेजाऊंगा और शादी कर लूंगा.....मैं अपने इस वादे पर क़ायम रहना चाहता हूँ। शादी से पहले मैं कोई ऐसी हरकत नहीं करूंगा जिससे तुम्हें यह शक़ हो कि मैं वक़्ती तौर पर दिल बहलाने के लिए लाया हूँ। मैं तुम्हारी मजबूरी और बेबसी से फ़ायदा नहीं उठाना चाहता। मिस्र जाने तक तुम यह सोंच लो। अगर मेरे साथ रहना पसन्द नहीं करोगी तो जहाँ कहोगी वहाँ भेज दूंगा।"

लड़की ने बेताबी से बाज़ू उसके गले में डाल दिए गाल उसके गाल के साथ लगा कर कहा—"हम दोनों तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जाएंगी। तुम पहले मर्द मिले हो जिस के दिल में

इंसानियत की पाकीगज़गी है, शैतानियत और हैवानियत नहीं।"

लड़की ने वालिहाना मोहब्बत का इज़हार ऐसे अल्फ़ाज़ मे और ऐसे अन्दाज़ में किया कि अल्फ़ारस को पानी पर तैरने वाला बहरी जहाज़ फ़िज़ा की वुस्अतों में उड़ता महसूस होने लगा। यही उसकी कमज़ोरी थी जो इन्सानी फ़ितरत की सबसे बड़ी कमज़ोरी होती है। समन्दर में इतना तवील अर्सा दिन रात गश्त करते रहने से और वक़्तन फ़ावक़्तन छोटी मोटी झड़पें लड़ने से उसके असाब पर जो थकन और ज़ेहन पर जो कोफ्त थी वह ख़त्म हो गयी। असाब पुर सुकून हो गये। अब उसकी ज़िम्मेदारियों में इज़ाफा हो गया थ। उसके हाथ छः जहाज़ो की कमाण्ड थी और वह फ़िलिस्तीन के साहिल से कुछ दूर गश्त कर रहा था। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी बिजली की तरह अरज़े फ़िलिस्तीन पर टूट पड़ा था। उसने साहिली इलाकों पर क़ब्ज़ा कर लिया और अब अस्क़लान में बैतुलमुक़द्दस पर हम्ले की तैयारी कर रहा था। अल्फ़ारस बैदरीन की ज़िम्मेदारी यह थी कि समन्दर की तरफ़ से सलीबियों के लिए मदद और रस्द वग़ैरह आये तो उसे साहिल तक पहुंचने न दे। उसकी ज़िम्मेदारी ने उसकी नींदें भी हराम कर रखी थीं। यह दो लड़कियाँ उसके असाब को सहला लिया करती थीं।

अल्फ़ारस ने उन लड़कियों से एक रोज़ कहा कि उनमें ख़ानाबदोशों वाली आदतें नहीं, उनकी बजाए इनमे शाइतगी और नफ़ासत है। यह इनमें कहाँ से आ गयी है।

"हम बड़े-बड़े इसाई घरों में नौकरियाँ करती रही हैं।" एक लड़की ने जवाब दिया-"उन्होंने हमें मेज़बानी के आदाब और उंचे दरजे के मेहमानों के साथ सलूक और बरताव के तौर तरीके सिखा दिए थे। अगर आप मामूली आदमी होते तो हम आपके साथ ख़ानाबदोशों जैसा सलूक करतीं। हमारी बातें और हरकतें ख़ानाबदोशों जैसी होतीं। आप बहरिया के इतने बड़े कमाण्डर हैं और आप के दिल में हमारी इतनी ज़्यादा मोहब्बत है। हम आप के साथ उजड्डो जैसा सलूक नहीं कर सकतीं।"

दूसरे पांच जहाज़ों के कप्तानों को पता चल चुका था कि उनका कमाण्डर अल्फ़ारस अपने जाहाज़ में दो लड़कियाँ लाया है। सब यह ख़बर सुनकर हंसते या मुस्कुराये थे, लेकिन सबने महसूस किया था कि जहाज़ में जंग के दौरान अपनी बीवी को रखा जा सकता है अजनबी लड़कियों को रखना ख़तरे से खाली नहीं। उन्होंने अल्फ़ारस से बात की और उसने सबको मुत्मईन कर दिया था। सब इसलिए जल्दी मुत्मईन हो गये थे कि वह अल्फ़ारस को अर्से से जानते थे। वह बदकार आदमी नहीं था। फ़राईज़ से कोताही बर्दाश्त नहीं करता था।

❖

बैतुल मुक़द्दस के अन्दर की कैफ़ियत ग़ैर मामूली थी। यहाँ मुसलमानों पर जो ज़ुल्म व तशद्दुद हो रहा था उसकी मिसाल कम अज़कम फ़िलिस्तीन के मकबूज़ा इलाकों में नहीं मिलती थी। उस ज़ुल्म व तशद्दुद की तारीख़ पुरानी थी। 1099 में सलीबियों ने बैतुल मुक़द्दस फ़तह किया था। यह मुसलमानों की बेइत्तफ़ाकी और इक़्तेदार की ख़ातिर ग़द्दारी करने वालों का करिश्मा था। तारीख़ में हम्लावरों ने उससे ज़्यादा बड़े और अहम शहर फ़तह

किये हैं लेकिन सलीबियों ने बैतुल मुक़द्दस फ़तह किया तो उसे इस क़दर अहमियत दी जैसे उन्होंने आधी दुनिया फ़तह कर ली हो सारे यूरोप बल्कि तमाम तर ईसाई दुनिया और कलीसा की नज़रें बैतुल मुक़द्दस पर लगी हुई थीं।

इस अहमियत की वजह यह थी कि बैतुल मुक़द्दस को ईसाई अपना मुक़द्दस मुक़ाम समझते थे। उनके अक़ीदे के मुताबिक़ हज़रत ईसा को उसी इलाक़े में कहीं मस्लूब किया गया था। दूसरी वजह कि बैतुल मुक़द्दस मुसलमानो का क़िब्ला अव्वल है। रसूल यहीं से मेराज पर तशरीफ़ ले गये थे। इस लिहाज से मस्जिदे अक़्सा का तक़दुस खाना काबा से कम न था। मुसलमान बैतुल मुक़द्दस को अपना नज़रियाती मरकज़ समझते थे। यह हमारे अक़ीदे का मरकज़ था। (और अब भी है) ईसाई मुसलमानों के इस नज़रियाती सर चश्में पर क़ब्ज़ा करके हमारे नज़रियात और अक़ायद को बातिल क़रार देना चाहते थे सलीबियों की इन्टेलीजेंस के सरबराह ने ग़लत नहीं कहा था कि सलीबी जंगे मुसलमानों और ईसाईयों के बादशाहों की नहीं, यह कलीसा और काबा की जंगे हैं जो उस वक़्त तक लड़ी जाती रहेंगी जब तक दोनों में एक ख़त्म नहीं हो जाता।

जिस तरह हिन्दुओं ने मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंग को और मुसलमनों को शिकस्त देने को और मुसलमानों को न सिर्फ़ मैदाने जंग में बल्कि धोखे से भी क़त्ल करने को मज़हबी फ़रीज़ा क़रार दे रखा है, उसी तरह सलीब के पादरियों ने भी मुसलमानों के क़त्ल को कारे सवाब क़रार दे रखा था। ईसाईयों को जंग के एहकाम बड़े पा (पोप) की तरफ़ से मिलते थे। आप ने पढ़ लिया है हतीन की जंग में अकरा का पादरी उस सलीब के साथ मैदाने जंग में मौजूद था जिस पर हज़रत ईसा को मसलूब किया गया था। यह सबूत है उस हक़ीक़त का कि काबा के खिलाफ़ जंग कलीसा ने शुरू की थी और यह दोनों मज़हबों और दो नज़रियात की जंग थी।

यह बताया जा चुका है कि सलीबी जंगों में शामिल होनेवाले बादशाहों, जरनलों और अदना सिपाहियों तक से सलीबुल सलबूत पर सलीब से वफ़ादारी और जान व माल की क़ुर्बानी का हलफ़ लिया जाता था। इस हलफ़ से वह सलीबी कहलाए और बैतुल मुक़द्दस के लिए जो जंगें लड़ी गयीं उन्हें सलीबी जंगे कहा गया। ईसाई दुनिया में मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंग और सरज़मीन अरब पर क़ब्ज़ा करने को ऐसा जुनून बना दिया था कि औरतें अपने ज़ेवरात और माल व दौलत कलीसा के हवाले कर देती थीं। जुनून की इन्तेहा यह थी कि जवान लड़कियों ने अपनी इस्मतें सलीब की फ़तह और मुसलमानों की शिकस्त के लिए पेश कर दीं। कलीसा ने खुली इजाज़त दे दी कि मुसलमान की किरदार कुशी और नज़रियाती तख़रीब कारी के लिए ईसाई लड़कियों को इस्तेमाल किया जाए। लड़कियों को यक़ीन दिलाया गया कि कलीसा के मक़सद के और अज़ाइम की ख़ातिर इस्मत क़ुर्बान करने वाली लड़की जन्नत में जाएगी।

इसी अक़ीदे के तेहत ख़ूबसूरत लड़कियों को बक़ायदा तरबियत दे कर मुसलमानों के इलाक़ों में भेजा गया। यह मुसलमान उमरा के हरमो में दाख़िल हुई और वह तबाही बपा की

जो आप इस सिलसिले की कहानियों में तफ़सील पढ़ चुके हैं। इस मुकाबले में मुसलमान आपस में टकराते रहे और सलीबियों के फैलाये हुए इस हसीन जाल में ऐसे आये कि मज़हबी नज़रियात और अकायद को नज़रअन्दाज़ करके तख़्त व ताज के शैदाई हो गये। उन्होंने ईमान नीलाम कर दिए। फिर भी कुछ लोग अभी ज़िन्दा थे जिनकी रूहें ईमान के नूर से मनव्वर थीं। वह बैतुल मुक़द्दस की पासबानी करते और लहू के नज़राने देते रहे मगर यह कानूने फ़ितरत है कि एक ग़द्दार सारी कौम को बेकार करने के लिए काफ़ी होता है और जब ग़द्दार साहबे इक्तेदार हो तो दुश्मन से दस गुना ज़्यादा फ़ौज भी शिकस्त खा जाती है।

इसी का नतीजा था कि सलीबी 15 जुलाई 1099 ई0 (22 शाबान 492 हि0) के रोज़ बैतुल मुक़द्दस पर क़ाबिज़ हो गये। इस फ़तह में जिन मुसलमान उमरा और रियासतों के हुक्मरान ने सलीबियों को मदद दी थी और जिस तरह मदद दी वह एक तवील और शर्मनाक कहानी है। मिसाल के तौर पर इतना ही बताना होगा कि जब सलीबी फ़ौज बैतुल मुक़द्दस की तरफ बढ़ रही थी शहज़ा के अमीर ने न सिर्फ़ यह कि उस फ़ौज को न रोका बल्कि उसे रस्द भी दी और रहबर भी दिए। हमात और त्रिपोली के मुसलमान उमरा ने भी सलीबी फ़ौज को रास्ता देकर रस्द बल्कि तहाइफ़ भी दिए और अपने क़िब्ला अव्वल को रवाना किया। रास्ते में कई एक मुसलमान रियासतें आती थीं। उन्होंने अपनी रियासत और हुकूमत के तहफ़ुज़ की खातिर सलीबियों के दिलकश हसीन तोहफ़े क़ुबूल किये और उनके एवज में सलीबी फ़ौज की ज़रूरियात पूरी कीं।

अकरा का अमीर मर्दे मोमिन था जिसकी जंगी ताक़त सलीबियों के मुक़ाबिले में कुछ भी नहीं थी लेकिन उसने सलीबी फ़ौज के जरनलों के मुतालिबे पर भी उन्हें कुछ न दिया बल्कि उनके चैलेंज को क़ुबूल करके उन्हें मुक़ाबिले के लिए ललकारा। सलीबी फ़ौज ने अकरा को मुहासिरे में ले लिया। 14 फ़रवरी से 13 मई 1099 तक अकरा के मुसलमानों ने ऐसी बेजिगरी से मुकाबला किया कि सलीबी फ़ौज ने बहुत सा जानी नुकसान उठा कर मुहासिरा उठा लिया और रास्ता बदल कर आगे चली गयी। अगर यह तमाम मुसलमान उमरा अपने अपने इलाके में बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ बढ़ती हुई सलीबी फ़ौज के सामने मुज़ाहिम होते रहते तो उनका अपना नुक़्सान तो ज़रूर होता लेकिन सलीबी फ़ौज का ख़ून क़तरा–क़तरा बह कर ख़त्म हो जाता। यह फ़ौज अपने प्लान से दो ढाई साल ताख़ीर से बैतुल मुक़द्दस पहुंची और उसके जिस्म में ख़ून का एक क़तरा न था।

❖

यह कहना ग़लत नहीं सलीबियों को बैतुल मुक़द्दस तक मुसलमान उमरा ने ताज़ा दम और रस्द से माला माल करके पहुंचाया। उसकी सज़ा उन मुसलमानों को मिली जो बैतुल मुक़द्दस में आबाद थे। वहाँ मुसलमान जायरीन भी गये हुए थे वह भी कुचले गये। 7 जून 1099 के रोज सलीबियों ने इस अज़ीम और मुक़द्दस शहर का मुहासिरा किया। वहां हुकूमते मिस्र का गवर्नर इफ़तेखारुद्दौला था। जिसने मुहासिरे में बेमिसाल शुजाअत और अस्करी ज़ेहानत से मुकाबिला किया। शहर के जैश क़िले से निकाल कर सलीबियों पर हम्ले कराये

मगर सलीबियों के पास साज़ो सामान की अफ़रात थी और फ़ौज तो बे शुमार थी। 15 जुलाई 1099 ई0 सलीबी फ़ौज शहर में दाखिल हो गयी।

तमाम तर यूरोप और हर ईसाई मुल्क में जश्न मनाये गये मगर भयानक और हौलनाक जश्नवह था जो फ़ातेह सलीबियों ने बैतुल मुक़द्दस के अन्दर मनाया। सलीबी सिपाही मुसलमानों के घरों में घुस गये। लूट मार की। किसी घर की किसी फ़र्द को, ख़्वाह वह बूढा था या दूध पीता बच्चा, ज़िन्दा न छोड़ा। ज़िन्दा रहने दिया तो सिर्फ़ जवान लड़कियों को जो उनकी दरिन्दगी की अज़ीयतों से मरीं। गलियों में भागते हुए मुसलमान बच्चों, औरतों औरमर्दों को वहशियाना तरीके से क़त्ल किया गया। सलीबी नन्हें-नन्हें बच्चों को बरछियों की अन्नियों में उड़स कर उपर उठाते और चीख़ चीख़ कर कहकहे लगाते थे। खुले आम आबरू रेज़ी और मक़तूलीन के सर काट कर उन्हें ठुड मारना सलीबियों का मनपसन्द खेल बन गया था।

मुसलमानों को एक ही पनाह नज़र आती थी जिसके मुतअल्लिक उन्हें यक़ीन था कि जान की अमान मिलेगी और किसी भी मज़हब का पैरोकार वहाँ उनपर ज़्यादती करने को गुनाह समझेगा। यह थी मस्जिदे अक़्सा। मुसलमान अपने बाल बच्चों को लेकर मस्जिदे अक़्सा में चले गये। जिन्हें वहाँ पाँव रखने को भी जगह न मिली। वह बाबे दाऊद और दूसरी मस्जिदों में चले गये। ख़ुद ईसाई मोअर्रिख़ीन लिखते हैं कि इन पनाह गुज़ीन मुसलमानों की तादाद सत्तर हज़ार के लगभग थी। सलीबी जो मस्जिदे अक़्सा को अपनी इबादतगाह कहते थे उसके एहतराम का ज़र्रा भी ख़्याल न किया। वह पनाह गुज़ीनों पर टूट पड़े। किसी एक को ज़िन्दा न छोड़ा। मस्जिदे अक़्सा, बाबे दाऊद और तमाम मस्जिदें लाशों से अट गयीं और ख़ून बाहर निकलने लगा। मोअर्रिख़ीन ने इन अल्फ़ाज में बयान की है– "सलीबियों के घोड़ों के पाँव टखनों तक मुसलमान शहरियों के खून में डूब गये थे।"

लड़कियो को मस्जिदों और मुसलमान के दिगर मुक़द्दस जगहों में ले जाकर बेआबरू किया जाता था। सब से ज़्यादा बदनसीब यह लड़कियाँ थीं और उनके जंगी क़ैदी। जंगी क़ैदियों को मवेशी बना लिया गया था। उन्हें खाने को कम दिया जाता और मुशक्कत ज़्यादा ली जाती थी। जिन कामों में पहले घोड़े और उंट इस्तेमाल होते थे उनमें अब जंगी क़ैदी इस्तेमाल होने लगे। उनके हाथों मस्जिदें मिस्मार कराई गयीं। जिन्होंने इन्कार किया उन्हें बेदर्दी से क़त्ल कर दिया गया। किसी वहशी सलीबी ने एक जंगी क़ैदी को क़त्ल करके उसके जिस्म का गोश्त काटा और पकाकर खाया। उसने अपने साथियों से कहा कि गोश्त लज़ीज़ है। उसके बाद सलीबियों ने इन्सान खोरी (बल्कि मुसलमान खोरी) शुरू कर दी। जब कभी जश्न या तकरीब मनाते एक दो तन्दुरुस्त और तवाना मुसलमान क़ैदियों को क़त्ल करके उनका गोश्त खाते थे।

इसकी तरदीद ईसाई मोअर्रिख़ीन ने की है लेकिन इन्सान खोरी के वाक़िआत ख़ुद यूरोपियन मोअर्रिख़ीन ने ही अपनी तहरीरों में बयान किये हैं।

मस्जिदों को हराम कारी के लिए इस्तेमाल करने के अलावा इनमें घोड़े बांधे। मस्जिदे अक़्सा में मुख़्तलिफ़ मुसलमान सलातीन और दिगर दौलत मन्द जायरीन ने सोने और चांदी

के फ़ानूस और कंदीलें लगवाई थीं। तोहफ़े के तौर पर सोने और चांदी की कई एक ईशिया रखी थीं। सलीबियों ने यह तमाम फ़ानूस, कंदीलें और बेशक़ीमत चीजें उठा लीं और मस्जिद की मुंडेर पर सेलीब नस्ब कर दी।

❖

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी को बैतुल मुक़द्दस की बेहुर्मती और वहाँ के मुसलमानों पर वहशियाना मुज़ालिम की कहानी उसके बाप नजमुद्दीन अय्यूबी ने बचपन मे सुनानी शुरू कर दी थी। नजमुद्दीन अय्यूबी को रूवेदाद उसके बाप (सुल्तान अय्यूबी के दादा) शादी ने सुनाई थी। यह रूवेदाद सुल्तान अय्यूबी के ख़ून में शामिल हो गयी थी। उसने क़सम खाई कि वह बैतुल मुक़द्दस को आज़ाद करायेगा। अब जबिक वह उस मुक़द्दस शहर को फ़तह करने निकला था तो उसके दो बेटे, अल्मलकुल अफ़जल और अल्मलकुल ज़ाहिर, जवान थे और उसकी फ़ौज में थे। बैतुल मुक़द्दस के मुतअल्लिक जो बातें उसे अपने बाप ने सुनाई थीं वह उसने अपने बेटों को यूं सुना दी थीं जैसे एक कीमती वरसा उनके हवाले किया हो।

"बेमक़सद जीने से क़ब्ल अज़ वक़्त मर जाना बेहतर है।" उसने अपने बेटों की जंगी तरबियत मुकम्मल करे उन्हें अपनी फ़ौज में शामिल करते हुए कहा था—"यह अल्फ़ाज तुम्हारे दादा मरहूम के हैं जो उन्होंने मुझे उस वक़्त कहे थे जब मैं चचा शेर कोह के साथ सलीबियों के खिलाफ़ पहली जंग लड़ने को चला था। उन्होंने कहा था, मुझे नज़र आ रहा है कि तुम किसी जगह के हुक्मरान बनोगे और यह भी मुम्किन है कि तुम सुल्तान बन जाओ। याद रखो बेटे! तुम आज से मेरे बेटे नहीं क़ौम के बेटे हो। क़ुर्आन का हुक्म है कि मां बाप की ख़िदमत करो। अब तुम्हारे मां बाप क़ौम और सल्तनत हैं। औलाद को मां बाप पर हुक्म चलाने और उनका दिल दुखाने से अल्लाह ने मना किया है। ख़्याल रखना युसुफ़! क़ौम का दिल न दुखाना। देखना कि तुम पर क़ौम का क्या—क्या हुकूक़ हैं। यह अदा करना.......

"और मेरे अज़ीज़ बेटो! तुम्हारे दादा ने कहा था कि जो लोग क़ौम की आन पर, अल्लाह की राह में शहीद हुए हैं उन्हें न भूलना। जो क़ौम अपने शहीदों को भूल जाती है उस क़ौम को खुदा भूल जाता है। जिस क़ौम से ख़ुदा नज़रें फेर लेता है, तुम नहीं जातने कि यह दुनिया उसके लिए जहन्नम बन जाती है। उसके इबादतगाहें अस्तबल और उसकी बेटियां दुश्मन की अय्याशी का सामान बन जाती हैं। उस क़ौम की तक़दीर उसके हाथ से निकल जाती है. ....जब तुम्हें हुकूमत की मस्नद पर बैठाया जाएगा तो क़ौम को रिआया न समझना। बन्दों पर हुकूमत का हक सिर्फ़ अल्लाह का है, बन्दों पर हुकूमत करके अल्लाह की बराबरी का गुनाह करोगे तो अंजाम मिस्र के फ़िरऔनो वाला होगा। हुकूमत का मतलब वह जिम्मेदारी होती है जो क़ौम की तरफ़ से अल्लाह उसके हुक्मरानों पर आयद करता है। हुक्मरान की अपनी कोई ज़ात नहीं रहती। वह फ़र्द की हैसियत से मर जाता है। वह क़ौम का अमीन और क़ौम का हिस्सा बन जाताहै। क़ौम को फ़ाके करने पड़ें तो हुक्मरान को अपना पेट नहीं भरना चाहिए। वह अपने मुँह में निवाला डाले तो उसे यक़ीन कर लेना चाहिए कि क़ौम के हर फ़र्द के मुँह में ऐसा ही निवाला जा रहा है। वह जब घोड़े पर सवार होतो देखो कि उसकी गर्दन मस्जिद के

मीनार की तरह अकड़ कर सीधी तो नहीं हो गयी?.....

"और मेरे अज़ीज़ बेटो! तुम्हारे दादा ने कहा था कि गर्दन उस रोज़ उंची करना जिस रोज़ मस्जिदे अक़्सा को कुफ़्फ़ार से आज़ाद करा लोगे। इत्मीनान की नींद उस रात सोना जिस रात मस्जिदे अक़्सा में फ़तह के नफ़िल पढ़ लोगे और उस मस्जिद की दहलीज़ जहाँ से हमारे रसूल मेराज के लिए अल्लाह के हुज़ूर गये थे, अपने आँसूओ से धोओगे........और मेरे बेटो! वह बच्चे जो बैतुल मुक़द्दस की गलियों और मस्जिदों में क़त्ल हुए थे और कौम की वह बेटियाँ जो वहाँ बेआबरू हुई थीं, मुझे रातों को सोने नहीं देतीं। जिस मस्जिद में मेरे अल्लाह के रसूल के मुबारक क़दम गये और जिस मस्जिद में रसूल पाक की मुबारक जबीं ने सज्दे किए थे, उस मस्जिद की ईंटें रात भर मेरे उपर गिरती रहती हैं। मैं बिदक–बिदक जाता हूँ। कभी दर्द से कराहती हुई ऐसी सदाएं सुनाई देती हैं जैसे मस्जिदे अक़्सा में क़त्ल होने वाले बच्चे बज़ुबान गिरीया अज़ानें दे रहे हों....वह तुम्हें पुकार रहे हैं मेरे बेटो! वह मुझे पुकार रहे हैं।

"और तुम्हारे दादा ने बुढ़ापे से कांपते हुए हाथ मुझे दिखा कर कहा था कि मैंने अपनी जवानी तुम्हें दे दी है। जो काम मैं नहीं कर सका वह तुम करो। बैतुल मुक़द्दस जाओ और यही तुम्हारे जीने का मक़सद होगा। सल्तनत की मस्नद पर बैठ कर अपने दुश्मन को इसलिए नज़र अन्दाज़ किये रखोगे कि इत्मीनान से कौम पर हुकूमत कर सको तो उस मस्नद की उम्र तवील नहीं होगी। शहीदों की रूहें जिन्नात बन कर तुम्हारे मस्नद को उलट देंगी। जीने का मक़सद वह रखो जो ख़ुदा को अज़ीज़ हो और जिस में क़ुर्आन का हुक्म शामिल हो.....

"मेरे अज़ीज़ बेटो! आज मैं अपने बाप का वरसा तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ। आज से तुम मेरे नही मिल्लते इस्लामिया के बेटे हो। मैंने तुम्हारी माँ से कह दिया है कि भूल जा तेरी कोख ने कोई बेटे जने थे। अगर उन्हें भूल न सको तो उनकी जिन्दगी की दुआ न करना, मैं उन्हें वहाँ ज़बह कराने ले जा रहा हूँ जहाँ इब्राहीम ने अपने बेटे इस्माईल को अल्लाह की राह में कुर्बान करने के लिए उसकी गर्दन पर छुरी रखी थी। अगर दुआ करनी है तो अल्लाह से यह इल्तिजा करना कि तूने जो दूध उन बच्चों को पिलाया है यह नूर से मनव्वर खून बन कर मस्जिदे अक़्सा का फ़र्श धो डाले.....और अल्लाह करेगा ऐसा होगा। अहद करो मेरे बेटो! मैं ज़िन्दा न रहा तो बैतुल मुक़द्दस को तुम आज़ादा कराओगे।"

उसने दोनो बेटों को 1099ई0 की ख़ुंचकां दास्तान सुनाई और उसने बेटों को जाने की इजाज़त दी तो उन्होंने सुल्तान अय्यूबी को उस तरह सलाम न किया जिस तरह बेटे अपने बाप को किया करते हैं। वह उठे और अलअफ़ज़ल जो बड़ा था, बोला–'सुल्तान आली मुक़ाम! सिर्फ़ शहीद होना कोई कारनामा नहीं। हम शहादत से पहले बैतुल मुक़द्दस की गलियों में दुश्मनों का इतना खून बहायेंगे कि आप के घोड़े के पांव फिसलेंगे और हम देखेंगे कि आप मस्जिदे अक़्सा से सलीब अपने हाथों उतार कर सलीबियों के ग़लीज़ ख़ून में फेंक रहे हैं।"

"मगर यह ख़ून निहत्थे शहरियों का नहीं होगा अल अफ़ज़ल!" सुल्तान अय्यूबी ने कहा

"यह ख़ून ज़िरहपोश सलीबियों का होगा।" अल अफ़ज़ल ने कहा–"यह ख़ून उस लोहे से टपकेगा जिससे सलीबियों ने अपने जिस्म ढांप रखे हैं। ईमान की तलवार बातिल के

फ़ौलाद को काटने की ताकत रखती है।"

"अल्लाह तुम्हारी ज़ुबान मुबारक करे।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा

बेटों ने फौजी अन्दाज़ से बाप को सलाम किया और बाहर निकल गये।

❖

अब सुल्तान अय्यूबी बैतुल मुक़द्दस से चालीस मील दूर बहेरा रोम के किनारे अस्कलान में उस चीते की तरह बैठा था जो अपने शिकार पर झपटने के लिए तैय्यार हो। जज़्बाती तौर पर वह फ़ौरन बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ पेशक़दमी करने को तैय्यार था। लेकिन वह जंग के हक़ाइक़ को देख रहा था। यह चालीस मील का फ़ासला तो जैसे आतिश फ़िशां चट्टानों से भरा पड़ा था। बैतुल मुक़द्दस का दिफ़ाअ ही ऐसा था। सिर्फ़ शहर के इर्द गिर्द ही दिवार नहीं थी बल्कि उस शहर के इर्द गिर्द दूर दूर तक के इलाके में छोटी छोटी किला बन्दियां और सलीबी फ़ौज की चौकियाँ थीं। गश्ती पहरे का इन्तज़ाम भी था। घोड़सवार पार्टियां उन रास्तों पर घूमती फिरती थी जिन से बैतुल मुक़द्दस तक पहुँचा जा सकता था। अब दफ़ाई इन्तज़ामात पहले से ज़्यादा कर दिए गये थे। बैतुल मुक़द्दस के अन्दर जो फ़ौज थी उसके जरनलों को सुल्तान अय्यूबी की हर एक नकल व हरकत का इल्म था मगर उनमें अब इतनी हिम्मत नहीं रही थी कि सुल्तान अय्यूबी को अस्कलान में रोक लेते या उस पर जवाबी हम्ला करते। हतीन से अस्कलान तक सुल्तान अय्यूबी ने उनकी अस्करी कुव्वत का बहुत ज़्यादा ख़ून निकाल दिया था।

बैतुल मुक़द्दस का हुक्मरान गाई ऑफ़ लोज़िनान था जो हतीन में जंगी कैदी हो गयाऔर अब दमिश्क़ के कैदखाने में था। वह जो फ़ौज अपने साथ ले गया था उसका कुछ हिस्सा मारा गया। कुछ जंगी कैदी हुआ और बाक़ी फ़ौज ऐसी भागी कि अगर उसके अफसर, सिपाही और ज़िरापोहश नायट ज़ख्मी या ख़ौफ़ज़दगी की हालत में बैतुल मुक़द्दस में आ रहे थे। नायटों के मोराल में कुछ जान थी क्योंकि उन्हें अपने रुत्बे और एज़ाज़ का पास था। दिगर फ़ौज ने शहर में जाकर दशहत फैला दी। जरनलों ने नायटों के अज़ सरे नौ मुंज़िम कर लिया। इस तरह बैतुल मुक़द्दस के अन्दर की तादाद साठ हज़ार हो गयी थी। चूंकि यह तमाम आबादी को मालूम हो गया था कि सुल्तान अय्यूबी शहर पर शहर फतह करता आ रहा है इसलिए शहरी भी लड़ने मरने के लिए तैय्यार हो गये। शहर के दिफ़ाअ को और ज़्यादा मुस्तहकम कर लिया गया।

शहर के एक दो दरवाज़ों को दिन के दौरान खुला रखना पड़ता था क्योंकि मैदानें जंग से भागे हुए सलीबी अकेले-अकेले और दो-दो चार चार की टोलियों में आते रहते थे। सुल्तान अय्यूबी के जासूसों ने जो पहले ही शहर में मौजूद थे, अब भागे हुए सलीबियों के भेस में चन्द और जासूस अन्दर चले गये और शहर के दिफ़ाई इन्तज़ामात और दिवार को अच्छी तरह देखकर निकल भी आये। मुसलमान पर पाबन्दियाँ पहले से ज़्यादा सख़्त कर दी गयीं।

❖

बैतुल मुक़द्दस से दस बारह मील अस्कलान की तरफ़ सलीबियों की एक चौकी थी

जिसमें एक सौ के क़रीब सलीबी फौजी रहते थे उन्होंने ख़ेमे नस्ब कर रखे थे। सितम्बर 1187 ई० की एक रात उनकी चौकी के क़रीब एक धमाका सा हुआ, फिर दो तीन और ऐसे ही धमाके हुए। उनके फ़ौरन बाद शोले उठे और तीन चार ख़ेमे जलने लगे। सिपाही जागकर इधर उधर भागे। ज्योंहि फ़ौजियों में हलचल मची, उन पर हर तरफ़ से तीर आने लगे। जलते फ़लीते की रौशनी में वह नज़र आ रहे थे। यह आतिश गीर सयाल की हांडियां थी जो सुल्तान अय्यूबी के एक छापामार जैश ने छोटी मिन्जनिकों से फेंकी थीं। यह चौकी में गिरकर टूटीं तो जहां यह गिरी थीं वहां जलते फलीतों वाले तीर चलाये गये। आतिशगीर सय्याल जल उठा।

सलीबी इधर उधर भागे तो उन्हें पता चला कि वह घेरे में आये हुए हैं और ज़िन्दा निकल नहीं सकेंगे। छापामारों ने ललकारना शुरू कर दिया—"ज़िन्दा रहना चाहते हो तो हथियार डाल कर एक तरफ़ खड़े हो जाओ।" शोलों की दहशत और तबाह कारी तो अपनी जगह थी, सुल्तान अय्यूबी के छापामारों की ललकार ने सलीबियों का रहा सहा दम ख़म भी ख़त्म कर दिया। वह हथियार डाल कर छापामारों की हिरासत में आ गये। उनकी तादाद पच्चीस तीस रह गयी थी। उनसे हथियार और घोड़े वग़ैरह लेकर पीछे भेज दिया गया।

सुबह तुलूअ हुई तो उस जली हुई चौकी में सुल्तान अय्यूबी के हरावल दस्ते का एक जैश पहुँच चुका था। उससे फ़ौज की पेशक़दमी खासे दूर इलाके तक महफ़ूज़ हो गयी। छापामारों की हालत जंगल के दरिन्दों की सी हो गयी थी। दो दो जांबाज़ झाड़ियों टीकरियों और चट्टानों में छुप–छुप कर घूमते फिरते रहते थे जहाँ उन्हें गश्ती सवारों या पयादा सिपाहियों की आवाज़े आती वह छुप जाते और जब सलीबी क़रीब आते यह उन पर टूट पड़ते। दो आदमी अगर छः आदमियों पर टूट पड़ते तो दो का क्या हश्र होगा। उससे छापामार शहीद भी होते थे जख़्मी भी।

यह उनकी इन्फ़रादी जंग थी। उन्हें कोई कमाण्डर देख नहीं रहा था। वह कहीं इधर उधर छुपे रहते तो कोई पूछने वाला नहीं था लेकिन जिसमानी ट्रेनिंग के साथ–साथ उन्हें जो रूहानी और ज़ेहनी ट्रेनिंग दी गयी थी उसने उन्हें आग बगूला कर रखा था। हतीन की फ़तह के बाद सुल्तान अय्यूबी ने जो बड़े शहर फ़तह किये थे वहाँ कि मुसलमानों की हालत फ़ौज को दिखाई गयी थी मस्जिदों की बर्बादी और बेहुर्मती दिखाई गयी थी और उन्हें बताया गया था कि यह जंग किसी बादशाह की बादशाही के तहफ़्फ़ुज के लिए नहीं लड़ी जा रही बल्कि यह इस्लाम के तहफ़्फ़ुज़ और उस अज़ीम मज़हब के दुश्मन के खिलाफ़ लड़ी जा रही है। उस ट्रेनिंग से यह जंग उनके ईमान का जुज़ बन गय थी।

अस्क़लान में सुल्तान अय्यूबी रात को सोता भी कम ही था। छापामारों की तरफ़ से क़ासिद आते रहते थे और बैतुल मुक़द्दस से कोई जासूस भी आता था। यह रात को भी आते थे। सुल्तान अय्यूबी ने हुक्म दे रखा था कि कहीं से कोई पैग़ाम किसी भी वक़्त आये उसे उसी वक़्त दिया जाए ख़्वाह गहरी नींद सो रहा हो। छापामारों की रिपोर्टें यही होती थीं कि फलां मुक़ाम पर सलीबियों की एक चौकी पर हम्ला किया गया। इतने सलीबी मारे गये और इतने छपामार शहीद और जख़्मी हुए हैं और फ़लां रास्ता साफ़ कर लिया गया है। उसके मुताबिक़

सुल्तान अय्यूबी नक़्शे पर पेशक़दमी के रास्ते की लकीरों में रद्दो बदल करता रहता था।

❖

सुल्तान अय्यूबी ने सालारों और नायब सालारों की आख़िरी कान्फ़्रेंस मुनक़िद की। उसमें बहेरिया के कप्तान अल्फ़ारस को भी बुलाया गया। अल्फ़ारस के पास जब क़ासिद पहुंचा तो उस वक़्त उसका जहाज़ अस्क़लान से बीस मील दूर खुले समन्दर में था। कश्ती उस तक पहुंचते आधा दिन लग गया और अलफारस उसी कश्ती में रात को अस्क़लान पहुंचा। क़ासिद ने उसे बताया था कि सुल्तान ने तमाम सालारों को बुलाया है। वह समझ गया कि यह बैतुल मुक़द्दस पर हम्ले के मुतअल्लिक़ इज्लास होगा। जहाज़ से क़ासिद के साथ रवाना होते वक़्त उसने दोनो लड़कियों को बतया कि वह अस्क़लान जा रहा है।

"सुल्तान ने बुलाया है?" एक लड़की ने पूछा।

"क्यों बुलाया है?" दूसरी ने पूछा।

"मेरे सरकारी फ़राईज़ के मुतअल्लिक तुम पूछना क्यों ज़रूरी समझती हो?" अल्फ़ारस ने उन्हें कहा–"तुम्हें कई बार कह चुका हूँ कि मेरी ज़ात के सिवा कुछ और न पूछा करो।"

दोनों हँस पड़ीं। एक बोली–"अगर हम इस काबिल होतीं तो आप की ग़ैर हाजिरी में आपके जहाज़ को संभाले रखतीं और दुश्मन के जहाज़ आ जाते तो उनसे लड़ाई करतीं।"

"तुम जिस काबिल हो मैं तुमसे वही काम लूंगा।" अल्फ़ारस ने कहा–"मेरी ग़ैरहाज़िरी में ज़्यादा वक़्त नीचे ही गुज़ारना उपर जाकर मलाहों और अस्करियों की कामों में दख़ल न देना।"

"आप कब वापस आयेंगे?"

'आज रात शायद न आ सकूं। अल्फ़ारस ने जवाब दिया–"कल शाम तक आ सकूंगा।"

अल्फ़ारस लड़कियों में पूरी तरह घुल मिल गया था। वह उससे सुल्तान अय्यूबी के आइंदा इक़दामात के मुतअल्लिक अक्सर पूछती थीं। यह भी पूछा करती कि बहरिया रोम में मिस्र और शाम का बहरा बेड़ा बन्दरगाहों में है या समन्दर में और कुल कितने जहाज़ हैं, इन में फ़ौज कितनी है। अल्फ़ारस ने उन्हें टालने की बजाए साफ़ कह दिया था कि वह उससे ऐसे सवाल न पूछा करें। इसके बावजूद वह अपने हुस्न और नाज़ व अदा का तिलिस्म तारी करके उससे कोई ऐसी बात पूछ ही बैठतीं थीं जो फ़ौजी राज़ होता था। अल्फ़ारस जज़्बाती मदहोशी से फ़ौरन बेदार हो जाता और उन्हें प्यार से डांट दिया करता था।

नशे की हालत में इन्सान दिल में छुपाई हुई बात उगल दिया करता है। नशा ख़्वाह शराब का हो या किसी दवाई का मगर अल्फ़ारस शराब नहीं पीता था, न जहाज़ में किसी को शराब या कोई और नशावार चीज रखने की इजाज़त थी। अल्फ़ारस बदकार भी नहीं था मगर अपने आप पर उन लड़कियो का नशा तारी कर लिया था जिससे उसकी थकन दूर हो जाती थी और वह ताज़ा दम हो जाया करता था। यह लड़कियाँ तरबियतयाफ्ता थीं। उन्होंने देखा कि अल्फ़ारस में न शराब की आदत है न उसके जज़्बात सिफ़ली और हैवानी हैं तो उन्होंने उस पर प्यार और मोहब्बत का नशा तारी करना शुरू कर दिया था, मगर अल्फ़ारस अपने फ़राईज़

और ज़िम्मेदारी का इतना पक्का था कि जज़्बात पर मदहोशी तारी होती तो भी अपने फ़र्ज़ से कोताही नहीं करता था।

❖

एक रात अल्फ़ारस गहरी नींद सोया हुआ था। लड़कियाँ अपने केबिन में थीं। दोनों ऊपर चली गयीं और अर्शे के जंगले के सहारे समन्दर पर चांदनी के बिखरे और चमकते हुए मोतियों से लुत्फ़ उठाने लगीं।

'रोज़ी!' एक लड़की ने दूसरी से कहा—"मुझे अपने सामने गहरा अंधेरा नज़र आता है। अल्फ़ारस लगता मोम है लेकिन कोई ऐसी वैसी बात पूछो तो पत्थर बन जाता है। मेरा ख़्याल है हम अपना यहाँ काम नहीं कर सकेंगी। क्या यह बेहतर नहीं होगा कि एन्डेरियो आये तो उसे कहें कि मुम्किन हो तो हमें यहाँ से निकाल ले जाए?"

एन्डरियो वह आदमी था जो छोटी सी कश्ती जहाज़ों के क़रीब लेजाकर खाने पीने और ज़रूरत की इश्या जहाज़ा के मलाहों और सिपाहियों के हाथ बेचता था। आप ने पिछली क़िस्त में पढ़ा है कि यह आदमी इन लड़कियों को इत्तफ़ाक से मिला था। वह ग़रीब माहीगीर के बहरूप में अपनी कश्ती पर अल्फ़ारस के जहाज़ के करीब चीजें बेचने आया था। उस ने लड़कियों को, और लड़कियों ने उसे पहचान लिया था और उन्होंने रस्सियों की सीढ़ी नीचे करवाके उसे चीजें खरीदने के बहाने ऊपर बुला लिया था। उसने लड़कियों को बताया था कि वह अल्फ़ारस के उन छः जहाज़ों के साथ साये की तरह लगा हुआ है और वह मौक़ा मिलते ही उन जहाज़ों को तबाह करा देगा। लड़कियों ने उसे बताया था कि वह किस तरह अल्फ़ारस से मिली थीं और उन्होंने खानाबदोश बनकर इस जहाज़ में पनाह ले ली है। लड़कियों ने उसे यह भी बताया कि वह पनाह के बहाने जासूसी और तबाहकारी करेंगी।

उस आदमी का नाम एन्डरियो था और वह तख़रीबकार जासूस था। पहली मुलाकात के बाद वह दो बार अपने बहरूप में आया और लड़कियों से मिला था। लड़कियों ने उसे बतया था कि अल्फ़ारस उनके जाल में नहीं आ रहा और वह कोई राज़ नहीं देता। एन्डरियों यह मालूम करना चाहता था कि यह जहाज़ कब तक इस ड्यूटी पर रहेंगे और यह टाइर की तरफ़ जायेंगे या नहीं। उसने लड़कियों से कहा था—"मालूम होता है कि तुम अपना फ़न भूल गयी हो। इस जहाज़ में अकेला अल्फ़ारस नहीं। उसके नायब को उसका दुश्मन बना दो। पाना जादू चलाओ। तुम क्या नहीं जानतीं? सब जानती हो।"

उस रात एक लड़की दूसरी से मायूस होकर कह रही थी कि रोज़ी, एन्डरियो आये तो उसे कहती हैं कि हमें यहाँ से निकाल ले जाए।

"सुनो फ़लोरी!" रोज़ी ने जवाब दिया—"एन्डरियो हमें यहाँ से निकाल नहीं सकेगा। यह जंगी जहाज़ है। तुम देख रही हो कि रात को अर्शे पर, बल्कि उपर देखो, मस्तूल पर मचान बनाये एक बहरी सिपाही खड़ा है। फ़रार की कोशिश में हमारे साथ एन्डरियों को भी पकड़े जाने का इम्कान है। हमें इतनी जल्दी मायूस नहीं होना चाहिए।"

'दूसरा हरबा इस्तेमाल करें?" फ़लोरी ने पूछा।

करना पड़ेगा।" रोज़ी ने कहा—" अल्फ़ारस का नायब कप्तान तो पहले ही हमें भूखी नज़रों से देखता और मुस्कुराता रहता है। यह लोग बड़े लम्बे अर्से से समन्दर में हैं। उनके सरों पर मौत मंडलाती रहती हैं। खुदा ने मर्द में औरत की जो कमज़ोरी पैदा की है वह इसी कैफ़ियत में उभतरी है। इशारे की देर है। यह बतादो कि यह काम मैं करूं या तुम करोगी। तुम्हें मुझ से ज़्यादा तजुर्बा हासिल है।"

"लेकिन इस काम के उसूल याद रखना।" रोज़ी ने कहा—"राज़ लेना लेकिन उसकी क़ीमत सिर्फ़ दिखा देना। अदा न करना। उस शख़्स में इतनी तिश्नगी बल्कि दिवानगी पैदा करना कि यह शख़्स तुम्हेंया अल्फ़ारस को क़त्ल करने की बातें करने लगे।"

अल्फ़ारस का नायब रऊफ़ कुर्द था। वह इन लड़कियों को देखता और मुस्कुराता रहता था। उसे मालूम था कि यह अल्फ़ारस की बीवियाँ या दाश्ता नहीं और यह खानाबदोश हैं जिन्हें अल्फ़ारस ने अपने जहाज़ में पनाह दी है। रऊफ के दिल मे लड़कियों ने हलचल पैदा कर दी थीं। उस रात जब यह लड़कियाँ अर्शे पर जंगले का सहारा लिए बातें कर रही थीं, रऊफ़ अपनी ड्यूटी पर खड़ा उन्हें देख रहा था। अल्फ़ारस सुल्तान अय्यूबी के बुलावे पर जा चुका था। अब जहाज़ रऊफ़ कुर्द की तहवील में था।

फ़लोरी अर्शे के जंगले के साथ खड़ी रही। रोज़ी टहलने के अन्दाज़ से वहा से चल पड़ी और रऊफ़ कुर्द के क़रीब से गुज़रते हुए मुस्कुराई। रऊफ़ कुर्द ने उसे अपने पास बुला लिया और रस्मी सी बातें की। रोज़ी चलने लगी तो रऊफ़ कुर्द ने उसे रूकने को कहा।

"मैं आप के पास रूकी रही तो वह (फ़लोरी) नाराज़ होगी।" रोज़ी ने कहा।

"नाराज़ क्यों होगी?"

"अपने—अपने दिल की बात है।" रोज़ी ने कहा—"एक रोज़ अल्फ़ारस नीचे सो रहे थे और मैं उपर आपके पास खड़ी थी तो उसने देख लिया बाद में कहने लगी—"मेरी मिल्कियत पर क़ब्ज़ा न करो। रऊफ मेरा है। जब हम मिस्र जायेंगे तो मैं उसके साथ चली जाऊंगी।" यह अल्फ़ारस को पसन्द नहीं करती और उस डर से आपके क़रीब नहीं आती कि अल्फ़ारस नाराज़ होगा।"

रऊफ़ कुर्द के जज़्बात में ज़लज़ले बपा हो गये। मर्दाना फ़ितरत की कमज़ोरी ने उसे हथियार डलवा लिए उसने फ़लोरी और रोज़ी से ज़्यादा ख़ूबसूरत लड़कियाँ भी देखी थीं लेकिन उनके हुस्न और डील डौल मे जो ज़ुहद शिकन कशिश थी वह किसी लड़की में कभी नहीं देखी थी। अब उसे यह पता चला कि इनमें से एक उसे चाहती है तो उसका दिमाग जज़्बात के बनाए उस रास्ते पर चलने लगा जिसपर मर्द जाते नज़र आते हैं, वापस आते दिखाई नहीं देते। रोज़ी उसे तिलिस्म होश रूबा में छोड़कर चली गयी। उसने अपने केबिन में उतरने वाली सीढियों पर पांव रख कर पीछे देखा। रऊफ़ कुर्द आहिस्ता—आहिस्ता फ़लोरी की तरफ़ जा रहा था।

"आज रात सोओगी नहीं जवाशी?" रऊफ़ कुर्द ने फ़लोरी का वह नाम लिया जो उसने अल्फ़ारस को बताया था। रोज़ी ने अपना नाम अज़मीर बताया था। ख़ानाबदोश के नाम इसी

किस्म के हुआ करते थे।

रऊफ़ कुर्द को अपने क़रीब खड़ा देखकर वह ट्रेनिंग के मुताबिक़ ऐसे अन्दाज़ से शर्माई और मुस्कुराई कि इस अन्दाज़ से कुंवारी दुल्हन भी न शर्माती होगी। रऊफ़ कुर्द ने उसके कंधे पर हाथ रखा तो फ़लोरी सिकुड़ गयी।

"अज़मीर ने मुझे तुम्हारे मुतअल्लिक कुछ बताया है।" रऊफ़ ने कहा–"क्या यह सच है?"

फ़लोरी ने उसकी तरफ़ देखा और फ़ौरन गर्दन घूमा कर समन्दर की तरफ़ देखने लगी। रऊफ कुर्द ने अपना सवाल दुहराया और फ़लोरी के उस हाथ पर हाथ रख दिया जो जंगले पर रखा था। फ़लोरी ने आहिस्ता–आहिस्ता अपना हाथ उलटा करके उंगलियां रऊफ़ कुर्द की उंगलियों मे उलझा दीं.....थोड़ी ही देर बाद फ़लोरी उस जगह रऊफ़ कुर्द के साथ बैठी थी, जहाँ उसकी ड्यूअी थी। जहाज़ ने लंगर डाल रखे थे। दो तीन बत्तियां समन्दर पर तैर रही थीं। यह अल्फ़ारस के जहाज़ थे जो गश्त कर रहे थे।

आधी रात को रऊफ़ कुर्द की जगह उसके एक मातेहत को ड्यूटी पर आना था। रऊफ़ कुर्द ने फ़लोरी से कहा कि वह उसके केबिन मे चले और वह आता है। फ़लोरी चली गयी।

जहाज़ के अर्शे से सुबह की आज़ान की आवाज़ आई तो फ़लोरी रऊफ़ कुर्द की केबिन से निकली। उसने अल्फ़ारस के उस नायब को यक़ीन दिलाया था कि वह उसे दिल व जान से चाहती है और अल्फ़ारस को वह ख़ाविन्द की हैसियत से कभी क़ुबूल नही करेगी। उसने रऊफ़ कुर्द से भी क़हा–"अल्फ़ारस मुझे कहता था कि रऊफ़ के साथ बात न करना, बहुत बुरा आदमी है। हक़ीक़त यह है कि वह ख़ुद बहुत बुरा आदमी है। उसने हमें पनाह तो दी है लेकिन हमारी मजबूरी से पूरा–पूरा फ़ायदा उठा रहा है। अगर हम इतनी मजबूर न होती तो इतनी ज़्यादा क़ीमत कभी न देतीं।"

रऊफ़ कुर्द के दिल में अपनी मोहब्बत का धोखा और अल्फ़ारस की दुश्मनी पैदा करके वह उसके केबिन से निकल आई और जो बातें उसे अल्फ़ारस ने कभी नहीं बताई थीं वह रऊफ़ कुर्द ने उसे बता दीं।

उस रात सुल्तान अय्यूबी सोया नहीं। रात इज्लास में गुज़र गयी। वह ऐसा कोई ख़तरा मोल नहीं लेना चाहता था जिससे बैतुल मुक़द्दस का मुहासिरा नाकाम हो जाए। उसने सालारों वग़ैरह को बैतुल मुक़द्दस तक पहुंचने का रास्ता नक्शे पर दिखाया। उसने नक्शे पर उनकी जगहों पर निशान लगा रखे थे जहाँ कुछ दिन पहले सलीबियों की चौकियां थीं और अब वहाँ अपने छापमार थे या हरावल की थोड़ी–थोड़ी नफ़री थी या वहाँ कुछ भी नहीं था। रास्ता साफ़ था। ऐसी जगहों पर भी उसने निशान लगा रखे थे जहाँ सलीबियों की किलाबन्दियों की शिनाख़्त की चौकिया अभी मौजूद थीं और उनमे नफ़री कुछ ज़्यादा थी। सुल्तान अय्यूबी ने सब को बताया कि उसने उन पर क़ब्ज़ा करने की कोशिश ही नहीं की क्योंकि वह अपनी जंगी ताकत ज़ाया नहीं करना चाहता था। उसका इलाज इनसे यह बताया कि उसने यह सब चौकिया बुलन्दियों पर हैं इसलिए उन्हें नज़र अन्दाज़ करके ज़रा सा दूर

से गुज़ारना है। उनमें जो फ़ौज है वह उनमें बैठी रहे। यह थोड़ी थोड़ी नफ़री बाहर आकर हमारा रास्ता रोकने की जुर्रत नहीं करेगी।

"लेकिन दूर से हमें देखकर उनमें से कासिद बैतुल मुक़द्दस जो ख़बर देंगे।" एक सालार ने कहा–"फिर हम बैतुल मुक़दस वालों को बेख़बरी में नहीं ले सकेंगे।"

"बेख़बरी में जा लेने की उम्मीद दिल से निका दो।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा–"सलीबियों को अच्छी तरह मालूम है कि हम बैतुल मुक़द्दस जा रहे हैं उनका अन्दाज़ बताता है कि वह बैतुल मुक़द्दस के रास्ते में मुकाबले में नहीं आयेंगे। एक तो शहर में पहली फ़ौज है जो किसी जंग में शरीक नहीं हुई। यह शहर के दिफ़ाअ के लिए महफ़ूज़ और तैय्यार रखी गयी है। वहाँ से जासूस इत्तलाअ लाए हैं कि यह फ़ौज दिन रात मुहासिरे में लड़ने और मुहासिरा तोड़ने की मश्क़ करती रहती हैं। उसमें इज़ाफ़ा यूं हुआ कि हम ने जो मुक़ामात फ़तह किये हैं वहाँ की भागी हुई फ़ौज भी बैतुल मुक़द्दस चली गयी है। उसमें ज़िरहपोश नायट भी हैं। हमारे जासूस ने बताया है कि मुहासिरे के दौरान यह नायट दरवाज़ों से बाहर आकर हम्लें करेंगे और हर हम्ले के बाद शहर में चले जाएंगे। उन्होंने यह तरीक़ा हमसे सीखा है। झपटा मारो और ग़ायब हो जाओ। लिहाज़ा यह न समझो कि तुम दुश्मन को बेख़बरी में जा लोगे, दुश्मन तुम्हारे इन्तज़ार में तैयार खड़ा है। फिर भी मैंने इन्तज़ाम कर रखा है कि सलीबियों की किसी चौकी से कोई क़ासिद बैतुल मुक़द्दस न पहुंच सके। बैतुल मुक़द्दस और उनकी चौकियों के दर्मियान हमारे छापामार मौजूद हैं। किसी को ज़िन्दा नहीं जाने देंगे.....

"फ़ौज की तादाद के मुतअल्लिक़ जासूस मुख़्तलिफ़ इत्तलाअें लाए हैं। इनसे मैंने यह अन्दाज़ा लगाया है कि बैतुल मुक़द्दस के अन्दर सलीबियों की बक़ायदा फ़ौज की तादाद साठ हज़ार से कुछ ज़्यादा हो सकती है कम नहीं होगी। यह भी ज़ेहन में रखना कि वहाँ मुसलमान क़ैद और नज़रबन्दी में हैं इसलिए वह अन्दर से हमारी कोई मदद नहीं कर सकेंगे। उसके मुकाबले में ईसाई शहरी अपनी फौज के दोश बदोश मुहासरे में बेजिगरी से लड़ेंगे। ईसाइयों ने अपने बच्चों को भी तीर अन्दाज़ी की तरबियत दे रखी है। शहर की दिवारों के उपर से हम पर तीर सही मानों मे मुसलाधार बारिश की तरह आयेंगे। यह भी ज़ेहन में रखो कि सलीबी तीर फेंकने के लिए एक नयी कमान लाए हैं। जिसकी शकल सलीब की सी है। उससे तीर दूर भी जाता है और निशाना भी सही होता है।"

सुल्तान अय्यूबी ने नक़्शे पर हाज़िरीन को तमाम जगहें और रास्ते वग़ैरह दिखाये फिर मुहासिरे के मुतअल्लिक हिदायात दीं और सबसे पूछा कि यह आख़िरी इज्लास है इसलिए किसी के ज़ेहन में कोई ज़रा सा भी शक हो तो वह रफ़ा कर ले और कोई सवाल ख़्वाह कितना ही बेमानी क्यों न हो पूछ ले। क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद जो इस तारीख़ी जंगी मुहिम में सुल्तान अय्यूबी के साथ था, अपनी डायरी, "सुल्तान यूसूफ़ पर क्या अफ़ताद पड़ी" लिखता है– "सुल्तान अय्यूबी ने (उस आख़िरी इज्लास में) रसूले अकरम सल्ल0 की यह हदीस सुनाई–"जिसके लिए कामयाबी का दरवाज़ा खुल जाता है उसे फ़ौरन दख़िल हो जाना चाहिए" मालूम नहीं यह दरवाज़ा कब बन्द हो जाए। सुल्तान अय्यूबी बहुत तेज़ी से मक़बूज़ा

इलाके और किले फतह करता आ रहा है इसलिए वह बैतुल मुकद्दस पर यलग़ार को अल्तवा में डालने के सख़्त ख़िलाफ़ था। उसने कहा–"ख़ुदा ने हमारी कामयाबी का दरवाज़ा खोल दिया है। बन्द होने से पहले उसमें दाख़िल हो जाओ।"

"मरे रफ़ीको!" उसने नक़्शा अलग रखते हुए कहा–"हतीन की जंग से पहले मैं ने तुम्हें दो बातें कही थीं, उन्हें दोहराना ज़रूरी समझता हूँ। इसके बाद हम बातें नहीं कर सकेंगे। कोई नहीं बता सकता कि हम एक दूसरे को ज़िन्दा मिलेंगे भी या नहीं। इससे पहले हमने सिर्फ़ लड़ाइयाँ लड़ी हैं। ख़ानाजंगी में एक दूसरे का ख़ून बहाया और दुश्मन को वक़्त और मवाकेअ फ़राहम किया है कि हमारे इलाकों में अपने किले मज़बूत और बैतुल मुक़द्दस का दिफ़ाअ मुस्तहक्म कर ले। फ़िर हम ज़मीनदोज़ जंग लड़ते रहे। सलीबी तिलिस्माती हुस्न वाली और नाज़ व अदा और चरब ज़ुबानी की माहिर लड़कियाँ हमारे अमीरों वज़ीरों, फ़ौजी और शहरी हाकिमों के पास भेजते रहे। सलीबियों ने तख़रीबकारी और साज़िश के महिरीन हमारी सफ़ों में दाख़िल किये। इन लड़कियों और इन आदमियों ने जो तबाही मचाई उससे तुममें से कोई भी बेख़बर नहीं। अली बिन सुफ़ियान, गयारा बलबीस और उनके मुहकमों ने बड़ी जानफ़िशानी से इन नज़र न आने वाले मुहाज पर दुश्मन का मुक़ाबला किया। मेरे हाथों तजुर्बाकार हुकाम और सालार ग़द्दारी के जुर्म में क़त्ल हुए। बग़ावतें हुईं और हमने दबाईं......

"दुश्मन का मक़सद क्या था? नज़रयाती तख़रीबकारी और हमारे मज़हब और ईमान को कमज़ोर करना और हमारी उठती हुई नस्ल को ज़ेहनी अय्याशी का आदी बना देना। दुश्मन ने हमारे दर्मियान ईमान फ़रोश पैदा किए। दुश्मन का मक़सद यह था कि हमारे क़िब्लाअव्वल पर क़ाबिज़ रहे और हमारे ईमान फ़रोश भाईयों की मदद से मक्का मुअज़्ज़मा पर भी क़बिज़ हो जाए तुम भूले नहीं होगे कि पांच साल गुज़रे जब मैं शुमाली इलाकों में दूश्मन से उलझा हुआ था, रिज्नॉल्ड (शहज़ादा अर्नात) मदीना मनव्वरा से थोडी ही दूर रह गया था। यह मेरे भाई अल्मुलक़ुल आदिल और अमीरुल बहर हिसामुद्दीन लौलूअ का कमाल था कि उन्होंने बर वक़्त हरकत की और उस सलीबी को पस्पा किया। मैंने उसे अपने हाथों क़त्ल करके इन्तक़ाम ले लिया है.....

"दुश्मन का मक़सद हमारे मज़हब के सर चश्मों को बन्द करना और उन्हें इसाईयत का मरक़ज बनाना है। हमारा मक़सद दुश्मन के मक़सद और अज़ाइम को तबाह करना है। लिहाजा ज़रूरी है कि इस जंग के उस पहलू को सामने रखो। यह हमारी नज़रयाती जंग है मज़हब तलवार के ज़ोर से फैलाया था या नहीं लेकिन मज़हब के तहफ़्फ़ूज़ के लिए मैं तलवार को ज़रूरी समझता हूँ। क़ौम ने तलवार सिपाही हाथ में दी है और क़ौम की तारीख़ ने नज़रें हम पर लगा दी हैं। ख़ुदाए ज़ुलजलाल की नज़रें भी क़ौम के सिपाही के पर लगी हुई हैं। ख़ुदा के रसूल की रूह मुबारक हमें देख रही है। ज़रा गौर करो हमारी ज़िम्मेदारी कितनी मुक़द्दस और हमारा फ़र्ज़ कितना अज़ीम है। अल्लाह का सिपाही हुकूमत नहीं करता, अल्लाह की हुकूमत का तहफ़्फ़ुज़ किया करता है।"

सुल्तान अय्यूबी ने जज़्बाती सी आह लेकर कहा–"आह मेरे रफ़ीको! सोलह हिजरी का रबीउल अव्वल याद करो जब उमरू बिन अल्आस और उनके साथी सालारों ने बैतुल मुकद्दस को कुफ़्फ़ार से आज़ाद कराया था। हज़रत उमर उस वक़्त ख़लीफ़ा थे। वह बैतुल मुकद्दस गये। हज़रत बिलाल उनके साथ थे। उन सबने मस्जिदे अक़्सा में नमाज़ पढ़ी थी और उस नमाज़ की आज़ान बड़ी मुद्दत के बाद हज़रत बिलाल ने दी थी। हज़रत बिलाल रसूले अकरम सल्ल0 की वफ़ात के बाद ऐसे ख़ामोश हुए थे कि लोग उनकी पुरसोज़ आवाज़ को तरस गये थे। उन्होंने अज़ान देनी छोड़ दी थी, लेकिन मस्जिदे अक़्सा में आकर उमर ने उन्हें कहा कि बिलाल! मस्जिदे अक्सा और बैतुल मुकद्दस के दरो दिवार ने बड़ी लम्बी मुद्दत से अज़ान नहीं सुनी। अज़ादी की पहली अज़ान तुम न दोगे?" हुज़ूर मकबूल सल्ल0 की वफ़ात के बाद पहली बार हज़रते बिलाल ने अज़ान दी और जब उन्होंने कहा कि अश्हदो अन्न मुहम्मदर रसूलुल्लाह तो मस्जिदे अक़्सा में सबकी दहाड़ें निकल गयी थीं.....

"मेरे अज़ीज़ दोस्तो! हमारे दौर में एक बार फिर मस्जिदे अक़्सा अज़ान को तरस रही है। नव्वे साल से उस अज़ीम मस्जिद की दरो दिवार किसी मुअज़्ज़िन की राह देख रही हैं। याद रखो, मस्जिदे अक़्सा की आज़ान सारी दुनिया में सुनाई देती हैं। सलीबी उन अज़ानों का गला घोंट रहे हैं....इस मुकद्दस मकसद को सामने रखो। हम कोई आम सी जंग लड़ने नहीं जा रहे, हम अपने ख़ून से तारीख़ का वह बाब फिर लिखने जा रहे हैं जो उमर बिन आस और उनके साथियों ने लिखा और उनके बाद आने वालों ने उस दरख़्शां बाब पर स्याही फेर दी थी। अगर चाहते हो कि ख़ुदा के हुज़ूर माथों पर रौशनी लेकर जाओ और अगर चाहते हो कि आने वाली नस्लें तुम्हारी क़ब्रों पर आकर फूल चढ़ाया करें तो तुम्हें बैतुल मुकद्दस में यह मेम्बर रखना होगा जो बीस साल गुज़रे नुरूद्दीन ज़ंगी मरहूम व मग़फूर ने वहाँ रखने के लिए बनवाया था।"

उसने यह मेम्बर सब को दिखाया और कहा–"यह मेम्बर ज़ंगी मरहूम की बेवा और सकी बेटी लाई हैं। हमें इस बेटी की लाज रखनी है जो कौम की दो सौ बेटियों को साथ लाई है कि हममें से कोई मैदाने जंग में प्यासा न मर जाए। कोई ज़ख़्मों से इसलिए न मर जाए कि मरहम पट्टी करने वाला कोई न हो। तुम जानते हो कि मैं मैदाने जंग मे औरतों को लाने के हक में कभी नहीं हुआ था। उन लड़कियों को मैंने इसलिए रख लिया है कि गैरत और कौमी वकार की यह अलामत हमारे सामने रहे और हम सब याद रखें कि हमारी इसी किस्म की बेटियां बैतुल मुकद्दस में कुफ्फार की दरिन्दगी और अय्याशी का शिकार हो रही हैं। याद रखो मेरे रफ़ीको! कौम की बेटी और कौम के शहीद को फ़रामोश कर देने वाली कौम को ख़ुदा भी फ़रामोश कर देता है और उसकी लौहे तकदीर पर उम्र भर लानत लिख दी जाती है....यह फ़ैसला तुम्हें करना है कि तुम रोज़े क़यामत लाननतियों में उठाए जाओगे या उनमें जिनके मुतअल्लिक रसूले मकबूल सल्ल0 ख़ुदा से कहेंगे कि यह हैं वह सरफ़रोश जिन्होंने कुफ़्र के तूफ़ान को रोका और तेरे मज़हब का नाम बुलन्द किया था।"

सुल्तान अय्यूबी ऐसी जज़्बाती बातें करने का आदी नहीं था लेकिन (क़ाज़ी बहाउद्दीन

शद्दाद और उस दौर के वकाअ निगारों की ग़ैर मतबूआ तहरीरों के मुताबिक) बैतुल मुकद्दस के मामिले में वह इस कदर जज़्बाती था कि जब भी उसका ज़िक्र करता उसकी आँखों में आँसू आ जाते या गुस्से में एक हाथ की हथेली पर दूसरे हाथ को घूंसे मारने लगता और बेचैनी से उठकर टहलने लगता था। उस आख़िरी जंगी इज्लास में उसने सालारों वग़ैरह के जज़्बात की यह हालत कर दी कि वह बाहर निकले तो उन्होंने आपस में कोई बात न की। उनकी चाल ढाल ही बदल गयी थी। वह सीधे अपने–अपने दस्तों में गये और अपने कमानदारों की भी जज़्बाती हालत वही कर दी जो उनकी अपनी और सुल्तान अय्यूबी की थी।

❖

सब चले गये तो सुल्तान अय्यूबी ने बहरिया के कमाण्डर अल्फ़ारस बदरीन को अपने पास बुलाया और उससे पूछा कि समुन्दर की क्या ख़बर है। अल्फ़ारस ने उसे तफसील से बताया कि उसके जहाज़ गश्त करते रहते हैं और सिकन्दरिया से उसे पैग़ाम मिलते रहते हैं जिनसे ज़ाहिर होता है कि सलीबियों के बहेरी बेड़े के कोई आसार नहीं। टाइर की बन्दरगाह में उनके जंगी जहाज़ मौजूद हैं। मेरे जासूस छोटी बादबानी कश्तियों में माही गीरों के बहरूप में वहाँ जाते रहते हैं। टाइर और उससे आगे सलीबियों के बेड़े में कोई इज़ाफ़ा नहीं हुआ। जो बेड़ा मौजूद है यह तैय्यारी की हालत में है और सलीबियों ने जहाज़ों में जल कर उड़ने वाले बारूदों की नल्कियां लगा दी हैं जो दूर से आती हैं और बादबानों को आग लगा देती हैं।

"यह नल्कियाँ उतनी दूर आ सकती हैं जितनी दूर तुम्हारे जलते हुए फलीतों वाले तीर जा सकते हैं।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा–"डरने की कोई ज़रूरत नहीं।"

'हममें से किसी के भी दिल में डर नहीं।" अल्फ़ारस ने कहा–"बहरी छापामार उस हद तक तैय्यार है कि बहेरी जंग के दौरान वह छोटी कश्तियों में दुश्मन के जहाज़ों के करीब जाकर उनमें सूराख़ करने और उन पर आग फेंकने को तैय्यार हैं।"

"बशर्तिया कि जंग रात को हो।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "दिन के वक़्त किसी छापामार को समुन्दर में न उतारना। जोश में आकर जाने ज़ाया होंगी.....मोहतात रहना अल्फ़ारस! जिस तरह तुम माहीगीरों के बहरूप में अपने जासूस टाइर तक भेजते हो उसी तरह दुश्मन के जासूस तुम्हारे पास आते होंगे। अपने जहाज़ों को एक दूसरे से दूर रखना ताकि अचानक हम्ले की सूरत में सब घेरे में न आ जाएं। उन्हें इस तरह फैलाकर रखो कि दुश्मन को घेरे में ले सको। आपस में राब्ता दिन में झंडियों से और रात को बत्तियों से रखो।"

जब अल्फ़ारस सुल्तान अय्यूबी से रूख़सत हुआ, सेहर का वक़्त हो गया था। वह नमाज़ के लिए वहीं रूक गया।

"अल्फ़ारस!" उसे अपने करीब आवाज़ सुनाई दी। उसने देखा। वह इन्टेलीजेंस का कमाण्डर हसन बिन अब्दुल्लाह था। उसने अल्फ़ारस से हाथ मिलाकर पूछा–"मुबारक हो भाई! एक ही बार दो लड़कियों से शादी कर ली है? दोनों को साथ रखा हुआ है? अपने साथ मरवाने का इरादा है?"

"ओह हसन!" अल्फ़ारस ने अंधेरे मे उसे पहचानते हुए कहा–"वह तो यार, पनाह गुज़ीन

लड़कियाँ हैं। यहीं साहिल पर छुपी हुई थीं। ख़ाना बदोश हैं। कहती थीं कि उनका सारा क़बीला जंग की जद में आकर घोड़ों तले कुचला गया है।"

"और यह मुहज़ इत्तफ़ाक है कि यह दो लड़कियाँ जिन्दा रहीं और साहिल तक पहुंच गयीं।" हसन बिन अब्दुल्लाह ने कहा—"सलीबियों ने बाक़ी सब ख़ानाबदबोशों को घोड़ों तले रौंद डाला और इतनी ज़्यादा ख़ुबसूरत दो लड़कियों को ज़िन्दा छोड़ दिया....समन्दर में रह रह कर तुम ख़ुश्की पर रहने वाले इन्सानों की फ़ितरत को शायद भूल गये हो।"

अल्फ़ारस हंस पड़ा और बोला—"हसन भाई! जासूसी करते—करते तुम अब चील कव्वों को भी सलीबियों के जासूस समझने लगे हो। तुम यही कहना चाहते हो कि यह लड़कियाँ दुश्मन की जासूस होंगी।"

"हो सकती हैं।" हसन ने कहा—"तुम कुछ ज़्यादा ही ज़िन्दा दिल हो अल्फ़ारस! इन लड़कियों को टाइर के क़रीब साहिल पर उतार आओ। अजीब लड़कियों को जहाज़ में रखना मुनासिब नहीं।"

"यह नेकी नहीं होगी कि मैं मिस्र ले जाकर उनके साथा शादी कर लूं?" अल्फ़ारस ने कहा—"या एक के साथ शादी कर लूं और दूसरी की शादी किसी और आदमी के साथकरा दूं? ग़रीब लड़कियां हैं। उन्हें साहिल पर उतार दिया तो जानते हो कि सलीबी उनके साथ क्या सलूक करेंगे।"

"हो सकता है वह सलीबी हों।" हसन बिन अब्दुल्लाह ने कहा—"सुनो अल्फ़ारस! तुम बच्चे नहीं हो। मामूली सिपाही भी नहीं हो, बहेरिया के तजुर्बाकार कमाण्डर हो। सोंचने और समझने की कोशिश करो। मुझे बताया गया है कि तुम फुर्सत का सारा वक़्त उन लड़कियों के साथ हंसते खेलते गुज़ारते हो। हज़ार क़स्में खाओ, मैं नहीं मानूंगा कि तुम ने उन्हें पाक साफ़ और नेक लड़कियाँ बनाके रखा हुआ है। वह अगर तुम्हें धोखा न दें तो तुम अपने आप को धोखा दे सकते हो। हसीन और जवान औरत का जादू फराईज़ से गुमराह कर देता है..... बहुत कुछ हो सकता है अल्फ़ारस! उन लड़कियों को कहीं छोड़ आओ।"

"अगर मैंने तुम्हारा कहना न माना तो?"

"तो मुझे देखना पड़ेगा कि यह लड़कियां कैसी हैं।" हसन बिन अब्दुल्लाह ने कहा—"अगर मश्कूक हैं तो मैं उन्हें तुम्हारे जहाज़ से उतरवा कर अपने पास बुला लूंगा, मगर मैं तुम पर छोड़ता हूँ। हम पुराने दोस्त हैं। तुम ख़ुद ही कोशिश करो कि फ़र्ज़ की आदाइगी में दोस्ती को क़ुर्बान न करो।"

"मुझ से किसी बेहुदगी की तवक्क़ो न रखो हसन!" अल्फ़ारस ने कहा—"तुम दोस्ती की बात करते हो मैं तो फ़र्ज़ की अदाइगी में अपनी जान भी क़ुर्बान कर दूंगा। यह लड़कियाँ कोई नुक़सान नहीं पहुंचाएंगी। मुझे उन पर ज़रा सा भी शक हुआ तो उन्हें साहिल पर उतारूंगा, ज़िन्दा फेंक दूंगा।"

"वापस कब जा रहे हो?" हसन बिन अब्दुल्लाह ने पूछा।

"नमाज़ पढ़ कर कुछ देर सोऊंगा। बहुत थक गया हूँ।" अल्फ़ारस ने कहा—"फ़िर चला

जाऊंगा। शाम तक कश्ती जहाज़ तक पहुंचा देगी।"

❖

अल्फ़ारस से फ़ारिग़ होकर हसन बिन अब्दुल्लाह उस कमरे की तरफ़ चला गया जहाँ उसके मुहकमे के आदमी रहते थे। इनमें से एक को बाहर बुलाया उसे कहा कि अल्फ़ारस बैदरीन की जहाज़ फ़लां मुक़ाम पर लंगर अन्दाज़ है। वह कश्ती में जहाज़ तक जाए और अल्फ़ारस के नायब रऊफ़ कुर्द से कहे कि उसे हसन बिन अब्दुल्लाह ने भेजा है। रऊफ़ कुर्द के नाम हसन ने पैग़ाम दिया कि इस आदमी को किसी ड्यूटी पर लगा दे। उसे दोनों लड़कियों के मुतअल्लिक मालूम करना है कि जहाज में इनकी कोई दरपरदा सरगर्मी तो नही? अगर है तो लड़कियों को जहाज़ से हटा कर अपने पास बुला लिया जाए।

हसन बिन अब्दुल्लाह ने अपने उस आदमी को हिदायात दीं और एक बादबानी कश्ती का इन्तज़ाम करके उसे रूख़्सत कर दिया। हवा का रूख़ बड़ा अच्छा था और हवा तेज़ थी। कश्ती जल्दी जहाज़ तक पहुंच गयी। जहाज़ से रस्सा लटका कर उस आदमी को उपर कर लिया गया। वह रऊफ़ कुर्द से मिला। उसे पैग़ाम दिया और अपना मक़सद ज़ुबानी भी बताया और यह भी बताया कि वह तजुर्बाकार जासूस है। रऊफ़ कुर्द का चेहरा बता रहा था कि उसे यह आदमी अच्छा नहीं लगा, लेकिन उस आदमी के ख़िलाफ़ वह कुछ भी नहीं कर सकता था क्योंकि उसे मालूम था कि सुल्तान अय्यूबी की दिल में जितनी क़दर एक जासूस की है उतनी सालार की भी नहीं और एक जासूस की रिपोर्ट पर एक सालार को सज़ाए मौत दी जा सकती है चुनांचे उसने हसन बिन अब्दुल्लाह के उस जासूस की ख़ातिर तवाज़ेह की।

"आप लड़कियों को पहले दिन से देख रहे हैं।" जासूस ने रऊफ़ कुर्द से पूछा—"उनके मुतअल्लिक आप को ज़रा सा भी शक है तो बता दें। हम उन्हें अस्कलान तफ़तीश के लिए ले जाएंगे।"

"मैंने अभी तक इनकी कोई हरकत मश्कूक नहीं देखी।" रऊफ़ कुर्द ने जवाब दिया—"ज़्यादा तर अल्फ़ारस के कमरे में रहती हैं।"

रऊफ कुर्द को फ़ौरन फलोरी का ख़्याल आ गया था। अगर जासूस एक रोज़ पहले आता तो रऊफ़ कुर्द का जवाब यह होता कि इन लड़कियों को यहाँ से ले जाओ क्योंकि छः जहाज़ों का कमाण्डर उन लड़कियों के साथ मगन रहता है, मगर फ़लोरी ने गुज़िश्ता रात उसे बता दिया था कि वहा उसे दिल व जान से चाहती है। रोज़ी उनकी हमराज़ थी। अब रऊफ़ कुर्द किसी क़ीमत पर फ़लोरी से जुदा नहीं होना चाहता था। उसके दिल में अल्फ़ारस की दुश्मनी पैदा हो गयी थी लेकिन वह अल्फ़ारस को लड़कियों से महरूम नहीं कर सकता था क्योंकि वह ख़ुद फ़लोरी से महरूम हो जाता।

"मुझे अब आप के साथ रहना है।" जासूस ने कहा—'अल्फ़ारस को मालूम नहीं होना चाहिएकि मैं जासूसी के लिए यहाँ आया हूँ। आपने हुक्म पढ़ लिया है। मैं ख़ुद देखूंगा कि लड़कियाँ कैसी हैं और क्या करती हैं। मुझे अगर उन पर जासूसी का नहीं सिर्फ़ यह शक भी हुआ कि अल्फ़ारस इनमें फ़राईज़ के औक़ात मे महव हैं तो मैं इन लड़कियों को यहाँ नहीं

रहने दूंगा। अगर अल्फ़ारस को पता चल गया कि मैं यहां जासूसी कर रहा हूँ तो मुझे आप के खिलाफ़ यह बयान देना पड़ेगा कि मेरे मुतअल्लिक अल्फ़ारस को आप ने बताया है क्योंकि आपके सिवा किसी को इल्म नहीं कि मैं यहाँ क्यों आया हूँ।"

यह जंगी जहाज़ था जिसमें जहाज़ का अमला भी था और उसमें बहेरी लड़ाई की तरबियततयाफ्ता बर्री फ़ौज भी थी। जहाज़ की सफ़ाई वग़ैरह, खाना पकाने और दिगर कामों के लिए फ़ौजी मुलाज़िम थे। वहाँ एक आदमी का असल रूप छुपाये रखना मुश्किल न था। अल्फ़ारस कमाण्डर था। वह इन छोटे छोटे मुलाज़िमों और सिपाहियों में से किसी को अलग करके नहीं कह सकता था कि यह आदमी अजनबी है जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा। रऊफ़ कुर्द हर जगह घूम फ़िर सकता था मगर रऊफ़ को यह शख़्स बिल्कुल पसन्द नहीं आया था।

जासूस ने उसी रोज़ दोनों लड़कियों को देख लिया और उसने उसी रोज़ रऊफ़ कुर्द से कहा—"यह लड़कियाँ ख़ानाबदोश नहीं और यह मुसीबतज़दा भी नहीं। मुझे शक हो गया है।"

"इतने दिनों से हमारे साथ हैं।" रऊफ़ कुर्द ने कहा—"मुझे उन पर कोई शक नहीं हुआ।"

"आप की आँख वह नहीं देख सकती जो मेरी आँख देख सकती है।" जासूस ने कहा—"ठंडे इलाकों की ख़ानाबदोश औरतों के रंग ऐसे ही होते हैं लेकिन उनकी आँखों का रंग ऐसा नहीं होता और उनमें यह नफ़ासत और नज़ाकत नहीं होती... मोहतरम! हमारी जंग ऐसी ही लड़कियों से रहती है। यह लड़कियाँ यहां नहीं रहेंगी।"

"कुछ दिन देख लो।" रऊफ़ कुर्द ने कहा—"कहीं ऐसा न हो कि यह वाकई मुसीबतज़दा हों और तुम उन्हें किसी और मुसीबत में डाल दो।"

"हाँ!" जासूस ने कहा—"मैं जल्दबाज़ी नहीं करूंगा। कुछ दिन और देख कर यक़ीन करूंगा।"

❖

सुल्तान अय्यूबी ने अपने सालारों से ठीक कहा था कि बैतुल मुक़द्दस में जो सलीबी जरनल हैं उन्हें मालूम है कि इस्लामी फ़ौज बैतुल मुक़द्दस पर आ रही है। इधर जब सुल्तान अय्यूबी अपने सालारों को आख़िरी हिदायात दे रहा था उधर बैतुल मुक़द्दस में सबीबी हाई कमाण्ड अपने जरनलों को मुहासिरे में लड़ने के लिए तैय्यार कर रही थी।

"हम सलाहुद्दीन को रास्ते में नहीं रोकेंगे।" उनका कमाण्डर इन चीफ़ कह रहा था—"बेशक उसकी फ़ौज तादाद में कम हैं लेकिन उसे अस्लेहा और रस्द की कोई परेशानी नहीं। उसके इमदादी इन्तज़ामात मज़बूत और क़ाबिले एतमाद हैं। उसे बैतुल मुक़द्दस का मुहासिरा करने दो। हमारे पास लम्बे अर्से के लिए ख़ुराक और दिगर सामान मौजूद हैं। अगर मुहासिरा तवील और ख़ुराक कम रह गयी तो हम मुसलमानों को भूखा प्यासा रखेंगे। उससे ख़ुराक बचेगी और खाने वाले भी कम हो जाएंगे। मुझे सबसे ज़्यादा भरोसा नायटों पर है। उन्हें बाहर निकल कर हम्ले करने और वापस आना है। मैं आप सबको यक़ीन दिलाता हूँ कि

मुहासिरा नाकाम रहेगा।"

"आप ने फौज की हालत को पेशेनज़र नहीं रखा।" एक जरनल ने कहा–"शहर में फौज की आधी नफ़री ऐसी है जो हतीन से अस्कलान तक की लड़ाईयों से भागी हुई है और उनका लड़ने का जज़्बा सर्द पड़ गया है, बल्कि यह कहना ग़लत नहीं होगा कि इन पर सलाहुद्दीन की फौज का खौफ़ तारी हो गया है। ताज़ादम दस्ते वही हैं जो शहर में मौजूद रहे हैं मैदाने जंग में नहीं गये।"

"हमने उस मसले का हल निकाल लिया है।" कमाण्डर इन चीफ ने कहा–"पादरी फ़ौज में घूमने फिरने लगे हैं। वह सिपाहियों को इन्जील के हवाले देकर ज़ेहन नशीन करा रहे हैं कि इस्लामी फौज को शिकस्त देना क्यों ज़रूरी है और यह मज़हबी फ़रीज़ा है....अगर जरनल और दिगर कमाण्डर उसे मज़हबी जंग समझ कर लड़ेंगे तो सिपाही भी मज़हबी जोश व ख़रोश से लड़ेगे। अगर हम बैतुल मुक़द्दस की जंग हार गये तो बहेरा रोम भी हमें पनाह नहीं दे सकेगा। सलाहुद्दीन क्यों कामयाब हुआ है? सिर्फ़ इसलिए कि वह अपने मज़हब का पक्का है जिसे वह ईमान कहता है। हमने उसे ख़ाना जंगी से तबाह करने की कोशिश की मगर उसने खानाजंगी भी जीत ली। हमने जिन मुसलमान हुक्मरानों को उसके खिलाफ़ किया था वह उसके मुतीअ हो गये। हमने अपनी बेटियों की इस्मतों से उसकी जंगी ताक़त और सल्तनत को कमज़ोर करने की कोशिश की, मगर यह कुर्बानी भी ज़ाया हुई। यह शायद हमारी ग़लती थी कि हमने औरत को इस्तेमाल किया और इस उम्मीद पर बैठ गये कि सलाहुद्दीन घर बैठे ही मर जाएगा।"

"हमारी कोई कुर्बानी ज़ाया नहीं हुई।" बरीके आज़म जो वहाँ मौजूद था, बोला–"आप की यह सोच ग़लत है कि दो मज़हबों की जंग सिर्फ़ फ़ोजें लड़ा करती हैं। अपने मज़हब के फ़रोग़ और दुश्मन की तबाही के लिए बेशक तलवार ज़रूरी है लेकिन दुश्मन के ज़ेहन और उसकी रूह को गुमराह करने के लिए यह तरीके ज़रूरी थे जिनके मुतअल्लिक आप कह रहे कि कुर्बानी ज़ाया हुई। हम अपनी इन बेटियों को खिराजे तहसीन पेश करते हैं जिन्होंने अपने ग़ैरमामूली हुस्न की बदौलत बड़े ऊंचे दरजे के हाकिमों की बीवियां बनना और शाहाना ज़िन्दगी गुज़ारनी थी मगर उन्होंने अपना आप और अपना मुस्तकबिल सलीब पर कुर्बान कर दिया और वह मुसलमानों के हरमों और दरबारों में ज़लील व ख़्वार हुई। मुसलमानों में ख़ानाजंगी उन्होंने ने करायी। मुसलमान हुक्मरानों के ईमान इन लड़कियों ने ख़रीदे। एक ही हुक्मरान के अहम हाकिमों में रक़ाबत पैदा करके उन्हें एक दूसरे का दुश्मन बना दिया...

"सलीब के जरनलों! यह मत भूलो कि दुश्मन को मारने का बेहतरीन तरीका है कि उसमें ज़ेहनी अय्याशी और जिन्सी जज़्बात परस्ती पैदा करो। उसे राग रंग और झूठी लज़्ज़तों का आदी बना दो। उसके हुक्मरानों को तख़्त व ताज और ज़र व जवाहरात के हवस में मुब्तला कर दो। मुसलमान दुनिया भर का जाना माना हुआ और दिलेर सिपाही है। जंगी जज़्बा और मज़हबी जंग का जितना जुनून मुसलमानो में है उतना हममें नहीं। जितने आला जरनल मुसलमानों ने पैदा किये हैं इतने हम नही कर सके। यह उनकी रिवायत है। अगर हम ने

उनके ज़ेहन बदलने की कोशिश न की तो उनका जज़्बा, मज़हबी जुनून और उनकी रिवायात ज़िन्दा रहेगी। अगर उनकी रिवायात ज़िन्दा रही तो सलीब ज़िन्दा नहीं रह सकेगा। इस्लाम यूरोप तक गया, हिन्दूस्तान और उससे उपर चीन तक गया। चीन का अमीर अल्बहर मुसलमान रहा। वहाँ के बाज़ जरनल अब भी मुसलमान है हिन्दुस्तान के मश्रिक़ में बड़े–बड़े जज़ीरों में चले जाओ तो वहाँ भी तुम्हें अरबों की यानी इस्लाम की हुक्मरानी नज़र आयेगी.....

"आप यह तूफ़ान सिर्फ़ तलवार से नहीं रोक सकते।

"आप यह तूफ़ान सिर्फ़ तलवार से नहीं रोक सकते। यह दूसरे तरीकों से रोका जा सकेगा। हमें इस्लाम के इस मरकज़ को जिसे मुसलमान ख़ानाकाबा कहते हैं, मुर्दा करना पड़ेगा। बैतुल मुकद्दस पर कब्ज़ा बरकरार रखना पड़ेगा। मुसलमान हुक्मरान और बादशाह जहाँ कहीं भी हैं उन्हें जंगी और माली मदद देकर बेकार करना होगा और उसके साथ ही उनके हरमों मे अपनी तजुर्बाकार लड़कियाँ उसी तरह दाख़िल करते रहें जिस तरह अरब की रियासतों में करते आ रहे हैं। हमने यह तरीका यहूदियों से सीखा है। उन्होंने मुसलमानों को किरदाकुशी और मज़हबी बेख़ कुनी निहायत दानिशमंद मंसूबा बना रखा है और वह उसपर अमल कर रहे हैं। वह हमारी मदद कर रहे हैं। आप को यकीन दि लाता हूँ कि वह वक़्त तेज़ी से आ रहा है कि बैतुल मुकद्दस पर हमारा मुस्तकिल कब्ज़ा हो जाएगा। उसके इर्द गिर्द दूर–दूर के इलाके भी हमारे कब्जें में होंगे। मुसलमान रियासतों में बट कर एक दूसरे के दुश्मन हो जाएंगे। अगर दुश्मन न हुए तो उनमें इत्तेहाद भी नहीं होगा। यहूदियों के दानिशवरों ने सही कहा है कि अपने आप को बादशाह समझेंगे लेकिन उनकी बादशाही और आज़ादी की बागडोर हमारे हाथ होगी। यह काम आप हम पर छोड़ें। यह दरपरदा और ज़मीनदोज़ काम दानिशवरों का और मज़हबी पेशवाओं का है। आप फ़ौजी हैं। मैदाने जंग की बात करें। आप का बड़ा ही ख़तरनाक दुश्मन बैतुल मुकद्दस पर आ रहा है। आप उसको शिकस्त देने की सोंचें।"

❖

वह इतवार की सुबह थी और 1187 ई0 सितम्बर की बीस तारीख़ थी। जब सुल्तान अय्यूबी हैरान कुन तेज़ रफतारी से बैतुल मुकद्दस पहुंच गया। हिजरी कैलेण्डर के मुताबिक 15 रजब 583 हि0 का रोज़ था। सलीबियों को सुल्तान अय्यूबी का इन्तज़ार था लेकिन उन्हें वह तवक्को नहीं थी कि वह इस कदर तेज़ी से आयेगा। उसने रास्ते में सलीबियों की बुलन्दियों वाली किला बन्दियों और पोस्टों को नज़र अन्दाज़ किया और फ़ौज को गुज़ार ले गया था। रात का वक़्त था। किला बन्दियों से सलीबियों ने बैतुल मुकद्दस को कब्ल अज़ वक़्त इत्तलाअ देने के लिए कासिद रवाना कियेहोंगे लेकिन कोई भी वहाँ तक न पहुंच सका। जिसका सबूत यह है कि जब सुल्तान अय्यूबी के हरावल दस्ते शहर तक पहुंचे तो उस वक़्त उपर दिवार पर दो चार संतरी खड़े थे। शहर के दरवाज़े बन्द थे। अन्दर से गिरजों के घंटों की आवाज़ें आ रही थीं।

नकारे और बिगुल बज उठे। दिवार पर हर तरफ इन्सानों के सर उभरने लगे। उन सरों

पर फौलादी ख़ोद थे। और कमानें साफ़ नज़र आ रही थीं। इन सरों में इज़ाफा होता चला गया और फिर यूं नज़र आने लगा कि जैसे दिवार के उपर इन्सानी सरों की एक फसील खड़ी कर दी गयी हो। शहर के मग़्रिब की जानिब कुछ इलाक़ा चट्टानी था। सुल्तान अय्यूबी ने अपने ख़ुसूसी दस्तों को वहाँ ख़ेमाज़न कर दिया और ख़ुद शहरके इर्द गिर्द देखने के लिए घूमने फिरने लगा कि दिवार किस जगह से कमज़ोर है और नक़ब कहाँ लगाई जा सकती है या कहीं से सुरंग खोदी जा सकती है या नहीं। सुल्तान अय्यूबी के नक़बज़न जैश जांबाज़ी में मशहूर थे।

इस्लामी फौज हर तरफ़ मौजूद थी लेकिन बड़ा इज्तमाअ मग़्रिब की तरफ़ था जिस जानिब शहर की दिवार के दो मुस्तहकम बुर्ज थे। एक दाउद बुर्ज और दूसरा तन्कर्द बुर्ज था। इनमें दूर मार तीर अन्दाज़ थे और वहाँ मिन्जनिकें भी नस्ब थीं। सुल्तान अय्यूबी शहर के इर्द गिर्द दिवार का जायज़ा लेता फिर रहा था। उस दौरान मग़्रिब की जानिब वाले दस्तों के सालार ने आग और पत्थर फेंकने वाली मिन्जनिकें नस्ब करनी शुरू कर दीं। सलीबियों ने बहादुरी का मुज़ाहिरा किया कि अपनी दिफ़ाई स्कीम के मुताबिक़ शहर का एक दरवाज़ा खोल दिया। उसमें से ज़िरहपोश नायट घोड़ों पर सवार, हाथो में बरछियां ताने सरपट घोड़े दौड़ाते निकले और मिन्ज़निकें नस्ब करने वाले मुजाहिदीन पर हल्ला बोल दिया। उनके पीछे दरवाज़ा बन्द कर दिया गया।

घोड़ों को घूमने फिरने के लिए जगह काफ़ी थी। नायट आहनपोश थे इसलिए उन पर तीर कोई असर नहीं करते थे। उनका हल्ला इस क़दर तेज, शदीद और गैर मुतवक्का था कि मुजाहिदीन को पुर असर मज़ाहमत की मुहलत न मिली। उनमे से कई नायटों के बरछियों से जख़्मी और शहीद हुए और पीछे आने वाले घोड़ों तले कुचले गये.। घोड़े बगूले की तरह आये और धूल उड़ाती हुई गर्द में घूमे और जब दरवाज़े के क़रीब पहुंचे तो दरवाज़ा बन्द हो गया। वह अपने पीछे खाक व ख़ून में तड़पते कई एक मुसलमान मुहन्दिस (मिन्जनिके चलाने वाले) छोड़ गये।

सिपाही उन्हें उठाने के लिए दौडे तो दो तीन निस्वानी आवाज़ सुनाई दीं–"पीछे रहो, यह हमारा काम है।"

उसके साथ ही बहुत सी लड़कियां दौड़ती हुई आई। उन्होंने दरख़्तों की टहनियों के बने हुए स्ट्रेचर उठा रखे थे। बाज़ लडकियों के कंधो से पानी के छोटे मस्कीजे लटक रहे थे। उपर से सलीबियों के तीर आ रहे थे जिनसे दो तीन लड़कियाँ गिरीं। बहुत से मुसलमान तीर अन्दाज़ दौड़ कर लड़कियों और उपर से आने वाले तीरों के दर्मियान आ गये और उन्होंने बुर्जों पर तेज़ तीर अन्दाज़ी शुरू कर दी। जो तीर अन्दाज़ पीछे थे, उन्होंने भी बुर्जों और दिवारों के उपर बड़ी ही तेज़ तीर अन्दाज़ी शुरू कर दी। उपर से तीर का मेंह थम गया और दोनों तरफ़ के तीरों के साये में लड़कियां जख़्मियों को उठा लायीं और पीछे दरख़्तों के साये में ले गयीं।

असदुल असदी जो उस दौर का वक़ाअ निगार था, अपनी एक गैममतबूआ तहरीर में

लिखा है कि सिपाही हर जंग में जख़्मी होते थे। उनहें जर्राहों के ख़ेमों तक पहुंचा दिया जाता मगर उन्हें उठाने वाले उन्हीं की तरह मर्द और सिपाही होते थे और उस मामिले में कोताही भी नहीं करते थे लेकिन बैतुल मुक़द्दस के मुहासिरे में लड़कियों ने जख़्मियों को उठाया और जर्राहों के जैश के साथ उनकी मरहम पट्टी में हाथ बटाया और जख़्मियों के सर अपनी गोदियों में रखकर पानी पिलाया तो कई एक जख़्मी जो होश में जोश में थें उठकर खड़े हुए और ललकारने लगे–"यह जख़्म हमें लड़ने से नहीं रोक सकते।" और ऐसी आवाज़ें भी सुनाई दीं–"हम बैतुलमुक़द्दस के अन्दर जाकर जख़्मों पर पट्टी बांधेंगे।" और जब जख़्मियों ने देखा कि तीन चार लड़कियों को भी तीर लगे हैं तो जख़्मियों को संभालना मुश्किल हो गया। लड़कियों ने सबके जोश और जज़्बे में आग भर दी थी।

❖

उसी मुक़ाम पर मिन्जनिकें नस्ब करने के लिए मुहन्दिसो का एक और जैश आगे बढ़ा। तीर अन्दाज़ी तेज़ कर दी गयी। मिन्ज़निके नस्ब कर दी गयीं। उनसे वज़नी पत्थर और आग के गोले फेंके जाने लगे जो दिवार पर भी गिरते थे और अन्दर भी। दरवाज़ा एक बार फ़िर खुला और नायटों के घोड़े मिन्जनिकों की तरफ़ हवा की रफ़्तार से आये तो उनके पहलू से मुसलमान सवार उन पर टूट पड़े। उक्ब से मज़ीद मुसलमान सवार उनकी वापसी का रास्ता रोकने को आ गये। मुसलमानों ने नायटों के घोड़ों को बरछियों और तलवारों से जख़्मी करना शुरू कर दिया। नायटों की ज़िरहबकतर उन्हें महफ़ूज़ रखे हुए थे।

घोड़ों के साथ नायट भी गिरने लगे। ज़मीन पर उन्हें घायल करना इतना मुश्किल न था, मगर वह तजुर्बाकार लड़ाका सवार थे। सब को न गिराया जा सका। उसकी बजाए वह कई एक मुसलमान सवारों को गिरा गये। वह वापस हुए तो मुसलमान सवारों ने उन्हें रोकने की कोशिश की मगर जो नायट घोड़ों की पीठों पर रहे वह अन्दर चले गये और दरवाज़ा बन्द हो गया.....उसके बाद यह सिलसिला चलता रहा। बुर्ज दाउद के सामने इस तरह के जो मार्के लड़े गये वह रफ़्तार, शिद्दत, ख़ूरेज़ी और दोनों तरफ़ की शुजाअत के लिहाज से बेमिसाल माने जाते हैं दोनों फ़ौजों के अज़म और जज़्बे की पुख़्तगी का अन्दाज़ा इन मार्कों से होता है। मोअर्रिख़ बयान करते हैं कि बैतुल मुक़द्दस ने दोनों फ़ौजों पर जुनून की कैफ़ियत तारी कर दी थी। वह सलीबी सवार जो जख़्मी हुए और बाहर ही गिर पड़े वह इस लिहाज से बदक़िस्मत थे कि उन्हें उठाने वाला कोई न था। सितम्बर की गर्मी और दोपहर का सूरज उन्हें ज़िरहबकतर में जला कर मार रहा था। उनके मुक़बले मुसलमान जख़्मियों को लड़कियाँ फ़ौरन उठा ले जातीं, उन्हें पानी पिलातीं, उनके मुँह सर धोतीं, उनके कपड़े तबदील करतीं और उनमें कुछ लड़कियाँ मश्किज़े उठाये चट्टानों में कहीं से पानी ला लाकर अधमुंई हुई जा रही थीं।

सुल्तान अय्यूबी ने भी यह मार्के देखे। उस पर भी जुनूनी कैफ़ियत तारी थी। चट्टानों और वादियों से वज़नी पत्थर लाने के लिए ख़च्चर गाड़ियाँ मस्रूफ़ थीं। मिन्जनिकें रात को भी दिवार और अन्दर पत्थर फेंकती रहती थीं। बुर्जों में से भी पत्थर और आतिशगीर सयाल गोले आने लगे। उनके पीछे जलते हुए फ़लीतों वाले तीरों ने आग लगा दी दो तीन मिन्जनिकें

आग की लपेट में आ गयीं और इनके मुंहन्दिस झुलस गये मगर संगबारी जारी रही।

दिवार की दिगर एतराफ़ से भी पत्थर और आतिशगीर सयाल की हांडियाँ फेंकी जा रहीथीं। बाहर कहीं–कहीं ज़मीन बुलन्द थी। वहाँ से पत्थर और हांडियाँ दिवार के उपर से अन्दर चले जाते थे। उनके पीछे फ़लीते वाले तीर भी चले जाते थे। उन्होंने शहर में कई जगहों पर आग लगा दी। धुंवा बाहर नज़र आ रहा था।

❖

सलीबी फ़ौज जो पहले से शहर में अन्दर मौजूद थी उसका मोराल मज़बूत था। दूसरे इलाकों से जो फौजी भाग कर आये थे उनमें ऐसे भी थे जो अपनी शिकस्त का इन्तक़ाम लेने के लिए हौसलामन्द और जोशिले थे। और उनमे ऐसे भी थे जिन पर दहशत तारी थी। यह सब जम कर मुकाबला कर रहे थे। उनके जोश व ख़रोश से ज़ाहिर होता था कि वह सुल्तान अय्यूबी को पस्पा कर देंगे। एक और दरवाज़े से भी सवार बाहर जाकर मुहासिरे पर हम्ले करने लगे थे। मगर शहरियों की कैफ़ियत फौजियों से मुख़्तलिफ़ थी। शहरियों में अकरा और अस्कलान वग़ैरह से आये हुए पनागुज़ीन इसाई भी थे। वह तो सरापा दहशत बने हुए थे। उन्होंने सारे शहर में दहशत फैला रखी थी। उनके सामने सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज ने कई बस्तियाँ सुल्तान के हुक्म से नज़रे आतिश की थीं।

बैतुल मुकद्दस के तमाम गिरजों के घंटे मुसलसल बज रहे थे। दिन और रात एक हो गये थे। ईसाई गिरजों में हुजूम किए हुए थे और पादरियों के साथ आवाज मिलाकर बुलन्द आवाज़ से दआइया गीत गा रहे थे। शहर के बाहर सुल्तान अय्यूबी की फौज के नारे शहर के अन्दर यूं सुनाई देते थे जैसे घटाएं गरजती आ रही हों। शहर में जलते शोले ईसाईयों का दम खम ख़त्म कर रहे थे। सुल्तान अय्यूबी के जासूस शहर में ईसाइयों के भेस में मौजूद थे। वह इस तरह नफसियाती हम्ले कर रहे थे कि दहशतनाक अफ़वाहें फैला रहे थे। एक अफवाह यह फैलाई गयी कि सुल्तान अय्यूबी बैतुल मुकद्दस पर कब्ज़ानहीं करेगा बल्कि शहर को तबाह व बर्बाद करके तमाम ईसाईयों को कत्ल कर देगा। और उनकी जवान लड़कियों को और मुसलमान आबादी को अपने साथ ले जाएगा। दशहत की सबसे बड़ी वजह यह थी कि यह सबको मालूम था कि सैलबुल सवबूत सुल्तान अय्यूबी के कब्ज़े में है और उसका मतलब यह है कि यीसू मसीह ईसाईयों से नाराज़ हैं।

उस दौर के मुफ़क्किरों की जो तहरीरें मिलती हैं उनसे पता चलता है कि ईसाईयों को अपने वह गुनाह खौफ़ज़दा कर रहे थे जिनका तख़्ता मश्क उन्होंने वहां के मुसलमानो को बनाया था। (उसकी तफसील बयान की जा चुकी है) उन्होंने मुसलमानों का कत्ले आम किया, बच्चों को बरछियों पर उठाकर कहकहे लगाये और मुसलमान ख्वातीन की बेहुर्मती की थी। मस्जिदों और कुर्आन की बेहुर्मती की थी और नव्वे बर्षो से मुसलमान उनके वहशियाना सलूक और बरबरीयत का मुसलसल शिकार हो रहे थे। ईसाईयों ने अपने अकीदे के मुताबिक गिरजों में जाकर अपने गुनाहों का इतराफ़ करना शुरू कर दिया।

मौजूदा सदी का एक अमरीकी तारीख़दां एन्थोनी वलिस्ट बहुत से मोअर्रिखों के हवालों

से लिखता है कि बैतुल मुक़द्दस के ईसाई मुहासिरे में इस क़दर दहशतज़दा हो गये थे कि बहुत से ईसाई गलियों में निकल आये। इनमें बाज़ सीना कूबी करने लगे और बाज़ अपने आपको कोड़े मारने लगे। यह ख़ुदा से गुनाह बख़्शवाने का एक तरीका था। जो ईसाई लड़कियाँ जवान थीं उनकी मावों ने उनके सरों के बाल बिल्कुल साफ़ कर दिए और उन्हें पानी मे ग़ोते देने लगीं। उनका अक़ीदा था कि इस तरह यह लड़कियाँ बेआबरू होने से बच जाएंगी। पादरियों ने बहुत कोशिश की कि लोगों को इस ख़ौफ व दहशत से निजात दिलाएं मगर उनके वाआज़ बेअसर हो गये थे।

मुसलमान आबादी की कैफियत कुछ और थी। तीन हज़ार से ज़्यादा मुसलमान मर्द औरतें और बच्चे क़ैद में थे। घरों में जो मुसलमान थे वह नज़र बन्दी की जिन्दगी गुज़ार रहे थे। ईसाईयों से डर से किसी मस्जिद में नहीं जाते थे। तमाम मुसलमानों को पता चल गया कि सुल्तान अय्यूबी ने बैतुल मुक़द्दस का मुहासिरा कर लिया है। उन्होंने ईसाईयों की ख़ौफ़ज़दगी और बुज़दिली के मुज़ाहिरे देखे तो कई एक जोशिले मुसलमान जवानों ने छतों पर चढ़ कर अज़ानें देनी शुरू कर दीं। क़ैद में जो मुसलमान थे उन्होंने बुलन्द आवाज़ से आयाते कुर्आनी और दरूद शरीफ़ का विर्द शुरू कर दिया। औरतें घरों में थीं या क़ैद में, उन्होंने अल्लाह के हुज़ूर आह व ज़ारी और हम्द व सना शुरू कर दी।

ईसाई उन्हें देखते थे मगर चुप रहे क्योंकि वह पहले ही समझ बैठे थे कि उन्होंने मुसलमानो पर जो वहशियाना और ग़ैर इन्सानी ज़ुल्म व तशद्दुद किया है उन्हें उसकी सज़ा मिल रही है। वह आने वाली सज़ा के तसव्वुर से कांप रहे थे इसलिए अब वह मुसलमानों को आज़ान और विर्द व वज़ीफे से रोकने की जुर्रत नहीं करते थे। मुसलमानों ने ईसाईयों का यह रवैया देखा तो जवां साल मुसलमान गली-गली चिल्लाने लगे-"ईमाम मेंहदी आ गया है....हमार निजात दहिन्दा आ गया है....शहर की दिवारों के उपर से आ रहा है....दरवाज़े तोड़ कर आ रहा है।"

शहर के अन्दर हक़ और बातिल की, गिरजों के घंटों और अज़ानों की मार्काआराई थी, बाहर घोड़ों, तलवारों, बरछियों और तीरों के मार्के लड़े जा रहे थे। ज्यों-ज्यों गिरजों में दआइया गीत बुलन्द होते जा रहे थे, तिलावत कुर्आनी भी बुलन्द तर होती जा रही थी। नन्हें-नन्हें बच्चे भी ख़ुदा के हुज़ूर सज्दा रेज़ थे। मगर बाहर सुल्तान अय्यूबी को अभी तक कोई जगह नहीं मिल रही थी जहाँ से दिवार में शगाफ डलवा सकता या सुरंग खुदवा सकता। दिवार के उपर से तीर मुसलाधार बारिश की मानिन्द आ रहे थे। मुसलमान मुंहन्दिसों और पत्थर लाने वाले सिपाहियों के हाथों से ख़ून बह रहा था। ज़िरहपोश नायट अभी तक बाहर निकल-निकल कर हम्ला कर रहे थे और इन्तेहाई ख़ुरेंज़ मार्के लड़े जा रहे थे।

❖

चालीस मील दूर बहेरा रोम में अल्फारस बैदरून के छः जहाज़ फैले हुए गश्त कर रहे थे, ताकि टाइर में सलीबियों का जो बहेरी बेड़ा है वह फौज और सामान लेकर इधर न आ सके। दोनों लड़कियां उस के जहाज़ में थीं मगर उसे अब लड़कियों की तरफ़ तवज्जो देने की

मुहलत नहीं मिलती थी। सुल्तान अय्यूबी और रईसुल बहरीन ने उसे बड़ी नाज़ुक ज़िम्मेदारी सौंपी थी। कभी–कभी वह ख़ुद मस्तूल के उपर बनी हुई मचान पर चढ़ जाता और समन्दर की वुसअत को गहरी नज़रों से देखता रहता था। दूसरे जहाज़ों में भी जाता रहता और हर जहाज़ का अमला अपने फ़राईज़ से ग़ाफ़िल न हो जाए।

उसके जहाज़ में उस नायब रऊफ़ कुर्द फ़लीरी से मिलता रहता था जो बहुत हद तक चोरी छिपे की मुलाक़ातें होती थीं। हसन बिन अब्दुल्लाह का भेजा हुआ जासूस दोनों को देखता और उन पर गहरी नज़र रखता था।

मिस्र का बहरी बेड़ा रोम में दूर–दूर तक गश्त करता था क्योंकि ख़तरा था कि यूरोप, ख़ुसूसन इंगलिस्तान से बैतुल मुक़द्दस को बचाने के लिए मदद आयेगी। सुल्तान अय्यूबी की तूफ़ानी पेशक़दमी और सलीबियो के हर क़िले और शहर पर यलग़ार देखी तो उन्होंने जर्मनी के शहंशाह फ़्रेडरिक और इंगलिस्तान के शहंशाह रिचर्ड को इन अल्फ़ाज़ के पैग़ाम भेज दिए थे कि अरब से सलीब उखड़ रही है और बैतुल मुक़द्दस का बचाना मुश्किल नज़र आ रहा है। उन पैग़ामात का लुबे लुबाब यह था कि आओ और हमें बचाओ। सुल्तान अय्यूबी को तवक्को यही थी कि बैतुल मुक़द्दस की जंग बहेरा रोम में भी लड़ी जाएगी जो बड़ी ख़ौफ़नाक होगी, मगर जर्मनी और इंगलिस्तान से किसी हरकत की इत्तलाअ नहीं आ रही थी। शिकस्त ख़ुर्दा सलीबियों का बहेरी बेड़ा टाइर में दुबका हुआ था। ताहम सुल्तान अय्यूबी का रईसुल बहरीन की बहेरिया की उस ख़ामोशी को किसी ख़तरे का पेशख़ेमा समझ रहा था इसलिए पूरी तरह चौकन्ना था।

❖

मुहासिरे की चौथी रात थी। कोई कामयाबी हासिल नहीं हुई थी। सलीबी नायटों और दिगर सवारों ने बाहर आकर बड़े ही दिलेराना हम्ले किये और जानवरों की कुर्बानी दी थी। सुल्तान अय्यूबी ने जब चार दिनो के अपने जख़्मियों और शहीदों का हिसाब किया तो उसके माथे के शिकन गहरे हो गये। उसके पास अस्लेहा और सामान की कमी नहीं थी। मफ़तूहा जगहों से उसने लम्बी जंग के लिए अस्लेहा वग़ैरह इकठ्ठा कर लिया था मगर कमी नफ़री की थी। नफ़री तेज़ी से कम हो रही थी और बैतुल मुक़द्दस की दिवार उसके लिए बदस्तूर चैलेंज बनी हुई थी।

पांचवे दिन सुल्तान अय्यूबी ने मग़रिब की जानिब से यानी दाउद बुर्ज के सामने से कैम्प उखाड़ दिया और वहाँ की लड़ाई बन्द करादी। उसने शुमाल की तरफ़ एक जगह दिवार कमज़ोर देखा था। मग़रिब से जब मिन्जनिके हटाई जा रही थीं और दूर पीछे जो ख़ेमे लगे हुए थे, वह उखाड़े जा रहे थे तो यूं मालूम होता था जैसे सुल्तान अय्यूबी मुहासरा उठा कर जा रहे हैं। दिवार के उपर जो शहरी ईसाई थे उन्होंने शहर में ख़बर फैला दी कि मुहासिरा उठ गया है और मुसलमानों की फ़ौज पस्पा हो रही है। सुल्तान अय्यूबी दिवार से दूर फ़ौज को मुन्तक़िल कर रहा था और शाम हो गयी।

शहर में जहाँ आह-व ज़ारी, दहशतज़दगी की दुआओं का वाविला था वहाँ ख़ुशी के नारे

गरजने लगे। रात ही रात ईसाई गिरजों में जमा होकर ख़ुदा का शुक्रिया अदा करने लगे। ईसाई जो शाम तक अपने गुनाहो की बख़्शिश मांग रहे थे। मुसलमान शहरियों पर ज़ुल्म व तशद्दुद का अज़सरे नौ आग़ाज़ करने का प्रोग्राम बनाने लगे। उसकी इब्तेदा उन्होंने तानों और गालियों से की। मुसलमान बुझ कर रह गये।

दूसरे दिन 25 सितम्बर 1187 ई0 बरोज़ जुमा दिवार पर खड़े सलीबियों ने देखा कि शुमाल की जानिब जबल जैतून पर सुल्तान अय्यूबी का झंडा लहरा रहा है और उससे आगे, दिवार से ज़रा ही दूर मुसलमानों ने मिन्जनिकें नस्ब कर दी हें और कम व बेश दस हज़ार (सवार व प्यादा) हम्ले के लिए तैय्यार खड़ी है। पहले बयान किया जा चुका है कि सुल्तान अय्यूबी हर जंग की मुहिम का आग़ाज जुमा के रोज़ उस वक़्त करता था जब मस्जिदों में ख़ुत्बे दिए जाते हैं। उसका अकीदा था कि दुआओं की क़ुबूलियत का वक़्त होता है। बैतुल मुक़द्दस पर भी उसने पोज़ीशन और प्लान बदल कर जुमा के रोज़ फ़ैसलाकुन हम्ला किया।

शहर पर पहले से ज़्यादा पत्थर और हांडियां गिरने लगीं शहर में फ़ौरन ख़बर फैल गयी कि मुसलमानों की और ज़्यादा फ़ौज आ गयी है और अब शहर एक दो दिन का मेहमान है। मोअर्रिख़ लिखते हैं कि शहर में दशहतज़दगी की नयी लहर दौड़ आई। लोग घरों से निकल कर गलियों और बाज़ारों में वाविला बपा करने लगे। मुसलमानो की आज़ानें एक बार फिर सुनाई देने लगीं।

ईसाईयों की हालते ज़ार से खुद पादरी मुतासिर हुए। वह सलीबें हाथों में उठाये गली–गली कुचा–कुचा फिरने लगे। वह भी रोते थे और दुआ मांगते थ।

सलीबी सवारों ने एक बार फिर बाहर निकल कर मिन्जनिकों पर हल्ला बोला मगर सुल्तान अय्यूबी ने अब यह मार्का अपनी निगरानी में ले लिया था। उसके सवार तीन इतराफ़ से सलीबी सवारों की तरफ सरपट रफ़्तार से बढ़े और उन्हें पीस कर रख दिया। सलीबी मुंहन्दिसों तक पहुंच ही न सके। उसके बाद सलीबयों ने दो और हल्ले बोले लेकिन मुसलमान शहसवारों ने उन्हें दरवाज़े से ज़्यादा आगे न आने दिया। सुल्तान अय्यूबीने पहली बार अपने एक नक़बज़न जैश (सुरंगे खोदने वाले और दिवारें तोड़ने वालों) को आगे बढ़ाया। उसका तरीका यह इख़्तियार किया गया कि हर एक के हाथ में लम्बी ढाल थी जिसके पीछे वह सर से पांव तक छुपा हुआ था। उन ढालों के अलावा उन्हें उपर से आने वाले तीरों से बचाने के लिए सुल्तान अय्यूबी के हज़ारों तीर अन्दाज़ों ने निहायत तेज़ी से दिवार के उस हिस्से पर तीर बरसाने शुरू कर दिये जिस हिस्से के नीचे नकब लगानी या सुरंग खोदनी थी। कहते हैं कि तीर इस क़दर ज़्यादा बरसाये जा रहे थे कि दिवार उनके पीछे छुप गयी थी और दिवार पर किसी सलीबी का सर नज़र नहीं आ रहा था।

वहाँ एक दरवाज़ा था जिसके उपर इमारत बनी हुई थी। उस दरवाज़े के पीछे भी ऐसा ही एक मज़बूत दरवाज़ा था। दोनों के दर्मियान देयोढ़ी थी जिसके उपर इमारत थी। सुल्तान अय्यूबी उसके नीचे सुरंग खुदवाना चाहता था। उस दरवाज़े से कुछ दूर दिवार ज़रा कमज़ोर

16/5

नज़र आती थी। वहाँ बड़ी मिन्जनिकें जो नुरुद्दीन ज़ंगी मरहूम ने अपनी ज़िन्दगी में बनवाई थीं कई--कई मन वज़नी पत्थर मार रही थीं। दिवार ख़ासी चौड़ी थी, लेकिन मुसलसल एक ही जगह संगबारी से उसमें शगाफ पड़ने लगा। पत्थरों के धमाके शहर वालों का ख़ून खुश्क कर रहे थे।

दिन के वक़्त नकबज़न जैश ढालों की ओट और तीरों के साये में दरवाज़े तक पहुंच गये। अब उपर से उन पर कोई तीर नहीं चला सकता था। रात के वक़्त सैंकड़ों जाबांज़ों ने मिलकर दरवाज़े यानी देयोढ़ी के नीचे तीस गज़ से ज़्यादा लम्बी सुरंग खोद ली, जो देयोढ़ी जितनी चौढ़ी थी। ऊपर की इमारत को मज़बूत शहतीरों से सहारा दिया गया। उस मुहिम में दो दिन सर्फ़ हुए। शहतीर आगे पहुँचाने में कई मुजाहिद शहीद हो गये। फिर उस सुरंग में घास और लकड़ियाँ भर कर उन पर आतिशगीर सयाल मादा फेंका गया और उसे आग लगा दी गयी। तमाम नकबज़न जांबाज़ वहाँ से भाग आये।

आग ने शहतीरों को भी जला दिया और ऊपर से इमारत धंसने लगी फिर मुहिब गड़गड़ाहट से गिर पड़ी। उधर दिवार पर जिस जगह वज़नी पत्थर मारे जा रहे थे वहाँ भी शगाफ हो गया। अब मल्बे के उपर से गुज़र कर शहर में दाखिल होना था मगर यह बड़ा ही खतरनाक इक़्दाम था। यहाँ से मलबा हटाने की मुहिम शुरू हुई।

❖

शहर में गिरजों के घंटे और ज़्यादा तेज़ बजने लगे। आज़ानों की मुकद्दस और फातेहाना आवाज़ें और ज़्यादा बुलन्द होने लगीं। सलीबी जरनलों और हुक्मरान टोले के भी हौसले पस्त हो गये। उन्होंने कान्फ्रेंस बुलाई जिसमें जरनलों ने यह तज्वीज़ पेश की कि तमाम तर फ़ौज और जितने भी ईसाई शहरी रज़ाकाराना तौर पर हमारे साथ आ सकते हैं, एक ही बार बाहर निकल कर सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज पर हम्ला बोल दें। यह तज्वीज़ बतरीके आज़ाम हरकूलिस ने इसलिए मन्ज़ूर न किया की शिकस्त की सूरत में शहरी औरतें और बच्चे रह जाएंगे जो मुसलमानों के इन्तकाम का निशाना बनेंगे। आख़िर कार यह तज्वीज़ मन्जूर हुई कि सुल्तान अय्यूबी के साथ सुलह की बात चीत की जाए। उसकी नुमाइंदगी एक ईसाई सरदार बालियान को दी गयी।

बाहर से सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज ने देखा कि दरवाज़े की गिरी हुई इमारत के मलबे पर सफ़ेद झंडा लहरा रहा है। तीर अन्दाज़ों को रोक दिया गया। झंडे के साथ तीन चार आदमी नमुदार हुए। एक ने बुलन्द आवाज़ से कहा--"हम सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के साथ सुलह की बात चीत करना चाहते है।" सुल्तान अय्यूबी सुन रहा था उसने कहा कि उन्हें आगे ले आओ।

सुल्तान अय्यूबी ने उनका इस्तक़बाल किया और उन्हें अपने ख़ेमें में ले गया। बात सलीबी सरदार बालियान ने शुरू की और कहा कि मुसलमान फौज मुहासिरा उठा कर वापस चली जाए और सुल्तान अय्यूबी अपनी शराईत बताये। सलीबी दरअसल बैतुल मुकद्दस से दस्तबरदार नहीं होना चाहते थे। सुल्तान अय्यूबी बैतुल मुकद्दस लिए बेग़ैर टलने वाला

नहीं था मगर उसका अभी एक भी सिपाही शहर में दाखिल नहीं हो सका था। वह अभी यह दावा नहीं कर सकता था कि उसने शहर ले लिया है। अभी सलीबी यह कह सकते थे कि यहाँ पर उनका क़ब्ज़ा है।

इधर सुलह की बात चीत हो रही थी उधर मुहासिरे की जंग जारी थी। सुल्तान अय्यूबी मुआहिदों और मज़ाकरात का काइल नहीं था। बात चीत के साथ उसने जंग जारी रखी थी दिवार का शगाफ़ खुल गया। इधर मुजाहिदीन ने जोश में आकर गिरी हुई इमारत के मलबे से हल्ला बोल दिया। दिवार के शगाफ़ में भी जांबाज़ अन्दर ज़ाने लगे और नक़बज़न जैश फ़ौज की सहूलत के लिए शगाफ़ को खुला करने लगे, मगर सलीबी उस शहर से दस्तबरदार न होने का पुख़्ता अज़म किये हुए थे। उन्होंने दोनों जगहों से हम्लावरों को बाहर धकेल दिया। बाहर से दस्ते सैलाब और तूफ़ान की तरह बढ़े। आगे जाने वाले सलीबियों के तीरों और बरछियों से गिरे। पीछे वाले उन्हें रौंदते हुए निकल गये। बड़ा ही ख़ूंरेज़ मार्का लड़ा गया। उस दौरान किसी जांबाज़ ने शहर के बड़े दरवाज़े के बुर्ज से लाल क्रास वाला झंडा उतार फेंका और वहां इस्लामी झंडा चढ़ा दिया। ईसाई शहरियों ने ऐसी भगदड़ मचाई कि सलीबी फ़ौज के लिए रूकावट और मसला बन गये।

सुल्तान अय्यूबी के जांबाज़ दिवाने हुए जा रहे थे। उनमें से कुछ मस्जिदे अक़्सा में दाखिल हो गये और उपर से सलीब उतार कर फेंक दी। वहां भी इस्लामी झंडा लहराने लगा लेकिन शहर में दोनों फ़ौजें एक दूसरी का बुरी तरह कुश्त व ख़ून कर रही थीं। यह ज़रूर नज़र आ रहा था कि सलीबियों की जारहीयत और मज़ाहमत की शिद्दत तेज़ी से कम हो रही थी।

❖

सुल्तान अय्यूबी सलीबियों के वफ़्द के साथ सुलह की बात कर रहा था। उसे बाहर की और शहर की अभी कुछ ख़बर नहीं थी। उसने बालियान से कहा-"मैंने बैतुल मुक़द्दस को अपनी ताकत से आज़ाद कराने की कसम खाई थी। अगर आप लोग यह शहर मुझे इस तरह दे दें जैसे यह मैंने फ़तह किया है तो मैं सुलह की बात सुन लूंगा।"

"सलाहुद्दीन!" बालियान ने ज़रा दबदबे से कहा-"इस शहर का नाम भी योरूशलम है बैतुलमुक़द्दस नहीं। अगर सुलह नहीं करना चाहते तो हम आपको मजबूर नहीं करेंगे लेकिन यह सुन लो कि इस शहर में आपके चार हज़ार फ़ौजी हमारे जंगी क़ैदी हैं और जो मुसलमान शहरी हमारी क़ैद में हैं उनकी तादाद तीन हज़ार है। हम उन तमाम क़ैदियों और शहर के हर एक मुसलमान बाशिन्दे को, ख़्वाह वह औरत है या बच्चा, जवान है या बूढ़ा, क़त्ल कर देंगे।"

सुल्तान अय्यूबी की आँखें गुस्से से लाल हो गयीं और उसके होंठ कांपे। वह कुछ कहने लगा था कि ख़ेमे का पर्दा उठा। उसका एक कमानदार आया था। सुल्तान अय्यूबी ने उसे अपने इशारे से अपने पास बुलाया। कमानदार ने उसके कान में सरगोशी की- "शहर ले लिया गया है। बड़े दरवाज़े और मस्जिदे अक़्सा पर झंडे चढ़ा दिए गये हैं।"

सुल्तान अय्यूबी को बालियान की धमकी का जवाब मिल गया। उसकी लाल अंगारा

आंखों में ग़ैरमामूली चमक पैदा हुई। उसने बड़ी ज़ोर से अपनी रान पर हाथ मार कर सलीबी सरदार बालियान से कहा—"फ़ातेह मफतूह के साथ सुलह की बात नहीं किया करते, कोई एक भी मुसलमान तुम्हारा कैदी नहीं।" वक़ाअ निगारों ने लिखा है कि सुल्तान अय्यूबी बड़े तहम्मुल से बात किया करता था, मगर बालियान की धमकी के साथ ही फ़तह की ख़बर सुनकर उसकी आवाज़ में कहर और गरज पैदा हो गयी। उसने कहा—"तुम सब मेरे कैदी हो। तुम्हारी सारी फौज मेरी कैदी है। शहर में रहने वाला हर एक ईसाई मेरा कैदी है। इस शहर से अब वह ईसाई निकल कर जा सकेगा जो मेरा मुकर्रर किया हुआ ज़रे फ़िदिया अदा करेगा। जाओ, अन्दर जाकर देखो यह योरूशलम है या बैतुल मुक़द्दस।"

बालियान और उसके साथ आये हुए सलीबी घबरा गये। ख़ेमे से निकलकर देखा—"सुल्तान अय्यूबी के फ़ौज का बेशतर हिस्सा शहर में दाख़िल हो चुका था और बड़े दरवाज़े पर इस्लामी परचम लहरा रहा था।

यह इत्तफ़ाक़ था या सुल्तान अय्यूबी ने प्लान ही ऐसा बनाया था, या ख़ुदाए ज़ुलजलाल का मंशा यही था कि सुल्तान अय्यूबी बरोज़ जुमा 2 अक्टूबर 1187 बमुताबिक 27 रजब 583 हि0 शहर में फ़ातेह की हैसियत से दाखिल हुआ। ग़ौर फ़रमाइये यह रजब की सताइसवीं रात थी और यह रात है जब रसूले अकरम सल्ल0 उसी मुक़ाम से मेराज को तशरीफ़ ले गये थे। तमाम मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम मोअर्रिख़ीन ने बैतुल मुक़द्दस की फ़तह की यही तारीख़ लिखी है।

❖

सुल्तान अय्यूबी जब शहर में दाखिल हुआ तो मुसलमान घरों से निकल आये। औरतों ने सरों से ओढ़नियां उतार कर उसके रास्ते में फेंक दीं। सुल्तान अय्यूबी के बॉडीगार्डों ने घोड़ों से उतर कर ओढ़नियाँ रास्तों से उठा लीं क्योंकि सुल्तान अय्यूबी अपनी परस्तीश और ख़ुशामद से सख़्त नफ़रत करता था। ज़ुल्म व तशद्दुद के मारे हुए मुसलमान चीख़—चीख़ कर नारे लगा रहे थे और बाज़ सज्दे में गिर पड़े। आंसू जारी थे। यह बड़ा ही जज़्बाती और दर्दनाक मंज़र था। ऐनी शाहिदों के मुताबिक़, सुल्तान अय्यूबी इस क़दर जज़्बाती हो गया था कि नारों के जवाब में हाथ बुलन्द करके हिलाता था लेकिन उसकी होंठों पर मुस्कराहट नहीं थी, बल्कि वह होंठों को भींचता और दांतों में दबाने की कोशिश करता था। यह कोशिश जज़्बातियत को दबाने और सिस्कियां रोकने की थी।

ईसाई शहरी घरों में दुबके खौफ़ से कांप रहे थे। उन्होंने अपनी जवान लड़कियों को छुपा लिया था। कहते हैं कि अक्सर लड़कियों को मर्दाना लिबास पहना दिये गये थे। उन्हें यकीन था कि मुसलमान सिपाही ख़्वातीन की बेहुर्मती का इन्तक़ाम लेने के लिए उनकी बेटियों को बेआबरू करेंगे, लेकिन यूरोपी मोअर्रिख़, लेन पोल लिखता है कि सलाहुद्दीन ने अपने आपको ऐसा आली ज़रफ़ और कुशादा दिल कभी साबित नहीं किया था जितना उस वक़्त किया जब उस की फ़ौज सलीबी फ़ौज से शहर का कब्ज़ा ले रही थी। उसकी फ़ौज के सिपाही और अफ़सर गली कूचों में अमन व अमान बरकरार रखने के लिए घूम रहे थे और

उनकी नज़र इस पर थी कि कोई मुसलमान शहरी किसी ईसाई शहरी पर इन्तकामन हम्ला न कर दे। सुल्तान अय्यूबी के एहकाम ही ऐसे थे। अलबत्ता किसी ईसाई को शहर से बाहर जाने की इजाज़त नहीं थी।

सुल्तान अय्यूबी सबसे पहले मस्जिदे अक़्सा में गया। जज़्बात की शिद्दत से वह मस्जिद की दहलीज़ पर घुटनों के बल जैसे गिर पड़ा हो। वह दहलीज़ पर सज्दा रेज़ हो गया और बहाउद्दीन शद्दाद और अहमद बेली मिस्री के मुताबिक़, सुल्तान अय्यूबी के आँसू इस तरह बह रहे थे कि उस अज़ीम मस्जिद की दहलीज़ धुल रही थी। मस्जिद की हालत बहुत बुरी थी। कई एक मुसलमान हुक्मरानों ने वक़्तन–वक़्तन मस्जिद में सोने और चांदी के फ़ानूस और शमादान रखे थे। उन्होंने अकीदत के तौर पर मस्जिद में तरह–तरह के बेशकीमत तहाइफ़ भी रखे थे। सलीबी तमाम फ़ानूस, शमादान और क़ीमती तहाइफ़ उठा ले गये थे। फ़र्श से जगह–जगह ख़ार और मरमर की सीलें ग़ायब थीं। मस्जिद मरमत तलब थी।

मरमत की तरफ़ तवज्जो देने से पहले सुल्तान अय्यूबी ने शिकस्त खुर्दा ईसाईयों के मुतअल्लिक़ फ़ैसला करना ज़रूरी समझा उसने अपनी मशावरती मज्लिस से मशवरा किय और हुक्मनामा जारी किया कि हर ईसाई मर्द दस अशरफ़ी (दीनार) औरत पाँच अशरफ़ी और बच्चा एक अशरफ़ी ज़र फ़िदिया अदा करके शहर से निकल जाए। कोई भी ईसाई वहाँ रहना नहीं चाहता था बुर्ज दाउद के नीचे वाला दरवाज़ा खोल दिया गया था जहाँ मुसलमान हाकिम फ़िदिया वसूल करने के लिए बैठ गये और ईसाई आबादी का इन्ख़ला शुरू हो गया। सबसे पहले इसाईयों का सरबराह बालियान शहर से निकला। उसके पास इंगलिस्तान के बादशाह हेनरी की भेजी हुई बेअन्दाज़ा रक़म थी। उसमें से उसने तीस हज़ार अशरफी तिलाई ज़र फ़िदिया अदा की और उसके एवज़ में दस हज़ार ईसाईयों को रिहा करा लिया।

बाब दाऊद पर बाहर जाने वाले ईसाईयों का तांता बंध गया। वह पूरे पूरे ख़ानदान का ज़रे फ़िदिया अदा करके जा रहे थे। यह रिवाज कि मफ़्तूहा शहर को फ़ौज बुरी तरह लूट लेती थी। बैतुल मुक़द्दस तो वह शहर था जहाँ सलीबियों ने फ़तह के बाद मुसलमानों का क़त्ले आम किया और उनके घर लूट लिए और उनकी बेटियों और मस्जिदों की बेहुर्मती की मगर मुसलमानों ने यह शहर फ़तह किया तो लूट मार की बजाए यूं हुआ कि सुल्तान अय्यूबी के फ़ौजियों ने और बाहर से फ़ौरन पहुंच जाने वाले मुसलमान ताजिरों ने ईसाईयों के घरों का सामान ख़रीदा ताकि वह ज़रे फ़िदिया देने के क़ाबिल हो जाएं। इस तरह वह ईसाई ख़ानदान भी रिहा हो गये जिन के पास ज़रे फ़िदिया पूरा नहीं था।

इस मौक़ा पर एक तज़ाद देखने में आया कि जो कई एक मोअर्रिख़ों और उस दौर के वक़ाअ निगारों ने बयान किया है। बैतुल मुक़द्दस के ससबे बड़े पादरी बतरीके आज़म हरक़ूलिस ने यह हरकत की कि तमाम गिरजा घरों की जमा शुदा रक़म अपने क़ब्ज़े में ले ली। गिरजों से सोने के प्याले और दिगर बेशक़ीमत इशिया चुरा लीं। कहते हैं कि यह

दौलत इतनी ज़्यादा थी कि उससे सैकड़ों ग़रीब ईसाइयों के खानदानों को रिहा किया जा सकता था मगर उनके उस सबसे बड़े पादरी ने किसी एक का भी ज़रे फ़िदिया अदा न किया। वह अपना फ़िदिया अदा करके निकल गया। किसी मुसलमान फ़ौजी ने देख लिया कि यह शख़्स बहुत सी दौलत साथ ले जा रहा है। उस फ़ौजी की रिपोर्ट पर किसी हाकिम ने सुल्तान अय्यूबी से कहा कि उसे इतनी दौलत और इतना सोना न ले जाने दिया जाए।

"अगर उसने ज़रे फ़िदिया अदा कर दिया है तो उसे न रोका जाए।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा–"मैं इन लोगों से कह चुका हूँ कि किसी से फ़ालतू रक़म न ली जाएगी। जो कोई जितना ज़ाती सामान साथ ले जा सकता है ले जाए मैं अपने वादे की खिलाफ़ वरज़ी नहीं होने दूंगा।"

बतरीके आज़म अपने गिरजों से चुराई हुई दौलत और क़ीमती सामान ले गया।

सुल्तान अय्यूबी ने ज़रे फ़िदिया अदा करने की मीयाद चालीस दिन मुक़र्रर की थी। चालीस दिन पूरे हो गये तो अभी तक हज़ारों ग़रीब और नादार ईसाई शहर में मौजूद थे। नब्बे वर्ष पहले जब सलीबियों ने बैतुल मुक़द्दस फ़तह किया तो दूर–दूर से ईसाई यहां आकर आबाद हो गये थे। उन्हें तवक़्क़ो नहीं थी कि कभी यहाँ से निकलना भी पड़ेगा। यह हालत देखकर सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का भाई अल्आदिल उसके पास आया।

"मोहतरम सुल्तान!" अल्आदिल ने कहा–"आप जातने हैं कि इस शहर की फ़तह में मेरा और मेरे दोस्तों का कितना हाथ है। उसके एवज़ में मुझे एक हज़ार ईसाई बतौर गुलाम दे दें।"

"इतने गुलाम क्या करोगे?" सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने पूछा।

"यह मेरी मरज़ी पर होगा, मैं जो चाहूंगा करूंगा।"

सुल्तान अय्यूबी ने अलआदिल को एक हज़ार ईसाई देने का हुक्म दे दिया। अल आदिल ने एक हज़ार ईसाई मुन्तख़ब किये और उन्हें बाबे दाऊद ले जाकर सबको रिहा कर दिया।

"सुल्तान मोहतरम!" अल आदिल ने वापस आकर सुल्तान अय्यूबी से कहा–"मैंने इस तमाम ईसाई गुलामों को शहर से रूख़्सत कर दिया है। उनके पास ज़रे फ़िदिया नहीं था।"

"मै जानता था तुम ऐसा ही करोगे।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा–"वरना मैं तुम्हें एक भी गुलाम नहीं देता। इन्सान इन्सान का गुलाम नहीं हो सकता। अल्लाह तुम्हारी यह नेकी कुबूल करे।"

यह वाक़िआ अफ़साने नहीं, मोअर्रिख़ों ने बयान किये हैं। वह लिखते हैं कि ईसाई औरतों का एक हुजूम सुल्तान अय्यूबी के पास आया। पता चला कि उन सलीबी फ़ौजियों की बीवियाँ, बेटियाँ या बहनें हैं जो मारे गये या क़ैद हो गये हैं और उनके पास ज़रे फ़िदिया नहीं। सुल्तान अय्यूबी ने उन सबको सिर्फ़ रिहा ही नहीं किया बल्कि उन्हें कुछ रकम देकर रूख़्सत किया। उसके बाद उसने आम हुक्म जारी कर दिया कि तमाम ईसाईयों को, जो

शहर में रह गये हैं ज़रे फ़िदिया मांफ किया जाता है। वह जा सकते हैं। सलीबियों की सिर्फ फौज कैदी में रही।

उससे पहले सुल्तान अय्यूबी ने मस्जिदे अक़्सा की सफाई और मरमत कराई थी। उस दौर की तहरीरों के मुताबिक़ सुल्तान अय्यूबी ख़ुद सिपाहियों के साथ ईटें और गारा उठाता रहा। 19 अक्टूबर 1187 ई0 जुमा का मुबारक दिन था। सुल्तान अय्यूबी जुमा की नमाज़ के लिए मस्जिदे अक़्सा में गया तो वह मेम्बर नुरुद्दीन ज़ंगी मरहूम ने बनवाया था और मरहूम की बेवा और बेटी लाग्री थीं, उसके साथ था। उसने मेम्बर अपने हाथों मस्जिद में रखा। जुमा का ख़ुत्बा दमिश्क़ से आये हुए एक ख़तीब ने पढ़ा।

उसके बाद सुल्तान अय्यूबी ने मस्जिदे अक़्सा की आराईश की तरफ़ तवज्जो दी। मरमर के पत्थर मंगवा कर फर्श में लगवाये और मस्जिद को जी भर के ख़ूबसूरत बनाया। वह ख़ूबसूरत पत्थर जो सुल्तान अय्यूबी ने अपने हाथों लगवाये थे आज भी मस्जिदे अक्सा में मौजूद हैं और उनकी ख़ूबसूरती में कोई फ़र्क नहीं आया।

❖

बैतुल मुक़द्दस की फ़तह तारीख़े इस्लाम का बहुत बड़ा वाक़िआ और अज़ीम कारनामा था, मगर सुल्तान अय्यूबी का जिहाद अभी ख़त्म नहीं हुआ था। उसे सरज़मीन अरब और फ़िलिस्तीन को सलीबियों से पाक करना था। उसने बैतुल मुक़द्दस को जहाँ एक मज़बूत छावनी और अस्करी मुस्तक़र बनाया वहाँ उस मुक़द्दस मुक़ाम को इल्म व फ़ज़ल का मरकज़ बना दिया। 5 रमज़ान 583 हि0 (8 दिसम्बर 1187 ई0)के रोज़ उसने बैतुल मुक़द्दस से कूच किया। उसका रूख़ शुमाल की तरफ़ था। उसने अपने बेटे अल्मुलकुल ज़ाहिर को जो किसी और जगह था, पैग़ाम भेजा कि अपने दस्ते लेकर उसके पास आ जाए। सुल्तान टाइर पर हम्ला करने जा रहा था। यह सलीबियों की मज़बूत छावनी थी और बन्दरगाह थी। सुल्तान अय्यूबी ने बेहेरिया के कमाण्डर अल्फ़ारस बैदरीन को पैग़ाम भेजा था कि वह टाइर से कुछ दूर तक आजाए और जब सुल्तान उस शहर का मुहासिरा करे तो अल्फ़ारस सलीबी बेड़े पर हम्ला कर दे। सुल्तान अय्यूबी ने अल्फारस को हम्ले के दिन जो बताये वह दिसम्बर के आख़िर या जनवरी के शुरू के थे।

दोनों लड़कियाँ अल्फ़ारस के जहाज़ में थीं। हसन बिन अब्दुल्लाह का भेजा हुआ जासूस वहाँ नहीं था। हसन बिन अब्दुल्लाह बैतुल मुक़द्दस की जंग की फ़तह के बाद कामो में मस्रूफ़ रहा। इधर से फ़ारिग़ होकर उसे ख़्याल आया कि उसने अपना एक आदमी अल्फ़ारस के जहाज़ में भेजा था। उसने एक क़ासिद रऊफ़ कुर्द के पास यह मालूम करने के लिए भेजा कि उसका आदमी क्या कर रहा है। उस क़ासिद को जहाज़ तक पहुंचते कई दिन लग गये। रऊफ़ कुर्द ने क़ासिद को बताया कि हसन बिन अब्दुल्लाह का भेजा हुआ जासूस बहुत दिन हुए चला गया था।

जासूस उस वक़्त तक मछलियों का ख़ुराक बन चुका था और रऊफ कुर्द उसके इस अन्ज़ाम से अच्छी तरह वाक़िफ़ था। कुछ रोज़ पहले जासूस ने रऊफ कुर्द से कहा था कि

इन लड़कियों को वह यहाँ नहीं रहने देगा । उसने देखा था कि जब जहाज़ साहिल के क़रीब लंगर अन्दाज़ होता है तो छोटी–छोटी कश्तियां उसक क़रीब आ जाती और माहीगीर सी किस्म के लोग मुख़्तलिफ़ चीज़ें फरोख़्त करते हैं । उनमें एक आदमी को उसने तीन चार जगहों पर देखा था । लड़कियां उसे रस्से की सींढी लटका कर उपर बुलाती हैं और उससे कुछ ख़रीदने की बजाए उसके साथ बातें करती रहती हैं । जहाज़ अगर दस पन्द्रह मील दूर साहिल के साथ कहीं लंगरअन्दाज़ हुआ तो वहाँ भी यह आदमी कश्ती लेके आ गया । जासूस को इस आदमी पर शक था ।

फ़लोरी ने रऊफ कुर्द की अक़ल मार डाली थी । वह उससे राज़ की बातें पुछती और वह उसे सबकुछ बता देता था । अल्फ़ारस बहुत मस्रूफ़ रहता था । वह दूसरे जहाज़ों में भी चला जाता था । एक रोज़ रऊफ़ कुर्द ने फ़लोरी के तिलिस्म से मसहूर होकर उसे बता दिया कि जहाज़ में एक ख़तरनाक आदमी है, उसके साथ कोई बात न करना । रऊफ कुर्द उन लड़कियों को अभी तक खानाबदोश समझ रहा था और वह उनके असली नामों, फ़लोरी और रोज़ी से वाकिफ नहीं था । लड़कियाँ दर असल तजुर्बाकार जासूस थीं । वह समझ गयीं कि जिस आदमी के मुतअल्लिक रऊफ़ कुर्द ने बात की है वह जासूस है । रऊफ़ कुर्द को गवारा न था कि फ़लोरी जहाज़ से चली जाए । उसने इन लड़कियों को यह भी बता दिया कि यह जासूस है ।

एक रात अल्फ़ारस किसी दूसरे जहाज़ में गया हुआ था । आधी रात के वक़्त रऊफ़ कुर्द और फ़लोरी अर्शे पर जंगले के साथ ऐसी जगह छुपे हुए थे जहाँ पीछे और दायें–बायें सामान पड़ा था । हसन बिन अब्दुल्लाह का जासूस दानिस्ता या इत्तफ़ाक़िया उधर निकला । रऊफ़ कुर्द घबराने या झूठ बोलने की बजाए उठकर उसे ज़रा परे ले गया और कहा कि वह उस लड़की को लालच वग़ैरह देकर पूछ रहा था कि वह दोनों कौन हैं । उसने ज़ासूस से कहा कि मैं चला जाता हूँ तुम उसके पास बैठ जाओ और अपने तजुर्बे और इल्म के मुताबिक उससे बातें करके भेद लो कि यह हैं कौन?

जासूस को फ़लोरी के पास भेज कर उसने रोज़ी को जगाया और उसे कहा कि शिकार फ़लां जगह है, तुम भी चली जाओ । मैं इधर उधर देखता रहूंगा कि कोई देख न ले ।

रोज़ी उपर आई । रऊफ कुर्द ने उसे गज़ भर लम्बी रस्सी दी और वह उस जगह चली गयी जहाँ जासूस और फ़लोरी बैठे थे । वहाँ अंधेरा था । रोज़ी उनके पास बैठ गयी । जासूस गप शाम के अन्दाज़ से उनकी असलियत का भेद हासिल करने की कोशिश कर रहा था । रोज़ी ने रस्सी उसकी गर्दन की गिर्द लपेट दी । लड़कियाँ तरबियतयाफ्ता थीं । फ़लोरी ने फ़ौरन रस्सी का दूसरा सिरा पकड़ लिया । पेशतर उसके जासूस अपना बचाव करने के लिए हाथ पाँव मारता, उसकी गर्दन का फ़ंदा लड़कियों ने रस्सी अपनी तरफ खींच कर तंग कर दिया । वह ज़रा देर तड़पा और फिर उसका जिस्म साकित हो गया ।

रऊफ़ कुर्द ज़रा परे खड़ा था । वहाँ मगर कोई मुलाज़िम था तो उसे उसने कोई काम

बता कर वहाँ से हटा दिया था। लड़कियों ने ज़ासूस की लाश समन्दर में फेंक दी। रोज़ी चली गयी। फ्लोरी वहीं बैठी रही। रऊफ़ कुर्द उसके पास चला गया और दोनों एक दूसरे में गुम हो गये।

अल्फ़ारस को मालूम न था कि उसके जहाज़ में कोई जासूस आया, या रऊफ़ कुर्द ने किसी नये आदमी को जहाज़ में किसी काम पर लगाया था। उसके कत्ल के दो चार रोज़ बाद अल्फ़ारस को ख़्याल आया कि उसके अपने और दूसरे पाँच जहाज़ों के मलाह और बहेरी सिपाही तो महीनों से समन्दर में हैं और वह सब उकता गये होंगे। उसने दूसरे जहाज़ों में जाकर मलाहो और सिपाहियों की कैफ़ियत देखी थी। वह ख़ुश्की की रौनक से दूर फरागत और बेयक़ीनी कैफियत से तंग आए हुए थे। अगर कभी–कभी बहेरी मार्का हो जाया करता तो उनकी ज़ेहनी हालत यह न होती। चुनांचे उसने फ़ैसला किया कि एक रात वह तमाम जहाज़ों को इकठ्ठा करके लंगर डाल देगा और जश्न मनायेगा मलाह और सिपाही गाये बजायेंगे और सब को अच्छा खाना दिया जाएगा।

उसने रऊफ़ कुर्द और अपने मातेहत अफ़सरों से बात की। उस वक़्त दोनों लड़कियां भी मौजूद थीं। उन्होंने कहा कि वह नाचेंगी। अल्फ़ारस ज़िन्दा दिल इन्सान था। वह ख़ुद भी जश्न और राग रंग की ज़रूरत महसूस कर रहा था। उसने अभी कोई रात मुकर्रर न की क्योंकि उसे ख़ुश्की से सुल्तान अय्यूबी के क़ासिद का इन्तज़ार था। दिसम्बर का आख़िरी हफ़्ता था।

दो रोज़ बाद क़ासिद आ गया। उसने बताया कि सुल्तान अय्यूबी टाइर से थोड़ी ही दूर रह गया है और अल्फ़ारस जहाज़ों को टाइर के क़रीब ले जाए ताकि मुहासिरे के वक़्त कम वक़्त में टाइर पहुँच सके। क़ासिद ने ख़ास तौर पर कहा था कि अब दिन और रात चौकस रहें क्योंकि सलीबी जहाज़ क़रीब ही मौजूद हैं.....अल्फ़ारस ने क़ासिद को रुख़्सत किया और उस शाम अपने बिखरे हुए जहाज़ों को एक जगह इकठ्ठा होने का इशारा दे दिया। उस ने रऊफ़ कुर्द को बताया कि चन्द रोज़ बाद उन्हें बहेरी जंग लड़नी पड़ेगी इसलिए दो रात बाद जश्न मना लिया जाए।

रऊफ़ कुर्द ने बता दिया कि फ़लां रात जहाज़ इकठ्ठे होंगे और रौनक मेला होगा।

एन्डरियो की कश्ती आ रही थी। हसन बिन अब्दुल्लाह के जासूस उसे कई जगहों पर देखा था। अब जहाज़ साहिल के क़रीब आकर रूका तो एन्डरियो आ गया। लड़कियों ने हसबे मामूल उसे उपर बुलाया और उससे कुछ ख़रीदा और उस के कान में यह क़ीमती इत्तलाअ डाल दी कि फ़लां रात जहाज़ इकठ्ठे खड़े होंगे और अर्शों पर जश्न होगा। एन्डरियो देख रहा था कि दूर से अल्फ़ारस के दूसरे जहाज़ आ रहे थे। वह लड़कियों को यह कहकरचला गया– "उस रात उसी तरफ मेरी कश्ती आ जाएगी। सीढ़ी फेंककर उतर आना।"

❖

वह रात आ गयी। छः जहाज़ बादबान लपेटे पहलू ब पहलू खड़े थे। जहाज़ों के

कप्तान और दिगर अफ़सर अल्फ़ारस के जहाज़ में इकट्ठे हो गये थे। पुर तकल्लुफ़ खाना हो रहा था। मलाह और सिपाही अपने–अपने जहाज़ों में नाच, कूद और गा रहे थे। अल्फ़ारस के जहाज़ में दो लड़कियां रक़्स कर रही थीं। दफ़ और साज़ मौजूद थे। जहाज़ों पर बहुत सी मशाले जला दी गयी थीं। रात को दिन बना दिया गया था।

यह रौनक जब उरूज को पहुंची तो रात ख़ासी गुज़र चुकी थी। सलीबियों के दस बारह जंगी जहाज़ बत्तियाँ बुझाये हुए अल्फ़ारस के जहाज़ों के तरफ़ बढ़े आ रहे थे। वह नये चाँद की तरतीब में थे। वह क़रीब आ गये तो भी किसी को पता न चला। इधर छोटी सी एक कश्ती अल्फारस के जहाज़ के क़रीब हो रही थी। अचानक अल्फ़ारस को जहाज़ों पर जलते हुए गोले गिरने लगे और तीरो की ऐसी बौछाड़ें आई कि कई मलाह और सिपाही तड़पने लगे। अल्फ़ारस और उसके कप्तानों ने उस अचानक हम्ले से निकलने की कोशिश की मगर जहाज़ों को निकालना मुम्किन न था। सिपाहियों ने तीरों से जवाब दिया। मिन्जनिको से आग फेंकी गयी। एक सलीबी जहाज़ को आग लगी मगर सलीबी अपना काम कर चुके थे। उनके जहाज़ वापस चले गये।

मार्का जिस तरह अचानक शुरू हुआ था उसी तरह अचानक ख़त्म हो गया। क़ाजी बहाउद्दीन शद्दाद की तहरीर के मुताबिक़ अल्फ़ारस के पाँच जहाज़ जल कर तबाह हो गये। दो कप्तान और बहुत से बहेरी सिपाही शहीद हो गये। क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद ने उसकी तारीख़ 27 शव्वाल 583 हि0 (30 दिसम्बर 1187 ई0) लिखी है।

चूंकि जहाज़ जल रहे थे। इसलिए रौशनी बहुत थी। किसी ने देखा कि एक कश्ती जा रही थी जिसमें दो मर्द और दो औरतें थीं। अल्फ़ारस ने अपने जहाज़ से एक कश्ती उतरवाई और उस कश्ती को पकड़ने की कोशिश की गयी। उस कश्ती से तीर आने लगे। इधर से भी तीर चले और कश्ती को घेर लिया गया। दोनों मर्द और एक लड़की तीर का निशाना बन गयी। एक बच गयी। बाद में उसी लड़की की बयान से तबाही की असल हक़ीक़त खुली।

उस वक़्त सुल्तान अय्यूबी टाइर से कुछ दूर ख़ेमाज़न था। यहाँ से उसे सीधा टाइर पर यलग़ार करनी थी कूच से एक ही रोज़ पहले उसे इत्तलाअ मिली कि छः में से पांच जहाज़ तबाह हो गये हैं। सुल्तान अय्यूबी बुझ के रह गया। वह ऐसी बुरी ख़बर सुनने के लिए तैय्यार नहीं था और वह इतनी जल्दी दिल छोड़ने वाला भी नहीं था। उसने पेशक़दमी मुल्तवी कर दी और अल्फ़ारस और दूसरे कप्तानों को बुलाया। अल्फ़ारस ने उसे साफ़ अल्फ़ाज़ में बता दिया कि मलाह और सिपाही फ़राग़त और समन्दर से उकताए हुए थे इसलिए उसने जश्न का इहतिमाम किया था।

सुल्तान अय्यूबी ने अपने सालारों और मुशीरों का इज्लास बुलाया और सुरते हाल सबके सामने रखी। सबने यह मश्वरा दिया कि सख़्त सर्दी पड़ रही है और बारिशें शुरू हो चुकी हैं। इस मौसम में जंग जारी नहीं रखी जा सकती। इसके अलावा सिपाही मुसलसल जंग और तेज़ रफ़तार कूच और पेशक़दमी से इतने थक चुके थे कि उन्हें जज़्बात में

लाकर लड़ाते रहना जुल्म है और उसका नतीजा शिकस्त भी हो सकता है। उन्होंने बहेरी बेड़े की तबाही का मिसाल देकर कहा कि इतना तवील अर्सा सिपाहियों को घरों से दूर रखने के असरात ऐसे ही होते हैं। कहीं ऐसा न हो कि बैतुल मुक़द्दस की अज़ीम फ़तह हमारे लिए कोई और हादसा बन जाए।

सुल्तान अय्यूबी डिक्टेटर नहीं था। उसने यह मश्वरा मन्ज़ूर कर लिया और हुक्म दिया कि मक़बूज़ा इलाकों से जो आरज़ी फ़ौज बनायी गयी थी वह तोड़ दी जाए और उन लोगों को कुछ रक़म देकर घरों को भेज दिया जाए। उसने अपनी बक़ायदा फ़ौज के भी कुछ हिस्से को थोड़ी–थोड़ी छुट्टी देकर घरों को भेज दिया और 20 जनवरी 1188 ई0 के रोज़ अकरा को रवाना हो गया। मार्च 1188 ई0 तक अकरा में रहा।

आँसू जो मस्जिदे अक्सा में गिरे

सलीबी जंग उरूज को पहुंच गयी थी। बैतुल मुक़द्दस की फ़तह ने सारे यूरोप को ज़लज़ले के बड़े ही शदीद झटके की तरह झंझोड़ डाला था। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अपनी ज़िन्दगी का मिशन पूरा कर दिया था लेकिन बैतुल मुक़द्दस सलीबियो के क़ब्ज़े से छुड़ा लेना ही काफ़ी नहीं था। उस मुक़द्दस शहर का दिफ़ाअ मुस्तहकम करना था जो सिर्फ़ शहर की दिवारें मज़बूत कर लेने तक महदूद नहीं था। बैतुल मुक़द्दस को सलीबियों से बचाये रखने के लिए ज़रूरी था कि इर्द गिर्द, दूर दूर के इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर लिया जाए और साहिल को भी अपनी तहलील में रखा जाए। बहुत से अहम मुक़ामात पर सुल्तान अय्यूबी ने पहले क़ब्ज़ा कर लिया था। बाक़ी जो रह गये थे उन पर सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज हम्ले करती और क़ाबिज़ होती चली जा रही थी।

मक़बूज़ा मुक़ामात से ईसाई आबादी भागती चली जा रही थी। जिन मुक़ामात पर ईसाईयों का क़ब्ज़ा था। वहाँ उन्होंने मुसलमानों का जीना हराम कर रखा था। उनके लिए मुसलमानों का क़त्ले आम रोज़मर्रा का मामूल और मज़हबी फ़रीज़ा बन गया था। उसके बरअक्स सुल्तान अय्यूबी जो जगह फतह करता वहां के इसाई बाशिन्दों को अपनी फ़ौज की हिफ़ाज़त में निकाल देता था, सिवाये जंगी कैदियों यानी सलीबी फ़ौजियों के। अरज़े फ़िलिस्तीन की अब यह कैफियत थी कि सुल्तान अय्यूबी हर एक दस्ते को ख़्वाह वह उसके हैडक्वार्टर से कितनी ही दूर क्यों न था, राब्ते और अपने एहकाम का प्राबन्द रखे हुए थे। छापामार जैश उक़ाबों और चीतों की तरह पहाड़ियों, जंगलों और सेहराओं में घूमते फ़िरते रहते थे। जहां उन्हें सलीबी फ़ौज का कोई दस्ता या रस्द का काफ़ला नज़र आता वह उस पर टूट पड़ते, शबख़ून मारते और उन्हें हलाक, ज़ख़्मी और तितर बितर करके उनके घोड़े, अस्लेहा और रस्द उठा लाते।

इन छापामारों ने जो शबख़ून मारे वह हमारी तारीख़ की वलवला अंगेज़, ईमान अफ़रोज़ और माफ़ूक़ुलफ़ितरत शुजाअत की दास्तान हैं। हर एक का बयान शुरू हो जाए तो यह दास्तान बड़ी लम्बी मुद्दत तक ख़त्म न हो। यह अरज़े फ़िलिस्तीन के पासबां थे जो अकेले–अकेले, दो दो और चार–चार की टोलियों में कई–कई सौ नफ़री के दस्तों और दुश्मन के कैम्पों पर शबख़ून मारते और शब की तारीकी में गुम या अपने ख़ून में डूब जाते थे। उन्होंने दुश्मन से रस्द छीन कर अपनी फ़ौजों को दी और ख़ुद दुश्मन की तलाश में भूखे भटकते रहे, लड़ते और कटते रहे, अपनी लगाई हुई आग में ज़िन्दा जलते रहे। उन्हें कफ़न नहीं नसीब नहीं हुए, किसी ने उनकी नमाज़े जनाज़ा न पढ़ी और वह किसी क़ब्र में दफ़्न हुए।

वह क़हर थे जो दुश्मन पर टूटते रहे। उन्हीं के भरोसे सुल्तान अय्यूबी बैतुल मुक़द्दस

की फतह के बाद पूरे फिलिस्तीन में शेर की तरह दनदनाता, दहाड़ता और गरजता रहा। सुल्तान अय्यूबी की उन गोरिला और कमाण्डो पार्टियों के मुतअल्लिक मशहूर और मारूफ मोअर्रिख़ लेन पोल लिखता है–"यह बेदीन (मुसलमान) हमारे नायटों (जंगजू सरदारों) की तरह वज़नी ज़िरहबकरत नहीं पहनते थे लेकिन हमारे ज़िरहपोश नायटों को नाकों चने चबवा देते थे। उन पर हम्ला किया जाता तो भागते नहीं थे। उनके घोड़े सारी दुनिया में तेज़ रफ़तार माने गये थे। वह जब देखते कि (सलीबी) उनके तआक्कुब से हट गये हैं तो वह फिर वापस आ जाते थे। इन (मुसलमान छापामारों) की हालत उन कभी न थकने वाली मक्खियों जैसी थी जिन्हें उड़ाओ तो एक लम्हे के लिए उड़कर फिर तुम्हारे पास बैठ जाती हैं। अगर उन्हें हर वक़्त दूर रखने की कोशिश करते रहे तो वह दूर रहते थे। ज्योंहि यह कोशिश तर्क कर दी जाती वह शबख़ून मार जाते...वह पहाड़ी इलाके की तूफ़ानी बारिश की तरह छोटी–छोटी पार्टियों में आते और सलीबी फ़ौज की तरतीब तोड़ कर ग़ायब हो जाते। हमारे नायटों को वह क़दम–क़दम पर परेशान करते और हमारी फ़ौज की पेशक़दमी को सुस्त किये रखते।"

❖

यह ख़ित्ता जो आज इस्राईल कहलाता है, सुल्तान अय्यूबी के दौर में अरज़े मुक़द्दस था जिसे सलीबियों से पाक करने के लिए एक–एक सिपाही ने वहाँ अपने ख़ून का नज़राना दिया। सुल्तान अय्यूबी ने बाज़ बस्तियां तबाह व बर्बाद करा दी थीं। बाज़ औक़ात यूं लगता था कि जैसे उसके दिल में रहम का एक ज़र्रा भी नहीं रहा, लेकिन उसने रहमदीली के ऐसे मुज़ाहिरे किये कि सलीबी मोअर्रिख़ों ने भी उसे ख़िराजे तहसीन पेश किया है। उससे रहम की भीख मांगने के लिए सलीबियों की एक मलिका भी आई और एक ग़रीब सलीबी औरत भी।

सलीबी मलिका का नाम सबीला था। वह मशहूर सलीबी हुक्मरान रिमाण्ड की बीवी थी। जंगे हतीन के वक़्त वह तिब्रिया के क़िले की मलिका थी। आप पिछली इक़सात में पढ़ चुके हैं कि रिमाण्ड जंगे हतीन के मैदान से भाग गया था। उसकी बीवी ने तिब्रिया का क़िला सुल्तान अय्यूबी के हवाले कर दिया था और सुल्तान अय्यूबी ने उसे क़ैद नहीं किया था। उसी जंग में सुल्तान अय्यूबी ने बैतुल मुक़द्दस के हुक्मरा गाई ऑफ लोज़िनान को जंगी क़ैदी बना लिया था। बैतुल मुक़द्दस की फ़तह के बाद जब सुल्तान अय्यूबी अकरा के मुक़ाम पर ख़ेमा ज़न था, उसे इत्तलाअ मिली कि मलिका सबीला उसे मिलने आ रही है। सुल्तान अय्यूबी ने उसे आने से न रोका बल्कि आगे बढ़कर उसका इस्तक़बाल किया।

"सलाहुद्दीन!" मलिका सबीला जो शिकस्त खाने के बाद भी मलिका ही कहलाना पसन्द करती थी क्योंकि अपने ख़ाविन्द के क़त्ल के बाद वह त्रीपोली की हुक्मरान थी। बोली–"क्या आपको मालूम है कि कितने हज़ार या कितने लाख ईसाई घरों से बेघर हो गये हैं? उन पर यह ज़ुल्म आपके हुक्म से हुआ है।"

"और जिन बेगुनाह मुसलमानों का आपने क़त्ले आम कराया और कराया जा रहा है वह किसके हुक्म से कराया जा रहा है?" सुल्तान अय्यूबी ने उसका जवाब सुने बग़ैर कहा–"अगर

मैं ख़ून का बदला ख़ून से लूं तो भी एक ईसाई ज़िन्दा न रहे......आप क्यों आई हैं?....यही शिकायत मुझ तक पहुंचाने?"

"नहीं।" मलिका सबीला ने जवाब दिया—" मैं एक दरख़्वास्त लेकर आई हूँ...गाई ऑफ लोज़िनान आपके पास जंगी कैदी है। मैं उसे रिहा कराने आई हूँ।"

"मैं आपसे यह नहीं पूछूंगा कि आप उसे क्यों रिहा कराना चाहती हैं।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा— "मैंयह ज़रूर पुछूंगा कि किस शर्त पर मैं उसे रिहा करूं?"

"अगर आपका बेटा या भाई कैद हो जाए तो क्या आप उसे रिहा कराने की कोशिश नहीं करेंगे?" मलिका सबीला ने पूछा।

"मेरे वह कमानदार, ओहदेदार और सिपाही जो आपके जंगी कैदी हैं वह सब मेरे बेटे और मेरे भाई हैं।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा—"अगर मैं ख़ुद कैद हो गया तो मैं भी आपसे रिहाई की भीख नहीं मागूंगा। मेरा कोई बेटा और मेरा कोई भाई मेरी रिहाई के लिए आपके पास नहीं जाएगा।"

"सलाहुद्दीन!" मलिका सबीला ने कहा—"आप ख़ुद बादशाह हैं। क्या आप महसूस नहीं करते कि एक बादशाह का कैद में पड़े रहना उसकी कितनी तौहीन है। वह योरूशलम और गिर्दो नवाह के दूर—दूर के इलाके का हुक्मरान था।"

"योरूशलम नहीं बैतुल मुकद्दस।" सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा—"गाई उस ख़ित्ते का ग़ासिब था। किसी ग़ासिब को हम बादशाह नही कहा करते। अगर आप यह कहतीं कि वह इस्लाम का ख़ातिमा करके यहाँ सलीब की हुक्मारानी क़ायम करने आया था तो मैं आपकी भी और उसकी भी कदर करता। मैं हर उस इन्सान की कदर दिल व जान से करता हूँ जो अपने मज़हब और अकीदे का कदरदान होता है। उसका मज़हब चाहे बेबुनियाद और झूठे अकीदों का ही मजमुआ क्यों न हो। मैं न अपने को बादशाह समझता हूँ। न किसी की बादशाही को तस्लीम करता हूँ। बादशाही सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात की है और हम उसकी बादशाही के मुहाफ़िज़ हैं। हम अल्लाह के सिपाही हैं।"

"हम भी अल्लाह की हुक्मरानी के लिए कोशां हैं।" मलिका सबीला ने कहा।

"अगर आप उस ख़ुदा की कायल होतीं जिसका मैं कायल हूँ तो आप एक बादशाह की रिहाई की बजाए यह दरख़्वास्त लेकर आतीं कि उस बादशाह के सिपाहियो को रिहा कर दो।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा—"आप को इससे इन्कार नहीं होना चाहिए कि यह ख़ित्ता हमारा है आपका नहीं। यहां सलीबी अमन पसन्द बाशिन्दों की तरह रह सकते हैं, बादशाह बन कर नहीं। अपने सलीबी दोस्तों को बता दें कि इन्सानों के क़त्ल व गारत से बाज़ आ जाओ और यहाँ से निकल जाओ। आप का हर हरबा नाकाम हो चुका है। आपने अपनी मासूम बेटियों को गुनाहों की तरबियत दी और उनकी इस्मतें दाव पर लगायीं। आपने हमारे मज़हबी पेशवाओं के बहरूप में अपने तख़रीबकार भेज कर मेरी कौम के अकीदों को मजरूह करने की कोशिश की। आप ने ज़र व जवाहरात, शराब और दिलकश लड़कियों के ज़रिए मेरी कौम में ग़द्दारी का बीज बोया और ख़ानाजंगी कराई। आपने हशीशीन से मुझे कत्ल कराने की कई

बार कोशिश की। आपने मुसलमानों में खानाजंगी कराई और हमारी जंगी ताक़त को तबाह कर दिया...हाँ मलिकाए सलीब! मैं एतराफ़ करता हूँ कि आप उसमे कामयाब हुई कि इस्लामी सल्तनत को टुकड़ों में काट दिया और मुसलमान ने मुसलमान का ख़ून बहाया......"

"मेरे अजीज़ सुल्तान!" मलिका सबीला ने उसे टोकतें हुए कहा—"मैं इतनी लम्बी और पेचीदा बहस के लिए नहीं आयी। मैं एक दरख़्वास्त ले कर आई हूँ कि गाई ऑफ़ लोज़िनान को रिहा कर दो।"

"मैं जानता हूँ कि आप उसके बाद मेरे पास नहीं आयेंगी।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा—"मैं आपको यह भी बता देना चाहता हूं कि आप मेरे इस ख़ेमे से ही हमेशा के लिए नहीं चली जाएंगी बल्कि आप इस खित्ते से जा रही हैं, फिर आप कभी इधर का रुख़ नहीं करेंगी। आप जब इधर का कभी रूख करें तो बहेरा रोम का पानी आपके जहाज़ों के लिए उबलता समन्दर बन जाएगा। मैं आप के किसी बहस में उलझाना नहीं चाहता, आपको एक पैग़ाम दे रहा हूँ कि आप से यह दरख़्वास्त करता हूँ कि यह पैग़ाम अपनी सलीब के तमाम पुजारियों तक पहुंचा देना......

कहाँ है आपकी सलीबुल सलबूत जिसपर आप सब हलफ़ उठा कर आये थे कि सरज़मीन अरब को तहेतेग़ करेंगे मस्जिदे अक़्सा और खना काबा को मिस्मार करके अपनी इबादत गाह बनायेंगे?....वह सलीब मेरे कब्ज़े में है और आप के अज़ाईम मेरे रहमों करम पर हैं। आप जिसे योरूशलम कहते हैं वह फिर बैतुल मुक़द्दस है और हमेशा बैतुल मुक़द्दस रहेगा।"

"आपकी फ़ौजें बेहतर और ज़्यादा है।" मलिका सबीला ने कहा—"हमारी फ़ौज की क़यादत नाक़िस है।"

"हक़ीक़त से चश्म पोशी न करो मलिका!" सुल्तान अय्यूबी ने कहा—"अपने आप को धोखा न दो। खुद फरेबी शिकस्त की अलामत होती है। मेरी फ़ौज कभी भी सलीब की फ़ौज से ज़्यादा नहीं हुई। कभी बेहतर भी नहीं हुई। मेरी फ़ौज को कभी ज़िरहबकतर नसीब नहीं हुई। मेरे सालारों को ऐसी हसीन लड़कियाँ नहीं मिलीं जो आपके सालारों के ख़ेमो में रहती हैं। मेरी फ़ौज का अस्लेहा आप से बेहतर नहीं। अलबत्ता अपको बता देता हूं। मेरी फ़ौज के पास सिर्फ़ एक ताक़त है जिससे आपकी फ़ौज महरूम है। उसे हम ईमान और इश्क़े रसूल कहते हैं। अगर आपका अक़ीदा सच्चा होता तो आपकी कौम ख़ुदा को अज़ीज़ होती, मगर उस ख़ुदा को जो वहदहू लाशरीक है, आप ने एक बेटे का बाप बना रखा है। आप ख़ुदा को इन्सान की सतह पर ले आये हैं और उसकी हुकूमत को तस्लीम करने की बजाए अपने आपको बादशाह कहते और कहलाते हैं।"

"क्या आप मुझे इस्लाम क़ुबूल करने की दावत दे रहे हैं?" मलिका सबीला ने कहा। "मलिका!" सुल्तान अय्यूबी ने उसके लहजे में तंज़िया झलक देखते हुए कहा—"मेरे ख़ुदा ने कुर्आन की मारफ़त मुझे बताया है कि हमने उन्हें दिमाग़ दिए हैं लेकिन वह सोचते नहीं हमने उन्हें आँखे दी हैं लेकिन वह देखते नहीं, हमने उन्हें कान दिए हैं लेनिक वह सुनते नहीं....और ख़ुदाए ज़ुलजलाल ने फ़रमाया है कि हम उनलोगों को जब सज़ा देने पर आते हैं तो उनके

दिलों और दिमागों पर मुहर सिब्त कर देते हैं......आप इस्लाम कुबूल न करें। मैं आपको यह बता रहा हूँ कि फतह उसे मिलती है जिसके दिल में ईमान होता है। मेरी कौम के क़ायदीन के दिलों से जब आपने दौलत, औरत और शराब के ज़रिए ईमान निकाल दिया था तो हम आपस में लड़ते और एक दूसरे का खून बहाते रहे। ख़ुदा ने हमें सज़ा दी। सारी कौम गुनाहगार नहीं हुआ करती, क़ायदीन गुनागार होते हैं मगर सज़ा पूरी कौम को मिलती है। कौम गुनाहगार नहीं होती, उसे गुमराह किया जाता है...

"मेरी असल कुव्वत यह है कि मैंने शिकस्त खाई तो उसकी ज़िम्मेदारी अपने सर ले ली। मैंने अपने सालारों से भी यही कहा कि ग़लती है तो हम सबकी है। बदकिस्मती है तो हम सबकी है। हक़ीकत यह है कि हमें शिकस्त हुई है और अब कौमी वक़ार का तक़ाज़ा यह है कि शिकस्त को फतह में बदलो। अगर शिकस्त की जिम्मेदारी एक दूसरे पर फेंकते और अपने आपको बेगुनाह साबित करते रहोगे तो एक और शिकस्त से दो चार होगे और सल्तनते इस्लमिया जो अब दो धड़ों में बट गयी है, कल कई टुकड़ों में बटेगी और कुफ़्फ़ार एक—एक टुकड़े को निगल लेंगे...मोहतरमा! हमारी ख़ानाजंगी का ज़िम्मेदार अलमुल्कुल सालेह था या सैफुद्दीन ग़ाज़ी, आप थे या गुमश्तगीन, मगर मैंने अपने सालारों से कहा यह मेरी जिम्मेदारी है। मैंने हर हरबा इस्तेमाल किया और अल्लाह के सिपाहियों ने अपने ख़ून से सल्तनत के टुकड़े जोड़ दिए। ख़ून से जोड़े हुए टुकड़े फिर से अलग नहीं होते मलिका सबीला!........आज देख लें। वह वक़्त याद करें जब आप की फ़ौजें मदीना मनव्वरा तक जा पहुंची थीं, मगर आज आप मेरे पास अपने एक बादशाह की रिहाई की दरख़्वास्त की भीख मांग रही हैं यह किस का नतीजा है? सिर्फ़ उस अमल का कि अल्लाह की ज़ात ने मुझ पर जो फर्ज़ आयद किया था वह मैंने जान की बाज़ी लगाकर अदा किया और अल्लाह ने मुझे इनाम से नवाज़ा।"

मलिका सबीला सुल्तान अय्यूबी की बातें इन्हमाक से सुन रही थी लेकिन उसके होंठों पर जिनमें जवानी, कशिश और हुस्न अभी क़ायम था, तंज़िया मुस्कुराहट थी।

"मैं आपको इस्लाम कुबूल करने की दावत नहीं दे रहा।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा—"आप की मुस्कुराहट बता रही है कि मेरे ख़ेमे से निकल कर आप मेरी बातों को ज़ेहन से इस तरह फेंक देंगी जिस तरह आप की फ़ौज ने हतीन और बैतुल मुक़द्दस में हथियार फेंके थे, मैं आपको यह बातें सिर्फ़ इसलिए सुना रहा हूँ कि यह मेरे ख़ुदा और मेरे रसूल का हुक्म है कि जिनकी आँखों पर पट्टी बंधी हुई है, उनकी पट्टी खोल दो और उन्हें दिखाओ कि हक़ क्या है और बातिल क्या है.....ग़ौर करो मलिका मोहतरमा! आपके ख़ाविन्द ने हसन बिन सबाह के फ़िदाइयों से मुझे क़त्ल कराने के लिए चार क़ातिलाना हम्ले कराये। एक बार मैं गहरी नींद सोया हुआ था जब उन्होंने मुझ पर हम्ला किया लेकिन हुआ क्या? वह खुद क़त्ल हो गये। एक बार मैं अकेला उन के घेरे में आ गया था लेकिन मैं बच गया और वह मारे गये.....और अब आप इस हक़ीक़त से किस तरह इन्कार कर सकती हैं कि आपका ख़ाविन्द जो मुझे फ़िदाईयो से क़त्ल कराने की कोशिश करता रहा, उन्हीं के हाथों क़त्ल हुआ। उसे कोई न बचा सका....

"ग़ौर से मलिका! हतीन के मैदान से आपका ख़ाविन्द लड़े बग़ैर भाग गया। आपने लड़े

बेग़ैर तिब्रिया का क़िला मेरे हवाले कर दिया। आप सबने जिस सलीबुल सलबूत पर लड़ते हुए मरने की क़सम खाई थी वह उसी मैदाने जंग में आपके उसी पादरी के ख़ून में डूब गयी जिसे आप उस सलीब का मुहाफ़िज़े आज़म कहते थे। यह सलीब अब मेरे क़ब्ज़े में है और आप मेरे पास इल्तिजा लेकर आई हैं कि गाई को रिहा कर दूँ।"

"आप मुझे यह बातें क्यों याद दिला रहे हैं?" मलिका सबीला ने झुंझला कर कहा।

"इसलिए कि आप ख़ुदा के इन वाज़ेह इशारों को समझें।" सुल्तान अय्यूबी ने जवाब दिया—"आपकी आँखों पर शहंशाहीय की पट्टी बंधी हुई है। आपको शहंशाहियत पर भरोसा है और आप इस हक़ीकत से भी इन्कार नहीं करेंगी कि आप को इस पर नाज़ है कि आप औरत हैं और हसीन औरत हैं। मैं यह कह कर आप को ख़ुश कर सकता हूँ कि आप वाक़ई हसीन हैं मगर यह कह कर आपको मायूस करूंगा कि मैं कोई फ़ैसला आपके हुस्न से मुतासिर होकर नहीं करूंगा। आप का यह नीम उरियाँ जिस्म मुझे सिराते मुस्तक़ीम से नहीं हटा सकत।"

मलिका सबीला एक आम औरत की तरह हंस पड़ी और बोली—"मुझे बताया गया था कि आप पत्थर हैं।"

सुल्तान अय्यूबी ने मुस्कुरा कर कहा—"आपके लिए मैं यक़ीनन पत्थर हूँ मगर मैं ऐसा मोम हूं जो ईमान की हरारत से पिघल जाता है और उसे रहम का जज़्बा भी पिघला देता है। जिस्मानी लज़्ज़त और आसाईश इन्सान को अपने काम का रहने देती है न क़ौम के काम का और उसे ख़ुदा भी धुतकार देता है।"

"मैं आप के दिल में रहम का जज़्बा बेदार करने आई हूँ।" मलिका सबीला ने कहा—"गाई को रिहा कर दें। मैंने सुना है कि सच्चे मुसलमान के घर उसका दुश्मन चला जाए तो उसे बख़्श देता है।"

उसके बाद मलिका सबीला मिन्नत समाजत पर आ गयी। सुल्तान अय्यूबी ने उसे कहा कि वह गाई को इस शर्त पर छोड़ देगा कि वह तहरीरी अहद करे कि मेरे ख़िलाफ़ हथियार नहीं उठायेगा। मलिका सबीला ने कहा कि तहरीरी अहदनामा दिया जाएगा और यह भी तहरीर कर दिया जाएगा कि गाई उस अहद से फिर जाए और कभी गिरफ्तार हो जाए तो उसे क़त्ल कर दिया जाए। आख़िर यही तय हुआ। मलिका सबीला चली गयी। सुल्तान अय्यूबी ने उसी रोज़ गाई ऑफ लोज़िनान की रिहाई का हुक्मनामा क़ासिद को देकर दमिश्क रवाना कर दिया। तीन चार दिनो बाद गाई को सुल्तान अय्यूबी के पास लाया गया। सुल्तान अय्यूबी ने अपने तर्जुमान से जिस की मारफ़त वह सलीबियों के साथ बात चीत किया करता था और उनकी समझा करता था कहा कि उसे इस अहदनामे का तर्जुमा उसकी ज़ुबान में सुनादो और अगर यह चाहे कि इसका तर्जुमा उसकी ज़ुबान में भी तहरीर किया जाए तो कर दो और उस पर उसके दस्तख़त करा लो।

"और उसे यह भी कह दो कि मैं उसके साथ कोई बात नहीं करना चाहता।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा—"उसे कह दो कि मैं जानता हूँ कि यह अहदनामे की ख़िलाफ़ वरज़ी करेगा और मेरे ख़िलाफ़ लड़ेगा। उसे कह दो कि मैंने मलिका सबीला से मुतासिर [illegible]

17
5

नहीं किया। मैं उसे यह बताना चाहता हूँ कि मैं उस जैसे गुनाहगार आदमी को भी बख़्श सकता हूं मैं अल्लाह की राह में लड़ रहा हूँ किसी से मैं ज़ाती इन्तक़ाम नहीं लेना चाहता.... ..और यह जहां जाना चाहता है वहाँ तक उसे मुहाफ़िज़ों की हिफ़ाज़त में पहुंचा दो।"

गाई ऑफ लोज़िनान जो बैतुल मुक़द्दस का हुक्मरान था और जंगे हतीन में जंगी क़ैदी हुआ था, अहदनामे पर दस्तख़त करके सुल्तान अय्यूबी के सामने खड़ा हो गया। सुल्तान ने हाथ बढ़ाया। गाई ने पुरजोश तरीक़े से हाथ मिलाया और कहा– "अय्यूबी! तुम अज़ीम हो।" और ख़ेमे से निकल गया।

❖

गाई की रिहाई को यूरोपी मोअर्रिख़ों ने खुल कर बयान किया है और उसे मलिका सबीला का कारनामा लिखा है जिससे यह जाहिर होता है कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने मलिका सबीला से मुतासिर होकर और गाई को अपने जैसा बादशाह समझकर रिहा किया था और जैसे उसे आम और ग़रीब लोगों के साथ कोई हमदर्दी नहीं थीं। क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद ने जो सलीबी जंगों में सुल्तान अय्यूबी के साथ था और उसकी वफ़ात तक उसके साथ रहा, अपनी याददाश्तों में एक ग़रीब ईसाई औरत का वाक़िआ तहरीर किया है।

यह उन दिनों का वाक़िआ है जो गाई ऑफ़ लोज़िनान की रिहाई के बाद सलीबियों ने साहिली शहर अकरा का मुहासिरा कर रखा था। (इस मुहासिरे का तफ़सीली ज़िक्र आगे आयेगा) सलीबी फ़ौज के कैम्प के साथ ही उन ईसाई शहरियों का कैम्प था जो दूसरी जगहों और बैतुल मुक़द्दस से निकल कर यहाँ जमा हो गये थे। मुहासिरा दो साल तवील हो गया था। सुल्तान अय्यूबी के एक तो छापामार थे जो मुहासिरा करने वाली सलीबी फ़ौज के किसी न किसी हिस्से पर शबख़ून मारते रहते थे, दूसरे कुछ ग़ैरफ़ौजी मुसलमान थे जो उन्हीं इलाक़ों के रहने वाले थे। उन्हें इजाज़त दी गयी थी कि सलीबी फ़ौज को परेशान करते रहें। चूंकि ईसाई शहरी अपनी फ़ौज के साथ थे इसलिए वह फ़ौज की बहुत मदद करते थे।

मुसलमान ग़ैर फ़ौजी गिरोह उन इसाई शहरियों को भी परेशान करते रहते थे। रात को उनके कैम्प में घुस जाते और उनका सामान उठा लाते थे। कभी–कभी वह एक दो ईसाई को उठा लाते और उन्हें जंगी क़ैद में दे देते। ईसाई शहरी अपनी फ़ौज से शिकायत करते रहते थे कि "मुसलमान चोर और डाकू" रात को आकर सामान चोरी कर लेते हैं। फ़ौज ने पहरे का इन्तज़ाम कर दिया। उसके बावजूद "चोरी चकारी" और अग़वा का सिलसिला जारी रहा।

एक रात एक आदमी ईसाईयों के कैम्प से तीन माह की एक बच्ची उठा लाया। माँ की यह एक ही बच्ची थी और वह भी दूध पीती बच्ची। उसने वादिला बपा कर दिया। वह सलीबी कमाण्डरों के पास गयी। वह पागल हुई जा रही थी। किसी के हाथ नहीं आती थी। सलीबियों के आला कमाण्डर तक वह जा पहुंची। उसने उस औरत को इजाज़त देदी कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी कैम्प के क़रीब ही है, उसके पास चली जाओ। सबको यक़ीन था कि यह बच्ची को मुसलमान उठा ले गये हैं।

ममता की मारी हुई माँ पूछती भटकती सुल्तान अय्यूबी के कैम्प में आ पहुंची। क़ाज़ी

बहाउद्दीन शद्दाद लिखता है कि उस वक़्त वह सुल्तान अय्यूबी के पास खड़ा था और सुल्तान अय्यूबी कहीं जाने के लिए घोड़े पर सवार हो चुकाथा। किसी ने उसे बताया कि एक ग़रीब ईसाई औरत रोती हुई आई है और सुल्तान से मिलना चाहती है। सुल्तान अय्यूबी ने कहा कि उसे फ़ौरन ले आओ, उस पर यक़ीनन हमारी तरफ़ से ज़्यादती हुई होगी।

औरत जब सुल्तान अय्यूबी के सामने आई तो वह घोड़े के क़रीब ज़मीन पर पेट के बल लेट गयी। वह बार–बार माथा ज़मीन पर रगड़ती और रोती थी। सुल्तान अय्यूबी ने उसे कहा कि उठो और बताओ कि तुमपर किसने ज़्यादती की है?

"मुझे अपने फ़ौजी कमाण्डर ने कहा कि सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास चली जाओ। वह बहुत रहम दिल है और फ़रियाद सुनेगा।" औरत ने कहा–"आपके आदमी मेरी दूध पीती बच्ची उठा लाए हैं।"

"क़ाज़ी बहाउद्दीन लिखता है कि औरत जिस अन्दाज़ से रोती थी और जो फ़रियाद करती थी उससे सुल्तान अय्यूबी की भी आँखों में आँसू आ गये। बच्ची को अग़वा हुए छः सात दिन गुज़र चुके थे। सुल्तान अय्यूबी घोड़े से उतर आया। उसने हुक्म दिया कि अभी मालूम करो कि बच्ची कौन लाया है। उसने औरत को खाना खिलाने को कहा और जहाँ कहीं वह जा रहा था वहाँ न गया। वह मुसलमान शहरी जो ईसाई कैम्प में सामान वग़ैरह उठाने जाते थे, फौज के साथ रहते थे। उनमे से जो आदमी बच्ची उठा लाया था वह वहां मौजूद था। वह सुल्तान अय्यूबी के पास गया। उसने बताया कि बच्ची उसने अग़वा की थी और उसे फ़रोख़्त कर आया है। सुल्तान अय्यूबी ने हुक्म दिया कि इस आदमी के साथ उस शख़्स के पास जाओ जिसने उस बच्ची को ख़रीदी है और उसने जो क़ीमत दी थी वह उसे देकर बच्ची ले आओ।

सुल्तान अय्यूबी बच्ची की वापसी तक अपने ख़ेमें में मौजूद रहा। बच्ची दूर नहीं गयी थी। जल्दी मिल गयी। उसकी क़ीमत वापस कर दी गयी। सुल्तान अय्यूबी ने अपने हाथों बच्ची माँ के हाथों में दी। माँ ने बच्ची को फ़ौरन अपनी छातियों से लगा लिया और ऐसी बेताबी से प्यार किया कि (शद्दाद के अल्फ़ाज़ में) हम सबपर रिक़्क़त तारी हो गयी। सुल्तान अय्यूबी ने उसे एक घोड़ी पर रूख़्सत किया।

बैतुल मुक़द्दस पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा हो गया और अरज़े फ़िलिस्तीन में सलीबियों को हर मुक़ाम पर शिकस्त हुई तो सलीबी दुनिया में भूचाल आ गया। उस वक़्त तीन बादशाहियां जंगी लिहाज से बहुत ताकवतर मानी जाती थीं एक फ़्रांस, दूसरी जर्मनी और तीसरी इंगलिस्तान। उनके पोप ने ख़ुद हर एक के पास जाकर उन्हें जंग के लिए तैय्यार किया। उसकी ज़ुबान पर हर जगह यही अल्फ़ाज़ थे:

"अगर तुम सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ न उठे तो सारे यूरोप से सलीब उठ जाएगी और हर जगह तुम्हें इस्लामी झंडे लहराते नज़र आयेंगे। यह जंग सलाहुद्दीन अय्यूबी की ज़ाती जंग नहीं। यह ईसाईयत और इस्लाम की जंग ह। सलीबे आज़ाम मुसलमानों के क़ब्ज़े में चली गयी है। योरूशलम पर मुसलमानों का झंडा लहरारहा है। हज़ारहा ईसाई औरतें मुसलमानों के क़ब्ज़े में चली गयी हैं। वह मुसलमान फौज मे तक़्सीम की जा रही हैं। क्या तुम

घर बैठे इस्लाम के बढ़ते हुए तूफ़ान को रोक सकोगे? तुम किस तरह बर्दाश्त कर रहे हो कि वह सलीब जिस पर हज़रत ईसा को मसलूब किया गया था मुसलमानों के कब्ज़े चली जाए?"

पोप ने इस किसम की झुठी सच्ची बातें सुनाकर बड़े—बड़े सलीबी बादशाहों को मुश्अिल कर दिया। जर्मनी का बादशाह फ्रेडरिक दो लाख फौज लेकर सबसे पहले आ गया। यह फौज इतनी ज़्यादा थी कि उसने किसीसलीबी बादशाह को अपना इत्तेहादी न बनाया। उसने अपना प्लान बना रखा था। उसके मुताबिक़ उसने दमिश्क़ पर हम्ला किया। उसकी बदकिस्मती यह थी कि वह सुल्तान अय्यूबी के तरीकाए जंग से वाकिफ नहीं था। वह दो लाख नफ़ारी के लशकर के भरोसे पर सरज़मीने अरब पर क़ब्ज़ा करने आया था। दमिश्क़ पर उसके हम्ले को दूसरी सलीबी जंग कहते हैं। जो फ्रेडरिक ने अपनी कसीर अफ़वाज के ज़ोअम में लड़ने की कोशिश की और जिस में दमिश्क के वह एक ईंट भी न उखाड़ सका। मुसलमान छापमारो ने उसकी रस्द पर ऐसें दिलेराना छापे मारे कि उसके सैंकड़ों घोड़े और गाड़ियाँ अपने साथ ले आये। रस्द जो उनके हाथ लगी वह उन्होंन अपनी फौज दे ...ाजे करदी।

फ्रेडरिक बुरी तरह नाकाम हुआ। उसके पास रस्द की कमी हो गयी और फ़ौज का जानी नुक्सान भी बहुत हुआ। उसने पीछे हटकर दमिश्क पर अज़ सरे नौ हम्ले की तैय्यारियाँ शुरु कर दीं लेकिन मुसलमान छापामारों ने उसकी फौज को चैन से न बैठने दिया। पानी के ज़ख़ीरों पर मुसलमानों ने क़ब्ज़ा कर लिया था। इसकी तारीख़ 20 जनवरी 1191 ई0 (22 ज़िलहिज्जा 556 हि0) लिखी गयी है। इसके मातम में जरमनों ने अपने कैम्प में जगह जगह लकड़ियाँ जमा करके इस तरह आग लगायी जैसे उनका कैम्प जल रहा हो। इधर मुसलमान सिपाहियों ने वह रात खुशी से दुफ और नक्क़ारे बजाते और नाचते गाते गुजार दी।

जर्मन फौज की कमान उसके बेटे ने संभाल ली। उसे मालूम था कि शाहे फ्रांस फिलिप्स आगस्टस और शहंशाहे इंगलिस्तान रिचर्ड भी आ रहे हैं। वह बहरी जहाज़ों से आ रहे थे। फ्रेडरिक के बेटे ने फ़िलिस्तीन के साहिली शहर अकरा की तरफ़ कूच का हुक्म दे दिया। सुल्तान अय्यूबी ने अपने सालारों को हिदायात दे रखी थीं। उनके मुताबिक़ उसकी फ़ौज ने जो जवाबी हम्ला न किया बल्कि उसे जाने दिया। उन सालारों को मालूम था कि रास्तें में छापामार जैश मौजूद हैं। उन छापामारों का अन्दाज़ यह था कि दुश्मन की फौज के आख़िरी हिस्से पर शबखून मारते और ग़ायब हो जाते। यह ज़्यादा नफ़री के जैश थे। रात को जर्मन पड़ाव करते छापामार आतिशगीर सयाल की हांडियाँ छोटी मिन्जनिकों से जर्मनों के कैम्प पर फेंकते और उनके पीछे जलते हुए फलीतों वाले तीर चलाते जिनसे कैम्प में आग लग जाती।

जर्मन फौज जब अकरा पहुंची तो उसकी नफ़र सिर्फ बीस हज़ार रह गयी थी। यह फौज जब अरज़े मुक़द्दस में दाखिल हुई तो उसकी नफरी दो लाख थी। उसमें से कुछ दमिश्क पर हम्ले के दौरान तबाह हुई, कुछ बीमारी, भूख और प्यास की नज़र हो गयी, कुछ दमिश्क से अकरा तक कूच के दौरान छापामारों का शिकार हो गयी और उन सिपाहियों की तदाद भी कुछ कम नहीं थी जो फ़ौज से भगोड़े हो गये थे। जो बीस हज़ार नफ़री रह गयी थी वह बुरी

तरह बद दिल हो चुकी थी। उसके दिल से सलीब का एहतराम और अपना हलफ साफ़ हो चुका था।

उधर से शाहे फ्रांस और शहंशाहें इंगलिस्तान समन्दर के रास्ते से चले आ रहे थे। सुल्तान अय्यूबी को जासूसों ने क़ब्ल अज़ वक़्त बता दिया था कि इंगलिस्तान की फ़ौज जो उस वक़्त क़बरस में पहुँच चुकी थी, कैसी है और उसकी नफ़री कितनी है। उसकी नफ़री साठ हज़ार थी। फ्रांस की फौज की नफ़री भी तकरीबन उतनी ही थी। बीस हज़ार जर्मन फ़ौज थी सलीबियों की कुछ फौज पहले से अरज़े मुक़द्दस में मौजूद थी।

सुल्तान अय्यूबी को जासूसों ने इत्तलाअ भी दी कि गाई आफ लोज़िनान जो यह अहद करके सुल्तान अय्यूबी की जंगी कैद से रिहा हुआथा आइंदा मुसलमानों के खिलाफ़ हथियार नहीं उठायेगा, काउंट कोन्ड्राड के साथ मिलकर अलग फ़ौज जमा कर चुका है। जिसमें सात सौ नायट (ज़िरहपोश सरदार) हैं, नौ हज़ार फिरंगी फ़ौज और बारह हज़ार बलन्दीज़ी और दिगर यूरोपी अफ़सर और सिपाही हैं। इस तरह सिर्फ़ उस फ़ौज की नफ़री तक़रीबन बाइस हज़ार हो गयी थी। एक अन्दाज़े के मुताबिक सलीबी फ़ौज की उमूमन नफ़री दो लाख थी जो अस्लेहा और दिगर जंगी साज़ो सामान के लिहाज से इस्लामी फ़ौज से बरतर थी।

सुल्तान अय्यूबी के साथ दस हज़ार मम्लूक थे। यह उसकी मुन्तख़ब फ़ौज थी जिस पर उसको पूरा–पूरा भरोसा था। अकरा निहायात अहम मुक़ाम था। यह बन्दरगाह भी थी जिसे कुदरत ने ऐसा बनाया था कि बहरिया का बहुत बड़ा बेड़ा और महफ़ूज़ अड्डा बन सकती थी। अकरा शहर में सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज की नफ़री दस हज़ार थी। सुल्तान अय्यूबी बैतुल मुक़दस से कुमक नहीं ले सकता था क्यों यही वह शहर था जिसकी ख़ातिर सलीबियों ने इतना ज़्यादा लशकर इकट्ठा किया था। उस शरह का दिफ़ाअ कमज़ोर नहीं किया जा सकता था। दूसरे शहरों और क़िलों से भी फौज नहीं निकाला जा सकता था। इंगलिस्तान का बहेरी बेड़ा बहुत ताक़वतर और खौफ़नाक था। सुल्तान अय्यूबी को अच्छी तरह एहसास था कि उसका मिस्री बहेरी बेड़ा इंगलिस्तान के बेड़े का मुक़ाबला नहीं कर सकता।

सुल्तान अय्यूबी के लिए यह इतना बड़ा और ज़्यादा खतरनाक चैलेंज था जो उसे क़ुबूल करना था मगर उसका मुक़ाबला मख़्दोश नज़र आ रहा था। उसे एक ख़तरा और यह भी नज़र आ रहा था जो यह था कि उसकी फ़ौज चार साल से लड़ रही है। उसके छापामार इतनीलम्बी मुद्दत से जंगलों और पहाड़ों में लड़ और मर रहे हैं और वह वहीं जिन्दगी बसर कर रहे थे। जंग के जिस्मानी पहलू को देखा जाए तो यह फौज लड़ने के क़ाबिल नहीं रही थी। मज़हब के लगन और जज़्बे के ज़ोर पर वह उस क़लील और थकी हुई फौज को छः लाख ताज़ा दम सलीबी फ़ौज के खिलाफ़ किस तरह लड़ा सकता था।

क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद जो उकी मज्लिसे मुशावरत का रूकन और उसका मुशीरे ख़ास और हमराज भी था, लिखता है कि सुल्तान अय्यूबी की हालत यह हो गयी थी कि रातों को सोता भी नहीं था। हर वक़्त गहरी सोंच में ग़र्क रहता और ज़ेहन में जंग के नक़्शे बनाता रहता था। उसकी सेहत गिर रही थीर और एक बार वह बीमार पड़ गया। चौथे रोज़ उठ बैठा

लेकिन उसकी सेहत में पहले वाली जान नहीं रही थी। उसकी उम्र 54 वर्ष हो गयी थी। वह नौजवानी में मैदाने जंग में उतरा था और अभी तक जंगलों, पहाड़ों और सेहराओं में लड़ रहा था। उसने बैतुल मुक़द्दस की फ़तह की क़सम खाई थी जो उसने पूरी कर दी थी। उसके बाद उसने अल्लाह से अहद किया था कि वह अपने जीते जी बैतुल मुक़द्दस से इस्लामी परचम नहीं उतरने देगा। यह था वह अहद जिसने उसे नींद और आराम से महरूम कर दिया था।

❖

अमरीकी तारीख़दां और मुहक़्क़िक़, एन्थोनी वलिस्ट ने हेरेल्डिम, लेन पोल, गबन और अरनोल जैसे मशहूर व मारूफ़ मोअर्रिखों के हवाले से लिखा है–"सुल्तान अय्यूबी मस्जिदे अक़्सा में जा बैठा और सारा दिन ख़ुदा तआला के हुज़ूर गिड़गिड़ा कर दुआ करता रहा कि ख़ुदा उसे इस नाज़ुक मौके पर इस्लामी फ़ौज की सही अस्करी क़यादत की तौफ़ीक अता फ़रमाये। एक शख़्स के बयान के मुताबिक़, जिस ने उसे मस्जिद में पड़े देखा था, उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। शाम हुई तो वह मस्जिद से निकला। उस वक़्त उसके चेहरे पर इत्मीनान और सकून था।"

यह सही है कि सुल्तान अय्यूबी मस्जिदे अक़्सा में जाकर सज्दारेज़ हुआ और उसने रो रो कर ख़ुदाए ज़ुलजलाल से मदद और रहबरी मांगी लेकिन उस वक़्त के ऐनी शाहिदों और वक़अ निगारों ने लिखा है कि वह दिन के वक़्त नहीं बल्कि रात के वक़्त मस्जिदे अक़्सा गया था। उसने सारी रात नवाफ़िल, दुआ और विर्द वज़ीफ़े में गुज़ारी और सुबह की नमाज़ पढ़कर बाहर आया था।

उस रात वह मस्जिद में अकेला नहीं था। मस्जिद के सेहन के एक कोने में कोई आदमी अपने उपर कम्बल डाले बैठा था। वह कभी एक सज्दा करता कभी दो और दुआ के लिए हाथ उठाये हाथ मुंह पर फेरता, फिर सज्दे में चला जाता था। उसे नमाज़ पढ़नी नहीं आती थी या वह कोई ऐसा विर्द या वज़ीफ़ा कर रहा था जिसमें उसी तरह सज्दे और दुआ करनी थी यह शख़्स उस वक़्त मस्जिद के कोने में आ बैठा था जिस वक़्त ईशा की नमाज़ पढ़ कर आख़िरी नमाज़ी मस्जिद से निकल गया था उसका चेहरा कम्बल में छुपा हुआ था।

सुबह जब मोअज़्ज़िन ने आज़ान दी तो वह उठा और अपने आपको कम्बल में छुपाये मस्जिद से निकल गया था। एक आदमी जो मस्जिद के दरवाज़े में दाख़िल हो रहा था उसे देखकर रुक गया। कुछ देर देखता रहा फिर उसके पीछे चल पड़ा। कम्बल वाले ने घूम कर देखा और क़दम तेज़ कर लिए। उसके तआक्कुब में जाने वाला भी तेज़–तेज़ चलने लगा। आगे एक और आदमी खड़ा था। कम्बल वाला उसके पास रुका और कुछ कह कर आगे चला गया। दूसरा आदमी वहीं खड़ा रहा। ताआक्कुब में जाने वाले ने उससे पूछा कि यह कौन था।

"ओह! यह तुम हो।" उस आदमी ने कहा–"तुम उसका ताआक्कुब कर रहे हो?"

"मैंने उसके पाँव देखे हैं।" तआक्कुब करने वाले ने कहा–"यह मर्द नहीं औरत है तुम्हारी रिश्तादार है? तुम उसे जानते हो?"

"एहतिशाम दोस्त!" उस आदमी ने कहा—"मैं जानता हूँ तुम अपना फर्ज़ अदा कर रहे हो। हर किसी पर नज़र रखना तुम्हारे फराईज़ में शामिल है और मेरा फर्ज है कि मैं तुमसे कुछ भी न छुपाऊं, लेकिन एक औरत को मस्जिद में जाना गुनाह तो नहीं।"

"बिल्कुल नही।" इहतिशाम ने कहा—"मुझे शक उससे हुआ है कि उसने अपने आपको कम्बल में क्यों लपेट रखा है?.....सुनो अल्आस्! रात को हम तीन आदमी मस्जिद के इर्द गिर्द पहरे पर फिरते रहे हैं क्योंकि सुल्तान ने रात मस्जिद में गुज़ारी है। उन्हें मालूम नहीं कि हम बहरूप में उनकी हिफ़ाज़त के लिए पहरा देते रहे हैं। सुल्तान किसी को बताये बेगैर मस्जिद में आये थे। उन्हें मालूम नहीं कि उनके बावरदी मुहाफ़िज़ों के अलावा भी कोई उनकी हिफाजत पर मामूर है। यह हसन बिल अब्दुल्लाह का इन्तज़ाम है। तुम खुद फौज में कमानदार हो और मुझे अच्छी तरह जानते हो इसलिए तुम्हें यह सब कुछ बता रहा हूँ।"

"ज़रूर बताओ इहतिशाम!" अलआस ने जवाब दिया—" बैतुल मुक़द्दस और मस्जिदे अक्सा के इतनी करीब खड़े होकर मुसलमान झूठ नहीं बोल सकता। मैं तुम्हें बताउंगा कि यह कौन है। तुम यह बताओ कि तुमने उस पर क्यों शक किया है?"

"मैंने रात उसे सेहन के कोने में देखा।" इहतिशाम ने जवाब दिया—"सुल्तान की हिफाज़त के लिए ज़रूरी था कि उसे वहाँ से उठा दिया जाता। इशा का वक़्त गुज़र गया था। उस आदमी को चले जाना चाहिए था। उस वक़्त सुल्तान अन्दर मेम्बर के सामने इबादत और वज़ीफ़े में मसरूफ थे। यह आदमी जो कम्बल में लिपटा हुआ था। सुल्तान पर कातिलाना हम्ला कर सकता था लेकिन किसी को मस्जिद से उठाया और निकाला नहीं जा सकता। मैंने यह भी देखा कि यह शख़्स अजीब तरीके से इबादत कर रहा था। सज्दे से उठता और दुआ के लिए हाथ उठा लेता। उसने बाक़ायदा नमाज़ नहीं पढ़ी। मैंने अपने साथियों को बताया। मेरे दोनों साथियों ने बारी—बारी अन्दर आकर इस तरह उसे देखा कि उसे पता न चल सका कि उसे कोई देख रहा है। मेरे उस साथी ने बाहर आकर बताया कि उस पर नज़र रखे लेकिन उसे उठाना नहीं क्योंकि मैंने बिल्कुल पीछे बैठकर उसकी सिस्कियां सुनी हैं और उकसे बाद अल्फ़ाज़ ऐसे सुने हैं जैसे यह अपने गुनाहों की बख़्शिश और सलीबियों की शिकस्त की दुआ कर रहा है.....

"उससे मुझे और ज़्यादा शक हुआ। वह इतना बेख़रब नहीं हो सकता था कि उसे यह भी पता न चल सकता कि उसके पीछे कोई आकर बैठ गया है। हम कोई फैसला न कर सके कि क्या किया जाए। इस शिश व पंज में रात गुज़र गयी। सुबह की आज़ान के साथ यह आदमी मस्जिद से निकला। हमने बारी—बारी सारी रात उस पर नज़र रखी थी। मैंने मस्जिद की रौशनी में देखा कि यह जब बाहर आ रहा थ तो कम्बल में उसके पांव नज़र आ रहे थे और मैंने उसके हाथ भी देखे जो उसने फ़ौरन कम्बल में छुपा लिए थे। मैं उसके तआक्कुब में चल पड़ा।"

"हाँ मेरे दोस्त!' अल आस ने कहा—"तुमने ठीक देखा है। यह मर्द नहीं औरत है और बड़ी ही ख़ूबसूरत और जवान औरत है और मैं तुम्हें यह बता देता हूँ कि एक गुनाहगार औरत है जो

दस साल हमारे खिलाफ़ जासूसी करती रही है।"

"यह सलीबी है?"

'सलीबी थी।" अल आस ने जवाब दिया—"अब मुसलमान है। मैंने उसे एक मुसलमान घर में रखा हुआ है। उसे तुम मज्ज़ूब कह सकते हों दूरवेशों की तरह बातें करती है।"

"और तुम लोग उसकी बातों में आ गये हो।" इहतिशाम ने कहा—"तुम मैदाने जंग में लड़ने वाले फ़ौजी इन औरतों की चालबाज़ियों को नहीं समझ सकते।"

"तुम मेरे साथ आओ।" अल आस ने कहा—"तुम उसे देखो, उसक बातें सुनो। अपना शक रफ़ा करो। हमें भी कुछ बताओ। यह तुम्हारा फ़न है तुम बेहतर समझ सकते हो। मैं एतराफ़ करता हूँ कि मैं उसकी बातों का काइल हो गया हूँ। मैंने उसे पनाह दिलवाई है। मेरे साथ आओ।"

'और इहतिशाम अल आस के साथ चला गया।"

❖

वह एक बुज़ुर्ग का मकान था जो मुद्दत से बैतुल मुकद्दस में रहता था। इहतिशाम और अलआस उसकी देयोढ़ी में जा बैठे। यह बुज़ुर्ग इन्सान जो आलिम फ़ाज़िल भी था, नमाज़ के लिए मस्जिद में चला गया था। इहतिशाम ने अल आस से कहा कि उस औरत को देखने से पहले मैं तुमसे पूछूंगा कि यह औरत कहाँ से आई है। उसके मुतअल्लिक़ जो कुछ जानते हो। मुझे बता दो।"

"यह पिछली गर्मियों का वाक़िआ है।" अल आस ने इहतिशाम को सुनाया—"मैं मिस्र की सरहद से थोड़ी दूर छापामारों के एक दस्ते में था। अल्मुकद्दस फ़तह हो चुका था। हमारी ज़िन्दगी टीलों, टीकरियों और सेहराओं में गुज़र रही थी। उस इलाके में हमारा वह काम नहीं रह गया था जो इधर के छापामार अभी कर रहे हैं। आख़िर हमें वापसी का हुक्म मिल गया। मुझे एक जैश की कमान दे दी गयी। मेरे साथ सोलह छापमार थे। हर एक जैश अपने—अपने तौर पर वापस आ रहा था। एक जगह टीले सुतूनों की तरह खड़े थे और बाज़ की शकलें बड़ी डरावनी और अजीब—अजीब सी थीं। मेरे एक छापामार ने मज़ाक से कहा कि यह जिन्नात और चुड़ैलों के महल हैं, यहाँ ख़ूबसूरत और बदकार औरतों की बदरूहें भी होंगी। हम यह सुनकर हंस पड़े और उन टीलों में दाख़िल हो गये....

"हमें उन टीलों ने क्या डराना था। हम ने तो उन टीलों से ज़्यादा खौफनाक जगहों में रातें गुज़ारीं हैं। हम उस जगह भी रात को सोये हैं जहाँ इन्सानी हड्डियों के ढांचें और खोपड़ियाँ बिखरी हुई थी। लेकिन उन टीलों के अन्दर गये तो हम ठीठक कर रूक गये। मैंने ज़िन्दगी में पहली बार महसूस किया कि खौफ़ क्या होता है। मेरा सारा जैश रूक कर कलमा का विर्द कर रहा था। सामने एक टीले के साये में एक औरत बैठी हुई थी जो मादर ज़ाद बरहना थी। उसके सामने एक औरत पीठ के बल लेटी हुई थी। वह भी बरहना थी। बैठी हुई औरत जवान लगती थी। उसका चेहरा बादामी रंग का था। होंठ रेत के ढेले की तरह ख़ुश्क और फ़टे फटे। उसका मुंह खुला हुआ था। बाल बिखरे हुए थे। बरहना जिस्म की हड्डियाँ

नज़र आ रही थीं। उस हालत में भी पता चलता था कि वह बहुत ख़ूबसूरत है...

"यह हो ही नहीं सकता था कि यह दोनों इन्सान होतीं। यह रास्ता नहीं था कि कोई काफ़ला यहां से गुज़रा होता और डाकूओं ने उन्हें लूट लिया होता और यह बच बचाकर यहां छुप गयी होतीं। मैं अपने सिपाहियों को डराना नहीं चाहता था मगर मैं ख़ुद डर गया और उन्हें देखते ही मुझे यक़ीन हो गया कि यह गुनहगार औरतों की भटकती हुई बदरूहें हैं। मैं इस उम्मीद पर दूर ही रूका रहा कि यह ग़ायब हो जाएंगी, मगर जो औरत बैठी हुई थी बैठी रही और जो लेटी हुई थी वह लेटी रही। बैठी हुई औरत फटी–फटी नज़रों से हमें देखती रही। मेरे एक साथी ने आहिस्ता से कहा–"पीछे लौट चलो।' एक और ने कहा–"हॉं......पीछे को चलो लेकिन उनकी तरफ़ पीठ न करना'........

"हमारा उनसे फ़ासला पन्द्रह क़दम होगा। हम सब निहायात आहिस्ता एक–एक क़दम पीछे हटें। तब बैठी हुई ने सर का इशारा किया जैसे हमें बुला रही हो। मैंने एक क़दम और पीछे उठाया तो उसने सर से फ़िर इशारा किया। मुझे साफ़ नज़र आया कि उसकी आँखों से आँसू बह निकले थे। मैं बता नहीं सकता कि मैंने वाक़ई कोई आवा[illegible] सुनी या मेरे दिल में ख़्याल आया था। मुझे अपने आप में आवाज़ सुनाई दी–'भागो मत [illegible]ल आस! देख लो। यह इन्सान ही न हों' अचानक मेरा हाथ अपनी कमर पर पड़ा और उस हाथ से तलवार म्याम से निकाल ली। मेरे क़दम अपने आप को उठने लगे। मुझे अपने साथियों की आवाज़े सुनाई दीं। वह मुझे आगे जाने से रोक रहे थे। मेरी ज़ुबान पर आयतल कुर्सी का विर्द था......

"मैं उस से तीन चार क़दम दूर रूक गया। वह आहिस्ता–आहिस्ता उठी। फिर उसने मेरी तरफ़ क़दम उठाया। उसका सर डोलने लगा। उसने दूसरा क़दम उठाया। उसकी आखें बन्द हो गयीं और वह इस तरह गिरी कि उसका सर मेरे पांव के क़रीब आकर और उसके बाल मेरे पांव पर बिखर गये। मैं बरहना औरत को हाथ लगाने से घबरा रहा था। वह बरहना न होती तो भी मैं घबराया हुआ था, लेकिन मुझे देखना था कि यह इन्सान है या कोई शरशरार। मैं बैठ गया और उसकी नब्ज़ देखी। नब्ज़ चल रही थी। मुझे ख़्याल आया कि जिन्नात और चुड़ैलों की नब्ज़ शायद नहीं होती। मैंने उससे हटकर उस औरत की नब्ज़ पर हाथ रखा जो लेटी हुई थी। इतनी झुलसा देने वाली गर्मी के बावजूद उस औरत का जिस्म ग़ैर मामूली तौर पर सर्द था जैसे रात को सेहरा की रेत सर्द हो जाती है। उसकी नब्ज़ों में जान नहीं थी। उसका मुँह खुला हुआ और आँखें एक जगह ठहरी हुई थीं। जिस्म सफ़ेद था। मैंने उसमें मौत की तमाम निशानियां देखीं......

"और जो मेरे सामने गिरी थी उसका जिस्म गर्म था। यह बदरूहें या जिन्नात नहीं हो सकती थीं। अल्लाह ने मुझे अक़्ल और दिलेरी अता फरमाई। मैंने अपने जैश को बुलाया। हमारे पास पानी के छोटे मस्कीज़े थे। खाने का सामान भी था जो तीन टट्टुओ पर लदा हुआ था। मेरा जैश प्यादा था। मैंने कहा कि फ़ौरन पानी और दो चादरें लाओ। मेरे साथी पानी और चादरें ले आये। सूरज अभी सर पर नहीं आया था। वहां उमूही टीले का साया था। मैंने बेहोश औरत पर चादर डाली और उसे सीध करके टीले के दामन में कर दिया। उसके जिस्म

को अच्छी तरह लपेट दिया। दूसरी चादर नीचे बिछाकर उस पर लिटा दिया और उसके मुँह पर पानी के छींटे मारे उसका मुँह खुला हुआ था। उसमें पानी टपकाया जो उसकी हलक में उतरता चला गया....

"मुझे साथी रोकते रहे कि अपने आप को मुसीबत में न डालो लेकिन मुझ पर अब न डर का असर था न अपने साथियों की बातों का असर। कुछ देर बाद उसकी आँखें आहिस्ता-आहिस्ता खुलीं। उसके होंठ बन्द हुए और फिर खुल गये। मैंने उसके मुँह में और पानी टपकाया, फिर एक खजूर की गुठली निकाल कर खजूर उकसे मुँह में रखी वह खाने लगी। उसने उठने की कोशिश की तो मैंने उसे सहारा देकर बैठा दिया।"

❖

"अल आस इहतिशाम को सुना रहा था।" उसे मैंने खाने को दिया जो कुछ हमारे पास था। उसने और पानी पिया, फिर हमने उसे खाने पीने से रोक दिया क्योंकि उसका पेट बहुत दिनों से खाली मालूम होता था। उसने नहीफ़ आवाज़ में कहा–"मैं तुम्हारी ज़ुबान समझती हूँ और बोलती हूँ...यह मर गयी है।' फिर उसने पूछा कि हम कौन हैं। मैंने बताया कि हम इस्लामी फ़ौज के छापामार हैं। बैतुल मुक़द्दस को जा रहे हैं। उसने कहा–' फिर मुझे तुमसे रहम की तवक़्क़ो नहीं रखनी चाहिए।' मैंने उसे कहा कि तुम मुसलमान मालूम नहीं होती' उसने कहा–'मैं झूठ नहीं बोलूंगी लेकिन सच बोलूंगी तो तुम पछताओगे कि तुमने मुझे मरने क्यों न दिया' मैंने उसे कहा–'तुम सिर्फ़ यह यक़ीन दिला दो कि तुम इन्सान हो।' उसके होंटों पर फीकी सी मुस्कुराहट आ गयी। उसके चेहरे का रंग बदल रहा था। उसके जिस्म में ख़ून हरकत में आ रहा था.....

"उसकी आँखें बन्द होने लगी। खाने और पानी से उसे नींद आ रही थी। वह बच्चों की तरह लुढ़क गयी और गहरी नींद सो गयी। हमने बहुत क़त्ल व ग़ारत की थी। बहुत शबख़ून मारे थे। हमारे कई साथी हमारे सामने शहीद हुए थे। मरना और मारना हमारे लिए बच्चों का खेल था लेकिन एक औरत पर, ख़्वाह वह हमारी दुश्मन ही थी, हाथ उठाना हमारे लिए गुनाह कबीरा था। मैंने अपने जैश से कहा कि सूरज सर पर आ रहा है। झुके हुए टीले देखो और उनके साये में आराम कर लो। यह जागेगी तो इसे अपने साथ ले जाएंगे......

"मेरे एक दो साथियों ने कहा कि जासूस मालूम होती है लेकिन बाक़ी सब कह रहे थे कि इस जगह जासूस औरतों का क्या काम, यह इन्सान नहीं। मेरी राय यह थी कि चूंकि हमारे छपामार जैश मिस्र और फ़िलिस्तीन की सरहदों के साथ-साथ सरगर्म थे इसलिए उन लड़कियों को यहाँ भेजा गया होगा कि हमें गुमराह करें, लेकिन मुझे यक़ीन नहीं आ रहा था। उनके साथ एक दो मर्दों का होना ज़रूरी था.....

"ग़ुरूब आफ़ताब से ज़रा देर पहले वह जागी और उठ बैठी। मैं उसके क़रीब जा बैठा। उसने पानी पिया और खाने को कुछ मांगा। मैंने उसे खाना दिया। अब वह अच्छी तरह बोल सकती थी। उसने मरी हुई औरत की तरफ़ इशारा करके कहा–'उसे दफ़न कर दो।' मेरे सिपाही दीनदार थे। एक ने अपनी चादर दे दी। लाश को चादर में लपेट दिया गया। सिपाहियों

ने क़ब्र खोदी और उसे दफ़्न कर दिया गया।"

❖

अलआस ने इहतिशाम को बताया–"उस औरत ने यह बताने की बजाए कि वह कौन है, वह दोनों कहाँ से आ रही थीं और कहाँ जा रही थीं, उससे पूछा–"तुमने अपने ख़ुदा को कभी देखा है?" मैंने जो जवाब ज़ुबान पर आया वह दे दिया। उसने कहा–"मैंने तुम्हारे ख़ुदा को देख लिया है। अभी–अभी उसे देखा है। तुम कहोगे कि तुमने ख़्वाब देखा है लेकिन यह ख़्वाब नहीं था। ख़ुदा ने मुझे कहा कि मैंने तुझे वह आँखें दे दी हैं जो आने वाले वक़्त के अंधेरे में देख सकेंगी। ख़ुदा ने मुझे यह भी कहा है कि तूने गुनाह की फिर कभी सोंची तो तेरे अपने हाथ ख़ंजर से तेरी आँखें निकाल देंगे। ख़ुदा ने मुझे यह भी कहा है कि मैं तुझे उस जगह ले जा रहा हूँ जहाँ से मैं ने अपने रसूल को अपने पास बुलाया था'......

"उसने ऐसी बहुत सी बातें कीं जिनसे पता चलता था कि सेहरा कि सफर और सऊबतों ने उसके दिमाग़ पर इतना असर किया है कि उसका दिमाग़ माऊफ़ हो गया है। मसलन उसने यह भी कहा–'तुमने मेरा जिस्म क्यों ढाँप दिया है? उसे नंगा रहने देते तो क्या हो जाता?....मैं अब जिस्म नहीं सिर्फ़ रूह हूँ। रूह पाक हो जाए तो जिस्म के गुनाह धुल जाते हैं।' वह ज़्यादातर इसी किस्म की बातें करती रही। उनसे मुझे यक़ीन हो गया कि यह इन्सान है बदरूह नहीं और मुझे उसके बताने के बग़ैर ही पता चल गया कि यह उन सलीबी लड़कियों में से है जो हमारे अमीरों वज़ीरों और सालारों को ग़द्दार बनाने और राज़ लेकर अपने मुल्क को भेजने के लिए हमारी तरफ़ भेजी जाती हैं लेनिक उसकी उन बातों से मुझे यह शक होने लगा कि उसके दिमाग़ पर कुछ भी असर नहीं हुआ और यह इस क़िस्म की बातें करके मुझे बेवक़ूफ़ बना रही है ताकि मैं उसे वहाँ तक हिफ़ाज़त से पहुँचा दूँ जहाँ वह जाना चाहती है...

"मैंने उसे कहा कि मुझे सही–सही बतादो कि तुम दोनों कहाँ जा रही थीं। मैंने उसे धमकियां दीं' फिर भी यह ज़ाहिर किया कि मैं बेवक़ूफ़ बन चुका हूँ और वह मुझे इस्तेमाल कर सकती है मगर उसके अन्दाज़ और उसकी मुज़्ज़ुबाना बातों मे कोई तबदीली नहीं आई। सूरज ग़ुरूब होने के बाद मैंने उसे सामान वाले टट्टू पर बैठा दिया और हम चल पड़े। सफ़र रात को ही करना होता था। दिन को सेहरा जलने और जलाने लगता था। मैंने अपने जैश से कह दिया था कि मुझ पर कोई शक न करना, अगर उसे तन्हा ले जाऊं तो उससे मेरा मक़सद सिर्फ़ यह होगा कि मैं उससे भेद लेने की कोशिश कर रहा हूँ...

"मेरा जैश आगे–आगे चलता रहा और मैं उस औरत के टट्टू के साथ बहुत पीछे रहा। वह अब संभलती जा रही थी लेकिन उसकी बातें दूरवेशों की तरह ही रहीं। आधी रात के बाद हमने पड़ाव किया। उसे मैंने सबसे अलग रखा और ख़ुद भी उसके साथ रहा। मैंने उससे एक बार फिर पूछा कि वह कहाँ जाना चाहती है। उसने जवाब दिया–'जहाँ तुम ले जाओगे' मैंने कहा कि मैं उसे क़ैदख़ाने में ले जा रहा हूँ। उसने कहा–'क़ैदखाने में भी ख़ुदा होता है फ़िर मैंने दूसरा तरीक़ा इख़्तियार किया वह यह था कि मैंने सिफ़ला पन और हैवानियत का मुज़ाहिरा किया। मुझे तव क़्क़ो थी कि वह मेरे साथ सौदाबाज़ी करेगी और कहेगी कि मैं उसे किसी ऐसे

शहर में पहूँचा दूं जो सलीबियों के कब्ज़े में हो लेकिन उस पर कुछ असर नहीं हुआ। उसने मेरी तरफ़ तवज्जो ही न दी। अगली रात उसने बताया कि वह कौन है और कहाँ से आई है. ....

"उसने बताया कि वह डेढ़ साल से क़ाहिरा रह रही है। वहाँ किसी अमीर कबीर ताजिर की बेटी बनी रही। एक मुसलमान हाकिम की दाश्ता रही और दो हाकिमों को उसका दुश्मन बनाया, फिर तीनों को आपस में टकराया। क़ाहिरा के सरकारी कामों में गड़बड़ कराई। दो सलीबी जासूसों को कैदखाने से रिहा कराया। एक बड़े ख़तरनाक जासूस और तख़रीबकार को जिसे मौत दी जाने वाली थी, उन मुसलमान हाकिमों की मदद से फ़रार कराया। उसने और बहुत से काम किए। आख़िर में वह जासूसी और सुराग़रसानी के उस्ताद और सरबराह अली बिन सुफ़ियान को क़त्ल कराने का बन्दोबस्त कर रही थी......

"उसे जंगे हत्तीन के नतीजों की इत्तलाअ मिली। उसे यह भी मालूम हुआ कि सलीबुल सलबूत सुल्तान अय्यूबी के क़ब्ज़े में आ गयी है और उस सलीब का मुहाफ़िज़े आज़म मैदाने जंग में मारा गया है। उसे यह भी पता चला कि कुछ सलीबी हुक्मरान मारे गये और जंगी कैदी हो गये हैं और बैतुल मुक़द्दस का हुक्मरान गाई ऑफ लोज़िनान भी कैद हो गया है। यह ख़बरें उसके दिमाग़ पर हथौड़ों की तरह पड़ती रहीं, फिर उसे दो और ख़बरे मिलीं। एक यह कि उसका पीर उस्ताद हरमन (जो लड़कियों को ट्रेनिंग देकर मुसलमान इलाक़ों मे भेजा करता था) कैद हो गया है और बैतुल मुक़द्दस पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा हो गया है। इन ख़बरों ने उसका दिमाग़ हिला डाला। उसे तरबियत देकर और तैय्यार करके क़ाहिरा भेजा गया था और गुनाहों की तरबियत कहीं लड़पन के आग़ाज़ में शुरू की गयी थी। उसके अन्दर जज़्बात की जगह फ़रेब और धोखा भर दिया गया लेकिन मज़हब के मामिले में यह कोरी नहीं थी। उसे बताया गया था कि उसे सलीबुल सलबूत और यीसू मसीह की ख़ुश्नूदी के लिए तैय्यार किया जा रहा है उसे तरबियत के बाद आख़िरी अशीर वाद अकरा के बड़े गिरजे में सलीबुल सलबूत के पादरी ने दी थी जिसे मुहाफ़िज़ आज़म कहते थे.....

"उसने उसे बताया था कि सलीब की हुक्मरानी नाकाबिले तस्ख़ीर है और उसका मरकज़ योरूशलम है जिसके क़रीब ईसा को मस्लूब किया गया था। उसे बताया गया था कि इस्लाम कोई मज़हब नहीं और मुसलमानों को ईसाईयत में लाना या उन्हें क़त्ल करना सवाब का काम है और यह जो लड़कियाँ सलीब के नाम पर इस्मतें कुर्बान कर रही हें उन्हें अगले जहान बहिश्त की हूरें बनाया जाएगा। ऐसी ही कुछ और बातें थीं जो उसके ज़ेहन और दिल पर नक़्श करके अक़ीदा बना दी गयीं और वह गुनाहों को नेकी समझती रही। फ़रेबकारी और धोखादही को कारे सवाब समझती रही....

"उसे जब पता चला कि सलीबुल सलबूत ही नहीं रही। उसका मुहाफ़िज़े आज़म पादरी भी नहीं रहा और यीसू मसीह की हुक्मरानी का मरकज़ योरूशलम भी नहीं रहा तो उसके अक़ीदे टूट फूट गये। उसने यह भी देखा कि क़ाहिरा में जो उसके मर्द साथी यानी सलीबी जासूस थे वह वहाँ से भागने लगे थे, फ़िर एक रोज़ वह अपने किसी साथी की तलाश में

निकली तो पता चला कि वह ग़ायब है। उसे एक और साथी मिला। उसने उसे कहा कि हमारी मदद करने वाला कोई नहीं। मुसलमान होकर किसी से शादी कर लो या यहाँ से भाग जाओ. ....

"अब तो उस पर दिवानगी तारी होने लगी। उसने अपनी उस सहेली को साथ लिया। अपने चाहने वाले एक मुसलमान हाकिम से दो घोड़े शौकिया सवारी और सैर सपाटे के लिए और दोनों शाम के वक़्त निकलीं। अंधेरा गहरा हुआ तो शह्र से निकल आईं। उन्होंने खाने और पानी का इन्तज़ाम कर रखा था मगर उन्हें सेहरा के सफ़र की ज़रा भी सूझ बूझ नहीं थी, न उन्हें अपनी मंज़िल का कुछ पता था। उन्हें उम्मीद थी कि रास्ते में उन्हें सलीबी फ़ौज का कोई दस्ता मिल जाएगा। उनकी बदकिस्मती और बहुत बड़ी हिमाकत थी कि रास्ते के मुतअल्लिक़ कुछ भी न जानते हुए चल पड़ीं.....

रात गुज़र गयी। उन्होंने घोड़े सरपट दौड़ाये थे। दूसरे दिन जब सूरज उपर आकर सेहरा को जलाने लगा तो घोड़े थकन और प्यास से बेहाल होने लगे। उन लड़कियों का अपना हाल बहुत बुरा होने लगा। उन्हें सेहरा मे पानी और सब्ज़ाज़ार नज़र आने लगे और वह उनके पीछे घोड़े दौड़ाने लगीं। उस रोज़ तो घोड़ों ने कुछ साथ दिया मगर दूसरे दिन भी उन्हें कुछ खाने को और पानी न मिला तो दोनों घोड़े पहले रुके, फिर गिरे और फिर कभी न उठे.....

"उस के बाद जो इन दोनों का सफ़र शुरू हुआ उसे इहतिशाम दोस्त! तुम अच्छी तरह समझ सकते हो। तुम जानते हो कि ज़ालिम सेहरा इस क़िस्म के मुसाफ़िरों को किस अन्ज़ाम तक पहुंचा दिया करता है। उस लड़की ने अपनी ज़ुबान से मुझे बताया कि मैंने जो धोखे लोगों को दिए थे उससे ज़्यादा ज़ालिमाना धोखे मुझे सेहरा ने दिए। मैंने सेहरा में नदियां बहती देखीं। उनके क़रीब गयी तो वह दूर–दूर हटती गयीं। हम दोनों उनके पीछे भागती रहीं। मैंने नख़लिस्तान देखे, गुलिस्तान देखे और मैंने सेहरा में बहेरी जहाज़ और बादबानी कश्तियां तैरती देखीं। हम हाथ उपर करके हिलाती, चिल्लाती और उनके पीछे दौड़ती रहीं। बाज़ जगहों पर हमें पानी मिल भी गया। हमने ऐसी हर जगह कई–कई दिन गुज़ारे.....

"लड़की ने मुझे बताया कि सेहरा में उसका वह वजूद मर गया जिसने क़ाहिरा के हाकिमों पर जादू कर रखा था। उसे हमारे ख़ुदा का ख़याल आ गया और उसके अन्दर यह एहसास कांटे की तरह चुभने लगा कि सलीबुल सलबूत के मुहाफ़िज़ ने उसे धोखा दिया है और अब वह दूसरों के गुनाहों की सज़ा भुगत रही है। उस पर यह हक़ीक़त खुली कि अपनी इस्मत पेश करके किसी को धोखा देना सवाब का काम नहीं हो सकता। उसे यह ख़्याल भी आ गया कि मुसलमान अपनी लड़कियों को इस तरह इस्तेमाल नहीं करते। एक रोज़ सेहरा में उसे उसे यह एहसास भी हुआ कि जैसे वह और उसकी सहेली मर चुकी हैं और वह दोज़ख़ में डाल दी गयी हैं या वह बदरूहें बन चुकी हैं और दोज़ख़ की तरह जलते हुए मैदान में भटक रही हैं...

"एक रात उसने अपनी सहेली से कहा कि वह अपने अक़ीदे से दिल बर्दाश्ता हो गयी है और अब वह मुसलमानों के ख़ुदा को पुकारेगी। दोनों के होंठ और ज़ुबानें लकड़ी की तरह हो

गयी थीं। हलक में कांटे चुभ रहे थे और वह बड़ी मुश्किल से बात करती थीं। उसकी सहेली ने बहुत बुरा मनाया कि वह अपने अक़ीदे से मुन्हरिफ़ हो रही है और अपने दुश्मन के अक़ीदे को अपनाना चाहती है। इसने उसकी न सुनी। उसकी जब सहेली सो गयी तो उससे कुछ दूर चली गयी। उसने सज्दे किये और हाथ उठा–उठा कर ख़ुदा को पुकारती और गुनाहों की बख़्शिश मांगती रही। वह सारी रात रोती रही। सज्दे के सिवा इबादत का उसे कोई और तारीका नहीं आता था।....

"उसी रात उसके दिमाग़ पर असर हो गया या वाक़ई ख़ुदा ने उसे कोई इशारा दिया। यह कहती है कि उसे अपने सामने धुंवे की तरह एक बारिश इन्सान खड़ा नज़र आया। उसने कहा–"अगर तूने दिल से तौबा की है तो इस रेगिस्तान में जहाँ से इन्सानों का गुज़र नहीं हुआ करता, वह इन्सान आयेंग जिनके ख़ुदा को तूने पुकारा है। तू यहाँ से जिन्दा निकल जाएगी' उसे याद नहीं कि उससे कितनी मुद्दत बाद मैं अपने जैश के साथ वहाँ से गुज़रा। उसे ज़िन्दा देखा और उसकी सहेली मर चुकी थी.....

"तुम जानते हो कि यह बरहना क्यों थी। सेहरा का भटका हुआ मुसाफ़िर जलने लगता है तो पहले अपना सामान फेंकता है, फिर अपने जिस्म से एक–एक कपड़ा उतारता और फेंकता जाता है। यह काम वह नीम बेहोशी की हालत में करता और चलता जाता है, हत्ता कि वह कहीं गिर पड़ता है। उस लड़की को याद नहीं कि उसने और उसकी सहेली ने कपड़े कब और कहाँ उतार फेंके थे....

"हम दस बारह रोज़ बाद बैतुल मुक़द्दस पहुंचे। उसकी सेहत बहाल हो गयी थी। उसकी ख़ूबसूरती निखर आई थी लेकिन यह बातें मज़्ज़ूबों की तरह करती रही। अगर यह ऐसी बातें तुम्हारे साथ करती तो तुम भी उससे मुतासिर हो जाते। उसने बार–बार कहा–'बैतुल मुक़द्दस पर अब सलीबियों का कब्ज़ा नहीं हो सकता। ख़ुदा उन्हें रास्ते में ग़र्क़ करेगा।' वह इसी तरह की पेशीनगोईयां करती रही। रात को उसकी इबादत शुरू होती थी। तरीक़ा यही था कि सज्दे करती, रोती और दुआ मांगती थी.....

"अब यह जिन के घर रहती है उन्हें मैं बहुत अर्से से जानता थां यह आलिम फ़ाज़िल बुज़ुर्ग हैं। मैं उनका मुअतक़िद हूँ। मैंने उसे उनके हवाले कर दिया।"

❖

अल आस यह बातें सुना रहा था और यह बुज़ुर्ग नमाज़ पढ़ कर आ गया। उसने इहतिशाम से कहा–"यह ज़रूरी नहीं कि ख़ुदा से यह फ़ज़ीलत उसी को अता होती है जिस के पास इल्म व फ़ज़ल होता है। मालूम नहीं किस वक़्त कैसी फ़रियाद उसके सीने से निकली जो ख़ुदा ने सुन ली और उस लड़की को यह मुक़ाम अता कर दिया। यह मज़्ज़ूब है। मेरा तजुर्बा कहता है कि यह पागल नहीं और यह धोखा भी नहीं दे रही। उसने अपनी ख़्वाहिश पर इस्लाम क़ुबूल कर लिया है। मैंने उसे नमाज़ पढ़ाने और सिखाने की बहुत कोशिश की है लेकिन उसकी इबादत का अपना ही तरीक़ा है। ख़ुदा और रसूल सल्ल0 को मानती है और जब बोलती है तो पता चलता है कि उसे ग़ैब से कोई इशारा मिला है।"

"यह मस्जिदे अक्सा में जाती रहती है?" इहतिशाम ने पूछा।

"नहीं।" बुज़ुर्ग ने कहा–"रात को पहली बार मस्जिद में गयी है। अल आस सुबह आया तो मैंने उसे बताया कि वह मस्जिद में चली गयी है। अल आस उसके पीछे चला गया और वह उसे शायद रास्ते में मिल गयी।"

"यहीं से शक पैदा होता है कि यह उसी रात क्यों मस्जिद में गयी जिस रात सुल्तान मस्जिद में मौजूद थे?"

"मैं इसका जवाब नहीं दे सकता।" बुज़ुर्ग ने कहा।

इहतिशाम ने कहा कि मेरा फ़र्ज़ है कि मैं लड़की को हसन बिन अब्दुल्लाह के पास ले जाऊं। यह उसकी मर्ज़ी है कि उसे आपके हवाले करदे या सुल्तान के पास ले जाए।

लड़की को जब बताया गया कि उसे इहतिशाम के साथ जाना पड़ेगा तो ख़ामोशी से उसके साथ चल पड़ी। अल आस भी साथ गया। हसन बिन अब्दुल्लाह ने उसकी कहानी अल आस और इहतिशाम से सुनकर लड़की से कुछ बातें पूछीं तो उसने यही जवाब दिया–"अब तो समन्दर से आये हुए बेड़े तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे। मुझ से क्यों डरते हो....मुझे अपने सुल्तान के पास ले चलो। उसने रात को जो दुआ की थी वह ख़ुदा ने क़ुबूल कर ली है।"

बहुत कोशिश के बावजूद उसने कुछ न बताया तो उसके मुतअल्लिक सुल्तान अय्यूबी को इत्तलाअ दी गयी। सुल्तान को उसी रोज़ अक्रा जाना था। उसने कहा कि लड़की को ले आओ.....लड़की सुल्तान अय्यूबी के सामने गयी तो दो ज़ानू होकर सुल्तान का दायां हाथ चूमा, फ़िर उठी और सुल्तान अय्यूबी के आँखों में क़रीब होकर देखा। उसने अपने आपसे बातें करते हुए लहजे में कहा–"इन आँखों से रात सज्दे में आँसू गिरे थे। मुझे तुम्हारे दुश्मन के जहाज़ उन आँसूओं में डूबते नज़र आ रहे हैं। बैतुल मुक़द्दस की दिवारों तक कोई नहीं पहूँच सकेगा....ख़ून का समुन्दर बह जाएगा......वह रास्ते में मर जायेंगे......वह तबाह हो रहे हैं। आँसू जो ख़ुदा के हुज़ूर सज्दे में बहते हैं उन्हें फ़रिश्ते मोती समझ कर उठा लेते हैं। ख़ुदा उन मोतियों को ज़ाया नहीं करता। नीयत साफ़ हो तो रास्ते साफ़ मिलते हैं।"

बहुत कोशिश की गयी कि लड़की को उसके असली रूप में लाया जाए, लेकिन वह ऐसी बातें करती रही जैसे उसे आने वाला वक़्त नज़र आ रहा हो। उसे आख़िर मज़्ज़ूब समझकर उसी बुज़ुर्ग के हवाले कर दिया गया और उसे हिदायत दी गयी कि वह उस पर नज़र रखे।

❖

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने मस्जिदे अक़्सा में ख़ुदा के हुज़ूर जो आँसू बहाये थे वह फ़रिश्तों ने मोती समझ कर उठा लिए। सबसे पहले उसे यह इत्तलाअ मिली कि जर्मनी का शहंशाह फ्रेडरिक मर गया है। उससे चन्द दिन बाद एक सलीबी हुक्मरान काउंट हेनरी के मरने की इत्तलाअ मिली। यह भी सलीबी फ़ौज का एक इत्तेहादी था और बैतुल मुक़द्दस को मुसलमानों के क़ब्ज़े से छुड़ाने आया था। क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद ने अपनी याददाश्तों में लिखा है कि काउंट हेनरी की मौत को सलीबियों ने ज़ाहिर नहीं होने दिया। उसका

इंकशाफ़ इस तरह हुआ कि सुल्तान अय्यूबी के बहेरी छापामारों ने सलीबियों की दो जंगी कश्तियाँ पकड़ीं जो फ़िलिस्तीन के साहिल से कुछ दूर से गुज़र रही थीं। उनमें पचास सलीबी बहरी सिपाही थे। उन्हें कैदी बना लिया गया।

उससे अगले रोज़ सलीबियों की एक बड़ी कश्ती पकड़ी गयी। उसमें एक कोट था जिसपर हीरे जवाहरात लगे हुए थे। यह किसी शाह का कोट हो सकता था। सलीबी कैदियों ने बताया कि यह काउंट हेनरी का कोट है और वह मर गया है। उस कश्ती मे एक कैदी और भी था जो बहरी कमाण्डरमालूम होता था। उकसे मुतअल्लिक इंकशाफ़ हुआ कि काउंट हेनरी का भांजा है। उन सबको जंगी कैद में डाल दिया गया।

काउंट हेनरी की मौत के मुतअल्लिक तीन मुख़्तलिफ़ रवायतें हैं। एक यह कि वह दरिया में डूब गया था। मुसलमान मोअर्रिख़ कहते हैं कि सिर्फ़ एक गज़ गहरे पानी में गिरा और मर गया। एक रवायत यह हैं कि वह दरिया में नहाने उतरा तो बीमार पड़ गया और मर गया।

सुल्तान अय्यूबी जिसके मुतअल्लिक सबसे ज़्यादा संजीदा बल्कि मुतफ़क्किर था वह इंगलिस्तान का जंगजू बादशाह रिचर्ड था जो ब्लैक प्रिंस (स्याह शहज़ादा) के नाम से मशहूर था और उसे "शेर दिल रिचर्ड" भी कहा जाता था। वह जंग का माहिर था। ज़ाती तौर पर बहुत दिलेर और उसे कुदरत ने यह वस्फ़ अता किया था कि उसका कद लम्बा और बाज़ू लम्बे थे। उसे यह फ़ायदा हासिल था कि उसकी तलवार दुश्मन तक पहुँच जाती थी मगर दुश्मन की तलवार उस तक मुश्किल से ही पहुँचती थी। सलीबी दुनिया में सबकी नज़रें उसी पर लगी हुई थीं। उसकी जंगी कुव्वत भी ज़्यादा थी और उसकी बहरी जंगी कुव्वत उस वक़्त दुनिया की सबसे ज़्यादा ताकतवर थी। सुल्तान अय्यूबी को यही ख़तरा नज़र आ रहा था।

आपने इस सिलसिले की कहानियों में सुल्तान अय्यूबी के एक अमीर अलबहर हिसामुद्दीन लौलूअ का नाम पढ़ा होगा। रईसुल बहरीन अब्दुल मुहसिन था। सुल्तान अय्यूबी को जब यह इत्तलाअ मिली कि रिचर्ड अपने बहरी बेड़े के साथ आ रहा है तो उसने अल मुहसिन को यह हुक्म भेजा कि वह रिचर्ड के बेड़े के सामने न आये और अपने जहाज़ बिखेरकर रखे। हिसामुद्दीन लौलूअ को उसने चन्द एक जहाज़ों और जंगी कश्तियों के साथ अस्कलान बुला लिया था और उसे कहा था कि दुश्मन के जहाज़ों पर नज़र रखे लेकिन आमने सामने की टक्कर न ले। उसकी बजाए बहेरी छापामारों को दुश्मन के अकेले धकीले जहाज़ों को तबाह करने के लिए इस्तेमाल करे।

सुल्तान अय्यूबी ने देख लिया था कि समन्दर में भी उसे छापामार जंग लड़नी पड़ेगी। यह वह दिन थे जो सुल्तान अय्यूबी के लिए बड़े अज़ीयतनाक थे। वह रात को सोता भी नहीं था। उसने अपनी मज्लिस मुशाविरत में कहा कि हमें एक साहिली शहर कुर्बान करना पड़ेगा वह अकरा हो सकता है। मैं दुश्मन को यह तास्सुर देना चाहता हूँ कि जो कुछ है अकरा में है और अगर वह अकरा ले गया तो मुसलमानों की कमर टूट जाएगी फिर बैतुल मुकद्दस को मुसलमानों के कब्ज़े से छुड़ाना आसान हो जाएगा। सुल्तान अय्यूबी ने मज्लिस मुशाविरत को बताया कि वह दुश्मन को अकरा में लाने मे कामयाब हो गया तो दुश्मन अकरा की दिवारों

के साथ ही सर पटकता रहेगा। मज्लिसे मुशाविरत ने उसे इजाज़त देदी कि जिस तरह वह मुनासिब और सूदमन्द समझता है करे।

❖

इस हक़ीकत से इन्कार नहीं किया जा सकता कि बैतुल मुक़द्दस और अरज़े मुक़द्दस को सुल्तान अय्यूबी के वह आँसू ही बचा सकते थे जो उसने मस्जिदे अक़्सा में बहाये थे और वह दुआएं बचा सकती थीं जो उसने उस रात मस्जिदे अक़्सा में सज्दे में गिर कर मांगी थीं। दुआएं उस लड़की ने भी सज्दे में मस्जिदे अक़्सा में मांगी थीं जिसे सुल्तान अय्यूबी की आँखों में झांक कर कहा था–"तुम्हारे दुश्मन जहाज़ तुम्हारे आँसूओं में डूबते नज़र आ रहे हैं।"

यह तो कोई मोअर्रिख़ नहीं बता सकता कि उस रात सुल्तान अय्यूबी ने ख़ुदाए ज़ुलजलाल से क्या बातें की थीं, अल्बत्ता यह हक़ीक़त हर मोअर्रिख़ ने बयान किया है कि रिचर्ड का वह बहरी बेड़ा जिससे अय्यूबी जैसा मर्दे खुदा भी खौफ़ज़दा था, इंगलिस्तान से रवाना हुआ तो बहेरिया रोम में दाख़िल होते ही एक खौफ़नाक तूफ़ान की लपेट में आ गया। तमाम जहाज़ बिखर गये। एक अन्दाज़े के मुताबिक़ उस बेड़े में पाँच सौ बीस छोटे जहाज़ थे। उनमें चन्द एक बड़े जंगी जहाज़ थे। यह सब फ़ौज, घोड़ों, रस्द और साज़ोसामान से भरे हुए थे।

तूफ़ान में बेड़ा ऐसा बिखरा कि रिचर्ड को अपनी जान के लाले पड़ गये। तूफ़ान के बाद जब कई दिनों की तग व दौ से बेड़ा यकजा किया गया तो पता चला कि पच्चीस बड़े जहाज़ ग़र्क़ हो गये हैं और दो बहुत बड़े बार बरदार जहाज़ भी डूब गये हैं। उनमें बेअन्दाज़ अस्लेहा और दिगर सामान था। रिचर्ड को जो सबसे ज़्यादा नुक़सान बर्दाश्त करना पड़ा वह एक ख़तीर रक़म थी जो वह अपने साथ ला रहा था। यह बेबहा ख़ज़ाना था। जो बहेरा रोम की तह में चला गया।

रिचर्ड कबरस के जज़ीरे में लंगर अन्दाज़ हुआ तो उसे पता चला कि उसके बेड़े के तीन चार जहाज़ों को तूफ़ान ने क़ुबरस के साहिल पर पहुंचा दिया है। उनमें से एक में उसकी नौजवान बहन जवाना भी थी और उसकी मंगेतर ब्रिंगारिया भी। उन दोनों के मुतअल्लिक़ उसने समझ लिया था कि डूब मरी हैं लेकिन वह ज़िन्दा सलामत थीं। अलबत्ता कबरस के बादशाह आइज़िक ने रिचर्ड के लिए यह मसला खड़ा कर रखा था कि उसने अपने साहिल के साथ आने वाले उन तीन जहाज़ों से सामान निकलवा कर अपने क़ब्ज़े में ले लिया और तमाम आदमियों को रिचर्ड की बहन और मंगेतर समेत क़ैद में डाल दिया था। रिचर्ड को आइज़िक के ख़िलाफ़ जंग लड़नी पड़ी। आइज़िक को शिकस्त देकर उसे एक ख़ेमें में क़ैद किया मगर आइज़िक रात को उस तरफ़ से खेमा फाड़ कर जिधर कोई पहरेदार नहीं था, फ़रार हो गया। रिचर्ड पन्द्रह,बीस रोज़ उसे जज़ीरे में ढूंढता फिरा। आख़िर वह उसे मिल गया। रिचर्ड ने उसका घोड़ा ले लिया। यह ग़ैर मामूली तौर पर तेज़ रफ़तार घोड़ा था। रिचर्ड अरज़े मुक़द्दस में लड़ने आया तो यही घोड़ा उसके साथ था।

❖

रिचर्ड जब अरज़े मुक़द्दस के साहिल के क़रीब आया तो उसके इत्तेहादी सलीबी

अकरा को मुहासिरे में ले चुके थे। सबसे पहले जिस फ़ौज ने मुहासिरा किया वह गाई ऑफ लोज़िनान था जिसे मलिका सबीला ने इस अहदनामे पर रिहा कराया था कि वह सुल्तान अय्यूबी के खिलाफ़ नहीं लड़ेगा। उसके साथ फ़्रांस के बादशाह फीलिप्स आगस्टस की फ़ौज आ मिली और मुहासिरा मुस्तहकम हो गया। शहर के अन्दर मुसलमान फ़ौजो की तादाद दस हज़ार थी और रस्द कम व बेश एक साल के लिए काफ़ी थी। मुहासिरा 13 अगस्त 1189 ई0 के रोज़ शुरू हुआ।

अकरा के शहर के महले वकूह को समझना ज़रूरी है। उसके एक तरफ 7 शकल की दिवार थी और तीन तरफ़ को समुन्दर था। समन्दर में सलीबियों का बहेरी बेड़ा मौजूद था। जहाज़ बिखेर कर खड़े किए गये थे। दिवार से दो सलीबी फ़ौज ने डेरे डाल दिए थे। इस तरह खुश्की के तमाम रास्ते बन्द हो गये थे। सुल्तान अय्यूबी शहर के अन्दर नहीं बाहर था। उसने अपने जासूसों के ज़रिए और अपनी नकल वह हरकत की झलक दिखाकर दुश्मन को अकरा में घसीट लिया था। सलीबियों ने जब उस शहर का मुहासिरा किया उस वक़्त उन्हें यही बताया गया था कि सुल्तान अय्यूबी शहर में है मगर जब उन्होंने तमाम फ़ौज मुहासिरे में लगा दिया तो उसके एक हिस्से पर अक्ब से हम्ला हुआ। तब उन्हें पता चला कि सुल्तान अय्यूबी बाहर है और उसने उस सलबी फ़ौज को मुहासिरे में ले लिया है जिसने अकरा को मुहासिरे में ले रखा था।

सुल्तान अय्यूबी की यह दुश्वारी थी कि उसके पास फ़ौज की कमी थी। ताहम उसे तवक्को थी कि वह मुहासिरा तोड़ लेगा लेकिन वह यह भी चाहता था कि मुहासिरा ज़्यादा मुद्दत तक रहे ताकि सलीबियों की ताकत यहीं पर सर्फ़ होती रहे। 4 अक्टुबर 1189 ई0 के रोज़ सलीबियों पर जबरदस्त हम्ला किया। सलीबी मुकाबले के लिए तैय्यार थे। बड़ी ख़ूंरेज़ जंग हुई, जिसमें नौ हज़ार सलीबी मारे गये लेकिन उनके पास छः लाख का लश्कर था। नौ हज़ार के मर जाने से कोई फ़र्क नहीं पड़ा। उन्होंने शहर को फ़तह करने पर ज़्यादा तवज्जो मरकूज़ रखी लेकिन उनकी फ़ौज दिवार के करीब जाने से डरती थी क्योंकि दिवार के उपर से मुसलमान उन पर तीरों के अलावा आतिशगीर सयाल की हांडियाँ फेंकते थे।

सलीबियों ने दिवार के करीब पहुंचे, शहर के अन्दर पत्थर और आग बरसाने और दिवार फ़लांगने का यह तरीका इख़्तियार किया कि बहुत उंचे दबाबे (बुर्ज) तैय्यार किए जो लकड़ी के बने हुए थे। उनके नीचे लकड़ी के पहिए लगाये गये और यह बुर्ज इतने बड़े थे कि उनमे कई सौ सिपाही समा जाते थे। उन्हें मुसलमानों के फेंके हुए अतिशी सयाल और आग बचाने के लिए उनके फ़्रेमों पर तांबा चढ़ा दिया गया था। यह बुर्ज जब दिवार के करीब ले जाये गये तो दिवार से मुसलमान उन पर आतिशगीर सयाल की हांडियां फेंकनी शुरू कर दीं। सयाल बुर्जों पर फैला और उनके अन्दर जो सिपाही खड़े थे उन पर भी पड़ा। जब चन्द हांडियां फेंकने के बाद बुर्ज भीग गयी तो सिर्फ़ एक जलती हुई लकड़ी आई। हर बुर्ज से एक लकड़ी टकराई और बुर्ज मुहिब शोलों की लपेट में आ गये। उनमें से एक भी सिपाही ज़िन्दा न रहा।

दिवार के बाहर एक ख़ंदक थी जिसे पार करना सलीबियों के लिए मुश्किल था। उन्होंने

उस ख़ंदक को मिट्टी से भरना शुरू कर दिया लेकिन शहर के अन्दर की फ़ौज इस क़दर दिलेर थी कि उसके जैश बाहर आकर सलीबियों पर हम्ला करते और वापस चले जाते। सलीबियों ने खंदक को भरने के लिए यहाँ तक किया कि उनमें अपने मरे हुए सिपाहियों की लाशें फेंक दीं, फिर उनके जितने सिपाही मरते, उन सबकी लाशें ख़ंदक में फेंक देते अब्ब से उन पर सुल्तान अय्यूबी ने वसीअ पैमाने के शबखून के अन्दाज़ के हम्ले किये मगर सलीबियों का मुहासिरा टूटने की बजाए मुस्तकहम होता गया।

शहर वालों के साथ सुल्तान अय्यूबी ने प्यामबर कबूतरों के ज़रिए राब्ता कायम कर रखा था। दूसरा ज़रिया यह था कि एक आदमी जिसका नाम ईसा अलउमवाम था चमड़े में पैग़ाम बांध कर कमर के साथ बांध लेता और समन्दर में उतर जाता। वह रात को यह काम करता था। वह दुश्मन के लंगर अन्दाज़ जहाज़ों के नीचे से गुज़र आया करता था। वह पैग़ाम लाता और ले जाता था। एक रात वह उसी तरह आया। उसे शहर में ले जाने के लिए सोने के एक हज़ार सिक्कों से भरी हुई थैली और तहरीरी पैग़ामात दिए गए। क़ाज़ी बहाउद्दीन लिखता है–"वह जब खैरियत से शहर में दाखिल हो जाया करता था तो एक कबूतर उड़ा देता था जो हमारे पास आ जाता था। उससे हम समझ लेते थे कि ईसा खैरियत से पहुंच गया है। हम उस के कबूतर को वापस उड़ा देते थे। जिस रात वह एक हज़ार सोने के सिक्के ले कर गया, उससे अगले दिन उसका कबूतर न आया। हम समझ गये कि वह पकड़ा गया है। कई रोज़ बाद शहर से इत्तलाअ मिली कि ईसा की लाश अकरा साहिल के साथ तैरती हुई मिली थी। सोने के सिक्के उसके जिस्म के साथ बंधे हुए थे। लाश की हालत बहुत बुरी थी। वह सोने के वज़न से तैर न सका और डूब गया।"

अकरा का हाकिम मीर फ़रकोश था और सिपाह सालार अली बिन अहमदुल मश्तूब था। वह बार–बार सुल्तान अय्यूबी को यही पैग़ाम भेजते थे कि वह हथियार नहीं डालेंगे लेकिन बाहर से सलीबियों पर हम्ले जारी रखे जाएं और किसी न किसी तरह शहर में फौज और अस्लेहा पहुंचाई जाए।

यह सुल्तान अय्यूबी के सामने एक पेचीदा मसला था कि शहर तक मदद किस तरह पहुंचाए। उसकी अपनी हालत यह थी कि बुख़ार से उसका जिस्म जल रहा था। उसकी एक वजह शब बेदारी, दूसरी वजह असाब, तीसरी वजह यह थी कि वहां लाशों के अंबार लगे हुए थे। गली सड़ी लाशों की इतनी ज़्यादा बदबू थी कि वहाँ ठहरा नहीं जा सकता था। उसने सुल्तान अय्यूबी की बीमारी में इज़ाफ़ा किया। तीन चार रोज़ तो वह उठ भी न सका उसे अकरा हाथ से जाता नज़र आ रहा था।

फ़िर शमा बुझ गयी

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी अपने ख़ेमे में बीमार पड़ा था। उससे थोड़ी दूर ही अकरा के बाहर उसके जांबाज़ दस्ते उस सलबी लशकर पर हम्ले कर रहे थे जिसने अकरा को मुहासिरे में ले रखा था। फ़िलिस्तीन की तारीख़ में सबसे ख़ूंरेज़ मार्के लड़े जा रहे थे मगर मुहासिरा टूटता नज़र नहीं आ रहा था। शहर के अन्दर सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की महसूर फ़ौज की नफ़री दस हज़ार थी और मुहासिरा करने वाले सलीबियों की तादाद पांच लाख से ज़्यादा थी। सुल्तान अय्यूबी सलीबियों के अक्ब मे यानी शहर से बाहर था। उसके पास दस हज़ार मम्लूक थे जिनपर उसे बहुत भरोसा था। मम्लूक अक्ब से सलीबियों पर बड़े ही जांबाज़ाना हम्ले करते थे मगर कोई कामयाबी हासिल नहीं होती थी। दुश्मन की तादाद ज़्यादा होने के अलावा मुहासिरा न टूट सकने की वजह यह थी कि सलीबियों ने अकरा के इर्द गिर्द मोर्चे खोद दिए थे जो सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज के लिए ख़तरनाक थे। सवार जब हम्ला करते तो घोड़े मोर्चों में गिर पड़ते थे।

अकरा के बाहर मीलों वुसअत तक मैदाने जंग बनी हुई थी। लाशों का कोई शुमार नहीं था। अकरा की दिवार के बाहर दिवार जितनी लम्बी और उतनी ही चौड़ी ख़ंदक थी जिसे उबूर करना मुश्किल था। सलीबियो ने उस ख़ंदक के एक हिस्से में अपने मरे हुए फौजियों की लाशों और मरे हुए घोड़े फेंकने शुरू कर दिए थे ताकि यहाँ से ख़ंदक भर जाए और ख़ंदक से गुज़र कर दिवार तक पहुंचा जाए। जंग का शोर गुल इतना ज़्यादा था कि फ़िज़ा में सिवाये गिद्धों के कोई और परिन्दा नज़र नहीं आता था। गिद्ध कही उतरते, लाशों को खाते और उड़ जाते थे।

इन गिद्धों के दर्मियान तकरीबन हर रोज़ एक कबूतर अकरा से उड़ता और सुल्तान अय्यूबी के कैम्प में जा उतरता था और बहुत देर बाद कैम्प से उड़कर अकरा चला जाता था। मुहासिरे और ख़ूंरेज़ मार्कों के दौरान एक रोज़ यह कबूतर अकरा से उड़ा। इंगलैण्ड का बादशाह अपने ख़ेमे से बाहर खड़ा था। उसके साथ उसकी बहन जवाना भी थी।

"उस कबूतर पर नज़र रखो।" रिचर्ड ने हुक्म दिया–"ज़्योंहि नज़र आये उस पर बाज़ छोड़ दो। यह कबूतर हमारी शिकस्त का बाइस बन सकता है।"

उसके साथ उसकी बहन जवाना और उसकी मंगेतर ब्रिंगानिया खड़ी थी। रिचर्ड की उम्र ख़ासी हो गयी थी और अब उस नौजवान लड़की को अपने साथ इस इरादे से ले के आया था कि बैतुल मुकद्दस फ़तह करके इससे शादी करेगा। उसकी बहन जोवाना थोड़ी ही अर्सा पहले तक सिसली के बादशाह की बीवी थी। बादशाह मर गया तो जावामा जवानी में

बेवा हो गयी। वह इस कदर ख़ूबसूरत थी कि कोई कह नहीं सकता था कि उस लड़की की शादी हुई थी। रिचर्ड इंगलिस्तान से आते हुए उसे सिसली से अपने साथ ले आया था।

रिचर्ड को जावाना की हंसी सुनाई दी। रिचर्ड ने उसके तरफ़ देखा तो जोवाना ने उसे पूछा–"मेरे भाई! क्या कबूतर के मर जाने से सलाहुद्दीन अय्यूबी भी मर जाएगा।"

"यह कबूतर पयाम्बर है जोवाना।" रिचर्ड ने कहा–"इसकी एक टांग के साथ अकरा वालों का पैग़ाम बंधा होता है जो सलाहुद्दीन के पास जाता है। सलाहुद्दीन उस पैग़ाम का ज वाब उसी कबूतर के साथ भेजता है। सलाहुद्दीन हम पर बाहर से जो हम्ले करता है वह अकरा वालों के पैग़ामों के मुताबिक होते हैं। अकरा वालों का जोश और जज़्बा और हथियार न डालने का अज़म उस कबूतर की वजह से क़ायम है, वरना कोई महसूर फ़ौज इतने शदीद हम्ले ज़्यादा देर तक बर्दाश्त नहीं कर सकती। तुम देख रही हो कि हमारी मन्जिनिकों के फेंके हुए पत्थरों ने कई जगहों से दिवार का उपर का हिस्सा गिरा दिया है और हमारी फेंकी हुई आग ने शहर में तबाही बपा कर रखी है मगर वह हथियार नहीं डाल रहे।"

आपका असल मक़सद और मंज़िल योरूशलम है जो अभी बहुत दूर है।" जोवाना ने कहा–"अगर अकरा की फ़तह में कई साल गुज़र गये तो क्या अपनी जिन्दगी में योरूशलम पहुंच सकेंगे? हमारे जासूस और मुसलमान जंगी कैदी बताते हैं कि शहर के अन्दर सिर्फ़ दस हज़ार की तादाद की फौज है। हमारी तादाद इब्तेदा में छः लाखा थी। आब पाँच लाख रह गयी होगी। मुहासिरा पिछले साल (1189 ई0) 13 अगस्त के रोज़ शुरू हुआ था। अब 1191 ई0 का अगस्त आ गया है। दो साल...मेरे भाई! दो साल...अभी आप दस हज़ार नफ़री के मुहासरिन से हथियार नहीं डलवा सके। मैं जानती हूँ कि आपको मुहासिरे में शामिल हुए अभी चन्द महीने गुज़रे हैं लेकिन चन्द महीनों में आपने अकरा की थोड़ी सी दिवार तोड़ने और मिन्जनिकों से शहर के कुछ हिस्सा को आग लगाने के सिवा क्या कामयाबी हासिल की है? मुझे तो यह नज़र आ रहा है कि इस शहर के खंडर ही आपको मिलेंगे।"

रिचर्ड ने अपनी मंगेतर को वहाँ से चले जाने को कहा। वह चली गयी तो अपनी बहन से मुख़ातिब हुआ– "सलीबुल सलबूत और योरूशलम के वक़ार और तक़द्दुस का मुतालबा यह है कि तुम भूल जाओ कि तुम मेरी बहन हो। तुम उस सलीब की बेटी हो जो मुसलमानों के क़ब्ज़े में है और योरूशलम जहाँ हमारे पैगम्बर की इबादतगाह है उस पर भी मुसलमान काबिज़ हैं। तुम जानती हो कि हमें इस्लाम को ख़त्म करना है और तुम यह भी देख रही हो कि मुसलमान ख़ुदकुशी की तरह लड़ रहे हैं। यह लोग मौत की परवाह नहीं करते। यह फ़तह हासिल करने के लिए लड़ते हैं। मैं पहली बार यहाँ आया और उन्हें लड़ते देखा है। उनके जज़्बे के जुनून की जो कहानियाँ सुनी थीं वह अपनी आँखों देख रहा हूँ। मुझे यह भी बताया गया था कि मुसलमान को औरत मार सकती है। उनके दर्मियान जो ख़ाना जंगी हुई थी वह हमारे बादशाहों ने उनपर एक साज़िश के तेहत बादशाही, ज़र वह जवाहरात, शराब और औरत का नशा तारी करके कराई थी मगर सलाहुद्दीन अय्यूबी ऐसा पत्थर निकला कि उसके अज़म को मुतज़लजल न कर सके। उसने अपने उन भाईयों को जो हमारे साथ आ

गये थे, तलवार के ज़ोर से अपना मुतीअ कर दिया उनके दिलों मे इस्लामी जज़्बा बेदार कर लिया।"

"मैने भी यह सुना है।" जोवाना ने कहा–"मैंने उन लड़कियों के इसार की कहानियां भी सुनी हैं जिन्हें मुसलमान उमरा और हाकिमों के पास जासूसी और दिगर तख़रीबकारी के लिए भेजा जाता था, मेरे ख़्याल में यह तरीक़ा कामयाब नहीं रहा।"

"मैं उसे नाकाम भी नहीं कहता।" रिचर्ड ने कहा–"अगर मुसलमानों के क़ौमी जज़्बे को तबाह करने के लिए यह लड़कियां इस्तेमाल न की जातीं तो यह लोग बहुत अर्सा पहले न सिर्फ़ योरूशलम को फ़तह कर चुके होते बल्कि यह आधे यूरोप पर काबिज़ हो चुके होते। हम ने औरत के हुस्न और जिस्म के जादू से उनमें से बहुत से अमीरों, वज़ीरों और सालारों को सुल्तान बनाने के लालच से उनका इत्तेहाद तोड़ दिया था। उनकी जंगी कुव्वत उन्हें आपस में लड़ा कर तबाह कर दी थी, मगर यह फ़िर मुत्तहिद हो गये हैं।"

"आप यह बातें मुझे क्यों सुना रहे हैं?" जोवाना ने कहा–"आप के बोलने के अन्दाज़ में मायूसी क्यों है? मैं आपकी क्या मदद कर सकती हूँ?"

"मैंने तुम्हें कहा था कि भूल जाओ कि तुम मेरी बहन हो। तुम सलीब की बेटी हो। सलीब की फतह के लिए तुम बहुत कुछ कर सकती हो...तुम देख रही हो कि हम मुसलमानों के ख़िलाफ़ लड़ भी रहे हैं और हमारी आपस में मुलाकातें भी होती रहती हैं। हम एक दूसरे की तरफ़ अपने एल्ची भेजते रहते हैं। मेरी मुलाक़ात सलाहुद्दीन के भाई अल आदिल से भी हो चुकी है। मैं उनसे अपनी शराईत मनवाने की कोशिश कर रहा हूँ जो वह नहीं मान रहे। मैं उन्हें कह रहा हूँ कि योरूशलम और सलीबुल सलबूत हमारे हवाले कर दो और तुम उन इलाकों से निकल जाओ जिन पर सलीबियों का कब्ज़ा था। सलाहुद्दीन ने एक भी शर्त मानने से इन्कार कर दिया है।"

"आप सलाहुद्दीन से क्यों नहीं मिलते?"

"वह मुझसे नहीं मिलना चाहता।" रिचर्ड ने जवाब दिया–"वह बीमार भी है। मालूम होता है उसका भाई अल आदिल उसी जैसा पुर अज़्म और पक्का मुसलमान है वह सलाहुद्दीन की जगह ले रहा है। मैंने इसमें यह कमज़ोरी देखी है कि जवान है और जिन्दा दिल भी लगता है। मैं इस शख़्स के दिल पर कब्ज़ा करने की सोंच रहा हूँ। मैं उसे दोस्त बना सकूंगा लेकिन जो काम तुम्हारा है वह मैं कैसे कर सकता हूँ?" क्या तुमने उसे पसन्द नहीं किया था?"

"आप मुझसे वह काम लेने की सोंच रहे हैं जो हमारी तरबियतयाफ़्ता लड़कियाँ बहुत मुद्दत से कर रही हैं।"

"हाँ!" रिचर्ड ने कहा–" उसके दिल पर कब्ज़ा करो। मोहब्बत का वालिहाना इज़हार करो और उसे कहो कि तुम उसके साथ शादी करना चाहती हो। मैं दर्मियान में आजाऊंगा और सलाहुद्दीन से कहूँगा कि वह अकरा के साहिली इलाके अपने भाई और मेरी बहन को दे दे तो मैं अपनी बहन की शादी अल आदिल के साथ करने को तैय्यार हूँ। तुम अल आदिल को तैय्यार करना वह अपना मज़हब तर्क करके ईसाईयत कुबूल कर ले। उसे यह लालच दो

कि वह साहिली इलाके की इतनी वसीअ सल्तनत का सुल्तान बन जाएगा। मुझे उम्मीद है कि तुम उसे सलाहुद्दीन के खिलाफ़ कर सकोगी।"

जवाना कुछ देर खामोश रही। रिचर्ड उसे देखता रहा। आख़िर जोवाना ने आह ली और बोली—"मैं कोशिश करूंगी।"

"मुसलमान को इसी धोखे से मारा जा सकेगा।" रिचर्ड ने कहा—"मैं मैदाने जंग में उन्हें शिकस्त देने की पूरी कोशिश करूंगा लेकिन बहुत लम्बी मुद्दत दरकार होगी। मैं शायद उस वक़्त तक ज़िन्दा न रहूँ। मुझे वापस इंगलिस्तान भी जाना है। वहां के हालात मख़दोश हैं। मुख़ालिफ़ीन मेरी ग़ैर हाज़िरी से फ़ायदा उठा रहे हैं।"

जो कबूतर रिचर्ड के उपर से गुज़रकर गया था वह सलाहुद्दीन के ख़ेमे के सामने बनी हुई एक खपरील पर आ बैठा। दरबान ने दौड़ कर उसकी टांग से बंधा हुआ पैग़ाम खोला और ख़ेमें में ले गया। सुल्तान अय्यूबी कमज़ोरी महसूस कर रहा था। उसे आराम की सख़्त ज़रूरत थी लेकिन वह उठ बैठा और पैग़ाम पढ़ने लगा। शहर के अन्दर की फ़ौज के साथ सुल्तान का राबता पयाम्बर कबूतरों के ज़रिए कायम था। यह पैग़ाम अकरा के दोनों हाकिमों, अल्मस्तूब और बहाउद्दीन फ़राकूश का था। क़ाज़ीबहाउद्दीन शद्दाद जो सुल्तान अय्यूबी की मज्लिस मुशाविरत का अहम रूक्न और उसका हमराज़ दोस्त भी था, अपनी याद्दाश्तों में लिखता है कि यह दोनों ग़ैर मामूली तौर पर दिलेर और ज़हीन सालार थे, मुहासिरे में उनकी हालत बहुत बुरी हो गयी थी। शहर तबाह हो रहा था लेकिन वह दोनों हथियार डालने के लिए तैय्यार नहीं थे। बाहर वाले हर वक़्त यह ख़बर सुनने के लिए तैय्यार रहते थे कि अकरा की फ़ौज ने हथियार डाल दिए हैं।

उस पैग़ाम में भी अलमस्तूब और फ़राकूश ने सुल्तान अय्यूबी को वही कुछ लिखा था जो वह पहले हर पैग़ाम में लिखते थे। अबके उन्होंने ज़्यादा ज़ोर देकर लिखा कि हमसे यह तवक्को न रखना कि हम जीते जी हथियार डाल देंगे लेकिन आपकी मदद हमारे लिए बेहद ज़रूरी हो गयी है कि सलीबियों पर बाहर से हम्ले ज़्यादा कर दें। सिपाहियों से कहें कि वह उसी जज़्बे से लड़ें जिस जज़्बे से शहर वाले मुकाबला कर रहे हैं। आधा शहर जल चुका है। फ़ौज भी आधी रह गयी है लेकिन शहरियों के जज़्बे का यह आलम है कि उन्होंने एक वक़्त का खाना छोड़ दिया है औरतें भी हमारा साथ दे रही हैं। लोग खाना खुद कम खाते और फ़ौज को ज़्यादा खिलाते हैं।

उन्होंने दिवार की यह कैफ़ियत लिखी थी कि सलीबियों की मिन्जनिकों की मुसलसल संगबारी से दिवार कई जगहों से टूट गयी है। बालाई हिस्सा खत्म हो चुका है। बुर्ज गिर पड़े हैं। दुश्मन ने बाहर खंदक को कई जगहों से अपने सिपाहियों की लाशों से और मरे हुए घोड़ों और मिट्टी से भर ली है जहाँ से वह दिवार के करीब आकर दिवार पर चढ़ने की कोशिश करते हैं। आप जब ढोलों की आवाज़ सुनें, अक्ब से सलीबियों पर बहुत सख़्त हम्ला करें, हम ढोल उस वक़्त बजाया करेंगे जब सलीबी दिवार पर हम्ला करेंगे। आप ऐसे जांबाज़ तैय्यार करें जो समन्दर की तरफ़ से हम तक अस्लेहा पहुँचाएं।

सुल्तान अय्यूबी कमज़ोरी और बुख़ार के बावजूद उठ खड़ा हुआ। उसने पैग़ाम का जवाब लिखवाया जिस में उसने अकरा वालों की हौसला अफ़ज़ाई की। यह भी लिखा कि जाबाज़ पहले ही शहर तक अस्लेहा पहुँचाने के लिए जा चुके हैं। अल्लाह तुम्हारे साथ है। इस्लाम पर बड़ा ही सख़्त वक़्त आ पड़ा है। यह मेरी ही कोशिश थी कि सलीब बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ बढ़ने की बजाए अकरा का मुहासिरा करें ताकि उन्हें यहीं उलझा कर उनकी जंगी ताक़त कमज़ोर कर दूं। तुम लोग अकरा के दिफाअ के लिए नहीं मस्जिदे अक़्सा के दिफाअ के लिए लड़ रहे हो।

यह पैग़ाम कबूतर के ज़रिए भेजवाकर सुल्तान अय्यूबी ने अपने सालारों और मुशीरों को बुलाया और उन्हें कहा कि मेरे पास हर एक कमानदार और हर एक सिपाही के पास जाने का वक़्त नहीं रहा। मेरे जिस्म में जो ताक़त रह गयी है उसे मैं जिहाद में सर्फ़ करना चाहता हूँ। अपने कमानदार और सिपाहियों से कहो कि अपने अल्लाह, अपने रसूल और अपने मज़हब के लिए लड़ो। अब यह न सोंचो कि अपने सुल्तान के हुक्म से लड़ रहे हो। यह भी न सोंचो कि तुम्हें अब ज़िन्दा रहना है। इसका अज्र तुम्हें अल्लाह देगा।

क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद लिखता है कि सुल्तान अय्यूबी ऐसा जज़्बाती कभी नहीं हुआ था। उसकी जज़्बाती हालत बिल्कुल उस माँ से मिलती जुलती थी जिसका बच्चा खो गया हो। वह सोता नहीं था। आराम नहीं करता था। मैंने उसे कई बार कहा कि सुल्तान अपने सेहत का ख़्याल रखो। तुम अपने असाब को तबाह कर रहे हो। अल्लाह को याद करो। फ़तह व शिकस्त उसी के हाथ में है.....सुलतान के आँसू निकल आये। उसने जज़्बातियत से काँपती हुई आवाज़ में कहा—"बहाउद्दीन मैं सलीबियों को बैतुल मुक़द्दस नहीं दूंगा। मैं उस मुक़द्दस जगह की बेहुर्मती नही होने दूंगा जहाँ से मेरे प्यारे रसूल खुदा के हुज़ूर गये थे। उस जगह मेरे रसूल ने सज्दा किया था....वह गरज कर बोला—'नहीं....बहाउद्दीन! नहीं। मैं मरके भी सलीबियों को बैतुल मुक़द्दस नहीं दूंगा।'

क़ाजी शद्दाद आगे चलकर लिखता है कि एक रात वह इस कदर बेचैन था कि मैं बहुत देर उसके साथ रहा। उसे नींद नहीं आ रही थी। मैंने उसे कुर्आन की दो तीन आयतें बतायीं और कहा कि यह पढ़ते रहो। उसने आँखें बन्द कर लीं और उसके होंठ हिलने लगे। वह आयतें पढ़ रहा था। पढ़ते-पढ़ते सो गया। सोते में बड़बड़ाया—"याकूब की कोई ख़बर नहीं आई?....वह शहर में दाखिल हो जाएगा।" फ़िर वह सो गया लेकिन मैं देख रहा था कि वह नींद में भी बेचैन था।

सुल्तान अय्यूबी के ख़ेमे से अकरा की दिवार नज़र आती थी। उसके बाहर सलीबी लशकर यूं दिखाई देता था जेसे चींटियां किसी चीज़ पर इकठ्ठी हो गयी हों। रात को अकरा की दिवारों पर मशाले जलती फ़िरती रहती थीं और रात के अंधेरे में आग के गोले दिवार के उपर से अन्दर जाते नज़र आते थे। दिवार से भी ऐसे गोले बाहर आते थे। सुल्तान अय्यूबी के छापामार रातों को दुश्मन पर शबख़ून मारते रहते थे।

❖

नींद में सुल्तान अय्यूबी हसन याकूब का नाम ले रहा था वह उस की बहेरिया का एक बड़ा ही दिलेर कप्तान था। अकरा शहर के अन्दर रस्द और अस्लेहा पहुँचाना नामुम्किन हो गया था। पिछली किस्त में बयान किया जा चुका है कि शहर के एक तरफ़ समन्दर था और उधर सलीबियों के बहेरी जहाज़ बिखरे हुए थे। शहर वालों को सामान पहुंचाना बड़ा ही ज़रूरी था। सुल्तान अय्यूबी ने अपने इस बहरी बेड़े से उस मुहिम के लिए रज़ाकार मांगे थे। याकूब ने अपने आप को पेश किया था। उस वक़्त के वक़ाअ निगारों, क़ाजी बहाउद्दीन शद्दाद और दो मोअर्रिख़ों ने याकूब का तफ़सील से ज़िक्र किया है। वह हलब का रहने वाला था। उसने बहेरिया और फ़ौज से सिपाही मुन्तख़ब किये। उनकी तादाद छः सौ पचास थी। उन्हें याकूब अपने जहाज़ में ले गया और बैरूत चला गया वहाँ से उसने जहाज़ को (बेड़ा जंगी जहाज़ था) रस्द और अस्लेहा से भर लिया। यह इतना ज़्यादा सामान था जो अकरा वालों को बड़े लम्बे अर्से तक लड़ने के क़ाबिल बना सकता था।

याकूब ने अपने सिपाहियों से कहा कि जाने कुर्बान कर देनी हैं, यह सामान अकरा तक पहुँचाना है। जहाज़ जब अकरा से कुछ दूर रह गया था कि सलीबियों के चालीस जहाज़ों ने उसे घेर लिया। याकूब के जांबाज़ों ने बेजिगरी से मुकाबला किया। जहाज़ चलता रहा और याकूब उसे अकरा के साहिल के तरफ़ ले जा रहा था। जांबाज़ों ने दुश्मन के जहाज़ों को बहुत नुक़सान पहुँचाया। एक फ़्रांसीसी मोअर्रिख़ डी व नसूफ़ ने लिखा है कि वह जिन्नात और बदरूहों की तरह लड़े लेकिन दुश्मन के घेरे से निकल न सके। आधे से ज़्यादा मुसलमान सिपाही तीरों का निशाना बन गये।

याकूब ने जब देखा कि जहाज़ बादबान बर्बाद हो जाने से खुले समन्दर की तरफ़ बह गया है और अब दुश्मन जहाज़ पर क़ब्ज़ा कर लेगा तो उसने अपने जांबाज़ों से चिल्लाकर कहा—"खुदा की क़सम! हम वक़ार से मरेंगे। दुश्मन को न यह जहाज़ मिलेगा न उसमें से कोई चीज़ उसके हाथ आयेगी...जहाज़ में सूराख़ कर दो। समन्दर को जहाज़ के अन्दर आने दो।" ऐनी शाहिदों का बयान है कि जो जांबाज़ ज़िन्दा रह गये थे, उन्होंने अर्शे के नीचे जाकर जहाज़ को तोड़ना शुरू कर दिया। तख़्ते टूटे तो समन्दर जहाज़ में दाख़िल होने लगा। किसी भी जांबाज़ ने जहाज़ से कूद कर जान बचाने की कोशिश न की। सब जहाज के साथ समन्दर की तह में चले गये।

इस वाक़िआ की तारीख़ 8 जून 1191 ई0 लिखी गयी है।

सुल्तान अय्यूबी को उस वाक़िआ की इत्तलाअ मिली तो वह ख़ेमे से निकला। उसका घोड़ा हर वक़्त तैय्यार रहता था। उसने बुलन्द आवाज़ से हुक्म दिया—"दफ़ बजाओ।" दफ़ बज उठे। यह हम्ले का सिगनल था। ज़रा सी देर में उसके दस्ते हम्ले की तैय्यारी के लिए जमा हो गये। सुल्तान अय्यूबी ने इतना ही कहा—"आज दुश्मन को चीर कर दिवार तक पहुंचना है।" उसने घोड़े को ऐड़ लगाई और उसके तमाम दस्ते, सवार और प्यादा उसके पीछे गये यह बज़ाहिर अंधाधुंध हम्ला था लेकिन सुल्तान अय्यूबी ने पहले ही फ़ौज की तरतीबे बता रखी थी। सलीबियों ने मुसलमानों यूं क़हर व गज़ब से आते देखा तो उनके प्यादा दस्ते

कमानों में तीर डालकर दिवार की मांनिन्द खड़े हो गये। सलीबी फ़ौज के मोर्चे भी थे। उन्होंने तीर बरसाने शुरू कर दिए।

हम्ले की क़यादत सुल्तान अय्यूबी ख़ुद कर रहा था। इसलिए उसके मम्लूक बिजलियों की तरह सलीबियों पर टूटे मगर सलीबियों की तादाद बहुत ही ज़्यादा थी। मुसलमान यूं लड़े जैसे वह ज़िन्दा पीछे नहीं हटेंगे। घोड़सवार घोड़े घूमाघूमा कर लाते और हम्ला करते थे। यह मार्का उस वक़्त ख़त्म हुआ। जब शाम तारीक हो गयी। सलीबियों का नुक़सान बहुत ही ज़्यादा था मगर वह कामयाबी हासिल न की जा सकी जिसके लिए सुल्तान अय्यूबी ने हम्ला कराया था।

ऐसा हम्ला पहला और आख़िरी नहीं था। अकरा दो साल मुहासिरे में रहा। उस दौरान सुल्तान अय्यूबी ने अक्ब से ऐसे कई हम्ले कराये। हर हम्ले में जांबाज़ों ने बहादुरी की ऐसी मिसालें पेश कीं जो उससे पहले वह ख़ुद भी पेश न कर सके थे। उस दौरान सुल्तान अय्यूबी को मिस्र से भेजी हुई कुमक मिली और कई एक मुसलमान इमारतों ने उसे अपनी फ़ौजें और समान भेजा। अगर हर हम्ले का ज़िक्र तफ़सील से किया जाए तो सैंकड़ो सफ़े दरकार होंगे। यह जज़्बा नहीं बल्कि जुनून था। उन हम्लों से अकरा का मुहासिरा तो न तोड़ा जा सका लेकिन सलीबियों पर यह खौफ़ तारी हो गया कि मुसलमान उन्हें यहाँ से ज़िन्दा नहीं निकलने देंगे।

सलीबियों का चूंकि लशकर ज़्यादा था इसलिए उनका जानी नुक्सान भी ज़्यादा होता था। इतनी ज़्यादा लशों और जख़्मियों को देख–देख कर सलीबियों का हौसला मजरूह हो रहा था। मुसलमानों का क़हर और असर ख़ुद रिचर्ड के दिल पर पड़ रहा था।

उस दौरान रिचर्ड सुल्तान अय्यूबी के पास सुलह के लिए अपने एल्ची भेजता रहता था। उस का एल्ची अल आदिल के पास आया करता और अल आदिल सुलह का पैग़ाम सुल्तान अय्यूबी तक पहुंचाया करता था। उसके मुतालबात यह थे कि बैतुल मुक़द्दस जिसे वह योरूशलम कहते थे उन्हें दे दिया जाए, सलीबुल सलबूत उन्हें वापस दे दी जाए और सलीबी जिन इलाकों पर हतीन की जंग से पहले क़ाबिज़ हो चुके थे वह इलाक़ा सलीबियों को वापस कर दिये जाएं....सुल्तान अय्यूबी योरूशलम का नाम सुनकर भड़क उठता था। ताहम उसने अल आदिल को इजाज़त दे रखी थी कि वह रिचर्ड के साथ सुलह की बात चीत जारी रखे। तकरीबन तमाम मोअर्रिख़ लिखने हैं कि रिचर्ड और अल आदिल दोस्त बन गये थे और अल आदिल जब रिचर्ड के पास जाता और रिचर्ड उसे मिलने आता तो रिचर्ड की बहन जोवाना भी साथ होती थी। उस दोस्ती के बावजूद अल आदिल रिचर्ड की शराईत तस्लीम करने पर आमादा नहीं होता था।

उन मुलाकातों के साथ अकरा की जंग जारी थी। ख़ूंरेज़ी बढ़ती जा रही थी और अकरा वालों की हालत बहुत ही बुरी होती जा ही थी। मुहासिरा करने वालों में से सलीबी बादशाह भी थे जिमे काबिले ज़िक्र फ्रांस का बादशाह था। इंगलिस्तान का बादशाह रिचर्ड उन सबका लीडर बन गया था।

❖

"मैंने यह कामयाबी हासिल कर ली है कि उसने मेरी मोहब्बत कुबूल कर ली है।" जोवाना ने अपने भाई रिचर्ड से कहा–"लेकिन मैंने उसमें वह कमज़ोरी नहीं देखी जो आप बताते थे कि हर मुसलमान अमीर और हाकिम में पाई जाती है। वह मेरे साथ शादी करने पर आमादा हो गया लेकिन अपना मज़हब छोड़ने की बजाए मुझे इस्लाम कुबूल करने को कहता है।"

"मालूम होता है तुमने अपना जादू उस तरह नहीं चलाया जिस तरह इस फ़न की माहिरीन लड़कियां चलाती रहती हैं।" रिचर्ड ने कहा–"यह मैंने भी देख लिया है अल आदिल किरादार का पक्का है। मैं उसे कह चुका हूँ कि अगर वह तुम्हारे साथ शादी करना चाहता है तो ईसाईयत कुबूल कर ले और अपने भाई से कहे कि साहिली इलाक़ा उसे दे दे जिस पर उसकी और तुम्हारी हुक्मरानी होगी। उसने जवाब दिया कि अपना मज़हब तर्क करना होता तो इतने ख़ून ख़राबे की क्या ज़रूरत थी। मैंने उससे पूछा, कि तुम मेरी बहन को पसन्द करते हो? उसने जवाब दिया कि अपनी बहन से पूछो, मैं उसे उतना ही चाहता हूँ जितना वह मुझे चाहती है। मैंने उसे कहा कि मुझे उन के मेल मुलाकात और मोहब्बत पर कोई एतराज़ नहीं....शिकार जाल में आ गया है। अब यह तुम्हारा कमाल होगा कि उसे शीशे में उतारो।"

"मुझे याद आया।" जवाना ने कहा–"मेरी दोनों ख़ादिमाएं क . नज़र नहीं आ रहीं। रात यहीं थीं। सुबह से ग़ायब हैं।"

"मेरा ख़्याल है वह अब ग़ायब ही रहेंगी।" रिचर्ड ने कहा–"वह मुसलमान थीं।"

"वह सिसली की मुसलमान थीं।" जोवाना ने कहा–"और वह उस वक़्त से मेरे साथ थीं जब मेरी शादी हुई और मैं सिसली गयी थी।"

"मुसलमान कहीं का भी रहने वाला क्यों न हो, सबका जज़्बा एक सा होता है।" रिचर्ड ने कहा–"इसीलिए हम इस क़ौम को ख़तरनाक सझमते हैं और हम इस कोशिश में लगे रहते हैं कि उनका इत्तेहाद टूट जाए। उन दोनों ने यहाँ आकर देखा कि हम उनकी कौम के ख़िलाफ़ लड़ रहे हैं वह दोनों उनके पास चली गयी।"

रिचर्ड ठीक कह रहा था। उस वक़्त यह दोनों औरतें सुल्तान अय्यूबी के पास पहुँच चुकी थीं। उनकी छान बीन करके उन्हें सुल्तान के पास ले जाया गया। उन्होंने सुल्तान से मिलने की ख़्वाहिश की थी और कहा था कि वह कुछ बातें सिर्फ़ सुल्तान को बताना चाहती हैं। उन्होंने सुल्तान अय्यूबी को बताया वह सिसली में जनी पली हैं और लड़कपन में शाही महल में मुलाज़िम हो गयी थीं। जब जोवाना बादशाह की बीवी बनकर आ गयी तो इन दोनों को जिस्मानी चुस्ती और अच्छी शकल व सूरत के वजह से जोवाना की ख़ास ख़ादिमायें बना दिया गया। सिसली में मुसलमानों की अक्सरियत थी इसलिए वहाँ इस्लाम ज़िन्दा था। इन दोनों को भी अपना मज़हब याद रहा। जोवाना बेवा हो गयी तो शहंशाह रिचर्ड आ गया। वह जोवाना को अपने साथ लाया तो उन दोनों को भी साथ आना पड़ा। यहाँ उन्होंने ईसाईयों को मुसलमानों के ख़िलाफ़ लड़ते हुए देखा तो कुफ़्फ़ार की नौकरी से उनका दिल उचाट हो गया।

यह दोनों औरतें सिर्फ़ जिस्मानी तौर पर ही चुस्त और चालाक नहीं थीं, ज़ेहनी तौर पर भी होशियार थीं। उन्होंने बताया कि जोवाना रिचर्ड की मंगेतर को बता रही थी कि उसने सलाहुद्दीन अय्यूबी के भाई अल आदिल को फांस लिया है। वह कहती थी कि अल आदिल के दिल में उसकी और उसके दिल में अल आदिल की मोहब्बत पैदा हो गयी है और अगर अल आदिल ने अपना मज़हब तर्क कर दिया तो उनकी शादी हो जाएगी फिर सलाहुद्दीन अय्यूबी को मारना और योरूशलम पर क़ब्ज़ा करना आसान हो जाएगा। उन औरतों ने इस शक का भी इज़हार किया कि अल आदिल और जोवाना कहीं मिलते मिलाते भी हैं। यह ख़बर सुल्तान अय्यूबी तक पहुचाने के लिए दोनों औरतें वहाँ से भाग आई। क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद ने अपनी याददाश्तों में उन औरतों के नाम नहीं लिखे, यह लिखा है कि सुल्तान अय्यूबी ने उन दोनों को निहायत इज़्ज़त व एहतराम और ईनाम व इकराम के साथ दमिश्क भेज दिया।

❖

सुल्तान अय्यूबी ने उन औरतों की इत्तलाअ पर यकीन कर लिया लेकिन उसे यकीन नहीं आ रहा था कि उसका सगा भाई उसे धोखा दे रहा है। उसे अपने हर सालार पर एतमाद था लेकिन अल आदिल और अपने दोनों बेटों की मौजूदगी में वह बहुत सी परेशानियों से आज़ाद था। सलीबियों पर अक्ब से जो हम्ले किये जाते थे उनकी क़यादत तीनों करते या वह ख़ुद करता था। उसके अलावा अल आदिल ही सलीबी हुक्मरानों, ख़ुसूसन रिचर्ड से मिलता और बात चीत करता था। ताहम उसने अल आदिल के साथ बात कर लेना मुनासिब समझा, मगर अकरा की जंग फ़ैसलाकुन मरहले में दाख़िल हो चुकी थी। मुसलामनों की कुमक आ रही थी। अल आदिल कहीं नज़र नहीं आता था। उसके मुतअल्लिक सुल्तान अय्यूबी को यही इत्तलाएं मिलती थीं कि आज उसने फ़लां जगह हम्ला किया है और आज फ़लां जगह। सुल्तान अय्यूबी को अपने बेटे भी नहीं मिलते थे। अब तो उसकी अपनी यह हालत थी कि सेहत की खराबी के बावजूद जंग में शरीक रहता था।

अकरा की दिवार एक जगह से मुसलसल संगबारी से गिर पड़ी थी। सलीबी वहां से अन्दर जाने की कोशिश करते तो मुसलमान जानों की बाज़ी लगाकर उन्हें रोकते थे। दूर से नज़र आने लगा था कि यह शगाफ दोनों फ़रीकों की लाशों से भरता जा रहा है। आख़िर अन्दर यह कबूतर यह पैग़ाम लाया–"अगर कल तक हमें मदद न पहुंची या आपने बाहर से मुहासिरा तोड़ने की कोशिश न कीतो हमें हथियार डालने पड़ेंगे क्योंकि शहरियों के बच्चे भूख से बिलबिला रहे हैं। शहर जल रहा है और फ़ौज थोड़ी रह गयी है और जो रह गयी है वह मुसलसल दो साल बेग़ैर आराम किये लड़ लड़ कर लाशें बन रही है।"

सुल्तान अय्यूबी के आंसू निकल आए। उसने उसी वक़्त अपने तमाम तर दस्ते यकजा करके बड़ा ही शदीद हम्ला किया। ऐसी ख़ूरेज़ी हुई कि तारीख़ के वर्क फड़फड़ाने लगे। मोअर्रिख़ लिखते हैं कि इन्सानी ज़ेहन ऐसी ख़ूरेजी को तसव्वुर में नहीं ला सकता। रात को भी मुसलमानों ने सलीबियों को चैन न लेने दिया। आधी रात के बाद सुल्तान अय्यूबी इस तरह अपने ख़ेमे में आया और पलंग पर गिरा जैसे उसका जिस्म जख़्मों से चूर हो गया हो

उसने हांपती कांपती आवाज़ में हुक्म दिया कि सुबह फिर ऐसा ही हम्ला होगा, मगर सुबह की रौशनी ने जो मंज़र दिखाया उससे उससे उस पर नीम गशी की कैफियत तारी हो गयी। अकरा की दिवारों पर सलीबियों के झंडे लहरा रहे थे। सलीबियों का लश्कर शगाफ से अन्दर जा रहा था। यह जुमा का दिन था। तारीख़ 17 जामादील सानी 587 हि (12 जुलाई 1192 ई0) थी।

अल मस्तूब और फ़राकुस ने सलीबियों से शराईत तय कर ली थीं। उसके बावजूद सुल्तान अय्यूबी को यह मंज़र भी देखना पड़ा कि फ़िरंगी तकरीबन तीन हजार मुसलमान कैदियों को रस्से से बांधे बाहर लाये। उनमें फ़ौजीथे और शहरी भी। उन्हे एक जगह खड़ा कर दिया गया और चारों तरफ़ से सलीबियों की फौज के सवार और प्यादा दस्तों ने उन बंधे हुए निहत्थे कैदियों पर हम्ला कर दिया। सुल्तान अय्यूबी को बिल्कुल तवक्को नहीं थी कि सलीबी इस क़दर दरिन्दगी और जिल्लत का मुज़ाहिरा भी कर सकते हैं। जब सलीबी फ़ौज कैदियों पर टूट पड़ी और मुसलमान फ़ौज किसी के हुक्म के बगैर उठ दौड़ी और सलीबियों पर पूरे कहर से हम्ला किया मगर तमाम कैदी शहीद किए जा चुके थे। दोनों फ़ोजों में बड़ा सख़्त तसादुम हुआ।

❖

इस दौरान रिचर्ड पर भी सुल्तान अय्यूबी की तरह बीमारी के शदीद हम्ले हुए। दुनियाए सलीब को उस पर बड़ा ही भरोसा था। इसमें शक नहीं कि वह शेर दिल अकरा के मुहासिरे में जहाँ वह कामयाब हुआ था वहाँ उसका हौसला भी टूट गया था। उसे तवक्को नहीं थी कि मुलसलमान इतनी बेजिगरी से लड़ते हैं। उसकी मंज़िल अब बैतुल मुक़द्दस थी। उसने साहिल के साथ–साथ कूच किया। आगे अस्कलान और हीफा जैसे बड़े शहर और क़िले थे। सुल्तान अय्यूबी ने उसका इरादा भाँप लिया। वह उन शहरों और किलों पर कब्ज़ा करके यहाँ अपने अड्डे बनाना और बैतुल मुक़द्दस पर हम्ला करना चाहता था।

सुल्तान अय्यूबी ने बैतुल मुक़द्दस की ख़ातिर बहुत बड़ी कुर्बानी देने का फ़ैसला कर लिया। उसने हुक्म दिया–"अस्कलान को तबाह करदो क़िले और शहर को मलबे का ढेर बना दो।" सालारों और मुशीरों पर सकता तारी हो गया। इतना बड़ा शहर? इतना मज़बूत क़िला? सुल्तान अय्यूबी ने गरज कर कहा–"शहर फिर आबाद हो जाएंगे। इन्सान पैदा होते रहेंगे, मगर बैतुल मुक़द्दस को सलीबियों से बचाये रखने के लिए सलाहुद्दीन अय्यूबी शायद फिर पैदा न हो......अपने तमाम शहर और बच्चे मस्जिदे अक़सा पर कुर्बान कर दो।"

सुल्तान अय्यूबी बेशक जज़्बाती हो गया था लेकिन उसने फ़ने हरब व जरब और हक़ाइक़ से चश्मपोशी न की। अपने छापामार दस्तों को सलीबी लश्कर के पीछे डाल दिया। यह दस्ते बिखर कर रिचर्ड के लश्कर जो कूच कर रहा था, अक्बी हिस्से में शबख़ून मारते और ग़ायब हो जाते। इस तरह उस लशकर का कूच बहुत ही सुस्त रहा। दुश्मन की रस्द महफ़ूज़ न रही। रिचर्ड अस्कलान जा रहा था। वहाँ पहुँचा तो क़िला और शहर मलबे का ढेर बन चुके थे। वहाँ जो मुसलमान फौज थी उसे बैतुल मुक़द्दस के दिफ़ाअ के लिए भेज दिया गया था। रिचर्ड

के रास्ते में जितने किले आये वह सब मिस्मार हो चुके थे। मोअर्रिख़ लिखते हैं कि रिचर्ड का दिमाग़ ख़राब होने लगा था कि मुसलमान ऐसी कुर्बानी भी दे सकते हैं। वह जान गया कि बैतुल मुकद्दस पर कब्ज़ा आसान नहीं।

उसपर यह उफ्ताद पड़ी कि फ़्रांस का बादशाह उसका साथ छोड़ गया। उन्होंने अकरा ले तो लिया था लेकिन मुसलमानों ने उस कामयाबी में उनकी कमर तोड़ दी थी। सुल्तान अय्यूबी को अकरा के हाथ से निकल जाने का बहुत अफ़सोस था लेकिन उसकी यह चाल कामयाब थी कि उसने सलीबियों को जंगी ताकत का घमंड तोड़ दिया था। उसने अब फ़िर अपना मख़्सूस तरीकाए जंग शुरू कर दिया था। यह शबख़ूनों और छापों का सिलसिला था। यूरोपी मोअर्रिख़ों ने लिखा है कि मुसलमान छापामार रात की तारीकी में तूफ़ान की तरह आते और सलीबी फ़ौज के अक्बी हिस्से पर शबख़ून मार कर बेतहाशा नुक़सान करते और ग़ायब हो जाते थे। इस तरह सलीबियों के लिए एक माह का सफ़र तीन माह का हो जाता था। सुल्तान अय्यूबी ने सलीबियों के कूच की रफ्तार सुस्त करके बैतुल मुकद्दस का दिफाअ मज़बूत कर लिया।

❖

"जोवाना कुछ करो......सलीब के ख़ातिर कुछ करो"...... रिचर्ड ने अपनी बहन से कहा-"अल आदिल को हाथ में लो। हम लड़कर बैतुल मुद्द नहीं ले सकते।"

"वह मुझे चाहता है।" जोवाना ने जवाब दिया-"कूच के दौरान भी मेरी उससे मुलाकात हो चुकी है। मैं यह भी कह सकती हूँ कि वह मुझे वालिहाना तौर पर चाहने लगा है लेकिन कहता है कि मुसलमान हो जाओ। वह मेरी कोई शर्त मानने पर आमादा नहीं होता।"

उधर सुल्तान अय्यूबी ने अल आदिल, अपने बेटों और सालारों को बुला रखा था। उसकी ज़ुबान पर अब दो ही लफ़्ज़ रहते थे- "इस्लाम, बैतुल मुकद्दस।" उसने उन सबको बैतुल मुकद्दस के दिफाअ की हिदायात दीं। कान्फ्रेंस के बाद अल आदिल उसे तन्हाई में मिला और कहा-"रिचर्ड मुझे अपनी बहन पेश कर रहा है लेकिन शर्त यह है कि अपना मज़हब तर्क कर दूं।"

"तुम्हें इस्लाम से ज़्यादा मोहब्बत है या रिचर्ड की बहन से?"

"दोनों से।"

"तो उसे अपने मज़हब में लाओ और शादी कर लो।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा-"मैं इजाज़त देता हूँ।"

"मैं आपसे शादी की इजाज़त लेने नहीं आया।" अल आदिल ने कहा-"मैं आपको बता रहा हूँ कि रिचर्ड जैसा दिलेर और जंगजू बादशाह भी इन ज़लील हथकंडो पर उतर आया है। मैं एतराफ़ करता हूँ कि मुझे उसकी बहन अच्छी लगती है लेकिन मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि अपने मज़हब से ग़द्दारी नहीं करूंगा।"

"और वह भी अपने मज़हब से ग़द्दारी नहीं करेगी।"

"जाये जहन्नम में।" अल आदिल ने कहा-"इन हरबों से रिचर्ड बैतुल मुकद्दस नहीं ले

सकता।"

सुल्तान अय्यूबी के चेहरे पर रौनक आ गयी। यूरोपी मोअर्रिख़ों ने रिचर्ड की इस हरकत पर पर्दा डालने की कोशिश की है। वह लिखते हैं कि रिचर्ड ने इस शर्त पर अपनी बहन अल आदिल को पेश की थी कि वह ईसाई हो जाए लेकिन रिचर्ड की बहन ने अल आदिल को धुतकार दिया था।

यह पर्दा उसी वक़्त चाक हो गया था। वह इस तरह कि रिचर्ड बैतुल मुक़द्दस के क़रीब जाकर ख़ेमाज़न हुआ। यहाँ अकरा की जंग से ज़्यादा ख़ूरेंज़ मार्कों की तवक्को थी, लेकिन रिचर्ड ने अपनी वही शराईत पेश करनी शुरू कर दीं जो वह पहले कर चुका था। एक बार सुल्तान अय्यूबी ने उसके एल्ची की बेइज़्ज़ती कर दी और उसे फ़ौरन वापस चले जाने को कह दिया। इस दौरान सुल्तान अय्यूबी को पता चला कि रिचर्ड इतना ज़्यादा बीमार हो गया है कि उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं रही। सुल्तान अय्यूबी रात को अपने ख़ेमे से निकला और रिचर्ड के ख़ेमों का रूख़ कर लिया। उसने सिर्फ़ अल आदिल को बताया था कि वह कहाँ जा रहा है। अल आदिल ने हंस कर कहा कि फ़लाँ जगह रिचर्ड की बहन मेरे इन्तज़ार में खड़ी होगी। उसे भी साथ ले जाना।

जोवाना वहाँ खड़ी थी। उसने घोड़े के क़दमों की आहट सुनी तो दौड़कर आई और बोली–"तुम आ गये अल आदिल?" सुल्तान अय्यूबी घोड़े से उतरा और जोवाना को घोड़े पर बैठा कर ख़ामोशी से रिचर्ड की ख़ेमागाह की तरफ़ चल पड़ा। जोवाना कुछ कह रही थी। सुल्तान अय्यूबी ने अरबी ज़ुबान में कहा–"तुम्हारी ज़ुबान मेरा भाई समझ सकता है मैं नहीं समझता।" यह जोवाना न समझ सकी।

सुल्तान अय्यूबी रिचर्ड के ख़ेमें में दाख़िल हुआ। रिचर्ड वाक़ई सख़्त बीमार था। उसने सुल्तान अय्यूबी के साथ बात करने के लिए अपना तर्जुमान बुला लिया। सुल्तान अय्यूबी ने पहली बात यह कही–"अपनी बहन को संभालो। मेरा भाई अपना मज़हब तर्क नहीं करेगा.... और मुझे बताओ कि तुम्हें तकलीफ़ क्या है। मैं तुम्हें देखने आया हूँ। यह न समझना कि तुम्हें मरता देखकर मैं हम्ला करूंगा। सेहतयाब हो जाओगे तो देखा जाएगा।"

रिचर्ड हैरत से उठ बैठा और बेसाख़्ता बोला–"तुम अज़ीम हो सलाहुद्दीन...तुम सच्चे जंगजू हो।" उसने अपनी तकलीफ़ बताइ। सुल्तान अय्यूबी ने कहा–"हमारे इलाके में बीमार होने वाले को हमारे तबीब ठीक कर सकते हैं। जिस तरह इंगलिस्तान की फौज यहाँ आकर बेकार हो जाती है उसी तरह तुम्हारे डाक्टर भी यहाँ आकर अनाड़ी हो जाते हैं। मैं अपना तबीब भेजूंगा।"

"सलाहुद्दीन हम कब तक एक दूसरे का ख़ून बहाते रहेंगे?" रिचर्ड ने कहा–"आओ, सुलह और दोस्ती कर लें।"

"लेकिन मैं दोस्ती की वह क़ीमत नहीं दूंगा जो तुम मांग रहे हो।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा–"तुम ख़ून ख़राबे से डरते हो, बैतुल मुक़द्दस की ख़ातिर मेरी पूरी क़ौम अपना ख़ून क़ुर्बान कर देगी।"

वहाँ से वापस आकर सुल्तान अय्यूबी ने अपना तबीब रिचर्ड के इलाज के लिए भेजा। उसे सेहतयाब होते–होते बहुत दिन गुज़र गये। सुल्तान अय्यूबी जंग के लिए तैय्यार हो चुका था लेकिन हम्ले की बजाए रिचर्ड की तरफ से सुलह की नयी शर्तें आयीं। रिचर्ड बैतुल मुकद्दस से दस्तबरदार हो गया था। उसने सिर्फ़ यह रियायत मांगी थी कि ईसाई ज़ाइरीन को बैतुल मुकद्दस में दाखिले की इजाज़त दे दी जाए और साहिल का कुछ इलाका सलीबियों को दे दिया जाए। सुल्तान अय्यूबी ने यह शर्त मान लीं। उसकी वजह यह बयान की गयी है कि सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज मुसलसल लड़ रही थी और शहातद इतनी ज़्यादा हो चुकी थी कि अब कम तादाद से इतनी बड़ी फ़ौज से लड़ना मुम्किन नहीं रहा था। क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद ने यह भी लिखा है कि दो साल से ज़्याद अर्सा गुज़र चुका था। सिपाही दिन रात लड़ते रहे थे। वह ज़ेहनी तौर पर शल हो चुके थे। बाज़ दस्तों में इहतजाज भी शुरू हो गया था। सुल्तान अय्यूबी जिस्मानी तौर पर थकी हुई और ज़ेहनी तौर पर पज़ मुर्दा फ़ौज के बल बूते पर बैतुल मुक़द्दस को ख़तरे में डालने से गुरीज़ कर रहा था।

रिचर्ड मुसलमानों की बेख़ौफ़ी और जज़्बे से घबरा रहा था। उसकी सेहत जवाब दे गयी थी। उसके अलावा उसके अपने मुल्क में उसके मुखालिफ़ीन सर उठा रहे थे। इंगलिस्तान का तख़्त व ताज ख़तरे में पड़ गया था।

उस मुआहिदे पर 2 सितम्बर 1192 ई0 (22 शाबान 588 हि0) के रोज़ दस्तख़त हुए। रिचर्ड 9 अक्टूबर 1192 ई0 के रोज़ अपनी फ़ौज के साथ इंगलिस्तान के लिए रवाना हुआ। उस मुआहिदे की मीयाद तीन साल मुक़र्रर की गयी। रिचर्ड ने बवक़्ते रूख़सत सुल्तान अय्यूबी को पैग़ाम भेजा कि मैं मुआहिदे की मीयाद गुज़रने के बाद योरूशलम फ़तह करने आऊंगा। उसके बाद कोई सलीब बैतुल मुकद्दस को फ़तह नहीं कर सका। इस सदी में जून 1967 ई0 में अरबों की बेइत्तफाकी ने और उनकी उन्हीं कमज़रियों ने जो कुफ़्फ़ार सुल्तान अय्यूबी की दौर में मुसलमान उमरा में पैदा करने की कोशिश कर रहे थे, बैतुल मुकद्दस यहूदियों के हवाले कर दिया है।

रिचर्ड की रवानगी के बाद सुल्तान अय्यूबी ने ऐलान किया कि उसकी फ़ौज को जो अफ़राद हज के लिए जाना चाहते हैं, अपने नाम दे दें, उन्हें सरकारी इन्तज़ाम के तेहत हज के लिए भेजा जायेगा। फ़ेहरिस्तें तैय्यार हो गयीं और उस सबको हज के लिए रवाना कर दिया गया। ख़ुद सुल्तान अय्यूबी की दीरीना ख़्वाहिश थी कि हजे काबा को जाए मगर जिहाद ने उसे मुहलत न दी और जब मुहलत मिली तो उसके पास सफ़र खर्च के लिए पैसे नहीं थे। उसे सरकारी ख़ज़ाने से पैसे पेश किये गये जो उसने यह कर क़ुबूल न किये कि यह ख़ज़ाना मेरा ज़ाती नहीं। उसने अपने आप को हज की सआदत से महरूम कर दिया सरकारी ख़ज़ाने से एक पैसा न लिया।

मिस्री वक़ाअ निगार मोहम्मद फ़रीद हदीद लिखता है कि वफ़ात के वक़्त सुल्तान अय्यूबी की कुल दौलत, 47 दिरहम चाँदी के और एक टुकड़ा सोने का था। उसका ज़ाती मकान भी नहीं था।

❖❖

फ़िर शमा बुझ गयी

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी 4 नवम्बर 1192 ई0 के रोज़ बैतुल मुकद्दस से दमिश्क पहुंचा। उसके चार माह बाद सुल्तान ख़ालिके हकीकी से जा मिला। दमिश्क पहुंचने से वफ़ात तक का आँखों देखा हाल काज़ी बहाउद्दीन शद्दाद के अल्फ़ाज़ में पेश किया जाता है:

"......उसके बच्चे दमिश्क में थे। उसने सुल्तान के लिए इस शहर को पसन्द किया। उसके बच्चे उसे देख कर तो ख़ुश हुए ही थे, दमिश्क और गिर्दो नवाह के लोग अपने फ़ातेह सुल्तान को देखने के लिए हुजूम दर हुजूम आ गये। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अपनी कौम की यह बेतबाना अकीदत मन्दी देखी तो अगले ही रोज़ (5 नवम्बर बरोज़ जुमेरात) दरबार आम मुनअकि़द किया जिसमें सुल्तान को मिलने और अगर किसी को कोई शिकायत हो तो बयान करने की हर किसी को इजाज़त थी......मर्द, औरतें, बूढ़े, बच्चे, अमीर, ग़रीब, हाकिम और अवाम सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी से मिलने जमा हो गये। शायरों ने इस तक़रीब में सुल्तान की शान में नज़्में सुनायीं....

"सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी को मुसलसल जिहाद और सल्तनत की मस्रूफ़ियात की सिम्र व फ़याद ने न दिन को कभी चैन लेने दिया न रातों को इत्मीनान की नींद सोने दिया था। वह जिस्मानी तौर पर भी निढाल हो चुका था और ज़ेहनी तौर पर भी। थके हुए असाब को ताज़ादम करने के लिए उसने दमिश्क के इलाके में हिरनों के शिकार को शग़ल बना लिया। वह अपने भाइयों और बच्चों के साथ शिकार खेला करता था। उसका इरादा था कि कुछ रोज अराम करके मिस्र चला जाएगा मगर दमिश्क में भी सरकारी कामों ने उसका पीछा न छोड़ा......

"मैं उस वक़्त बैतुल मुक़द्दस में (वज़ीर) था। एक रोज़ दमिश्क से मुझे सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का ख़त मिला। उसने मुझे दमिश्क में बुलाया था। मैं फ़ौरन रवाना होने लगा, मगर मुसलसल मुसलाधारा बारिशों ने रास्तों को दलदल बना दिया था। इस कदर किचड़ और इतनी तेज़ बारिश में उन्नीस रोज़ बाद बैतुल मुक़द्दस से निकल सका। मैं 23 मोहर्रमुल हराम बरोज़ जुमा वहाँ से रवाना हुआ और 12 सिफर बरोज़ मंगल दमिश्क पहुंचा। उस वक़्त सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी को मेरी आमद की इत्तलाअ दी गयी। उसने मुझे फ़ौरन अपने ख़ास कमरे में बुला लिया। मैं जब उसके सामने गया तो वह बाज़ू फैला कर उठा और मुझ से बग़लगीर हो गया। मैं ने उसके चेहरे पर ऐसा इत्मीनान और सकून कभी नहीं देखा था। उसकी आँखों में आँसू तैरने लगे.......

"अगले रोज़ उसने मुझे बुलाया। मैं उसके ख़ास कमरे में पहुँचा तो उसने मुझ से पूछा कि मुलाकात के कमरे में कौन लोग बैठे हैं। मैंने उसे बताया कि (उसका बेटा) अलमुल्कुल अफ़ज़ल, चन्द एक उमरा और बहुत से दूसरे लोग आप की मुलाकात के लिए बैठे हैं। उसने जमालुद्दीन इकबाल से कहा कि उन लोगों से मेरी तरफ़ से माआज़रत करके कह दो कि आज मैं किसी से नहीं मिल सकूंगा। उसने मेरे साथ कुछ ज़रूरी बातें कीं और मैं चला आया. ...

"दूसरे दिन उसने मुझे अलीउलसुबह बुला लिया। मैं गया तो वह अपने बाग़ीचे में बैठा अपने बच्चों के साथ खेल रहा था। उसने पूछा कि मुलाकात के कमरे में कोई मुलकाती है? उसे बताया गया कि फ़िरंगियों के एल्ची आये बैठे हैं।सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा कि फ़िरंगी एल्चीयों को भेज दो। उसके बच्चे वहाँ से चले गये। उसका सबसे छोटा बच्चा अमीर अबू बकर जिससे सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी को बहुत प्यार था वहीं रहा। जब फिरंगी आये तो बच्चे ने उनके बेग़ैर दाढ़ियों के चेहरे और उनका लिबास देखा तो बच्चा डर कर रोने लगा। बच्चे ने बेग़ैर दाढी के कभी कोई इन्सान नहीं देखा था। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने फ़िरंगियों से मआज़रत की कि उनके हुलिए को देखकर बच्चा रो पड़ा है, मगर सुल्तान ने बच्चे को अन्दर भेजने की बजाए फ़िरंगियों से कहा कि वह आज उनसे नहीं मिल सकेगा। उसने उन्हें बेग़ैर बात चीत किये रुख़सत कर दिया....

"उनके जाने के बाद उसने कहा—"जो कुछ पका है ले आओ।" उसनके आगे हल्की फुल्की गिज़ा रखी गयी जिसमें खीर भी थी। उसने बहुत थोड़ा खाया। मैंने महसूस किया कि जैसे उसकी भूख मर चुकी हो। मैंने उसके साथ खाना खाया। उसने बताया कि वह मुलाकातें कम कर रहा है क्योंकि वह बदहज़्मी और कमज़ोरी महसूस करता है। खाने के बाद उसने मुझसे पूछा—"हाजी वापस आ गये हैं?" मैंने उसे बताया कि रास्ते में कीचड़ ज़्यादा है। शायद कल तक हाजी आ जाएं। सुल्तान ने कहा—'हम उन के इस्तकबाल के लिए जाएंगे।' यह कह उसने एक हाकिम को बुला कर हुक्म दिया कि हाजी आ रहे हैं और रास्ते मे कीचड़ और पानी है। फ़ौरन आदमियों को भेजो और जिस रास्ते से हाजी आ रहे हैं उस रास्ते से कीचड़ और पानी साफ़ करा दो। मैं उससे इजाज़त लेकर चला आया। मैं देख रहा था कि उसका जोश व ख़रोश और उसकी मुस्तैदी मांद पड़ गयी थी...

"दूसरे दिन वह घोड़े पर सवार होकर हाजियों के इस्तकबाल के लिए निकला। मैं भी घोड़े पर सवार होकर उसके पीछे गया। उसका बेटा अलमुल्कुल अफ़ज़ल भी आ गया। लोगों में जंग की आग की तरह यह ख़बर फैल गयी कि सुल्तान बाहर आया है। लोग काम काज छोड़ कर उठ दौड़े। वह अपने फ़ातेह सुल्तान को क़रीब से देखना और उससे हाथ भी मिलाना चाहते थे। जब सुल्तान अकीदतमन्दों के उस बेसब्र बेक़ाबू हुजूम में घिर गया तो उसके बेटे अलमुल्कुल अफ़ज़ल ने घबराहट के आलम में मुझे कहा कि सुल्तान ने सवार वाला लिबास नहीं पहन रखा। (ज़राबकतर की किस्म का लिबास होता था। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी उस लिबास के बेग़ैर कभी बाहर नहीं निकला था) हमें परेशानी हुई।

सुल्तान के साथ बॉडीगार्ड भी नहीं थे। मुझसे रहा न गया। (सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी पर उससे पहले कातिलाना हम्ले हो चुके थे। अब भी हम्ला हो सकता था) मैं हुजूम को चीरता हुआ सुलतान तक पहुँचा और उसे कहा कि आप अपने मख़्सूस लिबास में नहीं हैं। वह उस तरह चौंका जैसे नींद से जगा दिया गया हो। उसने कहा कि मेरा लिबास यहीं लाया जाए मगर वहाँ कोई भी नहीं था जो उसे लिबास ला देता। मुझे कुछ ज़्यादा ही ख़तरा महसूस होने लगा...

"मुझे ऐसा महसूस होने लगा जैसे कोई हादसा होने वाला हो। मैंने उसे कहा कि मैं यहाँ के रास्तों से वाक़िफ नहीं। क्या कोई ऐसा रास्ता है। जहाँ लोग कम हों और आप वापस जा सकें? उसने कहा कि एक रास्ता है। उसने घोड़ा उस रूख़ को मोड़ लिया। लोगों का हुजूम बेपनाह था। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने घोड़ा बाग़ों के दर्मियानी रास्ते पर डाल दिया। मैं और अलमुल्कुल अफ़ज़ल उसके साथ थे। मेरा दिल बोझल था मैं उसकी जान को भी खतरे में महसूस कर रहा था और उसकी सेहत को भी। हम अल मीना चश्में से होते हुए किले में दाख़िल हुए....

"जुमा की शाम सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने ग़ैर मामूली कमज़ोरी महसूस की। आधी रात से ज़रा पहले उसे बुख़ार हो गया। यह सफ़रावी बुख़ार था जो जिस्म के अन्दर ज़्यादा था, बाहर कम लगता था। सुबह (21 फरवरी 1193 ई0) वह नक़ाहत से निढाल हो चुका था। जिस्म को हाथ लगाने से हरारत कम लगती थी। मैं उसे देखने गया। उसका बेटा अलमुल्कुल अफ़ज़ल उसके पास था। सुल्तान ने बताया कि उसने रात बड़ी तकलीफ़ में गुज़ारी है। उसने इधर उधर की बातें शुरू कर दीं। हमने गप शप में उनका साथ दिया। उससे उसकी मिजाज़ी शुगुफ़्तगी बहाल हो गयी। दिन के दूसरे पहर तक वह खासा बेहतर हो गया। हम वहाँ से उठने लगे तो उसने कहा कि अलमुल्कुल अफ़ज़ल के साथ खाना खाकर जाएं। मेरे साथ क़ाज़ी अलफ़ज़ल भी था। वह किसी और के हाँ खाना खाने का आदी न था। वह मआज़रत करके चला गया। मैं खाने के कमरे में चला गया। सलाहुद्दीन अय्यूबी से रूख़सत हुए मुझे यूं लगा जैसे मैं अपना दिल सुलतान के पास छोड़ चला हूँ। खाने के कमरे में गया। दस्तारख्वान बिछ चुका था। बहुत से अफ़राद बैठे थे। अलमुल्कुल अफ़ज़ल अपने बाप की जगह बैठा था। बेशक अलअफ़ज़ल सलाहुद्दीन अय्यूबी का बेटा था लेनिक सुल्तान की जगह बैठा देखकर बहुत दुख हुआ। ख़ाने पर जो लोग बैठे थे उनकी भी जज़्बाती हालत मेरे जैसी थी। उनमें से बाज़ के तो आँसू निक आये.......

"उस रोज़ के बाद सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की सेहत बिगड़ती चली गयी। मैं और क़ाज़ी अलफ़ज़ल रोज़ाना कई-कई बार उस कमरे में जाते थे जहां सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी बीमार पड़ा था। उसे तकलीफ़ में ज़रा सा भी इफ़ाक़ा होता तो हमारे साथ बातें करता था, वरना अक्सर यूं होता कि वह आँखें बन्द किये पड़ा रहता और हम उसे देखते रहते। उसकी जान के लिए सबसे बड़ा खतरा यह था कि उका तबीबे ख़ास ग़ैरहाज़िर था। (क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद ने यह नहीं लिखा) कि तबीब ख़ास कहाँ चला गया था) सुल्तान का

इलाज चार तबीब मिलकर कर रहे थे मगर मर्ज़ बढ़ता जा रहा था....

"बीमारी के चौथे रोज़ चार तबीबों ने फ़ैसला किया कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के जिस्म से ख़ून निकाल दिया जाए। उसी वक़्त सुल्तान की हालत ज़्यादा बिगड़ गयी और उसके बाज़ गुदूद बेकार हो गये। उससे उसके जिस्म में अन्दर की रतूबतें खुश्क होने लगीं। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी नक़ाकहत की आखिरी हद तक जा पहुँचा। छठे दिन हमने उसे सहारा देकर बैठाया। उसे एक दवाई दी गयी जिसके बाद हल्का गर्म पानी पीना ज़रूरी था। पानी लाया गया। उसे हल्का गर्म होना चाहिए था। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुँह से प्याला लगाया गया, तो उसने कहा कि पानी बहुत गर्म है। उसने न पिया। पानी ज़रा ठंडा करके लाया गया तो सुल्तान ने कहा कि यह बिल्कुल ठंडा है। उसने गुस्से या ख़फ़गी का इज़हार नहीं किया, मायूसी के लहजे में इतना ही कहा–'ओ ख़ुदा! कोई भी नहीं जो मुझे हल्का गर्म पानी दे सके'.....

"मेरी और अल अफ़ज़ल के आँखों में आँसू आ गये। (दुनियाए सलीब पर दहशत तारी कर देने वाला इन्सान बिल्कुल बेबस हो गया था)....... हम दोनों दूसरे कमरे में गये। क़ाजी अलफ़ज़ल ने कहा– 'क़ौम कितने अज़ीम इन्सान से महरूम हो जायेगी। बख़ुदा उसकी जगह कोई और होता तो पानी का यह प्याला उसके सर पर दे मारता जो उसकी पसन्द का पानी नहीं लाया था'.....सातवें और आठवें रोज़ सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की हालत इतनी ज़्यादा बिगड़ गयी कि उसका ज़ेहन भटकने लगा। नौवें रोज़ उस पर ग़शी तारी हो गयी। वह पानी भी न पी सका। शहर में ख़बर फैल गयी कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की हालत तश्वीशनाक हो गयी है। तमाम शहर पर मौत की उदासी तारी हो गयी। हर जगह और हर ज़ुबान पर उसकी सेहतयाबी की दुआएं थीं। ताजिर और सौदागर ऐसे डरे कि उन्होंने बाज़ारों से अपना माल उठाना शुरू कर दिया। अल्फ़ाज़ में बयान नहीं किया जा सकता कि हर एक फ़र्द किस तरह उदास और कितना परेशान था.....

"मैं और क़ाज़ी अल अफ़ज़ल रात का पहला पहर सुल्तान अय्यूबी के पास रहते और उसे देखते रहते थे। वह बोल और देख नहीं सकता था। बाक़ी रात हम बाहर खड़े रहते। कोई अन्दर से आता तो उससे पूछ लेते कि सुल्तान की हालत कैसी है। हम जब अलीउलसुबह वहाँ से बाहर निकलते तो बाहर लोगों का हुजूम खड़ा देखते। अब लोग हम से यह पूछने से भी डरते थे कि सुल्तान की सेहत कैसी है। वह हमारे चेहरों से जान लेते थे कि सुल्तान की हातल ठीक नहीं। हुजूम चुपचाप हमें देखता और हम हुजुम को देख कर सर झुका लेते थे. दसवें रोज़ तबीबों ने उसे अंतड़ियाँ साफ़ करने वाली दवा दी जिससे उसे कुछ इफ़ाक़ा हो गया। उसके बाद जब सबको पता चला कि सुल्तान अय्यूबी ने जौ का पानी पिया है तो सबने ख़ुशी मनाई। उस रात हम चन्द घंटे उसके पास जाने का इन्तज़ार करते रहे, लेकिन महल में चले गये जहाँ जमालुद्दीन इक़बाल बैठा था। उससे सलाहुद्दीन की हालत पूछी। वह अन्दर चला गया और तौरान शाह से पूछ कर हमें बताया कि सुल्तान के दोनों फेंफड़ों में नमी और हवा आने जाने लगी है। हमने ख़ुदा का शुक्रिया अदा किया। हम ने जमालुद्दीन से कहा

कि ख़ुद जाकर देखे कि बाक़ी जिस्म पर पसीने के आसार हैं या नहीं। उसने अन्दर जाकर देखा और वापस आकर बताया कि पसीना बहुत आ रहा है। यह एक ख़ुशख़बरी थी। हम सकून और इत्मीनान से चले आये.......

"दूसरे दिन जो मंगल का दिन, सिफ़र की 26 तारीख़ और सुल्तान अय्यूबी की अलालत का गयारहवां रोज़ था, हम सुल्तान को देखने गये। अन्दर न जा सके। हमें बताया गया कि पसीना इस क़दर ज़्यादा निकल रहा है कि बिस्तर में से होता हुआ फ़र्श पर टपक रहा है। यह ख़बर अच्छी नहीं थी। जिस्म की रतूबत तेज़ी से ख़त्म हो रही थी। तबीबों ने हैरत से बताया कि जिस्म अन्दर से ख़ुश्क हो जाने के बावजूद सुल्तान के जिस्म में अभी तवानाई मौजूद है.

"सलाहुद्दीन अय्यूबी के बेटे अल मल्कुल अफ़ज़ल ने देखा कि सुल्तान की सेहतयाबी की कोई उम्मीद नहीं रही तो उसे उमरा और वुज़रा से हलफ़ और वफ़ादारी लेने का फ़ौरी इन्तज़ाम किया। उसने तमाम क़ाज़ियों को रिज़्वान महल में बुलाया और उन्हें कहा कि नये हलफ़ का मसौदा तैय्यार करें जिस मे सलाहुद्दीन अय्यबी जब तक ज़िन्दा है उसकी वफ़ादारी का हलफ़ नामा हो और उनकी वफ़ात के बाद अल मुल्कुल अफ़ज़ल की वफ़ादारी का। अल अफ़ज़ल ने माआज़रत और अफ़सोस का इज़हार करते हुए कहा कि वह ऐसा हलफ़नामा कभी तैय्यार न कराता लेकिन सुल्तान की हालत तश्वीशनाक मरहले में दाख़िल हो चुकी है.

...

"हलफ़नामा तैय्यार हो गया। दूसरे दिन हलफ़ उठाने के लिए मुतअल्लिक़ा उमरा और वुज़रा को बुलाया गया। सबसे पहले दमिश्क़ के गवर्नर सआदुद्दीन मस्ऊद ने हलफ़ उठाया। उसके बाद नस्रुद्दीन आया जो सहयून का गवर्नर था उसने इस शर्त पर हलफ़ उठाया कि जिस क़िले का वह गवर्नर है वह सुल्तान अय्यूबी के वफ़ात के बाद उसकी (नस्रुद्दीन) की ज़ाती मिल्कियत समझा जाएगा। तमाम उमरा और वुज़रा ने हलफ़ उठा लिया। दो तीन ने अपनी शर्त मनवाकर हलफ़ उठाया। हलफ़नामे के अलफ़ाज़ यह थे– 'इस लम्हे से मुतहदा मक़सद की ख़ातिर अल मुल्कुल नसर (सलाहुद्दीन अय्यूबी) का वफ़ादार रहूंगा जब तक वह ज़िन्दा है। उसकी हुकूमत को बरक़रार रखने के लिए अथक और मुसलसल कोशिश करता रहूंगा। उसकी ख़ातिर अपनी जान, माल, तलवार और अपनी फ़ौज और अपनी रिआया को वक़्फ़ किये रखूंगा। मैं उसका हुक्म मानूंगा और उसकी हर ख़्वाहिश की तकमील करूंगा। मैं ख़ुदा को गवाह ठहरा कर एलान करता हूँ कि सुल्तान के बाद यही वफ़ादारी उसके बेटे अल अफ़ज़ल के लिए वक़्फ़ कर दूंगा और उसके बाद अलअफ़ज़ल के बेटों के लिए। मैं ख़ुदा को हाज़िर व नाज़िर जानकर उसके एहकाम की तकमील करूंगा। उसके लिए मैं अपनी जान, अपना माल, अपनी तलवार और अपनी फ़ौज को वक़्फ़ किये रखूंगा। मैं अपने हलफ़ वफ़ादारी में ख़ुदा को गवाह ठहराता हूँ'......

"हलफ़नामे का दूसरी शिक़ यह थी– 'अगर मैं अपने हलफ़ की ख़िलाफ़ वरज़ी करूं तो मैं हल्फ़िया तस्लीम करता हूँ कि सिर्फ़ इस ख़िलाफ़ वरज़ी की बिना पर मेरी बीवियाँ मुतलक़ा हो जाएं (यानी बीवियाँ मेरी नहीं रहेंगी) और मुझे तमाम ज़ाती और सरकारी ख़ादिमों से

महरूम कर दिया जाएगा और मुझे लाज़िम होगा कि मैं नंगे पाँव या प्यादा हजे काबा को जाऊं'.......

26 सिफर 589 हि0 (3 मार्च 1193 ई0) मंगल की शाम थी और सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की बीमारी का ग्यारहवाँ रोज़। उसकी तवानाई बिल्कुल ख़त्म हो गयी और उम्मीद दम तोड़ गयी। रात को ऐसे वक़्त मुझे, काज़ी अल फ़ज़ल और इब्ने ज़की को बुलाया गया जिस वक़्त पहले कभी नहीं बुलाया गया था। इब्ने ज़की का पूरा नाम अबुल मुआली मोहम्मद मुहियुद्दीन था और इब्ने ज़की के नाम से मशहूर था। हज़रत उस्मान के ख़ानदान से तअल्लुक रखता था। वह कानून, इल्म और साइंस का आलिम था। सलाहुद्दीन का बहुत एहतराम करता था। जब सुल्तान अय्यूबी ने योरूशलम फ़तह किया तो मस्जिदे अक़्सा में पहले जुमा का खुत्बा देने के लिए सुल्तान अय्यूबी ने उसी को मुन्तख़ब किया था। बाद में उसे दमिश्क़ का काज़ी मुकर्रर कर दिया गया था....

''हम गये तो अलमुल्कुल अफ़ज़ल ने कहा कि हम तीनों सारी रात उसके साथ रहे। वह सौगवार था और घबराया हुआ भी। काज़ी अल फ़ज़ल ने एतराज़ किया और कहा कि रात भर लोग बाहर खड़े सुल्तान की सेहत की ख़बर सुनने का इन्तज़तार करते हैं। अगर हम सारी रात अन्दर रहे तो वह कुछ और समझ लेंगे और शहर में ग़लत खबर फैल जाएगी। अल अफ़ज़ल समझ गया। उसने कहा कि हम लोग चले जाएं। हमारी बजाए उसने इमाम अबू जाफ़र को उस मकसद के लिए बुलाया कि अगर रात को सलाहुद्दीन पर नज़ाअ का आलम तारी हो गया तो इमाम उसके सिरहाने कुर्आन पढ़ेगा। हम वहां से आ गये....

''उसके बाद इमाम अबू जाफ़र ने सुल्तान अय्यूबी की आख़िरी रात की जो रूवेदाद सुनाई वह मैं तहरीर करता हूँ। उसने बताया कि उसने सुल्तान के सिरहाने कुर्आन ख़्वानी की। उस दौरान सुल्तान पर कभी ग़शी तारी हो जाती, कभी होश में आ जाता और कभी उसका ज़ेहन भटक जाता। आधी रात के बाद 27 सिफर 589 हि0 (4 मार्च 1193 ई0) की तरीख शुरू हो चुकी थी। इमाम अबू जाफ़र ने बताया-'मैं बाइसवें पारे की सूरह अल हज पढ़ रहा था। मैंने जब पढ़ा- 'ख़ुदा ही क़ादिर है, बरहक़ है और वह मुर्दों को ज़िन्दा कर देता है और वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है' तो मैं ने सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की नहीफ़ सी सरगोशी सुनी- ' यह सच है। यह सच है।' यह उसके आख़िरी अल्फ़ाज़ थे। उसके फ़ौरन बाद सुबह की आज़ान सुनाई दी। मैंने कुर्आन बन्द कर दिया। अज़ान ख़त्म होते ही सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी निहायत सकून और इत्मीनान से अपने ख़ालिके हक़ीक़ी से जा मिला।' इमाम अबू जाफ़र ने मुझे यह भी बताया कि आज़ान शुरू हुई तो वह एक आयत पढ़ रहा था- 'अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। हम उसी से मदद मांगते हैं।' तो सुल्तान अय्यूबी के होठों पर मुस्कुराहट आ गयी। उसका चेहरा दमक उठा और वह उसी कैफ़ियत में अपने ख़ुदा के हुज़ूर गया'......

''मैं जब पहुँचा उस वक़्त सलाहुद्दीन फौत हो चुका था। ख़ुल्फ़ाए राशेदीन के बाद अगर कौम पर कोई कारी ज़रब पड़ी तो वह सुल्तान अय्यूबी के इन्तक़ाल की थी। किले, शहर, वहाँ

के लोगों और दुनिया भर के मुसलमानों पर ग़म की ऐसी घटा छा गयी जो सिर्फ़ खुदा जानता है कि कितनी गहरी थी। मैने लोगों को अक्सर कहते सुना है कि उन्हें जो शख़्स सबसे ज़्यादा अज़ीज़ है उसके लिए वह अपनी जान कुर्बान कर देंगे, लेकिन मैंने कभी किसी को जान कुर्बान करते नहीं देखा। अलबत्ता मैं कसम खाकर कहता हूँ कि सुल्तान अय्यूबी की जिन्दगी की आख़िरी रात हम से कोई पूछता कि सुल्तान अय्यूबी की जगह कौन जान कुर्बान करने को तैय्यार है तो हममें से बहुत से लोग अपनी जाने कुर्बान करके सुल्तान अय्यूबी को ज़िन्दा रखते.....

"उस रोज़ शहर में जिसे देखा बेइख़्तियार आँसू बहाते देखा। लोग रोने के सिवा कुछ और सोचते ही नहीं थे। किसी शायर को मर्सिया सुनाने की इजाज़त न दी गयी। किसी इमाम, किसी क़ाज़ी और किसी आलिम ने लोगों को सब्र की तल्क़ीन न की। वह ख़ुद रो रहे थे। हिचकियाँ ले रहे थे। सलाहुद्दीन के बच्चे रोते चीखते गलियों में निकल गये। उन्हें रोता देखकर लोग दहाड़ें मार-मार कर रोते थे.......जोहर की नमाज़ का वक़्त हो गया। उस वक़्त सुल्तान अय्यूबी की मैय्यत को आख़िरी ग़ुस्ल दे कर कफ़न पहनाया जा चुका था। ग़ुस्ल अदालत के एक अहलाकार अलदलाई ने दिया था। ग़ुस्ल के लिए मुझे कहा गया था मगर मेरा दिल इतना मज़बूत न था। मैंने इन्कार कर दिया। मैय्यत बाहर लाकर रखी गयी। जनाजे पर जो कपड़ा डाला गया वह क़ाज़ी अल फ़ज़ल ने दिया था। जब जनाजा लोगों के सामने रखा गया तो मर्दों की दहाड़ें और औरतों की चीख़ों से आसमान का जिगर चाक होने लगा। दमिश्क़ की औरतों के बैन सुने नहीं जाते थे.....

"क़ाज़ी मुहियुद्दीन ज़की ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। मैं कुछ नहीं बता सकता कि जनाज़े में कितने लोग थे। अलबत्ता यह बता सकता हूँ कि सब नमाज़े जनाज़ा में खड़े थे मगर नमाज़ पढ़ने की बजाए सब हिचकियाँ ले रहे थे। और बाज बेक़ाबू हो के दहाड़ें मार उठते थे। इर्द गिर्द औरतों का बेअन्दाज़ा हुजूम बैन कर रहा था। नमाज़ जनाज़ा के बाद मैय्यत बाग़ीचेके उस मकान में रखी गयी जहाँ मरहूम ने अलालत के दिन गुज़ारे थे। अस्र से कुछ देर पहले सुल्तान अय्यूबी को क़ब्र में उतार दिया गया। लोग घरों को वापस गये तो यूँ लगता था जैसे लाशों का हुजूम चला जा रहा हो। मैं अपने साथियों के साथ क़ब्र पर कुर्आनख़्वानी करता रहा...

"मन कि बहाउद्दीन इब्ने शद्दाद ने यह याददाश्तें ख़लीफ़ा की इजाज़त से क़लम बन्दकी हैं और इस तहरीर को अल मुल्कुल अलनसर अबू ज़फ़र यूसूफ इब्ने नज्म अय्यूब सलाहुद्दीन अय्यूबी की वफ़ात पर ख़त्म किया है। ख़ुदा उसपर रहमत फ़रमाये। इस तहरीर से मेरा मक़सद ख़ुदा की ख़ुश्नूदी है और मेरा मक़सद यह भी है कि उसे याद रखो जो नेक था और सिर्फ़ नेकी पर ध्यान रखो।"

उन याददाश्तों के बाद यह बताना भी ज़रूरी है कि सुल्तान अय्यूबी की एक ख़्वाहिश यह थी कि फ़िलिस्तीन को सलीबियों से पाक करें। उसकी यह ख़्वाहिश पूरी हो गयी। उसकी दूसरी ख़्वाहिश यह थी कि फ़तह फ़िलिस्तीन के फ़रीज़ा के बाद फ़रीज़ा हज अदा करे मगर

उसकी यह ख़्वाहिश पूरी न हो सकी। इसकी वजह उसगी बीमारी नहीं थी बल्कि यह कि उसके पास इतने पैसे नहीं थे। उसकी ज़ाती जेब खाली थी। हिलाले नौ की दरांती से फ़सले सलीबी कांटने वाला मर्दे मुजाहिद, मिस्र, शाम और फ़िलिस्तीन का सुल्तान जिसके क़दमों में सल्तनत के ख़ज़ाने थे वह इतना ग़रीब था कि हज को न जा सका और उसे जो कफ़न पहनाया गया था। वह क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद, क़ाजी अल अफ़ज़ल इब्ने ज़की ने दरपरदा पैसे जमा करे ख़रीदा था। आज फ़िलिस्तीन सुल्तान अय्यूबी का मातम उसी तरह कर रहा है जिस तरह 4 मार्च 1193 ई0 के रोज़ दमिश्क़ की बेटियों ने बैन किये थे।